प्रकाशक,

विहारीलाल कठनेरा

प्रोप्राइटर—हिन्दी जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय;

हीराबाग पो॰ गिरगाँव–बम्बई ।



मुद्रक,

मंगेश नारायण कुलकर्णी

कर्नाटक प्रेस नं. ४३४ ठाकुरद्वार रोड मुंबई

निवेदन ।

यह महान् ग्रंथ हमने स्व० पंडित-प्रवर टोडरमलजीकृत भाषा-वचनिका सहित ही छपाया है। संस्कृत टीका इसमें इस लिए नहीं दी कि वह 'माणिकचन्द्र ग्रंथमाला'में मूलसहित छप चुकी है। कुछ लोगोंकी राय है कि पुरानी भाषाके पद्य वर्तमान हिन्दीमें परिवर्तित कर दिये जाने चाहिये; परन्तु हमें भाषाकारके गौरवकी रक्षा करना इष्ट था; अतएव हमने उसका परिवर्तन कराना उचित नहीं समझा।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि इसके यंत्र-भागको ग्रंथके साथ ही लगा दिया जाता; परन्तु कुछ ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनसे तत्काल यंत्रोंका तैयार करवाना कठिन हो गया। यंत्रोंके तैयार करानेमें कुछ विलम्ब अवश्य होगा; परन्तु तैयार होते ही उन्हें हम सब ग्राहकोंके पास पोस्ट द्वारा भेज देंगे। हम उन सज्जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि जिन जिनके पास यह ग्रंथ पहुँचे वे एक कार्ड द्वारा अपना पता लिख भेजनेकी कृपा करें।

इसका सम्पादन तथा संशोधन-कार्य श्रीयुत पं० मनोहरलालजी शास्त्रीने किया है। हमें जहाँ तक विश्वास है पंडितजीने अपनी जिम्मेवरीका ध्यान रख कर ही इस कार्यका सम्पादन किया है; और इस लिए दृष्टि दोषकी साधारण भूलोंको छोड़ कर सैद्धान्तिक भूलोंका रहना बहुत कम संभव है। अतःपर भी कोई भूल रह गई हो तो उसका संशोधन कर हमें भी उसकी सूचना देनेकी कृपा करें; जिससे दूसरी आवृत्तिमें उसके संशोधनका ध्यान रक्खा जावे।

उदयलाल काशलीवाल

हमारी छपाई पुस्तकें ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—स्व॰ पं॰ सदासुखजीकृत भाषाटीकासहित । श्रावकाचारसम्बन्धी भाषाके जितने ग्रंथ इस समय मिलते हैं, उन सबसे यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है । यह खुले पत्रोंमें, जाड़े कागज मोटे टाईपमें बड़ी सुन्दरतासे छपाया गया है । पृष्ठ संख्या ५७५ के लगभग है । मूल्य पाँच रुपया ।

पुण्यास्रव—इसमें मनोरंजक और धार्मिक भावोंसे परिपूर्ण कोई ५६ छोटी मोटी कथायें हैं । इसे यह दूसरी बार छपाया है । पृष्ठसंख्या ३४० के लगभग । मूल्य तीन रुपया ।

भक्तामर कथा—(मन्त्र-यंत्र-सहित) यह ग्रन्थ स्वर्गीय ब्रह्मचारी रायमल्लके बनाये भक्तामरके अक्षर बड़ी सीधी-साधी हिन्दी-भाषामें छपाया गया है । अन्तमें मन्त्र, ऋद्धि और उनकी साधनविधि तथा [illegible]तालीस यंत्र भी दिये गये हैं । मूल्य कपड़ेकी जिल्दका एक रुपया छह आने, सादी जिल्दका एक रुपया ।

चन्द्रप्रभचरित—महाकवि—श्रीवीरनन्दी आचार्यकृत, संस्कृत जैन काव्योंमें यह उच्च कोटीका काव्य इसमें आठवें तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ भगवानका पवित्र चरित वर्णन किया गया है । मूल्य कपड़ेकी जिल्द [illegible] रुपया; सादी जिल्द एक रुपया ।

नेमिपुराण—यह ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत नेमिपुराणका हिन्दी अनुवाद है । इसमें बावीसवें तीर्थंकर [illegible]नाथ भगवानका पवित्र चरित है । मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा दो रुपया, सादी जिल्द दो रुपया ।

सम्यक्त्वकौमुदी—यह भी कथाका एक सुन्दर ग्रन्थ है । इसमें सम्यक्त्वके प्राप्त करनेवाले, राजा [illegible]तोदय, सुयोधन, अर्हद्दास, चन्दनश्री, विष्णुश्री, नागश्री, पद्मलता, कनकलता और विद्युल्लताकी आठ [illegible]यें हैं । मूल्य कपड़ेकी जि॰ एक रुपया छःआने, सादी जि॰ एक रुपया दो आने ।

सुदर्शनचरित—यह सकलकीर्तिकृत संस्कृत सुदर्शन चरितका हिन्दी अनुवाद है । सुदर्शन बड़ा [illegible]-निश्चयी था, कामी स्त्रियोंने उसके साथ अनेक प्रकारकी बुरी चेष्टायें कीं उसे शीलधर्मसे गिरानेका खूब ही [illegible]ल किया परंतु सुदर्शन अपने शीलधर्म पर सुमेरुसा अचल-अडिग बना रहा । मूल्य नौ आने ।

नागकुमारचरित—षट्भाषा कवि चक्रवर्ती मल्लिषेण सूरिके संस्कृत ग्रंथका अनुवाद । मूल्य छः आने।

यशोधरचरित । महाकवि वादिराज सूरिके एक सुन्दर संस्कृतकाव्यका हिन्दी अनुवाद । इसमें [illegible]ोधरका सुन्दर चरित वर्णन किया गया है । पुस्तक करुण रससे भरी हुई है । पढते पढ़ते हृदय भर [illegible]ता है । मूल्य मात्र चार आना ।

पवनदूत (काव्य) *कालिदासके मेघदूतके समान रचा गया है, हिन्दी भाषामें है ।* कीमत चार आना।

श्रेणिकचरितसार । ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत श्रेणिककथासारका यह अनुवाद है । मूल्य तीन आने।

अकलंकचरित । इसमें अकलंक-स्तोत्र और उसका भावार्थ तथा हिन्दी पद्यानुवाद भी शामिल कर [illegible]या है । मूल्य तीन आने ।

सुकुमालचरितसार । इसके बनानेवाले ब्रह्मचारी नेमिदत्त हैं । उन्हीके ग्रन्थका यह अनुवाद है। [illegible]य डेढ़ आना ।

पंचास्तिकाय-समयसार । मूलग्रन्थके बनानेवाले भगवान कुन्दकुन्दाचार्य हैं । उस पर स्व॰ पं॰ [illegible]ानन्दजीने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदिमें छन्दोबद्ध टीका लिखी है । कीमत एक रुपया ।

चौबीसठाणा-चर्चा—यह गोम्मटसारके आधार पर लिखी गई है । इसमें चौबीस दण्डक भी शामिल [illegible]र दिये हैं । मूल्य आठ आने ।

छहढाला—(सार्थ) स्व॰ पं॰ दौलत रामजी कृत । ब्र॰ शीतलप्रसादजीकृत अर्थसहित है । तीन आने ।

नियमपोथी—इसे भी ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने संग्रह किया है । मूल्य आधा आना ।

हिन्दी भक्तामर—यह संस्कृत भक्तामरका खड़ी बोलीकी कवितामें सुन्दर अनुवाद है । मूल्य सवा आना।

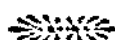
हिन्दी कल्याणमन्दिर । भक्तामरके समान यह भी खड़ी बोलीकी कवितामें संस्कृत कल्याण मंदिरका [illegible] है । मूल्य एक आना ।

कर्मदहन-विधान । इसमें कर्मदहन पूजा आदि सब छपे हैं । मूल्य पाँच आने ।



भाषाटीकाकार पंडितवर
टोडरमल्लजी लिखित

भूमिका



इस शास्त्रकी संस्कृत टीका पूर्वे भई है तथापि तहां संस्कृत गणितादिकका ज्ञानविना प्रवेश होइ सकता नाहीं। तातैं स्तोक ज्ञानवालोंकै त्रिलोकके स्वरूपका ज्ञान होनेके अर्थि तिसही अर्थकौं भाषा करि लिखिए है। यावि मेरा कर्तव्य इतना ही है जो क्षयोपशमके अनुसारि तिस शास्त्रका अर्थकौं जानि धर्मानुरागतैं औरनिके जाननेके अर्थि जैसैं कोऊ मुखतैं अक्षर उचारि करि देशभाषारूप व्याख्यान करै तैसैं मैं हस्ततैं अक्षरनिकी स्थापना करि लिखौंगा। बहुरि छंदनिका जोड़ना नवीन युक्ति अलंकारादिकका प्रगट करना इत्यादि नवीन ग्रंथकारकनिके कार्य है तैसी मोतैं बनै ही नाहीं। तातैं ग्रंथका कर्तापना मेरै है नाहीं। इहां कोऊ कहै तुम तौ अमूर्तीक आत्मा हौ तुम करि लिखनेका कार्य कैसैं बनैगा। ताका समाधान। मैं जु हौं आत्मद्रव्य सो अनंत गुण पर्यायनिका पुंज हौं तिनि विषै श्रुतज्ञान अर धर्मानुराग अर शक्तिपना इन मेरे पर्यायनिके निमित्ततैं लिखनेरूप कार्य बनै है। तातैं कारणविषै कार्यका उपचार करि मैं लिखौंगा। ऐसा व्यवहार मात्र वचन जानना। निश्चय विचारतैं मैं मेरे ज्ञानादि भावनिहीका कर्ता हौं। लिखनेका कर्ता मैं नाहीं हौं। बहुरि प्रश्न। इनकै निमित्त नैमित्तिक संबंध कैसैं होइ है सो कहो? तहां कहिए है। मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरणके निमित्ततैं हीन होइ मतिश्रुत पर्यायरूप भया है। तहां मतिज्ञान करि शास्त्रके अक्षरनिका जानना भया। बहुरि मोहके उदयतैं मेरे औदयिक भाव रागादिक पाईए है। तहां प्रशस्तराग करि मेरे ऐसी इच्छा भई जो शास्त्रका अर्थ भाषारूप अक्षरनि करि लिखिए तौ इस क्षेत्रकालविषै मंद बुद्धि घने हैं तिनका भी कल्याण होइ। अर इस कार्यकौं करतैं अप्रशस्त भावके अभाव करि किछू धर्म प्रवृत्ति होनेतैं मेरा भी कल्याण होइ। तातैं जैसैं ताका लिखना बनै सो करना। बहुरि प्रदेशनिकौं चलावनेरूप शक्तिपना मेरै पाईए है। तहां तिस इच्छाके वशतैं जैसैं तिस कार्यकी सिद्धि होइ। तैसैं मैं मेरे प्रदेशनिकौं चंचल करौं हौं। ऐसैं इतने पर्याय तौ मेरै होइ है। बहुरि पुद्गल द्रव्य भी सक्रिय है। अर शरीर है सो पुद्गलपरमाणूनिका पिंड है। अर नामकर्मके निमित्ततै शरीरके अर मेरै एक बंधान है। तातै मेरे प्रदेश चंचल होनेतै तिनकी साथि हस्तादिक शरीरके अंग भी चंचल हो है। बहुरि हस्तादि अंगनिकौ दौ इस लेखनी आदि पुद्गल स्कंध है ते तैसे अक्षर लिखे जाय तैसे विधानरूप होइ प्रवर्तैं। तब अक्षरनिका आकार पत्रादि विषै स्थापन हो है। ऐसे यहु निमित्त [illegible]

ताका उत्तर–जो अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर होइ ताकौं तौ प्रत्यक्ष अनुमान करि प्रमाण करना। बहुरि जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर होइ ताकौं आगम प्रमाण करि मानना। कोऊ कहै है कि अन्यमतके आगम अप्रमाण तुम्हारा आगम प्रमाण ऐसा कैसैं मानिए ? ताका उत्तर। आगम विषैं केई अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर हैं केई अगोचर हैं। तहां प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ करि आगमकी परीक्षा करनी। जिस मतके आगम विषैं प्रत्यक्ष अनुमान गोचर ही अर्थ विरुद्ध भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ कैसैं प्रमाण करिए। अर जिस मतका आगम विषैं प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ सत्य ही कहै भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ भी सत्य ही होसी सो ऐसैं परीक्षा कीएं अन्यमतके आगम अप्रमाण जैनमतके प्रमाण प्रतिभासैं हैं। सो यहु शास्त्र जैनमतका आगम है तातैं प्रमाण है। या प्रकार इस शास्त्रकौं फलदायक जानि वक्ता श्रोताका लक्षण युक्त होइ बांचो सुनो अर प्रमाणीक जानि याका श्रद्धान करो। याके अभ्यासतैं तत्त्व श्रद्धानी होइ तत्त्वज्ञानकौं वधाइ रागादिककौं घटाइ मोक्षमार्गी होऊ। बहुरि तिस साधनतैं तुम्हारैं निरुपाधि आत्मस्वभावकी सिद्धि है लक्षण जाका ऐसा सिद्ध अवस्था प्रगट होऊ।



त्रिलोकसारकी विषयसूची।

विषय. — पृष्ठ.

लोकसामान्याधिकार ॥ १ ॥

वैमानिक लोकका वर्णन ॥ ५ ॥

मनुष्य तिर्यग्लोकका अधिकार ॥ ६ ॥

इति विषयसूची समाप्त।

त्रिलोकसारका परिशिष्ट ।

अब इस ग्रंथके अर्थ जाननेकों गणितका ज्ञान अवश्य चाहिए । जातैं यहु करणानुयोगरूप शास्त्र है, या विषै जहां तहां गणितका प्रयोजन पाईए है । तातैं पहलैं गणित शास्त्रनिका अभ्यास करना । सर्व शास्त्रनिका ज्ञान होनेकों कारणभूत दोय विद्या हैं । एक अक्षरविद्या एक अंकविद्या । सो व्याकरणादि करि अक्षर ज्ञान भए अर गणितशास्त्रनि करि अंकज्ञान भए अन्य शास्त्रनिका अभ्यास सुगम हो है । पहले श्रीऋषभदेवजी एक पुत्रीकों अक्षरविद्या एक पुत्रीकों अंकविद्या सिखाई । सो दोऊ ही विद्या कार्यकारी हैं । तहां जे तुच्छबुद्धी व्याकरणादि ज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि यहु भाषा रचना करी । अब इस विषै जे जीव गणितज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि इहां प्रयोजनमात्र शास्त्रोक्त गणित विधान वर्णन करिए हैं । बहुरि अन्य शास्त्रनितै विशेष जानना । तहां एकादिक गणना अर तिनके अंक मांडनेका विधान प्रवृत्ति विषै प्रसिद्ध है सो सीखलेना । बहुरि प्रवृत्ति विषै पहले अंकका नाम इकवाई दूसरे अंकका नाम दाहकी तृतीयादि अंकनिका नाम सैकड़ा हजार दशहजार लाख दशलाख कोडि कहिए है । संस्कृत विषै इनका नाम एक दश शत सहस्र अयुत लक्ष दशलक्ष कोटि ऐसे नाम हैं । बहुरि याके उपरि दशकोडी शतकोडि सहस्रकोडि इत्यादि नाम जोडिलेने । बहुरि अंकनिकी बाईं तरफसौं गति है । तातैं इकवाईका अंक लिख ताके पीछैं पीछैं दाहकी आदिकके अंक लिखनें । जैसें दोयसैं छप्पन लिखनें होइ तहां इकवाईका छका लिखना ताकै पीछैं दाहकीका पांचा अर ताके पीछैं सैंकड़ाका दूवा लिखना । बहुरि तहां छकाकों पहला अंक कहिए पांचकों दूसरा अंक कहिए दूवाकों अंतका अंक कहिए ऐसैं परिपाटी जाननी । बहुरि परिकर्माष्टककों सीखना । सो संकलन १ व्यवकलन १ गुणकार १ भागहार १ वर्ग १ वर्गमूल १ घन १ घनमूल इनकों परिकर्माष्टक कहिए है । तहां प्रवृत्ति विषै जाका नाम जोड देना है ताका नाम इहां संकलन जानना । जाकों जोडिए ताका नाम धनराशि कहिए, जाविषैं जोडिए सो मूलराशि जानना । सो मूलराशिकौं धनराशितैं अधिक कहिए । बहुरि मूल राशिके उपरि धनराशि लिखिए जैसें पांच अधिक पिचाणवे ऐसैं लिखिए ९५ तहां मूलराशि धनराशिके अंकनिकों यथास्थान जोडिए । इकवाईका अंक दाहकीका अंक विषैं दाहकीका ऐसे क्रमतैं जोडिए जो इकवाई आदिकके अंक जोडैं अधिक प्रमाण आवै तौ तहां इकवाईका अंक माडि दाहकी आदिकका अंक अवशेष रहै ताकों दाहकी आदिकके अंकनि विषैं जोडि दीजिए । याका नाम प्रवृत्ति विषैं हाथिलागा कहिए है । इहां उदाहरण । जैसे दोयसै छप्पनविषैं चौरासी जोडना होइ तहां इकवाईके अंक छह च्यारि जोडैं दश भए तहां इकवाईकी जायगा बिंदी मांडि अवशेष एका अर दाहकी के अंक पंच आठ जोडैं चौदह भए सो एकाके पीछे दाहकाकी जायगा चौका लिखि अवशेष एका अर दोय जोडैं तीन भए सो ताके पीछैं सैंकडाकी जायगा लिखना । ऐसैं इनका जोड़ तीनसै चालीस ३४० भया । अथवा दूसरी तरफतै जोडिए तो सैकड़ाकी

जायगा दूणा माहि दाहकौंके अंक पांच आठ जोडे तेरह भए सो दाहकौंकी जायगा तीया लिखि एक सैकडा विषै जोडे ऐसा भया ३३। बहुरि इकवाईका एक ग्यारि जोडे दश होइ तहां इकवाईकी जायगा बिंदी लिखि एक दाहकौंका अंक विषै जोडे ऐसा १४० भया। या प्रकार औरनिकाभी संकलन जानना। बहुरि व्यकलन नाम राशि विषै घटावनेका है प्राप्ति विषै याका नाम बाकीका काढना है। तहां जाकौं घटाईए ताका नाम ऋण राशि है। जाविषै घटाईए ताका नाम धनराशि है वा मूलराशि है। तिन ऋणराशि करि मूलराशिकौ हीन वा शोधित इत्यादि कहिए। सो मूलराशिके ऊपरि ऋणराशिकौं लिखि ताके आगै कुंडलीकासा आकार लिखे सहित कहिए जैसे दोय घाटि सौ ऐसे लिखिए १००, अथवा मूलराशिके आगै ऐसे – सहनानी करि ताकै ऋणराशि लिखिए। जैसे ताहीकौ ऐसे लिखिए २००–२ अथवा मूलराशिके नीचे बिंदी लिखि ताके नीचे ऋणराशि लिखिए जैसे ताहीकौ ऐसे लिखिए [illegible] बहुरि अन्य प्रकार भी लिखना हो है। तहां मूलराशिके अंकनिमैंसौं ऋणराशिके अंक यथास्थान क्रमतै घटाईए, इकवाईके अंकनिमैंसौं इकवाईके अंक दहाईके अंकनिमैंसौं दाहकौंके अंक ऐसे क्रमतै घटाईए [illegible] [illegible] अधिक है [illegible]

जाकरि गुणिए ताका नाम गुणक वा गुणाकार है। बहुरि गुण्य हूवा राशिका नाम गुणित वा हत वा घ्न इत्यादि जाननें। सो गुण्य आगें गुणककौं लिखिए जैसें चौसठि गुणां एकसौ अठाईसकौं ऐसें लिखिए १२८।६४ अब गुणनेका विधान कहिए हैं। गुणकारके अंकनिकरि पहलैं गुण्यका अंत अंककौ गुणिए तहां गुणकारका इकवाईका अंक करि गुणें अंक आवै तिन विषैं इकवाईका अंककौं तिस अंत अंकके उपरि लिखिए। दाहकी आदिके अंक आवै सौ ताके पीछे पीछें लिखिए। बहुरि जो गुणकारका अंक दाहकोका होइ सौ तिसकरि तिस गुण्यका अंत अंककौं तैसें ही गुणिए तहां पूर्वं इकवाईका अंक आया था ताके पीछें तिसकौं लिखिए। वा पूर्वं तहां अंक होइ तौ जोड़ दीजिए। बहुरि ऐसें ही गुणकारके सैकड़ा आदि अंक होंइ तौ तिनकरि क्रमतैं गुणि जो प्रमाण आवै ताकौं पीछें पीछें लिखिए वा जोडिए। ऐसें अंत अंकका गुणन किया। बहुरि जो गुण्यके अनेक अंक होइ तौ तैसें ही उपांत आदि अंकनिकौं क्रमतैं तहां गुणें इकवाईका अंक आवै सो तौ पूर्व इकवाईका अंक लिख्या था ताके आगें लिखिए अर अन्य अंक आवैं तिनकौं पूर्व अंकनि विषैं अनुक्रमतैं जोड़ते जाइए। ऐसैं कीएं जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां। इहां उदाहरण। जैसें एकसो अठाईसकौं चौंसठि करि गुणना तहां प्रथम गुण्यका एकाकौं चौसठि करि गुणिए तहां गुणकारका चौका करि गुणें च्यारि भया सो एका उपरि लिख्या छक्का करि गुणें छह भया सो ताके पीछें लिख्या तब ऐसा भया ६४। बहुरि गुण्यका उपांत अंक दूवा ताकौं चौंसठि करि गुणिए। तहां चौका करि गुणें बताम होइ तहां दूवा तौ पूर्व अंकनिके आगें लिख्या अर हायिलगे तीन सो पूर्व अंकनि विषैं जोड्या। बहुरि छक्का करि गुणें अठ्तालीस होइ सो पूर्व अंकनि विषैं जोडिए तब ऐसा भया ७६८ ऐसें गुण्य हूवा प्रमाण इक्यासीसै बाणवै भया। ऐसें ही अन्यत्र जाननां। बहुरि अन्य विधान कहिए हैं। गुणाकारके अंकनि करि गुण्यके प्रथम अंककौं गुणें जो प्रमाण आवै सो जुदा लिखिए अर गुण्यका द्वितीय अंककौं गुणें जो प्रमाण आवै ताके आगें एक बिंदी देइ जुदा लिखिए ऐसें ही क्रमतैं गुण्यका चतुर्थादि अंकनिकौं गुणें जो जो प्रमाण आवै ताके आगें च्यारि आदि बिंदी देइ जुदे जुदे लिखिए। बहुरि तिन सबनिकौं जोडिए जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां। जैसें चौंसठि करि एकसौ अठाईसकौं गुणनां तहां गुण्यका आठाकौं गुणें पांचसै बारह भए सो लिख्या अर दूवाकौं गुणें आगें एक बिंदी दीएं बारहसै अर्सी भए सो लिख्या अर एकाकौं गुणें आगें दोय बिंदी दीए चौंसठिसै होई इनकौं जोडें ८१९२ सोइ इक्यासीसै बाणवै आवै है। अथवा यन्त्रविधान करि गुणन हो है सो जेते गुण्यके अंक होंइ तितनी पंक्तिनि विषैं जेते गुणकारके अंक होइ तितने तितने कोठे करने। बहुरि तिन कोठानिकौ ड्योढे [illegible] बहुरि गुणकारके [illegible] अंकनि करि गुण्यका प्रथम अंककौ गुणें जो [illegible] आवै तिनकौं प्रथम पंक्तिके प्रथमादि [illegible] विषैं [illegible]। [illegible] गुणें [illegible] एक [illegible] अंक आवै तौ [illegible] ड्योढा कीया [illegible] प्रथम [illegible] अर [illegible] भागविषैं अंक [illegible]

अंक आवै तौ दाहकीका अंक उपरिम भाग विषै इकवाईका अंक द्वितीय भाग विषै लिखिए। बहुरि ऐसैंही गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यके द्वितीयादि अंकनिकों गुणि द्वितीयादि पंक्तिनि विषै लिखनें। बहुरि तिस यंत्रका ड्योढा जोड दीजिए जो प्रमाण आवै सो गुणित राशि जाननां। उदाहरण—जैसैं एक अठाईसकों चौसठि करि गुणना होइ तहां ऐसा यंत्र करिए। बहुरि याकों ऐसैं ड्योढा चौरिए........बहुरि याविषै छक्का चौका करि गुण्यका प्रथम अंक एककों गुणि प्रथम पंक्ति विषै द्वितीय अंक दूवाकों गुणि तृतीय पंक्ति विषै लिखने........ बहुरि इनका ड्योढा जोड दीजिए तब दूवाका दूवा लिख्या अर आठ तीन आठकों जोडें उगणीस ताका पीछैं नांवां लिख्या हाथ एकलागा सो अर च्यारि दोय च्यारि जोडें ग्यारह भए ताका ताके पीछैं एका लिख्या बहुरि हाथि लागा एक अर एका छक्का जोडें आठ भया सो वाके पीछैं लिख्या ऐसैं इक्यासीसै बाणवै प्रमाण आवै हैं। अथवा संभेदन करि गुणन हो हैं। तहां जैसैं सुगम गुणन होय तैसैं गुण्यका वा गुणकारका खंडकरि जुदे जुदे तिन खंडनिकों गुणि जोड दीजिए। उदाहरण। जैसैं एकसौ अठाईसकों चौसठि करि गुणना होइ तहां चौसठिकों दोय खंड कीये साठि अर च्यारि तहां साठि करि गुणें छिहंतरिसै असी होइ अर च्यारि करि गुणें पांचसैं बारह होइ, बहुरि ताकों सोलह करि गुणें इक्यासीसै बाणवै ही होइ। बहुरि जहां गुण्यगुणकार बहुत होइ तहां परस्पर गुणन करना। जैसें च्यारि सोलह चौसठि दोय ऐसें च्यारि राशि ४।१६।६४।२ गुण्य गुणकार हैं। इनकों परस्पर गुणिए तहां च्यारिकों सोलह करि गुणें चौसठि बहुरि याकों चौसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै याकों दोयकरि गुणें इक्यासीसै बाणवै। अथवा गुण्य गुणकारनि विषै काहूका गुणकार रूप संभेदन करिए। काहूकों किसी करि गुणि लिख दीजिए पीछैं तिनकों परस्पर गुणिए। जैसें तिन गुण्य गुणकारनि विषै चौसठिका संभेदन करि च्यारि गुणा सोलह लिख्या। बहुरि पूर्वै च्यारिका अंक था ताकों इस च्यारिका अंक करि गुणें सोलह भए। ऐसैं कीएं ऐसा १६।१६।१६।२ राशि भया इनकों परस्पर गुणें भी इक्यासीसै बाणवै होइ। ऐसैं विधान जानना। संभेदनादि करनेका प्रयोजन इस शास्त्र विषै आवैगा तिसतैं इहां स्वरूप दिखाया है। ऐसैं वा अन्य प्रकार भी गुणन विधान जानना। बहुरि इहां इतना जाननां गुण्यगुणकार विषै कोई राशि विषै एक घटाईए वा बधाईए तो अन्य राशि एक ही होइ तौ तितनेही घटैं बधैं। अर अन्य राशि बहुत होइ तौ तिनकों परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटैं बधैं। जैसें चौसठि करि एकसौ अठाईसकों गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ अर जो चौसठिमैंस्यों एक घटाईए बधाईए तौ तिस प्रमाणमैंस्यौ एकसौ अठाईस घटैं बधैं। अर एकसौ अठाइसमैंस्यों एक घटाए बधाए चौसठि घटैं बधैं। बहुरि जैसें च्यारि सोलह चौसठि दोय ऐसैं गुण्य गुणकार होइ तिनकों परस्पर गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ। बहुरि जो सोलहमें एक घटाए बधाए अन्य राशि च्यारि चौसठि दोय इनकों परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटैं बधैं। बहुरि एक घटाए बधाए जेता प्रमाण घटै बधै तहां आधा आदि वा दोय आदि घटाए बधाए तिस प्रमाणतैं आधा आदि

वा दूणा आदि प्रमाण घटै बधै ऐसा जानना। ऐसैं और भी विशेष अनेक प्रकार हैं। ते यथासंभव जानने। बहुरि भाग देइ प्रमाण ल्यावनेका नाम भागहार है। जैसैं प्रकृति विषैं टकानिके रुपैये करिए। बहुरि राशिके घट करनेकी पद्धति है। सो भाग हार रूप जाननी। जैसे दोयसैका आठ बट कीए पचीस पाया तहां दोयसैकों आठका भाग हार जानना अर जाकों भाग दीजिए ताका नाम भाज्य है वा हार्य है। जाका भाग दीजिए ताका नाम भाजक वा हार वा भागहार इत्यादि कहिए हैं। बहुरि भाग दीए राशिका नाम भक्त वा भाजित इत्यादि कहिए। बहुरि लिखनेमें भाज्यकों ऊपर लिखिए भाजककों ताके नीचैं लिखिए। जैसैं इक्यासीसै बाणवैका चौसठिका भागकों ऐसैं लिखिए [illegible]। अब याका विधान कहिए हैं—भाज्य राशिके अंतादिक जेते अंकनिकरि भाजक राशितैं प्रमाण बधता होइ तितने अंकरूप राशिकों भाजकका भाग दीजिए। बहुरि जिस अंक करि भाजककों गुणैं जाकों भाग दीया था तामैं घटाइ अवशेष तहां लिख दीजिए अर वह पाया अंक जुदा लिखिए। बहुरि जेते भाज्यके अंक रहे तिनके अंतादि अंकनिकों तैसैं ही भाग देइ जो अंक आवै ताकों तिस पाया अंकके आगैं लिखिए। ऐसैंही यावत्‌सर्व भाज्यके अंक निःशेष होइ तावत् विधान करै तहां पाए अंकनिकरि जो प्रमाण आवै सो तहां भाग दीए जो राशि भया ताका नाम लब्धराशि है ताकर प्रमाण जानना। इहां उदाहरण। इक्यासीसै बाणवैकों चौसठिका भाग दीया [illegible] तब याकों दोय आदि अंक करि गुणें तौ बहुत प्रमाण होइ तातैं एक करि गुणें चौसठि हूवा ताकों इक्यासीमैं घटाय तहां सतरह लिख्या अर पाया अंक एका जुदा बहुरि वह राशि ऐसा १७९२ भया तहां आदि तीन अङ्क करि एकसौ गुण्या भाजकतैं बधता प्रमाण होइ ताकों चौसठिका भाग दीजिए [illegible] तब तीन आदिकरि ताकों गुणें जो बधता प्रमाण होइ तातैं भाजककों दोय करि गुणें एकसो अठाईस होय सो घटाए तहां इक्यावन रह्या सो लिख्या अर पाया अंक दूवा तिस एकाके आगैं लिख्या। बहुरि वह राशि ऐसा ५१२ भया ताकों चौसठिका भाग दीजिए [illegible] तहां ताकों आठ गुणा कीएं पांचसै बारह होइ सो भाज्यमैंस्यौं घटाए राशि निःशेष होइ अर पाया अंक आठ तिस दूवाके आगैं लिख्या ऐसैं पाया अंकनिकरि लब्धराशि एकसौ अठाईस होइ ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि जहां भाग टूटि जाय भाजककों किसी अंक करि गुणें भाज्यके अंक आये पहलैं ही अंक निःशेष होइ जाय तहां अंक घटनेनैं भाग टूट्या कहिए सो जहां भाग टूटै तहां पाया अंकके आगैं बिंदी लिखि बहुरि तैसैं विधान करना। जैसैं छह हजार च्यारिसै चोईसकों आठका भाग दीया [illegible] तहां चौसठिकों आठका भागदीएं आठ पाया सो आठकों आठकरि गुणें चौसठि होइ सो चौसठिमैं घटाएं निःशेष भया तहां पाया अंक आठके आगैं बिंदी लिखि बहुरि चौईसकों आठका भाग दीएं तीया पाया सो लिख्या तब लब्धराशिका प्रमाण आठसै तीन आया। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि कहीं भाग देने भाज्यराशि निःशेष न होइ कि अवशेष रहिजाय तहां लब्धराशि प्रमाणके आगैं अवशेषकों भागहारकर भाग लिख देना। जैसैं इक्यासीसै चौराणवैकों चौसठिका भाग दीया [illegible] तहां

दूणा करि तहां आठ छठा भाग मिल्या ८/६ । २/६ या विषैं दोय छठा भाग मिल्याएं दश छठा भाग तिनका जोड भया । याका दोय करि अपवर्तन कीएं पांच तीसरां भाग प्रमाण हो हैं । अथवा छह हारनिकौं आधा कीएं तीन हार होइ तब समान छेद होइ तातैं छह हारनिकौं अर याके दोय अंशनिकौं आधा करि तहां एकका तीसरा भाग लिख्या ४/३ । १/३ याकौं च्यारि तीसरा भाग विषैं मिलाएं पांच तीसरा भाग मात्र प्रमाण आया । बहुरि हजार चवालीसवां भाग विषैं दोयसै बाईसवां भाग पचीस ग्यारहवां भाग घटावना होय १०००/४४ । २००/२२ । २५/११ तहां बाईसकौं दूणा कीए ग्यारह, ग्यारहकौं चौगुणा कीएं समान छेद होइ। तातैं दोयसै अंश अर बाईस हार इनके दूणे कीए च्यारिसै चवालीस भाग भए अर पचीस अंश ग्यारह हार इनकौं चौगुणे करिए सब चवालीस भाग भए १०००/४४ । ४००/४४ । १००/४४ बहुरि च्यारिसै अर सब जोडें पांचसै भए सो हजारमें घटाएं अवशेष राशि पांचसै चवालीसवां भाग हो है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । इहां इतनो जाननां । अंश अर हार इन दोऊनिकौं समान प्रमाण करि गुणें समानका भाग दीएं जेतेका तेताही प्रमाण रहै है । जैसैं जो पंद्रह आठवां भागका प्रमाण सोई दोयसै सत्तरि एकसौ चवालीसवां भागका प्रमाण है । दोऊ जायगा अष्टमांश करि हीन दोय प्रमाण हैं । इहां अंश अर हारनि विषैं दोऊनि विषैं अठारहका गुणाकार वा भागहार है । बहुरि समान छेद करनेका प्रयोजन यहु है सो समान छेद भए पीछैं समानरूप अंश होइ जाय तहां पीछैं अंशनिकौं अंशनि विषैं मिलावना होइ तौ जोड दीजे । घटावना होइ तौ घटा दीजे । बहुरि जहां कोई राशिकै हार न होय तहां हारका प्रमाण एक कल्पना । जातैं ऐसा कह्या है 'कल्प्यो हरो रूपमहाररारोः' जैसैं दश अर पांच तृतीय भागका समछेद करनां होइ तहां दशके नीचैं एकका हार लिखना १०/१ । ५/३ बहुरि पूर्वोक्त विधान कीएं तिनका जोड पैंतीस तृतीय भाग आया । अर दश विषैं पांच तृतीय भाग घटाएं अवशेष पचीस तृतीय भाग प्रमाण आवै है । बहुरि जहां ऐसी राशि गुणकारादि विधान विषैं होइ तहां पहलैं ऐसैं विधान करि पीछैं गुणनादि करनां । जैसैं गुणकारादि विषैं कोई राशि एकका सोलहवां भाग अधिक पंद्रह प्रमाण होइ तहां समच्छेद विधानतैं पंद्रह विषैं एकका सोलहवा भाग जोडें दोयसै इकतालीसका सोलहवां भाग हो है सो तहां स्थापि गुणनादि करनां। बहुरि भिन्न गुणकार विषैं गुण्य गुणकारकौं अंशनिका अंशनि करि अर हारनिका हारनि करि गुणन करनां । जैसैं पंद्रह आठवां भागका पाच तृतीय भाग करि गुणना होइ १५/८ × ५/३ तहां पंद्रह अंशनिकौं पाच अंश करि गुणें पिचहत्तरि अंश होइ अर आठ हारकौं तीन हार करि गुणें चौईस हार होइ ऐसैं तिनका गुणन कीएं पिचहत्तरि चौईसवां भाग आया । बहुरि एक हजारकौं दोय तृतीय भाग तीन दशवां भाग करि गुणनां होइ तहां एक हजारकै भाग हार नाहीं हैं तातैं तहां एक भागहार करि १०००/१ । २/३ । ३/१० तहां अंशनिकौं अंशनिकरि हारनिकौं हारनि करि परस्पर गुणन कीएं छह हजारका तीसवां भाग आया दोयसै है । बहुरि एकका तृतीय भागकौं एकका अष्ट भाग करि गुणना होइ तहां पूर्वोक्त विधानतैं एकका चौईसवां भाग प्रमाण आवै है । इहां इतना जाननां एकतैं हीन करि गुणन कीएं गुण्य राशिका प्रमाणतैं घटता प्रमाण

आवै है। बहुरि जैसें एकका चौथा भाग अधिक दोयकों पांच करि गुणनां होइ तहां समछेद विधानतैं दोय विषै एकका चौथा भाग जोड़ें इग्यारीका चौथा भाग भया अर पांचके भाग हार नाहीं है। तहां एक भाग हार कल्पि पूर्ववत् गुणन कीएं ग्यारिसें पांचका चौथा भाग प्रमाण हो है। ऐसें ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न भाग हार विषै भाज्यके अंश हार होंइ तिनकों तौ तैसें ही रखिए अर भाजकके अंश हार होंहि तिनकों पलटि दीजिए। अंशनिकों हार कीजिए अर हारनिकों अंश कीजिए। ऐसें स्थापि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुनिए यौं करते जो प्रमाण आवै सो लब्ध राशि जाननां। जैसें पिचहत्तरि चौईसवां भागकों पांच तृतीय भागका भाग देना ७५।५ २४।३ तहां भाजकके पांच अंशनिकों हार कीजिए अर तीन हारनिकों अंश कीजिए ७५।३ २४।५ बहुरि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुणन कीजिए तब दोयसै पचीसकों एक सौ बीसका भाग आया। तहां पंद्रह करि अपवर्तन कीएं पंद्रह आठवां भाग प्रमाण लब्धराशि आवै है। बहुरि दोयसैकों दोय तिहाई अर तीन दशव भागका भाग देनां २००।२।३ १।३।१० तहां पूर्ववत् दोऊ भाजकनिके अंशहारानिकों पलटनां अर दोय सैके हार है नाहीं तातैं तहां एक हार कल्पनां २००।३।१० १।२।३ ऐसैं स्थापि अंशनिका अंशनि करि हारनिका हारनि करि गुणन कीए छए हजारका छठा भाग आया सो एक हजार लब्धि राशि जाननां। बहुरि जैसें एकका चौईसवां भागकों एकका आठवां भागका देनां १।१ २४।८ तहां पूर्ववत् भाजकके अंशहार पलटि १।८ २४।१ गुणन कीएं आठका चौईसवां भाग हो है। बहुरि इहां आठ करि अपवर्तन कीएं एकका तृतीय भाग मात्र लब्धराशि हो है। इहां इतनां जाननां एकतैं घाटिका भाग दीएं भाज्य राशितैं लब्धराशिका प्रमाण बहुत आवै है। बहुरि जैसें दोयसैकों सात सोलहां भाग अधिक सोलहका भाग देना होइ तहां दोयसैके नीचें भागहार नाहीं तातैं तहां एक भागहार कल्पना अर सात सोलहां भागकों सोलह विषै समछेद विधानतैं जोड़ें दोयसै तरेसठिका सोलहां भाग भया सो लिखनां २००।२६३ १।१६ बहुरि भाजकके अंशहार पलटि पूर्ववत् गुणन कीएं बत्तीससैंकों दोयसै तरेसठिका भाग आया सो लब्धराशि जाननां। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्नवर्ग विषै जेतेका वर्ग करनां होइ ताका अंश अर हार दोऊ दोय जायगा मांडि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां जैसें पचीस छठा भागका वर्ग करना तहां तिस प्रमाण दोय राशि मांडि २५।२५ ६।६ अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन कीएं छसै पचीसका छत्तीसवां भाग भया ताका तेरह छत्तीसवां भाग अधिक सतरह प्रमाण वर्ग भया १७।१३ ३६ बहुरि एकका आठवां भागका वर्ग करना १।१ ८।८ तहां पूर्ववत् विधान कीएं ताका वर्ग एकका चौसठिवां भाग हो है। बहुरि दोयका आठवां भाग अधिक तीनका वर्ग करनां तहां समछेद करि तिनकों जोड़ें छब्बीसका आठवां भाग भया ताका पूर्ववत् विधान कीएं छसै छिहत्तरिका चौसठिवां भाग भया ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न घनविषै जेतेका घन करना होइ ताका अंश अर हार दोऊ तीन जायगा स्थापि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करना। जैसें पचीसका चौथाईका घन करनां होइ त

तीह प्रमाण तीन राशि स्थापि ३।३।३ अंशनिकौं अंशनिकरि हारनिकौं हारनिकरि गुणें तेरह हजार छसै पचीसका चौसठिवां भाग प्रमाण घनराशि हो है। १३६२५/६४ बहुरि एकका आठवां भागका घन कीएं १।१।१ पूर्ववत् विधानतें एकका पांचसै बारह्वां भागमात्र १/५१२ घनराशि हो है। बहुरि चतुर्थ भाग अधिक दोयका घन करनां। तहां समछेद करि जोडें नवका चतुर्थ भाग भया ताका पूर्ववत् घन कीएं ९।९।९ सातसै गुणतीसका चौसठिवां भाग मात्र ताका घन भया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न वर्गमूल विषैं जाका वर्गमूल करना होइ ताके अंशनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तौ ताके वर्ग मूलविषैं अंश जाननां। अर हारनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननां। इहां भी वर्गमूल काढनेविषै विषम समकी सहनानी करि अंत विषम विषैं वर्ग घटावनां इत्यादि पूर्वं विधान कह्या सोई जाननां। जैसैं छसै पचीसका छत्तीसवां भागका ६२५/३६ वर्गमूल करना तहां पूर्ववत् विधान कीएं छसै पचीस अंशनिका वर्गमूल पचीस सो तौ अंश अर छतीसका वर्गमूल छह.सो हार ऐसैं ताका वर्गमूल पचीस छठा भाग मात्र २५/६ आवै है। बहुरि जहां राशि निःशेष न होय तहां अवशेषके अंश करने जैसैं दोयसैका छठा भागका वर्गमूल करना होइ तो पूर्वोक्त विधानतें दोयसैका वर्गमूल चौदह अर किंचिदून च्यारिका अठाईसवां भागमात्र आवै है। तहां अपवर्तन कीएं एकका सातवां भाग मात्र भया ९९।१ इहां समछेद करि जोडें किंचिदून निन्याणवैका सातवां भाग मात्र आया सो ९९/७ तौ अंश जाननां अर छहका वर्गमूल किंचिदून दोय अर दोयका चौथा भाग आवै है। इहा भी अपवर्तन करि अर समछेदतें जोडै पाचका दोय भाग मात्र आवै है सो हार जाननां ५/२ अर इहा निन्याणवैका पांच अर सात दोऊ हार भए तातैं तिनकौं परस्पर गुणें पैंतीस तौ हार हूवा अर भागहारका भागहार राशिका गुणकार होइ इस न्याय करि निन्याणवैकौं दोय करि गुणें एक सौ अठ्याणवै अंश हूवा। ऐसैं तिस राशिका वर्गमूल किंचित ऊन एकसो अठ्याणवैका पैंतीसवां भागमात्र हो है। १९८/३५ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न घनमूल विषैं जाका घनमूल काढना होइ ताके अंशनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तो ताके घनमूलके अंश अर हारनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननें। इहां भी घनमूल काढनेका विधान पूर्वै जैसैं घन अघनकी सहनानी करि अंत घनस्थानतैं घन घटावनां आदि विधान कह्या था सोई जाननां। इहां उदाहरण–जैसैं च्यारि हजार छिनवैका सताईसवां भागका घनमूल काढना होइ ४०९६/२७ तहां पूर्वोक्त विधानतैं च्यारि हजार छिनवै अंशनिका घनमूल काढें सोलह आए सो तो अंश अर सत्ताईसका घनमूल काढें तीन हार भए ऐसैं ताका घनमूल सोलहका तृतीय भागमात्र आया १६/३ बहुरि जहां राशि निःशेष न होइ तहां अवशेष विषैं अंश कल्पना जैसैं वर्गमूल विषैं कही थी तैसैं इहां यथा संभव करना। या प्रकार भिन्न परि कर्माष्टक जानना॥ अब शून्य परिकर्माष्टक कहिए हैं। इहा बिंदीका संकलनादि जाननां तहां संकलन विषैं अंक अर बिंदीका जोड दीए अंक ही रहै कछू बधै नाहीं। जैसैं पचावन विषैं दश जोड़े एकस्थानीय पाचा विषैं बिंदी जोडें पाच ही रह्या अर दशस्थानीय पांचा अर एका जोडें छह भया ऐसैं पैंसठि हो है। अर बिंदी विषैं बिंदी जोडें बिंदी ही रहै

जैसें दशें विषै बीस जोडिए तहा एकस्थानीय बिंदीविषै बिंदी जोडे बिंदी होइ। अर दशस्थानीय एक अर दोय जोडें तीन होइ ऐसें तिनका जोड तीस हो है। बहुरि व्यवकलन विषै अंक विषै बिंदी घटाएं अंक ही रहै। कछु घटै नाहीं जैसें पैंसठि विषै दश घटाएं एकस्थानीय पांचा विषै बिंदी घटै पांच ही रहा अर दशस्थानीय छका विषै एक घटै पांचा भया ऐसें अवशेष पचावन रहे हैं। बहुरि बिंदी विषै बिंदी घटाएं बिंदी रहै है। जैसे तीस विषै दश घटाएं एकस्थानीय बिंदी विषै बिंदी घटाएं बिंदी रहै। अर दशस्थानीय तीन विषै एक घटाएं दूवा रह्या अवशेष बीस रहै है। बहुरि गुणाकार विषै बिंदीकों अंक करि वा अंककों बिंदी करि गुणें बिंदी ही हो है। जैसें पचासकों पांचकरि गुणना ५०।५। तहां गुण्यका अंत अंक पांचनाकों गुणाकार पांच करि गुणें पचीस भया अर ताके आगें बिंदीकों पांचकरि गुणे बिंदी भई ऐसें दोयसै पचास भया। अथवा जैसें पांचकों बीस करि गुणना ५।२०। तहां दूवा करि पांचकों गुणे दश भया अर आगें बिंदी करि पांचकों गुणें बिंदी भई ऐसें एक सौ हूवा। बहुरि बिंदीको बिंदीकरि गुणें बिंदी ही होइ। जैसें बीसकों तीस करि गुण्या तहां दूवाकों तीस करि गुणें साठि हूवा। अर बिंदीकों गुणें बिंदी भई सो आगैं लिखी ऐसें छसैं भया। बहुरि गुण्यराशि अर गुणकार राशि-निके आगैं बिंदी होइ तौ तिन सर्व बिंदीनकों मिलाय करि आगैं लिखिए अर जे अवशेष गुण्य गुणकारनिके अंक रहे तिनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण आवै ताकों तिन बिंदीनिके पीछै लिखिए। ऐसें गुणित राशि आवै है। जैसें बीस अर पांचसै इनका गुणन करना २०×५०० तहां दोऊ राशिकी एक दोय बिंदी मिलाएं तीनं बिंदी भई सो आगे लिखी। अर दूवा पांचकों परस्पर गुणें दशभया सो तिनके पीछै लिख्या ऐसें गुणित राशि दश हजार प्रमाण आया। बहुरि जैसें आठ अर दोयसै अर पंद्रह लाख परस्पर गुणन करना ८×२००×१५०००००। तहां इनकी बिंदी मिलाएं सात बिंदी भई सो आगैं लिखी अर अंकनिकों परस्पर गुणे दोयसै चालीस हूवा सो पीछै लिख्या। ऐसें दोयसै चालीस कोडि प्रमाण गुणित राशि हो है। ऐसें ही अन्यत्र जानना। बहुरि भागहारविषै बिंदीकों अंकका भाग दीएं बिंदी ही होइ। जैसे पचासकों पांचका भाग दीया ५० तहां भाज्य राशिका पांचकों पांचका भाग दीए एका पाया सो लिख्या बहुरि ताके आगैं बिंदीकों पांचका भाग दीएं बिंदी होइ सो लिखी ऐसे लब्ध राशि दश आवै है। बहुरि अंककों केवल बिंदीका भाग दीएं अवक्तव्य प्रमाण है। जातैं एकतैं घटता प्रमाणका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितैं बधता होइ सो एकका लाखवां भागका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितैं लाख गुणा होइ। एककों कोडिवां भागका भाग दीएं कोडि गुणा होइ। ऐसे भागहार घटतैं लब्धराशि बधता होता जाय। जहां बिंदीका भाग दीया तहां भागहार अवक्तव्य-पनैं घटता भया तहां लब्धराशिका प्रमाण अवक्तव्य हो है। याकों खहर कहिए। या कहिए बिंदी सो है हर कहिए भागहार जाका ऐसा यहु राशि ताका कहिए। बहुरि बिंदीकों बिंदीका भाग दीएं बिंदी ही आवै है याका उदाहरण आगैं धर्मभूत पाकूनके बरणनविषै लिख्या है सो जानना। बहुरि जहां भाज्य वा भागहार राशिके आगैं बिंदी होय तहां जेती बिंदी भागहारके आगैं होय

तितनी बिंदीनका अपवर्तन करना । जैसैं बारह हजारको आठसैका भाग होइ [illegible] तहां दोय बिंदीनिका अपवर्तन कीएं एकसौ बीसकौं आठका भाग रह्या तहां लब्ध राशि पंद्रह आवै है ऐसें ही अन्यत्र जानना । बहुरि वर्ग अर घनविषैं गुणकारवत् विधान जानना । जातैं दोय जायगा समान राशि मांडि परस्पर गुनन कीएं वर्ग हो है । तीन जायगा राशी मांडि परस्पर गुनन किएं घन होइ है । जैसैं दोयसै एकका वर्ग चालीस हजार च्यारसै एक हो है, बहुरि एकसौ एकका घन दशलाख तीस हजार तीनसै एक हो है । बहुरि जिस राशिके आगैं बिंदी होय तिस राशिका वर्ग करना होय तौ अंकनिका वर्ग करि आगैं जेती बिंदी थी तिनतैं तिगुना बिंदी लिख देनी । जैसैं दोयसैका वर्ग करना होय तहां दोयका वर्ग च्यारि लिखि आगैं दोयतैं दूणी च्यारि बिंदी लिखनी अर तिनका घन करना होय तौ दोयका घन आठ लिखि आगैं दोयतैं तिगुनी छह बिंदी लिखनी । ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि वर्गमूल अर घनमूल विषैं पूर्वैं जैसैं सहनानी करि वर्गमूल घनमूल काढनेका विधान कह्या था सोई जानना । इहां जहां बिंदीकौं अंकका भाग [illegible] तहां बिंदी लिखि देना । जैसैं चालीस हजार च्यारिसै एकका वर्गमूल काढना होइ तहां [illegible] अंक [illegible] चौकाका मूल दोय लिख्या ताके आगैं सम बिंदी ताकौं पाया अंक दोय ताकौं [illegible] चौकाका भाग दीएं बिंदी पाई बहुरि इस बिंदीका वर्ग बिंदी ताकौं च्यारिमैं घटाएं [illegible] बहुरि अवशेष चौका सहित अविषम सम चालीस ताकौं जुदी पंक्ति विषैं [illegible] [illegible] दूणे [illegible] भाग दीएं एका पाया बहुरि अवशेष एका रह्या तिस विषैं एकका वर्ग [illegible] निःशेष भया । ऐसैं ताका वर्गमूल दोयसै एक हो है । बहुरि जैसैं दशलाख तीस हजार [illegible] एकका घनमूल काढना [illegible] तहां अंतधन एकका घनमूल एका लिखि एका दूरि [illegible] ताकौं पाया अंक एकाका वर्गतैं तिगुणा तीन ताका भाग दीएं बिंदी पाई [illegible] बहुरि ताके आगैं अघन [illegible] ताविषैं पाई जो बिंदी ताकौं [illegible] बिंदी [illegible] ताकौं तिगुणा किए [illegible] बिंदी ताकौं घटाएं [illegible] [illegible] । बहुरि इस अवशेष सहित आगैं घन [illegible] पाई बिंदी ताका घन [illegible] [illegible] । बहुरि इस सहित अविषम अघन तीनतैं [illegible] ताकौं जुदी पंक्ति [illegible] [illegible] तिगुणा [illegible] ताका भाग दीएं एका आया सो दशके आगैं [illegible] । बहुरि इस अवशेष सहित अविषम अघन [illegible] [illegible] तिगुणा [illegible] । बहुरि [illegible] आगैं घन [illegible] पाया अंक एकका घन एक [illegible] [illegible] घनमूल [illegible] हो है । बहुरि [illegible] वर्गमूल वा घनमूल [illegible] वर्गमूल [illegible] घनमूल [illegible] [illegible] घनमूल काढना [illegible] घनमूल [illegible]

हूवा आगै लिखनी । ऐसैं दोयसै वर्गमूल आया । बहुरि सत्ताईस हजारका घनमूल काढना होइ तहां घनमूल काढें तीया पाया अर सत्ताईस निःशेष हुवा । आगैं तीन बिंदी थी ताकी तिहाई एक बिंदी तीयाके आगैं लिखनी ऐसैं घनमूल तीस आया सो पूर्व विधानतैं भी ऐसैं ही सिद्ध हो है । परंतु सुगमताके अर्थि एक यहु भी विधान कह्या है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना । या प्रकार शून्य परिकर्माष्टक कह्यौ ॥

बहुरि अज्ञात राशि आदि जाननेके अनेक विधान गणित ग्रंथ विर्षे हैं सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि न कह्या । बहुरि त्रैराशिकका स्वरूप इस शास्त्र विर्षे प्रयोजन भूत जानि कहिए है । तहां प्रमाण फल इच्छा ए तीन राशि जानने । जिस प्रमाण करि जो फल निपजै सो तौ प्रमाण राशि अर फल राशि हैं । बहुरि जितनी अपनी इच्छा होइ ताका नाम इच्छा राशि है । इहां प्रमाण राशि इच्छा राशिकी तौ एक जाति है । अर फल राशिकी अन्य जाति है । सो ऐसैं ए तीन राशि स्थापि तिन विर्षे फल राशिकौं इच्छाराशि करि गुणिए बहुरि ताकौं प्रमाण राशिका भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो इहां लब्ध प्रमाण जानना । फल राशिकी अर इस लब्ध राशिकी एक जाति जाननी । इहां उदाहरण । जैसैं च्यारि हाथके छिनवै अंगुल होयं तौ दश हाथके केते अंगुल होयं । ऐसैं त्रैराशिक किया । इहां प्रमाण राशि हाथ च्यारि अर अर फल राशि अंगुल छिनवै अर इच्छा राशि हाथ दश । तहां दशकौं छिनवै करि गुणि च्यारिका भाग दीएं दोयसै चालीस अंगुल लब्ध राशि भया । बहुरि जैसैं तिहाई अधिक पंद्रह रुपैयानिका सवा पचीस मण अन्न आवै तौ आध पाव दश रुपैयोंका केता आवै इहां भिन्न गणित आश्रयतैं अंशनिकौं जोडें प्रमाण राशि छियालीसका तीसरा भाग फल राशि एकसौ एकका चौथा भाग इच्छा राशि इक्यासीका आठवां भाग प्र. $\frac{46}{3}$ । फ. $\frac{101}{4}$ । इ. $\frac{81}{8}$ इहां भिन्न गणित विधानतैं फलकौं इच्छा करि गुणें आठ हजार एकसौ इक्यासीका बत्तीसवां भाग भया याकौं प्रमाणका भाग दीएं चौईस हजार पांचसै तियालीसकौं चौदहसै बहत्तरिका भाग आया । ताका सोलह अर किंचिदून दोय तिण मात्र प्रमाण आया । ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि जहां जिस राशिका प्रमाण वधै फल थोरा होइ प्रमाण घटै फल बहुत होइ तहां व्यस्त त्रैराशिक हो है । इहां प्रमाण राशिकौं फल करि गुणि इच्छाका भाग दीएं लब्ध राशिका प्रमाण हो है । जैसैं जिस वस्तुका दोय वरस पुराणीका सौ रुपैया आवै तो दश वरस पुराणीका केता रुपैया आवै । इहां प्रमाण राशि दोयकौं फल राशि सौ करि गुणि इच्छा राशि दशका भाग दीएं बीस रुपैया आवै सो लब्ध-राशि जानना । ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि पांच राशि समराशि आदि विर्षे प्रमाणराशि संबंधी दोय तीन आदि राशि होय सो तो एक तरफ नीचैं नीचैं लिखिए अर वाहीके नीचैं फल राशि लिखिए । अर इच्छा राशिसम्बन्धी दोय तीन आदि राशि होइ सो दूसरी तरफ लिखिए । बहुरि प्रमाणका फल राशि होइ ताकौं इच्छा राशिकी तरफ लिखि दोऊ तरफ जे राशि होइं तिनका जुदा परस्पर गुणन करि बहुत प्रमाणकौं स्तोक प्रमाणका

१

भाग दीएं जो प्रमाण आवै सो इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां। इहां उदाह जैसें एक मास विषै सौ रुपैयोंका दोय रुपये व्याज आवै तौ पांच मासविषैं दोयसै पैंसठि योंका कितना व्याज आवैं। ऐसे पंचराशिक भया। तहां एक अर सौ तौ प्रमाण राशि त एक तरफ लिखै अर ताके नीचैं दोय फलराशी लिखै अर पांच दोयसै पैंसठि इच्छाराशि एक तरफ लिखै। १०० । २६५ बहुरि फलराशिकों तहांतैं दूसरी इच्छाकी तरफ लिखै १०० २६५ बहुरि परस्पर दोऊनिकों जुदे जुदे गुणें एक तरफ सौ भये एक तरफ छब्बी पचास भए। बहुरि बहुत राशिकों तुच्छ राशिका भाग दीएं साढा छब्बीस रुपैया आए इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां। बहुरि जो प्रमाणादि अंश अर हाररूप होइ तौ पूर्ववत् फल राशिकों पलटि पीछैं दोऊ तरफके हारनिकों परस्पर पलटि दीजिए। बहुरि दोऊ फके जुदे जुदे हार अंश होहिं तिनौ परस्पर करि गुणि बहुत राशिकों अल्पराशिका दीएं। लब्ध राशिका प्रमाण आवै है। इहा उदाहरण। जैसे—सवामास विषैं साढा रुपैयोंका आधा रुपैया व्याज आवै तौ साढा छह महीना विषैं सवाबारह रुपैयौंका व्याज आवै। इहां भिन्न गणिततै अंश अंशनिकों मिलाएं प्रमाणराशि पांचका चौथा अर पंद्रहका दूजा भाग भया फलराशी एकका दूजा भाग है इच्छा राशि तेरहका दूजा अर गुणचासका चौथा भाग भया। सो ऐसैं लिखि ५/४।१५/२।१/२।१३/२।४९/४ फलराशिकों पलटि हारनि पलटैं ऐसा भया ४/५।२/१५।२।१३/२।४९/४।१ बहुरि अंश हारनिका गुणन कीएं एक तरफ तौ बारहसै आए। एकतरफ पांच हजार छिनवै आया। बहुरि बहुत राशिकों अल्प राशिका भाग दीएं किं ऊन सवा च्यारि रुपैया लब्धराशि आया ऊनका प्रमाण एकका तीनसै भाग कीजै तामें एक भा मात्र जाननां। ऐसैंही अन्यत्र जानना। बहुरि इसही विधानतैं सप्तराशिक नवराशिक ए दशराशिक हो है। सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि नाहीं लिखें हैं। बहुरि मिश्रक व्यवहार विशेष प्रयोजन इहां नाहीं लिख्या हैं। कहीं प्रयोजन आवैगा तो तहां हीं वर्णन लिखैंगे॥

बहुरि श्रेढी व्यवहार लिखिए है। जहा अनेक राशिनि विषैं समानरूप वधता व घट प्रमाण होइ अथवा गुणकार होइ तहा श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है। जैसें आ विषैं पांच अर स्थान प्रति च्यारि च्यारि वधता वा घटता होइ अथवा च्यारिका गुणाकार हो ऐसैं दशस्थान होइ तहां आदि श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है तहा संज्ञा कहिए है जो आदि विषैं प्रमाण होइ ताका नाम आदि हैं वा मुख है वा प्रभव है। बहुरि अंत ि प्रमाण होइ ताका नाम अंत है वा भूमि है। बहुरि स्थान स्थान प्रति जितना वधै या ताका नाम चय है वा उत्तर है। बहुरि जो स्थान स्थान प्रति गुणकार होय तौ जेता गुणकार होय ताका नाम उत्तर हैं वा गुण है। बहुरि चयकरि वधता या घटता अथवा गुण कारूप जेते सादिगत स्थान होइ ताका नाम पद है या गच्छ है। बहुरि सर्व स्थाननिकै जोड़का नाम सर्वधन है वा पदधन है। बहुरि चयनिकों जुदे राशि आदि स्थान प्रमाण सर्व स्थान स्थान जिनका जोड़का नाम आदि धन है। बहुरि सर्व चयनिकों जोड़ें जो प्रमाण होय

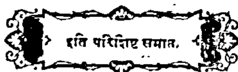
ताका नाम धनधन है वा उत्तरधन है। बहुरि मध्यस्थान विषैं जेता प्रमाण होइ ताका नाम मध्यधन है। इत्यादि ऐसैं संज्ञा जाननी। बहुरि अनेक प्रमाण जाननेके साधनभूत करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषैं कहे हैं तहां जानने। अर इस शास्त्र विषैं जाका प्रयोजन आवैगा ताका करणसूत्र इन शास्त्र ही विषैं लिखे हैं। तातैं जहां प्रयोजन आवे तहां ही तिनकौं जानि लैने। बहुरि क्षेत्र व्यवहार कहिए है। इस शास्त्र विषैं क्षेत्रका अधिकार है तातैं क्षेत्रव्यवहारका ज्ञान अवसि चाहिए। तहां प्रथम संज्ञा कहिए है। लंबाई चौडाई उचाई इन तीनों विषैं जहां एक ही की विवक्षा होइ दोयकी न होइ तहां सूची क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां दोयकी विवक्षा होइ एककी न होइ तहां प्रतरक्षेत्र कहिए वा वर्गरूप क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां तीनोंकी विवक्षा होइ तहां खात क्षेत्र कहिए वा घन क्षेत्र कहिए। ऐसैं तीन प्रकार क्षेत्र कह्या। तिनमैं सूची क्षेत्र विषैं तौ आकारादि विशेष वा क्षेत्रफलादिक विशेष हैं नाहीं। जेता लंबाईका प्रमाण सोई तिस सूची क्षेत्रका प्रमाण है। जैसैं--पचीस हाथ डोरि कहिए। बहुरि प्रतर क्षेत्र विषैं आकार विशेष है सो कहिए है। तीन च्यारि कूणे जिनमैं पाईए तिन क्षेत्र-निका क्रमतैं त्रिकोण चतुःकोण नाम जानने। बहुरि एक कोणतैं दूसरा कौण पर्यंत जेता क्षेत्र होइ ताका नाम भुजा है सो त्रिकोण क्षेत्रविषै तीन भुजा हो हैं तातैं ताका नाम त्रिभुज भी कहिए। चतुःकोण विषैं च्यारि भुजा हैं तातैं ताका नाम चतुर्भुज भी कहिए। बहुरि इन भुजनि विषैं काहूका नाम भुज वा काहूका नाम कोटि भी कहिए है। जैसैं त्रिभुज क्षेत्र विषैं एक भुजाकौं कोटि कहिए दोय भुजानिकौं भुज कहिए। चतुर्भुज क्षेत्र विषै सन्मुख दोय भुजानिका नाम कोटि कहिए। अवशेष दोय भुजानिका नाम भुजा कहिए। बहुरि इन त्रिभुज आदि क्षेत्रनिका तिस्र चतुस्र आदि भी नाम है। भाषा विषैं तिंकूटा चौकोर इत्यादि नाम हैं। बहुरि ए त्रिभु-जादिक क्षेत्र अनेक प्रकार हैं। तहां जिस त्रिभुज क्षेत्रकैं दोय भुजा सूधी एक टेढी ऐसी........ होय ताकौं जाति त्रिभुज कहिए। तहां जो यहु टेढी भुजा है ताका नाम कर्ण है वा श्रुति है। जैसैं पांच हाथ ऊंचा वासके उपरितैं सूत्र लगाय तिस वासतैं सात हाथ परैं पृथ्वी विषैं सूत्र स्थाप्या तिस सूत्रका जेता प्रमाण ताका नाम कर्ण जानना। बहुरि जहां एक भुज सूधी दोय टेढी होय तहां........सिंघाडाकासा ऐसा त्रिभुज क्षेत्र होइ। याका मध्यतैं दोय भाग करिए सो दोय जाति त्रिभुज होइ जाय। बहुरि इन तीनौं भुजानि विषैं समान प्रमाण होइ वा अधिक हीन होइ तौ तहां सम विषम संज्ञा यथासंभव जाननी। बहुरि चतुर्भुज क्षेत्र विषैं जहां समान प्रमाण लीएं च्यारौं भुज ऐसैं होइ........ताका नाम सम चतुर्भुज कहिए। बहुरि लंबाई चौडाई विषैं एकका प्रमाण हीन एकका अधिक ऐसा........होइ ताका नाम आयत चतुरस्र कहिए। बहुरि जहां च्यारौं भुजानि विषैं काहूका प्रमाण हीन काहूका अधिक ऐसैं........होइ ताका नाम विषम चतुर्भुज है। बहुरि जिस क्षेत्रके पांच कूणे छह कूणे आदि होइ ताका नाम पंचकोण षट्कोण कहिए। भाषाविषै पच पहलू छह पहलू इत्यादि नाम हैं। तहां पच कोणादि क्षेत्रनि विषैं सम प्रमाण भएं समसंज्ञा विषम प्रमाण भएं विषम संज्ञा इत्यादि संज्ञा जाननी। इन क्षेत्र-

निके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम परिधि है। बहुरि जहां गोलाकार लिये क्षेत्र ऐसा होइ। ताका नाम वृत्त क्षेत्र वा गोलक्षेत्र कहिए। तिस क्षेत्र विषै बीचमें जेता प्रमाण ताका नाम इहां विष्कंभ है वा विस्तार है वा व्यास है। बहुरि इसके गिरदका जेता प्रमाण होइ ताका नाम परिधि है। बहुरि जो गोलक्षेत्रके चौगिरदा गोलक्षेत्र ऐसा० होइ तहां याके अभ्यंतर तटतैं बाह्य तटपर्यंत जेता प्रमाण होइ ताका नाम वलय व्यास है। बहुरि अभ्यंतर दोऊ तटनिके बीचि जेता प्रमाण होइ ताका नाम अभ्यंतर सूची व्यास है। अर बाह्य दोऊ तटनिकै बीचि जेता अंतराल ताका नाम बाह्य सूची व्यास है। बहुरि अभ्यंतर तटके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम अभ्यंतर परिधि है। बाह्य तटका गिरदका जो प्रमाण ताका नाम बाह्य परिधि है। इत्यादि संज्ञा जाननीं। बहुरि जो धनुषके आकार ऐसा........क्षेत्र होइ ताका नाम धनुषाकार क्षेत्र कहिए वा चापक्षेत्र कहिए तिसक्षेत्र विषै जो सूधा प्रत्यंचावत् लंबाईका प्रमाण ताका नाम जीवा है वा ज्या है। बहुरि तिस जीवाकी एक तरफतैं लगाय दूजी तरफ धनुषकी पीठिवत् आधा गोल क्षेत्रकी परिधि रूप गिरदका प्रमाण ताका नाम धनुःपृष्ट है। बहुरि तिस जीवाकी मध्यतैं लगाय धनुःपृष्टका मध्यवर्त्तपर्यंत बाणवत् सूधा क्षेत्र ताका प्रमाणका नाम बाण है। बहुरि जो जीवाकी चौडाई बहुत होय तौ तिस जीवाकी छोटा तटतैं बड़ातट दोऊ तरफ जितनां जितनां बधता होइ ताका नाम चूलिका है। बहुरि बड़ा तटतैं छोटा तटपर्यंत जेता परिधिका प्रमाणरूप धनुः पृष्ट रूप होय ताका नाम पार्श्वभुजा है। इत्यादि संज्ञा जाननी। बहुरि अन्य अनेक आकार लीएं क्षेत्र हैं तिनका स्वरूप संज्ञादिक गणित शास्त्रनि विषै क्षेत्रव्यवहार विषै कह्या है वा इस शास्त्र विषै जाका वर्णन होइगा ताका तहांही स्वरूप संज्ञादिक लिखेंगे ते जाननें। बहुरि ऐसैं जे ए क्षेत्र हैं तिनिका विवक्षित योजनादिरूप चौडा लंबा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए ताका नाम क्षेत्र फल है। प्रवृत्ति विषै याका नाम मुकसर करना कहिए हैं। जैसैं च्यारि हाथ लंबा पांच हाथ चौडा क्षेत्र ताका क्षेत्रफल बीसहाथ हूवा। तहां ऐसा भाव जाननां। तिसक्षेत्रके एक हाथ लंबा एक हाथ चौडा ऐसे खंड कीजिए तौ बीस होइ। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। ऐसैं प्रतर क्षेत्रका स्वरूप संज्ञादिक कहे॥ अब घन क्षेत्रका कहिए है। जहां ऊंचाई तथा ओंडाई भी होइ तहां घन क्षेत्रहो हैं ऊंचाई ओंडाईका भाव एक है। नीचेतैं ऊपरकी विवक्षा होइ तौ ऊंचाई कहिए। ऊपर तैं नीचेकी विवक्षा होइ तौ ओंडाई कहिए। सो याका नामा वेध है वा खात है वा उदय है इत्यादि नाम हैं। बहुरि जो याका क्षेत्रफल करिए ताका नाम खात फल वा घन फल जानना। इहां विवक्षित चौडा लंबा ऊंचा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए। जैसैं च्यारि हाथ लंबा च्यारि हाथ चौडा पांच हाथ ऊंचा क्षेत्रका खात फल अस्सी हाथ होइ तहा ऐसा भाव जाननां। एकहाथ लंबा एक हाथ चौडा एक हाथ ऊंचा ऐसे खंड कीजिए तौ अस्सी होइ। बहुरि जो समभूमि ऊपरि अन्नादिकका राशि करिए ताका क्षेत्रफलको सूची फल कहिए है। बहुरि कोई गिदडीके आकारि क्षेत्र होइ कोई बगडाके आकार होइ इत्यादि घनरूप विषै भी अनेक आकार पाईए है। ऐसे ही और भी संज्ञा स्वरूप जानना। बहुरि जो क्षेत्र अनेक आकार लीए होइ तिसक्षेत्र विषै

संभवते जुदे जुदे आकार कल्पना करने । जैसें ऐसा........आकार रूप क्षेत्र विषैं एक चतुर्भुज एक त्रिभुज........ऐसैं दोय खंड कल्पने बहुरि तिनं खंडनिके जुदे जुदे क्षेत्रफल करि जोडें तिसका क्षेत्रफल हो है । बहुरि कहीं त्रिभुज क्षेत्र विषैं अनेक प्रकार खंड कल्पना करि तिनके क्षेत्रफल करि जोडि तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहिये है। ऐसें क्षेत्र व्यवहार विषैं केती इक संज्ञा वा तिनका स्वरूप इहां कह्या बहुरि इन विषैं किसीका प्रमाण जानि किसीका प्रमाण जाननेके अर्थि करणसूत्र हो हैं। जैसें त्रिभुजक्षेत्र विषैं भुजकोटि कहि करणं जाननेकौं करणसूत्र कहिए। वा गोल क्षेत्रविषैं व्यास कहि परिधि जाननेकौं करणसूत्र कहिए सर्व विधि क्षेत्रनि विषैं प्रमाण जानि क्षेत्र फल जाननेकौं करणसूत्र कहिए । सो करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषैं कहे हैं । अर इस शास्त्र विषैं जिनका प्रयोजन पाईए है ते करणसूत्र इस ही शास्त्र विषैं भी कहे हैं । सो जहां वर्णन होइगा तहां तिनकौं जाननें । ऐसैं क्षेत्र व्यवहार कह्या । या प्रकार कछू गणित वर्णन इहां लौकिक गणित अपेक्षा कीया ॥

बहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा अलौकिक गणितनिकी संदृष्टि वा संकलनादिकका संदृष्टिका वर्णन गोमट्टसार शास्त्रकी भाषा टीका विषैं संदृष्टि अधिकार कीया है तहां लिखी है सो तहां तैं जाननी । तहां विशेष प्रयोजन जानि विशेष लिखी है । इहां स्तोक प्रयोजन जानि स्तोकका वर्णन लिखिए है। तहां अलौकिक गणित लिखनेमें ऐसी संदृष्टि जाननी। सामान्यपनै संख्यातकी ऐसी....असंख्यातकी ऐसी....अनंतकी ऐसी ख। विशेषपनैं जघन्य संख्यात दोय ताकी ऐसी २ मध्यम संख्यातकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट संख्यातकी ऐसी १५ अथवा ऐसी १६ । इहां जघन्य परीतासंख्यात विषैं एक घटावनेकी ऊपर सहनानी है ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि जघन्य परीता संख्यातकी ऐसी १६ मध्य परीतासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीता संख्यातकी ऐसी २ जघन्य युक्तासंख्यातकी ऐसी २ यह ही आवलीकी सहनानी है । मध्य युक्तासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तासंख्यातकी २ जघन्य असंख्यातासंख्यातकी ऐसी ४ सोई प्रतरावलीकी सहनानी है । मध्य असंख्यातासंख्यात विषैं आठ उपमा प्रमाण पाईए है । तिन विषैं पल्यकी ऐसी प सागरकी ऐसी सा सूच्यंगुलकी ऐसी २ प्रतरांगुलकी ऐसी ४ घनांगुलकी ऐसी ६ जगच्छ्रेणीकी ऐसी—जगत्प्रतरकी ऐसी=घनलोककी ऐसी ≡ बहुरि इहां ही जगच्छ्रेणीकौं सातका भाग दीएं श्रेणीरूप राजू हो है ताकी ऐसी ७ जगत्प्रतरकौं गुणचासका भाग दीएं प्रतर राजू हो है ताकी ऐसी ४९ घनलोककौ तीनसै तियालीसका भाग दीएं घनरूप राजू हो है ताकी ऐसी ३४३ बहुरि अन्य भेदनिकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी ऐसी २५५ अथवा ऐसी २५६ बहुरि जघन्य परीतानंतकी ऐसी २५६ मध्य परीतानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीतानंतकी ऐसी ज ज क जघन्य युक्तानंतकी ऐसी ज जु अ मध्य युक्तानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तानंतकी ऐसी ज जु अ व जघन्य अनंतानंतकी ज जु अ व मध्य अनंतानंत विषैं जीव राशिकी ऐसी १६ इहां भी समस्त जीव राशिकी ऐसी १६ सिद्ध राशिकी ऐसी ३ पुद्गल राशिकी ऐसी १६ ख अन्य भेदनिकी मध्य योग्य अनेक प्रकार उत्कृष्ट अनंतानंतकी केवलज्ञान प्रमाणरूप ताकी ऐसी (के. ऐसैं अलौकिक

गणित विर्षे संदृष्टि जाननी । बहुरि इनके संकलनादि विर्षे जैसैं लौकिक गणित विर्षे लिखनेका विधान कह्या तैसैं ही इहां जाननां । जैसैं पंच अधिक हजार ऐसैं लिखिए ५. तैसैं ही सूच्यंगुल अधिक जगछ्रेणीकों ऐसैं लिखिए २ । बहुरि जैसैं पांच गुणां हजार ऐसैं १०००।५ लिखिए तैसैं ही असंख्यात गुणा लोक ऐसैं लिखिए ≡ ᑫ इत्यादि जाननां । बहुरि राशि उक्त किंचित् मिलावनां होइ तहां ऊपरि ऊभी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचित् अधिक लोककी संदृष्टि ऐसी ≡ बहुरि राशि विर्षे किंचित् घटावना होइ तहां आगैं आडी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचित्-ऊन जीव राशिकी संदृष्टि ऐसी १६— बहुरि गुणकारादि विर्षे जैसैं लौकिक गणित विर्षे वर्णन किया है तैसैं ही जाननां । विशेष इतनां इहां जैसा जहां संभवै तैसा तहां अलौकिक संदृष्टि रूप प्रमाण जाननां । बहुरि कहीं अक्षरादि रूप सहनानी है । जैसैं अर्द्धछेदनिकी संदृष्टि ऐसी (छे) बहुरि अन्य अनेक प्रकार लौकिक संदृष्टि जाननी । ऐसैं अलौकिक गणित विर्षे सरूप दिखाया सो इस शास्त्रविर्षै जहां प्रयोजन आवैगा तहां लिखन होगा सो जाननां ॥



श्रीमन्नेमिचंद्राचार्यविरचित

त्रिलोकसार

पंडितवर श्रीटोडरमल्लकृत हिंदीभाषाटीका सहित।

दोहा—त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायक संत।
त्रिभुवनहितकारी नमों, श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥
तीनभवनके मुकुट मनि, गुन अनंतमय सुद्ध।
नमों सिद्ध परमातमा, वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥
तीनभुवनथिति जानिकै, आप आपमय होय।
यातैं भये विरक्त अति, नमों महामुनि सोय ॥ ३ ॥
तीनभुवन मंदिर विषै, अर्थ प्रकाशन हार।
जैनवचनदीपक नमों, ज्ञानकरन सुखकार ॥ ४ ॥
तीनभुवनमांहि जे रही, चैत्य चैत्यालय सार।
ते सब वंदौं भावजुत, सुभकारन सुखकार ॥ ५ ॥
ऐसे मंगलरूप सब, तिनके वंदे पांय।
अब किछु रचना करत हौं, नानाविधि सुखदाय ॥ ६ ॥

अथ मंगलाचरण करि श्रीमत् त्रिलोकसार नाम शास्त्रकी भाषाटीका करिए है। [illegible] टीका अनुसार लिए मूलशास्त्रका अर्थ लिखिए है।

कवित्त—तीनभुवन सारि जिनपतिको अति भक्तिभावतें करि नमस्कार,
ग्रंथ त्रिलोकसारकी टीका करनेको लिखिये सुखकार।
किंचिन्मात्र ज्ञानके धारी भव्य जीव जे हैं अधिकार,
तिनके संबोधनको कारण ऐसा जानहु अर्थविचार ॥ १ ॥

अडिल्ल—[illegible] सुरि भूरि गुणवंत है, [illegible] है।
जिनमततें विपरीत कुमतमत [illegible] ॥ २ ॥
[illegible]।
[illegible] ॥ ३ ॥

१ [illegible] पत्र यहां ही देख लें।

ऐसें संस्कृत टीकाकार मंगलाचरण करै है। श्रीमान् बहुरि काहूकरि हन्या न जाय ऐसें प्रतिमान जो मर्यादारूप प्रमाण ताकरि रहत बहुरि प्रतिपक्षी कर्मकरि रहत बहुरि इंद्रियजनितज्ञान रहित बहुरि इंद्रियवत् अनुक्रमतै जाननेकरि रहत ऐसा जो केवलज्ञानरूपी नीमान तैं युगपत् अवलोके हैं सकल पदार्थनिका समूह जिहि ऐसा, बहुरि संसारदुःखतें रहित है देवेंद्र मुनींद्र समूह जिहि ऐसा, बहुरि तीर्थकर प्रकृतिरूप पुण्यकी महिमाका माहात्म्यतें उत्पन्न भया है समवसरण आठ प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय आदि बहिरंग लक्ष्मीकी विभव जाके ऐसा, बहुरि निःशेष क्षीण हैं अठारह दोष जाके ऐसा, बहुरि सर्वांगपनेंकरि आलिंगनरूप करी है अनंत चतुष्टयादि गुण समूहरूप अंतरंग लक्ष्मी ताकरि प्रकट किया है परमात्मस्वरूप प्रभाव जाने ऐसा जो श्रीवर्द्धमान नामा तीर्थंकर देव तीह तों सर्व भाषामई दिव्यध्वनि करि जाका अर्थ किया है। बहुरि सात ऋद्धिनिकरि संपूर्ण जो गौतमस्वामी समस्त विद्याका परमेश्वर केवली तीह जाका ग्रन्थरचनाका विशेष रच्या है। बहुरि तिस अर्थका ज्ञान अर कवित्वादि विज्ञानकरि संयुक्त बहुरि पापतैं भयभीत ऐसे जु गुरु तिनकी परंपराका अनुक्रमनेंकरि विच्छेदरहित प्रवृत्तिरूप है। बहुरि मूल अर्थ अन्यथा होइ नष्ट न भया है तातैं केवल ज्ञानहीके समान है-ऐसा जु करणानुयोग नाम परमागम ताहि कालके अनुसार संक्षेपरूपकरि निरूपण करनेका है अभिप्राय जाका ऐसा जो भगवान् नेमिचंद्र नामा सैद्धांतदेव चारि अनुयोगरूपी चारि समुद्रनिका पारगामी सो चामुंडरायके संबोधनेके मिसकरि समस्त शिष्यजननिके संबोधनेके अर्थि त्रिलोकसार नामा ग्रंथकों रचतासता तासी आदिविषैं प्रथम ही निर्विघ्नपनैं शास्त्रकी समाप्तता होइ इत्यादि फलसमूहकौं विचार विशिष्ट जो अपना इष्टदेव ताहि स्तवै है;—

बलगोविंदसिहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरणं।
विमलयरणेमिचंदं तिहुवणचंदं णमंसामि ॥ १ ॥

बलगोविन्दशिखामणिकिरणकलापारुणचरणनखकिरणम्।
विमलतरनेमिचंद्रं त्रिभुवनचंद्रं नमस्यामि ॥ १ ॥

अर्थ—कहिये हैं। **नमस्यामि** कहिए नमस्कार करौ हौं। किसहिं नमस्कार करौ हौं। **विमलतरनेमिचंद्रं** विगत कहिए विनष्ट भया है मल कहिए द्रव्यभाव भेदकौं लिए आत्माके गुणका घातक कर्म वा शरीरका मल धातु जातै सो विमल जानना। बहुरि आप विशुद्धताका जु उदय ताकी परम उत्कृष्टताकों प्राप्त होतसता अन्य जे आपकौं आश्रित भए भव्य जीव तिनिके भी कर्ममलके दूरि करनेकों कारण है तातैं अतिसय करि विमल है सो विमलतर जानना। इस विशेषणकर अपाय अतिशय प्रगट किया। अपाय नाम नासका है सो इंद्रादिक भी जाके नाश करनेकौं समर्थ नाहीं ऐसें कर्ममलका नाश किया ऐसा अतिशय भगवतविषै हौ है। ऐसा इस विशेषणका अभिप्राय है। बहुरि नेमिनाथ नामा बावीसवां तीर्थंकर परमदेव सो नेमिचंद्र जानना। विमलतर जो नेमिचंद्र ताहि नमस्कार करौ हौ। कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **त्रिभुवनचंद्रं** त्रिभुवन कहिये तीन लोक तिनका चंद्र कहिए चंद्रमावत् प्रकास करनहारा है। **भावार्थ**—तीन लोकके

स्वरूपका उपदेस दाता है वा तीन लोकके स्वरूपका ज्ञाता है। इस विशेषणकर वाक् अतिशय वा प्राप्ति अतिशय प्रगट किया है। तहां वाक् नाम वानीका है, सो गणधर इंद्रादिकनिके वचनतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका स्वरूप वानीकरि कहिये हैं ऐसा वाक् अतिशय भगवंत विर्षें है। बहुरि प्राप्ति नाम लाभका है सो गणधर इंद्रादिकके ज्ञानतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका ज्ञायक केवलज्ञानका लाभ भया है ऐसा प्राप्ति अतिशय भगवंतविर्षें है। बहुरि 'त्रिभुवनचंद्र' ऐसा विशेषण इस अवसर विर्षें योग्य है जातैं तीन लोकके स्वरूपका निरूपण विर्षें किया है उद्यम जानैं ऐसा जो आचार्य ताकैं शब्द ज्योतिकरि वा ज्ञानज्योतिकरि तीन लोकके स्वरूपका प्रकाशककौं ही नमस्कार करना योग्य ही है। बहुरि कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **बलगोविंदशिखामणिकिरणकलापारुणचरणनखकिरणं** बलगोविंद कहिए अपने चरणकमलकौं नमस्कार करते ,जे बलभद्र नारायण तिनका शिखामणि कहिए मुकुटका अग्रभागविर्षें लागा हुआ पद्मरागमणि ताकी जु किरणकलाप कहिये प्रभानका सूर्यवत् किरणनिका समूह ताकरि अरुण कहिए अतिरक्त भया है चरणनखकिरण कहिए चरणकमलके नखनिकी किरणनिका पुंज जाका ऐसा है। इस विशेषणकर भगवंतका पूजा अतिशय और अतिशयनिका सहचारी प्रगट किया। पूजा नाम पूजनेका है सो जिनको लोकविर्षें पूज्य मानिए हैं ऐसे बलभद्र नारायण तेऊ भगवंतके चरणकमलकौं पूजैं हैं ऐसा पूजा अतिशय भगवंतविर्षें है। इहां प्रासंगिक श्लोक कहिए हैं " अपाय " इत्यादि। याका अर्थ—अपायप्राप्ति वाक् पूजारूप अतिशय बहुरि निरालंब विहार वा स्थिति वा आहारादिक विना शरीरकी प्रवृत्ति इत्यादिक ये प्रगट जिनदेवके अतिशय हैं। अथवा अन्य अर्थ कहिए हैं 'नमस्यामि' कहिए नमों हों। काहि "विमलतरनेमिचंद्रं" नेमि ऐसा नाम चक्रधुरा जो पयाकी धुर ताका है। सो जैसें चक्रधरा रथके चलनेकौं कारण है तैसें धर्मरथके प्रवृत्तनेकौं कारण हैं तातैं नेमि कहिए। बहुरि चंद्रपति कहिए तीन लोकके भव्य जीवनिके नेत्र अर मनकौं आल्हाद करै है तातैं चंद्र कहिए। **भावार्थ**—इंद्रादिककैं भी न संभवै ऐसा जो रूप अतिशय ताकरि संयुक्त हैं। नेमि अर सोई चंद्र सो नेमिचंद्र अर विमलतर कहिए अतिशयकर निर्मल ऐसो जो नेमिचंद्र सो विमलतर नेमिचंद कहिए। अथवा नयनि कहिए यथार्थ पदार्थ ताकौं जानैं ऐसा जु नेमि कहिए ज्ञान बहुरि विगत भया है मल कहिए अज्ञान जानैं सो विमल अतिशय कर विमल होइ सो विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमि सो विमलतर नेमि सकल विमल केवलज्ञान जानना। तिहं करि संयुक्त जो चंद्र कहिए आल्हादकारी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। अथवा विमलतरा: कहिए रत्नत्रयकर पवित्र भया है आत्मा जिनका ऐसे जु आचार्यादिक तेई भए नेमि कहिए नक्षत्र तिनका चंद्र कहिए जैसैं नक्षत्रनिका स्वामी चंद्रमा है तैसें जो स्वामी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। ऐसें विमलतर नेमिचंद्र जो अंतका वर्द्धमान तीर्थंकर देव वा चौवीस तीर्थंकरनिका समुदाय ताहि नमों हों। कैसा है। त्रिभुवनचंद्र त्रिभुवन कहिए तीन लोकविर्षें [illegible] स्थान [illegible] चंद्रमावत् अज्ञान अंधकार नाश करै है ऐसा है। बहुरि कैसा है।

'बल[illegible]' [illegible] अतिशयवंत परिवर्तनरूप जो पराक्रम सामर्थ्य [illegible] अथवा इंद्रादिक देवनिका [illegible] वा अतिमनोहर रूप सो [illegible] जाके [illegible] कहिए [illegible]

प्रासंगिक श्लोक "वलं" इत्यादि है। याका **अर्थ**—शक्ति अर सैन्य अर स्थूलपनौं अर रूप इन नाम वल है सो यहु वल शब्द नपुंसकलिंगी है बहुरि वल वीर्य अर दैन्य अर काक अर बलवान् इन नाम वल है। सो यहु वल शब्द पुल्लिंगी है सो यहां वलशब्द करि शक्ति सैन्य रूप–ए दे अर्थ ग्रहे। बहुरि गां कहिए स्वर्ग ताहि विंदति कहिए पालै सो गोविंद देवनिका इंद्र जानना। ब अर सोई गोविंद सो बलगोविंद ताकी शिखामणिकी किरणनिका समूहकरि अरुण भए हैं चरणनि नखनिका किरण जाकी ऐसा है। **भावार्थ**—भक्तिके समूहतैं नम्रीभूत भए इंद्रादिक समस्त दे तिनिकी मुकुटमणिकी किरणनिकी पंक्तिकरि रक्त किया है चरणके नखनिकी किरण जाकी ऐ भगवंत हैं। अथवा अन्य अर्थ कहैं हैं। नमस्यामि कहिए नमौं हौं। काहि? विमलतरनेमिच पचीसमलरहित सम्यक्ततैं युक्त हैं वा विशुद्धज्ञानकरि पूर्ण है वा अतीचार रहित मनोज्ञ चारित्र क पवित्र भया है तातैं विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमिचंद्र नामा आचार्य सो विमलतर नेमि चंद्र कहिए ताहि नमौं हौं। ऐसैं चामुडराय अपने गुरुकौं नमस्कारपूर्वक इस शास्त्रकौं प्रारंभै है कैसा है। 'त्रिभुवनचंद्रं' तीनलोकके जीवनिकैं चंद्रमासमान धर्मरूपी अमृतके श्रवनेतैं चंद्र समान है। अथवा चंद्र सोनां तिह समान आदर करने योग्य है। बहुरि कैसा है। "वल" इत्या वल कहिए बहत्तरि नियोगकी प्रवृत्तिरूप पराक्रम वा हस्ती आदि सैन्य जाके पाइए ऐसा चामुंड बहुरि गां कहिए पृथ्वी ताहि विंदति कहिए पालै ऐसा गोविंद कहिए राचमल्लदेव राजा इन दोउनि मुकुटमणिकी किरणनिका समूह करि लाल किया हैं चरणनिके नखनिकी किरण जाकी ऐसा है ऐसैं प्रथमसूत्रका अर्थ जानना ॥ १ ॥

आगैं पहली दूसरी जो दोय गाथा तिनकरि किया जो जिन अर जिनबिंब अर जिनमंदि नकौं नमस्कार तींहकरि अर्हंत सिद्ध आचार्य बहुश्रुत साधु जिनवच जिनधर्म जिनबिंब जिनमंदिर- जो नवदेवता तिनकौं नमस्कार करता संता इस ग्रंथविषैं पांच अधिकार हैं ताकी सूचना क संता गाथा कहै है;—

भवणव्वितरजोइसविमाणणरतिरियलोयजिणभवणे।
सव्वामरिंदणरवइसंपूजियवंदिए वंदे ॥ २ ॥

भवनव्यंतरज्योतिर्विमाननरतिर्यग्लोकजिनभवनानि।
सर्वामरेंद्रनरपतिसंपूजितवंदितानि वंदे ॥ २ ॥

अर्थ—भवनवासीनिके भवन बहुरि व्यंतरनिके स्थान बहुरि ज्योतिष्कनिके विमान बहुरि मानुषोत्तरके अभ्यंतर मनुष्यलोक, बाह्य तिर्यंचलोक इनविषैं जे जिनभवन हैं सर्व देवेंद्र अर नरपति राजा तिनकरि पूजनीक हैं अर वंदनीक हैं तिनकौं मैं वंदौं हौं। इस ही क्रमतैं इस ग्रंथविषैं भव- नवासी व्यंतर जोतिषी वैमानिक मनुष्य तिर्यंच लोकका वर्णनरूप पांच अधिकार जानने। बहुरि पहले जो (भूमिकामें) मान आदिकका वा लोकादिकका वा नारकनिका वर्णन किया है सो प्रसंग पाइ किया है ॥ २ ॥

आगैं तिन जिनमंदिरनिका आधारभूत लोक सो कहां है ऐसी आशंका होत संतैं सूत्र कहै हैं;—

सव्वागासमणंतं तस्स य बहुमज्झदेसभागम्हि ।
लोगोसंखपदेसो जगसेढिघणप्पमाणो हु ॥ ३ ॥
सर्वाकाशमनन्तं तस्य च बहुमध्यदेशभागे ।
लोकोऽसंख्यप्रदेशो जगच्छ्रेणिघनप्रमाणो हि ॥ ३ ॥

अर्थ—सर्व आकाश अनंत प्रदेशी है ताका बहुमध्यप्रदेशभाग, बहवः कहिए [illegible] या रचनारूप असंख्याते जे आकाशके मध्यप्रदेश सोई भाग कहिए आकाशका [illegible] विषै लोक है अथवा बहु कहिए आठ जे गऊका स्तनके आकारि आकाशके मध्यप्रदेश ते हैं मध्यदेशविषै जाके, ऐसे खंडविषै लोक है । लोकके प्रदेश समरूप [illegible] हैं तातै मध्यविषै एक प्रदेश [illegible] नाही तातै दोय प्रदेश मध्य कहनें । अर लोक घनरूप है तातै दोय प्रदेशनिका घनरूप [illegible] प्रदेश प्रमाण होइ तातै आठ हैं मध्यप्रदेश जाके ऐसा लोक कह्या है । जैसे [illegible] हाथ [illegible] हाथ ऊंचा चौरासी हाथ ऊंचा क्षेत्रविषै मध्यवर्ती आठ हाथ ही होय तैसे जानना । सो लोक असं- ख्यात प्रदेशी है सो आगें जाका स्वरूप कहिए हैं ऐसी जो जगच्छ्रेणी ताका [illegible] घन [illegible] प्रमाण जानना ॥ ३ ॥

आगें लोकके स्वरूपका अन्यथा श्रद्धान दूरि करनेकौं कहै है;—

लोगो अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो ।
जीवाजीवेहिं फुडो सव्वागासवयवो णिच्चो ॥ ४ ॥
लोकः अकृत्रिमः खलु अनादिनिधनः स्वभावनिर्वृत्तः ।
जीवाजीवैः स्पृष्टः सर्वाकाशावयवः नित्यः ॥ ४ ॥

अर्थ—लोकका तो अधिकार था ही बहुरि लोक शब्दका [illegible] किया है [illegible] बारंबार कहि शून्यवादीके दूषनेके अर्थ लोक है ऐसा कह्या है । इस विशेषण करि लोकका [illegible] नाहीं माने है जो शून्यवादी ताका निराकरण किया । कैसा है लोक । अकृत्रिम कहिए [illegible] किया नाहीं है । इस विशेषण करि लोकका ईश्वरकौं कर्ता माने है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । अनादिनिधनः कहिए आदि अंतकरि रहित है । इस विशेषण करि [illegible] है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । स्वभावनिर्वृत्तः कहिए स्वभाव [illegible] है । इस विशेषण करि परमाणुनिकरि लोकका आरंभ हो है ऐसे मानें [illegible] निराकरण किया है । बहुरि कैसा है ? जीवाजीवैः स्पृष्टः कहिए जीव अजीव द्रव्यनिकरि भर्या है । इस विशेषणकरि [illegible] माने है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । सर्वाकाशावयवः कहिए सर्व आकाशका [illegible] है । इस विशेषणकरि [illegible] अभाव माने है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । नित्य. कहिए शाश्वत है । इस विशेषणकरि लोककौं [illegible] कहै हैं [illegible] निराकरण किया । इनका कहनकरि [illegible] कहिए आदिकै [illegible] लोक [illegible] षट् द्रव्यका [illegible] लोकपना कह्या है ॥ ४ ॥

आगें तिस षट् द्रव्यका [illegible] कहिए है—

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपोग्गलाणं च ।
जावत्तावल्लोगो आयासमदो परमणंतं ॥ ५ ॥
धर्माधर्माकाशा गतिरागतिः जीवपुद्गलयोः च ।
यावत्तावल्लोक आकाशं अतः परमनंतम् ॥ ५ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य अर जीव पुद्गलनिका गमनागमन अर वर्तने काल्याणू जे ते आकाशकों अभिव्यापक होइ वर्ते तितनें आकाशकों लोक कहिए, याके परे अलोकाकाश है सो अनंत है संख्यातादिरूप नाहीं है ॥ ५ ॥

आगैं अन्यवादीनिकरि कल्पना किया हुवा लोकका आकार ताके निराकरण करनेकौं कहै हैं;—

उब्भियदलेक्कमुरवद्धयसंचयसण्णिहो हवे लोगो ।
अद्धुदयो मुरवसमो चोद्दसरज्जूदओ सव्वो ॥ ६ ॥
उद्भूतदलैकमुरजध्वजसंचयसन्निभो भवेत् लोक. ।
अर्धोदयः मुरजसमः चतुर्दशरज्जूदयः सर्वः ॥ ६ ॥

अर्थ—ऊभी करी हुई आधी मृदंग सहित ऐसा ज्योट मृदंगके आकारि लोक है। कोऊ जानैगा जैसें मृदंग वीचिमें सून्य है तैसें लोक भी शून्य होगा तहां कहै हैं कि घजानिका जु समूह ताके समान मध्यविषैं भरितावस्था लिएं लोक है। तहां अर्धमृदंगका उदयसमान अधोलोक अर एक मृदंगका उदयसमान ऊर्ध्वलोक मिलि सब लोक चौदह राजू ऊंचा जानना ॥ ६ ॥

आगैं प्रसंग पाइ राजूके स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ सूत्र कहैं हैं;—

जगसेढिसत्तभागो रज्जू सेढीवि पल्लछेदाणं ।
होदि असंखेज्जदिमप्पमाणविंदंगुलाण हदी ॥ ७ ॥
जगच्छ्रेणिसप्तमभागः रज्जुः श्रेणिरपि पल्यच्छेदानाम् ।
भवति असंख्येयप्रमाणवृंदांगुलानां हतिः ॥ ७ ॥

अर्थ—अंकसंदृष्टि दिखावनेके द्वारि गाथाका अर्थ वर्णिए हैं। जगच्छ्रेणीका सातवा भाग प्रमाण रज्जु है। ऐसें अंकसंदृष्टिकर जैसें जगच्छ्रेणीका प्रमाण बादालकरि गुण्या हुवा एकट्ठी प्रमाण ताकौं सातका भागदिएं एक भाग प्रमाण रज्जु होइ १८=४२=३ वहुरि जगच्छ्रेणी कहा सो कहिए हैं। पल्यके जेते अर्धच्छेद हैं तिनकौं असंख्यातका भाग दिएं एक भागविषैं जो प्रमाण आवै तितने घनांगुल मांडि तिनकौं परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी हो है। अंक संदृष्टिकरि जैसें पल्यका प्रमाण सोला ताके अर्धच्छेद चारि ताकौं असंख्यातकी सहनानी दोय ताका भाग दिएं पाया दोय तहां घनांगुलका प्रमाण पणट्ठी करि गुण्या हुवा बादाल प्रमाण इनकौं दोय जायगा मांडि परस्पर गुणें बादालकरि गुणित एकट्ठी प्रमाण जगच्छ्रेणी हो है ॥ ७ ॥

आगैं घनांगुलका स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ कहै हैं;—

पल्लछिदिमेत्तपल्लाणण्णोण्णहदीए अंगुलं सूई ।
तव्वग्गघणा कमसो पदरघणंगुल समक्खादो ॥ ८ ॥

पल्यच्छेदमात्रपल्यानामन्योन्यहत्या अंगुलं सूची ।
तद्वर्गघनौ क्रमशः प्रतरघनांगुले समाख्याते ॥ ८ ॥

अर्थ—पल्यके जेते अर्धच्छेद होहि तितने पल्य मांडि तिनकों परस्पर गुणें सूच्यंगुल हो । जैसें पल्यका प्रमाण मोल्ह ताके अर्धच्छेद चारि सो चारि जायगा सोला सोला मांडि इनकों रस्पर गुणें ६५५३६ होइ सोई सूच्यगुलका प्रमाण जानना । बहुरि सूच्यंगुलका जो वर्ग सो तरांगुल जानना । जैसें पण्णट्ठीका वर्ग बादाल होइ सो प्रतरांगुल है । बहुरि सूच्यंगुलका घन नांगुल जानना । जैसे पण्णट्ठीका घन है सो पण्णट्ठी करि गुणा हुवा जो बादाल तिह प्रमाण हो सो घनांगुल होय। ऐसें क्रमतें कहे हैं। इहां एकट्ठी आदिक वा अर्धच्छेद आदि जे कहे हैं तिनका स्वरूप आगे कहिएगा सो जानना ॥ ८ ॥

आगें मानकी प्रतीतिके अर्थ प्रक्रिया कहैं हैं;—

माणं दुविहं लोगिग लोगुत्तरमेत्थ लोगिगं छद्धा ।
माणुम्माणामाणं गणिपडितप्पडिपमाणमिदि ॥ ९ ॥

मानं द्विविधं लौकिकं लोकोत्तरमत्र लौकिकं षोढा ।
मानोन्मानावमानं गणिप्रतितत्प्रतिप्रमाणमिति ॥ ९ ॥

अर्थ—मान दोयप्रकार है लौकिक मान अर लोकोत्तरमान । इहां लौकिकमान छह प्रकार :—मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमान, ऐसें जानना ॥ ९ ॥

आगें इन छहौंनिकी दृष्टांतपूर्वक उत्पत्ति कहैं हैं;—

पत्थतुलचुलयएगप्पहुदी गुंजातुरंगमोल्लादी ।
दव्वं खित्तं कालो भावो लोगुत्तरं चदुधा ॥ १० ॥

प्रस्थतुलाचुलकैकप्रभृति गुंजातुरंगमूल्यादि ।
द्रव्यं क्षेत्रं कालो भावो लोकोत्तरं चतुर्धा ॥ १० ॥

अर्थ—प्रस्थ जो माणी इत्यादिककों मान कहिए जैसें पाई माणी इत्यादिक करि अन्नादिकका प्रमाण करिए । बहुरि तुला जो तराजू इत्यादिककों उन्मान कहिए । जैसें ताखडीकरि तौलि प्रमाण करिए । चुलुक जो चडू इत्यादिककों अवमान कहिए, जैसें चडू प्रमाण जल है इत्यादिक कहिए । बहुरि एक इत्यादिककों गणिमान कहिए, जैसें एक दोय तीन आदि गणना करि प्रमाण करिए । बहुरि गुंजा जो चिरमटी इत्यादिककों प्रतिमान कहिए, जैसें रत्ती मासा इत्यादि प्रमाण करिए। बहुरि तुरंगमोलि जो घोडेका मोल इत्यादिककों तत्प्रतिमान कहिए, जैसें अश्वादिक देखि घोडेका मोल करिए । ऐसें लौकिकमान जानना ॥ बहुरिलोकोत्तरमानके भेद अब कहिए है । द्रव्य क्षेत्र काल भाव—ऐसें लोकोत्तरमान चारि प्रकार है ॥१०॥

आगें तिन चारोंकी क्रमतें जघन्य उत्कृष्टकों प्रतीतिके अर्थ चारि गाथा कहै हैं;—

परमाणु सयलदव्वं एगपदेसो य सव्वमागासं ।
इगिसमय सव्वकालो सुहुमणिगोदेसु पुण्णेसु ॥ ११ ॥

ल × × १००० यो। इहां तीन लक्षकी सहनानी ऐसी ३ ल, लक्षकी चौथाईकी ऐसी ३/४ ल, हजारकी ऐसी १००० इनकी चौथाईतै परिधिकौं गुणें क्षेत्रफल कह्या सो ताका विभाग रूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जानना ॥ १७ ॥

आगैं स्थूल खातफलविषैं जे प्रमाण योजन कहे तिनका व्यवहार योजन करता संता सूत्र कहै है;—

धूलफलं ववहारं जोयणमवि सरिसवं च कादव्वं।
चउरस्ससरिसवा ते णवसोडस भाजिदा वट्टं ॥ १८ ॥

स्थूलफलं व्यवहारं योजनमपि सर्षपश्च कर्तव्यः।
चतुरस्रसर्षपास्ते नवषोडश भाजिता वृत्तम् ॥ १८ ॥

अर्थ—तारतम्य विना स्थूलपनैं करि जो क्षेत्रफल होइ सो स्थूलफल कहिए। सूक्ष्म परिधिकरि सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है सो ताका विधान आगैं वर्णन होईगा। इहां स्थूल क्षेत्रफलकी अपेक्षा ही वर्णन है सो इहां स्थूल क्षेत्रफलविषै प्रमाण योजन इतने हैं—३ ल ३/४, १०००। तहां एक प्रमाणयोजनके पाचसै व्यवहार योजन होइ तौ इतने योजननिका कितनें व्यवहार योजन होइ ऐसें त्रैराशिक विधिकरि इनके व्यवहार योजन करनें। तहां अंगुल तीन प्रकार है— उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल, आत्मांगुल। तहां उत्सेधांगुलतैं जहां योजनका प्रमाण होइ सो व्यवहार योजन जानना बहुरि प्रमाणांगुलतैं योजनका प्रमाण होय सो प्रमाणयोजन जानना। सो उत्सेधांगुलतैं प्रमाणांगुल पांचसै गुणा है तातैं योजनविषैं भी पांचसै हीका गुणकार कह्या। बहुरि अपि शब्दतैं त्रैराशिक विधिकरि ही एक योजनके च्यारिकोश, एक कोशके दोय हजार धनुष, एक धनुषके च्यारि हाथ एक हाथका अंगुल चौवीस १, ४, २०००, ४, २४, इनकौं परस्पर गुणें एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुल भए, ते करनें। बहुरि एक अंगुलका आठ यव, एक यवका आठ सरसौं करनें सो घनराशिके गुणकार वा भागहार घनरूप ही होइ, जैसे एक हाथ लंबा चौडा ऊंडा होई ताकी अंगुल करिए तब एक हाथकी चौईस अंगुल। सो इहां चौईसका घनकीएं जो प्रमाण होइ तितना एक अंगुल लंबा चौडा ऊंडा खंड होइ तैसैं इहां भी जो ए गुणकाररूप राशि कहे तिनका घन करना सो घन करनेके अर्थ तीन तीन जायगा मांडि परस्पर गुणन करना। तहां क्षेत्रफल ऐसा ३ ल। ३/४। १००० याके गुणकार ऐसे ५००, ५००, ५०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८, इनकौं परस्पर गुणें चौकोर सरसोंका प्रमाण होइ, इनकौं नवका सोलहा भाग ९/१६ दिएं वृत्त जो गोल सरसोंका प्रमाण होइ। सो "हारस्य हारो गुणकोंऽशराशेः" इस वचनतैं भागहारका भागहार सो राशिका गुणकार होइ। जैसैं हजारकौं सौका चौका भागका भाग देना होइ तहां हजारकौं च्यारिकरि गुणिए अर सौका भाग दीजिए। इहां नवका सोलहा भागका भाग है सो पूर्वोक्त राशिकौं सोलहा गुणाकरि नवका भाग देना तहां सोलहा सो गुणकार ही भया। सो करतें सर्व गुण्य गुणकार ऐसा भया ३०००००, १०००, १००० ५००, ५००, ५००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८,

१६ इनको परस्पर गुणनां अर यावें. नीचें धारिका अर नवका भागहार देना ४, ९। तहां गुणा-कारविषै अंकसंदृष्टिवि जहां आठका अंक था तहां दोयकरि विरलन करि आठकी जायगा तीन दूवा मांडिए २, २, २, जातैं इनको परस्पर गुणें भी आठ ही हो है। बहुरि इनि तीनौं दूवानिकरि तीन जायगा दोयकै माड्या था तिनको गुणें तीन जायगा हजार हजार हुवा, हर एक आठका गुणाकारका लोप हुवा तब ऐसा हुवा १००००००, १०००००, १०००, १०००, १०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, १६ । बहुरि इन विषैं जे इकतीस बिंदी हैं तिनको तो जुदी कहिए अर एकका गुणकारतैं किछू बधै नाहीं तातैं एक जहां होइ ताका लोप करिए तब ऐसा होइ ३, ७६८, ७६८, ७६८, ८, ८, ८, ८, ८, १६, बिंदी ३१। बहुरि इन विषैं एक आठका अंककौ दोयकरि केरि विरलन करि तहां जे तीन दूवा भए तिन करि आठका जे तीन अंक तिनकौ गुणें आठका अंककौ तीन जायगा सोलह सोलहका अंक होइ अर एक आठका अंकका लोप होइ अर एक सोलहका अंक गुणकारविषैं था ही। ऐसैं च्यारि जायगा सोलहके अंक भए १६, १६, १६, १६। इनकौं परस्पर गुणें पणट्ठी होइ। पैंसठि हजार पांचसै छत्तीसकौं पणट्ठी कहिए है। तब ऐसा भया ३, ७६८, ७६८, ८, ६५५३६, बिंदी ३१। बहुरि तीन जायगा सातसै अडसठिका अंक था तिनकौं जायगा दोयमैं छप्पन अर तीनका अंक करना, जातैं दोयसै छप्पनको तीन करि गुणें सातसै अडसठि होइ। बहुरि तीन जायगा दोयसै छप्पन लिखे तिन विषैं दोय जायगाके दोयसै छप्पनकौं परस्पर गुणें पणट्ठी होइ अर एक आगैं पणट्ठी थी, इन दोऊनिकौ परस्पर गुणें बादाल होइ। च्यारिसै गुणतीस कोडि गुणचास लाख सतसठि हजार दोयसै छिनवैकौ बादाल कहिए। ताकी सहनानी ऐसी ४२=। ऐसैं करने ऐसा भया ३, २५६, ३, ३, ३, ८, ४२=, बिंदी ३१। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौ परस्परगुणें नव होइ। बहुरि एक जायगा आठका अंक है ताकौं भागहारविषैं च्यारिका अंक था तीहकरि अपवर्तन कीए आठ की जायगा दोयका अंक भया तीहकरि नवकौ गुणें अठार भए, तब ऐसा २५६, ३, ३, १८ ४२=, ३१ बिंदी। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौं परस्पर गुणें नव भए, ताकौं भागहारविषैं नवका अंक था ताकरि अपवर्तन कीए लोप भया। ऐसैं करतैं ऐसा भया ४२=, २५६, १८, बिंदी ३१। या प्रकार बादालकौं दोयसै छप्पन अर अठारहकरि गुणि आगैं इकतीस बिंदी दीजिए। इतना सर्व गोल सरसौंनिकरि सो कुंड भरिए है ॥ १८ ॥

आगैं नवका सोलहवां भागका भाग दीए गोल होइ इसका वासनारूप निपज्या व्यासफलकौं कहै हैं;—

वासद्धघणं दलियं णवगुणियं गोलयस्स घणगणियं ।
सव्वेसिंपि घणाणं फलत्तिभागप्पिया सूई ॥ १९ ॥

व्यासार्द्धघन. दलितः नवगुणितः गोलकस्य घनगणितम् ।
सर्वेषामपि घनानां फलत्रिभागात्मिका सूची ॥ १९ ॥

अर्थ—जितना व्यास होइ ताके आधाका घन करिए बहुरि ताकौं आधा करिये। बहुरि नव करि गुणिए ऐसैं करतैं गोल वस्तुका घनफल होइ। तहां विवक्षित व्यास एक ताका आधाका

प्रतिशलाका कुंड विषैं गेरिए। बहुरि तिस शलाका कुंडकौं रीता करि पूर्वोक्त प्रकार [illegible] बधता व्यासकौं धारैं अनवस्था कुंड करि करि भरिए तब एक सरसौं शलाका कुंड विषैं [illegible] ऐसैं करतैं करतैं दूसरी बार भी शलाका कुंड भरैं तब एक सरसौं और प्रतिशलाका कुंड विषैं [illegible] पन करना। ऐसैंही एक एक बार शलाकाकुंडकौं रीता करि करि भरिए तब तब एक एक [illegible] प्रतिशलाकाकुंड विषैं नांखते जाईए ॥ ३३ ॥

आगैं ऐसैं भएं भी कहा सो कहै हैं:—

एवं सासि य पुण्णा एगं णिक्खिव महासलागम्हि।
एमावि कमा भरिदा चत्तारि भरंति तक्काले ॥ ३४ ॥

एवं साचि च पूर्णा एकं निक्षिप महाशलाकायाम्।
एवमपि क्रमात् भृता चत्वारि भ्रियंते तत्काले ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऐसैंही क्रमकौं पहला अनवस्था कुंड विषैं जेते सरसौं भरे गए थे तिन [illegible] [illegible] अनवस्था कुंड भएं प्रतिशलाका कुंड भी भऱ्या जाय तब एक सरसौं महाशलाका कुंड विषैं [illegible]। बहुरि तिस प्रतिशलाका कुंडकौं भरि ताकरि पूर्वोक्त प्रकार अनवस्था [illegible] [illegible] कुंडनौं अर शलाका कुंडनिकै भरणें करि प्रतिशलाका कुंडकौं एक [illegible] एक एक [illegible] महाशलाका कुंड विषैं गेरते जाईये। ऐसैं करतैं जब महाशलाका [illegible] [illegible] विषैं [illegible] ही कुंड भरिये है। पहला अनवस्था कुंड विषैं जेते [illegible] [illegible] प्रमाणका [illegible] घन ताकै समान अनवस्था कुंड भएं महाशलाका कुंडका [illegible] है। [illegible] अनवस्थाकुंड बधता बधता व्यास प्रमाणकौं धारें हैं। जातैं अनवस्था कुंड [illegible] [illegible] द्वीप वा समुद्र विषैं एक एक सरसौं दीए जिस द्वीप वा समुद्र [illegible] [illegible] तिस ही द्वीप वा समुद्रका सूची व्यासकै समान नवीन कीया हुआ [illegible] [illegible] है। तातैं ही याका नाम अनवस्थित कुंड है। ऐसाई सर्व कुंडनिकी [illegible] [illegible] ॥ ३४ ॥

[illegible] कहै हैं:—

चरिमण्णवाडदहुदे णिट्ठगिया मेलिया पमाणं तं।
[illegible]वग्गं [illegible] तेह संविसं ॥ ३५ ॥

[illegible] निष्ठापि [illegible] प्रमाणं तत्।
[illegible] संदिष्टम् ॥ ३५ ॥

अर्थ—[illegible] कुंड [illegible] जेते प्रमाणको धरै [illegible]
[illegible] जानना। याकै [illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥

[illegible] भेद वा [illegible] भेद [illegible]
[illegible] हैं:—

अवरपरित्तस्सुवरिं एगादीवड्ढिदे हवे मज्झं।
अवरपरित्तं विरलिय तमेव दादूण संगुणिदे॥ ३६॥

अवरपरीतस्योपरि एकादिवर्द्धिते भवेन्मध्यम्।
अवरपरीतं विरलय्य तदेव दत्वा संगुणिते॥ ३६॥

अर्थ—जघन्य परीतासंख्यातकै उपरि एकादि बधाएं मध्य परीतासंख्यात होइ बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकौं एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिस ही जघन्य परीतासंख्यातकौं देइ परस्पर गुणन करिए। जैसें च्यारिकौं विरलन करिए तब च्यारि जायगा एक एक मांडिए। १।१।१।१। बहुरि रूप प्रति च्यारिकौं दीजिये तब एक एककी जायगा च्यारि च्यारि लिखिए ४।४।४।४। अब इनका परस्पर गुणन करिए तब दोयसै छप्पन होइ ऐसेंही इहां विधान जानना॥३६॥

सो ऐसें गुणनकीएं कहा सो कहै हैं:—

अवरं जुत्तमसंखं आवलिसरिसं तमेव रूऊणं।
परिमिदवरमावलिकिदि दुगवारवरं विरूव जुत्तवरं॥ ३७॥

अवरं युक्तमसंख्यं आवलिसदृशं तदेव रूपोनम्।
परिमितवरं आवलिकृतिर्द्विकवारावरं विरूपं युक्तवरम्॥ ३७॥

अर्थ—पूर्वोक्त विधान कीए जघन्य युक्तासंख्यात होइ यहु ही आवली समान है। जातैं [illegible]घन्य युक्तासंख्यात समयनिका समूहकौं आवली कहिए है। सोई यहु एक घाटि हूवा उत्कृष्ट [illegible]रीतासंख्यात जानना। बहुरि आवली जो जघन्य युक्तासंख्यात ताकी जु कृति कहिए वर्ग कीएं जो [illegible]माण होइ सो जघन्य असंख्यातासंख्यात है। सोई जो घाटि होइ सो उत्कृष्ट युक्तासंख्यात है॥ ३७॥

अवरे सलागविरलणदिज्जे विदिये तु विरलिदूण तहिं।
दिज्जं दाऊण हदे सलागदो रूवमवणिज्जं॥ ३८॥

अवरे शलाकाविरलनदेये द्वितीयं तु विरलय्य तस्मिन्।
देयं दत्वा हते शलाकातः रूपमपनेतव्यम्॥ ३८॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातकौं शलाका विरलन दीयमान रूप करि तीन प्रकार करिए। दूसरा विरलन राशिकौं विरलन करि तीह एक एक विरलित विषै एक एक दीयमान राशिकौं परस्पर गुणन करिए ऐसैं करनैं शलाका राशिनैं रूप काढि दीजिये।

भावार्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातके समान तीन राशि करिए। शलाकाराशि, विरलन-[illegible], देयराशि। तहां विरलनराशिकौं एक एक करि जुदा जुदा बखेरि दीजिए, बहुरि तिस एक एक [illegible] देयराशिकौं दे [illegible] तहां तिनि देयराशिनिकौं परस्पर गुणिए। ऐसें विधान करिकैं [illegible] [illegible]मैंस्यौं एक घटाय दीजिए। ऐसें [illegible] प्रमाणकैं [illegible] [illegible]। विरलन [illegible]

विरलन [illegible] एक करि [illegible]। १।१।१।१। बहुरि एक एक प्रति [illegible]

२।२।२।२ । इनकौं परस्पर गुणिए तब दोयसैं उत्पन्न होइ । ऐसैं विधान करि शलाका रा- [illegible] पर्यंत एक एक घटाइ दीजिए । ऐसैंही इहाँ विधान जानना ॥ ३८ ॥

तत्थुप्पण्णं विरलिय तमेव दाऊण संगुणं किच्चा ।
अवणय पुणरवि रूवं पुव्विल्लसलागरासीदो ॥ ३९ ॥

तत्रोत्पन्नं विरलय्य तमेव दत्त्वा संगुणं कृत्वा ।
अपनयेत् पुनरपि रूपं पूर्वशलाकाराशितः ॥ ३९ ॥

अर्थ—तहाँ परस्पर गुणन कीएं भया था जो राशि ताकौं विरलन करि एक एकौं देय करि परस्पर गुणन करि पूर्वशलाका राशितैं बहुरि एक घटावना ।

भावार्थ—पूर्वैं परस्पर गुणन कीएं जो राशि भया तीह प्रमाण विरलनराशि वा देय [illegible] । विरलनराशिकौं एक एक करि बखेरिए । बहुरि एक एक जायगा एक एक देयराशि दीजिए [illegible] देयराशिनिकौं परस्पर गुणिए । ऐसैं विधान करि पूर्वैं जो शलाकाराशि था तामैं एक [illegible] एक और घटावना । जैसे पूर्वैं परस्पर गुणन कीएं दोयसैं उत्पन्न हुआ [illegible] दोयसै जायगा एक एक लिखिए । बहुरि एक एक की जायगा दोयसै [illegible] एक और घटावना । ऐसैं ही इहां विधान जानना ॥ ३

एवं सलागरासिं णिट्ठाविय तत्थजादमहरासिं ।
विरलिय विगिय [illegible] कुणदि पुण व ॥ ४० ॥

[illegible] राशिं निष्ठाप्य तत्रजातमहाराशिम् ।
[illegible] कुर्यात् पुनः च ॥ ४० ॥

अर्थ—या प्रकार दूसरी शलाका बहुरि तीसरी शलाकाकौं निष्ठापनरूप होत संतैं तहां जो मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण विषै ए आगैं कहिए जु हैं राशि ते प्रक्षेपण करनें मिलावनें जोड़नें ॥ ४१ ॥

धम्माधम्मेगजीवगलोगागासप्पदेसपत्तेया।
तत्तो असंखगुणिदा पदिट्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ ४२ ॥

धर्माधर्मैकजीवकलोकाकाशप्रदेशप्रत्येकाः।
ततः असंख्यगुणिता प्रतिष्ठिताः षडपि राशयः ॥ ४२ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य एक जीवद्रव्य लोकाकाश इन च्यारयौंनिका प्रदेशनिका प्रमाण बहुरि अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जीवनिका प्रमाण तिस लोकाकाशके प्रदेशनितैं असंख्यात गुणां। बहुरि तातैं भी प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पती जीवनिका प्रमाण असंख्यात लोक गुणां ए छहौं राशि पूर्वोक्त मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण विषै मिलाइ दीजिए ॥ ४२ ॥

तं कयतिप्पडिरासिं विरलादिं करिय पढमविदियसलं।
तदियं च परिसमाणिय पुव्वं वा तत्थ दायव्वा ॥ ४३ ॥

तं कृतत्रिःप्रतिराशिं विरलादिं कृत्वा प्रथमद्वितीयशलाम्।
तृतीयां च परिसमाप्य पूर्वं वा तत्र दातव्याः ॥ ४३ ॥

अर्थ—तिनकौं मिलाएं जो मध्यम असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण त्रिः प्रतिराशि कहिए शलाका आदि तीन राशि करि बहुरि विरलादि कृत्वा कहिए विरलन देय करि परस्पर गुणें शलाका राशिमें एक एक घटाइ प्रथम शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार शलाकादि करि द्वितीय शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाकादि करि पूर्वोक्त प्रकार तृतीय शलाका राशिकौं निष्ठापन करि तहां जो प्रमाण होइ तीह विषै ए राशि दैनें मिलावनें ॥ ४३ ॥

कप्पठिदिबंधपच्चयरसबंधज्झवसिदा असंखगुणा।
जोगुक्कस्सविभागप्पडिच्छिदा विदियपक्खेवा ॥ ४४ ॥

कल्पस्थितिबंधप्रत्ययरसबंधाध्यवसिता असंख्यगुणाः। -
योगोत्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदाः द्वितीयप्रक्षेपाः ॥ ४४ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मिलिकरि भया जु कल्पकाल ताके समयनिका प्रमाण संख्यात पल्यमात्र। बहुरि तातैं स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात लोक गुणां, बहुरि तातैं योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोक गुणां ए च्यारि राशि दूसरा प्रक्षेप जाननें। दूसरी बार ए च्यारि राशि मिलावनें ॥ ४४ ॥

तं रासिं पुव्वं वा तिप्पडि विरलादिकरणमेत्थ किदे।
अवरपरित्तमणंतं रूऊणमसंखसंखवरं ॥ ४५ ॥

इहां अंक संदृष्टि अपेक्षा समधाराविषै आदिस्थान दोय अंतस्थान सोलह तहां सोलह मैं दोय घटाएं रहे चौदह याकौं स्थान स्थान प्रति वृद्धिका प्रमाण दोयका भाग दीएं पाए सात यामैं एक मिलाएं पाए आठ, सो आठ समधाराके स्थान हैं। बहुरि विषमधारा विषै आदि स्थान एक अंतस्थान पंद्रह आदिकौं अंतमैं घटाएं अवशेष चौदह वृद्धि दोयका भाग दीएं सात तामैं एक मिलाएं आठ स्थान जाननें। ऐसैं ही जहां समान प्रमाणकौं लीएं स्थान स्थान प्रति चय वधती होइ तहां स्थाननिका प्रमाण ल्यावनेंकौं करणसूत्र जाननां ॥ ५७ ॥

आगें कृतिधाराकौं कहैं हैं:—

इगि चादि केवलंतं कदी पदं तप्पदं कदी अवरं ।
इगिहीणतप्पदकदी हेट्ठिममुक्कस्स सव्वत्थ ॥ ५८ ॥

एकं चत्वार्यादिः केवलांता कृतिः पदं तत्पदं कृतिः अवरं ।
एकहीनतत्पदकृतिः अधस्तनमुत्कृष्टं सर्वत्र ॥ ५८ ॥

अर्थ—एक च्यारि इत्यादि केवलज्ञानपर्यंत कृतिधारा हो है। एक आदि एक एक बधता केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल पर्यंत जे वर्गमूल तिनका वर्ग कीएं जो जो राशि होइ सो सो इस धाराके स्थान जाननें। सो वर्गमूलनिका प्रमाण केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल प्रमाण जाननां। तितने ही इस धाराके स्थान हैं। बहुरि इस धारा विषैं संख्यातकौं आदि दे करि संख्याके भेद तिनका जघन्यभेद तौ वर्गस्थान स्वरूप ही है। बहुरि संख्यातादिकनिका जो जघन्य भेद ताका वर्गमूलमैं तैं एक घटाय अवशेष रहै ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो इस धारा विषै तिस संख्या भेदतैं अधस्तनवर्ती जो संख्यातादिक तिनिका उत्कृष्टपनां जाननां। उदाहरण। जैसैं अंकसंदृष्टि करि जघन्य असंख्यातका प्रमाण सोलह सो तौ च्यारिका वर्गस्थानरूप है ही। बहुरि सोलहका वर्गमूल च्यारि तामैं एक घटाएं तीन रहे ताका वर्ग कीएं नव भए सो असंख्यातके नीचैं जो पहलै संख्यात सो इस धाराविषैं संख्यातका उत्कृष्ट नव ही है। यद्यपि दसकौं आदि दे करि पंद्रह पर्यंत संख्यात हीके भेद हैं तथापि ते भेद इस धारा विषैं संभवै नहीं। तातैं इहां उत्कृष्ट नव ही कह्या। ऐसैं ही अन्यत्र भी जानना। अंकसंदृष्टिविषैं याके स्थान ऐसे १,४,९, केवलज्ञान १६ इहां एकका वर्ग एक सो प्रथम स्थान दोयका वर्ग च्यारि सो दूसरा स्थान तीनका वर्ग नव सो तीसरा स्थान केवलज्ञानका वर्गमूल अंकसंदृष्टि करि च्यारि ताका वर्ग सोलह सो अंतस्थान जानना ॥ ५८ ॥

आगें अकृतिधारा कहिए है —

दुगआदि दुवग्गजिदकेवलणाणावसाणमक्किदीए ।
समविसमं विसमं वा सपदूणं केवलं ठाणं ॥ ५९ ॥

द्विकादि [illegible] ।
[illegible] विषमा वा स्वपदोन केवलं स्थानं ॥ ५९ ॥

अर्थ—दोयकौं आदि दे करि एक घाटि केवलज्ञानपर्यंत अकृतिधारा है। बहुरि या विषै अवशेष विधान संख्यातादिकका जघन्य उत्कृष्टपनां सो विषम धारावत् जाननां। जघन्य भेद विषैं एक मिलाएं इहां जघन्यभेद होइ। उत्कृष्ट भेद जो है सोई इहां है। जातैं इस धाराविषै वर्गरूप स्थानकनिकरि रहितपनां है। बहुरि इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल करि हीन ऐसा केवलज्ञान प्रमाण जाननां। अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं। २,३,५,६,७,८,१०,११,१२, १३,१४, एक घाटि केवल १५। इहां सर्व धाराके स्थानकनि विषै कृतिधाराके स्थान दूरि करि अवशेष अकृतिधाराके स्थान कहे हैं ॥ ५९ ॥

आगैं घनधारा कहिए हैं:—

इगिअटपहुदिं केवलदलमूलस्सुवरि चडिदठाणजुदे।
तग्घणमंतं विंदे ठाणं आसण्णघणमूलं ॥ ६० ॥

एकाष्टप्रभृति केवलदलमूलस्योपरि चटितस्थानयुते।
तद्घनमंतं वृंदे स्थानं आसन्नघनमूलम् ॥ ६० ॥

अर्थ—एक आठकौं आदि दे करि १,८,२७ अंत घन स्थान जाईये।

भावार्थ—एकका घन एक सो याका प्रथम स्थान दोयका घन आठ सो याका दूसरा स्थान तीनका घन सताईस सो याका तीसरा स्थान ऐसैं अनंत घनस्थान जाइ करि केवलज्ञानका आधा प्रमाण है सो घनस्थानरूपही है। ताका जो घनमूल ताकै उपरि चढितस्थान कहिए; उपरि उपरि प्राप्त भए जो घनमूलके स्थान तिनकी संख्या तिस घनमूल विषैं मिलाएं जो प्रमाण होइ सो इहां आसन्न घनमूल कहिए ताका घन कीएं जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां। जातैं आसन्न घन तैं एक अधिकका भी घन ग्रहें केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ सो है नाहीं। इस कथनकौं अंकसंदृष्टि करि दिखाईए है। जैसें केवलज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ६५५३६ ताका आधा ऐसा ३२७६८। सो यहु घनस्थानरूप हैं। याका घनमूल बतीस। ३२। ताकै उपरि घनमूल स्थान ऐसे ३३,३४,३५,३६,३७,३८,३९,४०। ए आठ स्थान बत्तीस मैं मिलाए चालीस हूवा याकौं इहां आसन्न घनमूल कहिए। याका घन ६४०००। सोही इस धाराका अंतस्थान है। जातैं आसन्न घनमूल तैं एक अधिक इकतालीस ४१। ताका भी घन ग्रहें अडसठि हजार नौसैं इकईस होय सो केवलज्ञानतैं अधिक राशि उपजै तातैं आसन्न घनमूलका जु घन ६४००० सोई घनधाराका अंतस्थान है। इसकौं आसन्नघन कहिए है। याका घनमूलकौं आसन्न घनमूल कहिए हैं। बहुरि इस धाराके सर्वस्थान केवलज्ञानके आसन्न घनमूल प्रमाण जानने ॥६०॥

आगैं केवलज्ञानका अर्द्धप्रमाण घनधारास्वरूप कैसें जानिएं, ताका व्यवस्थानकौं पूर्व आधा सूत्र करि दिखावता संता उत्तर आधासूत्र करि अघनधाराकौं कहैं हैं:—

समकदिसल विकदीए दलिदे घणमेत्थ विसमगे तुरिए।
अघणस्स दु सव्वं वा विघणपदं केवलं ठाणं ॥ ६१ ॥

समकृतिशला द्विकृतौ दलिते घनः अत्र विषमके तुरिये ।
अघनस्य तु सर्वं वा विघनपदं केवलं स्थानम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जिस वर्गस्थानरूप राशिकी वर्गशलाका सम होइ, दोय च्यारि इत्यादिरूप होइ तिस राशिका आधा प्रमाण घनरूप होइ ही होइ । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं जेतीवार होइ तितनां ही ताकी राशि सोलह ताकी वर्गशलाका दोय सो समरूप है ताका आधा प्रमाण आठ सो दोयका घनरूप हैं । बहुरि राशि पणट्ठी ताकी वर्गशलाका च्यारि सो समरूप है, ताका आधा प्रमाण बत्तीस हजार सातसैं सडसठि सो बत्तीसका घनरूप है । ऐसें ही एकट्ठी आदि विषै भी जांनि लेनां । बहुरि इस ही द्विरूप वर्गधारा विषै जिस राशिकी विषमरूप वर्गशलाका होइ तिस राशिका चौथा भाग घनराशिरूप हो है । जैसें द्विरूप वर्गधाराविषै राशि च्यारि ताकी वर्गशलाका एक है सो विषमरूप है । याका चौथा भाग एक सो एकका घनरूप है। ऐसें ही बादालादिक विषै भी जानना । ऐसें कह्या जु न्याय तीह करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप ही हैं, तातैं तीह केवलज्ञानका आधा प्रमाण घनस्थानरूप है ऐसा सिद्ध भया । बहुरि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप हैं ऐसा कैसें जानिए? तहां कहिए हैं । जो केवलज्ञानकी वर्गशलाकारूप राशि भी द्विरूप वर्गधारा ही विषै उत्पन्न है, द्विरूप वर्गधारा विषै जो राशि है सो समरूप ही है । बहुरि प्रश्न, जो केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही हैं ऐसा कैसे जानिए ? तहां कहिए हैं जो 'अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी' ऐसा सूत्र आगै कहिएगा, तिस सूत्र करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही कहिएगी । बहुरि अब घनधारा कहिए हैं । अघनधाराके स्थान आदि प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी । इतनां विशेष, विघनपद कहिए जो घनधाराविषै जे जे स्थान हैं ते ते धारा विषै नांही हैं और सर्वस्थान सर्व धारावत् जाननें । बहुरि काकका नेत्रका गोलक जैसें एक ही नेत्र विषै पाईए, तैसें जे सर्व धाराके स्थान हैं तिन विषै जो स्थान घनरूप है सो अघनरूप नांही, अघनरूप है सो घनरूप नांही, तातैं इस धारा के सर्व स्थान घनस्थानकनिका प्रमाण रहित केवलज्ञान समान हैं । अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं २,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५,१६ ॥ ६१ ॥

आगें वर्गमातृक धाराकौं कहै हैं:—

इह वग्गमाउआए सव्वगधारव्व चरिमरासी दु ।
पढमं केवलमूलं तट्ठाणं णत्थि तथेव ॥ ६२ ॥
इह वर्गमातृकायां सर्वकधारा इव चरमराशिस्तु ।
प्रथमं केवलमूलं तत्स्थानं नास्ति तत्रैव ॥ ६२ ॥

अर्थ—इस वर्गमातृक धारा विषै सर्वधारावत् स्थानादिककी प्रक्रिया जाननी, विशेष इतना इहां अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल जानना । आगै याके स्थाननिकौ समर्थ [illegible] [illegible] इस धारा विषै [illegible] याही धाराका नाम वर्गमातृक धारा है । [illegible] केवलज्ञानका प्रथम मूल [illegible] [illegible]

तौ केवलज्ञानतैं उलंघि प्रमाण होइ सो है नाहीं, जैसें केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका वर्गमूल च्यारि तहां पर्यंत तौ वर्ग होइ अर उपरि पांचका वर्ग करिए तौ केवलज्ञान तैं अधिक प्रमाण होइ जाय। तातैं याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूलही कह्या। इस धाराके सर्व स्थानक तितने ही केवलज्ञानका प्रथम मूल प्रमाण ही जानना। अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें १,२,३, केवल प्रथममूल ४ ॥ ६२ ॥

आगैं अवर्गमातृक धाराकौं कहै हैं:—

अवग्गमाउअ आदी केवलमूलं सरूवअहियं तु ।
केवलमणेय मज्झं मूलूणं केवलं ठाणं ॥ ६३ ॥

अवर्गमातृकाया आदिः केवलमूलं स्वरूपाधिकं तु ।
केवलमनेकं मध्यं मूलोनं केवलं स्थानम् ॥ ६३ ॥

अर्थ—अवर्गमातृक धाराका प्रथम स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल एक करि अधिक जानना। जातैं केवलज्ञानका प्रथम मूल पर्यंत तौ सर्व अंक वर्गमूल रूप पाइए हैं, सर्वनिका वर्ग होइ सकै है। बहुरि जिनका वर्ग कीएं केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तिनका ग्रहण इस धारा विषै है, तातैं याका प्रथम स्थान एक अधिक केवलज्ञानका प्रथम मूल कह्या। बहुरि अंत स्थान याका केवलज्ञान है, मध्यस्थान अनेक प्रकार हैं। इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथममूल रहित केवलज्ञान प्रमाण जानने। अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसे हैं, ५,६,७,८,९, १०,११,१२,१३,१४,१५,१६। इहां केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका प्रथम वर्गमूल च्यारि तातैं एक अधिकतैं लगाय स्थान कहे हैं ॥ ६३ ॥

आगैं घनमातृक धाराकौं कहै हैं:—

घणमाउगस्स सव्वगधारं वा सव्वपच्छिमो रासी ।
आसण्णविंदमूलं तमेव ठाणं विजाणाहि ॥ ६४ ॥

घनमातृकायाः सर्वकधारा इव सर्वपश्चिमो राशिः ।
आसन्नवृन्दमूलं तदेव स्थानं विजानीहि ॥ ६४ ॥

अर्थ—घनमातृक धाराकी स्थानादिककी प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी, इतना विशेष याका सर्व पश्चिम राशि कहिए अंतका स्थान सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल प्रमाण ही जानने। इहां जिनका घन होइ ऐसें घनमूलरूप संख्या विषै ग्रहे है सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल पर्यंत तौ सबनिका घन होइ सकै है अर याकै एक अधिकका भी जो घन कीजिए तौ केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाय तातैं [illegible] आदि केवलज्ञानका आसन्न घनमूलपर्यंत याके स्थान कहे हैं। अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसे हैं १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३, १४,१५,१६ [illegible]
[illegible]
आसन्न घन [illegible]

आगैं अघनमातृक धारा कहिए हैं:—

तं रूवसहिदमादी केवलमवसाणमघणमाउस्स ।
आसण्णघणपदूणं केवलणाणं हवे ठाणं ॥ ६५ ॥

सन् रूपसहितं आदिः केवलमवसानमघनमातृकायाः ।
आसन्नघनपदोनं केवलज्ञानं भवेत् स्थानम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—इहां जिनका घन कीएं केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ ऐसे संख्यात विशेषनिका ग्रहण है । सो घनमातृक धाराका जो अंतका स्थान सो रूपसहित कहिए, एक अधिक होइ तौ इस अघन मातृकधाराका प्रथम स्थान होइ, इहां तैं लगाय केवल ज्ञानपर्यंत सर्व स्थान इस धारा विषैं जाननें । याके सर्व स्थान केवलज्ञानका आसन्न घनमूलरहित केवलज्ञान प्रमाण जाननें । अंक संदृष्टि विषैं याके स्थान ऐसे ४१,४२,४३, इत्यादि अंतस्थान ६५= । इहां घन मातृकका अंतस्थान चालीस, तामैं एक अधिक कीएं याका आदि स्थान इकतालीस, अंतस्थान केवल ज्ञान सो पणट्ठी प्रमाण । याके सर्व स्थान केवलज्ञान पणट्ठी प्रमाण. ६५५३६, तामैं आसन्न घन चौसठि ताका मूल चालीस घटाएं पैंसठि हजार च्यारिसैं छिनवै ६५४९६ जाननें ॥ ६५ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधाराकौं सात गाथानि करि कहैं हैं:—

बेरूववग्गधारा चउ सोलस बिसदसहियछप्पण्णं ।
पण्णट्ठी बादालं एकट्ठं पुव्वपुव्वकदी ॥ ६६ ॥

द्विरूपवर्गधारा चत्वारः षोडश द्विशतसहितषट्पंचाशत् ।
पण्णट्ठी द्वाचत्वारिंशत् एकाट्ठी पूर्वपूर्वकृतिः ॥ ६६ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा कहिए है । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्व पूर्व स्थाननिकौं वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान इस धारा विषैं हो है, तातैं याका नाम द्विरूप वर्गधारा है । तहां याका आदिस्थान दोयका वर्ग च्यारि ४, ताका वर्ग दूसरा स्थान सोलह १६, ताका वर्ग तीसरा स्थान दोय सै छप्पन २५६, ताका वर्ग चौथास्थान पणट्ठी, पणट्ठी कहा ? 'पण्णट्ठी पंचसया छत्तीसा' [illegible] इन अंकनितैं पणट्ठी प्रमाण हो है, ६५५३६ याकी संदृष्टि ऐसी । बहुरि याका वर्ग पांचवां स्थान बादाल । बादाल कहा ? 'बादालं चउणउदी उगणउदी [illegible]' [illegible] इन अंकनि करि बादाल हो है । ४२९४९६७२९६ याकी संदृष्टि ऐसी (४२=) । बहुरि याका वर्ग छठा स्थान एकट्ठी । एकट्ठी कहा ? [illegible] । [illegible] इन अंकनि करि एकट्ठी हो है । १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ । याकी संदृष्टि ऐसी (१८=) ॥ ६६ ॥

[illegible] पूर्व पूर्व स्थानका [illegible] —

जो [illegible] ।
[illegible] ॥ ६७ ॥

ततः संख्यस्थानगमने वर्गशलाकार्धच्छेदप्रथमपदम्।
अवरपरीतासंख्यं आवलिः प्रतरावली च भवेत्॥ ६७॥

अर्थ—तातैं पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातका वर्गशलाका राशि उपजै है। दोयका वर्ग तैं लगाय जेती बार वर्ग कीए जो राशि उपजै तिस राशिका तितनां वर्गशलाका राशिक हो है। जैसें सोलहकी वर्ग शलाका दोय, जातैं दोयका वर्ग च्यारि अर च्यारिका वर्ग सोलह, ऐसें दोय बार वर्ग भए सोलह राशि हो है, ऐसें ही अन्यत्र जाननां। बहुरि तातैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातकी अर्द्धछेद राशि हो है। जिस राशिकौं जेती बार आधा कीएं एक अवशेष रहैं तिस राशिके तितने अर्द्धछेद जानने। जैसें सोलहके अर्द्धछेद च्यारि है। जातैं एक बार सोलहकौं आधा कीएं आठ होइ, दूसरी बार च्यारि होइ, तीसरी बार दोय होइ, चौथी बार एक होइ, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां। बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातका प्रथम मूल हो है। राशिका एक बार वर्गमूल कीजिए सो प्रथम मूल कहिए, जैसें सोलहका प्रथम मूल च्यारि हो है, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां। बहुरि तिस प्रथम मूलका एक बार वर्ग कीएं जघन्य परीतासंख्यात राशि उपजै है। बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण आवली उपजै है। इहां 'उपरजदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र आगैं कहैंगे तिस करि आवलीकी वर्गशलाकादिकका इस धारा विषै निषेध जाननां। इहां संख्यात स्थान जाइ करि आवली उपजै है। ऐसा कह्या सो कैसे है? तहां कहिए है। देय राशिकैं उपरि विरलन रूप करी जो राशि, ताके जेते अर्धच्छेद होंहि तितनें वर्गस्थान जाइ करि विवक्षित राशि उपजै है। जैसें देयराशि च्यारि ताके उपरि विरलन राशि च्यारिके अर्द्ध छेद दोय, सो दोय बार वर्गस्थान गएं विवक्षित दोयसै छप्पन हो है। जातैं च्यारिका वर्ग सोलह सोलहका वर्ग दोयसैं छप्पन हो है। सोई च्यारिका विरलन करि एक एक जायगा च्यारि च्यारि दीएं, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोय सै छप्पन हो है। तैसेंही यहां देय राशि जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात, सो संख्याते स्थान गएं ही विवक्षित राशि आवली उपजै है। बहुरि तिस आवलीका एक बार वर्ग भएं प्रतरावली हो है॥ ६७॥

गमिय असंखं ठाणं वग्गसलद्धच्छिदी य पढमपदं।
पल्लं य सूइअंगुल पदरं जगसेढियणमूलं॥ ६८॥

गत्वा असंख्यं स्थानं वर्गशलार्द्धच्छिदिश्च प्रथमपदम्।
पल्यं च सूच्यंगुलं प्रतरं जगच्छ्रेणिघनमूलम्॥ ६८॥

अर्थ —तातैं परैं असंख्यात स्थान जाइ अद्धापल्यका वर्गशलाका राशि उपजै है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाय ताहीका प्रथम मूल हो है। ताका एक बार [illegible] कीए अद्धापल्य हो है। बहुरि तातैं परैं असंख्यात स्थान जाय सूच्यंगुल उपजै है, जाते [illegible] राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं विवक्षित [illegible] होइ [illegible] सूच्यंगुलका प्रमाण [illegible] पल्य है। विरलन राशि पल्यका अर्द्धच्छेद [illegible] अर्द्ध-

च्छेद असंख्याते हैं। तातैं पल्यके उपरि असंख्यात वर्गस्थान भएं सूच्यंगुल होइ ऐसा कह्या है। इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादि सूत्रका अभिप्राय करि विरलनदेयका अनुक्रम करि यह राशि भया है। तातैं याके वर्गशलाका अर्द्धच्छेद राशि इस धारा विषै नाहीं कहे हैं। बहुरि तिस सूच्यंगुलका एक बार वर्ग भएं प्रतरांगुल उपजै हैं। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ करि जगच्छ्रेणीका घनमूल हो उपजै है। जाका घन कीएं जगच्छ्रेणी होइ ऐसी प्रमाण हो हैं ॥ ६८ ॥

तिविह जहण्णाणंतं वग्गसलादलछिदी सगादिपदं ।
जीवो पोग्गल कालो सेढीआगास तप्पदरं ॥ ६९ ॥

त्रिविधं जघन्यानंतं वर्गशलाकादलच्छेदाः स्वकादिपदम् ।
जीवः पुद्गलः कालः श्रेण्याकाशं तत्प्रतरम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतानंतका वर्गशलाका राशि उपजै हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि उपजै हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल उपजै है। ताका एक बार वर्ग भएं जघन्य परीतानंत हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तानंत उपजै है। जातै देय राशिकै उपरि विरलन राशिके अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान भएं विवक्षित राशि हो है, सो इहां देयराशि जघन्यपरीतानंत है ताकै उपरि विरलन राशि जघन्य परीतानंत ताके अर्द्धच्छेद असंख्यात हैं, सो इतनें ही वर्गस्थान भएं जघन्य युक्तानंत हो हैं। इहां भी पूर्वोक्त प्रकार वर्गशलाकादिकनिका निषेध जानना। बहुरि तिस जघन्य युक्तानंतका एक बार वर्ग भएं जघन्य अनंतानंत हो है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशि प्रमाणकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं जीवराशिका प्रमाण उपजै है। इस गाथा विषै वर्गशलाकादिकनिका उपलक्षण कीया है तातैं इस जीवराशितैं परै पुद्गलादिक जो जो राशि कहिए है तिनका जीवराशि विषै जैसें कह्या तैसें वर्गशलाकादि जाननें। बहुरि तिस जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ पुद्गलराशिका प्रमाण उपजै है, तातैं अनंतस्थान जाइ श्रेणी आकाश निपजै है। सर्व आकाशका लंबा प्रदेशनिकी पंक्तिरूप जु प्रमाण सो श्रेणी आकाश कहिए। बहुरि ताका एक बार वर्ग भएं प्रतराकाश उपजै है। तातैं आकाशका लंबा वा चौड़ा प्रदेशनिका जु प्रमाण सो प्रतराकाश कहिए। इहां उचाई नाहीं लीनी ॥ ६९ ॥

धम्माधम्मागुरुलघु इगिजीवागुरुलघुस्स होंति तदो ।
सुहमणिभपुण्णणाणं अवरे अविभागपडिछेदा ॥ ७० ॥

धर्माधर्मागुरुलघ्वोः एकजीवागुरुलघोः भवन्ति ततः ।
सूक्ष्मनिगोदापूर्णज्ञाने अवरे अविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ७० ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ धर्म द्रव्य, अधर्मद्रव्यके अगुरुलघुगुणके अविभाग-प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। [illegible] विभाग न होइ [illegible] अंश [illegible] ताकौ अविभाग-प्रतिच्छेद [illegible] है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ सूक्ष्मनिगोद [illegible] जीवके [illegible] [illegible] प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है ॥ ७० ॥

अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी।
अट्ठसगछप्पणतुरियं तदियं विदियादिमूलं च ॥ ७१ ॥
अवरा क्षायिकलब्धिः वर्गशलाका ततः स्वकार्धच्छिदिः।
अष्टमसप्तषष्ठपंचतुरीयं तृतीयं द्वितीयादिमूलं च ॥ ७१ ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ तिर्यंच गति विषै असंयत सम्यग्दृष्टीकै क्षायिक सम्यक्त्वरूप जो लब्धि ताकै अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ केवलज्ञानकी वर्गशलाका हो है, तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातै अनंतवर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका अष्टम मूल हो हैं। ताका एक बार वर्ग भए ताहीका सप्तम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका षष्ठम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका पंचम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका चतुर्थ मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका तृतीय मूल हो है। ताका एक वर्ग भएं ताहीका द्वितीय मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका प्रथम मूल हो है, राशिका वर्गमूलकौं प्रथम मूल कहिए, प्रथम मूलके वर्गमूलकौं द्वितीय मूल कहिए, द्वितीयमूलके वर्गमूलकौं तृतीयमूल कहिए, तृतीयमूलके वर्गमूलकौं चतुर्थ मूल कहिए ऐसैंही पंचमादि मूल जानने। जैसैं एकट्ठीका प्रथममूल बादाल, द्वितीयमूल पणट्ठी, तृतीयमूल दोयसै छप्पन, चतुर्थमूल सोलह, पंचममूल च्यारि, षष्ठममूल दोय ऐसैं ही अन्यत्र जानना ॥ ७१ ॥

सइमादिमूलवग्गे केवलमंतं पमाणजेट्ठमिणं।
वरखइयलद्धिणामं सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ७२ ॥
सकृदादिमूलवर्गे केवलमंतं प्रमाणजेष्ठमिदम्।
वरक्षायिकलब्धिनाम स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—तिस केवल ज्ञानके प्रथम वर्गमूलका सकृत् कहिए एक बार वर्ग भएं केवलज्ञानके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो हैं। एतावन्मात्रही द्विरूप वर्गधारा विषैं अंतस्थान हो हैं॥ यह ही उत्कृष्ट प्रमाण है—यहही उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि नाम है। बहुरि इस द्विरूप वर्गधाराके सर्वस्थान केवल ज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण हैं ॥ ७२ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधारादिक तीन धारा विषैं सर्वत्र विशेषरहित वर्गशलाकादिककी प्राप्ति विषैं नियम है सो कहै हैं:—

उप्पज्जदि जो रासी विरलणदिज्जक्कमेण तस्सेत्य।
वग्गसलद्धच्छेदा धारातिदए ण जायंते ॥ ७३ ॥
उत्पद्यते यः राशिः विरलनदेयक्रमेण तस्यात्र।
वर्गशलार्धच्छेदा धारात्रितये न जायंते ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस धारा विषैं विरलन देयका अनुक्रम करि जो जो राशिका वर्गशलाका अर्द्धच्छेद तिसही धारा विषैं न होइ, अन्य धारा विषै होइ, ऐसी यह नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्ग

लाका जाननी, बहुरि परस्थान विषै जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै प्रथम स्थानकी एक वर्गशलाका
तैसेंही द्विरूप घनधाराका प्रथम स्थान आठ ताकी एक वर्गशलाका है। बहुरि जैसें द्विरूप
र्गधाराविषै द्वितीय स्थान सोलहकी दोय वर्गशलाका हैं तैसेंही द्विरूप घनधारा विषै द्वितीय
थान चौसठि ताकी दोय वर्गशलाका हैं। ऐसें परस्थान अपेक्षा स्वसमान वर्गशलाका जाननी।
हुरि अपनी वर्गशलाका जेता प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणें अर्द्धच्छेद होहि। जैसें
ोयसैं छप्पनकी वर्गशलाका तीन सो तीन जायगा दूवा मांडि २।२।२ परस्पर गुणें आठ होइ
ोई दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद हैं। ऐसें अन्यत्र भी जाननां। सो यहु नियम द्विरूप वर्ग-
ारा ही विषैं तौ पाईए है। बहुरि द्विरूप घनधारा अर द्विरूप घनाघनधारानिविषैं नियम ऐसा
ाही हैं। बहुरि राशिके जेते अर्द्धच्छेद होहि तितनें दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो है। जैसे
ायसै छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ सो आठ जायगा दोयका अंक मांडि (२,२,२,२,२,२,२,२,)
रस्पर गुणें दोयसैं छप्पन हो है। ऐसेंही अन्यत्र जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषै
ाननां ॥ ७५ ॥

आगैं वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेद इनका स्वरूप कहै हैं:—

वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्धछेदस्स।
अद्धिदवारा वा खलु दलवारा होंति अद्धछिदी ॥ ७६ ॥

वर्गितवारा वर्गशलाका राशेः अर्द्धच्छेदस्य।
अर्धितवारा वा खलु दलवारा भवंति अर्धच्छेदाः ॥ ७६ ॥

अर्थ—राशिका जो वर्गितवार कहिए दोयका वर्गतें लगाय पूर्व पूर्वका जेतीबार वर्ग कीएं
ो राशि ताका तितनां वर्गशलाका राशि जाननां। जैसें प्यारिकी वर्गशलाका एक जातें दूवा
ार वर्ग कीए च्यारि हो हैं। पणट्ठीकी च्यारि जातें दोयका वर्ग च्यारि, ताका वर्ग सोलह, ताका
ं दोयसै छप्पन, ताका वर्ग पणट्ठी। ऐसे च्यारिवार वर्ग भए पणट्ठी हो है। ऐसें ही जानना।
हु नियम तीनों धारा विषै हैं। विशेष इतनां द्विरूप घनधारा विषै दोयका घनतें लगाय अर
द्विरूप घनाघनधारा विषै दोयका घनतें लगाय पूर्व पूर्वका वर्ग जेतीबार कीएं राशि होइ तितनी
ाकी वर्गशलाका जाननी। अथवा राशिके जेते अर्द्धच्छेद होहि तिन अर्द्धच्छेदनिके जेते अर्द्धच्छेद
ोहि तितनी तिस राशिकी वर्गशलाका जाननी। जैसें दोयसैं छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ, आठके
अर्द्धच्छेद तीन सो दोयसैं छप्पनकी तीनही वर्गशलाका जाननी। सो यहु नियम द्विरूप वर्गधारा
विषै ही है। बहुरि राशिका दलवार कहिए जितनी बार राशिको आधा आधा करतें एक रहे तितनां
ितनां तिस राशिका अर्द्धच्छेद जानना। जैसें दोयसै छप्पनका आधा, एकसौ अठाईस, ताका
ाधा चौसठि, ताका आधा बत्तीस, ताका आधा सोलह, ताका आधा आठ, ताका आधा च्यार,
ाका आधा दोय, ताका आधा एक। ऐसे आठ बार आधा आधा भया। तातें दोयसै छप्पनके
ाठ अर्द्धच्छेद है। ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषै है ॥ ७६ ॥

आगैं छह गाथानि करि द्विरूप घनधारा कौं कहे हैं:—

वेरूववंदधारा अड चउसट्ठी चहित्तु संखपदे ।
आवलिघनमावलिया कदिविंदं चावि जायेज्ज ॥७७॥

द्विरूपवृंदधारा अष्ट चतुःषष्टिः चटित्वा संख्यपदानि ।
आवलिघन आवल्याः कृतिवृंदं चापि जायेत ॥ ७७ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्गरूप है तिनि राशिनिका जु घनरूप राशि तिनकी जो धारा सो द्विरूप घनधारा है । सो याका प्रथम स्थान आठ है, जातैं दोयका घन आठ है । बहुरि याका वर्ग द्वितीयस्थान चौसठि जातैं च्यारिका घन चौसठि ही है । बहुरि याका वर्ग तृतियस्थान च्यारि हजार छिनवै, जातैं सोलहका घन च्यारिहजार छिनवै हो हैं । ऐसैं ही पूर्व पूर्व स्थानरूप राशिका वर्ग करतैं उत्तर उत्तर स्थान होइ, संख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतासंख्यातका घन हो हैं । बहुरि देयराशिकैं उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं यहु राशि हो हैं, सो जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात ही हैं । तातैं जघन्य परीतासंख्यातका घनतैं संख्यात जाइ आवलीका घन उपजै हैं । ताका एक वार वर्ग भएं आवलीका वर्गका घन हो हैं॥७७॥

पल्लघणं विंदंगुलजगसेढीलोयपदरजीवघणं ।
तत्तो पढमं मूलं सव्वागासं च जाणेज्जो ॥ ७८ ॥

पल्यघनं वृंदांगुलजगच्छ्रेणीलोकप्रतरजीवघनम् ।
ततः प्रथमं मूलं सर्वाकाशं च जानीहि ॥ ७८ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका प्रथममूलका घन हो हैं । ताका एकवार वर्ग भएं पल्यका घन हो हैं । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ घनांगुल हो हैं । इहां 'उपज्जदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र करि घनांगुलकी वर्ग शलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ जगच्छ्रेणी उपजै है । इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रके अभिप्राय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि ताका एकवार वर्ग कीएं जगत्प्रतर उपजै है, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जीवराशिका प्रथममूलका घन हो है, ताका एकवार वर्ग भएं जीवराशिका घन हो हैं । बहुरि उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रका अभिप्राय करि सर्व आकाशकी वर्गशलाकादिकनिका तौ अभाव है, तातैं जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ सर्वाकाशका प्रथम मूल हो हैं । ताका वर्ग भएं सर्वआकाश हो है । लंबा, चौडा, ऊँचा ऐसा सर्व घनरूप आकाशके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं ॥ ७८ ॥

संखमसंखमणंतं वग्गट्ठाणं कमेण गंतूण ।
संखासंखाणंताणुप्पत्ती होदि सव्वत्थ ॥ ७९ ॥

संख्यमसंख्यमनन्तं वर्गस्थानं क्रमेण गत्वा ।
संख्यासंख्यानन्तानामुत्पत्तिः भवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातरूप राशि पर्यंत तौ संख्यात वर्गस्थान जाइ करि, बहुरि तातैं उपरि जघन्य अनंतानंतरूप राशि पर्यंत असंख्यात वर्ग स्थान जाय करि, बहुरि तातैं उपरि केवलज्ञान पर्यंत अनंतवर्गस्थान जाइ करि यथासंख्य क्रमतैं संख्यात वा असंख्यात वा अनंतानंत रूप राशि उपजै हैं सर्वत्र तीनों धारा विषै जानना । भावार्थ-संख्यातरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं संख्यात वर्गस्थान जाइ करि राशिकी उत्पत्ति कहिए । बहुरि ऐसें ही असंख्यात वा अनंतरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं असंख्यात वा अनंत वर्गस्थान जाइ करि उपजना कहिए। परन्तु इतना विशेष है, जो देय राशिनै उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद मात्र वर्गस्थान गए राशि हो हैं, तातैं जघन्य असंख्यातासंख्यात पर्यंत असंख्यातरूप राशि विषै भी संख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजनां कहिए वा जघन्य अनंतानंत पर्यंत अनंतरूप राशि विषै भी असंख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजना कहिए ॥ ७९ ॥

जत्थुद्देसे जायदि जो जो रासी विरूवधाराए ।
घणरूवे तद्देसे उप्पज्जदि तस्स तस्स घणो ॥ ८० ॥
यत्रोद्देशे जायते यो यो राशिः द्विरूपधारायां ।
घनरूपे तद्देशे उत्पद्यते तस्य तस्य घनः ॥ ८० ॥

अर्थ—जिस उद्देश विषै, द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो वर्गरूप राशि होइ तिस उद्देश विषै, द्विरूप घनधारा विषै तिस तिस राशीका घन उपजै है । जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै दोयका वर्ग च्यारि थे इहां दोयका घन आठ है, तहां च्यारिका वर्ग सोलह थे इहां ताका घन चौसठि जानना । ऐसें जो जो राशि द्विरूप वर्गधारा विषै कही है तिनका इहां सर्वका घन जाननां ॥८०॥

एवमणंतं ठाणं णिरंतरं गमिय केवलस्सेव ।
बिदियपदविंदमंतं बिदियादिममूलगुणिदसमं ॥ ८१ ॥
एवमनंतं स्थानं निरंतरं गत्वा केवलस्यैव ।
द्वितीयपदवृंदमंतो द्वितीयादिममूलगुणितसमः ॥ ८१ ॥

अर्थ—ऐसें सर्वाकाशकै उपरि अनंत वर्गस्थान निरंतर जाइ केवल ज्ञानका द्वितीय मूलका घन हो है । सोई इस द्विरूप घनधाराका अंत स्थान है, सो कितनां है ? द्वितीय मूल अर प्रथम मूल कौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ तींह समान है । जैसें पणट्ठीका प्रथम मूल दोयसै छप्पन, द्वितीय मूल सोलह, इनकों परस्पर गुणें च्यारि हजार छिनवै होइ सोई पणट्ठीका द्वितीय मूल सोलह ताका घन भी च्यारि हजार छिनवै ही होइ ऐसें ही इहां जानना ॥ ८१ ॥

यह ही अंत स्थान कैसे है सो कहै हैं —

चरिमस्स दुचरिमस्स य णेव घणं केवलम्ववदिक्कमदो ।
तम्हा विरूवधाए [illegible] वग्गसला हवे ठाणं ॥ ८२ ॥

चरमस्य द्विचरमस्य च नैव घनः केवलव्यतिक्रमतः ।
तस्मात् द्विरूपहीना स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥८२॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधाराका चरम राशि केवलज्ञान अर द्विचरम राशि केवल ज्ञान प्रथम मूल, तिनके घनका इहां ग्रहण नांही हैं। काहे तैं, जो इनके घनका ग्रहण करिए तौ केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ। बहुरि इस द्विरूप घनधाराके सर्व स्थान दोय घाटि केवल ज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण जाननें। इहां अंक संदृष्टि भी जाननीं। जैसैं केवल ज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ताका घन वा ताके प्रथम मूल दोयसैं छप्पनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तातैं ग्रहण करनां ॥ ८२ ॥

आगैं अब द्विरूप घनधाराकौं आठ गाथानि करि कहै हैं:—

तं जाण विरूवगयं घणाघणं अट्ठविंदतव्वग्गं ।
लोगो गुणगारसला वग्गसलद्धच्छिदादिपदं ॥ ८३ ॥
तं जानीहि द्विरूपगतं घनाघनं अष्टवृंदतद्वर्गम् ।
लोको गुणकारशला वर्गशलार्धच्छेदादिपदम् ॥ ८३ ॥
तेउक्काइयजीवा वग्गसलागत्तयं च कायठिदी ।
वग्गसलादित्तियं ओहिणिबद्धं वरं खेत्तं ॥ ८४ ॥
तैजस्कायिकजीवा वर्गशलाकात्रयं च कायस्थितिः ।
वर्गशलादित्रितयं अवधिनिबद्धं वरं क्षेत्रम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्ग रूप हैं ताका घनाघन इस द्विरूप घनाघन धारा विषै हैं। घनका जु घन तासौं घनाघन कहिए। कैसैं सो कहैं हैं। याका प्रथम स्थान आठका घन जो पाचसै बारह सो जाननां, जातैं दोयका घनाघन इतनां ही हैं। बहुरि ताका वर्ग दोय लाख बासठिहजार एक सौ चवालीस (२६२१४४) सो याका दूसरास्थान जाननां जातैं च्यारिका घनाघन इतनां हो हैं। ऐसैंही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीए उत्तर उत्तरस्थान होइ। इस क्रमतैं असंख्यात स्थान जाइ लोकाकाशके प्रदेशनिका प्रमाणरूप लोक उपजै है। पल्यवर्गशलाकादिक इस धारा विषै नाही हैं तातैं न कहे। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिकी संख्याका ल्यावनेकै अर्थि लोकका परस्पर जेतीबार गुणन होइ तीह प्रमाण गुणकारशलाका उपजै है। तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथममूल हो है। तासौं एकबार वर्गरूप कीए तेजस्कायिक जीवराशिकी संख्या उपजै है। तेजस्कायिक जीवराशिका गुणकार [illegible] वर्गशलाकादिकनितैं संख्या [illegible] है [illegible] [illegible] प्रमाण [illegible] है। [illegible] घनप्रमाण जो लोकका प्रदेश [illegible] [illegible] लोकप्रमाण करि स्थापिए, तहां लोकप्रमाण विरलन [illegible] [illegible] बहुरि एक एक प्रति लोकप्रमाण देयाति

है। बहुरि तैसे ही [illegible] लोकप्रमाण लोक तिनकौ परस्पर गुणिए। ऐसे करि जो यह लोक-[illegible] [illegible] एक घटाएं, ऐसे परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकौ गुणकार [illegible] है, एक बार करि दूसरा परस्पर गुणन भया है। बहुरि वर्गशलाका [illegible] असंख्यातवें [illegible] मात्र भई। याही देयराशिकी वर्गशलाका, अर विरलन राशिके अर्द्धच्छेद इन दोऊनिके [illegible] वर्गशलाका प्रमाण हो है। इहां अंकसंदृष्टि कीजिए है। लोककौ सहनानी च्यारि ४, [illegible] विरलन देय स्थापिए (श. ४, वि. ४, दे. ४) तहां विरलन राशिकौ विर-[illegible] १,१,१,१ रूप प्रति देयराशिकौ दीजिए, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोयसै छप्पन भए, तहां [illegible] गुणन भया ताते गुणकारशलाका एक। बहुरि देयराशि च्यारिकी वर्गशलाका एक, [illegible] राशि च्यारिके अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि दोयसै छप्पनकी दोय वर्गशलाका भई। बहुरि [illegible] अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि विरलनराशि च्यारिकौ गुणें दोयसै छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद भए, [illegible] जानना। बहुरि ऐसे अंकसंदृष्टि विषै दोयसै छप्पन भए तैसे परस्पर गुणें जो महाराशि [illegible] ताकौ विरलन राशि अर देय राशि रूप स्थापिए। तहां विरलन राशिका विरलन करि अर रूप [illegible] देय राशिकौ देइ परस्पर गुणि जो लोकप्रमाण शलाका राशि था तामैं एक और घटाइए, [illegible] परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका दोय जाते दूसरी बार गुणन भया। बहुरि वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेदनि आकार करि असंख्यात लोक प्रमाण है तथापि वर्गशलाका-[illegible] अर्द्धच्छेद असंख्यात लोक गुणे है। बहुरि इस ही क्रमतें परस्पर गुणनतें जो जो महाराशि [illegible] तीहि प्रमाण विरलनराशि, देय राशि स्थापि विरलन राशिका विरलन करि रूप प्रति देय [illegible] देइ परस्पर गुणन करि एक एक शलाका राशिमैं घटावतें घटावतें जहां लोक प्रमाण [illegible] शलाका राशि समाप्त भए तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ [illegible] लोकप्रमाण ही है। जाते लोकप्रमाण बार गुणकार भया। बहुरि वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेदतैं [illegible] प्रकार तीन अधिक है तथापि आगमतैं असंख्यात लोक प्रमाण कहिए। ऐसें पहिली बार [illegible] कीया जो शलाका राशि ताका निष्ठापन जो समाप्तपना सो भया। बहुरि तहां परस्पर गुणें [illegible] महाराशि भया ताकौं शलाका, विरलन, देय ऐसे तीन प्रकार स्थापिए। बहुरि जैसें प्रथम [illegible] शलाकाका निष्ठापन कीया, तैसेंही अनुक्रमतें दूसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका ताका [illegible] निष्ठापन करना। बहुरि तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि होइ तीहि प्रमाण शलाका, विरलन, [illegible] देय राशि स्थापि पूर्वोक्त प्रकार करि ही तीसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका राशि ताका [illegible] निष्ठापन करना। बहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया तीहि प्रमाण शलाका, विरलन, देय [illegible] राशि स्थापि, पूर्वोक्त प्रकार करि जो चौथी बार इस शलाका राशिका प्रमाण था तामैं पूर्वैं तीन [illegible] शलाकाका प्रमाण घटाइ अवशेष शलाकाका प्रमाणको सामान्यपनें आधी शलाका कही ताका [illegible] [illegible] तीन बार शलाका निष्ठापन भए अग्निकायिक जीवनिका प्रमाण हो [illegible] [illegible] गुणकार शलाकादिकके अग्निकायिकादिक नतें अल्प [illegible] [illegible] बहुरि [illegible] वनस्पतिकायिक जीव राशितें असंख्यात स्थान

जाइ कायस्थितिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताका एक वार वर्ग भए कायस्थितिका प्रमाण हो हैं। सो कहा? अन्यकायतैं आय करि अग्निकायिकनिविषै कोई जीव उपज्या, सो उत्कृष्टै यावत् काल अग्निकायिकपणा छोडि अन्य काय विषै न उपजै तहांही अवस्थित रहै, अग्निकायकै पर्याय धर्या करै, तिसकालके समयनिका प्रमाण सो इहां कायस्थितिका प्रमाण जानना। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अवधिक्षेत्रकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकौं एक वार वर्गरूप कीएं सर्वावधिका विषयभूत उत्कृष्ट क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं. यद्यपि अवधि रूपीहीकौं जानै है रूपी पदार्थ लोक विषै ही है। तथापि शक्ति अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण क्षेत्र कह्या है॥ ८३।८४॥

वग्गसलागत्तिदयं तत्तो ठिदिबंधपच्चयट्ठाणा।
वग्गसलादीरसबंधज्झवसाणाण ठाणाणि॥ ८५॥

वर्गशलाकात्रितयं ततः स्थितिबंधप्रत्ययस्थानानि।
वर्गशलादिरसबंधाध्यवसानां स्थानानि॥ ८५॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एकवार वर्ग कीएं ज्ञानावरणादिकर्मनिका स्थितिबंधकौं कारणरूप जे कषाय परिणाम तिनके स्थानकनिका प्रमाण हो हैं। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थानकी वर्ग शलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छे हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक वार वर्ग कीएं ज्ञानावणादि कर्मनिका तीव्रादि शक्तिकौं लीएं रसबंध जो अनुभागबंध ताको कारण भूत कषाय परिणामनिके स्थानकनिका प्रमाण हो है॥ ८५॥

वग्गसलागप्पहुदी णिगोदजीवाण कायवरसंखा।
वग्गसलागादितयं णिगोदकायट्ठिदी होदि॥ ८६॥

वर्गशलाकाप्रभृति निगोदजीवानां कायवरसंख्या।
वर्गशलाकादित्रयं निगोदकायस्थितिर्भवति॥ ८६॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद शरीर संख्याकी वर्ग शलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक वार वर्ग रूप किएं निगोद जीवनिके सर्व शरीर तिनकी उत्कृष्ट संख्या हो हैं,। नियत जे अनंत संख्याकौं धरैं जीव तिनकौं गां कहिए क्षेत्र ताहि ददाति कहिए देव सो निगोद कर्म कहिए तीह संयुक्त जे जीव ते निगोद जीव कहिए, तिनके साधारण शरीर जेते लोकविषै उत्कृष्टपनैं होंहि तिनकी संख्या ऐती जाननी। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद कायस्थितिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकौं एकवार वर्गरूप कीएं निगोद कायस्थिति हो है। सो यहा निगोद कायस्थिति ऐसा कहनें करि एक जीवका

निगोद विषै उत्कृष्ट रहनेका काल न ग्रहण करना । जातैं एकजीव इतरनिगोदविषै उत्कृष्ट रहै तौ अढाई पुद्गल परावर्तन काल पर्यंत रहै सो काल अनंत है। तौ कहा ग्रहण करना ? निगोद शरीररूप परिणए जे पुद्गल ते तीह शरीररूप आकारकौं यावत्काल उत्कृष्ट पनैं छाड़ैं नांहीं सो काल इहां ग्रहण करनां ॥ ८६ ॥

तत्तो असंखलोग कदिठाणे चडिय वग्गसलतिदयं ।
दिस्संति सव्वजेट्ठा जोगस्सविभागपडिछेदा ॥ ८७ ॥
ततो असंख्यलोक कृतिस्थानं चटित्वा वर्गशलात्रितयम् ।
दृश्यते सर्वज्येष्ठा योगस्याविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ८७ ॥

अर्थ—यहांते तीह निगोद काय स्थितितैं उपरि असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़ि-करि सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेदनिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़िकरि ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात लोकमात्र कृतिस्थान चढ़िकरि ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एकवार वर्गरूप कीएं सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रति-छेदनिका प्रमाण हो हैं। कर्म आकर्षण करनेकी शक्ति सो योग कहिए, ताके अविभाग प्रतिछेद कहिए जिनका विभाग न होइ ऐसे सूक्ष्म अंश तिनका प्रमाण हो है ॥ ८७ ॥

जो जो रासी दिस्सदि विरूववग्गे सगिट्ठठाणम्हि ।
तट्ठाणे तस्सरिसा घणाघणे णवणवुद्दिट्ठा ॥ ८८ ॥
यो यो राशिः दृश्यते द्विरूपवर्गे स्वकेष्टस्थाने ।
तत्स्थाने तत्सदृशा घनाघने नव नव उद्दिष्टाः ॥ ८८ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै अपना इष्ट स्थान जो विवक्षित स्थान तीह विषै जो जो राशि वर्गरूप दीसै है, तीह स्थान विषै इहां द्विरूप घनाघन धारा विषैं द्विरूप वर्गधाराका स्थान-के समान राशि नव नववार परस्पर गुणैं राशी हो है ऐसा कह्या है। जैसैं द्विरूप वर्गधारा विषै राशि विषैं द्वितीय स्थान च्यारिका वर्ग सोलह इहां च्यारिकौं नववार मांडि (४,४,४,४,४,४,४,४,४) इनकौं परस्पर गुणें दोय लाख बासठि हजार एक सौ चवालीस होइ, सो इस धारा विषै द्वितीय स्थान जाननां। ऐसैं ही सर्व द्विरूप वर्गधाराके स्थानक वर्गरूप हैं तिनकौं नववार परस्पर गुणें द्विरूप घनाघन धाराके स्थान हो हैं ऐसा जाननां ॥ ८८ ॥

चडिदूणणंतमणंतं ठाणे केवलचउत्थपदविंदं ।
सगवग्गगुणं चरिमं तुरियादिपदाहदेण समं ॥ ८९ ॥
चटित्वैवमनंतं स्थानं केवलचतुर्थपदवृन्दम् ।
स्वकवर्गगुणमन्त्यं तुरीयादिपदाहतेन समं ॥ ८९ ॥

अर्थ—तीह योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेद स्थानतैं अनंत वर्ग स्थान चढ़ि करि केवलज्ञानका चौथा मूल [illegible] इस चौथा मूलका [illegible] प्रमाण होइ [illegible] इस धाराका अंतस्थान जानना [illegible] चौथा मूल [illegible] प्रथम मूलकी [illegible] प्रमाण है। [illegible]

समान जाननां। याकों अंकसंदृष्टि करि कहिए है। जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण(६५-५३६) ताका चौथा वर्गमूल दोय (२) ताका घन आठ (८) ताकौं इस घनका कौ चौसठि करि गुणें पांचसैं बारा होइ (५१२) सोई पणट्ठीका चौथा मूल दोय (२) अर प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) इनकों परस्पर गुणें भी पांच सौ बारा होय (५१२) ऐसें यहु अंत स्थान जाननां ॥ ८९ ॥

औरनिके अंत स्थानपनां कैसें न संभवै सो कहै हैं:—

चरिमादिचउक्कस्स य घणाघणा एत्थ णेव संभवदि।
हेदू भणिदो तम्हा ठाणं चउहीणवग्गसला ॥ ९० ॥
चरमादिचतुष्कस्य च घनाघना अत्र नैव संभवंति।
हेतुः भणितः तस्मात् स्थानं चतुर्हीनवर्गशलम् ॥ ९० ॥

अर्थ—केवलज्ञानादिक नीचैंके द्विरूप वर्गधारा विषै कहे च्यारि स्थान केवलज्ञान १ ताका प्रथम मूल १, द्वितीय मूल १, तृतीय मूल १ इन च्यारोंका घनाघन इस द्विरूप घनाघन धारा विषै न संभवै है। जो इनका घनाघन करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ। अंकसंदृष्टि करि जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण (६५५३६) ताका प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) द्वितीय मूल सोल्ह (१६) तृतीय मूल च्यारि (४) इनके घनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ, तातैं इस द्विरूप घनाघन धाराके सर्वस्थानकनिका प्रमाण च्यारि घाटि केवलज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण जाननें ॥ ९० ॥

आगैं कहीं जु ए धारा तिनका संहार कहै हैं:—

ववहारुवजोग्गाणं धाराणं दरिसिदं दिसामेत्तं।
वित्थरदो वित्थररुइसिस्सा जाणंतु परियम्मे ॥ ९१ ॥
व्यवहारोपयोग्यानां धाराणां दर्शितं दिशामात्रम्।
विस्तारतो विस्तररुचिशिष्या जानंतु परिकर्मणि ॥ ९१ ॥

अर्थ—संख्या व्यवहारकौं उपयोगी ऐसे जु धारा तिनका स्वरूप इहां दिशा मात्र दिखाया। जैसें थोडे अंगुली करि पूर्वादिक दिशाकौं दिखावै तैसें इहां अति संक्षेप धारानिका स्वरूप दिखाया है। जे विस्तार विषै रुचिके धारक शिष्य हैं, ते विस्तार तैं वृहत्धारा परीकर्मा नामा ग्रंथ विषै धारानिका स्वरूपकौं जानहु ॥ ९१ ॥ ऐसें संख्याप्रमाण समान भया।

अब संख्याप्रमाणके विशेषभूत ऐसी जु चौदह धारा तिनकूं सविस्तार दिखाइ अब तिनि जे उपमा प्रमाणका अष्टक ताकौं निरूपण करै हैं:—

पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी।
लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा ॥ ९२ ॥
पल्यः सागरः सूची प्रतर च घनांगुलं च जगच्छ्रेणी।
लोकप्रतरश्च लोकः उपमाप्रमा एवमष्टविधा ॥ ९२ ॥

अर्थ—पल्य १, सागर २, सूच्यंगुल ३, प्रतरांगुल ४, घनांगुल ५, जगच्छ्रेणी ६ जगत्प्रतर ७, घनलोक ८ ऐसे उपमा प्रमाण आठ प्रकार हैं ॥ ९२ ॥

आगैं इन विषै पल्यका भेदकौं अपनां अपनां विषयका निर्णय पूर्वक कहै हैं:—

ववहारुद्धारद्धापल्ला तिण्णेव होंति णायव्वा।
संखा दीवसमुद्दा कम्मट्ठिदि वण्णिदा जेहिं ॥ ९३ ॥

व्यवहारोद्धाराद्धापल्यानि त्रीण्येव भवंति ज्ञातव्यानि।
संख्या द्वीपसमुद्राः कर्मस्थितयो वर्णिता यैः ॥ ९३ ॥

अर्थ—व्यवहार पल्य १, उद्धारपल्य २, अद्धापल्य, ३, ऐसैं पल्य तीन प्रकार ही हैं ऐसा जाननां। जिन तीन प्रकार पल्यनिकरि क्रमतैं संख्या अर द्वीप समुद्र अर कर्मस्थिति आदि वर्णन कीए हैं। तहां व्यवहार पल्य करि तौ रोमनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर उद्धारपल्यकरि द्वीप समुद्रनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर अद्धापल्य करि कर्मकी स्थिति वर्णिए हैं, आदि शब्दतैं और भी यथासंभव जाननां ॥ ९३ ॥

आगैं पल्यके जाननेकौ विधान कहै हैं:—

सत्तमजम्मावीणं सत्तदिणब्भंतरम्हि गहिदेहिं।
सण्णट्ठं सण्णिचिदं भरिदं बालग्गकोडीहिं ॥ ९४ ॥

सप्तमजन्माबीनां सप्तदिनाभ्यंतरे गृहीतैः।
संनष्टं संनिचितं भरितं बालाग्रकोटिभिः ॥ ९४ ॥

अर्थ—सातवां जन्म जुक्त ऐसे जु उरणें गाडर तिनके जन्मतै सात दिन मांही ग्रहे जु रोम तिनके अग्रभाग रूप खंड तिनके कोडिनिकरि संयुक्त किया बहुत संचयरूप किया भऱ्या ॥ ९४ ॥

ऐसा कह्या सो कहै हैं:—

जं जोयणवित्थिण्णं तत्तिउणं परिरयेण सविसेसं।
तं जोयणमुव्विद्धं पल्लं परिदोवमं णाम ॥ ९५ ॥

यत् योजनविस्तीर्णं तत्त्रिगुणं परिधिना सविशेषम्।
तत् योजनमुद्विद्धं पल्यं पल्योपमं नाम ॥ ९५ ॥

अर्थ— जो एक योजन प्रमाण तौ विस्तीर्ण कहिए चौडा, बहुरि तातैं तिगुणा परिधि करि सविशेष।

भावार्थ— जो सूक्ष्म परिधिकी अपेक्षा चौडाईतैं तिगुणा किछू अधिक परिधिकौ प्रमाण करि संजुक्त, बहुरि एक योजन उंडा ऐसा जु कुंड सो रोमनि करि भऱ्या तीह विषै जो रोमनिका प्रमाण तावौ पल्योपम कहिए वा पल्योपम कहिए ॥ ९५ ॥

आगैं परिधिका सविशेष ऐसा विशेषण कह्या ताकै जाननेंकौ सूक्ष्म परिधि करनेका करणसूत्र कहै हैं —

विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरयो होदि।
विक्खंभचउब्भागं परिरयगुणिदं हवे गणियं ॥ ९६ ॥

विष्कंभवर्गदशगुणकरणिः वृत्तस्य परिधिः भवति ।
विष्कंभचतुर्भागे परिधिगुणिते भवेत् गणितम् ॥ ९६ ॥

अर्थ—विष्कम्भ कहिए चौड़ाईका प्रमाण तीहका वर्ग करिए, ताकौं दसगुणा करि ऐसें करनें जो प्रमाण होइ सो वृत्त जो गोल क्षेत्र ताका करणिरूप परिधि जाननां । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ तिस राशिका तहां करणि ऐसी संज्ञा जाननी । बहुरि तिस [illegible] किएँ जेता प्रमाण होइ सो सूक्ष्म परिधि जाननां । जो तारतम्यरूप परिधि होइ सो सूक्ष्म [illegible] कहिए । सो इहां कुंडका विष्कम्भ एक योजन है । विष्कम्भ १ ताका वर्ग कीएं भी एक योजन ही होइ, ताकौं दशगुणा कीएं दश योजन होइ सो इतनां करणि राशि भया, सो याका इहां वर्गमूल ग्रहण करनां । सो दश योजनका वर्गमूल तीन योजन अर एक योजनका छठा भाग इतनां भया ($3\frac{1}{6}$) याकौं समच्छेद करि जोड़ें उगणीसका छठा भाग भया ($\frac{19}{6}$) ऐसें इस कुंडका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण हो है । बहुरि परिधिकौं विष्कम्भका चौथा भागतैं गुणें क्षेत्रफल होइ सो इहां विष्कम्भ एक योजन ताका चौथा भाग $\frac{1}{4}$ करि गुणें उगणीसकौं चौईसका भाग दीजिये इतना क्षेत्रफल भया ($\frac{19}{24}$) । बहुरि याकौं वेध जो उंडाई एक योजन प्रमाण तीहि करि गुणें भी इतनां ही भया ($\frac{19}{24}$) । ऐसें इस कुंडका घनरूप समस्त सूक्ष्म क्षेत्रफल उगणीसका चौईसवां भाग प्रमाण जाननां । बहुरि यहु कह्या जो प्रमाण योजनरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल ताके व्यवहार योजनादिक करे कैसे ? सो कहै हैं । एक प्रमाणयोजन रूप क्षेत्र ताका पांचसै व्यवहारयोजन होइ तो उगणीस प्रमाण योजनका चौईसवां भागकौं कितने व्यवहार योजन होइ ऐसें त्रैराशिक करनां, तहां घनरूप क्षेत्रविषै गुणकार वा भागहार घनरूप ही होइ तातैं तिन प्रमाण योजननिके भागनिकौं पांचसैका घन करि गुणिए, तातैं पांचसैकी तीन जायगा लिखिए । बहुरि ऐसेंही एक व्यवहारयोजनके [illegible] अंगुल, एक अंगुलके आठ यव, एक यवके आठ लीख, एक लीखके आठ कर्मभूमियाके रोम, एक कर्मभूमियाके रोमके आठ जघन्य भोगभूमियाके रोम, एक जघन्य भोग भूमियाके रोमके आठ मध्यम भोग भूमियाके रोम, एक मध्यम भोगभूमियाके रोमके आठ उत्कृष्ट भोग भूमियाके रोम, सो इनका त्रैराशिक करि घनरूप राशि है तातैं इनकौं तीन तीन बार मांडि परस्पर गुणिए ($\frac{19}{24}$, ५००,५००,५००,७६८०००,७६८००० ,७६८०००,८ इन सबनिकौं परस्पर गुणें [illegible] बहुरि इस विष्कम्भके वर्गकौं दशगुणा करि [illegible] परिधिका प्रमाण कैसें होइ सो वासनाका [illegible] ॥ ९६ ॥

आगै [illegible] कहै हैं —

[illegible] ।
[illegible] ॥ ९७ ॥
[illegible]
[illegible] ॥

अर्थ—एकादि (१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६) बहुरि पणट्ठी (६५५३६) बहुरि उगणीस (१९) बहुरि अठारह (१८) इनकौ परस्पर गुणें जे अंक होंहि तिनकौं आगैं द्विगुण नवशून्य जो अठारह बिंदी तिन करि संयुक्त करिए यहु पल्योपमके रोमनिकी संख्या जाननी (१८=६५=१९,१८, बिंदी १८) ॥ ९७ ॥

आगैं परस्पर गुणें जो प्रमाणरूप पल्य तावौ दिखावै हैं:—

पटल्लवणरोयगोनगनजरनगंफाससससघधमपरकधरं ।
तिगुणणवसुण्णसहिदं पल्लस्सदु रोमपरिसंखा ॥ ९८ ॥
प.... .... ।
द्विगुणनवशून्यसहितं पल्यस्य तु रोमपरिसंख्या ॥ ९८ ॥

अर्थ—इहां अक्षर संज्ञातैं अंक जानने। ताका उक्त च सूत्र—'कटपयपुरस्थवर्णैर्नव नव पंचाष्टकल्पितैः क्रमशः। स्वरञनशून्यं संख्या मात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यं ॥' याका अर्थ—ककारादिक नव, अर टकारादिक नव, अर पकारादिक पांच, अर यकारादिक आठ। इन अक्षरनि विषै क्रमतैं जेथवां अक्षर होइ सो तहां अंक जानना। बहुरि अकारादिक स्वर अर ञकार, नकार ए जहां होइ तहां बिंदी जानना। बहुरि अक्षरनिविषै जो मात्रा होइ अथवा कोई संजोगी अक्षर होइ तौ ताका किछू प्रयोजन न ग्रहण करना। सो इस सूत्र करि इहां व कहिए च्यारि जातैं पकारतैं वकार चौथा अक्षर है। बहुरि ट कहिए एक जातैं टकार पहला अक्षर है। बहुरि ल कहिए तीन जातैं यकारतैं लकार तीसरा अक्षर है। बहुरि व कहिए च्यारि जातैं यकार तैं वकार चौथा अक्षर है। बहुरि ण कहिए पांच जातैं टकारतैं णकार पांचवां अक्षर है। ऐसें ही क्रमतैं रोयगो नगनजर नगंफास ससय घ मपर कधरंनि इन अक्षरकरि दोय, छह, तीन, बिंदी, तीन, एक, सात, सात, सात, च्यारि, नव, पांच, एक, दोय, एक, नव दोयके अंक जानने। बहुरि आगैं द्विगुण नव शून्य कहिए अठारह बिंदीनि करि सहित करिए। ऐसें जो प्रमाण होइ सो पल्यके रोमनिकी संख्या जाननी। (४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२००००००००००००००००००) ॥ ९८ ॥

आगैं व्यवहार पल्यके समयकौ दिखावै हैं:—

वस्ससदे वस्ससदे एक्केक्के अवहिदम्हि जो कालो ।
तक्कालसमयसंखा णेया ववहारपल्लस्स ॥ ९९ ॥
वर्षशते वर्षशते एकैकस्मिन् अपहृते यः कालः ।
तत्कालसमयसंख्या ज्ञेया व्यवहारपल्यस्य ॥ ९९ ॥

अर्थ—एक सौ वर्ष, एक सौ वर्ष गएं एक एक रोम तिन रोमनिमैंस्यौं ग्रहण करिए। इस ग्रहण करनेकरि सब रोम समाप्त जितने काल विषै होइ तावन्मात्र कालके जेते समय सो व्यवहार पल्यके समयनिकी संख्या होइ सो एक रोमका ग्रहण विषै सौवर्ष होइ, तौ पूर्वोक्त प्रमाण सर्व रोमनि ग्रहण विषै केते होइ ऐसे त्रैराशिक करि बहुरि एक वर्षके तीनसै साठि दिन, एक

विषै केते कुंड होहिं, ऐसा त्रैराशिक करिए, तहां प्रमाण राशि ऐसा (१० ३॥ फल राशि १, इच्छाराशि ऐसा (६ ल्ल, ६ ल्ल, १०) इच्छाकौं फल करि गुणि प्रमाणका भाग दीएं दशका गुणकार वा भागहारका अपवर्त्तन कीएं लब्धराशि ऐसा होइ (६ ल्ल, ३ ६ ल्ल ३)। बहुरि 'हारस्य हारो गुणकोंशराशेः' इस बचनतें भागहारका, भागहार राशिका गुणकार होइ सो यहां भागहार एक, ताका भागहार च्यारि है सो राशिका गुणकार भया तब ऐसा भया (२४ ल्ल, २४ ल्ल) ऐसें वर्गरूप शलाका होहैं, याका वर्गमूल ग्रहण करिए तब एक लाख गुणा चौवीस लाख हूवा (२४ ल्ल) याकौं लवण समुद्रकी ऊंडाई हजार योजन प्रमाण करि गुणें सर्व कुंडनिका प्रमाण ऐसा भया (२४ ल्ल १०००) ॥ १०३ ॥

आगैं अन्यगुणकारकौं दिखावैं हैं:—

रोमहदं छक्केसजलोस्सेगे पण्णुवीससमयात्ति ।
संपादं करिय हिदे केसेहिं सागरुप्पत्ती ॥ १०४ ॥

रोमहतं पट्केशजलोत्सेके पंचविंशसमया इति ।
संपातं कृत्वा हिते केशैः सागरोत्पत्तिः ॥ १०४ ॥

अर्थ—बहुरि व्यवहार पल्यकै रोम च्यारि, एक आदि अंकरूप तिनकी सहनानी ऐसी (४१=) बहुरि तिनि तैं असंख्यात गुणें उद्धार पल्यके रोम तिनकी सहनानी ऐसी (४१=८) बहुरि अद्धापल्यके रोम तींह स्यौंभी असंख्यात गुणें तिनकी सहनानी ऐसी (४१=८८) इहां असंख्यातकी सहनानी ऐसी ८ जाननी, सो एक कुंडमें इतनें रोम पाईए है पूर्वोक्त प्रमाण कुंडनि विषै केते रोम पाईए ऐसें त्रैराशिक करि पूर्वोक्त कुंडनिके प्रमाणको रोमनिके प्रमाण करि गुणित करे लवण समुद्र विषै कल्पित किए सर्व कुंड तिन विषै रोमनिका प्रमाण होइ (२४ ल्ल १०००, ४१=८८ बहुरि छह रोम जितनां क्षेत्र रोकैं, तितनें क्षेत्रका जलकौं काढतैं पचीस समय होइ तौ पूर्वोक्त प्रमाण रोमनिका क्षेत्र संबंधी जलकौं उत्सिंचन करतैं केते समय हो हिं, ऐसें त्रैराशिक करनां। तहां प्रमाण राशि छह रोम (६), फलराशि पचीस समय (२५), इच्छाराशि सर्व रोम (२४ , ल्ल १०००४१=८८) इहां इच्छा राशि विषै चौवीसको प्रमाण राशि छह करि अपवर्त्तन कीएं, अर फल करि इच्छा राशिकौं गुणें लब्ध राशि ऐसा (२५,४, ल्ल १०००,४१=८८) बहुरि पल्यके समय पूर्वोक्त इतनें (४१=८८) होइ तौ इतनें समयनिके केते पल्य होइ तहां ऐसा (४१=८८) प्रमाणका अपवर्त्तन कीएं पचीस, अर लाख गुणा च्यारि लाख अर हजार इनकौं परस्पर गुणें दशकोडाकोडि भया सो इतने पल्य भएं एक सागरकी उत्पत्ति हो है ॥ १०४ ॥

आगैं दिगंबर वर्गशलाविषै सागरोपमकी उत्पत्ति नाहीं तातैं सागरोपमके अर्द्धच्छेदकौं ग्रहणका सूत्र कहै है —

गुणयारद्धच्छेदा गुणिज्जमाणस्स अद्धछेदजुदा ।
लद्धस्सद्धच्छेदा अहियस्स छेदणा णत्थि ॥ १०५ ॥

गुणकारार्धच्छेदा गुण्यमानस्यार्धच्छेदयुताः ।
लब्धस्यार्धच्छेदा अधिकस्य छेदना नास्ति ॥ १०५ ॥

अर्थ—गुणकारके जो अर्द्धछेद होंहि ते गुण्यमानराशिके अर्द्धछेदनिकरि जोडिए तब लब्धराशिके अर्द्धछेद होंहि । जैसे गुणकार आठ गुण्य सोलह सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें लब्धराशि एकसौ अट्ठाईस तहां गुणकार आठके अर्द्धछेद तीन अर गुण्य सोलहके अर्द्धछेद च्यारि ४ इन दोऊनिकों जोडें लब्धराशि एकसौ अट्ठाईसके अर्द्धछेद सात हो हि । तैसे इहां भी गुणकार दश कोडाकोडि अर गुण्य पल्य सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें सागर होइ तहां गुणकार दश कोडाकोडिके अर्द्धछेद संख्यात सो गुण्य जो पल्य ताके अर्द्धछेदनि करि जोडें लब्धराशि सागरके अर्द्धछेद हो है । बहुरि जाते अधिककी छेदना नाही है । तातैं सागरोपमकी वर्गशलाका नाही है । भावार्थ—गुणकारच्छेदा इत्यादि सूत्र करि गुण्यके अर्द्धछेदनि विषैं गुणकारके अर्द्धछेद जोडें तहां जो गुणकारके अर्द्धछेद जोडे तिनकों अधिक छेद कहिये तिन अधिक छेदनिके अर्द्धछेद होहि परंतु प्रयोजन नाहीं। तातैं ऐसा कहा कि अधिक छेदनिके अर्द्धछेद नाहीं । प्रयोजन तौ यहु है जो राशिके जेते अर्द्धछेद होंहि तिन अर्द्धछेदनिके जेते अर्द्धछेद होंहि तावन्मात्र वर्गशलाका होइ । सो तौ यहां प्रयोजन है नाही जातै यहु राशि वर्गरूप नाही है तातैं सागरोपमकी वर्गशलाकाका अभाव जानना ॥ १०५ ॥

आगें गुण्यगुणकारके अर्द्धछेदनिका स्वरूप दिखावतैं प्रसंग पाइ भाज्य भाजकके भी अर्द्धछेदनिका स्वरूपकों दिखावै हैं—

भज्जस्सद्धच्छेदा हारद्धच्छेदणाहिं परिहीणा ।
अद्धच्छेदसलागा लद्धस्स हवंति सव्वत्थ ॥ १०६ ॥

भाज्यस्यार्धच्छेदा हारार्धच्छेदनाभिः परिहीनाः ।
अर्धच्छेदशलाका लब्धस्य भवंति सर्वत्र ॥ १०६ ॥

अर्थ—भाज्यके जेते अर्द्धछेद हों हि ते हार जो भाजक ताके अर्द्धछेदनिकरि हीन करिए तब लब्धराशिकी अर्द्धछेदशलाका सर्वत्र होइ । अंक संदृष्टि विषैं जैसैं भाज्य चौंसठि ६४ हार च्यारि ४ हारका भाग भाज्यकों दीएं लब्धराशि सोलह १६ । तहां भाज्य चौंसठिके अर्द्धछेद छह ६ ते भाजक च्यारिके अर्द्धछेद दोय तिन करि हीन किएं अवशेष लब्धराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि जानने । ऐसैं ही अन्यत्र भी जानना ॥ १०६ ॥

आगें मूल्यगुल्कके अर्द्धछेदकों दिखावता सूत्र कहै हैं:—

विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे ।
अद्धच्छेदा होंति दु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स ॥ १०७ ॥

विरल्यमानराशिं देयस्यार्धच्छिदिभिः संगुणिते ।
अर्धच्छेदा भवन्ति हि सर्वत्रोत्पन्नराशेः ॥ १०७ ॥

अर्थ—विरलनमान जो राशि ताकों देय राशिके अर्द्धच्छेदन करि गुणें उत्पन्न रा
अर्द्धछेद सर्वत्र होहि। जैसें विरलन राशि च्यारि, देय राशि सोलह, तहां विरलन राशिका वि
करि देयराशिकों रूप प्रति देइ १६।१६।१६।१६। परस्पर गुणें पणट्ठी ६५५३६ उत्पन्न
तहां विरलन राशि च्यारि ताकों देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि तिन करि गुणें उत्पन्न रा
पणट्ठी ताके अर्द्धच्छेद सोलह हो हैं। तैसें इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद तिनकों दे
पल्य ताके अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशिके अर्द्धच्छेद पल्यके अर्द्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण हो है॥१०

आगें सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाकों दिखावता सूत्र कहै हैः—

विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसंमिलिदा।
वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पण्णरासिस्स॥ १०८॥

विरलितराशिच्छेदा देयार्धच्छेदच्छेदसंमिलिताः।
वर्गशलाकाप्रमाणं भवंति समुत्पन्नराशेः॥ १०८॥

अर्थ—विरलन राशिके जेते अर्द्धच्छेद होहि ते देयराशिके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेदनि वि
मिलाइए जोडिए। तब विरलनदेयका क्रम करि उत्पन्न भया जो राशि ताकी वर्गशलाका प्र
होइ। जैसें विरलनराशि च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय बहुरि देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि ता
अर्द्धच्छेद दोय इनकों मिलाएं उत्पन्नराशि जो पणट्ठी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण च्यारि होइ। तै
इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद ताके अर्द्धच्छेद पल्यकी वर्गशलाका प्रमाण बहुरि देयराशि प
ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद भी पल्यकी वर्गशलाकानैं दूणी हो हैं। बहुरि—**वग्गादुपरिमव**
दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धछिद्दी। इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय कर सूच्यंगुलके अर्द्धच्छेदनतैं दूणे प्र
गुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि—**वग्गसला रूवहिया**—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सू
गुलकी वर्गशलाकातैं एक अधिक प्रतरांगुलकी वर्गशलाका हो है। बहुरि द्विरूप वर्गधाराविषैं उत्प
जो सूच्यंगुल सो जिस स्थानविषैं उपजै है तिसहीके समान स्थान विषैं द्विरूप घनधाराविषैं घन
गुल उपजैं हैं तातैं '**तिगुणा तिगुणा परट्ठाणे**'—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलके अर्द्ध
च्छेदनितैं तिगुणें घनांगुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि '**सपदे पर सम**'—इस पूर्वोक्त न्याय
सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाके समान ही घनांगुलकी वर्गशलाका है। बहुरि 'विरलज्जमाणरासिं' इत्या
सूत्रके न्याय करि विरलनमानराशि पल्यका अर्द्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग ताकों देयराशि घनांगुल
अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशि जगच्छ्रेणी ताके अर्द्धच्छेद हो हैं॥ १०८॥

आगें जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका दिखावनैंकौं सूत्र कहै हैः—

दुगुणपरीतासंखेणवहरिदद्धारपल्लवग्गसला।
विंदंगुलवग्गसलासहिया सेढिस्स वग्गसला॥ १०९॥

द्विगुणपरीतासंख्येनापहृताद्धारपल्यवर्गशलाकाः।
वृंदांगुलवर्गशलाकासहिता श्रेण्या वर्गशला॥ १०९॥

अर्थ—दूणा जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित जो अद्धारपल्यकी वर्गशलाका सो घनां
गुलकी वर्गशलाकासहित जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका हो है।

भावार्थ—पल्यकी वर्गशलाकाकौं जघन्य परीतासंख्याततैं दूणें प्रमाणका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताकौं घनांगुलकी वर्गशलाकासहित जोडिए तब जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो है। इहां दूणा जघन्यपरीतासंख्यातका भाग कैसैं दीया सो कहिए हैं। अद्धापल्यका अर्द्धच्छेद राशिके अर्द्धच्छेदपल्यकी वर्गशलाका प्रमाण है। बहुरि पल्यका अर्द्धच्छेदराशिका प्रथम वर्गमूलके अर्द्धच्छेद पल्यकी वर्गशलाकाके अर्द्धप्रमाण है। बहुरि ताहीका द्वितीय मूलके अर्द्धच्छेद तातैं आधे हैं। तृतीय मूलके तातैं आधे है ऐसैं वर्गमूल वर्गमूल प्रति आधे आधे अर्द्धछेद तावत् करने यावत् पल्यका अर्द्धच्छेदराशिके नीचैं जघन्य परीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिक प्रमाण वर्गमूलपर्यंत जाइ अंत विषैं जो वर्गमूल होइ ताके दूणा जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित अद्धापल्यकी वर्गशलाका प्रमाण अर्द्धच्छेद होंहि। इहांतैं उपरि उपरि वर्ग कीएं जैसैं दूणे दूणे अर्द्धच्छेद होंहि तैसैं उपरि तैं नीचे नीचे वर्गमूलनि विषैं आधे आधे अर्द्धच्छेद होंहि। इस युक्ति करि जघन्यपरीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिकप्रमाण वर्गमूलके अर्धच्छेद इतनें भये। एक अधिक जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें दूणा जघन्य परीतासंख्यात होइ ताका भाग अद्धापल्यकी वर्गशलाकाकौं दीएं जो प्रमाण होइ तितने भए। *भावार्थ—जगच्छ्रेणीविषैं विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेदनिकैं असंख्यातवैं भागि कह्या* सो पल्यकी अर्द्धच्छेदराशिकै नीचे जघन्यपरीतासंख्यातका एक अधिक अर्द्धच्छेद प्रमाण जे पल्यके अर्द्धच्छेदनिके वर्गमूल तिन विषैं अंतके वर्गमूलका प्रमाण जानना। ताके अर्द्धच्छेद दूणा जघन्यपरीतासंख्यातका भाग पल्यकी वर्गशलाकाकौं दीएं जो प्रमाण होइ तितना भया। बहुरि '**द्विगुणद्-छेदछेदसम्मिलिदा**' इस वचन करि देयराशि घनांगुल ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद जो घनांगुलकी वर्गशलाका सो तिन विषैं जोडिए मिलाईए ऐसे करतैं उत्पन्न राशि जो जगच्छ्रेणी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो है ऐसैं मनविषै विचारि '**दुगुणपरीतासंखे**'—इत्यादि सूत्र आचार्यनै कह्या है। बहुरि '**वग्गादुवरिमवग्गे**' इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं दूणे जगत्प्रतरके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि '**वग्गसला रूवहिया**'—इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकातैं एक अधिक जगत्प्रतरकी वर्गशलाका है। बहुरि '**तिगुणा तिगुणा परिट्ठाणे**'-इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं तिगुणे घनलोकके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि '**सपदे परमव**' इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाके समान ही घनलोककी वर्गशलाका है ॥ १०९ ॥

आगैं '**तम्मेत्तदुगे गुणे रासी**' इस सूत्र करि जितना अर्द्धच्छेदनिका प्रमाण होइ तितना दूवा मांडि परस्पर गुणें राशि होइ। इहां जो साधिक अर्द्धच्छेद होइ सो कैसे होइ सो कहै हैं—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी गुणगारो लद्धरासिस्स ॥ ११० ॥

विरलितराशितः पुनः याव-मात्राणि अधिकरूपाणि।
[illegible] अन्योन्य[illegible] गुणकारो लब्धराशेः ॥ ११० ॥

अर्थ—[illegible] राशितैं यावन्मात्र अधिक रूप होइ तिनका [illegible] प्रमाण [illegible] अंक मांडि परस्पर गुणें [illegible] प्रमाण होइ तितना लब्धराशिका गुणकार जानना। जैसे [illegible]

च्छेदनिका प्रमाण संख्यात अधिक पल्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण है। तहां पल्यके अर्द्धच्छे
विरलनरूपराशि कहिये। अर ताकै उपरि संख्याते अर्द्धच्छेद तिनकों अधिक रूप क
अधिक रूप प्रमाण दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें दश कोडाकोडि प्रमाण सो विरलनरा
दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें भया जो पल्य प्रमाण लब्धराशि ताका गुणाकार जान
पल्यप्रमाण गुण्यकों दश कोडाकोडि प्रमाण गुणकार करि गुणें सागरोपम हो है। अंक स
जैसें सागरके अर्द्धच्छेद सात तहां विरलनराशि तौ पल्यका अर्द्धच्छेद च्यारि ताके उपरि अ
तीनसो तीन जायगा दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें आठ भया सो विरलनराशिप्रमाण
परस्पर गुणें भया जो पल्यका प्रमाण सोलह लब्धराशि ताका गुणकार हो है। तहां सोल
करि गुणें सागरोपमका प्रमाण एकसौ अठाईस हो हैं। ऐसें ही अन्यत्र भी जानना।

भावार्थ—इहां ऐसा है कि जैसें केतेइक अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद मि
मिलाए अर्द्धच्छेदनिकों अर्द्ध एकरूप कहे तैसें तिन मिलाए अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि प
जो राशि होइ सो मूल अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा माडि परस्पर गुणें जो लब्धराशि होइ तिस वि
योग्य न हो हैं गुणकाररूप हो हैं॥ ११०॥

आगें प्रसंगपाइ हीन अर्द्धच्छेदनिका कहा सो कहै हैं:—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स॥ १११॥

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि हीनरूपाणि।
तेषामन्योन्यहतिः हार उत्पन्नराशेः॥ १११॥

अर्थ—विरलनरूपराशितैं यावन्मात्र हीनरूप होइ तिन हीन रूप प्रमाण दूवे मांि
गुणें जो प्रमाण होइ सो उत्पन्नराशि जो लब्धराशि ताका भागहार होइ। अंक संदृष्टि
उदाहरण ऐसा। जैसें पणट्ठी ६५५३६ के अर्द्धच्छेद सोलह तिन तैं च्यारि घाटि अर्द्धच्
हजार छिनवैके हो हैं। तहा पणट्ठीके अर्द्धच्छेदनिकों विरलित राशि कहिए, अर घाटि
अर्द्धच्छेद तिनकों हीनरूप कहिए। सो हीनरूपप्रमाण दूवा माडि २।२।२।२। परस्पर गु
भए। सोई विरलनराशिप्रमाण दूवा माडि परस्पर गुणें भया जो पणट्ठी ६५५३६ प्रमाण
ताका भागहार हो है। तहा भाज्य पणट्ठी ६५५३६ कों भागराशि सोलहका भाग दीयें
च्यारि हजार छिनवै हो है।

भावार्थ—अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद घटाए तिन घटाए अर्द्धच्छेदनिकों
करिए। सो हीनरूप प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो सर्व अर्द्धच्छेद प्र
मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ ताका भागहार हो है। भाग दीएं जो राशि आवै स
दीएं अवशेष अर्द्धच्छेद रहे तिनि प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो है ऐसा जानना॥

आगें [illegible] कहिए जो प्रकरण [illegible] है —

जगसेढिए वग्गो जगपदरं होदि सगुणो लोगो।
इदि संखियसंगागणसंखा समद पल्लेणो॥ ११२॥

जगच्छ्रेण्या वर्गः जगत्प्रतरो भवति तद्घनो लोकः ।
इति बोधितसंख्यानस्य इतः प्रकृतं प्ररूपयामः ॥ ११२ ॥

अर्थ—आठ प्रकार उपमा प्रमाण विषैं पल्य और सागरका तौ वर्णन कीया ही । बहुरि सूच्यंगुल प्रतरांगुल घनांगुल जगच्छ्रेणीका वर्णन पूर्वें ही जगच्छ्रेणीका घनप्रमाण लोक है इस कथ-नका प्रसंग पाइ वर्णन कीया था । बहुरि जगच्छ्रेणीका वर्ग सो जगत्प्रतर है । बहुरि तिस जगच्छ्रे-णीका घन सो घनलोक है । तहां पल्यके समयनिका प्रमाण सो तौ पल्य जानना । दश कोडा-कोडि पल्यका समूह सो सागर जानना, पल्यका अर्धच्छेद प्रमाण पल्य मांडि परस्पर गुणें सूच्यंगुल होइ सो एक अंगुल लंबे प्रदेशनिका प्रमाण जानना । ताका वर्ग प्रतरांगुल सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौड़ा प्रदेशनिका प्रमाण जानना । तिस सूच्यंगुलका घन सो घनांगुल है सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौड़ा एक अंगुल ऊंचा प्रदेशनिका प्रमाण जानना । बहुरि पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण घनांगुल मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ सो लोकका मध्यतैं ऊर्द्ध वा अधः पर्यंत लंबे सात राजूके प्रदेशनिका प्रमाण जानना । बहुरि ताका वर्ग जगत्प्रतर सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबे चौड़े क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण जानना । बहुरि तिसही जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है सो जग-च्छ्रेणी प्रमाण लंबा ऊंचा क्षेत्रका प्रदेशनिका प्रमाण जानना । सो इहां ऐसा प्रमाणहीका ग्रहण करना किछू समय प्रदेशादिकनैं प्रयोजन नाहीं । जैसैं काल वर्णन विषैं जगच्छ्रेणी प्रमाणकाल कहै तहा तिनैं समयनिका ग्रहण करना किछू प्रदेशनिनैं प्रयोजन नाहीं । ऐसैंही अन्यत्र जानना । ऐसैं हम करि जान्या है संख्याका स्वरूप जानैं ऐसा जु शिष्य ताके तांई यातैं परैं अब प्रकरणभूत जो लोकका वर्णन ताहि प्रमाणरूप करैं हैं ॥ ११२ ॥

ऐसैं उपमा प्रमाणका प्रकरण समाप्त भया ॥

आगैं जो कथन करिए है ताकी पातनिका पूर्वें गाथाही करि कही सो जाननी:—

उदयदलं आयामं वासं पुव्वावरेण भूमिमुहे ।
सत्तेक पंचएक य रज्जू मज्झम्हि हाणिचयं ॥ ११३ ॥

उदयदलं आयामः व्यासः पूर्वापरेण भूमिमुखे ।
सप्तैकं पंचैकं च रज्जुः मध्ये हानिचयम् ॥ ११३ ॥

अर्थ—लोकका उदय जो ऊंचाईका प्रमाण सो चौदह राजू पूर्वें कह्या था ताका दल कहिए आधा सात राजू प्रमाण आयाम कहिए दक्षिण उत्तर दिसा विषैं चौडाईका प्रमाण जानना जातैं पूर्व पश्चिम विषैं चौडाईका हानिचयरूप आगैं कथन करिए है तातैं इहां दक्षिण उत्तर दिसा विषैं नीचैं लगाय ऊपरि चौदह राजूकी ऊंचाई पर्यंत सर्वत्र सात राजू चौड़ा लोक जानना हीनाधिक नाहीं । बहुरि पूर्व पश्चिम दिसा विषैं व्यास भूमि अर मुख
च राजू, एक राजू, जानना ।

भावार्थ—पूर्वतैं पश्चिम पर्यंत लोक नीचें हीं नीचें तौ सात राजू चौड़ा है। उ[illegible]
घटता मध्यलोक विर्षे एक राजू चौड़ा है। उपरि क्रमतैं बधता ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच र[illegible]
है उपरि क्रमतैं घटता अंतविर्षे एक राजू चौड़ा है। तहां आदि प्रमाणकौं भूमि क[illegible]
प्रमाणकों मुख कहिए तिन विर्षे हानि अर चय हैं ते साधनैं। हानि नाम घटनेका है चय[illegible]
जितनां जितनां वधै ताका नाम है ॥ ११३ ॥

आगैं तिन हांनि चयके साधनैंका विधान कहता संता सूत्र कहैं हैं:—

मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे भूमुहादु हाणिचयं ।
जोगदले पदगुणिदे फलं घणो वेधगुणिदफलं ॥ ११४ ॥
मुखभूम्योः विशेषे उदयहिते भूमुखतः हानिचयं ।
योगदले पदगुणिते फलं घनो वेधगुणितफलम् ॥ ११४ ॥

अर्थ—मुख अर भूमि विर्षे अधिक प्रमाणमें स्यौं हीन प्रमाण घटाएं जो अवशेष [illegible]
उचाईका भाग दीएं भूमि मुखतैं हानिचय हो है। सो इहां अधोलोक विर्षे नीचें चौड़ा [illegible]
सो भूमि कहिए। उपरि घटता घटता एक राजू रह्या सो मुख कहिए सो भूमिमें स्यौं [illegible]
छहराजू रहे तहां सात राजूकी उचाईमें छहराजू घटै तो एक राजू की उचाई में कितन[illegible]
त्रैराशिक करौं उंचाई सात राजूका भाग छहराजूकौं दीजिए इतनां इतनां प्रमाण एकर[illegible]
बाइ चौडाईमें घटती हुआ तहां नीचेंही नीचें सातराजू चौडा है तातैं एक राजू उपरि ज[illegible]
नरक पृथ्वीके निकटि छह राजूका सातवां भाग घट्या ताकौ समछेद विधान करि घटा[illegible]
सातराजूका सात भागमें स्यौं छहराजूका सातवां भाग घटैं तियालीस राजूका सातवां भ[illegible]
व्यास रह्या। ऐसें ही एक एक राजू उपरि जाइ छह राजूका सातवा भाग घटावतैं छ[illegible]
पृथ्वीके निकटि सैंतीसका सातवा भाग पंचमीके निकटि इकतीसका सातवाभाग चौथी[illegible]
पचीसका सातवां भाग तीसरीके निकटि उगणीसका सातवा भाग दूसरीके निकटि तेरह[illegible]
[illegible] प्रथम पृथ्वीके अंति मध्यलोक निकटि सातका सातवां भाग प्रमाण व्यास [illegible]
बहुरि ऐसा ऊर्ध्व लोकका चय ल्यावनें विर्षे मुख तौ मध्य लोकके निकटि एकराजू अर [illegible]
स्वर्गके निकटि पांच राजू तहां भूमिमें स्यौं मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू। बहुरि मध्य लोक[illegible]
[illegible] साढा तीन राजू ऊंचा अर सौधर्म युगल डेढराजू ऊंचा। सो जो साढा तीन राज[illegible]
च्यारि राजू बधै तौ [illegible] राजूकी उचाईमें कितना बधै ऐसैं त्रैराशिक करिए तब तिन [illegible]
[illegible] राजूका सातवां भाग प्रमाण बधती आया। [illegible] एक राजूका व्यास मध्यलोक[illegible]
[illegible] समछेद विधान करि [illegible] सौधर्म युगलका अंतके निकटि उगणीसका सातवां भा[illegible]
[illegible]। बहुरि सौधर्म युगलतैं [illegible] ऊंचा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आधा राजूमें कितना बधै ऐसे त्रैराशिक कीएं च्यारि राजूका सातवां भाग प्रमाण बधै सो पूर्व रूप इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाणमैं मिलाएं ब्रह्मयुगलका अंतके निकटि पैंतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया । बहुरि अब उपरिका ऊर्द्धलोक विषैं हानि कहिए है। तहां ब्रह्मस्वर्गके निकटि तौ पांचराजू व्यास सो भूमि कहिए। अर लोकका अंतविषैं एकराजू व्यास सो मुख कहिए। भूमिमैं मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू । बहुरि साढा तीन राजूकी ऊंचाईमैं च्यारि राजू घटै तौ आधाराजूकी ऊंचाईमैं कितना घटै ऐसे त्रैराशिक करतें च्यारि राजूका सातवां भाग आया, सो ब्रह्मयुगलतैं लांतवादि युगल आध आध राजू ऊंचे है तातैं ब्रह्मस्वर्गके निकटि पैंतीसका सातवा भाग प्रमाण चौडा था तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं लांतव युगलका अंतके विषैं इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या । यामें च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं शुक्र युगलका अंतके निकटि सताईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या यामैं तितनाही घटाएं सतार युगलका अंतके निकटि तेईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या यामैं तितनाही घटाएं आनत युगलका अंतके निकटि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या । यामैं तितना ही घटाएं आरण युगलका अंतके निकट पंद्रह राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या । बहुरि इहांतैं लोकका अंत एक राजू ऊंचा है सो साढा तीन राजूकी ऊंचाईमैं च्यारि राजू घटै तौ एक राजूकी ऊंचाईमैं कितना घटै ऐसे त्रैराशिक कीएं आठ राजूका सातवां भाग आया सो पंद्रह राजूका सातवां भागमैं स्यौं घटाएं सात राजूका सातवां भाग रह्या सो अपवर्तन कीएं लोकका अंत विषैं एक राजू प्रमाण व्यास जानना । ऐसे पूर्व पश्चिमकी अपेक्षा लोकका व्यास हीनाधिक जानना । बहुरि अधोलोकका समस्त क्षेत्रफल कहिए है । मुख अर भूमिका योग करि ताकौं आधा करि पदयोग छ तीह करि गुणिए तब क्षेत्रफल होइ । बहुरि याकौं वेध करि गुणिए तब घनफल होइ सो इहां पूर्व पश्चिम अपेक्षा नीचैं ही नीचैं व्यास प्रमाणरूप भूमि तौ सातराजू अर अधो लोकका अंत विषैं व्यासका प्रमाण सो मुख एक राजू इन दोउनिकौं मिलाएं आठराजू हूवा याको आधा कीएं च्यारि राजू हूवा । बहुरि इहां दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र व्यासकौं पद कहिए सो सातराजू प्रमाण तीह करि गुणें अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया । बहुरि याकौं वेध जो अधोलोककी ऊंचाई ता प्रमाण सातराजू तीह करि गुणें एकसौ छिनवै राजू प्रमाण घनफल होहै । अधो लोकका एक एक राजू प्रमाण लंबा चौडा ऊंचा खंड कल्पिए तौ एकसौ छिनवै खंड होइ ऐसा अर्थ जानना ॥ ११४ ॥

आगैं अधोलोककौं क्षेत्र अपेक्षा आठ प्रकार भेदकरि कहै है:—

सामण्णं दोआयद जवमुर जवमज्झ मंदरं दूसं ।
गिरिगडगेण विभाणइ अट्ठवियप्पो अधोलोगो ॥ ११५ ॥
सामान्यं द्व्यायतं यवमुरजं यवमध्यं मंदरं दूष्यं ।
गिरिकटकेन विभाजितः अष्टविकल्पः अधोलोकः ॥ ११५ ॥

अर्थ—सामान्य १ ऊर्ध्वायत १ तिर्यगायत १ यवमुरज १ यवमध्य १ मंदर १ दूष्य १ गिरिकटक १ ऐसे आठ प्रकार अधोलोक जानहु । तहां प्रथम ही प्रकार विषैं इहां कर पूर्व पश्चिम चौडाईकी अपेक्षा अट्ठाईस राजू क्षेत्रफल कहिए है सर्वत्र दक्षिण उत्तरकी अपेक्षा सात राजू

करि गुणें एकसौ [illegible] रज्जु प्रमान घनक्षेत्र जानना। तहां सामान्यपनैं क्षेत्रकी चौडा[illegible]
करि क्षेत्रफल इहां कहिए है सो सामान्य जानना सो इहां 'मुहभूमी जोगदले, [illegible]
सूत्रके अनुसार मुख तौ एक रज्जु, भूमि सातरज्जु इनका योग आठ रज्जु ताका आधा [illegible]
[illegible] जो उचाई सात रज्जु करि गुणें अठाईस रज्जु क्षेत्रफल भया। बहुरि ऊर्ध्व[illegible]
[illegible] क्षेत्र कल्पिकरि जो क्षेत्रफल इहां कहिए है सो ऊर्ध्वायत जानना। सो अ[illegible]
[illegible] दोय खंड करिए। बहुरि एक खंडको उपरि नीचैं उलटा करि जैसैं [illegible]
[illegible] तब यहु क्षेत्र च्यारि राजू चौडा सातराजू ऊंचा ऐसा आयत चतुरस्र
भुजकोटि वध, इत्यादि सूत्र करि क्षेत्रफल करना। तहां साम्ही साम्ही दोय दिशा संबं[illegible]
[illegible] कहिए अवशेष दोय दिशा संबंधी प्रमाणकों कोटि कहिए इनको परस्पर गुणें [illegible]
[illegible] अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। बहुरि तिर्यगा[illegible]
[illegible] क्षेत्र [illegible] जो इहां क्षेत्रफल करिए सो तिर्यगायत जानना, सो 'मुखभूमि सम[illegible]
[illegible] मुख एक रज्जु भूमि सात रज्जु इनका समास जो जोड सो आठ रज्जु ताका [illegible]
[illegible] प्रमाण होइ। बहुरि सात रज्जुकी ऊंच[illegible]
[illegible] ताके उपरि आधा क्षेत्र था ताकौं चौडाई विषैं [illegible]
[illegible] दोऊ पार्श्वनि विषैं चौथाई क्षेत्र स्थापिए ता[illegible]
[illegible] ऐसा तिर्यगायत क्षेत्र भया ताका 'भुज कोटि वध, इत्या[illegible]
[illegible] प्रमाण क्षेत्रफल हो है ॥ ११५ ॥

[illegible] क्षेत्रफलकों कहै हैं:—

[illegible] जदि हवेज्ज एक्केसो।
[illegible] एकरज्जुसेहमाणमिणं ॥ ११६ ॥

[illegible] यदि भवेत् एकस्य।
[illegible] ॥ ११६ ॥

अर्थ—[illegible] आकार अर मृदंगके आकार क्षेत्र कल्पिकरि [illegible]
[illegible] जानना। ता[illegible]
[illegible] प्रमाण कीए आधा मृदंगका आ[illegible]
[illegible]

वरूप क्षेत्रका क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं। मुख तौ शून्य जातैं तिकूटा त्र विषैं मुखकी चौडाईका अभाव है। बहुरि भूमि एक रज्जु जोडें भी एकरज्जु ताका आधा आधरज्जु कौं उचाई सातका छुटा भाग करि गुणें सात राजूका बारह्वां भाग प्रमाण आधा यवका क्षेत्रल भया। याकौं अठारह गुणा कीएं साढा दस रज्जू प्रमाण क्षेत्रफल तौ यवाकार क्षेत्रनिका भया। हुरि आधा मृदंगाकारका क्षेत्रफल ' मुह भूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं। मुख तौ क रज्जू भूमि च्यारि रज्जू जोडें पांच रज्जू ताका आधा अढाई रज्जु ताकौं पद जो ऊंचाईका प्रमाण ाढा तीन रज्जु करि गुणें पौंणानव रज्जु क्षेत्रफल भया। याकौं दूणा कीएं साढा सतरह रज्जु माण सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्रका क्षेत्रफल भया यामें साढा दस रज्जु यव क्षेत्रफल मिलाएं अठाईस ज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहां यहु भाव जाननां। अधोलोक जहां च्यारि राजू चौडा है तहा दंगका मध्य ठहराया ताके उपरि अनुक्रमतैं हीन चौडा हैही सो आधा मृदंग तौ उपरि भया। हुरि जैसैं उपरि चौडाई है तैसैं ही नीचें चौडाई मध्यतैं क्रमहीन रूप कल्पना करी सो आधा मृदंग चैं भया ऐसैं दोऊनिकौं मिलाएं सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्र भया। बहुरि नीचें दोऊ पार्श्वनि विषैं चौडाई धती रही तहां अठारह तिकूटा क्षेत्र अर्द्ध यवाकार कल्पना कीएं। इहां ऐसा आकार जानना। इहां चेतैं एक राजूकी चौडाई जहां घटी तहां पर्यंत अर्द्ध यव ठहराया। सो नीचें सात राजूकी चौडाई तहां मध्य विषैं एक राजू तौ मृदंगाकार विषैं रह्या अर एक पार्श्व विषैं तीनि राजू रह्या तहां तै न तौ नीचैं तैं क्रमहीनरूप आधे यव ठहराए। अर तिनके बीचि दोय उपरितैं क्रम हीनरूप आधे राए। ऐसैं पांच आधे यव भए। बहुरि तिनके उपरि सात राजूका छठा भाग प्रमाण ऊंचाई चितैं भएं जहां दोय राजूकी चौडाई रही तहां तैं तैसैंही दोयतौ नीचेतैं क्रमहीनरूप एक उपरितै महीनरूप ऐसैं तीन आधे यव ठहराए, ताके उपरि तहातैं तितना ही ऊंचाई भएं जहां एक जूकी चौडाई रही तहां एक नीचेतैं क्रम हीनरूप आधा यव ठहराया। ऐसैंही दूसरे पार्श्व विषैं नव धे यव जानने। ऐसैं अठारह आधे यव भए। ऐसैं एक मृदंग नव यव कल्पना करि क्षेत्रफल कह्या। हुरि यवहीके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए है सो यव मध्य जाननां। सो अधोक विषैं चौईस यवाकार क्षेत्रके खंड कल्पिए है। तहां आधा यवका क्षेत्रफल सात रज्जुका रह्वां भाग कह्या था ताकौं दूणा कीएं सात रज्जूका छठा भाग प्रमाण एक यवका क्षेत्रफल होइ कौं चौईस गुणा कीएं अठाईस रज्जु प्रमाण यव मध्य क्षेत्रफल हो है। इहां यहु भाव जाननां। सैं पूर्वै पार्श्वनि विषैं यवाकार कल्पना कीया तैसै इहां सर्व ही अधोलोक विषै अड़तालीस अर्द्ध याकार ऐसैं कल्पनें। इहां नीचें सात राजू चौडा तहां तै पूर्ववत् नीचे तैं क्रमहीन तौ सात अर निके बीचि उपरितैं क्रमहीन छह आधे यव ठहराए। तिनके उपरि पूर्ववत् ऊंचाई होते छह, पांच, पांच, अर पांच, च्यारि च्यारि तीन अर तीन दोय अर दोय, एक, आधे यव कल्पना करि रके चौबीस सम्पूर्ण यव ठहराय क्षेत्रफल कह्या है॥ ११६॥

आगे मंदर [illegible] क्षेत्रफल कहिए है —

अद्ध चउत्थभागो मगधारसमं तिदाल धारंको।
मग बारम दिबर रज्जुदओ मंदरे ररेवे॥ १

अर्धं चतुर्थभागः तसद्वादश त्रिचत्वारिंशत् द्वादशांशः।
सप्त द्वादशांशं द्व्यर्धं रज्जूद्वयो मंदरे क्षेत्रे ॥ ११७ ॥

अर्थ—मंदर जो मेरु ताका आकार कल्पि क्षेत्रफल जो इहां कहिए है सो मंदर जाननां। तहां अधोलोककी सात राजूकी उचाई है। तामैं आधारज्जु चौथाई रज्जु मिल्याएं पौणरज्जु। बहुरि सात रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि तियालीस रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि ड्योढ राजू इतनां प्रमाण लीएं जुदी जुदी उंचाई मंदर क्षेत्र विर्षे कल्पिए। बहुरि ' मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे, इत्यादि पूर्वसूत्रके अनुसारि मुख एकराजू भूमि सातराजू, । भूमिमैं स्यौं मुख घटाएं छहराजू भया सो सात राजूकी उंचाई विर्षे छहराजू घटै तौ पौणराजूकी उंचाईमें केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि नवराजूका चौदव्हां भाग प्रमाण घट्या सो सात राजूमें स्यौं घटाएं निवासी राजूका चौदव्हां भाग अवशेष रह्या इतना नीचेतैं पौणराजू उपरि जाइ चौडाईका प्रमाण जाननां । ऐसैंही ताके उपरि सातराजूका बारव्हां भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि बियासीका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि तियालीस राजूका बारव्हां भाग उपरि जाय तियालीसका चौदव्हां भाग घटि गुणतालीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि सात राजूका बारव्हा भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि वतीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि ड्योढ राजू उपरि जाय नवराजूका सातवां भाग घटि चौदह राजूका चौदहा भाग ऐसा एक राजू प्रमाण आयाम मध्यलोकके निक रह्या। तहां चूलिका ल्यावनेंके अर्थि सातराजूका बारव्हां भाग प्रमाण उचाई रूप दोयक्षेत्र तिनकों लंबा चौकोर जैसैं होइ तैसैं एककों सुल्टा एककों उलटा स्थापि तिन दोऊ क्षेत्रनि विर्षे अपनी अपनी भूमिमेंस्यौं मुख घटाए सातराजूका चौदव्हा भाग प्रमाण घाटि होनेंका प्रमाण कह्या। सो अपवर्तन कीएं आध आध राजू भया तहां एक एकके दोय दोय खंड कीएं च्यारि खंड भए तहा एक खंडकी भूमि पाव राजू प्रमाण ताकों तौ उपरि स्थापिए अर अवशेष तीन खंडनिका भूमि पौणराजू प्रमाण ताकौं उपरि स्थापिए अर अवशेष तीनि खंडनिकी भूमि पौणराजू प्रमाण सो नीचै स्थापिए इतनां तौ चौडाईका प्रमाण। अर सातराजूका बारव्हां भाग उचाईका प्रमाण जाका भया ऐसी चूलिका करिए पीछै विषम चतुर्भुज क्षेत्रका तौ क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए । अर आयत चतुरस्र क्षेत्रका क्षेत्रफल 'भुजकोटि वेध, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए। बहुरि छहौं क्षेत्रफलनिकों समच्छेद विधान करि जोडिए तब चौराणवै से आठ राजूकौ तीनसैं छत्तीसका भाग दीजिए इतना भया सो अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहा ऐसा भाव जाननां। जैसैं मेरुगिरि नीचेतैं केतीइक उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप हैं। ताके उपरि केती इक उंचाई पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीयक उचाई पर्यंत चौडाई समान रूप है ताके उपरि केतीइक उचाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि चूलिका है सो क्रमतैं हीनरूप चौडाई लीएं है ऐसैं पद्द आकार है तैसैं अधोलोककी उंचाई विर्षे पाच भाग कल्पे तहा दोय राजकी उचाई पर्यंत ता चौडाई क्रमतैं हीन रूप ही ग्रहण कीन्ही इहा मेरु विर्षे नीचे तैं केती

उचाई पर्यंत तौ भूमि विषैं फंद हैं। ताके उपरि भूमि उपरि उचाई है ऐसैं दोय भाग हैं। नैं आध राजू पावराजू उचाई रूप दोय भाग कीए परंतु इहां पर्यंत क्रमतैं चौडाई हीन रूप ही। । तातैं मिलाय पौण राजू कही। बहुरि ताके उपरि सात राजूका बारम्हा भाग पर्यंत क्रमहीन डाई है। तिस चौडाई विषैं उपरि छियालीसका चौदम्हां भाग प्रमाण चौडाई रही तिस प्रमाण मान चौडाई कल्पी। अर दोऊ तरफो बधती चौडाई रही सो जुदी राखी सो यह चौडाई दोऊ फकी मिलाए नीचैं आधराजू उपरि क्रमतैं हीन निरूटी जाननी। बहुरि ताके उपरि नियालीस राजूका म्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप हैं सोई ग्रहण कीन्ही। बहुरि ताके उपरि सातराजूका बारम्हां म पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है। तिस विषैं पूर्ववत् बत्तीसराजू चौदहां भाग प्रमाण समान डाई ग्रहण कीन्ही। अर दोऊ तरफकी चौडाई पूर्ववत् प्रमाण लीएं जुदी राखी। बहुरि ताके उपरि ोट राजू उचाई पर्यंत क्रमतैं हीनरूप चौडाई है सोई ग्रहण कीन्ही। बहुरि जो दोय जायगा चौडाई दी राखी थी तिस विषैं एक जायगाकी चौडाई सुलटी एक जायगा उलटी स्थापै आधा राजू चौडा त राजूका बारम्हां भाग प्रमाण ऊंचा क्षेत्र भया। तहां उपरिकी चौडाई घटाय नीचैं मिलाए चैं पौणराजू चौडा उपरि पावराजू चौडा क्षेत्र कल्पना कीया अर याकी उचाई सातराजूका बारम्हां ग प्रमाण है सो यह क्षेत्र मेरुकी चूलिकाकी जायगा कल्पना कीया ऐसैं मेरुगिरि समान अधो- कका आकार कल्पि क्षेत्रफल कहा है। बहुरि अब दूष्य क्षेत्रफल कहिए है। पूर्वैं अर्द्धयवकी चाई सात राजूका छठा भाग कहा था सो सात राजूमें समछेद विधान करि घटाएं पैंतीसका ठा भाग रहा। सो एक तौ खंड यहु भया यहां भूमिका प्रमाण सात राजू अर मुखका प्रमाण तीस राजूका छठा भाग जानना। बहुरि दूसरा खंड विषैं भूमि तौ पैंतीस राजूका छठा भाग अर मैं सात राजूका छठा भाग घटाए मुखका प्रमाण अठाईस राजूका छठा भाग। ऐसैंही पूर्व पूर्व डविषैं जो मुख होइ सो उत्तर उत्तर खंडविषैं भूमि जाननी। पूर्व पूर्व खंडका मुखमें इसी अर्द्ध यकी उंचाईका प्रमाण घटाएं उत्तर उत्तर खंडनि विषैं मुख जानना। ऐसैं छह खंड भए। मुह भूमी जोग दले' इत्यादि सूत्र करि इन छहों खंडनिका क्षेत्रफल ल्याइ जोडिए तब दोयसै नका बारम्हा भाग भया सो इकईस राजू हूवा। यामैं सात राजू मिलाएं दूष्य क्षेत्रफल विषै क्षेत्रफल अठाईस राजू हूवा। सो इस दूष्यक्षेत्रफलका भाव मोकौं भी नीकै नाहीं प्रतिभास्या तैं नाहीं लिख्या है बुद्धिवान जानियो॥ बहुरि गिरिकटकका क्षेत्रफल कहिए। इस अठतालीस र्द्धयवरूप क्षेत्र कल्पना करिए है सो एक अर्द्धयवका क्षेत्रफल सात राजूका बारम्हा भाग कहा था ाकौं अठतालीस गुणा कीए गिरिकटक क्षेत्रफल विषै भी अठाईस राजू प्रमाण आया। ऐसैं आठ कार करि अधोलोकका क्षेत्रफल दिखाया। इहां यहु भाव जानना। पूर्वै जैसे यव मध्य कहा तैसैं गिरिकटक जानना। विशेष इतना यहां दोय दोय त्रिकूटे क्षेत्र मिलाय यवाकार कहा था। इहां एक क त्रिकूटा क्षेत्र ग्रहण करि अठतालीस पर्वताकार कहा सो आकार ऐसे जानना॥ ११७॥

अब ऊर्ध्व लोक वर्णनकौं कहै हैं

सामण्ण पत्तेय अट्ठत्थयं मंदर पिण्णहिं।
पद वयपयाण मायवर्ण्णसम्मदि णायव्वा॥ ११८॥

सामान्यं प्रत्येकं अर्धस्तंभं तथैव पिनष्टिः ।
एते पंचप्रकाराः लोकक्षेत्रे ज्ञातव्याः ॥ ११८ ॥

अर्थ—सामान्य १ प्रत्येक १ अर्धस्तंभ १ स्तंभ १ पिनष्टि १ ऐसैं ऊर्द्धलोकके क्षेत्रफल ए पांच प्रकार जाननें। सो इहां पूर्वपश्चिम अपेक्षा चौडाई अर उचाईकी अपेक्षा करि क्षेत्रफल इकईस राजू कहिए है। याकौं दक्षिण उत्तर अपेक्षा सात राजूकी चौडाई करि गुणें एकसौ सैंतालीस राजू घनरूप क्षेत्ररूप ऊर्द्धलोकका जाननां। एक एक राजूका लंबा चौडा ऊंचा ऊर्द्धलोकका खंड करें एकसौ सैंतालीस हो है। तहां सामान्यकौं समीकृत भी कहिए। जातैं हीनाधिक चौडाईकौं समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए हैं। सो 'मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि मुख तौ इहां मध्यलोक निकटि एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गनिकटि पांच राजू तिनकौं जोडि आधा कीएं तो राजू ताकौं उचाई साढा तीन राजू करि गुणें साढा दश राजू प्रमाण क्षेत्रफल आधा ऊर्द्धलोकका भया। याकौं दूणां कीएं इकईस राजू प्रमाण सब ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल भया। उपरिका आधा ऊर्द्धलोकविषैं मुख तौ लोकके अंति एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू जाननां। ऊर्द्धलोकका आकार ऐसा जाननां। सो इहां नीचें तैं ब्रह्मस्वर्गपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया तातैं उपरि लोकपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया दोऊनिकौं मिलाय ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल कीया है। अर प्रत्येक क्षेत्रफल कहिए है। तहां मध्यलोकतैं सौधर्मद्विक ड्योढ राजू ऊंचा सो 'मुहभूमीण विसेसे' इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रका अनुसारतैं इहां मध्यलोकके निकटि एक राजू सो तो मुख जानना। बहुरि साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू बधे तो ड्योढ राजूकी उचाईमें कितना बधै। ऐसैं त्रैराशिक कीएं बारह राजूका सातवां भाग प्रमाण बधाएं उगणीस राजूका सातवां भाग चौडा है। सौधर्मद्विकका अंतके निकटि भया सो एक सौ पहला खंड भया इस विषैं मुखतौ एक राजू भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण है। बहुरि ऐसैंही ताके उपरि ड्योढ राजू ऊंचा खंडविषैं मुखतौ उगणीस राजूका सातवां भाग यामैं बारहका सातवां भाग मिलैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण हो है। बहुरि ताके उपरि आध राजू ऊंचा खंडविषैं मुख तौ इकतीस राजूका सातवां भाग अर यामें च्यारि राजूका सातवां भाग मिलैं भूमि पांच राजू प्रमाण हो है। बहुरि ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि तौ पांच राजू तातैं साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू घटै तौ आधा राजूकी उंचाईमें कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक करि च्यारिका सातवां भाग घटाएं मुख प्रमाण इकतीस राजूका सातवां भाग है। बहुरि ऐसैं ही ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं मुख सत्ताईस राजूका सातवां भाग हो है। ता उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि सत्ताईस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारिका सातवां भाग घटाएं मुख तेइस राजूका सातवां भाग है। ताकै च्यारिका सातवां भाग घटै मुख उगणीस राजूका सातवां भाग हो है। ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारिका सातवां भाग घटैं मुख पंद्रह राजूका सातवां भाग हो है बहुरि ताके उपरि एक राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि

पंद्रह राजूका सातवां भाग तामें आठका सातवां भाग घटैं मुख एकराजू प्रमाण हो है। ऐसैं भूमि मुखका प्रमाण जानि मुहभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रकरि सब खंडनिका जुदा जुदा क्षेत्रफल जो होइ ताकों जोडिए तब दोयसै चौराणवैका चौदह्वां भाग ऐसा इकईस राजू प्रमाण प्रत्येक क्षेत्रफल होइ। इहां यहु भाव जानना जुदा जुदा क्षेत्रफल कहि करि जोड्या तातैं याकों प्रत्येक क्षेत्रफल कह्या है। बहुरि अर्द्धस्तंभ अर स्तंभ क्षेत्रका क्षेत्रफल सुगम है इहां ऐसा भाव जानना। ऊर्द्धलोकका आकारकों मध्यविर्षै छेदि तहां बीचिका एकराजू क्षेत्र ताका तौ आधा आधा राजू दोऊ पार्श्वनि विर्षै स्थापिए। अर जो दोऊ पार्श्वनिका अवशेष क्षेत्र तहां उपरला नीचला क्षेत्रकों उलटा सुलटा स्थापन कीएं चौकोर क्षेत्र होइ सो मध्यविर्षै स्थापन करिए ऐसैं अर्द्धस्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। तहां आकार ऐसा जानना। इहां स्तंभाकार लोकका मध्यविर्षै छेदि स्थापन किया तातैं याका नाम अर्द्धस्तंभ है। बहुरि ऊर्द्धलोकका आकार विर्षै बीचि एक राजू चौडा क्षेत्र तौ बीचिमैं लिखना अर दोऊ पार्श्वनिका बधता क्षेत्र मध्यविर्षै दोय दोय राजू रह्या था तिसविर्षै दोय खंड करि दोऊ पार्श्वनिका उलटा सुलटा जोडैं दोय लंबे चौकोर क्षेत्र होइ सो दोऊ पार्श्वनि विर्षै जोडिए ऐसैं स्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। ताका आकार ऐसा॥ बहुरि अर्द्धस्तंभ वा स्तंभ क्षेत्र विर्षै जोड्या हूवा क्षेत्र तीन राजू ऊंचा हूवा सो भुजकोटिका वध करि इकईस राजू हूवा सो यहु क्षेत्रफल सुगम है॥ ११८॥

बहुरि पिनष्टि क्षेत्रफल जाननेंको त्रिभुजकी ऊंचाई आदि जानी चहिए सो कहै हैं:—

रज्जुदुगहाणिठाणे आउड्ढदयो जदीह एकिस्से।
किमिदि तिरासियकरणे फलं दलोणं तिबाहुदओ॥ ११९॥

रज्जुद्विकहानिस्थाने अर्धचतुर्थोदयो यदीह एकस्य।
किमिति त्रैराशिककरणे फलं दलोनं त्रिबाहूदयः॥ ११९॥

अर्थ—एक पार्श्वकी अपेक्षा चौडाई करि दोय राजूका घटनेका स्थान विर्षै साढा तीन राजूकी ऊंचाई होइ तौ एक राजूका घटने विर्षै केती उंचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करनें विर्षै सातका चौथा भाग आया। यामैं आधा राजू घटाएं सवाराजू प्रमाण त्रिभुजकी उंचाईका प्रमाण आया॥ ११९॥

तिभुजुदयूणुदयुधं सूईखेत्तस्स भूमिमुहसेसे।
भूमी तप्फलहीणं चदुरस्सधराफलं सुद्धं॥ १२०॥

त्रिभुजोदयोनोदयोर्ध्वं सूचीक्षेत्रस्य भूमिमुखशेषे।
भूमिः तत्फलहीनं चतुरस्त्रधराफलं शुद्धम्॥ १२०॥

अर्थ—बहुरि उचाईका प्रमाण विर्षै त्रिभुजकी उचाईका प्रमाण घटाएं बाह्य सूची क्षेत्रकी उचाईका प्रमाण आया। बहुरि भूमिमैं स्यों मुख घटाइ अवशेष भूमि होइ ताका क्षेत्रफल करि हीन शुद्ध चौकोर क्षेत्रका क्षेत्रफल होइ। सो यहु कथन नीकैं मेरे समझनेमैं न आया है। तातैं पिनष्टि क्षेत्रके क्षेत्रफलका विधान इहां नाहीं लिख्याहै संस्कृत टीकातैं जानना। ऐसैं उर्द्धलोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफल कह्या है॥ १२०॥

आगैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व दक्षिण उत्तर अपेक्षा करि लोकका परिधिकौं दिखावता संता कहै हैं:—

पुव्वावरेण परिही उगुदालं साहियं तु रज्जूणं।
दक्खिणउत्तरदो पुण बादालं होंति रज्जूणं ॥ १२१ ॥

पूर्वापरेण परिधिः एकोनचत्वारिंशत् साधिका तु रज्जूनाम्।
दक्षिणोत्तरतः पुनः द्वाचत्वारिंशत् भवंति रज्जूनाम् ॥ १२१ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षाकरि लोकका परिधि गुणतालीस राजू सो साधिक कहिए किंचित् [illegible] लीस राजूका एकसो बीसवां भाग करि अधिक प्रमाण जाननां। बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा बियालीस राजू प्रमाण जाननां। गिरहका नाम परिधि है सो दक्षिण उत्तर अपेक्षा तौ परिधि जाननां सुगम है। जातैं लोक दक्षिण उत्तर दिशाकी अपेक्षा सात राजू तौ नीचैं चौडा सात राजू ऊपरि चौड़ा, एक तरफ चौदह राजू ऊंचा ताहिका दोन्यौं तरफां अठाईस राजू हूवा सर्व मिलि बियालीस राजू प्रमाण परिधि भया ॥ १२१ ॥

बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा साधिक गुणतालीस राजू परिधि कैसैं है ताके जाननेंकौं करण सूत्र कहै हैं:—

भुजकोडिकदिसमासो कण्णकदी होदि वग्गरासिस्स।
गुणयारभागहारा वग्गाणि हवंति णियमेण ॥ १२२ ॥

भुजकोटिकृतिसमासः कर्णकृतिः भवति वर्गराशेः।
गुणकारभागहारो वर्गौ भवतः नियमेन ॥ १२२ ॥

अर्थ—भुज और कोटिका जो वर्ग ताका समास कहिए जोड़ सो कर्णका वर्ग हो है। [illegible] जैसे कोऊ बांस गडा है। सो बांस बीचमें स्यौं टूटिकरि पृथ्वीके आनि लागा तहां पृथ्वी अर लागा [illegible] अर टूटा बांसके बीचि जो त्रिभुज क्षेत्रभया तहां गडा बांसका प्रमाण अर टूटा बांस जहां पृथ्वी [illegible] आनि लागा तहांतैं लगाय जहां बांस गडा है तहां पर्यंत पृथ्वीका प्रमाण इन दोऊनि विषैं एक कौं भुज कहिए एककौं कोटि कहिए है। बहुरि जहा तैं टूटा तहा तैं लगाय पृथ्वी विषैं आनि लागा तहां पर्यंत टूटा बांसका जो प्रमाण सो कर्ण कहिए है। तहां ऐसा आकार जाननां। तहां भुज और कोटि का जो प्रमाण ताका जुदा जुदा वर्ग करिए। इन दोऊनिकौं जोड़ें जो प्रमाण होइ सो कर्णके प्रमाणका वर्ग जाननां। ताका मूल ग्रहैं कर्णका प्रमाण आवै है। बहुरि वर्गराशिके गुणकार वा भागहार [illegible] हो है। कोऊ राशि वर्गमूलग्रहण योग्य होइ ताकौं किसी गुणकार करि गुणना [illegible] [illegible] होइ तो तिस गुणकार वा भागहारका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ [illegible] [illegible] है। जैसे कहीं [illegible] प्रमाण [illegible] है ताकौं दोय करि गुणना [illegible] [illegible]

कहिए। बहुरि नीचें तौ सात राजू चौड़ा अर उपरि एक राजू चौड़ा तहां नीचें एक राजू तौ उपरिके समान चौड़ा पर्या हूवा। अवशेष दोन्यौं तरफ तीन तीन राजू बधता भया सो एक पार्श्वविषैं जो तीन राजू बधता भया सो तीन राजू प्रमाण कोटि कहिए है। बहुरि भुजका वर्ग तौ गुणचास राजू अर कोटिका वर्ग नव राजू इन दोऊनिकौं मिलाएं अधोलोकका उपरितैं ल्याय नीचें पर्यंत एक पार्श्वविषैं जो परिधिका प्रमाण सो कर्ण कहिए ताका वर्ग अठावन राजू प्रमाण हो है। बहुरि जो एक पार्श्वविषैं इतना भया तौ दोऊ पार्श्वनिविषैं केता होइ तातैं दोयका गुणकार करना सो इहां वर्गरूप राशि है। तातैं इहां दोयका वर्ग करि गुणें दोन्यौं तरफका कर्णके वर्गका प्रमाण दोयसै बत्तीस राजू हूवा। याका वर्गमूल ग्रहें अधोलोकके दोऊ तरफ उचाई विषैं परिधिका प्रमाण पंद्रह राजू अर सात राजूका तीसवां भाग मात्र भया। ऐसैं ही आधा ऊर्द्ध्वलोकविषैं भुजका प्रमाण साढा तीन राजू ताका वर्ग सवा बारा राजू $\frac{49}{4}$ अर कोटिका प्रमाण दोय राजू ताका वर्ग च्यारि राजू इन दोऊनिकौं समछेद करि मिलाए पैंसठिका चौथा भाग प्रमाण भया $\frac{65}{4}$ बहुरि एक पार्श्वविषैं इतना होइ तौ दोय पार्श्व तौ आधा ऊर्ध्व लोककै अर दोय पार्श्व आधा ऊर्ध्व लोककै, ऐसैं च्यारि पार्श्वनिविषैं कितना होइ ऐसैं विचारतैं च्यारिका गुणकार चहिए सो इहां वर्गराशि है तातैं च्यारिका वर्ग करि गुणें अर च्यारिका भागहार था ताकरि अपवर्तन किएं दोयसै साठि राजू प्रमाण ऊर्द्ध्वलोकके च्यारयौ कर्णनिके वर्गका प्रमाण भया याका वर्गमूल ग्रहें ऊर्द्ध्वलोककी उचाई विषैं दोऊ तरफ परिधिका प्रमाण सोलह राजू अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भागमात्र भया। बहुरि सर्व लोकके नीचें चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि सात राजू अर लोकका अंतविषैं चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि एक राजू। ऐसैं सर्वका जोड दीएं गुणतालीस तौ राजू हूवा। अर अधिक प्रमाण सात राजूका तीसवां भाग अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भाग इन दोऊनिके हारकौं समच्छेद विधान करि आधा भाज्य भाजक मांडि [illegible]। [illegible] जोडि [illegible] च्यारिका अपवर्तन दीएं निवाणवै राजूका एकसौ बीसवां भाग भया। ऐसैं पूर्वपश्चिम अपेक्षा लोकका परिधि गुणतालीस राजू अर निवाणवै राजूका एकसौ बीसवां भाग प्रमाण जानना ॥ १२२ ॥

आगैं लोकके सर्व तरफनें परिवेष्टित जो वात वलय तिन स्वरूपादिकका निर्देशके करि सूत्र कहै हैं:—

गोमुत्तमुग्गवण्णाणवण्णाण घणंबुघणतणूण हवे।
वादाणं वलयतयं रुक्खस्स तयं व लोगस्स ॥ १२३ ॥

गोमूत्रमुद्गनानावर्णानां घनांबुघनतनूनां भवेत्।
वातानां वलयत्रयं वृक्षस्य त्वगिव लोकस्य ॥ १२३ ॥

अर्थ— [illegible] अर घनवात अर तनुवात इन तीनों पवननिका [illegible] लोकके [illegible]
[illegible] मूत्रके [illegible] घनवात [illegible]
[illegible]

आगे ताकौं उपरि पार्श्वनिविषैं क्षेत्रफल ल्यावनेके अर्थि कहै हैं;—

किंचूणरज्जुवासो जगसेढीदीहरं हवे वेहो ।
जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिपुव्वअवरे य ॥ १२८ ॥
किंचिदूनरज्जुव्यासः जगच्छ्रेणिदैर्घ्यं भवेत् वेधः ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिपूर्वापरे च ॥ १२८ ॥

अर्थ—लोकके पार्श्वनि विषैं नीचेसैं लगाय एक राजूकी उचाईपर्यंत वात वलय साठि हजार योजन मोटे हैं सो तहां क्षेत्रफल कहिए है । उचाई एक राजू तामैं साठि हजार योजन दोऊ अधोलोकका कथा क्षेत्रफल तामैं आय गई तातैं इहां किंचित् ऊन रज्जु प्रमाण व्यास सो है भुज जानना । बहुरि लंबाई लोककी लंबाईके समान जगच्छ्रेणी प्रमाण सो कोटि कहिए । बहुरि मोटापनौं साठि हजार योजन सो वेध कहिए । तहां भुज और कोटिकौं परस्पर गुणैं जगत्प्रतरका सातवां भाग भया ताकौं साठि हजार योजन करि गुणें सातवी पृथ्वीपर्यंत पूर्व पश्चिम अपेक्षा एक पार्श्वविषै क्षेत्रफल भया ॥ १२८ ॥

एक पार्श्वका इतना क्षेत्रफल भया तौ दोऊ पार्श्वनि विषैं केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोऊ पार्श्वनिका क्षेत्रफल ल्यावना सो कितना फल सिद्ध भया सो कहै हैं;—

जगपदरसत्तभागं सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि गुणं ।
विगुणिदमुभयपासे वादफलं पुव्वअवरेसु ॥ १२९ ॥
जगत्प्रतरसप्तभागः षष्टिसहस्रैः योजनैः गुणः ।
द्विगुणितः उभयपार्श्वे वातफलं पूर्वापरयोः ॥ १२९ ॥

अर्थ—जगत्प्रतरका सातवां भागकौं साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकौं दूणा करिए ऐसैं करतैं एक लाख बीस हजार योजन गुणा जगत्प्रतरका सातवां भाग प्रमाण दोऊ पार्श्वनिविषै वातवलयनिका क्षेत्रफल पूर्व पश्चिम दिशाविषै हो है ॥ १२९ ॥

आगे दक्षिण उत्तर विषै वातवलयनिका क्षेत्रफल ल्यावनेका विधान कहै हैं;—

दक्खिणुत्तरभूमिदेसे रज्जुगणणपदरज्जुसेढी य ।
जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिदक्खिणुत्तरदो ॥ १३० ॥
दक्षिणोत्तरभूमिदेशे [illegible] च ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरतः ॥ १३० ॥

अर्थ—लोकके नीचे लगाय प्रथम पृथ्वीपर्यंत उचाई एक राजू सो [illegible]
[illegible]

क्षेत्रफल होइ योंका दूणा कीएं सप्तम पृथ्वी पर्यंत दोऊ पार्श्वनि विषैं दक्षिण उत्तर दिशा वातवलयका क्षेत्रफल होइ॥ १३०॥

आगें जो यहु फल भया ताकौं कहै हैं;—

तस्स फलं जगपदरो सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि हदो।
पणवदिगुणो सगघणसभजिदो उभयपासम्हि॥ १३१॥

तस्य फलं जगत्प्रतरः षष्टिसहस्रैः योजनैः हतः।
पञ्चनवतिगुणः सप्तघनसंभक्तः उभयपार्श्वे॥ १३१॥

अर्थ—ताका क्षेत्रफल जगत्प्रतरकौं साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकौं पचाणवै करि गुणिए तब पचावन लाख बीस हजार योजन गुणां जगत्प्रतर भया ताकौं सातका घन तीनसै तियालीस ताका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषैं भया। इतना क्षेत्रफल कैसैं भया सो कहिए हैं। मुख भूमि समछेद करि जोड्या हुवा $\frac{१९}{७}$ तियालीस राजूका सातवां भाग अर भूमि सात राजू सो गुणचास राजूका सातवां दोउनिकौं जोड़ें बाणवै राजूका सातवां भाग $\frac{९२}{७}$ याकौं आधा करना अर दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा करना तब तितनाही रह्या अर इहां प्रतररूप क्षेत्र है तातैं जगत्प्रतरकौं तीनसै तियालीसका भाग सोई एक प्रतर राजूका सातवां भाग है। बहुरि वात वलयनिकी मोटाई साठि हजार योजन करि गुणें पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है॥ १३१॥

आगें उपरि पश्चिम संबंधि पार्श्वनि विषैं वातवलयका क्षेत्रफलकौं कहै हैं;—

सेढी छरज्जु चोद्दसजोयणमायामवासमुस्सेहं।
पुव्वावरपासजुगले सत्तमदो तिरियलोगोत्ति॥ १३२॥

श्रेणी षड्रज्जुः चतुर्दशयोजनं आयामव्यासोत्सेधम्।
पूर्वापरपार्श्वयुगले सप्तमतः तिर्यग्लोकांतं॥ १३२॥

अर्थ—सप्तम पृथ्वीतैं लगाय तिर्यग्लोक पर्यंत पार्श्वनि विषैं वातवलयका क्षेत्रफल कहिए सो पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि लोककी लंबाईके समान लंबाईका प्रमाण जगच्छ्रेणी सो ताकौं भुज कहिए। बहुरि सप्तम पृथ्वीतैं तिर्यग् लोक ऊंचा छह राजू सो व्यास है। ताकौ कोटि कहिए। बहुरि तीनों वातवलय आदि वायिकौ समान कीए मोटा चौदह योजन सो उत्सेध है ताकौं वेध कहिए। सो इहां भुज और कोटिकौं परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकौं वेध करि गुणिए सातका अपवर्तन करिए तब एक पार्श्व विषै फल होइ। बहुरि दोऊ पार्श्वनिके अर्थि दूणाकौ दोय करि गुणि क्षेत्रफल ल्यावना॥ १३२॥

आगें ताका सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकौं कहै है।

सत्तादरुदरंसं जोयणचउदीसगुणिदजगपदरं।
उभयदिसासमाणिदं [illegible]॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्धचतुर्थरज्जुश्रेणिः योजनचतुर्दश च व्यासभुजवेधः।
मध्ये पूर्वापरे फलमेतत् चतुर्गुणं सर्वम्॥ १३६॥

अर्थ— तिर्यग् लोकतैं महास्वर्ग पर्यंत पूर्व पश्चिमका एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल कहिए है तिर्यग् लोकतैं महास्वर्ग साढातीनि राजू ऊंचा है सो यहु व्यास है ताकौं तौ इहां कोटि कहिए बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण सर्वत्र चौडा है सो इहां भुज कहिए। बहुरि तीनौं वात वलय चौदह योजन मोटा सो वेध कहिए सो 'भुजकोटि' इत्यादि सूत्र करि भुज अर कोटिकौं परस्पर गुणि वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल सो इहां साढा तीनि राजू है सो जगच्छ्रेणीका आधा है २ याकौं जगच्छ्रेणि अर चौदह करि गुणें सात गुणा जगत्प्रतर भया। बहुरि महास्वर्ग पर्यंत आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व अर ताके उपरि आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व ऐसैं च्यारि पार्श्व हैं तिनकी अपेक्षा पूर्वोक्त फलकौं चौगुणा कीएं सर्व क्षेत्रफल होइ॥ १३६॥

आगैं ऊर्ध्वलोक विषैं दक्षिण उत्तर संबंधि च्यारों पार्श्वनि विषैं वातका क्षेत्रफलकौं कहै हैं;—

पंचद्धद्दिगिरज्जू भुतुंगमुहं विसत्तजोयणयं।
वेहो तं चउगुणिदं खत्तफलं दक्खिणुत्तरदो॥ १३७॥

पंचार्धचतुर्थैकरज्जवः भूतुंगमुखं द्विसप्तयोजनकः।
वेधः तच्चतुर्गुणितं क्षेत्रफलं दक्षिणोत्तरतः॥ १३७॥

अर्थ— महास्वर्गके निकटि पांच राजू चौडा सो इहां भूमि कहिए। बहुरि तिर्यग् लोकतैं महास्वर्ग साढा तीनि राजू ऊंचा सो तुंग है। सो इहां पद कहिए गच्छ जानना। तिर्यग् लोक निकटि एक राजू चौडा सो इहां मुख जानना तीनौं वातवलयकी मोटाई चौदह योजन सो इहां वेध जानना। सो 'मुह भूमी, इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिकौं जोडि ताका आधाकौं पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकौं वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल होइ सो इहां मुख भूमिकौं जोड देइ आधा कीएं तीनि राजू सो तिगुणा जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ७।३ याकौं साढा तीन राजू सो आधा जगच्छ्रेणी ताकरि अर चौदह करि गुणें चौगुण जगत्प्रतर भया =४ याकौं चौगुणा कीएं दक्षिण उत्तर अपेक्षातैं सर्व ऊर्ध्व लोक विषैं वातका क्षेत्रफल होइ। इहां प्रश्न उपजै है कि लोकका वर्णन विषैं तौ पूर्वैं पूर्व पश्चिम अपेक्षातैं व्यासका हीनाधिकपनो कह्या था। दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र जगच्छ्रेणी प्रमाण समान व्यास कह्या था इहां वातवलयका कथन विषैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास सर्वत्र समान कह्या दक्षिण उत्तर अपेक्षा हीनाधिक व्यास कह्या सो कारण कहा। ताका समाधान जैसैं कोऊ मंदिर है ताकी दक्षिण वा उत्तरकी तरफ जे भीति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां पूर्व दिशाकी तरफ जो कूट तीहस्यौं लगाय पश्चिमकी तरफ जो भीतिकी कूट तीह पर्यंत मापिए। बहुरि पूर्व वा पश्चिमकी तरफ जे भीति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां भीतिकी दक्षिणकी तरफकी कूटतैं उत्तरकी कूट पर्यंत मापिए। ऐसैं लोकका दक्षिण वा उत्तर दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां तौ लोकका पूर्व पश्चिम संबंधि व्यास करि कथन कीया अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां

लोकका दक्षिण उत्तर संबंधी व्यास करि कथन कीया। अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहनां भया तहां लोकका दक्षिण उत्तर सम्बन्धी व्यास करि कथन कीया है ॥१३७॥

आगै लोकका अग्रभाग विर्षे वायुका फलकों कहै हैं;—

वासुदयभुजं रज्जू इगिजोयणवीससतिसदखंडेसु।
सतितिसदं सेढी फलमीसिपभारुवरि दंडवाऊणं ॥ १३८ ॥

व्यासोदयभुजा रज्जुः एकयोजनविंशत्रिशतखंडेषु।
सत्रीत्रिशतं श्रेणिः फलमीषत्प्राग्भारोपरि दंडवायूनाम् ॥ १३८ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा लोकका व्यासके समान तौ इहां वातवलयका एक रज्जु प्रमाण व्यास जानना ताकौं कोटि कहिए बहुरि तीनों वात वलयकी मोटाई एक योजनके तीनिसै वीस खंड करिए तिनविर्षे तीनिसैं तीनि खंड प्रमाण सो इहां उदै जाननां। ताकौं वेध कहिए। बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा लोकका व्यासके समान वातवलयकी जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजा जाननी। इहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणि करि ताकौं वेध करि गुणें ईषत्प्राग्भारनामा अष्टम पृथ्वीके उपरिका धनुषनिकी मोटाई लीएं जु वायु तिनका क्षेत्रफल हो है इहां एक योजनके तीनसै वीस खंडनि विर्षे तीनसै तीन खंड प्रमाण तीनों वातवलयका मोटापना कह्या ताका वीज कहिए है। धनोदधि तौ दोय कोश मोटा ताके च्यारि हजार धनुष अर घनवात एक कोश मोटा ताके दोय हजार धनुष अर तनुवात सवा च्यारिसै धनुष हीन एक कोश मोटा ताके पंद्रह सै पिचत्तरि धनुष इन सबनिको मिलाएं सात हजार पांच सै पिचहत्तरि धनुष भए। अर एक योजनके आठ हजार धनुष हैं। सो इहां पचीस करि अपवर्तन कीएं सात हजार पांचसै पिचहत्तरि की जायगा तीनसै तीन भया अर आठ हजारकी जायगा तीनसै वीस भया। ऐसैं करि एक योजनके तीनिसै वीस भागनि विर्षे तीनिसै तीनि भाग प्रमाण लोकके उपरि तीनों वातवलयनिका मोटापनां कह्या है सो इहां जगच्छ्रेणीकों एक राजू जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग ताकों वेध करि गुणें ऐसा गुणें ऐसा क्षेत्रफल हो है। $\frac{=३०३}{७।३२०}$ बहुरि इहां लोकका अग्रभाग विर्षे कह्या जु वायुका फल ताको छोडि और सर्व वायुफल ऐसैं भए। इहा जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी = जाननी।

लोकके नीचैं	सप्तम पृथ्वीपर्यंत पूर्वपश्चिम	सप्तम पृथ्वीपर्यंत दक्षिण उत्तर	तिर्यग्लोकपर्यंत पूर्वपश्चिम	तिर्यग्लोकपर्यंत दक्षिण उत्तर	ऊर्द्धलोकपर्यंत पूर्वपश्चिम
=६००००	=१२००००	=१५१२००००	=२४	४९ ६००	=२८
		३ ४१			

ऊर्द्धलोकपर्यंत दक्षिण उत्तर =१२

ऐसै ए भए क्षेत्रफल तिनकों समच्छेद विधान करि मिलावनें सो इन सातनिके हारनिकौं सातका घन अर सातका वर्ग अर एक अर सातका घन अर सात अर सातका घन करि क्रमतैं गुणिए सर्वत्र सातका घनका भाग दीजिए ॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त सातौं क्षेत्रफलनि विर्षे जहां भागहार न था तहां सातका घन करि गुण्या जहां सातका भागहार था तहां सातका वर्ग करि गुण्या जहां तीनसै नियालीसका भाग हार था तहां एक करि गुण्या जहां गुणचासका भागहार था तहां

हार करि गुण्या जाते समच्छेद विधान विषैं जिस गुणकार करि गुणे हारनिकी समानता होइ तिस गुणकार करि अंशनिकों गुणनें सो इहां लघु करनेके अर्थि ऐसें कीया तब ऐसें भए ॥ $\frac{१-५८०००००}{१४१}$

$\frac{५८८००००}{१४१}$ $\frac{५५१००००}{१४१}$ $\frac{८३११}{१४१}$ $\frac{४१००}{१४१}$ $\frac{९९०४}{१४१}$ $\frac{४३११}{१४१}$ इन सबनिकों जोडिए तब तीनि कोडि बीस लाख एक हजार एकसो बावनको तीनसै तियालीसका भाग दीजिए इतने भए $\frac{११००६९५५१}{१४१}$ बहुरि लोकका अग्रभागविषैं क्षेत्रफल ऐसा $=\frac{१०१}{७१२०}$ इहां भाग हार सात अर तीनसै वीसको गुणे बाईस से चालीस होइ। बहुरि समच्छेद विधान करना। तातैं इस राशि विषैं हार तीनसै तीन अर अंश बाईस सै चालीस इन दोऊनिकों सातका वर्ग गुणचास ४९ करि गुणें ऐसा भया $=\frac{१४८४७}{१०९७६०}$ अर पूर्वोक्त राशि ऐसा $\frac{११००६९५५१}{१४१}$ याके हार अंशनिकों तीनसै वीस करि गुणें ऐसा $\frac{१०१४१९९८१४०}{१०९७६०}$ ऐसें करते दोऊ राशिनके समान भागहार भए बहुरि इन दोऊ राशिनके हारनिकों मिलाएं ऐसा भया $=\frac{१०२४१९८३४८७}{१०३११०}$ ऐसैं इतना सर्व वातवलयनि करि रोक्या हूवा क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है ॥ १३८ ॥

आगैं यहु सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकों कहै हैं:—

सगासीदिचदुस्सदसहस्सतेसीदिलक्खउणवीसं।
चउवीसहियं कोडीसहस्सगुणियं तु जगपदरं ॥ १३९ ॥

सप्ताशीतिचतुःशतसहस्रत्र्यशीतिलक्षैकोनविंशं।
चतुर्विंशाधिकं कोटिसहस्रगुणितं तु जगत्प्रतरम् ॥ १३९ ॥

अर्थ—चौवीस अधिक एक हजार कोडि उगणीस लाख तियासीस हजार च्यारिसै सित्यासी करि जगप्रतरकों गुणिए ॥ १३९ ॥

बहुरि याका भागहार कहै हैं:—

सट्ठीसयसयाहि णवयसहस्सेगलक्खभजियं तु।
सव्वं वादारुद्धं गणियं भणियं समासेण ॥ १४० ॥

षष्टिसप्तशतैः नवकसहस्रैकलक्षभक्तं तु।
सर्वं वातारुद्धं गणितं भणितं समासेन ॥ १४० ॥

अर्थ—एक लाख बहत्तरि हजार सातसै साठिका भाग दीजिए। इतना सर्व वातवलय करि रोक्या हूवा क्षेत्रका गणित कह्या है जोडि करि लोकके चौगिरद वातवलय है। तिनका क्षेत्र ग्रहण कीया है। अष्टपृथ्वीनिके नीचे वातवलय है तिनका क्षेत्र ग्रहण न कीया है ॥ १४० ॥

आगैं लोकका अग्रभाग विषैं तनुवातवलयमें विराजमान सिद्ध भगवान् तिनका जघन्य वा उत्कृष्ट अवगाहका क्षेत्रकों कहै हैं:—

णवपण्णारसलक्खा सयाण खंडाणमेयखंडम्हि।
सिद्धाण तणुवादे जहण्णमुक्कस्सयं ठाणं ॥ १४१ ॥

नवपंचदशलक्षं शतानां खंडानामेकखंडे ।
सिद्धानां तनुवाते जघन्यमुत्कृष्टं स्थानम् ॥ १४१ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्यका नव लाख खंड कीजिए तहां खंड विषैं सिद्धनकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण जानना अर ताहीका पंद्रह सै खंड कीजिए तहां एक खंड विषैं सिद्धनिकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण जानना । ऐसैं तनुवातवलय विषैं सिद्धनका जघन्य उत्कृष्ट स्थान है ॥ १४१ ॥

आगैं तिस अवगाहनाकों व्यवहाररूप करता संता कहैं हैं:—

पणसयगुणतणुवादं इच्छिदउग्गाहणेण पविभत्तं ।
हारो तणुवादस्स य सिद्धाणोगाहणाणयणे ॥ १४२ ॥
पंचशतगुणतनुवातः इच्छितावगाहनेन प्रविभक्तः ।
हारस्तनुवातस्य च सिद्धानामवगाहनानयने ॥ १४२ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्य तौ प्रमाणांगुल अपेक्षा है अर सिद्धनिकी अवगाहनाका प्रमाण व्यवहारांगुल अपेक्षा है । तातैं तनुवातका बाहुल्य पंद्रहसौ पिचत्तरि धनुष प्रमाण ताकों पांचसैं गुणा कीएं ताके व्यवहार धनुषनिका प्रमाण सात लाख सित्यासी हजार पांचसै होइ । ७८७५०० । याकों विवक्षित जघन्यादि सिद्धनिकी अवगाहनाका भाग दीएं सिद्धनिकी अवगाहना ल्यावनीं विषैं भागहारका प्रमाण हो है । भावार्थ] सात लाख सित्यासी हजार पांचसैकों जघन्य अवगाहनाका प्रमाण सात धनुषका आठवां भाग दीएं भागहारका प्रमाण नव लाख आया सो नव लाखका भाग तनुवात वलयका बाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण हो है । बहुरि सात लाख साढा सित्यासी हजारकों उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण पांचसै पचीस धनुष ताका भाग दीएं भागहारका प्रमाण पंद्रहसै आया सो पन्द्रहसैका भाग तनुवातके बाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण हो है । तहां भागहारका भाग दैंना ऐसैं जानना जो नव लाख खंडनिका सात लाख साढा सित्यासी हजार व्यवहार धनुष होइ तौ एकखंडके केते धनुष होइ ऐसैं त्रैराशिक करिए । बहुरि इहां भाज्य और भागहारकों एक लाख बारह हजार पांचसै करि अपवर्तन करिए तब भाज्य सात लाख साढा सित्यासी हजारकी जायगा तौ सात होइ अर भागहार नव लाखकी जायगा आठ होइ ऐसैं सात धनुषका आठवां भाग प्रमाण जघन्य अवगाहना होइ । ऐसैं ही उत्कृष्ट अवगाहना जानना । बहुरि ऐसैं ही प्रकार अपवर्तनका विधान जानना ॥ १४२ ॥

आगैं त्रसनालीका स्वरूपकों कहैं हैं:—

लोयबहुमज्झदेसे रुक्खे सारव्व रज्जुपदरजुदा ।
चोद्दसरज्जुत्तुंगा तसणाली होदि गुणणामा ॥ १४३ ॥
लोकबहुमध्यदेशे वृक्षे सार इव रज्जुप्रतरयुता ।
चतुर्दशरज्जूत्तुंगा त्रसनाली भवति गुणनामा ॥ १४३ ॥

अर्थ—लोकाकाशका बहुत मध्यके प्रदेशनि विषैं त्रस नाली है। सो कैसी है, रज्जुप्रतर करि युक्त है। भावार्थ। एक राजू तौ लंबी है अर एक राजू चौडी है। बहुरि चतुर्दश राजू उत्तुंग है। भावार्थ। लोकके अधोभागतें लगाय अग्रभागपर्यंत चौदह राजू ऊंची है। कौन दृष्टान्त। वृक्षे सार इव। जैसे वृक्ष विषैं छोला इत्यादिक तौ उपरि उपरि है। तिनके मध्य सार लकडी पाईए है। तैसे लोक विषैं मध्य त्रसनाली पाईए है। बहुरि यहु त्रसनाली कैसी है। गुणनामा कहिए सार्थिक नामकी धरनहार है जातैं बेंद्रियादिक जे त्रस जीव ते इसही विषैं पाईए है। याके बाह्य अवशेष लोक क्षेत्र विषैं स्थावर जीव ही पाईए है त्रस जीव नाही है। उपपाद वा मारणान्तिक केवल समुद्घातवाले जीवनिके प्रदेशनिका त्रस नाली बाह्य भी सत्व पाईए है परन्तु तिनकी मुख्यता नाहीं। ऐसे यहां त्रस जीवनिका सद्भाव त्रस नाली विषैं ही जानना बाह्य नाही। बहुरि इहां त्रस नालीका लंबाई चौडाई एक राजू सो तौ भुज अर कोटि जानना ऊंचाई चौदह राजू सो उत्सेध जानना बहुरि कोटिकौं परस्पर गुणि ताकौं ऊंचाई करि गुणें त्रस नालीका क्षेत्रफल घनरूप चौदह राजू प्रमाण है। भावार्थ। तीनसै तियालीस घनरूप रज्जु प्रमाण लोक है। तामें चौदह राजूमें तौ त्रस नाली है। अवशेष तीनसै गुणतालीस राजू विषैं त्रस नाईं पाईए है इहां ऐसा आकार जानना ॥ १४३ ॥

आगे त्रस नालीका अधोभाग विषैं तिष्ठता पृथ्वी भेदादिककौं कहै हैं:—

मुरवदले सत्तमही उवरीदो रयणसक्करावालू।
पंका धूमतमोमहतमप्पहा रज्जुअंतरिया ॥ १४४ ॥
मुरजदले सप्त मह्यः उपरि रत्नशर्करा वालुः।
पंका धूमतमोमहातमप्रभा रज्ज्वंतरिताः ॥ १४४ ॥

अर्थ—ऊर्ध्व मृदंगके आकारि सर्व लोक कह्या था तामें आधा मृदंगके आकारि अधो लोक कह्या था। तींह आधा मृदंगका आकार विषैं सात पृथ्वी पाईए है तिनका आकार ऐसा। उपरतैं लगाय रत्नप्रभा १ शर्कराप्रभा १ बालुकाप्रभा, १ पंकप्रभा १ धूमप्रभा १ तमप्रभा १ महातमप्रभा १ ऐसैं तिनके नाम जानने इहां प्रभा शब्द प्रत्येक लगाइ लेना तातैं रत्नप्रभा इत्यादि नाम हैं। बहुरि ए नाम सार्थिक हैं जातैं इन विषैं रत्न मिश्री रेत कादो धूवां अंधकार महा अंधकारके समान अनुक्रमतैं प्रभा पाईए है। बहुरि ते सर्व पृथ्वी एक एक राजूके अंतर संयुक्त जाननी। भावार्थ। मध्य लोकतैं लगती तौ पहली रत्नप्रभा पृथ्वी है। बहुरि तातैं एक राजू नीचैं शर्कराप्रभा है तातैं एक राजू नीचैं बालुका प्रभा है ऐसैंही अन्य पृथ्वीनिका एक एक राजूका अंतराल जानना ॥ १४४ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनिके अन्य नाम कहैं हैं:—

घम्मा वंसा मेघा अंजनरिट्ठा य होंति अणिउज्झा।
छट्ठी मघवी पुढवी सत्तमिया माघवी णामा ॥ १४५ ॥
घर्मा वंशा मेघा अंजनारिष्टा च भवंति अनियोध्याः।
षष्ठी मघवी पृथ्वी सप्तमिका माघवी नाम ॥ १४५ ॥

अर्थ—घर्मा १ वंशा १ मेघा १ अंजना १ अरिष्टा १ बहुरि छठी पृथ्वी मघवी १ सातमी माघवी नाम पृथ्वी ऐसैं अनियोग्या कहिए अर्थरहित अनादि रूढि रूप नामकौं धरैं ए स[त] पृथ्वी हैं ॥ १४५ ॥

आगैं तहां प्रथम पृथ्वीके भेद कहैं हैं:—

रयणप्पहा तिहा खरभागा पंकाबहुलभागात्ति।
सोलस चउरासीदी सीदी जोयणसहस्सबाहल्ला ॥ १४६ ॥

रत्नप्रभा त्रिधा खरभागा पंकाप्बहुलभागा इति।
षोडश चतुरशीतिः अशीतिः योजनसहस्रबाहुल्या ॥ १४६ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा नामा पृथ्वी तीन प्रकार है। खरभागा १। पंकभागा १ अब्बहुलभागा १ ऐसैं हैं। बहुरि सोलह चउरासी असी हजार योजन बाहुल्यरूप है। भावार्थ। रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है तीह विषैं उपरितैं सोलह हजार योजन तौ खरभागा है। चौरासी हजार योजन पंकभागा है। असी हजार अब्बहुल भागा है। ऐसे एक पृथ्वीस्कंध विषैं तीनि भाग जानने ॥ १४६ ॥

आगैं खरभाग विषैं सोलह पृथ्वी पाईए हैं तिनकी संज्ञाकौं दोय गाथानि करि कहै हैं:—

चित्ता वज्जा वेलुरियलोहिदक्खा मसारगल्लवणी।
गोमेदा य पवाला जोदिरसा अंजणा णवमी ॥ १४७ ॥

चित्रा वज्रा वैडूर्या लोहिताख्या मसारकल्पावनिः।
गोमेदा च प्रवाला जोतिरसा अंजना नवमी ॥ १४७ ॥

अर्थ—चित्रा १ वज्रा १ वैडूर्या १ लोहिता १ कामसारकल्पा १ गोमेदा १ प्रवाला १ ज्योतिरसा १ अंजना १ नवमी पृथ्वी है ॥ १४७ ॥

अंजणमूलिय अंका फलिहा चंदण सवत्थगा वकुला।
सेलक्खाय सहस्सा एगेगा लोगचरिमगया ॥ १४८ ॥

अंजनमूलिका अंका स्फटिका चंदना सर्वर्थका बकुला।
शैलाख्या च सहस्रा एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अर्थ—अंजनमूलिका १ अंका १ स्फटिका १ चदना १ सर्वधका १ बकुला १ शैला १ ऐसैं ए सोलह पृथ्वी हैं। एक एक पृथ्वी हजार हजार योजन प्रमाण मोटी है ॥ भावार्थ। खरभाग सोलह हजार योजन मोटा कह्या था तामें उपरि तौ हजार योजन मोटी चित्रा पृथ्वी है। ताके नीचै हजार योजन मोटी वज्रा पृथ्वी है ऐसे ही हजार हजार योजन मोटी सोलह पृथ्वी जाननी। बहुरि ते ए पृथ्वी लोकका अंतकौं प्राप्त जाननी। भावार्थ। लंबाई चौडाई इन पृथ्वीनिकी लोकके समान जाननी सो इस खरभाग विषैं अर पंक भाग विषैं तौ भवनवासी व्यंतर देवनिका वास है सो वर्णन आगैं होइगा। बहुरि अब्बहुल भाग विषैं प्रथम नरकके बिल पाईए है। बहुरि ऐसैं भाग कीए तिनके बीच कोई छेददि नाहीं है। जैसे एक पर्वत विषैं कोई अंपेक्षा भाग करिए तैसैं इहां भाग कीए है ॥ १४८ ॥

आगैं द्वितीयादि पृथ्वीनिका बाहुल्य कहैं हैं:—

बत्तीसमट्ठवीसं चउवीसं वीस सोलसट्ठाणि ।
हेट्ठिमछप्पुढवीणं सहस्समाणेहिं बाहुलियं ॥ १४९ ॥

द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः चतुर्विंशतिः विंशति षोडशाष्टौ ।
अधस्तनषट्पृथ्वीनां सहस्रमानैः बाहुल्यं ॥ १४९ ॥

अर्थ—बत्तीस हजार अठाईस हजार चौबीस हजार बीस हजार सोलह हजार आठ हजार योजन प्रमाण द्वितीयादिक नीचली छह पृथ्वीनिका बाहुल्य कहिए मोटापना सो क्रमतैं जानना ॥ १४९ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनि विषैं जितने जु पटल तिनके स्थान कहैं हैं:—

सत्तमखिदिबहुमज्झे बिलाणि सेसासु अप्पबहुलाच ।
हेट्ठुवरिं च सहस्सं वज्जिय पडलक्कमे होंति ॥ १५० ॥

सप्तमक्षितिबहुमध्ये बिलानि शेषासु अब्बहुलांतं ।
अध उपरि च सहस्रं वर्जयित्वा पटलक्रमेण भवंति ॥ १५० ॥

अर्थ—सातमी पृथ्वीका तौ बहु मध्य भाग विषैं बिल हैं । बहुरि अवशेष पृथ्वीनि विषैं अब्बहुल भाग पर्यंत नीचे वा उपरि हजार हजार योजन छोडि पटलनिका अनुक्रम करि बिल पाईए है ।

भावार्थ—सातमी पृथ्वी आठ हजार योजन मोटी है तामैं नीचें वा उपरि बहुत मोटाई छोडि बीचि विषैं बिल पाईए है । बहुरि अन्य पृथ्वी वा प्रथम पृथ्वीका अब्बहुल भाग तिनकी मोटाई विषैं नीचैं वा उपरि हजार हजार योजनको छोडि बीचि विषैं जेते जेते पटल पाईए तिन विषैं अनुक्रम करि बिल पाईए है ॥ १५० ॥

आगैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं बिलनिकी संख्या कहै हैं:—

तीसं पणुवीसं पण्णरसं दस तिण्णि पंचहीणेक्कं ।
लक्खं सुद्धं पंच य पुढवीसु कमेण णिरयाणि ॥ १५१ ॥

त्रिंशत् पंचविंशतिः पंचदश दश त्रीणि पंचहीनैकं ।
लक्षं शुद्धं पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि ॥ १५१ ॥

अर्थ—तीस लाख पचीस लाख पंद्रह लाख दश लाख तीनि लाख पांच घाटि एक लाख ऐसैं एती लक्ष विशेषणसहित बिल हैं । अर सातमी पृथ्वी विषैं शुद्ध कहिए लक्ष विशेषणरहित पांच ही बिल हैं । ऐसैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं अनुक्रम करि निरय कहिए बिल पाईए है ॥१५१॥

आगैं तिन बिलैं अति शीत अति उष्णका विभाग कहैं हैं:—

रयणप्पहपुढवीदो पचमतिचउत्थओत्ति अतिउण्हं ।
पचमतुरिए छट्ठे सत्तमिए होदि अदिसीदं ॥ १५२ ॥

रत्नप्रभापृथ्वीतः पंचमत्रिचतुर्थांतं अत्युष्णम् ।
पंचमतुरीये षष्ठ्यां सप्तम्यां भवति अतिशीतम् ॥ १

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीतैं लगाय पंचम पृथ्वीके तीनि चौथा भाग पर्यंत तौ अति उष्ण है। पंचम पृथ्वीका चौथा भाग अर छठी सातवी पृथ्वी विषैं अति शीत हैं। **भावार्थ**— पहली दूसरी तीसरी चौथीके तौ सर्व बिल अर पांचमी पृथ्वीके बिलनिका च्यारि भाग करिए तहां तीन भाग प्रमाण बिल ए ती अति उष्ण पाईए है। इन विषैं अग्न्यादिकतैं भी बहुत अधिक उष्णता जाननी। बहुरि पांचई पृथ्वीका चौथाई बिल अर छठी सातवी पृथ्वीके सर्व बिल अति शीत पाईए है। इ[illegible] विषैं हिमादिक तैं भी बहुत अधिक शीतता जाननी। जैसी इहां उत्कृष्ट शीतता पाईए है ता [illegible] उपमाईनें कोई पदार्थ नाहीं। तहां शीतता वा उष्णताकी महा वेदना है ॥ १५२ ॥

आगैं तिन बिलनि विषैं इन्द्रक श्रेणीबद्ध बिलनिकी संख्या कहैं हैं। सो इन्द्रकादिकनि [illegible] जाननेको किछु इस भाषा टीका विषैं वर्णन करिए है। सो प्रथम दृष्टान्त कहिए है। [illegible] पृथ्वी विषैं केते इक खणका भूमिगृह बनाईए। बहुरि एक एक खण विषैं ऐसे कोठे बनाईए [illegible] [illegible] कोठा बीचिमैं करिए बहुरि ताकी च्यारि दिशा अर च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध केते इक कोठे करिए। बहुरि दिशा विदिशानिके बीचि केते इक कोठे करिए बहुरि जे ए कोठे कीए [illegible] विषै आवने जानेको द्वारादिक न राखिए। ऐसें जो भूमि गृह बनैं ताका दृष्टान्त नरक रचना वि[षैं] [illegible]। तहां दृष्टान्त विषैं जैसैं खण कहे तैसैं इहां नरकरचना विषैं उपरि नीचैं पटल [illegible] [illegible] ही नाम प्रकार जानना। बहुरि तहां जैसैं खण खण विषैं कोठे कोठडी कहे तैसैं इहां पटल पटल विषैं बिल जानने। बहुरि तहां जैसैं बीचिका कोठाके दिशा विदिशा वि[षैं] पंक्तिबंध कोठे कहे। तैसैं इहां इन्द्रक बिलके च्यारि दिशा वा च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध वि[ल] [illegible] तिनका नाम श्रेणीबद्ध बिल है। बहुरि तहां जैसैं दिशा विदिशानिकी बीचि कोठे क[हे] तैसे इहां श्रेणीबद्धनिकी बीचि अंतर दिशानि विषैं बिल जानने इनका नाम प्रकीर्णक बिल है। बहुरि तहां दृष्टान्त विषैं भूमिगृह इस वास्ते कह्या है जो जैसैं भूमिगृह पृथ्वी विषैं हो है। तैसैं [illegible] रचना भी पृथ्वी विषैं जाननी। जैसैं पृथ्वी ऊपरि आकाश विषैं मंदिर हो है तैसैं [illegible] रचना नाहीं है। बहुरि तहां दृष्टान्त विषैं द्वारादिकका अभाव इस वास्तै कह्या है जो लोक वि[षैं] भूमिगृह बनावै है तहां आवने जानेको द्वार सीढी इत्यादि राखै है। सो रचना विषैं तिन वि[लनि] [illegible] [illegible] नाहीं है। ऐसैं दृष्टान्त करि नरक रचनाका स्वरूप जानना। इहां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिल जानने। बहुरि ऐसी रचना सब नारकी विषैं ही है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऐसा जानना ॥ तहां प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं इंद्रक श्रेणीबद्ध केते केते [illegible] [illegible] हैं;—

तेरादि दुहीणिंदयसेढीबद्धा दिसासु विदिसासु।
उणवण्णडदालादी [illegible] कमसो ॥ १५३ ॥
[illegible] इन्द्रकाः श्रेणीबद्धा दिशासु विदिशासु।
[illegible] [illegible] ॥ १५३ ॥

अर्थ—[illegible]

इंद्रक है सो पटल भी इतने पाईए हैं। बहुरि श्रेणीबद्ध तिन दिशा अर विदिशानि विषैं गुणचास अर अडतालीसकौं आदि दे करि पटल पटल प्रति एक एक घटता क्रमतैं जानना। भावार्थ। प्रथमादि पृथ्वीनिके तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक पटल मिलाए हुए गुणचास पटल है तहां प्रथम पृथ्वीका पहला पटल तामैं एक एक दिशानि विषैं तौ गुणचास गुणचास श्रेणीबद्ध हैं। अर एक एक विदिशानि विषैं अडतालीस अडतालीस श्रेणीबद्ध हैं। बहुरि द्वितीयादि पटल तैं सप्तम पृथ्वीका पटलपर्यंत एक एक दिशा अर विदिशानि विषैं एक एक श्रेणीबद्ध घटता घटता जानना। ऐसैं करि अंतका गुणचासवां पटल विषैं दिशानि विषैं एक एक श्रेणीबद्ध पाईए है। विदिशानि विषैं श्रेणीबद्धका अभाव है ॥ १५३ ॥

आगे तिन पृथ्वीनि विषैं कहे जु इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहै हैं;—

सीमंतणिरयरोरव भंतुब्भंतिंदया य संभंतो।
तत्तोवि असंभंतो वीभंतो णवमओ तत्थो ॥ १५४ ॥
सीमन्तनिरयरौरवभ्रान्तोद्भ्रान्तेन्द्रकाः च संभ्रान्तः।
ततोपि असंभ्रान्तः विभ्रान्तः नवमः त्रस्तः ॥ १५४ ॥

अर्थ—सीमंत १ निरय १ रौरव १ भ्रांत १ उद्भ्रांतनामा इंद्रक १ संभ्रांत १ तहां पीछे असंभ्रांत १ विभ्रांत १ नवमा इंद्रक त्रस्त १ ॥ १५४ ॥

तसिदो वक्कंतक्खो होदि अवक्कंतणाम विक्कंतो।
पढमे तदगो थणगो वणगो मणगो खडा खडिगा ॥ १५५ ॥
त्रसितो वक्रान्ताख्यः भवति अवक्रान्तनाम विक्रान्तः।
प्रथमायां ततकः स्तनकः वनकः मनकः खडा खडिका ॥ १५५ ॥

अर्थ—त्रसित १ वक्रांतनामा इंद्रक १ विक्रांत १ ऐसैं प्रथम पृथ्वी विषै तेरह इंद्रक जानने। बहुरि ततक १ स्तनक १ वनक १ मनक १ खडा १ खडिका १ ॥ १५५ ॥

जिब्भा जिब्भगसण्णा तो लोलिग लोलवच्छ थणलोलो।
तिदए तत्तो तविदो तवणो तावणणिदाहा य ॥ १५६ ॥
जिह्वा जिह्विकसंज्ञा ततो लोलिकः लोलवत्सः स्तनलोलः।
द्वितीयायां तप्तः तपितः तपनः तापननिदाघौ च ॥ १५६ ॥

अर्थ—जिह्वा १ जिह्विकनाम १ तहां पीछे लोलिक १ लोलवत्स १ स्तनलोल १ ऐसैं द्वितीय पृथ्वी विषै ग्यारह इंद्रक जानने। बहुरि तप्त १ तपित १ तापन १ निदाघ १ ॥ १५६ ॥

उज्जलिदो पज्जलिदो संजलिदो संपज्जलिदणामा य।
तदिए आरा मारा तारा चच्चा य तमगी य ॥ १५७ ॥
उज्ज्वलितः प्रज्वलितः संज्वलितः संप्रज्वलितनामा च।
तृतीयायां आरा मारा तारा चर्चा च तमकी च ॥ १५७ ॥

अर्थ—उज्वलित १ प्रज्वलित १ संज्वलितनाम १ ऐसैं तीसरी पृथ्वी विर्षे नव इंद्रक हैं। वहुरि आरा १ मारा १ तारा १ चर्चा १ तमकी ॥ १५७ ॥

घाडा घडा चउत्थे तमगा भमगा य झसग अद्धिंदा ।
तिमिसा य पंचमे हिमवद्दलल्लगितयं छट्टे ॥ १५८ ॥

घटा घटा चतुर्थ्यां तमका भ्रमका च झषगा अर्धेद्राः ।
तिमिश्रा च पंचम्यां हिमवार्दलिल्लुकित्रयं षष्ठयाम् ॥ १५८ ॥

अर्थ—घाटा १ घटा १ ऐसैं चौथी पृथ्वी विर्षे सात इंद्रक हैं । वहुरि तमका १ भ्रमका १ झषका १ अर्धेद्रा १ तिमिश्रका १ ऐसे पंचम पृथ्वी विर्षे पांच इंद्रक हैं । हिम १ वार्दलि १ लल्लकि ऐसै छठी पृथ्वी विर्षे तीन इंद्रक हैं ॥ १५८ ॥

ओहिट्ठाणं चरिमे तो सीमंतादिसेढिविलणामा ।
पुव्वादिदिसे कंखा पिवास महकंख अइपिवासा य ॥ १५९ ॥

अप्रतिस्थानं चरमे ततः सीमंतादिश्रेणिविलनामानि ।
पूर्वादिदिशायां कांक्षा पिपासा महाकांक्षा अतिपिपासा च ॥ १५९ ॥

अर्थ—अवधिस्थान १ वा दूसरा नाम अप्रतिष्ठित स्थान सो अंतकी सातवीं पृथ्वी विर्षे एक इंद्रक है । ऐसैं क्रमतैं इंद्रक विलनिके नाम कहे । अथ जो आगै अर्थ कहिए ताकी पातनिकाकों गर्भित करि तीन गाथा कहैं हैं । सो तहां पीछैं अव सीमंतादिक इंद्रक संवंधी पूर्वादि दिशानिविर्षे जे श्रेणीवद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । भावार्थ—प्रथमादि पृथ्वीका पहला पहला जो इंद्रक ताके समीप वर्ती जे पूर्वादि दिशानि विर्षे च्यारि च्यारि श्रेणीवद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । इन अटाईस विना और श्रेणी वद्ध वा प्रकीर्णक विलनिके नामका वर्णन इस शास्त्र विर्षे नाहीं हैं तहां धर्मा पृथ्वीका सीमंत इंद्रककी पूर्वादि दिशानि विर्षे कांक्षा १ पिपासा १ महाकांक्षा १ महापिपासा १ ए च्यारि हैं ॥ १५९ ॥

वंसातद्दगे अणिच्छा अविज्ज महणिच्छ महअविज्जा य ।
तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्ख महादिवेदा य ॥ १६० ॥

वंशातनके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाऽविद्या च ।
तप्ते दुःखा वेदा महादुःखा महादिवेदा च ॥ १६० ॥

अर्थ—वंशाका तन इंद्रक विर्षे अनिच्छा १ अविद्या १ महानिच्छा १ महाविद्या १ ए च्यारि हैं । वहुरि मेघाका तप्त इंद्रक विर्षे दुःखा १ वेदा १ महादुःखा १ महावेदा १ ए च्यारि हैं ॥ १६० ॥

आराए दु णिसट्ठा णिरोह अणिसिट्ठ महणिरोहा य ।
तमग णिरुद्धविमद्दण अइणिरुद्ध महविमद्दणया ॥ १६१ ॥

आरे तु निसृष्टा निरोधा अनिसृष्टा महानिरोधा च ।
तमके निरुद्धविमर्दनअतिनिरुद्धमहाविमर्दना ॥ १६१ ॥

अर्थ—बहुरि अंजनाका आर इंद्रक विषैं निसृष्ट १ निरोधा १ अनिसृष्टा १
१ ए च्यारि हैं। बहुरि अरिष्टाका तमक इंद्रक विषैं निरुद्ध १ विमर्दन १ अनिरुद्ध १
नक १ ए च्यारि हैं ॥ १६१ ॥

हिमगा णीला पंका महणील महादिपंक सत्तमए।
पढमो कालो रउरवमहकालमहादिरउरवया ॥ १६२ ॥

हिमके नीला पंका महानीला महादिपंका सप्तमायाम्।
प्रथमः कालः रौरवमहाकालमहादिरौरवाः ॥ १६२ ॥

अर्थ—मघवीका हिमक इंद्रक विषैं नीला १ पंका १ महानीला १ महापंका १ ए
हैं। बहुरि सातमी पृथ्वी विषैं पहला श्रेणीबद्ध काल १ बहुरि रौरव १ महाकाल १ महारौरव
ए च्यारि हैं। ऐसें इनके नाम जानने ॥ १६२ ॥

आगैं पृथ्वी पृथ्वी प्रति प्रथम पटल संबंधी श्रेणीबद्ध बिलनिका प्रमाणरूप जो धन ता
धरि करि अंतके पटलका धन ल्यावनेकौं अर अंतके पटलका धनकौं धरि प्रथम पटलके धन ल्याव
नेकौं करण सूत्र कहै हैं;—

वेगपदं चयगुणिदं भूमिह्नि मुहम्मि रिणधनं च कए।
मुहभूमीजोगदले पदगुणिदे पदधणं होदि ॥ १६३ ॥

व्येकपदं चयगुणितं भूमौ मुखे ऋणं धनं च कृते।
मुखभूमियोगदले पदगुणिते पदधनं भवति ॥ १६३ ॥

अर्थ—जे ते स्थान होंहि तिनकौं पद कहिए वा गच्छ कहिए। बहुरि स्थान स्थान प्रति जे ते
बधते जाहिं वा घटते जाहिं तिनकौं चय कहिए। बहुरि आदिस्थान वा अंतस्थान विषैं जो हीन
प्रमाण होइ ताकौं मुख कहिए अधिक प्रमाण होइ सो भूमि कहिए सो इहां एक घाटि जो पद ताकौं
चयकरि गुणें जो प्रमाण होइ तितना भूमि विषैं ऋण कीएं घटाएं मुख होइ। अथवा मुख विषै
धनकीएं जोडैं भूमि होइ बहुरि मुख और भूमि इन दोऊनिका योग कहिए जोड ताकौं दले कहिए
आधाकीएं बहुरि ताकौं पदगुणिते कहिए पदकरि गुणें पदधनं कहिए सर्व स्थाननिका
जोडरूप प्रमाण हो है। ऐसें जहां आदिस्थान विषैं विवक्षित प्रमाण होइ अर पीछैं स्थान प्रति बरोबरि
घटते जाहिं वा बधते जाहिं तहां इस सूत्रकी प्रवृत्ति जाननी। ताका इहां उदाहरण, प्रथम पृथ्वीविषै
प्रथम पटल तहां दिशा विषैं गुणचास अर विदिशा विषैं अडतालीस श्रेणीबद्ध हैं तिनकौं मिलाएं
सित्याणवै भए। बहुरि दिशा वा विदिशाका प्रमाण च्यारि है तातैं इनकौं चौगुणा कीएं प्रथम पटल
विषैं सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण तीनसै अठ्यासी भया सो सो इहां भूमि कहिए। बहुरि अंतका
[illegible] पटल विषैं दिशा विषैं तेतीस विदिशा विषैं [illegible] श्रेणीबद्ध है जोडे [illegible] अर चौगुणा
[illegible] दोयसै [illegible] [illegible] मुख कहिए बहुरि इहां पटल तेरह
पदका प्रमाण [illegible] [illegible] पटल अर श्रेणीबद्ध घटे है तातैं चय
[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] । [illegible] मुख दोवनै [illegible] मिलिकर धनकीए जोडें भूमि तीनिमैं [illegible] है। बहुरि मुखको दोवनै [illegible] भूमि तीनिमैं [illegible] इनको जोडें [illegible] तीनमैं [illegible] इनकौं पद [illegible] करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसै चौंसठि सर्व प्रथम पृथ्वी विषै [illegible] पटल [illegible] श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। बहुरि इंद्रक सहित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण भी ऐसे ही [illegible]। मुख और भूमि विषै एक एक और [illegible] तब मुख दोवमैं तेरा भूमि [illegible] [illegible] प्रकार कीएं प्रथम पृथ्वीविषै इंद्रक सहित श्रेणीबद्ध च्यारि हजार च्यारिसै [illegible] ४४३३ बहुरि ऐसैंही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै भी प्रमाण ल्यावना। बहुरि समस्त पृथ्वीनिके श्रेणीबद्धका प्रमाण ऐसें ही ल्यावना इहां मुख तौ सप्तम पृथ्वी विषै श्रेणीबद्ध च्यारि भूमि प्रथम [illegible] [illegible] तीनमैं [illegible] पद सर्व पटल गुणचास गच्छ आठ जानना। इहां समस्त पृथ्वीनिके इंद्रक सहित श्रेणीबद्धका प्रमाण भी ऐसैं ही ल्यावना। इहां मुख पांच भूमि तीनिसै [illegible] [illegible] ॥ १६३ ॥

आगे इंद्रक श्रेणीबद्धका प्रमाण ल्यावनेकौं [illegible] करण सूत्र कहै हैं:—

पदहदवेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं ।
पचयजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि ॥ १६४ ॥

[illegible] विहीनं द्विभक्तं उत्तरेण संगुणितं ।
प्रचययुतं पदगुणितं पदगणितं तद् विजानीहि ॥ १६४ ॥

अर्थ—[illegible] दोयका भाग दीजिए बहुरि उत्तर जो [illegible] [illegible] गुणिए ऐसैं [illegible] आदिस्थान विषै [illegible] प्रमाण होई [illegible] [illegible] विजानीहि कहिए तू जानि। सो [illegible] [illegible] आठकरि गुणें [illegible] [illegible] पद तेरह करि गुणें [illegible] [illegible] पृथ्वी विषै प्रमाण ल्यावना ॥ १६४ ॥

[illegible] कहै हैं—

पुढविंदयवजिदं [illegible] ।
[illegible] पुढविंदयवजिदं [illegible] ॥ १६५ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ १६५ ॥

अर्थ—[illegible]

मूल छह मिलाए तियालीस इनकों आठगुणा कीएं तीनिसै छतीस इनमें च्यारि मिलाएं तीनिसै चालीस इनकों इंद्रकका प्रमाण तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसै बीस प्रथम पृथ्वी विषैं सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैंभी प्रमाणल्यावना। अब इहां ऐसा सूत्र कैसैं कह्या सो जाननेकों याकी वासनाका स्वरूप संस्कृत टीकातैं जानना। या प्रकार प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं चौवालीससै बीस, छवीससै चौरासी, चौदासै छहत्तरि, सातसैं, दोयसैं साठि, साठि, च्यारि।४४२०।२६८४।१४७६।७००।२६०।६०।४। श्रेणीबद्ध जानने। सर्व मिलाएं नव हजार छसै च्यारि श्रेणीबद्ध हो हैं। इंद्रक तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक जानने। मिलाएंतैं सर्वइंद्रक गुणचास होहैं इन दोऊनिकों मिलाएं इंद्रक सहित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है॥ १६५॥

आगैं प्रकीर्णकनिकी संख्या ल्यावनेकों कहै हैं;—

सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ट्ठिया णिरया।
होंति पइण्णयणामा सेढिंदयहीणरासिसमा॥ १६६॥

श्रेणीनां अंतराले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितानि निरयाणि।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणीन्द्रकहीनराशिसमानि॥ १६६॥

अर्थ—जैसैं पुष्पप्रकीर्णक कहिए पुष्पांजलि करि फूल बखेरे हुए पृथ्वीविषैं ते फूल पंक्ति रहित जहां तहां पाईए तैसैं श्रेणीबद्धनिकैं बीचि दिशा विदिशानिका अंतराल विषैं पंक्ति रहित जहां जहां जे बिल पाईए ते प्रकीर्णक नाम बिल हो हैं ते श्रेणीबद्ध और इंद्रककी संख्या रहत राशि जो सर्व बिलनिकी संख्या तीह समान जाननैं। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं च्यारि हजार च्यारिसै श्रेणीबद्ध अर इंद्रक तेरह इन दोऊनिकों तारि तीस लाख तामैं घटाएं गुणतीस लाख पिच्याणवे हजार पांचसै सतसठि रहै सो इतने प्रथम पृथ्वी विषैं प्रकीर्णक बिल जानने। ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं जानना॥ १६६॥

आगैं नरक बिलनिका विस्तार कहनेके अर्थि कहै हैं;—

पंचमभागपमाणा णिरयाणं होंति संखवित्थारा।
सेसचउपंचभागा असंखवित्थारया णिरया॥ १६७॥

पंचमभागप्रमाणा निरयाणां भवंति संख्यविस्ताराः।
शेषचतुःपंचभागा असंख्यविस्ताराणि नरकाणि॥ १६७॥

अर्थ—पृथ्वीनि विषैं जो पूर्वे बिलनिका प्रमाण कह्या तिन विषैं पांचवां भाग प्रमाण बिल तौ संख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। अर अवशेष च्यारि पांचवां भाग प्रमाण असंख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। तहां इंद्रक तौ सर्व ही संख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने। अर श्रेणीबद्ध सर्व असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने। अवशेष संख्यात वा असंख्यात विस्तारयुक्त प्रकीर्णक जानने। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं बिल तीस लाख तिनकों पांचका भाग दीएं एक भाग प्रमाण छह लाख बिल तौ संख्यात योजन विस्तार युक्त है। अवशेष च्यारि भाग प्रमाण चौईस लाख बिल असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने। तहां संख्यात योजन विस्तारयुत छह

लाख बिलनि विषैं तेरह तौ इंद्रक अर अवशेष पांच लाख निन्याणवै हजार नौसै सित्यासी प्रकीर्णक जानने। बहुरि असंख्यात योजन विस्तारयुक्त चौईस लाख बिलनिविषैं च्यारि हजार च्यारिसै बीस तौ श्रेणीबद्ध अर अवशेष तेईस लाख पिच्याणवै हजार पांचसै असी प्रकीर्णक जानने। ऐसे ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं भी जाननां। या सर्व पृथ्वीनिके सर्व बिलनिविषैं भी ऐसैं ही लगावनां ॥ १६७ ॥

आगें संख्यात असंख्यात विस्तारविषैं नियम दिखावता कहै हैं;—

इंदयसेढीबद्धापइण्णयाणं कमेण वित्थारा।
संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाण हवे ॥ १६८ ॥

इंद्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः।
संख्येयमसंख्येयमुभयं च च योजनानां भवेत् ॥ १६८ ॥

अर्थ—इंद्रक अर श्रेणीबद्ध अर प्रकीर्णक इनका विस्तार अनुक्रमतैं संख्यात योजन अर असंख्यात योजन अर उभय कहिए संख्यात वा असंख्यात योजनका है ॥ १६८ ॥

आगें इंद्रकनिके विस्तारका विशेष कहैं हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं पढमं चरिमं तु जंबुदीवसमं।
उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदम्हि हाणिचयं ॥ १६९ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं प्रथमं चरमं तु जंबूद्वीपसमम्।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते हानिचयं ॥ १६९ ॥

अर्थ—प्रथम इंद्रक मनुष्य क्षेत्र प्रमाण है। अंत इंद्रक जंबूद्वीप समान है। दोऊनिका शे-
[illegible] एक घाटि इंद्रकका भाग दीए हानि चय हो है। सो पहला पटल संबंधी पहला इं-
[illegible] पैंतालीस लाख योजन चौड़ा है। अर गुणचासवां पटल संबंधी अंतका इंद्रक एक लाख चौड़ा है।
[illegible] योजन कौं पैंतालीस लाखमैंस्यौं एक लाख घटाएं अवशेष चवालीस लाख रहे तिनौं
एक घाटि इंद्रकनिका प्रमाण अठतालीस ताका भाग दीएं इक्याणवै हजार छसैं छ्यासठि यो-
जन [illegible] योजन अठतालीसका भाग आया तहां बत्तीसका अठतालीसवां भागका सोलह की
[illegible] कीएं [illegible] दोय अर अठतालीसकी जायगा तीन भया ऐसैं करि इक्या-
णवै हजार छसैं छ्यासठि योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण हानि चय आया [illegible]
इंद्रक [illegible] प्रमाण [illegible] हानि चय जानना सो पैंतालीस लाख योजनमैंस्यौं [illegible]
चय घटाएं [illegible] लाख आठ हजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण
द्वितीय इंद्रकका विस्तार है। ऐसैं ही ऊपरि ऊपरि इंद्रकका विस्तार जो प्रमाण तामैं पूर्वोक्त हानि च-
य घटाएं नीचें इंद्रकका प्रमाण [illegible] जानना ॥ १६९ ॥

आगें [illegible] कहै हैं;—

[illegible]
[illegible] ॥ १७० ॥

षड्भ्यधुरंशादिषु प्रतिपृथ्वीमुखार्धसहितकोशेषु।
षड्भि भक्तेषु इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७० ॥

अर्थ—छह आठ चौदाने आदि दे करि पृथ्वी प्रति मुखका अर्द्ध प्रमाण संयुक्त जे
तिनकों छहका भाग दीएं इंद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णककनिका बाहुल्य हो है। इहां बिलानिकी भू
ध्याय छानि पर्यंत उचाईका प्रमाण ताका नाम बाहुल्य जाननां। सो प्रथम पृथ्वी विषैं छह को
छहका भाग दीएं एक कोश भया सो इंद्रकनिका बाहुल्य जानना। बहुरि आठकों छहका
दीएं च्यारि कोशका तीसरा भाग सो श्रेणीबद्धनिका बाहुल्य जाननां। बहुरि चौदहकों छह
भाग दीएं सातकोशका तीसरा भाग भया सो प्रकीर्णककनिका बाहुल्य जानना। (।।।)। ऐसें प्रथ
पृथ्वी विषैं इंद्रकादिकका बाहुल्य कह्या ताका नाम इहां मुख जाननां। ताका आधा कीएं जो प्रमाण
होइ तितनां तितनां उपरिकी पृथ्वीके इंद्रकादिकनिका बाहुल्य विषैं जोड़ें नीचली पृथ्वीके इंद्रका-
दिकका बाहुल्य हो है। सो इंद्रकनिविषैं तीनका छठा भाग श्रेणीबद्धनिविषैं च्यारिका छठा भाग
प्रकीर्णककनि विषैं सातका छठा भाग पृथ्वी पृथ्वी प्रति जोड़ना सो प्रथम पृथ्वी विषैं छह आठ
चौदह तिनमें तीन च्यारि सात अर छह आठ चौदह अर नव बारा इकईस अर बारा सोलह अठा-
ईस अर पंद्रह बीस पैंतीस अर अठारह चौईस शून्य इतने अनुक्रमतैं मिलाएं छहका भाग दीएं
द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं इंद्रकादिकनि बाहुल्यका प्रमाण आवै है। तहां सप्तम पृथ्वी विषैं प्रकीर्ण-
ककनिका अभाव है। तातैं तीसरी जायगा शून्य कह्या है। तहां छै आठ चौदह विषैं तीनि च्यारि
सात जोड़ें सब नौ बारा इकईस हूवा इनकों छहका भाग दीएं अपवर्तन कीएं द्वितीय पृथ्वीविषैं इंद्र-
कनिका ड्योढकोश श्रेणीबद्धनिका दोय कोश प्रकीर्णककनिका साढ़ा तीनि कोश बाहुल्य [।।।।] हो
है। तृतीयादि पृथ्वी विषैं जानना ॥ १७० ॥

आगैं बहुरि इस बाहुल्यकों अन्य प्रकार करि कहै हैं;—

रूवहियपुढविसंखं तियचउसत्तेहिं गुणिय छब्भजिदे।
कोसाणं वेहुल्लिय इंदयसेढीपइण्णाणं ॥ १७१ ॥

रूपाधिकपृथ्विसंख्या त्रिकचतुःसप्तभिः गुणयित्वा षड्भक्ते।
क्रोशानां बाहुल्यं इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७१ ॥

अर्थ—जेथवी पृथ्वी होइ तीह संख्या विषैं एक अधिक कीएं जो संख्या होइ, ताकों तीन
[च्या]रि सात करि गुणें छहका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितनी कोशनिका बाहुल्य जो उचाईका
[प्रमा]ण सो जानना। तहां प्रथम पृथ्वी विषैं एक अधिक कीएं दोय भए सो तीन जायगा दोय दोय
[भए] तिनकों च्यारि सात करि गुणें छह आठ चौदह भए तिनकों छहका भाग दीएं [।][।][।]
[इंद्रक]ादिकनिका कोशरूप बाहुल्य आवै है। बहुरि द्वितीय पृथ्वी विषैं एक अधिक संख्या तीन सो
[तीन] जायगा मांडि तीन च्यारि सात करि गुणें नव बारह बाईस होइ इनकों छहका भाग दीएं
[।।।] कोशरूप इंद्रकादिकनिका बाहुल्य आवै है। ऐसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनि विषैं जानना ॥ १७१ ॥

आगैं इंद्रकादि बिलनिका अंतरालका प्रमाण कहै हैं,—

पदराहय विलवहलं पदराट्ठिदभूमिदो विसोहित्ता।
रूऊणपदहिदाए विलंतरं उड्ढगं तीए ॥ १७२॥

प्रतराहतं विलबाहल्यं प्रतरस्थितभूमितः विशोध्य ।
रूपोनपदहतायां विलांतरं ऊर्ध्वगे तस्याः ॥ १७२ ॥

अर्थ—प्रतर कहिए पटल तिनका प्रमाण करि आहत कहिए गुण्या हूवा ऐसा बाहुल्य कहिए इंद्रकादि विलनिका बाहुल्यका प्रमाण सो प्रतरस्थित भूमितः कहिए प संयुक्त जो नरक पृथ्वीका प्रमाण तातैं विशोधयित्वा कहिए घटाय करि अवशेषकों ... एक घाटि पटलका प्रमाण रूप गच्छ ताकरि हृतायां कहिए भाग दीएं संतैं तहि वि विषैं ऊर्द्धग विलांतर कहिए उचाई विषैं प्राप्त ऐसा विलनिके अंतराल हो है। जैसैं मंदिर बने हैं। तिन दोऊ मंदिरनिके बीचि छाति हो है। तिस छातिकी मोटाईका सो ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरले नीचले पटल संबंधी विलनिके बीचि जो ता पृथ्व ईका प्रमाण सो इहां ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरिले नीचले पटल विलांतर जा प्रथम पृथ्वी विषैं पटलनिका प्रमाण तेरह ताकरि इंद्रक विलका बाहुल्य एक कोश श्रे च्यारि कोशका तीसरा भाग प्रकीर्णकनिका सात कोशका तीसरा भाग इनकों गुणें बावन कोशका तीसरा भाग इक्याणवै कोशका तीसरा भाग भया [illegible] बहुरि च्या एक योजन होइ तौ इतने कोशनिका केते योजन होय ऐसैं तिन कोशनिके योजन योजनका चौथा भाग बहुरि बावन योजनका बारम्हां भाग बहुरि इक्याणवै योजनका बा भया [illegible]। बहुरि इहां अब्बहुल भाग असी हजार योजन छोडि बीचि पटल पाईए स्थित भूमि अठहत्तरि हजार योजन तिनमें पूर्वोक्त योजननिकों समच्छेद विधान करि घटा विषैं तीनि लाख ग्यारह हजार नवसै मित्यासी योजननिका चौथा भाग अर श्रेणी च्यारिका अपवर्तन कीएं दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजननिका तीसरा प्रकीर्णकनि विषैं नौ लाख पैंतीस हजार नौसै नवका बारम्हां भाग प्रमाण आया बहुरि घाटि पटलका प्रमाणरूप पदका प्रमाण बारह ताका भाग दीएं उपरले नीचले इंद्रकनिकै बी लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजनका अडतालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है। बहुरि श्रे बीचि दोय लाख तेतीस हजार नौसे सित्यासी योजनका छत्तीसवां भाग प्रमाण अंतराल है प्रकीर्णकनिके बीचि नव लाख पैतीस हजार नवसै नौका एक सो चवालीसवां भाग प्रमाण [illegible] ऐसे ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं तीस हजार छत्तीस हजार आ स्थित भूमि विषैं अपना अपना पटल प्रमाण करि गुण्या हूवा विल बाहुल्य घटाइ एक घा प्रमाणका भाग दीएं ऊर्द्ध गत अंतरालका प्रमाण आवै है। ऐसैं एक पृथ्वी विषैं तिष्ठते तिनका परस्पर अंतराल वर्णन किया ॥ १७२ ॥

आगैं उपरली पृथ्वीका अंतपटल अर नीचली पृथ्वीका आदि पटल तिन विषैं अंतरा पन करै हैं;—

उवरिमपच्छिमपडला हिट्ठिमपढमिल्लपत्थरंतरयं।
रज्जू तिसहस्सूणिदघम्मा वंसुदयपरिहीणा॥ १७३॥
उपरिमपश्चिमपटलात् अधस्तनप्रथमप्रस्तारांतरका।
रज्जुः त्रिसहस्रोनितघर्मा वंशोदयपरिहीना॥ १७३॥

अर्थ—उपरिकी घर्मा पृथ्वी ताका पश्चिम पटल कहिए अंतका पटल अर ताके अधस्तन कहिए नीचली वंशा पृथ्वी ताका प्रथम पटल इनिविषै एक रज्जु अंतराल है। सो रज्जु कैसा। तीन हजार घाटि घर्मा अर वंशाकी मोटाईका प्रमाण जामैं घटाईए ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल है। कैसैं सो कहिए है। इहांतैं एक हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है सो चित्रा पृथ्वीकी मोटाई तौ उर्द्ध लोककी उचाई विषै गिनी है। अर ताके नीचैं वंशा पृथ्वीका अंतपर्यंत एक राजू उंचाई है। बहुरि एक लाख असी हजार योजन घर्मा पृथ्वीकी मोटाई विषैं चित्रा पृथ्वीकी हजार योजनकी मोटाई आय गई है तातैं हजार योजन तौ चित्रा पृथ्वी संबंधी घटाए बहुरि घर्मा पृथ्वीका अंत पटलके नीचैं हजार योजन विषैं पटल नाही सो घटाए बहुरि वंशा पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि हजार योजन विषैं पटल नाहीं सो घटाए ऐसैं तीन हजार योजन घर्मा अर वंशाकी मोटाई विषैं घटाईए तहां घर्माकी मोटाई एक लाख असी हजार योजन वंशाकी मोटाई बत्तीस हजार योजन दोऊनिको मिलाएं दोय लाख बारह हजार योजन घटाएं दोय लाख नव हजार रहे सो इतने एक राजू विषैं घटाएं घर्माका अंत पटल अर वंशाका प्रथम पटल विषैं अंतरालका प्रमाण हो है। इस अंतराल विषैं हजार योजन घर्माकी नीचली पृथ्वी अर हजार योजन वंशाकी उपरली पृथ्वी अर अवशेष सर्व बीचिमैं अवकाश पाईए है॥ १७३॥

आगैं तातैं नीचली पृथ्वीनिका अंतादि पटलनि विषैं अंतराल निरूपण करैं हैं;—

कमसो विसहस्सूणियमेघादीणं च वेहपरिहीणा।
चरिमे वितिभागाहियजोयणतिसहस्सपरिवज्जा॥ १७४॥
क्रमशो द्विसहस्रोनितमेघादीनां च वेधपरिहीना।
चरमे द्वित्रिभागाधिकयोजनत्रिसहस्रपरिवर्जा॥ १७४॥

अर्थ—अनुक्रमतैं दोय हजार योजन घाटि मेघादि पृथ्वीनिका वेधकरि हीन ऐसा रज्जु प्रमाण अंतर है। तहां मेघादि पृथ्वीका मोटाईका प्रमाण अठाईस हजार योजन तिनमैं दोय हजार घटाएं छव्वीस हजार योजन तिन करि हीन ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल वंशाका अंतपटल अर मेघाका आदि पटलके बीचि जानना। बहुरि अंजना पृथ्वीकी मोटाई चौडाई चौईस हजार योजनमैं दोय हजार योजन घटाए वाईस हजार योजन रहे तिन करि हीन एक राजू प्रमाण मेघाका अंतपटल अर अंजनाका आदि पटल विषैं अंतराल जानना। बहुरि अरिष्टा पृथ्वीकी मोटाई बीस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए अठारह हजार योजन रहे तिनकरि हीन एक राजू प्रमाण अंजनाका अंत पटल अर अरिष्टाका प्रथम पटल बीचि अंतराल है। बहुरि मघवी पृथ्वीकी मोटाई सोल्ह हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए चौदह हजार योजन तिन करि हीन एक राजू प्रमाण अरि-

आगें तिन उपपाद स्थानकनिका व्यास वा बाहुल्य कहैं हैं;—

इगिबितिकोसो वासो जोयणमवि जोयणं सयं जेट्ठं ।
उट्टादीणं बहल्लं सगवित्थारेहिं पंचगुणं ॥ १८० ॥

एकद्वित्रिक्रोशः व्यासः योजनमपि योजनशतं ज्येष्ठं ।
उष्ट्रादीनां बाहल्यं स्वकविस्तारेभ्यः पंचगुणम् ॥ १८० ॥

अर्थ—एक कोश दोय कोश तीन कोश बहुरि योजनमपि कहिए एक योजन दोय तीन योजन बहुरि योजनानां शतं कहिए सौ योजन इतना घर्मादि सप्त पृथ्वीनिका क्रमतें आकारके धारक जे उपपादस्थान तिनका उत्कृष्ट व्यास जो चौडाई ताका प्रमाण जानने। अपना अपना प्रमाणतें पांच गुणा बाहुल्य कहिए ऊंचाईका प्रमाण जाननां ॥ १८० ॥

आगें तिन उपपाद स्थानकनिविषैं उपजे जे जीव कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

अंतोमुहुत्तकाले तदो चुदा भूतलम्मि तिक्खाणं ।
सत्थाणमुपरि पडिदूणुट्ठिय पुणोवि णिवडंति ॥ १८१ ॥

अंतर्मुहूर्त्तकाले ततश्च्युता भूतले तीक्ष्णानाम् ।
शस्त्राणामुपरि पतित्वा उड्डीय पुनरपि निपतंति ॥ १८१ ॥

अर्थ—अंतर्मुहूर्त कालविषैं तहां पर्याप्ति पूर्ण करि तिस उपपाद स्थानतैं छूटि नरकनिका पृथ्वी तल विषैं जे तीक्ष्ण शस्त्र हैं तिन उपरि पडै हैं। बहुरि तहांस्यों उड्डीय कहिए करि बहुरि तिनही उपरि निपतंति कहिए पडैं हैं ॥ १८१ ॥

आगें कितना उछलें हैं सो कहैं हैं;—

पणघणजोयणमाणं सोलहिदं उप्पडंति णेरइया ।
घम्माए वंसादिसु दुगुणं दुगुणंति णादव्वं ॥ १८२ ॥

पंचघनयोजनमाने षोडशाहृत उत्पतंति नैरयिकाः ।
घर्मायां वंशादिषु द्विगुणं द्विगुणं इति ज्ञातव्यम् ॥ १८२ ॥

अर्थ—पांचका घन एक सौ पचीस ताकौं सोलाका भाग दीएं जो आवै तितने योजन घर्मा पृथ्वी विषैं नारकी उछलैं हैं। बहुरि यातैं वंशादिक पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं दूणे दूणे उ ऐसा जाननां ॥ १८२ ॥

आगें तहां तिष्ठते थे जु पुरातन नारकी ते उछलि करि पडे जे नवीन नारकी तिनकौं करैं हैं सो कहैं हैं;—

पोराणिया तदा ते दट्ठूणइणिट्ठुरारवागम्म ।
खोचांति णिसिचंति य वणेसु बहुखारवारीणि ॥ १८३ ॥

पौराणिका तदा तान् दृष्ट्वा अनिनिष्ठुरारवा आगम्य ।
घ्नंति निषिंचति च वनेषु बहुक्षारवारीणि ॥ १८३ ॥

अर्थ—पुरातन नारकी तहां तिन नवीन नारकीनिकों देखि करि अत्यन्त कठोर वचन कहते
ते आप करि तिन नवीन नारकीनकों घातैं हैं। बहुरि शस्त्रनि उपरि पड़नेतैं भए जु शरीर विषैं
न कहिए घाव तिन विषैं बहुत खारा जलनिकों सींचे हैं॥ १८३॥

आगैं ते नवीन नारकी कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

तेवि विहंगेण तदो जाणिदपुव्वावरारिसंबंधा।
असुहापुहविकिरिया हणंति हण्णंति वा तेहिं॥ १८४॥

तेपि विभंगेन ततः ज्ञातपूर्वापरारिसंबंधाः।
अशुभापृथग्विक्रिया घ्नंति हन्यंते वा तैः॥ १८४॥

अर्थ—ते नवीन नारकी भी विभंग जो कुअवधि तीह करि तहां पर्याप्ति पूर्ण भए पीछैं
न्या है पिछला वैरीपणाका संबंध जिननें ऐसे बहुरि अशुभ अपृथक् विक्रिया जिनके पाईए ऐसे
त संतें अन्य नारकीनिकों हनैं हैं। वा तिन नारकीन करि आप हनिए हैं। ऐसैं परस्पर
त प्रवर्तें है॥ भावार्थ॥ नारकीनिकैं ऐसा कुअवधि हो हैं। जाकरि परस्पर वैरकों जानि परस्पर
रोध रूप ही प्रवर्तें बहुरि जो पूर्वभव विषैं कोई उपकार किया होय तौ ताकों जानि तहां परस्पर
तिरूप न प्रवर्तें। बहुरि तिनके अशुभ जो आपापरकों दुःखदायक ऐसी ही विक्रिया होय सकै
। बहुरि सो अपृथक् विक्रिया हो है। अपने शरीरकों तौ अनेक रूप परनवावैं अपने शरीरतैं जुदी
क्रिया करनेकी सामर्थ्य नाहीं। ऐसैं ए नारकी परस्पर घात करैं हैं॥ १८४॥

आगैं अपृथक् विक्रिया करनेका विधान कहैं हैं;—

वयवग्घघूगकागाहिविच्छियभल्लूकगिद्धसुणयादिं।
सूलग्गिकोंतमोग्गरपहुदी संगे विकुव्वंति॥ १८५॥

वृकव्याघ्रघूककाकाहिवृश्चिकभल्लूकगृध्रशुनकादि।
शूलाग्निकुंतमुद्गरप्रभृति स्वांगे विकुर्वंति॥ १८५॥

अर्थ—वृक कहिए स्याल बहुरि व्याघ्र कहिए बघेरा घूक कहिए घूघू काक कहिए कागला
हि कहिए सर्प वृश्चिक कहिए बीछू भल्लूक कहिए रींछ गध्र कहिए गृध्र पंखी शुनक कहिए कूकरा
यादि अपने शरीर विषैं विक्रिया करैं हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुःख देनेकों अपने शरीरकों स्याल
यादि दुःखदायक तिर्यंचनिके आकाररूप विक्रिया करि परनमाइ परस्पर खाणा चूंटना काटना इत्यादि
तरूप प्रवर्तें हैं। बहुरि शूल कहिए त्रिशूल बरछी अग्नि कहिए जलावनेकों कारण अग्नि अर
त कहिए सेल अर मुद्गर कहिए मोंगरा इत्यादि दुखदायक शस्त्रादि सामिग्री अपने शरीरविषैं
क्रिया करैं हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुख देनेकों अपने शरीर ही विषैं त्रिशूल आदि शस्त्र वा
ग्नि आदि दुःखदायक वस्तु विक्रिया करि उपजाय तिनि करि परस्पर घात करैं हैं। ऐसैं अशुभ
क्रया करि नारकी परस्पर दुःख देनेकों प्रवर्तें हैं। ऐसा ही तिस नारक पर्यायका स्वभाव है। बहुरि
न सर्व पापी हैं काहेकों परस्पर वैर करि दुःखकों टदारैं हैं ऐसा विचार तहां नाहीं उपजै है॥ १८५॥

आगैं क्षेत्र संबंधी पदार्थनिकी सूचनाकों दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

वेदालगिरी भीमा जंतसयउक्कडगुहा य पडिमाओ।
लोहणिहग्गिकणड्ढा परसुछुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेतालगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः।
लोहनिभाग्निकणाढ्याः परशुछुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ—वेतालकीसी आकृतिकों धरैं ऐसा महाभयानक सो तहां गिरि कहिए पर्वत हैं। बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुफा हैं। बहुरि जिउनी जु प्रतिमा कहिए स्त्री आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है। बहुरि तहां असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त है ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा।
पूहरुहिरा दुगंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिनद्यः क्षारजलपूर्णाः।
पूयरुधिरा दुर्गंधाः ह्रदाश्च कृमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

अर्थ—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष अर महा दुःखदायक हैं। बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है। बहुरि पूय कहिए घिनावनां ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रह हैं ते कोटिक कृमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं। **भावार्थ।** विक्रियादि करि विना निरजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन तिनके विषैं महा दुःखकों कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगैं तैसी नदीकों पाइ कहा हो है सो कहैं हैं;—

अग्गिभया धावंता मण्णंता सीयलंति पाणीयं।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदड्ढसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निभयाद्धावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं।
ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

अर्थ—अग्निके भयतैं दौडता ऐसैं जु ते नवीन नारकी ते इहां शीतल पानी है ऐसैं मानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भया है सर्वांग जिनका ऐसे हो हैं ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसे होत संतैं ते नारकी कहा करैं हैं सो कहै हैं;—

उट्ठिय वेगेण पुणो असिपत्तवणं पयांति छायेत्ति।
कुंतासिसत्तिजट्ठिहिं छिज्जंते वादपडिदेहिं ॥ १८९ ॥

उत्थाय वेगेन पुन असिपत्रवन प्रयांति छायेति।
कुंतासिशक्तियष्टिभिश्छिद्यन्ते वातपतितैः ॥ १८९ ॥

अर्थ—ते नवीन नारकी वेग करि शीघ्र ही तहांस्यों उठि करि इहां छाया है ऐसा मानते संते असिपत्र नामा वनकों प्राप्त हो हैं। तहां पवन करि पड़े ऐसे सेल वा खड्ग वा शक्ती या यष्टि कहिए लाठी इत्यादि समान जे पत्रादिक तिनकरि शरीर भेदिए है॥ १८९॥

आगैं तिन नारकीनिके बाह्य दुखका साधनकों कहै हैं;—

लोहोदयभरिदाओ कुंभीओ तत्तबहुकडाहा य।
संतत्तलोहफासा भू सूईसहलाइण्णा॥ १९०॥

लोहोदकभरिताः कुंभ्यः तप्तबहुकटाहाश्च।
संतप्तलोहस्पर्शा भूः सूचीशाल्मल्याकीर्णा॥ १९०॥

अर्थ—ताता लोह समान जल करि भरे ऐसे तहां कुंभी हैं जैसे हांडी विषै अन्न पचाईए तैसैं नारकीनिकों कुंभी विषैं पचावैं हैं बहुरि बहुत ताता कडाह हैं। जैसे कडाह विषै तल तैलादि करि अन्न आदि पचाईए तैसैं नारकीनिकों कडाह विषैं पचाईए हैं इत्यादि अनेक बाह्य दुःखकौ कारण सामिग्री तहां पाईए है। बहुरि तहां भूमिका है सो तप्तायमान लोहके समान है स्पर्श जाका ऐसी है। बहुरि सूई सारिखी शाल्मल कहिए वृक्ष तिनकरि आकीर्णा कहिए व्याप्त है॥ १९०॥

आगैं क्षेत्रका स्पर्श करि हो है जो दुख ताकों दृष्टान्त करि कहै हैं;—

विच्छियसहस्सवेयणसमधियदुक्खं धरित्तिफासादो।
कुक्खसिरसीसरोगगछुधतिसभयवेयणा तिव्वा॥ १९१॥

वृश्चिकसहस्रवेदनासमधिकदुःखं धरित्रीस्पर्शात्।
कुक्ष्यक्षिशीर्षरोगगक्षुधातृषाभयवेदना तीव्राः॥ १९१॥

अर्थ—हजार बीछू काटैं जैसें इहां वेदना होइ तातैंस्यों भी बहुत अधिक वेदना तहां धरित्री जो भूमिका ताका स्पर्शनि हो है। बहुरि तिन नारकीनिकै कुक्षि कहिए उदर अर अक्षि कहिए नेत्र अर शीर्ष कहिए मस्तक इत्यादि संबंधी अनेक रोग करि संयुक्त क्षुधा तृषा भयादिक तीव्र वेदना तहां पाईए है॥ १९१॥

आगैं ते नारकी क्षुधादि करि पीडित कहा भोजन करे हैं सो कहै हैं;—

साणादिकुहिदातिगंधं सणिमण्णं मट्टियं विभुंजंति।
धम्मभवा वंसादिसु असंखगुणिदासुहं तत्तो॥ १९२॥

श्वादिकुथितातिगंधां शुनिमन्यां मृत्तिकां विभुंजते।
घर्मभवा वंशादिषु असंख्यगुणिताशुभां ततः॥ १९२॥

अर्थ—श्वा जो कूकरा ताको आदि देकर जिनका जीवनिका जो कलेवर ताका जो मांस ताहिस्यों भी अति अधिक दुर्गंध भोजननि करि भरी कहिए ऐसी बहुत अर जिनि दोंकों दिखे दूर अवेक्षा होती जो तिस क्षेत्र संबंधी माटी ताकों घर्मा नरक विषै उपजे नारकी भक्षण करे हैं। बहुरि वंशादिकनि विषै तिसतैं असंख्यात गुणी अशुभ दुर्गंधि ऐसी जो मृत्तिका माटी भक्षण करे है॥ १९२॥

आगैं क्षेत्र संबंधी पदार्थनिकी क्रूरताकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

वेदालगिरी भीमा जंतसयुक्कडगुहा य पडिमाओ ।
लोहणिहग्गिकणड्ढा परसूछुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेतालगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः ।
लोहनिभाग्निकणाढ्याः परशुछुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ—वेतालकीसी आकृतिकों धरैं ऐसा महाभयानक तौ तहां गिरि कहिए पर्वत हैं। बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुफा हैं। बहुरि तिष्ठती जु प्रतिमा कहिए स्त्री आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है। बहुरि तहां असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त है ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा ।
पूहरुहिरा दुगंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिनद्यः क्षारजलपूर्णाः ।
पूयरुधिरा दुर्गंधाः ह्रदाश्च कृमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

अर्थ—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष अर महा दुःखदायक हैं। बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है। बहुरि पूय कहिए घिनावनां ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रह हैं ते कोटिक कृमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं। भावार्थ। विक्रियादि करि विना निपजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन रितिविषै महा दुःखकों कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगैं तैसी नदीकौं पाइ कहा हो है सो कहैं हैं;—

अग्गिभया धावंता मण्णंता सीयलंति पाणीयं ।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदड्ढसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निभयाद्धावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं ।
ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

अर्थ—अग्निके भयतैं दौड़ता ऐसैं जु ते नर्तन नारकी ते इहां शीतल जलको मानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भए हैं अंग जिनका ऐसे हो है ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसैं होत संते ते नारकी कहा करै है सो कहै है:—

उड्डिय वेगेण पुणो असिपत्तवणं पयांति छायेत्ति ।
हंसंतिसग्गा[illegible]णिवडंति छिण्णंते वादपादिदेहिं ॥ १८९ ॥

[illegible] आसिपत्रवनं प्रयांति छायेति ।
[illegible] ॥ १८९ ॥

आगैं तिन नारकीनके शरीरका विलय होनेका विधान कहै हैं;—

अणवट्टसगाउस्से पुण्णे वादाहदब्भपडलं वा।
णेरइयाणं काया सव्वे सिग्घं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अनपवर्त्यस्वकायुष्ये पूर्णे वाताहताभ्रपटलमिव।
नैरयिकाणां कायाः सर्वे शीघ्रं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अर्थ—भुज्यमान आयुका अपवर्तन जो घटना तीह करि जो कदली घात मरण होइ सो अपवर्त्यायु कहिए। भुज्यमान आयुका अपवर्तन विना भए जो च्युत मरण होइ सो अनपवर्त्यायु कहिए सो नारकीनके शरीर अनपवर्त्य जो अपना आयु ताकौं पूर्ण होत संतैं जैसैं पवन करि हने मेघपटल विलय जाय तैसे सर्व ही शीघ्र विलय हो हैं। जैसैं इहां मनुष्य (ष्य) निके शरीर मरण भए पीछैं पड़े रहै हैं तैसे नारकीनके शरीर पड़े नाहीं रहै हैं ॥१९६॥

आगैं तिन नारकीन करि भोगवनेमें आवैं हैं जे दुःख तिनके भेद कहैं हैं;—

खेत्तजणिदं असादं सारीरं माणसं च असुरकयं।
भुंजंति जहावसरं भवट्ठिदीचरिमसमयोत्ति ॥ १९७ ॥

क्षेत्रजनितं असातं शारीरं मानसं च असुरकृतम्।
भुंजंते यथावसरं भवस्थितेश्चरमसमयांतम् ॥ १९७ ॥

अर्थ—क्षेत्र जनित १ शारीर १ मानस १ असुरकृत १ ए च्यारि प्रकार असाता यथा अवसर लिए अपनी पर्यायका अंतसमय पर्यंत भोगवें हैं तहां नरक क्षेत्र करि उत्पन्न जो आतापादि दुःखं सो क्षेत्र जनित कहिये। नरक शरीर करि उत्पन्न जो रोगादिक दुःख सो शारीर कहिए। आकुल परिणामनि करि उत्पन्न जो आर्त ध्यानादि रूप दुःख सो मानस कहिए। तीसरी पृथ्वी पर्यंत संक्लेश परिणामनि करि संयुक्त जे असुरकुमार जातिके भवनवासी देव तिन करि कीया हूवा जो परस्पर लडावना घात करना इत्यादि दुःख सो असुरकृत कहिए। ऐसैं दुःखके च्यारिभेद जाननें ॥ १९७ ॥

आगैं पटल पटल प्रति तिन नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुकौं तीन गाथानिकरि कहै हैं;—

पढमिंदे दसणउदीवाससहस्साउगं जहण्णिदरं।
तो णउदिलक्ख जेट्ठं असंखपुव्वाण कोडी य ॥ १९८ ॥

प्रथमेंद्रके दशनवतिवर्षसहस्रायुष्कं जघन्येतरत्।
ततः नवतिलक्षं ज्येष्ठं असंख्यपूर्वाणां कोट्यश्च ॥ १९८ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषै जघन्य आयु दश हजार वर्ष है। इतर कहिए उत्कृष्ट आयु सो निवै हजार वर्ष प्रमाण है। बहुरि इहां ते परैं जो कहिए है आयु सो सर्व उत्कृष्ट आयु जानना। तहां दूसरा पटल विषै निवै लाख वर्ष आयु है। तीसरा पटल विषै असंख्यात कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु है। मतलिगाव छप्पन कोडिका पूर्व कहिए है ॥ १९८ ॥

सायरदसमं तुरिये सगसगचरमिंदयम्हि इगि तिण्णि ।
सत्त दसं सत्तरसं उवही बावीस तेत्तीसं ॥ १९९ ॥
सागरदशमं तुरीये स्वकस्वकचरमेंद्रके एकं त्रीणि ।
सप्त दश सप्तदश उदधयो द्वाविंशतिः त्रयस्त्रिंशत् ॥ १९९ ॥

अर्थ— चौथा पटल विषैं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण आयु है । इहां तैं आगैं प्रथमादि सप्तमी पर्यंत पृथ्वीनिका अंतका पटल विषैं आयु कहिए है सो प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं एक तीन सात दश सतरह बावीस तेतीस सागर प्रमाण आयु जानना । १।३।७।१०।१७।२२।३३ ॥ १९९ ॥

आदी अंतविसेसे रूऊणद्धाहिदम्हि हाणिचयं ।
उवरिम जेट्ठं समयेणहियं हेट्ठिमजहण्णं तु ॥ २०० ॥
आदौ अंतविशेषे रूपोनाद्धाहिते हानिचयं ।
उपरिमं ज्येष्ठं समयेनाधिकं अधस्तनजघन्यं तु ॥ २०० ॥

अर्थ—आदि विषैं जो प्रमाण हो ताकौं अंतके प्रमाणमें स्यों घटाएं जो प्रमाण होइ ताकौं रूपोनाद्धा कहिए एक घाटि पटलका प्रमाणरूप गच्छका भाग दीएं हानिचयौ कहिए नीचले पटलतैं पटल पटल प्रति वधनेका प्रमाण हो है । सोई कहिए है—प्रथम पृथ्वी विषैं चौथा पटल विषैं आयु एक सागरका दशवां भाग सो तौ आदि कहिए, अंत पटल विषैं एक सागर सो अंत कहिए अंतमेंस्यौं आदि समछेद विधान करि घटाएं नव सागरका दशमां भाग रह्या तहां तीन पटलका तौ आयुका जुदा प्रमाण कह्या तातैं तिनकों छोडि अवशेष पटल रहे सो इहां गच्छ जाननां। यद्यपि चौथा पटलका भी आयु जुदा जुदा कह्या था तथापि इहां चौथा पटलका आयुकों आदि विषैं स्थाप्या तातैं मेलि लीया सो गच्छमें एक घाटि कीएं नव सो नव पटलनि विषैं नव सागरका दशवां भाग वधै तौ एक पटल विषैं कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक कीएं नवका दशवां भागकौं नवका भाग दीएं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण चय आया सो इतना चय चौथा पटलका आयु विषैं मिलाएं पांचवां पटलका आयु दोय सागरका दशवां भाग हो है तामें चय मिलाएं छठा पटलका आयु तीन सागरका दशवां भाग हो है ऐसैं ही एक एक चय मिलाएं सप्तमादि पटलनिविषैं—च्यारि पांच छह सात आठ नव दश सागरनिका दशवां भाग प्रमाण आयु हो है । बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं जो उपरली पृथ्वीका अंत विषैं जो आयु कह्या सो तौ इहां आदि स्थापिए ता आदि तौ क्रमतैं एक तीन सात दश सत्रह बावीस सागर प्रमाण हैं । बहुरि जो विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषैं आयु सो अंत स्थापिए तातैं क्रमतैं अंत तीन सात दश सत्रह बावीस तेतीस सागर प्रमाण है । तहा अंतमेंस्यौं आदि घटाए दोय च्यारि तीन सात पाच ग्यारह सागर रहे । बहुरि इहा पटलनिका प्रमाण ग्यारह नव सात पाच तीन एक है । तिन विषैं इहा पूर्व पृथ्वीका अंत पटलका आयुकों आदि स्थापन कीया तातैं एक एक और मिलाए बारह दश आठ छह च्यारि दो प्रमाण गच्छ भया तामें एक घटाए क्रमतैं ग्यारह नव सात पाच तीन एक रहे सो ग्यारह न

…न पांच तीन एक पटलनि विषैं दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर प्रमाण आयु घटै तौ …क पटल विषैं कितना आयु घटै ऐसैं त्रैराशिक कीएं द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं दोय साग… ग्यारह्वां भाग अर च्यारि सागरका नवमां अर तीन सागरका सातवां भाग अर सात सागरका …वां भाग अर पांच सागरका तीसरा भाग अर ग्यारा सागर प्रमाण चय आया। सो एक चयकौ … पूर्व स्थिति विषैं जोडैं तिन तिन पटलनि विषैं उत्कृष्टायुका प्रमाण आवै है। तहां द्वितीय पृथ्वी …षै दोय सागर पूर्वस्थिति विषै दोय सागरका ग्यारह्वां भाग प्रमाण चय जोडैं प्रथम पटल विषैं …यु होइ याकै तीहि प्रमाण चय जोडैं तृतीय पटल विषैं आयु होइ ऐसैं चय करि बधता बधता …टल पटल प्रति आयु जानना। याही प्रकार तृतीयादि पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं तीन सात दश सत्रह …ईस सागरनि विषै अपना अपना चय जोडैं प्रथम पटल विषैं आयु होइ। बहुरि अपना अपना …तमादि पटलनिका आयु विषै क्रमतैं अपना अपना चयकौ बधाएं अपना अपना द्वितीयादि पट…नि विषै आयु होइ। बहुरि उपरि उपरिका पटल विषै जो उत्कृष्ट आयु कह्या सो एक समय …धिक होइ सो नीचला नीचला पटल विषैं जघन्य आयु हो है। ऐसा तहां प्रथम पटल विषैं आयु …कृष्ट विषैं हजार वर्ष तामैं एक समय अधिक भएं द्वितीय पटल विषैं जघन्य आयु हो है। ऐसैं ही …णचासवां पटल पर्यंत जानना ॥ २०० ॥

आगैं तिन नारकीनिकै पटल पटल प्रति शरीरकी उचाईका प्रमाण कहै हैं;—

पढमे सत्त ति छक्क उदयं धणुरयणिअंगुलं सेसो।
दुगुणकमं पढमिंदे रयणितियं जाण हाणिचयं ॥ २०१ ॥
प्रथमे सप्त त्रि षट् उदयः धनूरत्न्यंगुलानि शेषे।
द्विगुणक्रमं प्रथमेन्द्रके रत्नित्रयं जानीहि हानिचयम् ॥ २०१ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका अंत पटल विषैं शरीरका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल …माण है। बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीका अंत-अंतपटल विषैं शरीरका उत्सेध दूणा दूणा क्रमतैं पांचसै …नुष पर्यंत जानना। बहुरि प्रथम पृथ्वीका प्रथम इंद्रक विषैं रत्नित्रयं कहिए तीन हाथ उत्सेध है। …सै धरि करि है मुख तू हानि चय जानि। हानि चयका साधन कैसैं सो कहिए है। प्रथम पृथ्वी …विषैं प्रथम पटल विषै तीन हाथ उत्सेध सो तौ आदि जानना। अर अंतपटल विषैं सात धनुष …तीन हाथ छह अंगुल उत्सेध सो अंत जानना तहां अंतमैंस्यौं आदि तीन हाथ घटाएं सात धनुष …छह अंगुल रहे। बहुरि इहां पटल प्रमाण रूप गच्छ तेरह तामैं एक घटाएं बारह ताका भाग दीजिए …तहां सात धनुषका अठाईस हाथ हूवा ताकौं बाराका भाग दीएं दोय पाया सो दोय सौ हाथ बहुरि …अवशेष च्यारि हाथ रहे तिनके अंगुल कीएं छिनवै अंगुल भए अर छह अंगुल पूर्वे थे मिलकर …एक सौ दोय अंगुल भए तिनकौ बाराका भाग दीएं आठ अंगुल भए अर अवशेष छह अंगुलका …बारह्वां भागकौं छह करि अपवर्तन कीएं एक अंगुलका दूसरा भाग भया ऐसैं प्रथम पृथ्वी …विषैं हानि चय दोय हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण आया सो उपरि पटलका उत्सेध विषैं …अपनी अपनी देडादिक जातिका क्रम करि मिलाएं वा हस्तादिक कीएं नीचले पटल

विर्षै उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध विर्षै चय मिलाएं च्यारि हाथका एक धनुष कीएं द्वितीय पटल विर्षै एक धनुष एक हाथ साढा आठ अंगुल प्रमान उत्सेध हो है। बहुरि यामैं सोई चय मिलाएं तृतीय पटल विर्षै एक धनुष तीन हाथ सतरह अंगुल उत्सेध हो है। ऐसैंही सर्व पटलनि विर्षै जानना। बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विर्षै पूर्व पृथ्वीका अंत पटल विर्षै जो उत्सेध सो तौ आदि अर विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विर्षै उत्सेध सो अंत स्थापि अर आदिमैंस्यौं अंत घटाईए। बहुरि इहां पूर्व पृथ्वीका अंतपटलकौं आदि कह्या तातैं विवक्षित पृथ्वी विर्षै जितना पटलका प्रमाण तातैं एक अधिक गच्छ करि तामैं एक घटाएं विवक्षित पृथ्वी विर्षै जितना पटलनिका प्रमाण ताका ताकौं भाग दीएं हानिचयका प्रमाण आवै तैसैं द्वितीयादि पृथ्वी विर्षै आदि तौ सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल अर अंत पंद्रह धनुष दोय हाथ बारह अंगुल तहां आदिमैंस्यौं अंत घटाएं सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल रहे तिनकौं पटल प्रमाण ग्यारह ताका भाग दीएं धनुषादिकके हस्तादिक कीएं दोय हाथ वीस अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह्वां भाग प्रमाण हानि चय आया। ऐसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविर्षै भी हानि चय जानना। बहुरि ऊपरि पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध विर्षै अपना अपना चय मिलाएं अपने अपने प्रथम पटल विर्षै उत्सेध होइ। बहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिविर्षै क्रमतैं अपना अपना चय मिलाएं अपना अपना द्वितीयादि पटलनि विर्षै उत्सेध होइ। जैसैं प्रथम पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल तामैं दोय हाथ वीस अंगुल दोय अंगुलका ग्यारह्वां भाग मिलाएं द्वितीय पृथ्वीका प्रथम पटल विर्षै आठ धनुष दोय हाथ दोय अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह्वां भाग प्रमाण उत्सेध भया। यामैंस्यौं चय मिलाएं द्वितीय पटल विर्षै उत्सेध होइ ऐसैं अंतपटल पर्यंत जानना। बहुरि जैसैं द्वितीय पृथ्वी विर्षै विधान कह्या तैसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविर्षै उत्सेध जानना ॥ २०१ ॥

आगैं नारकीनिकै अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण कहै हैं;—

रयणप्पहपुढवीए चउरो कोसा य ओहिखेत्तं तु ।
तेण परं पडिपुढवी कोसद्धविवज्जियं होदि ॥ २०२ ॥

रत्नप्रभापृथिव्यां चत्वारः क्रोशा अवधिक्षेत्रं तु ।
ततः परं प्रतिपृथ्वि क्रोशार्धविवर्जितं भवति ॥ २०२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीके नारकीनिकै च्यारि कोस अवधिका क्षेत्र है अवधिज्ञान करि च्यारि कोस पर्यंत जानै। तातैं परै पृथ्वी पृथ्वी प्रति आधा आधा कोस घाटि है सो द्वितीयादि पृथ्वीनिविर्षै क्रमतैं साढा तीन तीन अढाई दोय डेढ एक कोस अवधिक्षेत्र जानना ॥ २०२ ॥

आगैं [illegible] ;—

[illegible] ।
[illegible] ॥ २०३ ॥

निरयनिःसृतः मनुष्यः कर्मसंज्ञिपर्याप्ते।
गर्भजे उत्पद्यते सप्तमनिःसृतस्तु तिरश्चि एव ॥ २०३ ॥

अर्थ—नरकतै निकस्या हुवा जीव मनुष्य तिर्यंच गतिविषैं कर्मभूमि संज्ञी पर्याप्त गर्भज विषैं ही उपजै। भोगभूमि आदिकी लब्धिपर्याप्तक सम्मूर्छनविषैं न उपजै। बहुरि सप्तम पृथ्वीका निकस्या जीव तैसा कर्मभूमिज संज्ञी पर्याप्तक गर्भज तिर्यंच ही विषैं उपजै मनुष्य भी न होइ॥२०३॥

आगै मनुष्य तिर्यंच इत्यादि नियम उपजनेका कह्या तहां यहां सर्वत्र ही उपजै इसी आशंका होतें और कहै हैं;—

णिरयचरो णत्थि हरी बलचक्की तुरियपहुदिणिस्सरिदो।
तित्थचरमंगसंजद मिस्सतियं णत्थि णियमेण ॥ २०४ ॥

निरयचरो नास्ति हरिः बलचक्रिणौ तुरीयप्रभृतिनिःसृतः।
तीर्थचरमांगसंयताः मिश्रत्रयं नास्ति नियमेन ॥ २०४ ॥

अर्थ—निरयचरः कहिए नरकतै निकस्या जीव सो नारायण बलभद्र चक्रवर्ती न होइ। बहुरि चौथी आदि पृथ्वीतै निकस्या तीर्थंकर न होइ। पांचमी आदि पृथ्वीतै निकस्या चरम शरीरी न होइ। छठी आदि पृथ्वीतै निकस्या सकल संयमी न होइ सातवी पृथ्वीतैं निकस्या मिश्रत्रय कहिए मिश्र वा असंयत वा देशसंयत न होइ नियम करि। इहां असंयतपना निषेध्या तातैं सासादनका भी अभाव जानना ॥ २०४ ॥

आगै नरकको जाता जीवनिका पृथ्वी प्रति नियम कहै हैं;—

असण्णिसरिसपविहंगमफणिसिंहित्थीण मच्छमणुवाणं।
पढमादिसु उप्पत्ती अडवारादो दु दोण्णिवारोत्ति ॥ २०५ ॥

असंज्ञिसरीसृपविहंगमफणिसिंहस्त्रीणां मत्स्यमनुष्याणाम्।
प्रथमादिषु उत्पत्तिः अष्टवारतस्तु द्विवार इति ॥ २०५ ॥

अर्थ—असंज्ञी कहिए असंज्ञी पंचेंद्री अर सरीसृप कहिए कृकलास गोधेरे आदि जीव अर विहंगम कहिए भेरंड आदि पंखी अर फणी कहिए सर्प अर सिंह कहिए नाहर अर स्त्री कहिए मनुष्यणी अर मत्स्य मनुष्य कहिए मोछला वा मनुष्य इनकैं प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं अनुक्रमतै निरंतर उत्पत्ति आठ वारतै लगाय दोय वार पर्यंत जाननी। तहां असंज्ञी प्रथम नरकि जाय तहांस्यों निकसि संज्ञी होइ मरिकरि बहुरि इहां ही असंज्ञी होइ मरिकरि प्रथम नरक जाय तब एक वार होय। ऐसै असंज्ञी उत्कृष्ट आठ वार प्रथम नरकि जाय। नरकका निकस्या असंज्ञी न होइ तातैं बीचि एक संज्ञी पर्यायका एक अंतर जानना। बहुरि सरीसृपादिविषैं एक अंतर न ग्रहण करना। सरीसृप दूसरे नरकि जाय तहांस्यों निकसि सरीसृप होइ फेरि दूसरे नरकि जाय ऐसैं निरंतर सातवार जाइ। ऐसे ही निरंतर विहंगम तीसरे नरकि छह वार। फणी चौथे नरकि पांच वार। सिंह पांचवें नरकि च्यारि वार स्त्री छठे नरकि तीन वार निरंतर उपजै। बहुरि मत्स्य मनुष्य एक अंतर करि सातवें नरकि दोय वार उपजै तहां मत्स्य सातवें नरकि जाय तहांस्यौ निकसि

गर्भज तिर्यंच होइ मरि फरि फेरि मत्स्य होइ सातवें नरकि जाय। इहां नरकका निकस्या मत्स्य
होइ। मत्स्य सम्मूर्छन हैं तातैं एक अंतर कह्या। बहुरि ऐसैं ही मनुष्य विषैं एक अंतर जा
जातैं सातवां नरकका निकस्या मनुष्य न होइ तातैं बीचिमैं एक अंतर कह्या। ऐसैं दोय बार
जना जानना। इहां जीवनिकै उपजनेका भी नियम जानना। असंज्ञी प्रथम पृथ्वीविषैं ही उ
द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं न उपजै। सरीसृप दूसरी पृथ्वी पर्यंत ही उपजै तृतीयादि पृथ्वी वि
उपजै ऐसैं ही विहंगादिकका नियम जाननां। बहुरि उत्कृष्ट जेतीवार उपजै सो नियम कर
असंज्ञी आठ वार ही निरंतर नरक जाय नवमीं वार न जाय इत्यादि नियम जाननां ॥ २०५ ॥

इहां असंज्ञी आदिककैं एक वार अंतर होते भी निरंतर ही कहिए है;—

चउवीसमुहुत्तं पुण सत्ताहं पक्खमेकमासं च।
दुगचदुछम्मासं च य जम्मणमरणंतरं णिरये ॥ २०६ ॥

चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः पुनः सप्ताहानि पक्षः एकमासश्च।
द्विकचतुःषण्मासाश्च च जननमरणान्तरं निरये ॥ २०६ ॥

अर्थ—प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं चौबीस मुहूर्त अर सात दिन अर एक पक्ष अर
मास अर दोय मास अर च्यारि मास अर छह मास जन्म अर मरण विषैं अंतर जाननां। भावार्थ
प्रथम पृथ्वीविषैं कोई जीव न उपजै तौ उत्कृष्टपनैं चौईस मुहूर्त पर्यंत न उपजै न मरै चौईस
पीछैं कोई उपजै ही उपजै वा कोई मरै ही मरै ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीविषैं जाननां ॥ २०६ ॥

आगैं तिन नारकीनिकै दुःखका आधिक्य कहैं हैं;—

अच्छिणिमीलणमेत्तं णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं।
णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं ॥ २०७ ॥

अक्षिनिमीलनमात्रं नास्ति सुखं दुःखमेव अनुबद्धम्।
निरये नैरयिकाणां अहर्निशं पच्यमानानाम् ॥ २०७ ॥

अर्थ—नेत्रका टिमकारनां मात्र भी सुख नाहीं है दुःख ही निरंतर संबंधरूप पर्या
नरक विषैं नारकी जीवनिकैं। कैसे हैं नारकी। अहर्निशं कहिए निरंतर दुःखअग्निकरि पच्यमान
भावार्थ—मिथ्यात्व हिंसादि रौद्रध्यान बहुत आरंभ परिग्रह इत्यादि पापनिकरि जीव नरकि
तहां ऐसे दुःख पावै हैं। तातैं मिथ्यात्वादि पापनिका त्याग ही करनां योग्य है ॥ २०७ ॥

॥ इति नरकके स्वरूपका वर्णन सम्पूर्ण भया ॥

इति श्रीनेमिचन्द्राचार्यविरचिते त्रिलोकसारे लोकसामान्याधिकारः ॥ १ ॥

भवनाधिकार ॥ २ ॥

अथ टीकका सामान्य वर्णन करि 'भवणव्वेंतर' इत्यादि पूर्वोक्त गाथासूत्र करि पंच अधिकार सूचन कीए तिन विर्षे तैसें ही अनुक्रमकरि भवनाधिकारकों आरंभ करता संता तिन भवननिका आधारभूत जो रत्नप्रभा पृथ्वी बहुरि तीहि रत्नप्रभा पृथ्वीकी सहचारिणी जे शर्करा प्रभा आदि पृथ्वी बहुरि तिन पृथ्वीनिविर्षे प्राप्त जे नरकनिके पटल बहुरि तिन पटलनि प्राप्त जे नारकी तिनका आयु आदिक इन सबनिकों प्रसंग पाइ व्याख्यान करी विवक्षित प्रथम भवनाधिकार ताकों कहनेकी है इच्छा जाकै ऐसा आचार्य सो तीहि भवनाधिकारकी आदि विर्षे भवनलोक संबंधी जे चैत्यालय तिनकों वंदना करता संता ऐसा मंगल सूत्र कहै है;—

भवणेसु सत्तकोडी बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा।
भवणामरिंदमहिया भवणसमा ताणि वंदामि ॥ २०८ ॥

भवनेषु सप्तकोट्यः द्वासप्ततिलक्षाणि भवंति जिनगेहानि।
भवनामरेंद्रमहितानि भवनसमानि तानि वंदे ॥ २०८ ॥

अर्थ—भवननिविर्षे सात कोडि बहत्तरि लाख जिन मंदिर हैं भवनवासी देव या तिनके इंद्रनिकरि पूजनीक हैं। बहुरि भवनवासी देवनिके जे ते भवन हैं तिनहीके समान संख्याकों धरै हैं। जातै एक एक भवनविर्षे एक एक चैत्यालय है। तिन चैत्यालयनिकों मैं वंदौं हौं ॥ २०८॥

आगै भवनवासी देवनिका कुलभेद आदि तीन गाथाकरि कहै हैं;—

असुरा णागसुवण्णा दीवोदहिविज्जुथणिददिसअग्गी।
वादकुमारा पढमे चमरो वइरोइणो इंदी ॥ २०९ ॥

असुरो नागसुपर्णो द्वीपोदधिविद्युत्स्तनितदिगग्नयः।
वातकुमारः प्रथमे चमरो वैरोचन इंद्रः ॥ २०९ ॥

अर्थ—असुरकुमार १ नागकुमार १ सुपर्णकुमार १ द्वीपकुमार १ उदधिकुमार १ विद्युत्कुमार १ स्तनितकुमार १ दिक्कुमार १ अग्निकुमार १ वातकुमार १ ऐसैं भवनवासी देवनिके दश कुल हैं। तिनि विर्षे पहले असुरकुमार कुलविर्षे चमर अर वैरोचन ए दोय इंद्र हैं ॥ २०९ ॥

भूदाणंदो धरणाणंदो वेणू य वेणुधारी य।
पुण्णवसिट्ठ जलप्पह जलकंतो घोसमहघोसो ॥ २१० ॥

भूतानंदो धरणानंदः वेणुश्च वेणुधारी च।
पूर्णवशिष्ठौ जलप्रभः जलकांतः घोषमहाघोषौ ॥ २१० ॥

अर्थ—नागकुमार कुलविषैं भूतानंद धरणानंद ए दोय इंद्र हैं। सुपर्णकुमार कुल विषैं वेणु अर वेणु अर वेणुधारी दोय इंद्र हैं। द्वीपकुमार कुल विषैं पूर्ण वशिष्ट ए दोय इंद्र हैं। उदधिकुमार कुल विषैं जलप्रभ जलकांत ए दोय इंद्र हैं। विद्युत्कुमार कुल विषैं घोष महाघोष ए दोय इंद्र हैं ॥ २१० ॥

हरिसेणो हरिकंतो अमिदगदी अमिदवाहणग्गिसिही ।
अग्गीवाहणणामा वेलंवपभंजणा सेसे ॥ २११ ॥ जुम्मं ।

हरिषेणः हरिकांतः अमितगतिः अमितवाहनः अग्निशिखी ।
अग्निवाहननामा वेलंबप्रभंजनौ शेषे ॥ २११ ॥ युग्मं ।

अर्थ—स्तनितकुमार कुल विषैं हरिषेण हरिकांत ए दोय इंद्र हैं। दिक्कुमार कुल विषैं अमितगति अमितवाहन ए दोय इंद्र हैं। अग्निकुमार कुल विषैं अग्निशिखी अग्निवाहन नाम ए दोय इंद्र हैं। वातकुमार कुलविषैं वेलंब प्रभंजन ए दोए इंद्र हैं। ऐसैं शेषनागादि कुल विषैं इंद्र जानने ॥ २११ ॥

आगैं तिनकै परस्पर ईर्षाका स्थान कहैं हैं;—

चमरो सोहम्मेण य भूदाणंदो य वेणुणा तेसिं ।
विदिया विदियेहिं समं ईसंति सहावदो णियमा ॥ २१२ ॥

चमरः सौधर्मेण च भूतानन्दश्च वेणुना तेषां ।
द्वितीया द्वितीयैः समं ईर्ष्यंति स्वभावतो नियमात् ॥ २१२ ॥

अर्थ—चमर इंद्र तौ सौधर्म इंद्र सहित अर भूतानंद इंद्र वेणु इंद्र सहित अर तिनके द्वितीया जे दूसरे वैरोचन और धरणानंद ते द्वितीयैः समं कहिए दूसरे ईशान इंद्र अर वेणुधारी इंद्र तिन सहित ईर्ष्यन्ति कहिए ईर्षा करैं हैं। स्वभाव ही तैं कारण विना ही नियम करि इनकै ऐसैं स्पर्द्धा हो है ॥ २१२ ॥

आगैं तिन असुरादिकनिके चिन्ह कहैं हैं;—

चूडामणिफणिगरुडं गजमयरं वड्ढमाणगं वज्जं ।
हरिकलसस्सं चिंधं मउले चेत्तमदुमाह धया ॥ २१३ ॥

चूडामणिफणिगरुडं गजमकरं वर्धमानकं वज्रं ।
हरिकलशाश्वं चिह्नं मुकुटे चैत्यद्रुमा अथ ध्वजाः ॥ २१३ ॥

अर्थ—असुर कुमारादिकनिकैं अनुक्रमतैं चूडामणि रत्न अर सर्प अर गरुड अर हाथी अर [illegible] अर साथिया अर वज्र अर सिंह कलश अर घोडा मुकुट विषैं चिन्ह जानना। मुकुट विषैं [illegible] है सो तिनका चिन्ह है। अथवा जुदी जुदी जातिके चैत्यवृक्ष बहुरि ध्वजा [illegible] [illegible] चिन्ह हैं ॥ २१३ ॥

आगैं तिनके चैत्यवृक्षनिके भेदनिकौं कहैं हैं;—

अस्सत्थसत्तसामलिजंबूवेतसकदंबकापियंगू।
सिरिसं पलासरायदुमा य असुरादिचेत्ततरू॥ २१४॥
अश्वत्थसप्तच्छदशाल्मलिजंबूवेतसकदंबकप्रियंगवः।
शिरीषः पलाशराजद्रुमौ च असुरादिचैत्यतरवः॥ २१४॥

अर्थ—अश्वत्थ वृक्ष अर सप्तपर्ण वृक्ष अर शाल्मली वृक्ष अर जंबू वृक्ष अर वेतस वृक्ष अर कदंब वृक्ष अर प्रयंगु वृक्ष अर सरिसौं वृक्ष अर पलाश वृक्ष अर राजद्रुम कहिए किरमाला वृक्ष अनुक्रमतें असुरकुमारादिकनिके चैत्यवृक्ष हैं॥ २१४॥

आगें चैत्यवृक्षनिके सार्थिकपनांकों दृढ करें हैं;—

चेत्ततरूणं मूले पत्तेयं पडिदिसम्हि पंचेव।
पलियंकठिया पडिमा सुरच्चिया ताणि वंदामि॥ २१५॥
चैत्यतरूणां मूले प्रत्येकं प्रतिदिशं पंचैव।
पर्यंकस्थिताः प्रतिमाः सुरार्चिताः ताः वंदे॥ २१५॥

अर्थ—चैत्यवृक्षनिके मूल विषैं प्रत्येक प्रतिदिशा विषैं पांच पांच प्रतिमा पर्यंक आसन करि स्थित देवनिकरि पूजित हैं। तिन प्रतिमानिकौं वंदों हों। भावार्थ। एक एक चैत्यवृक्ष नीचें एक एक दिशाविषैं पांच पांच जिनबिंब पंक्ति करि विराजमान हैं। तातैं वृक्षनिकों चैत्यवृक्ष कहिए हैं॥२१५॥

आगैं तिन प्रतिमानिके आगें तिष्ठते जु मानस्तंभ तिनका स्वरूप कहैं हैं;—

पडिदिसयं णियसीसे सगसगपडिमाजुदा विराजंति।
तुंगा माणत्थंभा रयणमया पडिदिसं पंच॥ २१६॥
प्रतिदिशं निजशीर्षे सप्तसप्तप्रतिमायुता विराजंते।
तुंगा मानस्तंभा रत्नमया प्रतिदिशं पंच॥ २१६॥

अर्थ—दिशा दिशा प्रति अपने उपरिम भागविषैं सात सात प्रतिमा संयुक्त उत्तुंग रत्नमई मानस्तंभ दिशादिशा प्रति पांच पांच विराजें हैं॥ भावार्थ। एक एक प्रतिमाके आगें एक एक मानस्तंभ हैं मान दूरि करनेकों समर्थ ऊंचा थांभा है। सो चैत्यवृक्षकी एक एक दिशा प्रति पांच पांच मानस्तंभ भए। बहुरि तिन मानस्तंभनिके उपरि एक एक दिशा प्रति सात सात जिनबिंब विराजें हैं॥ २१६॥

आगैं भवनवासी इंद्रनिकें भवननिकी संख्या जणावना सूत्र कहैं हैं;—

चोत्तीसं चउदालं अडतीसं छण्णुदि ताल पण्णासं।
चउचउविहीण ताणि य इंदाणं भवणलक्खाणि॥ २१७॥
चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशदष्टात्रिंशत् षण्णवतिः चत्वारिंशत् पंचाशत्।
चतुश्चतुर्विहीनानि तानि च इंद्राणां भवनलक्षाणि॥ २१७॥

अर्थ—चौंतीस अर चवालीस अर अठतीस अर छ्याणवै अर चालीस अर पचास अर इन्हें इंद्रनि प्रति च्यारि च्यारि घाटि ऐसें इंद्रनिके भवननिके लक्ष जानने। भावार्थ। एक एक कुल

विषैं दोय दोय इंद्र कहे थे तहां दोऊनि विषैं पहलैं जाका नाम कह्या सो दक्षिणेंद्र है अर पीछैं जाका नाम कह्या सो उत्तरेंद्र है । दक्षिण दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो दक्षिणेंद्र जाननां । अर उत्तर दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो उत्तरेंद्र जाननां । तहां असुर कुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चौतीस लाख भवन हैं । उत्तरेंद्रकैं तीस लाख हैं मिलि करि चौंसठि लाख भए । बहुरि नागकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चवालीस लाख हैं उत्तरेंद्रके चालीस लाख हैं मिलकर चौरासी लाख भवन भए । बहुरि सुपर्णकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं अटतीस लाख हैं अर उत्तरेंद्रकैं चौतीस लाख हैं मिलिकरि बहत्तरि लाख भवन भए । द्वीप कुमारादि छह कुलनि विषैं एक एक कुल विषैं दक्षिणेंद्रके चालीस लाख हैं उत्तरेंद्रकैं छत्तीस लाख हैं मिलिकरि छिहत्तरि लाख भवन भए । बहुरि वातकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं पंचास लाख हैं उत्तरेंद्रकैं छियालीस लाख हैं मिलिकरि छिनवै लाख भवन भए ऐसैं दशौं कुलके सर्व भवन सात कोडि बहत्तरि लाख जाननें ॥ २१७ ॥

आगैं तिन भवननिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

ससुगंधपुप्फसोहियरयणधरा रयणभित्ति णिच्चपहा ।
सव्विंदियसुहदाइहिं सिरिखंडादिहिं चिदा भवणा ॥ २१८ ॥

ससुगंधपुष्पशोभितरत्नधरा रत्नभित्तयः नित्यप्रभाः ।
सर्वेंद्रियसुखदायिभिः श्रीखंडादिभिश्चिता भवनाः ॥ २१८ ॥

अर्थ—सुगंध फूलनिकरि संयुक्त सोभायमान रत्नमयी जिनकी भूमि हैं । बहुरि रत्नमई ही जिनकी भीति हैं नित्य प्रकाश संयुक्त हैं सब इंद्रियनिकौं सुखदायक जे चंदनादि वस्तु तिनकरि सिंचित हैं ऐसे भवनवासी देवनिके भवन हैं ॥ २१८ ॥

आगैं तिन भवननिविषैं जे देव हैं तिनका ऐश्वर्य कहैं हैं;—

अट्ठगुणिड्ढिविसिट्ठा णाणामणिभूसणेही दित्तंगा ।
भुंजंति भोगमिट्ठं सगपुव्वतवेण तत्थ सुरा ॥ २१९ ॥

अष्टगुणर्द्धिविशिष्टाः नानामणिभूषणैः दीप्तांगाः ।
भुंजंति भोगमिष्टं स्वकपूर्वतपसा तत्र सुराः ॥ २१९ ॥

अर्थ—तहां जे देव हैं ते अणिमा महिमा आदि आठ गुण ऋद्धि करि विशिष्ट हैं बहुरि नाना प्रकार मणिका आभूषणनि करि प्रकाशमान है अंग जिनका ऐसैं हैं । ते अपनां पूर्व कीया तपका फल करि इष्टभोगकौं भोगवैं हैं ॥ २१९ ॥

आगैं ते भवन भूमिगृहकी उपमा धरैं हैं जैसैं इहा पृथ्वीविषैं मंदिर बनाईए ताका नाम प्रवृत्ति विषैं तहखाना कहिए है । तैसैं खरभाग पंकभागरूप रत्नप्रभा पृथ्वीविषैं भवन जानने । इहां प्रश्न । जो नरक बिल भी ऐसैं ही पृथ्वी विषैं कहे थे तहां बिल संज्ञा भई इहां भवन संज्ञा भई सो कारन कहा । ताका समाधान । जैसे इहां पृथ्वी विषैं निर्यचादिक पापी जीवनिके स्थान तिनकौं बिल कहिए हैं । अर पुन्यवान मनुष्यनिके रहनेके स्थान तिनका भूमिगृह कहिए हैं । तैसैं नारकी

पापी जीवनिके गमनके स्थानकनिकौ बिल कहे अर पुन्यवान देवनिके रहनेके स्थानकनिकौं भवन कहे। बहुरि प्रश्न। जो नरक बिलनिका वर्णन विषै तौ भूमिगृहका दृष्टांत काहेकौं दीया बिलनिहीका दृष्टांत देना था। ताका समाधान। जो भूमिगृहका दृष्टांत करि पटलनिका वा इंद्रकादि बिलनिका स्वरूप नीकै जानिए है तातैं भूमिगृहका दृष्टांत दिया था।

ऐसै भूमिगृहकी उपमा धरै जु भवन तिनका व्यासादिक कहै हैं;—

जोयणसंखासंखाकोडी तब्बित्थरं तु चउरस्सा।
तिसयं बहलं मज्झं पडि सयतुंगेक्कूडं च ॥ २२० ॥
योजनसंख्यासंख्यकोट्यः तद्विस्तारस्तु चतुरस्राः।
त्रिशतं बाहल्यं मध्यं प्रति शततुंगैककूटश्च ॥ २२० ॥

अर्थ—जघन्य तौ संख्यात कोडि योजन अर उत्कृष्ट असंख्यात कोडि योजन प्रमाण तिन भवननिका विस्तार है। चौडाई वा लंबाईका इतना प्रमाण है। बहुरि ते भवन चौकौर हैं। बहुरि तिनका तीनसै योजन बाहुल्य है। भूमितैं छाति पर्यंत इतने ऊंचे हैं। बहुरि एक एक भवन प्रति मध्यविषै सौ योजन ऊंचा एक पर्वत है। ताके उपरि चैत्यालय हैं ॥ २२० ॥

आगै तिन भवननिका स्थानकनिकौं दोय गाथानि करि कहै हैं;—

वेंतर अप्पमहद्धियमज्झिमभवणामराण भवणाणि।
भूमीदोधो इगिदुगबादालसहस्सइगिलक्खे ॥ २२१ ॥
व्यंतराणां अल्पमहर्धिकमध्यमभवनामराणां भवनानि।
भूमितोधः एकद्विकद्वाचत्वारिंशत्सहस्रएकलक्षाणि ॥ २२१ ॥

अर्थ—चित्रा भूमितैं लगाय नीचे नीचें एक हजार योजन जाइ करि तौ व्यंतरानिके आवास हैं। बहुरि दोय हजार योजन जाय अल्प ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि वियालीस हजार योजन जाइ महाऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि एक लक्ष योजन जाइ मध्यम ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं ॥ २२१ ॥

रयणप्पहपंकड्ढे भागे असुराण होंति आवासा।
भीम्मेसु रक्खसाणं अवसेसाणं खरे भागे ॥ २२२ ॥
रत्नप्रभापंकाढ्ये भागे असुराणां भवंति आवासाः।
भौमेषु राक्षसानां अवशेषाणां खरे भागे ॥ २२२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभाका पंकभाग विषैं असुरकुमारनिके भवन हैं। बहुरि व्यंतरनि विषैं राक्षसनिके तहां ही आवास है। बहुरि अवशेष नागकुमारादि भवनवासीनिके भवन वा राक्षस बिना सात जातिके व्यंतरनिके आवास खरभागविषैं पाईए हैं ॥ २२२ ॥

आगैं देवनिके इंद्रादिक भेद कहै हैं;—

इंदपडिंददिगिंदा तेत्तीससुरा समाणतणुरक्खा।
परिसत्तयआणीया पइण्णगभियोगकिब्भिसिया ॥ २२३ ॥

इंद्रप्रतींद्रदिगींद्राः त्रयस्त्रिंशत्सुराः सामानिकतनुरक्षकौ ।
परिषत्त्रयानीकौ प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाः ॥ २२३ ॥

अर्थ—इंद्र १ प्रतींद्र १ दिगींद्र कहिए लोकपाल १ त्रायस्त्रिंशद्देव १ सामानिक १ तनुरक्षक १ तीन प्रकार पारिषत् १ अनीक १ प्रकीर्णक १ आभियोग्य १ किल्विषिक १ ऐसैं भेद जाननें ॥ २२३ ॥

आगैं इन इंद्रादि पदवीनिका दृष्टांत कहैं हैं;—

रायजुवतंतराए पुत्तकलत्तंगरक्खवरमज्झे ।
अवरे तंडे सेणापुरपरिजणगायणेहि समा ॥ २२४ ॥

राजयुवतंत्रराजैः पुत्रकलत्रांगरक्षवरमध्येन ।
अवरेण तंडेण सेनापुरपरिजनगायकैः समाः ॥ २२४ ॥

अर्थ—जैसैं इहां राजा तैसैं इंद्र हैं। बहुरि जैसैं युवराजा तैसैं प्रतींद्र हैं। बहुरि जैसैं तंत्रादि राजा कहिए सेनापति तैसैं लोकपाल हैं। बहुरि जैसैं राजाका पुत्र तैसैं तेतीस देव हो हैं ते त्रायस्त्रिंशत्क हैं। बहुरि जैसैं राजाकैं कलत्र तैसैं इंद्रकीसी समानताकों धरैं सामानिक हैं। बहुरि जैसैं राजाके अंगरक्षक तैसैं तनुरक्षक हैं। बहुरि जैसैं राजाके सभाविषैं तिष्ठने योग्य होहिं तैसैं पारिषत् हैं। ते तीन प्रकार—तहां जैसैं उत्कृष्ट मांहिली सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसैं अंतः पारिषद जानने। बहुरि जैसैं मध्य बीचिकी सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसैं मध्य पारिषद जाननें बहुरि जैसैं जघन्य बाह्य सभाविषैं तिष्ठने योग्य तैसैं बाह्य पारिषद जाननें। ऐसैं तंडसेन कहिए तीन प्रकार सभा करि समान जाननें। बहुरि जैसैं राजाकैं हस्ती आदि सेना ऐसैं अनीक हैं अनीक जातिके देव ही हस्ती आदि आकाररूप अपने नियोगतैं हो हैं। बहुरि जैसैं पुरजन व्यापारी तैसैं प्रकीर्णक हैं। बहुरि जैसैं परिजन दास आदि तैसैं आभियोग्य हैं। बहुरि जैसैं गायक गावनें आदि क्रियातैं आजीविकाके करन हारे तैसैं किल्विषक हैं। ऐसैं देवनिके भेद जाननें ॥ २२४ ॥

आगैं च्यारि प्रकार देवनि विषैं इंद्रादिक भेदानिके संभवनेका विधान कहैं हैं;—

वेंतरजोयिससियाणं तेत्तीससुरा ण लोयपाला य ।
भवणे कप्पे सव्वे हवंति अहमिंदया तत्तो ॥ २२५ ॥

व्यंतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न लोकपालाः च ।
भवने कल्पे सर्वे भवंति अहमिंद्रकाः ततः ॥ २२५ ॥

अर्थ—व्यंतर अर ज्योतिषी इनकैं तौ त्रायस्त्रिंशत् देव बहुरि लोकपाल ए दोय भेद नाहीं हैं। बहुरि भवनवासी अर स्वर्गवासीनि विषैं सर्व पूर्वोक्त भेद हैं। बहुरि तातैं परैं स्वर्गनिके उपरि अहमिंद्र हैं ते सर्व ही समान हैं। हीनाधिकपना तहां नाहीं है ॥ २२५ ॥

आगैं भवनवासीनिविषै इंद्रादिक पारिषत् तीनप्रकार पर्यंत देवनिकी संख्या तीन गाथानि-करि कहै हैं,—

इंदसमा हु पडिंदा सोमो यम वरुण तह कुवेरा य।
पुव्वादिलोयवाला तेत्तीससुरा हु तेत्तीसा ॥ २२६ ॥
इंद्रसमाः खलु प्रतींद्राः सोमो यमो वरुणस्तथा कुवेरश्च।
पूर्वादिलोकपालाः त्रयस्त्रिंशत्सुराः हि त्रायस्त्रिंशत् ॥ २२६ ॥

अर्थ—इंद्रके समान प्रतींद्र हैं। एक इंद्र एक प्रतींद्र जानना। बहुरि पूर्वादि दिशानिके च्यारि लोकपाल हैं। सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ तिनके नाम हैं। बहुरि त्रायस्त्रिंशत् देव तेतीस हैं ॥ २२६ ॥

चमरतिये सामाणियतणुरक्खाणं पमाणमणुकमसो।
अडसोलकदिसहस्सा चउसोलसहस्सहीणकमा ॥ २२७ ॥
चमरत्रिके सामानिकतनुरक्षाणां प्रमाणमनुक्रमशः।
अष्टषोडशकृतिसहस्राणि चतुःषोडशसहस्रहीनक्रमाणि ॥ २२७ ॥

अर्थ—चमर आदि तीन इंद्रनिविषैं सामानिक अर तनुरक्षक अनुक्रमतैं आठ अर सोलहका वर्ग प्रमाण हजार बहुरि च्यारि हजार अर सोलह हजार घटता क्रमतैं जानने। भावार्थ-चमरेंद्रके सामानिक देव तौ चौसठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख छप्पन हजार हैं। बहुरि वैरोचन इंद्रकै सामानिक साठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख चालीस हजार हैं। बहुरि भूतानंद इंद्रकै सामानिक छप्पन हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख चौईस हजार हैं ॥ २२७ ॥

पण्णसहस्स विलक्खा सेसे तट्ठाण परिसमादिल्लि।
अडछव्वीसं छचउसहस्स दुसहस्सवड्ढिकमा ॥ २२८ ॥
पंचाशत्सहस्राणि द्विलक्षे शेषे स्वस्थाने परिषदादिमा।
अष्टषड्विंश षट्चतुःसहस्राणि द्विसहस्रवृद्धिक्रमाः ॥ २२८ ॥

अर्थ—शेष जे अवशेष नागकुमारादिकके सत्रह इंद्र तिनविषैं सामानिक पैंचास हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख हैं। बहुरि तिनही स्थानकनिविषैं परिषत् कहिए है। आदिकी अंतःपरिषत् चमरेंद्रकै अठाईस हजार, वैरोचनकै छव्बीस हजार, भूतानंदकै छह हजार, अवशेष इंद्रनिकै च्यारि हजार हैं। बहुरि अंतः परिषत्का प्रमाणतैं मध्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जानने। बहुरि मध्य परिषत्तैं बाह्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जानने ॥ २२८ ॥

आगैं तीनौं परिषत्का विशेष नाम कहै हैं;—

पढमा परिसा समिदा विदिया चंदोत्ति णामदो होदि।
तदिया जदुअहिधाणा एवं सव्वेसु देवेसु ॥ २२९ ॥
प्रथमा परिषत् समित् द्वितीया चंद्रा इति नामतो भवति।
तृतीया जत्वभिधाना एवं सर्वेषु देवेषु ॥ २२९ ॥

अर्थ—प्रथम परिषत् समित् ऐसे नाम धरै है। दूसरी चंद्रा ऐसे नामनैं युक्त है। तीसरी जतु ऐसे नाम युक्त है। ऐसैं ही सर्व देवनिविषैं सभानिके नाम जानने ॥ २२९ ॥

अब आनीकके भेद अर तिनकी संख्या कहै हैं;—

सत्तेव य आणीया पत्तयं सत्तसत्तकक्खजुदा ।
पढमं ससमाणसमं तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ २३० ॥

सप्तैव च आनीकाः प्रत्येकं सप्तसप्तकक्षयुताः ।
प्रथमं स्वसामानिकसमं तद्द्विगुणं चरमकक्षं इति ॥ २३० ॥

अर्थ—सात ही आनीकके भेद हैं. तहां एक एक भेद विर्षे सात सात कक्ष कहिए फौज हैं। तहां प्रथम आनीकका कक्षविर्षे प्रमाण अपनें अपनें सामानिक देवानिकै समान है। तातैं दूणां दूणां प्रमाण अंतका कक्षविर्षे पर्यंत जाननां। तहां चमरेंद्रकै भैंसानिकी प्रथम फौजविर्षे चौसठी हजार भैंसे हैं। तातैं दूणें दूसरी फौजविर्षे भैसे हैं। ऐसें सातईं फौज पर्यंत दूणें दूणें जाननें। बहुरि ऐसें ही इतनें इतनें ही घोटकादिक जाननें। याही प्रकार औरनिकी यथा संभव प्रमाण जांनि लेना ॥ २३० ॥

आगैं गुणकाररूप उत्तरका अनुक्रम करि भया जो सातौं आनीकका प्रमाण ताके स्थाननिकौं जहां स्थान स्थान प्रति गुणकार होइ ताके जोड देनेंका कारणसूत्र कहै हैं;—

पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहीणे ।
रूऊणगुणेण हिए मुहेण गुणियम्मि गुणगणियं ॥ २३१ ॥

पदमात्रान् गुणकारान् अन्योन्यं गुणयित्वा रूपपरीहिणे ।
रूपोनगुणेन हृते मुखेन गुणिते गुणगणितम् ॥ २३१ ॥

अर्थ—स्थानकनिका प्रमाणरूप जो गच्छ सो पद कहिए अर स्थान स्थान प्रति जितनेका गुणकार सो गुणकार कहिए सो पदका प्रमाणके समान गुणकार मांडि तिनकौं परस्पर गुणिए बहुरि जो प्रमाण होइ तामें एक घटाईए बहुरि ताकौं एक घाटि गुणकारका भाग दीजिए। बहुरि लब्ध प्रमाणकौं मुख जो आदि विर्षे प्रमाण तीहि करि गुणिए। ऐसैं करतैं गुण संकलन हो है। सो इहां सात कक्ष हैं तातैं पदका प्रमाण सात है। अर इहां दूणां दूणां क्रम कह्या तातैं गुणकार दोय है। सो सात जायगां दूवा मांडि ।२।२।२।२।२।२।२। परस्पर गुणें एकसौ अठाईस होइ यामें एक घटाएं एकसौ सताईस होइ। बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं एकसौ सताईस इनकौं प्रथम कक्षाका प्रमाण रूप मुख चौसठि हजार करि गुणें इक्यासी लाख अठाईस हजार एक जातिकी सेना भई याकौं सात करि गुणें सातौं जातिके समस्त आनीक देवनिका प्रमाण पंच कोडि अडसठि लाख छिनवै हजार चमरेंद्रकै जानना। ऐसैं ही वैरोचन आदिकै भी यथासंभव प्रमाण जानि लेना। बहुरि इहां पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि करण सूत्र कैसैं बन्या ताका विशेषरूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जानना ॥ २३१ ॥

अब आनीकके भेदका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

असुरस्स महिसतुरगरथेभपदाती कमेण गंधव्वा ।
णिच्चाणीय महत्तर महत्तरी छक्क एक्का य ॥ २३२ ॥

असुरस्य महिषतुरगरथेभपदातयः क्रमेण गंधर्वः।

नृत्यानीकं महत्तरा महत्तरी षट् एका च ॥ २३२ ॥

अर्थ—असुरकुमारकै भैंसा १ घोडा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नृत्यकी १ ऐसे सात प्रकार सेना हैं। तहां पहली छह सेना विषैं महत्तर हैं एक नृत्यकी सेना विषैं महत्तरी है भावार्थ ॥ भैंसा आदिक छह जातिकी सेना विषैं तौ प्रधान देव हैं। अर नृत्यकी सेना विषैं प्रधान देवांगना हैं॥ २३२ ॥

णावा गरुडिभमयरं करभं खग्गी मिगारिसिविगस्सं।

पढमाणीयं सेसे सेसाणीया हु पुव्वं व ॥ २३३ ॥

नौर्गरुडेभमकरं करभः खड्गी मृगारिशिबिकाश्वम्।

प्रथमानीकं शेषे शेषानीकास्तु पूर्व इव ॥ २३३ ॥

अर्थ—असुरनिकैं प्रथम आनीक भैंसा कह्या था अवशेष नागकुमारादिककैं क्रमतैं नाव १ वा सर्प १ गरुड १ हाथी १ मांछला १ ऊट १ सूर १ सिंह १ पालिकी १ घोडा १ प्रथम आनीक हैं। ऐसैं प्रथम आनीकविषैं तौ भेद हैं अन्य अवशेष आनीक पूर्वोक्त असुरनिकैं समान हैं ॥ २३३ ॥

आगैं भवनवासी देव असंख्याते हैं तातैं प्रकीर्णादिक देव गाथानि विषैं विना कहें भी असंख्यात जानिए यातैं तिनका प्रमाणकौं न कहि करि अब असुरकुमारादिनिकैं देवांगनानिकी संख्या तीय गाथानिकरि कहैं हैं;—

असुरतिए देवीओ छप्पण्णसहस्स तत्थ वल्लभिया।

सोलसहस्सं छक्कसहस्सेणूणकमो होई ॥ २३४ ॥

असुरत्रिके देव्यः षट्पंचाशत्सहस्राणि तत्र वल्लभिकाः।

षोडशसहस्राणि षट्सहस्रेणोनक्रमो भवति ॥ २३४ ॥

अर्थ—असुरादिक तीन विषैं असुरकुमारका इंद्रकैं देवांगना छप्पन हजार हैं तिनविषैं सोलह हजार वल्लभिका प्यारी देवांगना हैं पांच महादेवी हैं सो आगैं कहेंगे। अर पांच घाटि चालीस हजार परिवार देवी हैं। बहुरि औरनि विषैं छह छह हजार घाटि हैं सो नाग कुमारका इंद्रकै पचास हजार देवी हैं। सुवर्णकुमारका इंद्रकैं चवालीस हजार हैं ॥ २३४ ॥

बत्तीस वे सहस्सा सेसे पण पण सजेट्ठदेवीओ।

तिसु अट्ठ छस्सहस्सं विगुव्वणामूलतणुसहियं ॥ २३५ ॥

द्वात्रिंशत् द्वे सहस्राणि शेषे पंच पंच स्वज्येष्ठदेव्यः।

त्रिषु अष्ट षट्सहस्रं विकुर्वणामूलतनुसहिताः ॥ २३५ ॥

अर्थ—शेष द्वीप कुमारादिकविषैं इंद्रकैं बत्तीस हजार देवांगना हैं तिनविषैं दोय हजार वल्लभिका हैं। बहुरि कही जु ए देवांगना तिनविषैं पाच पांच ज्येष्ट देवी कहिए पटराणीवत् महादेवी हैं। बहुरि तिन असुरादि तीनविषैं अर अवशेष द्वीपादि विषैं ज्येष्ठ देवीकै आठ हजार छह

हजार मूल शरीर सहित विक्रिया है। असुरादि तीन विषैं एक एक जेष्ठदेवी विक्रिया करै तौ [illegible] हजार देवांगना रूप होइ तामैं एक आप मूल अर अन्य विक्रियारूप देवी होइ ऐसैं ही [illegible] विषैं एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तौ मूल शरीर सहित छह हजार देवांगनारूप होइ ॥२३५॥

आगैं चमर और वैरोचन इंद्रकैं पट्टदेवीनिके नाम कहैं हैं;—

किण्ह सुमेघ सुकड्ढा रयणि य जेट्ठित्थि पउम महपउमा।
पउमसिरी कणयसिरी कणयादिममाल चमरदुगे ॥ २३६ ॥

कृष्णा सुमेघा सुकाढ्या रत्नी च ज्येष्ठस्त्रियः पद्मा महापद्मा।
पद्मश्रीः कनकश्रीः कनकादिमाला चमरद्विके ॥ २३६ ॥

अर्थ—कृष्णा १ सुमेघा १ सुका १ सुकाढ्या १ रत्नी ए पंच चमरेंद्रकैं ज्येष्ठ स्त्री है पद्मा १ महापद्मा १ पद्मश्री १ कनकश्री १ कनकमाला १ ए पंच वैरोचन इंद्रकैं ज्येष्ठ स्त्री है ऐसैं ए चमर द्विकविषैं ज्येष्ठ स्त्री हैं ॥ २३६ ॥

आगैं इंद्र प्रतींद्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत्सामान्यक इनकैं इंद्रके समान ही देवांगना परि[illegible] [illegible] इनकैं जुदा प्रमाण न कहि औरनिकैं देवांगनाका प्रमाण तीन गाथानि करि कहै हैं;—

अड्ढाइज्जं तिसयं पण्णासूणं कमं तु चमरदुगे।
पारिसदेवी णागे तिसयं तु सासहितालसयं ॥ २३७ ॥

अर्धतृतीयं त्रिशतं पंचाशदूनः क्रमस्तु चमरद्विके।
पारिषदेव्यः नागे द्विशतं तु सपादचत्वारिंशच्छतं ॥ २३७ ॥

अर्थ—अढाईसै तीनसै पचास घाटि क्रमतैं चमरद्विकविषैं पारिषदनिकैं देवी जाननी [illegible] भावार्थ ॥ [illegible] अंतःपारिषदनिकैं अढाईसै मध्य पारिषदनिकैं दोयसै बाह्यपारिषदनिकै [illegible] [illegible] है। बहुरि [illegible] अंतः पारिषदनिकैं तीनसै मध्य पारिषदनिके अढाईसै [illegible] [illegible] दोयसै देवांगना है बहुरि नागकुमारविषैं अंतः पारिषदनिकैं दोयसै मध्य पारिषद[illegible] [illegible] पारिषदनिकैं एकसौ चालीस देवांगना है ॥ २३७ ॥

गरुडे [illegible] [illegible] [illegible] दलगगुणं तु दीवुणा।
[illegible] ॥ २३८ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ २३८ ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible] ॥ २३८ ॥

सेणादेवाणं पुण देवीयो तस्स अद्धपरिमाणं ।
सव्वणिगिट्ठसुराणं बत्तीसा होंति देवीओ ॥ २३९ ॥

सेनादेवानां पुनः देव्यः तस्य अर्धपरिमाणं ।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशद्भवति देव्यः ॥ २३९ ॥

अर्थ—सेना देवनिकैं देवी तिन सेना महत्तरनिकैं अर्द्ध प्रमाण है। भावार्थ—अनीक देवनिकै पचास देवांगना हैं, बहुरि सर्व निकृष्ट देवनिकैं बत्तीस देवांगना हैं कोई ही देवकैं बत्तीसतैं घाटि देवांगना न होय ॥ २३९ ॥

आगैं भवनवासीनिकै वा आगे कहिए जे व्यंतर तिनकै जघन्य उत्कृष्ट आयु कहै हैं;—

असुरादिचदुसु सेसे भोम्मे सायर तिपल्लमाउस्सं ।
दलहीणकमं जेट्ठं दसवाससहस्समवरं तु ॥ २४० ॥

असुरादिचतुर्षु शेषे भौमे सागरं त्रिपल्यं आयुष्यम् ।
दलहीनक्रमः ज्येष्ठं दशवर्षसहस्रं अवरं तु ॥ २४०

अर्थ—असुरादि च्यारनिविषैं, शेष भवनवासीनिविषैं, भौम जो व्यंतर तीह विषै क्रमतैं सागर तीन पल्य आधी घाटि क्रम लिएं उत्कृष्ट आयु है। भावार्थ—असुरकुमारविषै एक सागर नागकुमार विषैं तीन पल्य सुपर्णकुमारविषैं अढाई पल्य द्वीपकुमारविषैं दोय पल्य अवशेष छह जातिके भवनवासीनिविषैं ड्योढ पल्य व्यंतर देवनिविषैं एक पल्य उत्कृष्ट आयु है। बहुरि सबनि ही विषैं जघन्य आयु दशहजार वर्ष प्रमाण है ॥ २४० ॥

आगैं जिनकै जो आयु कह्या ताकौं विशेष सहित कहै हैं;—

असुरचउक्के सेसे उवही पल्लतियं दलूणकमं ।
उत्तरइंदाणहियं सरिसं इंदादिपंचण्हं ॥ २४१ ॥

असुरचतुष्के शेषे उदधिः पल्यत्रिकं दलोनक्रमः ।
उत्तरेंद्राणामधिकं सदृशं इंद्रादिपंचानाम् ॥ २४१ ॥

अर्थ—असुरादि च्यारि विषै अर अवशेष भवन वासीनि विषै एक सागर तीन पल्य अर आध पल्य घाटि आयु कह्या सोई उत्तर दिशाके इंद्रनिका किछू अधिक आयु जानना। भावार्थ असुरकुमारविषैं चमरेंद्रका एक सागर आयु है, वैरोचनका किछू अधिक एक सागर आयु है। नागकुमारविषैं भूतानंदका तीन पल्यका आयुष है। धरणानंदका किछू अधिक तीन पल्य आयु है। ऐसेही सुपर्णकुमारादिविषैं जानना। बहुरि इन्द्र प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक इन पंचनिका आयु समान है ॥ २४१ ॥

आगैं तिसही समानताकौं विशेषकरि कहै हैं;—

आउपरिवारिद्धीविकिरियाहिं पडिंदयादि चऊ ।
सगसगइंदेहि समा हदरप्पछत्तादिसंजुत्ता ॥ २४२ ॥

आयुःपरिवारर्धिविक्रियाभिः प्रतीन्द्रादयः चत्वारः ।
स्वकस्वकेन्द्रैः समा दभ्रच्छत्रादिसंयुक्ताः ॥ २४२ ॥

अर्थः—आयु परिवार ऋद्धि विक्रिया इनकरि प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक ए च्यारि अपनें अपनें इन्द्र करि समान हैं इतना विशेष दभ घाटि हैं तातें छत्रादिक करि संयुक्त हैं ॥ २४२ ॥

आगें असुरादि इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु कहैं हैं;—

अड्ढाइज्जतिपल्लं चमरदुगे णागगरुडसेसाणं ।
देवीणमट्ठमं पुण पुव्वावस्साण कोडितयं ॥ २४३ ॥

अर्धतृतीयत्रिपल्यं चमरद्विके नागगरुडशेषाणां ।
देवीनामष्टमं पुनः पूर्ववर्षाणां कोटित्रयम् ॥ २४३ ॥

अर्थ—चमर द्विकविषै चमरेन्द्रकी देवांगनाका आयु अढ़ाई पल्य है । वैरोचनकीका तीन पल्य है बहुरि नागेन्द्रकी देवीनिका आयु पल्यका आठवां भाग है । बहुरि गरुड़की देवांगनानिका आयु तीन कोडि पूर्व प्रमाण है । अवशेष इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु तीन कोडी वर्ष प्रमाण है ॥ २४३ ॥

आगें अंगरक्षक तीन जातिके परिषद तिनका आयु च्यारि गाथानिकरि कहैं हैं;—

चमरंगरक्खसेणामहत्तराणाउगं हवे पल्लं ।
साणीकवाहणाणं दलं तु वइरोयणे अहियं ॥ २४४ ॥

चमरांगरक्षसेनामहत्तराणामायुर्भवेत् पल्यं ।
सानीकवाहनानां दलं तु वैरोचने अधिकम् ॥ २४४ ॥

अर्थ—चमर इन्द्रके अंगरक्षक अर सेनामहत्तर इनका आयु एक पल्य है बहुरि आनीक कहिए सेनाविषै देव तिन सहित वाहन कहिए गजादि रूप होने योग्य देव तिनका आयु आधा पल्य है ॥ बहुरि चमर इन्द्रके तैं वैरोचन इन्द्रके अंगरक्षकादिकनिकैं किछू अधिक आयु है ॥ २४४ ॥

फणिगरुडसेसयाणं तट्ठाणे पुव्ववस्सकोडी य ।
वस्साण कोडि लक्खं लक्खं च तदद्धयं कमसो ॥ २४५ ॥

फणिगरुडशेषाणां तत्स्थाने पूर्ववर्षकोटिः च ।
वर्षाणां कोटिः लक्षं लक्षं च तदर्धं क्रमशः ॥ २४५ ॥

अर्थ—नाग गरुड शेषनिकै तिन पूर्वोक्त स्थानकनिविषै क्रमतें कोटि पूर्व कोटि वर्ष बहुरि कोटि वर्ष लाख वर्ष बहुरि लाख वर्ष ताका आधा वर्ष प्रमाण आयु है। भावार्थ—नागकुमारनिविषै अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोटि पूर्व वर्ष है आनीक सहित वाहननिका कोटि वर्ष है। बहुरि गरुडकुमारनिविषै अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोटि वर्ष है । आनीक सहित वाहननिका लक्ष वर्ष है । बहुरि अवशेष [illegible] विषै अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु लाख वर्ष है अर आनीक वाहनादिकका [illegible] वर्ष है ॥२४५॥

असुरदुगे पल्लाणं अड्ढाइज्जं तिगम्मि सड्ढाणं ।
पल्लाणि अट्ठभागं सोलस [illegible] तु ॥ २४६ ॥
[illegible] तिके [illegible] ॥
[illegible] तु ॥ २४६ ॥

अर्थ—[illegible] । **भावार्थ**— [illegible] आयु है । बहुरि [illegible] आयु है । बहुरि [illegible] प्रमाण आयु है ॥ २४६ ॥

णागे दीवे कमसो तिगदुगदेक्कं तु होदि पुव्वाणं ।
वस्साणं कोडीओ पडिसाणमदेहतारदीणं ॥ २४७ ॥
नागे द्वीपे क्रमशः त्रि. द्वि एकं तु भवति पूर्वाणाम् ।
वर्षाणां कोट्यः परिवाराणां [illegible] ॥ २४७ ॥

अर्थ—नागकुमार द्वीपकुमारविषै क्रमतें तीन दोय एक पूर्व कोटि वर्ष कोटि प्रमाण [illegible] परिवारनिका आयु है । **भावार्थ** । नागकुमारनिविषै अभ्यंतर परिवारनिका तीन पूर्व कोटि मध्य परिवारनिका दोय कोटि बाह्य परिवारनिका एक कोटि वर्ष प्रमाण आयु है । बहुरि द्वीपकुमारनिविषै अभ्यंतर परिवारनिका तीन कोटि वर्ष मध्य परिवारनिका दोयकोटि वर्ष बाह्य परिवारनिका एक कोटि वर्ष प्रमाण आयु है ॥ २४७ ॥

आगे असुरादिकनिविषै उश्वास अर आहारका क्रम कहै है,—

असुरे तिनिसु सागराहारा पक्खं समासहस्सं तु ।
मुहुत्तदिणाणद्धं तेरस बारस दलूणाई ॥ २४८ ॥
असुरे त्रिषु श्वासाहारौ पक्षः समासहस्रं तु ।
मुहूर्तदिनयोः अर्धत्रयोदश द्वादश दलोनानि ॥ २४८ ॥

अर्थ—असुरनिविषै अर तीन तीन विषै उश्वास अर आहार पक्ष वर्ष हजार अर सो मुहूर्त अर दिननिका साढा बारा बारा साढा साढा सातवां भाग गएं एक बार हो है । **भावार्थ** । असुरकुमारनिविषै एक पक्ष भए एकवार उश्वास हो है । हजार वर्ष गए एक बार आहार हो है । बहुरि नागकुमार आदि तीन जातिविषै साढा बारा मुहूर्त भए उश्वास हो है साढा बारा दिन गए आहार हो है । बहुरि दिकुमार आदि तीन जातिविषै साढा सात मुहूरत भए उश्वास होहै साढा सात दिन गएं आहार हो है ॥ २४८ ॥

आगे भवनत्रिक देवनिका उत्सेध कहैं हैं;—

पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दसधणू चेव ।
विंतरजोइसियाणं दशसत्त सरीरउदओ दु ॥ २४९ ॥

पंचविंशतिः असुराणां शेषकुमाराणां दशधनुषां चैव ।
व्यंतरज्योतिष्कयोः दशसप्त शरीरोदयः तु ॥ २४९ ॥

अर्थ—असुर कुमारनिका पचीस धनुष अवशेष नव जातिके भवनवासी कुमारनिका द
धनुष व्यंतर देवनिका दश धनुष ज्योतिषी देवनिका सात धनुष शरीरकी उचाईका प्रमाण है॥२४९

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें भवनलोकका अधिकार समाप्त भया।



व्यंतर लोकाधिकार ॥ ३ ॥

अब व्यंतरलोक निरूपण करनेकौं है मन जाका ऐसा आचार्य सो प्रथम ही व्यंतरलोक विषै तिष्ठते जु चैत्यालयनिकौ प्रमाण पूर्वक नमस्कारकौं विस्तारै है;—

तिण्णिसयजोयणाणं कदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
भौमाणं जिणगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ २५० ॥
त्रिशतयोजनानां कृतिहतप्रतरस्य संख्यभागमितान् ।
भौमानां जिनगेहान् गणनातीतान् नमस्यामि ॥ २५० ॥

अर्थ—तीनसै योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यात वैभागि प्रमाण जे व्यंतर देव संबंधी जिनमंदिर तिनहि नमस्कार करौं हौं। कैसे हैं जिनमंदिर, गणनातीतान् कहिए असंख्यात हैं लौकिक गणित करि गिणे न जाहैं हैं! सो तीनसै योजनका वर्ग किएं निवै हजार योजन भए। बहुरि एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुलतैं निवै हजार योजनके केते अंगुल होइ। ऐसे त्रैराशिक करि तिनके अंगुल करिए सो वर्ग राशिका गुणकार अर भागहार वर्गरूप ही होइ इस न्याय करि सात लाख अडसठि हजारका वर्ग करि निव्वै हजारकौं गुणिए ९००००।७६८०००।७६८००० बहुरि अंगुलनिका अंकनिकौं तीन करि भेदिए तब सातसै अडसठिको आयगा दोयसै छप्पन अर आगैं तीनका अंक भया। बहुरि गुण्य अर गुणकारविषै दश बिंदी थी तिनकौं जुदी स्थापी तब ऐसा भया ९।२५६।३।२५६।३। बहुरि दोय जायगा दोय सै छप्पन ये तिनकौं परस्पर गुणे पणट्ठी ६५५३६ भई अर दोइ जायगा तीन तीन थे तिनकौं परस्पर गुणें नव भए तिनकौं गुण संबंधी नवका अंककरि गुणें इक्यासी भए ऐसे करते ऐसा भया ६५=८१ बहुरि याके आगे जुदी राशि थी दश बिन्दी ताकी सहनानी ऐसी १०° कीए ऐसा भया ६५=८१-१ इतने अंगुल भए। बहुरि एक अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ तौ इतनें अंगुलनिका केते होइ सो इहां वर्ग राशि है तातैं सूच्यंगुलका वर्ग जो प्रतरांगुल ताकी सहनानी ऐसी ४ ताकरि गुणिए तब ऐसा होइ ४।६५=८११ बहुरि याका भाग जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=ताकौं दीजिए तब व्यंतरनिका प्रमाण पणट्ठीकौ इक्यासी करि गुणि ताकै आगै दस बिंदी धरिए इतने प्रतरांगुलका जगत्प्रतर दिए ऐसा होय है ४=।६५=८१।१ सोई कह्या है "तिण्णि सयजोयणाणं बेमदछप्पणअंगुलाणं च कदिहिदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं।" तीनसै योजन अर दोयसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दिए क्रमतैं व्यंतर अर ज्योतिषीनिका प्रमाण हो है ऐसा सिद्धांत वचन है। बहुरि संख्याते व्यंतर देवनिकै एक एक जिनमंदिर पाइए तौ पूर्वोक्त प्रमाण व्यंतर देवनिकैं केते जिन मंदिर पाईए। ऐसे करि पूर्वोक्त व्यंतर प्रमाणकौं संख्यातकी सहनानी ऐसी १ ताका भाग दिए व्यंतरनिकैं जिन मंदिरका प्रमाण ऐसा होय है ४=।६५=८१।१ ॥ २५० ॥

आगें व्यंतरनिका कुल भेद कहें हैं;—

किंणरकिंपुरिसा य महोरगगंधव्वजक्खणामा य ।
रक्खसभूयपिसाया अट्ठविहा वेंतरा देवा ॥ २५१ ॥

किंनरकिंपुरुषौ च महोरगगंधर्वयक्षनामानः च ।
राक्षसभूतपिशाचाः अष्टविधा व्यंतरा देवाः॥ २५१ ॥

अर्थ—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, ऐसे नामके धारक आठ प्रकार व्यंतर देव हैं ॥ २५१ ॥

आगें तिनके शरीरका वर्णकों निरूपैं हैं,—

तेसिं कमसो वण्णो पियंगुफलधवलकालयसियामं ।
हेमं तिसुवि सियामं किण्हं बहुलेवभूसा य ॥ २५२ ॥

तेषां क्रमशः वर्णाः प्रियंगुफलधवलकालश्यामाः ।
हेमः त्रिष्वपि श्यामः कृष्णः बहुलेपभूषा च ॥ २५२ ॥

अर्थ—तिनका अनुक्रमतैं शरीरका वर्ण कहिए है । किंनरनिका प्रियंगुफल समान वर्ण है। किंपुरुषनिका धवल वर्ण है । महोरगनिका काला स्याम वर्ण है । गंधर्वनिका सुवर्ण समान वर्ण है यक्ष राक्षस भूत इन तीनोंका स्याम वर्ण है पिशाचनिका कृष्ण वर्ण है बहुरि ते देव बहुत अगर इत्यादि लेप आभूषणनिकरि संयुक्त हैं ॥ २५२ ॥

आगें तिनकें चैत्य वृक्षनिका भेद कहैं हैं;—

तेसिं असोयचंपयणागा तुंबुरुवडो य कंटतरू ।
तुलसी कदंबणामा चेत्ततरू होंति हु कमेण ॥ २५३ ॥

तेषां अशोकचंपकनागाः तुंबुरुवटाश्च कंटतरुः ।
तुलसी कदंबनामा चैत्यतरवो भवंति खलु क्रमेण ॥ २५३ ॥

अर्थ—तिन किन्नरादिक व्यंतरनिकें अशोक १ चंपा १ नागकेसरि १ तुंबडी १ वट १ कंटतरु १ तुलसी १ कदंब । ऐसे नाम धारक चैत्य वृक्ष अनुक्रमतैं पाईए है ॥ २५३ ॥

आगें तिनि चैत्य वृक्षके मूल विषैं तिष्ठै है । जिन प्रतिमा इत्यादि कथन कहैं हैं;—

तम्मूले पलियंकगजिणपडिमा पडिदिसम्हि चत्तारि ।
चउतोरणजुत्ता ते भवणेसु च जंबुमाणद्धा ॥ २५४ ॥

तन्मूले पर्यंकगजिनप्रतिमाः प्रतिदिशं चतस्रः ।
चतुस्तोरणयुक्तास्ताः भवनेषु च जंबूमानार्धाः ॥ २५४ ॥

अर्थ—तिन चैत्य वृक्षनिके मूलविषै पल्यंक आसनकौं प्राप्त ऐसे जिन प्रतिमा एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि पाइए हैं बहुरि ते प्रतिमा च्यारि तोरण द्वारनिकरि संयुक्त हैं बहुरि भवननिविषै ते चैत्य वृक्ष हैं ते आगें जंबूद्वीपका वर्णन विषै जंबू वृक्षके परिकरका प्रमाण कहेंगे तातैं अर्द्ध प्रमाण जानने ॥ २५४ ॥

आगें तिन प्रतिमानिकै आगे तिष्ठता मानस्तंभकों विशेष सहित निरूपण करै हैं;—

पडिपडिमं एक्केका माणत्थंभा तिपीढसालजुदा।
मोत्तियदामं सोहइ घंटाजालादियं दिव्वं ॥ २५५ ॥
प्रतिप्रतिमं एकैको मानस्तंभाः त्रिपीठशालयुताः।
मौक्तिकदाम शोभते घंटाजालादिकं दिव्यम् ॥ २५५ ॥

अर्थ—प्रतिमा प्रतिमा प्रति एक एक आगें मानस्तंभ है ते मानस्तंभ तीन पीठ तीन शालनिकर संयुक्त है। भावार्थ-तीन पीठनि ऊपरि मानस्तंभ है तिस मानस्तंभके तीन कोट वाह्य है बहुरि तिस मानस्तंभविषै मोतीनिकी माला वा दिव्य घंटा जाल इत्यादिक शोभै है ॥ २५५ ॥

आगें आठ प्रकार व्यंतरनिकै एक एक कुल प्रति भेद कहै हैं;—

किण्णरपहुदि दसदसधा सेसा बारसगसत्तचोद्दसधा।
दो दो इंदा दो दो वल्लभिया पुह सहस्सदेविजुदा ॥ २५६ ॥
किन्नरचत्वारः दशदशधा शेषाः द्वादशसप्तचतुर्दशधा।
द्वौ द्वौ इंद्रौ द्वे द्वे वल्लभिके पृथक् सहस्रदेवीयुते ॥ २५६ ॥

अर्थ—किन्नरादिक च्यारि कुल तौ दश दश प्रकार हैं अर अवशेषादिक अनुक्रमतें बारह प्रकार सात प्रकार सात प्रकार चौदह प्रकार हैं। जैसे मनुष्यनिविषै क्षत्रिय वैश्यादिक कुल भेद पाईए है अर एक क्षत्रिय कुल विषै इक्ष्वाकु सोम वंशादि भेद पाईए तैसे व्यंतरनिविषै आठ कुल भेद हैं। एक एक कुल विषै दश आदि अवान्तर भेद जानने। बहुरि इन विषै एक एक कुल विषै दोय दोय इंद्र हैं। तिन इंद्रनिकै एक एक कै दोय दोय वल्लभिका देवांगना हैं ते प्रत्येक प्रत्येक एक एक देवांगना हजार हजार परिवार देवांगना करि संयुक्त है ॥ २५६ ॥

आगें तिनके नाम सोलह गाथानि करि कहै हैं;—

किंपुरिसकिंणरावि य हिदयंगमगा य रूवपाली य।
किंणरकिंणरऽणिंदिद मणरम्मा किंणरुत्तमगा ॥ २५७ ॥
किंपुरुषकिन्नरावपि च हृदयंगमश्च रूपपाली च।
किन्नरकिन्नरः अनिंदितः मनोरमः किन्नरोत्तम ॥ २५७ ॥

अर्थ—किंपुरुष १ किंनर १ हृदयंगम १ रूपपाली १ किंनरकिंनर १ अनिंदित १ मनोरम १ किंनरोत्तम १ ॥ २५७ ॥

रतिपियजेट्ठा इंदा किंपुरिसादिकिणराचसेसा हु।
वेलुमती रतिसेणा रदिप्पिया होंति वल्लभिया ॥ २५८ ॥
[illegible] ॥
[illegible]

अर्थ—[illegible]
[illegible]

पुरुसा पुरुसुत्तमसप्पुरुसमहापुरुसपुरुसपहणामा ।
अतिपुरुसा मरुओ मरुदेवमरुप्पहजसोवंता ॥ २५९ ॥

पुरुषः पुरुषोत्तमसत्पुरुषमहापुरुषपुरुषप्रभनामानः ।
अतिपुरुषः मरुर्मरुद्देवमरुत्प्रभयशस्वंतः ॥ २५९ ॥

अर्थ—पुरुष १ पुरुषोत्तम १ सत्पुरुष १ महापुरुष १ पुरुषप्रिय १ अतिपुरुष १ म
मरुदेव १ मरुत्प्रभ १ यशस्वान १ ऐसैं दश प्रकार किंपुरुष हैं ॥ २५९ ॥

सप्पुरुसमहापुरुसा किंपुरिसिंदा कमेण वल्लभिया ।
रोहिणिया णवमी हिरि पुप्फवदी य इयरस्स ॥ २६० ॥

सत्पुरुषमहापुरुषौ किंपुरुषेंद्रौ क्रमेण वल्लभिकाः ।
रोहिणी नवमी ह्रीः पुष्पवती च इतरस्य ॥ २६० ॥

अर्थ—तिनविषैं सत्पुरुष अर महापुरुष दोय किंपुरुष व्यंतरके इन्द्र हैं तिनकी क्र
सत्पुरुषकै तौ रोहिनी अर नवमी वल्लभिका देवी है अर दूसरा महापुरुषकी ह्री अर पुष्पवती
मिश्र देवी है ॥ २६० ॥

भुजगा भुजंगसाली महकायतिकाय खंधसाली य ।
मणहर असणिजववखा महसरगंभीरपियदरिसा ॥ २६१ ॥

भुजंगः भुजंगशाली महाकायो अतिकायः स्कंधशाली च ।
मनोहरः अशनिजवाख्यः महैश्वर्यगंभीरप्रियदर्शिनः ॥ २६१ ॥

अर्थ—भुजंग १ भुजंगशाली १ महाकाय १ अतिकाय १ स्कंधशाली १ मनोहर १
निजव १ महैश्वर्य १ गंभीर १ प्रियदर्शी १ ऐसैं दस प्रकार महोरग हैं ॥ २६१ ॥

महकायो अतिकायो महोरगिंदा हु भोग भोगवदी ।
इदरस्स पुप्फगंधी अणिंदिता होंति वल्लभिया ॥ २६२ ॥

महाकायो अतिकायः महोरगेंद्रौ हि भोगा भोगवती ।
इतरस्य पुष्पगंधी अनिंदिता भवतः वल्लभिके ॥ २६२ ॥

अर्थ—तिनविषैं महाकाय १ अर अतिकाय ए दोय महोरग व्यंतरनिके इन्द्र हैं
पूर्व इन्द्रकै तौ भोगा १ भोगवती १ अर द्वितीय इन्द्रकी पुष्पगंधी १ अनिंदिता ए वल्लभिका
हैं ॥ २६२ ॥

हाहा हूहू णारयतुंबुरुकदंबवासवक्खा य ।
महसर गीदरदीति य गीदयसा दइवदा दसगा ॥ २६३ ॥

हाहा हूहू नारदतुम्बुरकदम्बवासवाख्याश्च ।
महास्वरो गीतरतिः अपि च गीतयशा दैवता दशकाः ॥ २६३ ॥

अर्थ—हाहा १ हूहू १ नारद १ तुंबुर १ कदंब १ वासव १ महास्वर १ गीतरति
गीतयशा १ दैवत १ ऐसैं दश प्रकार [illegible] हैं ॥ २६३ ॥

गीतरती गीतजसो गंधव्विदा हवंति वल्लभिपा।
सरसति सरसेणावि य णंदिणि पियदरिसिणादेवी ॥ २६४ ॥
गीतरतिः गीतयशा गंधर्वेन्द्रौ भवतः वल्लभिकाः।
सरस्वति स्वरसेनापि च नंदिनी प्रियदर्शनादेवी ॥ २६४ ॥

अर्थ—तिन विर्षे गीतरति अर गीतयशा ए दोय गंधर्वनिके इन्द्र हैं तिनकी वल्लभिका देवी सरस्वती १ स्वरसेना १ अर नंदिनी १ प्रियदर्शना १ हैं॥ २६४ ॥

अह माणिपुण्णसेलमणोभद्दा भद्दगा सुभद्दा य।
तह सव्वभद्द माणुस धणपाल सुरूवजक्खा य ॥ २६५ ॥
अथ माणिपूर्णशैलमनोभद्राः भद्रकः सुभद्रः च।
तथा सर्वभद्रः मानुषः धनपालः सुरूपयक्षश्च ॥ २६५ ॥

अर्थ—अथ अबै माणिभद्र १ पूर्णभद्र १ शैलभद्र१मनोभद्र १भद्रक १ सुभद्र १ सर्वभद्र १ मानुष १ धनपाल १ सुरूपयक्ष १ ॥ २६५ ॥

जक्खुत्तमा मणोहरणामा तह माणिपुण्णभद्दिंदा।
कुंद बहुपुत्तदेवी तारा पुण उत्तमा देवी ॥ २६६ ॥
यक्षोत्तमो मनोहरनामा तत्र माणिपूर्णभद्रेंद्रौ।
कुंदा बहुपुत्रदेवी तारा पुनरुत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

अर्थ—यक्षोत्तम १मनोहर १ ऐसे बारह प्रकार यक्ष हैं तिन विर्षे माणिभद्र पूर्णभद्र ए दोय इंद्र हैं तिन इंद्रनिकी कुंदा १ बहुपुत्रा १ देवी हैं अर तारा उत्तमा देवी हैं ॥ २६६ ॥

भीम महाभीम विग्घविणायक तह उदक रक्खसा य तहा।
रक्खसरक्खस तह बह्मरक्खसा होंति सत्तमया ॥ २६७ ॥
भीमो महाभीमः विघ्नविनायकः तथा उदकः राक्षसश्च तथा।
राक्षसराक्षसः तथा ब्रह्मराक्षसः भवंति सप्तमकः ॥ २६७ ॥

अर्थ—भीम १महा भीम १ विघ्नविनायक १उदक१ राक्षस१ राक्षसराक्षस१ ब्रह्मराक्षस सातवा ऐसे सात् प्रकार राक्षस हैं ॥ २६७ ॥

भीमो य महाभीमो रक्खसइंदा हवंति वल्लभिया।
पउमा वसुमित्तावि य रयणड्ढा कणयपह देवी ॥ २६८ ॥
भीमश्च महाभीमो राक्षसेंद्रौ भवतः वल्लभिकाः।
पद्मा वसुमित्रापि च रत्नाढ्या कनकप्रभा देवी ॥ २६८ ॥

अर्थ—तिनविर्षे भीम अर महाभीम ए राक्षसनिके इन्द्र हैं, तिनकी वल्लभिका देवी पद्मा वसुमित्रा १ बहुरि रत्नाढ्या १ कनकप्रभा १ है ॥ २६८ ॥

भूदाणं तु सुरूपा पडिरूवा भूदउत्तमा तत्तो।
पडिभूद महाभूदा पडिछण्णागाससभूद इदि ॥ २६९ ॥

भूतानां तु सुरूपः प्रतिरूपः भूतोत्तमः ततः ।
प्रतिभूतः महाभूतः प्रतिछन्नः आकाशभूत इति ॥ २६९ ॥

अर्थ—बहुरि भूतनिकैं सुरूप १ प्रतिरूप १भूतोत्तम १ प्रतिभूत१ प्रतिछिन्न १ आकाश-भूत १ ऐसैं सात प्रकार है ॥ २६९ ॥

इंदा य सुपडिरूवा वल्लभिया तह य होदि रुववदी ।
बहुरुवा य सुसीमा सुमुहा य हवंति देवीयो ॥ २७० ॥

इंद्रौ च सुप्रतिरूपौ वल्लभिकाः तथा च भवंति रूपवती ।
बहुरूपा च सुसीमा सुमुखा च भवंति देव्यः ॥ २७० ॥

अर्थ—तिन विषैं इन्द्र स्वरूप अर प्रतिरूप हैं तिनकी वल्लभिका १ रूपवती १ बहुरूपा सुसीमा १ सुमुखा १ ए देवी हैं ॥ २७० ॥

कुम्भंड रक्ख जक्खा संमोहो तारका अचोक्खा य ।
काल महकाल चोक्खा सतालया देह महदेहा ॥ २७१ ॥

कूष्मांडो रक्षो यक्षः संमोहः तारकः अशुचिश्च ।
कालः महाकालः शुचिः सतालकः देहः महादेहः ॥ २७१ ॥

अर्थ—कूष्मांड १ रक्षा १यक्ष संमोह १तारक १अशुचि १काल१ महाकाल १ शुचि १ सता-लक १ देह १ महादेह१ ॥ २७१ ॥

तुण्हिय पवयणणामा इंदा तेसिं तु कालमहकाला ।
कमलकमलप्पहुप्पलसुदंसिणा होंति वल्लभिया ॥ २७२ ॥

तूष्णीकः प्रवचननामा इंद्रौ तेषां तु कालमहाकालौ ।
कमलाकमलप्रभोत्पलासुदर्शना भवंति वल्लभिकाः ॥ २७२ ॥

अर्थ—तूणीक १ प्रवचन १ ऐसें नाम लिऐं चौदह प्रकार पिशाच हैं । तिन विषैं तिन पिशाचनिकैं काल अर महाकाल इन्द्र हैं । तिनकी कमला १कमलप्रमा बहुरि उत्पला १ सुदर्शना१ ए वल्लभिका हैं ॥ २७२ ॥

आगैं बहुरि इंदनिहीके नाम जुदे दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

किंपुरुस किंणरा सप्पुरुस महापुरुसणामया कमसो ।
महकायो अतिकायो गीतरती गीतयसणामा ॥ २७३ ॥

किंपुरुषः किंनरः सत्पुरुषः महापुरुषनामा क्रमशः ।
महाकायः अतिकायः गीतरती गीतयशोनामा ॥ २७३ ॥

अर्थ—क्रमतैं किंपुरुष किंनर बहुरि सत्पुरुष महापुरुष बहुरि महाकाय अतिकाय बहुरि गीतरति गीतयशा ॥ २७३ ॥

तो माणिपुण्णभद्दा भीममहाभीमया सुरूवा य ।
पडिरूवो काल महाकालो भोम्मेसु जुगलिंदा ॥ २७४ ॥

ततो माणिपूर्णभद्रौ भीममहाभीमौ सुरूपश्च।
प्रतिरूपः कालः महाकालः भौमेषु युगलेंद्राः ॥ २७४ ॥

अर्थ—तहां पीछे माणिभद्र पूर्णभद्र बहुरि भीम महाभीम बहुरि सुरूप प्रतिरूप बहुरि काल महाकाल ए सर्व व्यंतरनिविषैं एक एक कुलके दोय दोय इन्द्र जानने ॥ २७४ ॥

आगैं किंपुरुष इन्द्रनिकै गणिका महत्तरीकों च्यारि गाथानि करि कहैं हैं;—

गणिकामहत्तरीयो इंदं पडि पल्लदलठिदी दो दो।
मधुरा मधुरालावा सुस्सर मउभासिणी कमसो ॥ २७५ ॥
गणिकामहत्तर्यः इंद्रं प्रति पल्यदलस्थितयः द्वे द्वे।
मधुरा मधुरालापा सुस्वरा मृदुभाषिणी क्रमशः ॥ २७५ ॥

अर्थ—एक एक इन्द्र प्रति दोय दोय गणिका महत्तरी हैं। जैसे इहां वेश्या हो हैं तैसे तहां जो देवांगना होंहि तिनकों गणिका कहिए तिन विषैं जो प्रधान सो गणिकामहत्तरी जाननी बहुरि ते आध पल्य प्रमाण आयुकों धरै हैं तिनकों नाम अनुक्रमतैं कहिए हैं। तहां एक एक किंपुरुषादि इन्द्र संबंधी दोय दोय गणिका महत्तरीनिका नाम जानने मधुरा मधुरालाप बहुरि सुस्वरा मृदुभाषिणी ॥ २७५ ॥

पुरिसपिया पुंकंता सोम्म पुंदरिसिणी य भोगक्खा।
भोगवदी य भुजंगा भुजंगपिया तो सुघोस विमलेत्ति ॥ २७६ ॥
पुरुषप्रिया पुंकांता सौम्या पुंदर्शिनी च भोगाख्या।
भोगवती च भुजंगा भुजंगप्रिया ततः सुघोषा विमला इति ॥ २७६ ॥

अर्थ—बहुरि पुरुषप्रिया पुंकांता बहुरि सौम्य पुंदर्शिनी बहुरि भोगा भोगवती बहुरि भुजंगा भुजंगप्रिया बहुरि सुघोषा विमला ॥ २७६ ॥

सुस्सर अणिंदियक्खा भद्द सुभद्दा य मालिणी होंति।
पउमादिमालिणीवि य तो सव्वरि सव्वसेणेत्ति ॥ २७७ ॥
सुस्वरा अनिंदिताख्या भद्रा सुभद्रा च मालिनी भवंति।
पद्मादिमालिनी अपि च ततः शर्वरी सर्वसेना इति ॥ २७७ ॥

अर्थ—बहुरि सुस्वरा अनिंदिता बहुरि भद्रा सुभद्रा बहुरि मालिनी पद्ममालिनी बहुरि शर्वरी सर्वसेना ॥ २७७ ॥

रुद्दक्ख रुद्ददरिसिण भूदादकिंद भूद भूदादी।
दत्त महाभुज अंबा कराल सुलसा सुदरिसणया ॥ २७८ ॥
रुद्राख्या रुद्रदर्शना भूतादिकांता भूता भूतादि।
दत्ता महाभुजा अंबा कराला सुरसा सुदर्शनका ॥ २७८ ॥

अर्थ—बहुरि रुद्रा रुद्रदर्शना बहुरि भूतकांता भूता बहुरि भूतदत्ता महाभुजा बहुरि अंबा कराल बहुरि सुरसा दर्शना। ऐसें सोलह इंन्द्र संबंधी बत्तीस गणिका महत्तरनिके नाम क्रमतैं जाननें ॥ २७८ ॥

आगे किंपुरुषादि इन्द्रनिकै सामानिक आदि देवनकी संख्या कहैं हैं;—

इंदसमा हु पडिंदा समाणुतणुरक्खपरिसपरिमाणं ।
चउसोलसहस्सं पुण अट्ठसयं विसदवड्ढिकमो ॥ २७९ ।

इन्द्रसमाः खलु प्रतीन्द्राः सामानिकतनुरक्षपारिषद्प्रमाणं ।
चतुःषोडशसहस्रं पुनरष्टशतं द्विशतवृद्धिक्रमः ॥ २७९ ॥

अर्थ—इन्द्रनिके समान प्रतीन्द्र हैं एक एक इन्द्र संबंधी एक एक प्रतीन्द्र है बहुरि सामानिक तनुरक्षक पारिषदनिका प्रमाण च्यारि हजार सोल्ह हजार आठसै दोयसै बधता क्रम लीए है। भावार्थ-एक एक इन्द्रकै सामानिक देव च्यारि हजार हैं। तनुरक्षक सोल्ह हजार हैं। अभ्यंतर परिषद आठसै हैं। मध्य परिषद हजार हैं। बाह्य बारहसै हैं ॥ २७९ ॥

आगे तिनकैं सात आनीक कहैं हैं;—

कुंजरतुरयपदादीरहगंधव्वा य णच्चवसहोत्ति ।
सत्तेवय आणीया पत्तेयं सत्त सत्त कक्खजुदा ॥ २८० ॥

कुंजरतुरगपदातिरथगंधर्वाश्च नृत्यवृषभाविति ।
सप्तैव अनीकाः प्रत्येकं सप्त सप्त कक्षयुताः ॥ २८० ॥

अर्थ—हाथी १ घोड़ा १ पयादा १ रथ १ गंधर्व १ नृत्यकी १ वृषभ १ ऐसे सात प्रकार आनीक एक एक के हैं। बहुरि एक एक आनीक सात सात कक्ष जो फौज तिन करि संयुक्त है ॥ २८० ॥

आगे तिस सेनाके महत्तर कहैं हैं;—

सेणामहत्तरा सुज्जेट्ठा सुग्गीवविमलमरुदेवा ।
सिरिदामा दामसिरी सत्तमदेवो विसालक्खो ॥ २८१ ॥

सेनामहत्तराः सुज्येष्ठः सुग्रीवविमलमरुदेवाः ।
श्रीदामा दामश्रीः सप्तमदेवो विशालाख्यः ॥ २८१ ॥

अर्थ—हाथी आदिक जे सेना ताके महत्तर कहिए प्रधान अनुक्रमतैं सुज्येष्ठ १ सुग्रीव १ विमल १ मरुदेव १ श्रीदामा १ दामश्री १ सातवां विसाल नाम देव जानना ॥ २८१ ॥

आगे तिस आनीककी संख्या कहैं हैं;—

अट्ठावीससहस्सं पढमं दुगुणं कमेण चरिमोत्ति ।
सव्विंदाणं सरिसा पइण्णयादी असंखमिदा ॥ २८२ ॥

अष्टाविंशसहस्राणि प्रथमं द्विगुणं क्रमेण चरमान्तम् ।
सर्वेन्द्राणां सदृशाः प्रकीर्णकादयः असंख्यमिताः ॥ २८२ ॥

अर्थ—अट्ठाईस हजार प्रथम कक्ष है। बहुरि दूणा दूणा करि अंत पर्यंत जानना ॥भावार्थ॥ हाथी प्रथम फौज विषै अट्ठाईस हजार दूसरा विषै छप्पन हजार ऐसे सातवीं फौज पर्यंत दूने दूने जानने। ऐसेही घोटकादिक जानने। या प्रकार सर्वही प्रतीन्द्रनिकै समान आनीक

पाइए है । बहुरि चतुर्निकायरूप सर्व देवनिकै प्रकीर्णक आभियोग किल्विषिक एक असंख्यात प्रमाण है ॥ २८२ ॥

आगे व्यंतरेंद्रनिका नगर जहाँ पाइए तिन द्वीपनिके नाम कहै हैं;—

अंजणवज्जधादुगसुवण्णमणसिलगवज्जरजदेसु ।
हिंगुलिगे हरिदाले दीवे भोमिंदणयराणि ॥ २८३ ॥

अंजनकवज्रधातुकसुवर्णमनःशिलकवज्ररजतेषु ।
हिंगुलिके हरिताले द्वीपे भौमेन्द्रनगराणि ॥ २८३ ॥

अर्थ—अंजनक १ वज्रधातुक १ सुवर्ण १ मनःशिलक १ वज्र १ रजत १ हिंगुलक १ हरिताल १ इन आठ द्वीपनिविषै क्रमतै किन्नरादिकनिके इंद्रनिके नगर है ॥ भावार्थ ॥ किन्नर कुलके इंद्रनिका अंजनक द्वीपविषै नगर है । तहां किंपुरुष इंद्रके तौ दक्षिण दिशाविषै अर किन्नरइंद्रके उत्तर दिशाविषै नगर जानने ऐसे ही वज्रधातुकादि द्वीपनिविषै किंपुरुषादिकनिकै इंद्रनिके पहले इंद्रका दक्षिणविषै दूसरेका उत्तरविषै नगर जानने ॥ २८३ ॥

आगे तिन नगरनिके नाम अर आकार कहै हैं;—

भोमिंदणं मज्झे पहकंतावत्तमज्झ परिमंका ।
पुव्वादिसु जंबुसमा पणपणणयराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भौमेन्द्राणां मध्ये प्रभकान्तावर्तमध्याः परमांकाः ।
पूर्वादिषु जंबूसमानि पंचपंचनगराणि समभागे ॥ २८४ ॥

अर्थ—व्यंतर इंद्रका जो अंक कहिए नाम सो तो मध्यका नगर विषै जानना अर ताहीकी पूर्वादि दिशानिविषै इंद्रका नामकै आगे क्रमतै प्रभकांत आवर्त मध्य ऐसे अंतविषै नाम संयुक्त नगरनिके नाम जानने ॥ भावार्थ ॥ किन्नर नामा इंद्र ताके पांच नगर हैं तहां मध्य विषै जो नगर है ताका नाम किन्नरपुर है बहुरि ताकी पूर्व दिशाविषै किन्नरप्रभ नगर है । दक्षिणविषै किन्नर-कांत नगर है पश्चिम दिशाविषै किन्नरावर्त नगर है । उत्तरविषै किन्नरमध्य नगर है । ऐसें ही और इंद्रनिके नगरनिके नाम जानने । एक एक इंद्रके पांच पांच नगर हैं ते जंबूद्वीप समान हैं। भावार्थ । लक्ष योजन विस्तारकों धरै हैं । बहुरि ते नगर समभूमि विषै पाइए हैं पृथ्वीतैं नीचें वा पर्वतादिके ऊपर नहीं हैं ॥ २८४ ॥

आगे तिन नगरनिका कोट द्वार तिनका उदयादिक कहै हैं;—

तप्पायारुदयतियं पणहत्तरिपण्णवीसपंचदलं ।
दारुदओ वित्थारो पंचपणद्धं तदद्धं च ॥ २८५ ॥

तत्प्राकारोदयत्रयं पंचसप्ततिपंचविंशतिपंचदलम् ।
द्वारोदयो विस्तारः पंचपनार्धं तदर्धं च ॥ २८५ ॥

अर्थ—तिन नगरनिका जो प्राकार कहिए कोट ताका उदयादि तीन पिचहत्तरि पचीस पांचका आधा है ॥ भावार्थ ॥ कोट साढा सैंतीस योजन ऊंचा है साढा बारा योजन चौड़ा है

अढ़ाई योजन मोटा है बहुरि तिस कोटके द्वार कहिए दरवाजे तिनका उदय अर विस्तार पंच घन
सवासो ताका आधा अर ताहूका आधा प्रमाण है ॥ भावार्थ ॥ द्वार साढा बासठि योजन ऊंचा है स
इकतीस योजन चौड़ा है ॥ २८५ ॥

आगें ताके ऊपरि जो प्रासाद है ताका स्वरूप कहै हैं;—

तस्सुवरिं पासादो पणहत्तरितुंगओ सुधम्मसहा ।
पणकादिदल तद्दल णव दीहरवासुदय कोस ओगाढा ॥ २८६ ॥

तस्योपरि प्रासादः पंचसप्ततितुंगः सुधर्मसभा ।
पंचकृतिदलं तद्दलं नव दीर्घव्यासोदयाः क्रोशः अवगाढः ॥ २८६ ॥

अर्थ—तिस द्वारकै ऊपरि पिचहत्तरि योजन ऊंचा प्रासाद है सोई प्रासादके अभ्य
सुधर्मा नामा सभा कहिए सो पंचमी कृति पचीस ताका आधा बहुरि ताहूका आधा बहुरि
प्रमाण दीर्घ व्यास उदय संयुक्त है॥ भावार्थ ॥ सुधर्म्मा सभा साढा बारा योजन लंबी है। सवा
योजन चौड़ी है। नव योजन ऊंची हैं। बहुरि तिसका अवगाढ़ कहिए अधिष्टान भूमि सो ए
कोश है ॥ २८६ ॥

आगें तिस प्रासादके जे द्वार तिनके उदयादि कहैं हैं;—

तिस्से दारुदओ दुग इगि वासो दक्खिणुत्तरिंदाणं ।
सव्वेसिं णगराणं पायारादीणि सरिसाणि ॥ २८७ ॥

तस्याः द्वारोदयः द्विकमेकं व्यासः दक्षिणोत्तरेंद्राणाम् ।
सर्वेषां नगराणां प्राकारादीनि सदृशानि ॥ २८७ ॥

अर्थ—तिस सुधर्म्मा सभाका द्वारका उदय जो ऊंचाई सो दोय योजन है । बहुरि व्या
जो चौड़ाई सो एक योजन है। बहुरि दक्षिण इंद्र वा उत्तर इंद्रनिकैं सबनिहीकैं सर्व नगरनि
प्राकारादिक समान हैं ॥ २८७॥

आगें तिन नगरनिकै बाह्य वन कहै हैं;—

पुरदो गंतूण बहिं चउदिसं जोयणाणि बिसहस्सं ।
इगिलक्खायद तद्दलवासजुदा रम्मवणखंडा ॥ २८८ ॥

पुरो गत्वा बहिः चतुर्दिशं योजनानि द्विसहस्रं ।
एकलक्षायता तद्दलव्यासयुता: रम्यवनखंडाः ॥ २८८ ॥

अर्थ—नगरनैं बाहैं दोय दोय हजार योजन परैं जाइ च्यारि दिशानिविषैं एक ल
योजन लंबे तातैं पचास हजार योजन चौड़े रमणीक वनखंड कहिए बाग हैं ॥ २८८ ॥

आगें तिन द्वीपनिविषैं पाईए ऐसे गणिकानिके नगर तिनके विस्तार संख्यादिक निरूपै हैं;—

तत्थेव य गणिकाणं चुलसीदिसहस्सविउलणयराणि ।
संसाणं सोम्माणं अणेयदीवे समुद्दे य ॥ २८९ ॥

तत्रैव च गणिकानां चतुरशीतिसहस्रविपुलनगराणि।
शेषाणां भौमानां अनेकद्वीपे समुद्रे च॥ २८९॥

अर्थ—तिसही अपनें अपनें इंद्र संबंधी द्वीपविषैं गणिकामहत्तरीनिके नगर हैं। ते अपनी अपनी इंद्रपुरीकै दोऊ पार्श्वनिविषैं जाननें। बहुरि ते चौरासी हजार योजन लंबे चौड़े हैं। बहुरि अवशेष जे व्यंतर हैं तिनके नगर अनेक द्वीप वा अनेक समुद्रनि विषैं पाईए हैं॥२८९॥

आगैं कुलभेद अपेक्षा निलयभेद कहैं हैं;—

भूदाण रक्खसाणं चउदस सोलस सहस्स भवणाणि।
सेसाण वाणवेंतरदेवाणं उवरि णिलयाणि॥ २९०॥

भूतानां राक्षसानां चतुर्दश षोडश सहस्रे भवनानि।
शेषाणां वानव्यंतरदेवानां उपरि निलयानि॥ २९०॥

अर्थ—भूतनिका अर राक्षसनिका चौदह सोलह हजार भवन हैं॥ **भावार्थ**॥ रत्नप्रभा पृथ्वीके खरभागविषैं भूतनिके चौदह हजार भवन है। बहुरि पंक भागविषैं राक्षसनिके सोलह हजार भवन हैं। बहुरि अवशेष वान व्यंतरदेव हैं तिनके पृथ्वीके ऊपरि निलय कहिए स्थान पाईए हैं॥ २९०॥

आगैं नीचोपपादादि वान व्यंतरनिके विशेष दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

हत्थपमाणे णिच्चुववादा दिगुवासि अंतरणिवासी।
कुंभंडा उप्पण्णाणुप्पण्ण पमाणया गंधा॥ २९१॥

हस्तप्रमाणे नीचोपपादाः दिग्वासिनः अंतरनिवासिनः।
कूष्मांडाः उत्पन्ना अनुत्पन्नाः प्रमाणका गंधाः॥ २९१॥

अर्थ—हस्तप्रमाणविषैं नीचौपपाद हैं बहुरि दिग्वासी १ अंतरनिवासी १ कूष्मांड १ उत्पन्न १ अनुत्पन्न १ प्रमाणक १ गंध १॥ २९१॥

महगंध भुजग पीदिग आगासुववण्णगा य उवरुवरिं।
तिसु दसहत्थसहस्सं वीससहस्संतरं सेसे॥ २९२॥

महागंधा भुजगाः प्रीतिका आकाशोत्पन्नाश्च उपर्युपरि।
त्रिषु दशहस्तसहस्राणि विंशतिसहस्रांतरं शेषे॥ २९२॥

अर्थ—महागंध १ भुजंग १ प्रीतिक १ आकाशोत्पन्न १ ए सर्व्व ऊपरि ऊपरि तीनविषैं दश दश हजारकै आंतिरै अर अवशेष बीस बीस हजारके आंतिरै जाननें। **भावार्थ**—पृथ्वीतै एक हस्त ऊपरि क्षेत्रविषै नीचोपपाद व्यंतर हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषैं दिग्वासी हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषैं अंतर निवासी हैं। तिनके ऊपर दस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषैं कूष्मांड है। तिनकै ऊपरि बीस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै उत्पन्न व्यंतर हैं। आगैं ऐसे ही ऊपरि ऊपरि बीस बीस हजार हाथका अंतराल जाननां॥ २९२॥

आगैं तिन नीचोपपादादिकनिकी आयु क्रमतैं कहैं हैं;—

दसवरिससहस्सादो सीदी चुलसीदिकं सहस्सं तु ।
पल्लट्ठमं तु पादं पल्लद्धं आउगं कमसो ॥ २९३ ॥
दशवर्षसहस्रात् अशीतिः चतुरशीतिकं सहस्रं तु ।
पल्याष्टमं तु पादं पल्यार्धमायुष्यं क्रमशः ॥ २९३ ॥

अर्थ—दश हजार वर्षतैं लगाय दश दश हजार वधता असी हजार वर्ष पर्यंत बहुरि चौरासी हजार वर्ष बहुरि पल्यका आठवां भाग चौथा भाग पल्यका आधा प्रमाण आयु तिनका क्रमतैं जानना । **भावार्थ**—नीचोपपादनिका दश हजार दिग्वासीनिका वीस हजार अंतरनिवासीनिका तीस हजार कूष्मांडनिका चालीस हजार उत्पन्ननिका पचास हजार अनुत्पन्ननिका साठि हजार प्रमाणकनिका सत्तरि हजार गंधनिका अस्सी हजार वर्ष प्रमाण आयु है । महा गंधनिका चौरासी हजार वर्ष प्रमाण आयु है जुगलनिका पल्यका आठवां भाग प्रीतिकनिका चौथाई पल्य आकाशोत्पन्ननिका आधापल्य प्रमाण आयु है ॥ २९३ ॥

आगैं व्यंतरनिका निलय भेद कहैं हैं;—

वेंतरणिलयतियाणि य भवणपुरावासभवणणामाणि ।
दीवसमुद्दे दहगिरितरुम्हि चित्तावणिम्हि कमे ॥ २९४ ॥
व्यंतरनिलयत्रयाणि च भवनपुरावासभवननामानि ।
द्वीपसमुद्रे ह्रदगिरितरौ चित्रावन्यां क्रमेण ॥ २९४ ॥

अर्थ—भवनपुर अर आवास अर भवन ए वितरनिके भवननिके तीनही नाम हैं तहां क्रमकरि द्वीप समुद्रनिविषैं भवनपुर पाईए है । बहुरि द्रह पर्वत वृक्ष इन विषैं आवास पाईए हैं बहुरि चित्रापृथिवीविषैं नीचें भवन पाईए हैं ॥ २९४ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनका वर्णन कहैं हैं;—

उड्ढगया आवासा अधोगया वितराण भवणाणि ।
भवणपुराणि य मज्झिमभागगया इदि तियं णिलयं ॥ २९५ ॥
ऊर्ध्वगताः आवासा अधोगता व्यंतराणां भवनानि ।
भवनपुराणि च मध्यमभागगतानीति त्रयं निलयम् ॥ २९५ ॥

अर्थ—जे पृथ्वीतैं ऊंचे स्थानक विषैं पाईए ते आवास जानने । बहुरि जे पृथ्वीतैं नीचे पाइए ते व्यंतरनिके भवन जानने । बहुरि जे मध्य लोककी समभूमि विषैं पाईए ते भवनपुर बहुरि ऐसें तीन प्रकार निलय हैं ॥ २९५ ॥

आगैं सर्व व्यंतरनिका यथा संभव रहनेका क्षेत्र कहै हैं;—

चित्तवइरादु जावय मेरुदयं तिरियलोयवित्थारं ।
भोम्मा हवंति भवणे भवणपुरावासगे जोग्गे ॥ २९६ ॥

चित्रावज्रातः यावत् मेरूदयं तिर्यग्लोकविस्तारं।
भौमा भवंति भवने भवनपुरावासके योग्यं॥ २९६॥

अर्थ—चित्रा अर वज्रा पृथ्वीका मध्य संधितैं लगाय यावत् मेरु गिरिकी उचाई है तहां पर्यंत ऊंचा अर तिर्यक् लोकका जेता विस्तार तहां पर्यंत विस्तारकों धरें जो क्षेत्र तिहविर्षे भौम कहिए व्यंतर देव ते अपनें अपनें योग्य भवनविर्षे वा भवन पुरविर्षे वा आवासविर्षे वास करें हैं॥ २९६॥

भवणं भवणपुराणि य भवणपुरावासयाणि केसिंपि।
भवणामरेसु असुरे विहाय केसिं तियं णिलयं॥ २९७॥

भवनं भवनपुरे च भवनपुरावासकानि केषांचित्।
भवनामरेषु असुरान् विहाय केषां त्रयं निलयम्॥ २९७॥

अर्थ—केई व्यंतरनिकें तो भवन ही हैं केईनिके भवन अर पुर, हैं केईनिकें भवन अर भवनपुर अर आवास हैं। ऐसे व्यंतरनिके स्थान जानने। बहुरि भवनवासी देवनिविर्षे असुर कुमार विना अन्य कुलवाले केईक भवन वासीनिके भवन वा भवनपुर वा आवास तीन निलय पाईए है इस कथनतें पृथ्वीतै नीचे खर भाग पंक भाग विर्षे अर पृथ्वी तैं ऊपरि पर्वतादि विर्षे अर सम-भूमि पृथ्वीविर्षे व्यंतरनिके अर भवन वासीनिके स्थान पाइए हैं ऐसा जानना॥ २९७॥

आगैं तीन प्रकार निलयनिका व्यासादिक तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

जेट्ठावरभवणाणं बारसहस्सं तु सुद्धपणुवीसं।
बहलं तिसय तिपादं बहलतिभागुदयकूडं च॥ २९८॥

ज्येष्ठावरभवनयोः द्वादशसहस्रं तु शुद्धपंचविंशतिः।
बाहल्यं त्रिशतं त्रिपादं बाहल्यत्रिभागोदयकूटं च॥ २९८॥

अर्थ—ज्येष्ठ अर जघन्य भवननिका विस्तार अठारह हजार अर शुद्ध पचीस योजन है। बाहुल्य तीनसै अर त्रिपाद योजन है। बाहुल्यका तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट है। **भावार्थ।** उत्कृष्ट भवन है सो तो बारह हजार योजन चौड़ा तीन सै योजन पृथ्वीतें छाति पर्यंत ऊंचा है। बहुरि तिन भवननिविर्षे जेता ऊंचाईका प्रमाण कह्या ताके तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट पाइए हैं। इस कूट ऊपरि जिन मंदिर हैं॥ २९८॥

जेट्ठभवणाण परिदो वेदी जोयणदलुच्छिया होदि।
अवराणं भवणाणं दंडाणं पण्णुवीसुदया॥ २९९॥

ज्येष्ठभवनानां परितः वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति।
अवराणां भवनानां दंडानां पंचविंशत्युदया॥ २९९॥

अर्थ—उत्कृष्ट भवननिके चौगिरद आध योजन ऊंची वेदी है। जघन्य भवननिके पचीस धनुष ऊंची वेदी है। जैसे बागके चौगिरद भीति हो है तैसे जो होइ ताका नाम वेदी जानना॥२९९।

वट्टादीण पुराणं जोयणलक्खं कमेण एक्कं च ।
आवासाणं विसयाहियबारसहस्स य तिपादं ॥ ३०० ॥

वृत्तादीनां पुराणां योजनलक्षं क्रमेण एकं च ।
आवासानां द्विशताधिकद्वादशसहस्राणि च त्रिपादम् ॥ ३००

अर्थ—गोल आदि आकार रूप जे पुर तिनका क्रम करि उत्कृष्ट विस्तार लक्ष योजन है॥ जघन्य विस्तार एक योजन है। बहुरि गोल आदि आकार रूप जे आवास तिनका उत्कृष्ट विस्तार दोयसै अधिक बारह योजन है। जघन्य विस्तार पौण योजन है ॥ ३०० ॥

आगैं तीनप्रकार निलयनिका विशेषस्वरूप अर व्यंतरनिके आहार उश्वास ताकौं कहैं हैं;—

भवणावासादीणं गोउरपायारणच्चणादिघरा ।
भोम्माहारुस्सासा साहियपणदिण मुहुत्ता य ॥ २०१ ॥

भवनावासादीनां गोपुरप्राकारनर्तनादिगृहाणि ।
भौमाहारोच्छ्वास: साधिकपंचदिनानि मुहूर्ताश्च ॥ ३०१ ॥

अर्थ—भवन आवासादिकनिकैं दरवाजे कोट नृत्य आदिक ग्रह पाईए है। बहुरि भौमतैं व्यंतर तिनकैं आहार किछू अधिक पांच दिन भए अर उश्वास किछू अधिक पांच मुहूर्त भए जाननां॥ इति व्यंतरलोक अधिकार समाप्त भया ॥ ३०१ ॥

इति श्री **नेमिचंद्राचार्य** विरचित **त्रिलोकसारमें** व्यन्तरलोकका अधिकार समाप्त भया ।३।



अथ ज्योतिर्लोकाधिकार ॥ ४ ॥



अथ व्यंतरलोकके अधिकारको निरूपण करि ताकै अनंतर उद्देशकों प्राप्त ज्यो ज्योतिष्क-लोकका अधिकार निरूपण करनेका है अभिप्राय जाकै ऐसा आचार्य सो ताकी आदिविषैं प्रथम ज्योतिष्कनिविषै बिंबनिकी संख्या दिखावनेकेलिए ज्योतिष्क लोकके चैत्यालयनिकौं नमस्कार रूप मंगल करै है;—

बेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ ३०२ ॥
द्विशतषट्पंचाशदंगुलकृतिहितप्रतरस्य संख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कजिनेन्द्रगेहान् गणनातीतान्नमस्यामि ॥ ३०२ ॥

अर्थ—दोयसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दिएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यातवें भाग प्रमाण असंख्याते जिनेन्द्र मंदिर तिनकों नमस्कार करौं हौं । भावार्थ—दोयसै छप्पनका वर्ग पणट्ठी ६५५३६ सूच्यंगुलका वर्ग प्रतरांगुल सो पणट्ठी प्रमाण प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरकौं दिएं जो प्रमाण होय तितनें ज्योतिषी है । बहुरि संख्यात ज्योतिषी एक बिंबविषै पाइए एक एक बिंबविषैं एक एक चैत्यालय पाइए तातैं ज्योतिषीनिकै प्रमाणकौं संख्यातका भाग दिएं बिंबनिका वा चैत्यालयनिका प्रमाण आवै है तिन चैत्यालयनिकौं नमस्कार करौं हौं ॥ ३०२ ॥

आगैं तिन बिंबनिविषैं तिष्ठते ज्योतिष्कनिका भेद कहै हैं;—

चंदा पुण आइच्चा गह णक्खत्ता पइण्णतारा य ।
पंचविहा जोइगणा लोयंतघणोदहिं पुट्ठा ॥ ३०३ ॥
चंद्राः पुनः आदित्या ग्रहा नक्षत्राणि प्रकीर्णकताराश्च ।
पंचविधा ज्योतिर्गणा लोकांतघनोदधिं स्पृष्टवंतः ॥ ३०३ ॥

अर्थ—चंद्रमा १ सूर्य १ ग्रह १ नक्षत्र १ प्रकीर्णक तारा १ ऐसें पांच प्रकार ज्योतिष्क समूह हैं । ते लोकके अंत घनोदधि वातवलयकौं स्पर्शते हैं । भावार्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा घनोदधि वातवलय पर्यंत ज्योतिष्कबिंब पाईए हैं ॥ ३०३ ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिकैं निरूपण विना ज्योतिष्क निरूपण संभवै नाहीं तातैं ज्योतिष्क बिंबनिके आधारभूत जे द्वीप समुद्र तिनकों च्यारि गाथानिकरि कहै हैं;—

जंबूधादगिपुक्खरवारुणिखीरघदखोदवरदीओ ।
णंदीसरअरुणअरुणब्भासा वर कुंडलो संखो ॥ ३०४ ॥
जंबूधातकिपुष्करवारुणिक्षीरघृतक्षौद्रवरद्वीपाः ।
नंदीश्वरारुणारुणाभासा वराः कुंडलः शंखः ॥ ३०४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप १ धातुकीखंडद्वीप १ पुष्करवर १ वारुणिवर १ क्षीरवर १ घृतवर १ क्षौद्रवर १ नंदीसुर द्वीपवर १ अरुणवर १ अरुणाभासवर १ कुंडलवर १ शंखवर ॥ ३०४ ॥

तो रुजगभुजगकुसगयकोंचवरादी मणसिला तत्तो ।
हरिदालदीवसिंदुरसियामगंजणयहिंगुलिया ॥ ३०५ ॥

ततो रुचकभुजगकुशगक्रौंचवरादयः मनःशिला ततः ।
हरितालद्वीपसिंदूरश्यामकांजनकहिंगुलिकाः ॥ ३०५ ॥

अर्थ—तहां पीछे रुचकवर १ भुजगवर १ कुशगवर १ क्रौंचवर १ ए अभ्यंतरके सोलह द्वीप हैं तातैं परैं बीचमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं तिनकों छोड़ी अंतके सोलह द्वीपनिके नाम कहे हैं। तहां पीछे मनः शिलाद्वीप १ हरिताल द्वीप १ सिंदूरवर १ श्यामवर १ अंजनवर १ हिंगुलिकवर १ ॥ ३०५ ॥

रूप्पसुवण्णयवज्जयवेलुरियणागभूदजक्खवरा ।
तो देवाहिंदवरा सयंभुरमणो हवे चरिमो ॥ ३०६ ॥

रूप्यसुवर्णकवज्रवैडूर्यकनागभूतयक्षवराः ।
ततो देवाहींद्वरौ स्वयंभूरमणो भवेत् चरमः ॥ ३०६ ॥

अर्थ—अथ रूप्यवर १ सुवर्णवर १ वज्रवर १ वैडूर्य्यवर १ नागवर १ भूतवर १ यक्षवर १ देववर १ अहीन्द्रवर १ स्वयंभूरमण १ अंत विषै जाननां ॥ ३०६ ॥

लवणंवुहि कालोदयजलही तत्तो सदीवणामुवही ।
सव्वे अड्डाइज्जुद्धारुवहीमेत्तया होंति ॥ ३०७ ॥

लवणांबुधिः कालोदकजलधिः ततः स्वदीपनामोदधयः ।
सर्वे अर्धतृतीयोद्धारोदधिमात्रा भवंति ॥ ३०७ ॥

अर्थ—समुद्रनिके नाम कहै हैं जंबूद्वीपकै परिखेपी लवणसमुद्र। बहुरि धातुकी खंडकै कालोदक समुद्र बहुरि अन्य द्वीपनिकै अपने अपने द्वीपका जो नाम तिसही नामके धारक समुद्र जानने। बहुरि ते सर्व द्वीप समुद्र कितने हैं अढाई उद्धार सागर प्रमाण हैं। भावार्थ—दश कोडा कोडि दूसरी उद्धार पल्यका एक उद्धार सागर होइ। ऐसे अढाई सागरके जेते रोम तितने द्वीप समुद्र हैं ॥ ३०७ ॥

अब तिन द्वीप समुद्रनिका विस्तार वा आकार निरूपैं हैं;—

जंबू जोयणलक्खो वट्टो तद्दुणदुगुणवासेहिं ।
लवणादिहिं परिखित्तो सयंभुरमणुवहियंतेहिं ॥ ३०८ ॥

जंबू योजनलक्षः वृत्तः तद्द्विगुणद्विगुणव्यासैः ।
लवणादिभिः परिक्षिप्तः स्वयंभूरमणोदध्यंतैः ॥ ३०८ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप लक्ष योजन है बहुरि वृत्त कहिए गोल है। बहुरि तातै दूणा दूणा व्यास संयुक्त जे लवण समुद्रादिक स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र तिनकरि परिक्षिप्त कहिए वेष्टित

है। भावार्थ—सर्व द्वीप समुद्रनिके बीचि जंबूद्वीप है सो गोल है। ताकी मध्य विषै चौड़ाईका प्रमाण लक्ष योजन है ताकौं वेढैं लवण समुद्र है सो तातैं दूणा दोय लाख योजन व्यास संयुक्त है। ताकौं वेढैं धातुकीखंड द्वीप है। सो तातैं दूणा च्यारि लाख योजन व्यास संयुक्त है। याही प्रकार द्वीपकौं समुद्र वेढ्यां समुद्रकौं द्वीप वेढ्यां दूणा दूणा विस्तार लिए स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र गोल आकार जानने ॥ ३०८ ॥

आगैं तहां इच्छित द्वीपका वा समुद्रका सूची व्यास अर वलय व्यास ल्यावनेकौं करणसूत्र कहै हैं;-

रूऊणाहियपदमिदुगसंवग्गे पुणोवि लक्खहदे।
गयणतिलक्खविहीणे वासो वलयस्स सूइस्स ॥ ३०९ ॥

रूपोनाधिकपदमितद्विकसंवर्गे पुनरपि लक्षहते।
गगनत्रिलक्षविहीने व्यासो वलयस्य सूचेः ॥ ३०९ ॥

अर्थ—द्वीप समुद्रनिका इष्ट गच्छका जो प्रमाण ताकौं एक जायगा एक घाटि अर एक जायगा एक बधि करि तितने दूए इनिकौं परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकौं लाख करि गुणि एक जायगा शून्य एक जायगा तीन लाख घटाइये तब वलयका अर सूचीका व्यास होइ। भावार्थ—इष्ट द्वीप वा समुद्रतैं पहला जो समुद्र वा द्वीप तिहका अंत तट अर ताके सन्मुख इष्ट द्वीप व समुद्रका अंत तट इन दोऊनिकै बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो वलय व्यास जानना, बहुरि इष्ट द्वीप या समुद्रका सन्मुख दोऊ अंत तटनिके बीच जो क्षेत्र सो सूची व्यास जानना। जैसे कालोदक समुद्रतैं पहला धातुकीखंड द्वीप है सो धातुकीखंडका अंत तट अर कालोदकका अंत तटके बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो तो वलय व्यास है। बहुरि कालोदकका सन्मुख दोय अंत तट तिनिकै बीचि जंबूद्वीप अर दोऊ दिशा सबंधी लवणोद धातुकीखंड कालोदका व्यास जोडैं जो क्षेत्र होइ सो कालोदका सूची व्यास है। ऐसेही सर्वत्र जानना। अब इनके ल्यावनेका विधान कहिए है। इष्ट द्वीप व समुद्र जेथवां होइ तीह प्रमाण इहां गच्छ जानना। तामैं एक घटाएं जो प्रमाण होइ ताका विरलन करिए एक एक करि वखेरिए। बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिये बहुरि तिनकौं परस्पर गुणिएं ऐसे करतें जो प्रमाण होइ ताकौं लक्ष करि गुणिए तामैं बिंदी घटाइये ऐसे करतें इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास आवै है। ताका उदाहरण—जैसे जंबूद्वीपतैं लगाय कालोदक समुद्र चौथा है सो गछ प्रमाण च्यारि भया तामैं एक घटाएं तीन सो तीनका विरलन करिए १।१।१। बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिए।२।२।२। बहुरि इनकौं परस्पर गुणि तब आठ होइ। इनकौं लक्ष करि गुणे आठलाख होइ तामैं बिन्दी घटाए भी तितने ही रहैं सो कालोदकका वलय व्यास आठलाख योजन है बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्र जेथवां होइ तिस प्रमाण गछतैं एक अधिक प्रमाणका विरलन करि एक एक प्रति दोय दोइ परस्पर गुणि जो प्रमाण होइ ताकौं लक्ष करि गुणि तामैं तीन लाख घटाए इष्ट द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास हो है। ताका उदाहरण—जैसे कालोदक समुद्र चौथा है। सो गच्छका प्रमाण च्यारि तामैं एक मिलाएं पांच सो पांचका विरलन करि १।१।१।१।१। एक एक प्रति दोय २।२।२।२।२। इन परस्पर गुणें बत्तीस होइ इनकौं लक्ष करि गुणें बत्तीस लाख

होइ इनमें तीन लाख घटाए गुणतीस लक्ष योजन प्रमाण कालोदक समुद्रका सूचीव्यास है अब यह करण सूत्र कैसें कथा सो वासना कहिए हैं । तहां वलय व्यासकी वासना ऐसी जंबूद्वीपका व्यास लक्षयोजन तातैं दूणा दूणा लवण समुद्रादिकका व्यास है तातें एक गछ प्रमाण दुवा परस्पर गुणि लब्ध प्रमाणकों जंबूद्वीपका व्यास करि गुणें इष्ट स्थानविषै व्यास हो है इहां किछू हीन अधिक करना नाहीं ताते गगन हीन कहिए त्रिदी घटावना क बहुरि सूचीव्यासकी वासना ऐसी है । इष्ट द्वीप वा समुद्रका जो वलय व्यास ताकों दोऊ स दिशा संबंधी व्यास मिलावनेतें दूणा स्थापिए बहुरि तातें पहले जे द्वीप वा समुद्र तिनका दिशा संबंधी व्यास मिलाइ दूणा दूणा वलय व्यास स्थापिए । बहुरि जंबूद्वीपके दोय दिशा सं

कालोदि १६
धातुकी ८
लवणद्वि ४
तीन स्थान ०
जंबूद्वीप १
२९

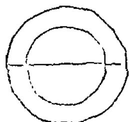
व्यास नाहीं तातें वलय व्यासका प्रमाणही स्थापनां । बहुरि दूसरे स्थानि स्थापन करना जैसे कालोदकका सूची व्यास ल्यावनेका ऐसें स्थापन कर ऐसे स्थापन किएं द्वितीय स्थानविषै शून्यकी जायगा दोय लाख मि गछतैं एक अधिक स्थानभए ऐसे चारि एक अधिक गछका परस्पर गु कथा । बहुरि पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि सूत्र करि जोड दिए तहां दोय ए तो दूसरा स्थानका अर रूवपरिहीणे इस वचन करि एक लाख ए इन दोऊ ऋण घटावनेकों ह लाखका घटावना कथा ऐसे करते इष्ट स्थानविषैं सूचीव्यास हो है ॥ ३०९ ॥

तैसे ही अभ्यन्तर मध्यम बाह्य सूचीव्यास ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

लवणादीणं वासं दुगतिगचदुसंगुणं तिलक्खूणं ।
आदिममज्झिमबाहिरसूइत्ति भणंति आइरिया ॥ ३१० ॥

लवणादीनां व्यासं द्विकत्रिकचतुःसंगुणं त्रिलक्षोनम् ।
आदिममध्यमबाह्यसूची इति भणंति आचार्याः ॥ ३१० ॥

अर्थ—लवणादिक समुद्र वा द्वीपनिका वलय व्यासकों दोय तीन च्यारि गुणा करि तामें तीन लाख घटाए, अभ्यन्तर मध्य बाह्य सूची व्यास होइ ऐसे अर्थ कहै हैं । भावार्थ—इष्ट द्वीप वा समुद्रकै सन्मुख आदिके दोऊ तटनिके वीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो अभ्यन्तर सूची व्यास जानना । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख दोऊ दिशा संबंधी मध्य प्रदेशनिके वीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो मध्य सूची व्यास जानना । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रकै सन्मुख अंतके दोऊ तटनिके वीचि जो क्षेत्रप्रमाण सो बाह्यसूची व्यास जानना । तहां लवण समुद्रादिक विषै इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तामें तीन लाख घटाए अभ्यन्तर सूची व्यास हो है । ऐसें



कैसें है—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशाका मिलाया दूणा वलय व्यास सो तातें अभ्यन्तरवर्ती जे पहले सर्व द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास जोडें जो प्रमाण है तातें तीन लाख अधिक हो है बहुरि इहां अभ्यन्तरवर्ती पहले द्वीप समुद्रनिका दोऊ दिशा संबंधी

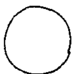
वलय व्यास मिलाएं जो विवक्षित द्वीप समुद्रका अभ्यन्तर सूचीव्यास हो है। ताकौं दोऊ दिशाका अपेक्षा करि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकौं दूणा करि तामैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाण कह्या। बहुरि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकौं तिगुणा करि तामैं तीन लाख योजन घटाएं मध्यम सूची व्यास हो है। सोई कहिए है। विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकौं दूणा किए तामैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है। तिह अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाणविषै विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोय दिशानिका वलय व्यासका आधा आधा प्रमाण मिलि संपूर्ण वलय व्यास हूवा ताकौं मिलाएं तिगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि प्रमाण मध्यम सूची व्यास हो है। बहुरि विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकौं चौगुणा करि तामैं तीन लाख योजन घटाएं बाह्य सूची व्यास हो है सोई कहिए है। विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दूणा वलय व्यासमैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है तिहविषै विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास मिलैं दूणा वलय व्यास मिलाएं चौगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि योजन प्रमाण बाह्य सूची व्यास हो है। ऐसा आचार्यका अभिप्राय है॥३१०॥

आगैं कह्या जो सूचीव्यास ताकी अपेक्षा करि तिस तिस क्षेत्रका बादर सूक्ष्म परिधि बहुरि बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनेकौं करण सूत्र कहै हैं;—

तिगुणियवासं परिही दहगुणविक्खंभवग्गमूलं च।
परिहिहदवासतुरियं बादर सुहुमं च खेत्तफलं ॥ ३११ ॥

त्रिगुणितव्यासः परिधिः दशगुणविस्तारवर्गमूलं च।
परिधिहतव्यासतुरीयं बादरं सूक्ष्मं च क्षेत्रफलम् ॥ ३११ ॥

अर्थ—तिगुणा व्यासप्रमाण बादर परिधि है बहुरि दश गुणा व्यासका जो वर्ग ताका मूल प्रमाण सूक्ष्म परिधि हो है। बहुरि परिधिकौं व्यासकी चौथाई करि गुणैं बादर वा सूक्ष्म



क्षेत्रफल हो है। **भावार्थ**—परिधिका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए बहुरि समकोटका जो प्रमाण सो क्षेत्रफल कहिए। जैसे योजन रूप क्षेत्रफल होइ सो एक एक योजनके खंड जेते होहिं तितना क्षेत्र फल जानना। ऐसेही अंगुलादि रूप जानना। तहां जो स्थूलपने करि कहिए सो बादर जानना बहुरि तारतम्य करि सूक्ष्मपने करि कहिए सो सूक्ष्म जानना तहां व्यासका जो प्रमाण ताकौं तिगुणा करि बादर परिधि हो है। सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन प्रमाण व्यासकौं तिगुणा किए तीन लाख योजन प्रमाण परिधि हो है बहुरि व्यासका जो प्रमाण ताका वर्ग करिए बहुरि ताकौं दस गुणा करिए जो प्रमाण होइ ताका वर्ग मूल करिए तब सूक्ष्म परिधि हो है सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन व्यास ताका वर्ग हजार कोडि योजन हो है। ताकौं दश गुणा किए दश हजार कोडि होइ है। १०००००००००००० बहुरि अंक विषमनै कृति कोडि इत्यादि विधान करि याका वर्ग मूल करिए तब तीन लाख सोलह हजार दोय सै सत्ताईस योजन होइ—३१६२२७ बहुरि अवशेष च्यारि लाख चौरासी हजार चार सै इकहत्तरि योजन रहे तिनकौं चौगुणा करि कोश करिए तब उगणीस लाख सैंतीस हजार

आटसै चौरासी १९३७८८४ कोश हुए तिनकों दूणा मूल अंक भए पैतिस प्रमाण छह लाख बत्तीस हजार च्यारिसै चौवन ६३२४५४ ताका भाग दिएं तीन कोश होइ बहुरि अवशेष चालीस हजार पांचसै बाईस कोश रहे—४०५२२ तिनकों दोय हजार गुणा करि इनके धनुष करिए तब आठ कोडि दश लाख चवालीस हजार धनुष होइ तिनकों पूर्व भाग हारका भाग दिए एक सौ अठाईस धनुष भए बहुरि अब शेष धनुष तियासी हजार आटसै अठ्यासी तिनकों चौगुणा करि हाथ करिए तब तीन लाख गुणसठि हजार पांचसै बारह हस्त होइ सो इन विषैं पूर्व भागहार संभवै नाही तातैं इनकों चौबीस गुणा करि अंगुल करिए तब छियासी लाख गुणतीस हजार दोयसै अडतालीस ८६२९२४८ अंगुल होइ इनकों पूर्व भागहारका भाग दिएं तेरह अंगुल होइ। बहुरि अवशेष अंगुल च्यारि लाख सात हजार तीनसै छियालीस सो तो भाज्य अर पूर्वोक्त छह लाख बत्तीस हजार च्यारि हजार चार सै चौवन दोयनिकों तीन लाख सोलह हजार दोइ सै सताइस करि अपवर्त्तन किएं भाज्य किछू अधिक एक अर भाग हार दोइ होइ ऐसे किछू अधिक अंगुल भया। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सताईस योजन तीन कोश एक सौ अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल प्रमाण आया। बहुरि स्थूल परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भागकों गुणें बादर क्षेत्रफल हो है। सो जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख योजन तीह करि व्यास एक लाखकी चौथाई पचीस हजार योजन गुणें सातसै पचास कोडि योजन प्रमाण जंबूद्वीपका बादर क्षेत्रफल हो है। बहुरि सूक्ष्म परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भाग गुणें सूक्ष्म क्षेत्र फल हो है। सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि विषैं तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तिनकौं व्यासकी चौथाई पचीस हजार करि गुणें सातसै निवै कोडि छप्पन लाख पिचहत्तरि हजार ७९०५६७५००० भए बहुरि तीन कोशकौं व्यासकी चौथाई कर गुणें पिचहत्तरि हजार कोश हुआ इनकों च्यारिका भाग दिएं अठारह हजार सात सै पचास योजन भए तिनकों पूर्वोक्त योजननिमैं मिलाइए ७९०५६९३७५० बहुरि एक सौ अठाईस धनुष तिनकों व्यासकी चौथाई करि गुणें बत्तीस लाख धनुष हूवा इनकों आठ हजारका भाग देइ योजन किए च्यारिसै योजन होइ सोभी तिन योजननिविषै मिलाइये ७९०५६९४१५० बहुरि तेरह अंगुल अर किछू अधिक आध अंगुल इनकों समछेद करि मिलाए सत्ताईसका आधा हुवा $\frac{२७}{२}$ बहुरि दोय करि तिर्यग अपवर्त्तन करि पचीस हजारका आधा साढा बारह हजार करि सत्ताईसकों गुणें तीन लाख सैंतीस हजार पांचसै अंगुल भए इनकों एक कोशके अंगुल एक लाख बाणवे हजार तिनका भाग दिए साधिक एक कोश होइ। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल सातसै निवै कोडि छप्पन लाख चौराणवै हजार एक सौ पचास योजन अर साधिक एक कोश प्रमाण आया। ऐसे ही सर्व द्वीप समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥३११॥

आगैं जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

जोयण सगदुदु छक्किगि तिदयं तिकोसमडदुगि दंडा।
अद्दियदलंगुलतेरस जंबूए सुहुमपरिणाहो ॥ ३१२ ॥

योजनानां सप्तद्विद्वि षडेकं त्र्यं त्रिकोशा अष्टद्वयेके दंडाः।
अधिकदलाङ्गुलत्रयोदश जंबौ सूक्ष्मपरिणाहः ॥ ३१२ ॥

अर्थ—योजननिके सात दोय दोय छह एक तीन ए अंक है ३१६२२७ बहुरि तीन कोश बहुरि आठ दोय एक इन अंक १२८ रूप धनुष बहुरि साधिक आधा तेरह अंगुल इतना सर्व जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण है ॥ ३१२ ॥

आगैं तिसही जंबूद्वीपके सूक्ष्म क्षेत्रफलके सिद्ध भए अंक कहै हैं;—

पण्णासमेक्कदालं णव छप्पणासगुण्ण णवसट्ठी।
साहियकोसं च हवे जंबूदीवस्स सुहमफलं ॥ ३१३ ॥

पंचाशदेकचत्वारिंशन्नवपद् पंचाशच्छून्यं नवसप्ततिः।
साधिकक्रोशश्च भवेज्जंबूद्वीपस्य सूक्ष्मफलम् ॥ ३१३ ॥

अर्थ—पचास इकतालीस नव छप्पन शून्य गुण्यासी ए तो योजननिके अंक हैं ७९० ५६९४१५० बहुरि साधिक एक कोश इतना जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥ ३१३ ॥

आगैं जंबूद्वीपका परिधिकी अपेक्षा करि विवक्षित द्वीप वा समुद्रका परिधि ल्यावनेंकों करण सूत्र कहै है;—

जंबूउभयं परिही इच्छियदीउवहिसूइ संगुणिय।
जंबूवासविभत्ते इच्छियदीउवहिपरिही दु ॥ ३१४ ॥

जंबूभयं परिधी इष्छितद्वीपोदधिसूच्या संगुण्य।
जंबूव्यासविभक्ते ईप्सितद्वीपोदधिपरिधी तु ॥ ३१४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपका स्थूल सूक्ष्म दोउ परिधिकों विवक्षित द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास करि गुणि जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका स्थूल वा सूक्ष्म परिधि हो है। ताका उदाहरण। जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख ३ योजन ताकों लवण समुद्रका सूची व्यास पांच लाख योजन करि गुणें १५ लक्ष जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन ताका भाग दीएं लवण समुद्रका स्थूल परिधि पंद्रह योजन प्रमाण हो है। बहुरि जंबूद्वीपका स्थूल परिधिकों धातुकी खंडका सूची व्यास तेरह लाख योजन करि गुणें जंबूद्वीपका व्यासका भाग दिए धातुकी खंडका स्थूल परिधि गुणतालीस लाख योजन हो है। बहुरि जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एकसै अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल तिनकों लवण समुद्रका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं लवण समुद्रका सूक्ष्म परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ गुणतालीस योजनादि प्रमाण हो है। ऐसे ही जंबूद्वीपके स्थूल परिधिका धातुकी खंडका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं धातुकी खंडका सूक्ष्म परिधि हो है। ऐसेही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म परिधि ल्यावना ३१४

अब स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफलकों ल्यावनेकों करण सूत्र कहै हैं;—

अंताइसूइजोगं रुंदद्ध गुणित्त दुप्पडिं किचा ।
तिगुणं दसकरणिगुणं बादरसुहुमं फलं वलये ॥ ३१५ ॥
अंतादिसूचियोगं रुंदार्धेन गुणयित्वा द्विःप्रतिं कृत्वा ।
त्रिगुणं दशकरणिगुणं बादरसूक्ष्मं फलं वलये ॥ ३१५ ॥

अर्थ—अंत सूची तौ बाह्य सूची व्यास अर आदि सूची अभ्यंतर सूची व्यास इन दोऊनिके प्रमाणका जु योग कहिए जोड़ ताकौं रुद कहिए वलय व्यास ताका अर्थ प्रमाण करि गुणिए जो प्रमाण होइ ताहि द्विः प्रति कृत्वा कहिए दोय जायगा स्थापि करि तिस प्रमाणकौं एक जायगा तौ तिगुणा करिए तब बादर क्षेत्रफल होइ एक जायगा दश करि गुणा करिए जो प्रमाण था ताका वर्ग करि ताकौं दश गुणा करि ताका वर्गमूल ग्रहण करिए । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करना होइ ताकौं करणि कहिए । ऐसे किए सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है या प्रकार वलय वृत्त जो गोलका परिक्षेपी गोल क्षेत्र तिह विर्षे बादर अर सूक्ष्म क्षेत्रफल हैं ताका उदाहरण लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पंच लाख योजन अभ्यन्तर सूची व्यास एक लाख योजन इन दोऊनिकौं जोड़ें छह लाख भए इनकौं रुंद जो वलय व्यास इनकौं दोय लाख योजन ताका आधा एक लाख तिह कर गुणिए तब छह हजार कोड़ि भए सो इनकौं दोय जायगा स्थापि एक जायगा तिगुणा करिए तब लवण समुद्रका बादर क्षेत्रफल अठारह हजार कोड़ि योजन प्रमाण हो है । बहुरि एक जायगा तिह छह हजार कोड़िका वर्ग करि दश गुणा करिए तब छत्तीस कोड़ा कोड़ि भए इनका वर्गमूल ग्रहण किएं अठारह हजार नवसै तहेतरि कोड़ि छ्यासठि लाख गुणसठि हजार छैसै दश १८९७३६६५९६१० योजन प्रमाण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्र फल हैं ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥ ३१५ ॥

आगैं जंबूद्वीप प्रमाण करि लवण समुद्रादिकनिके खंड ल्यावनेंकौं करण सूत्र कहै हैं;—

बाहिरसूईवग्गं अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणं ।
जंबूवासविभत्ते तत्तियमेत्ताणि खंडाणि ॥ ३१६ ॥
बाह्यसूचीवर्गः अभ्यन्तरसूचिवर्गपरिहीनः ।
जंबूव्यासविभक्तः तावन्मात्राणि खंडानि ॥ ३१६ ॥

अर्थ—बाह्य सूची व्यासका जो वर्ग तामैं अभ्यन्तर सूची व्यासका वर्ग घटाए जो प्रमाण होइ ताकौं जंबूद्वीपके व्यासका भाग दीजिए सो वर्ग राशिके गुणकार भाग हार वर्ग रूप ही होइ। इस न्याय करि इहां भी वर्ग राशि है तातैं जंबूद्वीपके व्यासका जो वर्ग ताका भाग दीजिए दीएं आवतें जो प्रमाण आवै तावन्मात्र जंबूद्वीप समान खंड जानने। ताका उदाहरण—लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन ताका वर्ग पचीस हजार कोड़ि तामैं अर अभ्यन्तर सूची एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि घटाएं चौईस हजार कोड़ि रहे याकौं जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिएं चौबीस भए सोई लवण समुद्रके जंबूद्वीपके समान खंड करिए तौ चौबीस खंड हो है। ऐसें ही अन्य द्वीप वा समुद्रनि विषैं जानने॥३१६॥

आगे अन्य प्रकार करि जंबूद्वीप समान गोल खंडनिको परण सूत्र रूप दोय गाथा कहै हैं;—

रूऊणसला बारससलागगुणिदे दु वलयखंडाणि ।
बाहिरसूइसलागा कदी तदंताखिला खंडा ॥ ३१७ ॥

रूपोनशलाका द्वादशशलाकगुणिता तु वलयखंडानि ।
बाह्यसूचीशलाका कृतिः तदंताखिलानि खंडानि ॥ ३१७ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास जितने लक्ष प्रमाण कह्या सोई इहां शलाकाका प्रमाण जाननां सो एक घाटि शलाकाका प्रमाणकों बारह करि गुणिए। बहुरि ताकों शलाका प्रमाण करि गुणिए तब जंबूद्वीप समान गोलखंड हो है।ताका उदाहरण। लवण समुद्रका वलय व्यास दोय लाख योजन है सो शलाकाका प्रमाण दोय जाननां। बहुरि एक घाटि शलाकाका प्रमाण एक ताकों बारह गुणा किएं बारह ताकों शलाका प्रमाण दोय करि गुणें चौवीस भए सोई लवण समुद्र विषैं जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौवीस हो हैं। ऐसैंही अन्यत्र जाननां। बहुरि बाह्य सूची व्यास जितने लक्ष प्रमाण होइ तीह प्रमाण सूची शलाका कहिए ताका वर्ग किएं जो प्रमाण होइ तितना जंबूद्वीपतैं लगाइ तिस विवक्षित द्वीप वा समुद्र पर्यंत क्षेत्र विषैं सर्व जंबूद्वीप समान खंडनिका प्रमाण जाननां। ताका उदाहरण—लवणसमुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन है सो लवण समुद्रकी सूची शलाका पांच जाननी ताका वर्ग पचीस सोई जंबूद्वीपतैं लवण समुद्र पर्यंत सर्व क्षेत्र विषैं जंबूद्वीप समान पचीस खंड हो हैं। एक जंबूद्वीपका चौईस लवण समुद्रके ऐसें पचीस खंड जाननें॥ ३१७॥

याही प्रकार अन्यत्र भी जानने;—

बाहिरसूई वलयव्वासूणा चउगुणिदवाससहदा ।
इगिलक्खवग्गभजिदा जंबूसमवलयखंडाणि ॥ ३१८ ॥

बाह्यसूची वलयव्यासोना चतुर्गुणितव्यासहता ।
एकलक्षवर्गभक्ता जंबूसमवलयखंडानि ॥ ३१८ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका बाह्य सूची व्यासका प्रमाणमैंसौ वलय व्यासका प्रमाण घटाइए। बहुरि ताकौं चौगुणा इए वलय व्यास करि गुणिएं। बहुरि एक लाखका वर्गका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ तितनें जंबूद्वीप समान गोल खंड जानने। ताका उदाहरण। लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन तामें वलय व्यास दोय लाख योजन घटाएं तीन लाख योजन ताकों चौगुणा वलय व्यास आठलाख करि गुणें चौईस हजार कोड़ि इनकों एक लाखका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिएं चौईस भए। सोई लवण समुद्र विषैं जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौईस हो हैं। ऐसें अन्यत्र जाननें॥ ३१८॥

आगें समुद्रनिका रसविशेष कहै हैं;—

लवणं वारुणितियमिदि कालदुगंतिमसयंभुरमणमिदि ।
पत्तेयजलसुवादा अवसेसा हौंति इच्छुरसा ॥ ३१९ ॥

लवणं वारुणित्रयमिति कालद्विकमंतिमस्वयंभूरमणमिति ।
प्रत्येकजलस्वादा अवशेषा भवंति इक्षुरसाः ॥ ३१९ ॥

अर्थ—लवण समुद्र वारुणी आदि तीन समुद्र ऐसे च्यारि समुद्र बहुरि कालोदक पुष्कर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र ए तीन क्रमतैं प्रत्येक अपनें अपनें नामके अनुसारि स्वाद धरै है। बहुरि जल स्वाद धरै है । अवशेष इक्षुरस स्वादको धरै हैं । **भावार्थ**—लवण समुद्रविषै जो जल है ताका स्वाद लवण समान है । वारुणीवरविषैं स्वाद मदिरावत् है । क्षीरवरविषैं स्वाद दुग्धवत् है । घृतवरविषैं स्वाद घृतवत् है ऐसे च्यारि तो अपनें नामके अनुसारि रसकौं धरै है। बहुरि कालोदक पुष्करवर स्वयंभूरमण इन तीनों विषै जल है ताका स्वाद जल समान ही है। बहुरि असंख्यात समुद्र तिनविषैं जो जल है ताका स्वाद सांठेका रस समान है ॥ ३१९ ॥

आगैं तिन समुद्रनिविषैं जलचर जीवनिका संभवने न संभवनेकौं हेतुपूर्वक कहै हैं;—

जलयरजीवा लवणे कालेयंतिमसयंभुरमणे य ।
कम्ममहीपडिबद्धे ण हि सेसे जलयरा जीवा ॥ ३२० ॥

जलचरजीवा लवणे कालेऽतिमस्वयंभुरमणे च ।
कर्ममहीप्रतिबद्धे न हि शेषे जलचरा जीवाः ॥ ३२० ॥

अर्थ—जलचर जीव लवण समुद्रविषैं बहुरि कालोदकविषैं बहुरि अंतका स्वयंभू रमणविषैं पाईए हैं । जातैं ए तीन समुद्र कर्मभूमि संबंधी हैं । बहुरि अवशेष सर्व समुद्र भोगभूमि संबंधी हैं भोगभूमिविषैं जलचर जीवोंका अभाव है । तातैं इन तीन विना अन्य समुद्रनिविषै जलचर जीव नाहीं हैं ॥ ३२० ॥

आगैं स्थान निर्देश करि तीन समुद्रनिविषैं मत्स्यनिका शरीरकी अवगाहना कहै हैं;—

लवणदुगंतसमुद्दे णदीमुहुदहिम्हि दीह णव दुगुणं ।
दुगुणं पणसय दुगुणं मच्छे वासुदयमद्धकमं ॥ ३२१ ॥

लवणद्विकांत्यसमुद्रे नदीमुखोदधौ दैर्घ्यं नव द्विगुणं ।
द्विगुणं पंचशतं द्विगुणं मत्स्ये व्यासोदयौ अर्धक्रमौ ॥ ३२१ ॥

अर्थ—लवणादि दोय समुद्रनिविषैं बहुरि अंतका समुद्रविषैं जहां नदी प्रवेशका मुखविषैं बहुरि समुद्रका मध्यविषै क्रमतैं नव ताका दूणा तिनका दूणा पांचसै ताका दूणा मत्स्यनिका शरीर लंबा है । तातैं अर्द्ध प्रमाण व्यास है व्यासतै आधा शरीर ऊंचा है । **भावार्थ**—मत्स्यनिके शरीरनिकी लंबाई लवण समुद्रविषैं जहां नदीनिका प्रवेश हो है तहा तीरविषैं तौ नव योजन है। बहुरि समुद्रका मध्य भागविषैं अठारह योजन है। बहुरि कालोदक समुद्रविषै नदी प्रवेशरूप तीरविषैं तौ अठारह योजन अर मध्य भागविषै छत्तीस योजन है बहुरि स्वयंभू रमणविषै पांचसै योजन मध्यविषै हजार योजन है । बहुरि सर्वत्र जो लंबाईका प्रमाण कह्या तातैं आधा चौड़ाईका प्रमाण है । बहुरि चौड़ाईके प्रमाणतै आधा उंचाईका प्रमाण है ॥ ३२१ ॥

अब मनुष्य क्षेत्र इतर क्षेत्रके विभागका अर कर्मभूमि भोगभूमिकी मर्यादाकों प्राप्त होने जे दोय पर्वत तिनका स्वरूप निरूपण करता संता तिनहीके विभागकों दृढ करनेकों तीन गाथा कहै हैं;—

पुक्खरसयंभुरमणाणद्धे उत्तरसयंपहा सेला।
कुंडलरुचगद्धं वा सव्वे पुव्वं परिक्खित्ता॥ ३२२॥

पुष्करस्वयंभुरमणयोरर्धे उत्तरस्वयंप्रभौ शैलौ।
कुंडलरुचकार्धं वा सर्वे पूर्वं परिक्षिप्ताः॥ ३२२॥

अर्थ—पुष्करार्धविषै स्वयंभूरमणार्द्धविषै मानुषोत्तर स्वयंप्रभ पर्वत हैं। भावार्थ—पुष्कर नाम द्वीपका वलय व्यासका अर्द्ध भागविषै बीचि मानुषोत्तर नाम पर्वत है। बहुरि स्वयंभूरमण द्वीपका वलय व्यासका अर्द्धभागविषै बीचि स्वयंप्रभ नामा पर्वत है। कैसे हैं? कुंडल रुचकार्ध मिव कहिए जैसे कुंडल वर द्वीपविषै बीचि कुंडल गिरि है। बहुरि रुचक वर द्वीपकै बीचि रुचक गिर है तैसे ही जाननें। बहुरि ए सर्व पर्वत पूर्व अपनें अपनें अभ्यन्तरवर्ती जे द्वीप वा समुद्रनिकों परिक्षेप करि वेढि करि जैसे नगरकों वेढि कोट हो है तैसे तिष्टै हैं॥ ३२२॥

मणुसुत्तरोत्ति मणुसा मणुसुत्तरलंघसत्तिपरिहीणा।
परदो सयंपहोत्ति य जहण्णभोगावणीतिरिया॥ ३२३॥

मानुषोत्तरांतं मनुष्याः मानुषोत्तरलंघशक्तिपरिहीनाः।
परतः स्वयंप्रभांतं च जघन्यभोगावनितिर्यंचः॥ ३२३॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत अढाई द्वीपविषै ही मनुष्य हैं ते मनुष्य मानुषोत्तर, पर्वतकों उलंघन शक्तिकरि हीन हैं। मानुषोत्तर पर्वतकों उलंघि किसी मनुष्यकी जानेकी सामर्थ्य नाहीं। बहुरि इस मानुषोत्तर पर्वतके परें स्वयंप्रभ नामा पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमियां तिर्यंच हैं॥ ३२३॥

कम्मावणिपडिबद्धो बाहिरभागो सयंपहगिरिस्स।
वरओगाहणजुत्ता तसजीवा होंति तत्थेव॥ ३२४॥

कर्मावनिप्रतिबद्धो बाह्यभागः स्वयंप्रभगिरेः।
वरावगाहनयुक्ताः त्रसजीवा भवंति तत्रैव॥ ३२४॥

अर्थ—स्वयंप्रभ नामा पर्वततै परे जो बाह्य भाग सो कर्म्म भूमि संबंधी है। भावार्थ—स्वयंप्रभ पर्वतके परे कर्मभूमि पाइए है बहुरि उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहना संयुक्त त्रस जीव तहां ही बाह्यविषै पाइए हैं॥ ३२४॥

आगैं इस गाथाका अपर अर्द्धविषै कह्या जो उत्कृष्ट अवगाहन ताकौं एक इन्द्रियका अवगाहनपूर्वक कहै हैं;—

अधियसहस्सं बारस तिचउरत्थेवं सहस्सयं पउमे।
संखे गोम्हिय भमरे मच्छे वरदेहदीहो दु॥ ३२५॥

अधिकसहस्रं द्वादश त्रिचतुर्थमेकं सहस्रकं पद्मे ।
संखे ग्रैष्मे भ्रमरे मत्स्ये वरदेहदीर्घं तु ॥ ३२५ ॥

अर्थ—साधिक हजार बारह तीन चतुर्थ भाग एक एक हजार योजन प्रमाण सख ग्रैष्म भ्रमर मच्छविषै उत्कृष्ट शरीरका दीर्घपना हो है । **भावार्थ**—एकेन्द्रीविषै कमलका साधिक हजार योजन बेंद्रीविषै शंखका बारह योजन तेन्द्रीविषै ग्रैष्म जो सहस्रपद नामा जीव ताका पौण योजन चौन्द्रीविषै भ्रमरका एक योजन पंचेन्द्रीविषै मनुष्यका एक हजार योजन शरीरकी ऊंचाईका उत्कृष्ट प्रमाण जाननां ॥ ३२५ ॥

आगैं तिनहीके व्यास अर उदय कहैं हैं;—

वासिगि कमले संख मुहुदओ चउपंचचरणमिह गोम्ही ।
वासुदओ दिग्घट्ठमतद्दलमलिए तिपाददलं ॥ ३२६ ॥

व्यास एकं कमले शंखे मुखोदयौ चतुःपंचचरणं इह ग्रैष्मे ।
व्यासोदयौ दीर्घाष्टमतद्दलमलौ त्रिपाददलम् ॥ ३२६ ॥

अर्थ—कमल नालविषैं व्यास एक योजन है सो समान गोल आकार है तातैं ताका बाहुल्य भी तितना ही जाननां । बहुरि शंखविषै मुख व्यास च्यारि योजन अर उदय जो ऊंचाई है पांच चरण कहिए पांचका चौथा भाग ताका सवा योजन प्रमाण जाननां । बहुरि इहां ग्रैष्मविषै व्यास है दैर्घ्य ताके आठवें भाग सो तीन योजनका बत्तीसवां भाग प्रमाण अर उदय दीर्घ ताके सोलवें भाग सो तीन योजनका चौसठियां भाग प्रमाण जाननां । बहुरि भ्रमरविषै व्यास त्रिचरण कहिए तीन चौथा भाग ताकी पौण योजन प्रमाण अर उदय जो ऊंचाई सो दल कहिए आधा योजन प्रमाण जाननां । तहां वासो तिगुणो परिही इत्यादि करणसूत्र करि कमलका क्षेत्रफल ल्याईए है । तहां एक योजन व्यास ताकौं तिगुणा किएं तीन योजन परिधि हो है । याकौं व्यासकी चौथाई पाव योजन करि गुणें पौण योजन होइ । याकौं हजार योजन ऊंचाईकरि गुणें साढा सातसै योजन प्रमाण कमलका क्षेत्रफल हो है ॥ ३२६ ॥

आगैं शंखका क्षेत्रफल ल्यावनेंकौं करणसूत्र कहैं हैं;—

आयामकदी मुहदलहीणा मुहवासअद्धवग्गजुदा ।
विगुणा वेहेण हदा संखावत्तस्स खेत्तफलं ॥ ३२७ ॥

आयामकृतिः मुखदलहीना मुखव्यासअर्धवर्गयुता ।
द्विगुणा वेधेन हता संखावर्तस्य क्षेत्रफलम् ॥ ३२७ ॥

अर्थ—ऊंचाईका प्रमाणका वर्ग करिए तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाण घटाइए जो प्रमाण होइ तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाणका वर्ग मिलाए जो प्रमाण होइ ताकौं दूणा करिए जो प्रमाण होइ ताकौं वेध करि गुणिए ऐसे किएं शंखावर्त क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है। सो इहां ऊंचाई बारह योजन ताका वर्ग एक सौ चवालीस योजन तामें मुख व्यास च्यारि योजनका आधा दोय योजन घटाएं एक

सौ छियालीस योजन तामें मुरज व्यासकी आधा दोय योजन ताका वर्ग च्यारि मिलाएं एकसौ छियालीस योजन याकों दूणां किएं दोयसै बाणवै योजन इनकों वेधका प्रमाण पांच चौथा भाग तिनकरि गुणें च्यारि करि अपवर्तन किएं तेहत्तरिको पांच गुणा करिए तीनसै पैसठि योजन प्रमाण संखका क्षेत्रफल हो है। इहां एह सूत्र कैसे कह्या? सो वासनारूप मुरज क्षेत्रफल आदि करि विधान है सो संस्कृत टीकातै जाननां। बहुरि तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्रीनिका घनरूप क्षेत्रफल भुजकोटि व इत्यादि करण-सूत्र करि हो है सो ल्वाई चौड़ाईको परस्पर गुणें जो जो प्रमाण होइ तितनां तितनां क्षेत्रफल जाननां। तहां तेइन्द्री मैम्भका सत्ताईस योजन इक्यासीसै बाणवैका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल है। चौइन्द्री भ्रमरका तीन योजनका आठवा भाग प्रमाण क्षेत्रफल है पंचेन्द्री मत्स्यका १२५००० ००० साढा बारा कोडि योजन प्रमाण क्षेत्रफल हो है। अब इहां एकेन्द्रियादि जीवनिका घनरूप क्षेत्रफलनिका अल्प बहु प्रदेश जाननेंकों कहिए हैं। तहां अति अल्प तेइन्द्रीका घनफल है। तहां एक योजनके सात लाख अड़सठि हजार अंगुल होइ तौ सत्ताईस योजनका इक्यासीसै बाणवै भागविर्षे एक भागके केते अंगुल होहिं। तहां घनरूप राशिके गुणकार घनरूप ही होइ सो सात लाख अड़सठि हजारका घनकरि गुणिए तब अंगुल होई ८११ ७६८०००।७६८०००।७६८००० बहुरि सूच्यंगुल तौ प्रमाणांगुल है अर इहां शरीरका प्रमाण व्यवहार अंगुलतैं है। सो पांचसै व्यवहार अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ। अर घनरूप राशिका भागहार भी घन रूप होइ तातैं पाचसैका घनका भाग दीजिए ५००।५००।५०० बहुरि इहां तीनौं जायगा की छह बिन्दी ऊपर अंगुलनिके प्रमाणकी छह बिंदीका अपवर्तन किए ऐसा भया ८११ ७६८ ७६८ ७६८ ५।५।५ बहुरि दोय जायगा सात सै अड़सठि थे तिनकी जायगा तीन करि संभेदन किएं दोयसै छप्पन अर तीन भए ८११ ३ २५६ ७६८००० बहुरि दोय दोयसै छप्पनकों परस्पर गुणें पणट्ठी ६५५३६ भए तिनकों सत्ताईसके नीचें इक्यासी बाणवैका भागहार था तिनकरि अपवर्तन किएं आठ भए। बहुरि तीन जायगा पांचका परस्पर गुणें एकसौ पचीसका भागहार भया तिनकरि सात लाख अड़सठि हजारका गुणकारका अपवर्तन किएं इकसठिसै चवालीस भए। अर दोय जायगा तीनका गुणकार था तिनकों परस्पर गुणें नव भए तब ऐसे भया २७।८।६१४४।९ ऐसे सत्ताईस आठ इकसठिसै चवालीस नव इनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताकों एक बार संख्यात स्थापि तिहकरि घनांगुलकों गुणें तेन्द्रीका खात फल हो है। ताकी सहनानी ऐसी ६ १ इहां घनांगुलकी सहनानी ऐसी ६ संख्यातकी ऐसी १ जाननी। बहुरि ऐसेही चौइन्द्रीका खात फल करनां। तहां इकसिठसै चवालीस गुणाकारकों तहां घनफलविर्षे आठका भागहार है तातैं आठका अपवर्तन किएं सातसै अड़सठिका गुणकार होइ ऐसे पैसठि हजार पांचसै छत्तीस अर सातसै अड़सठि अर नव तीन इनका परस्पर गुणनैतै जो प्रमाण होइ तितना घनांगुलका भया। सो तेइन्द्रीके गुणकारतैं संख्यात अधिक भया ऐसे चौइन्द्रीकौं घनांगुलका दोय बार संख्यातका गुणकार जाननां। ताकी सहनानी ऐसी ६ ११ ऐसेही तेन्द्रीके तीन बार ६ १११ चौइन्द्रीके चार बार ६ ११ ११ पंचेन्द्रीके पाच बार ११११ संख्यातका गुणाकारपना गुणकौं जांननां॥ ३२७॥

ऐसे उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रसंग करि एकेंद्रियादिक जीव पृथ्वी आदि विशेषरूप हैं तिनका उत्कृष्ट वा जघन्य आयुका कहनेके अर्थि तीन गाथा कहैं हैं;—

सुद्धखरभूजलाणं बारस बावीस सत्त य सहस्सा ।
तेउतिए दिवसतियं सहस्सतियं दस य जेट्ठाओ ॥ ३२८ ॥

शुद्धखरभूजलानां द्वादश द्वाविंशतिः सप्त च सहस्राणि ।
तेजस्त्रये दिवसत्रयं सहस्रत्रयं दश च ज्येष्ठम् ॥ ३२८ ॥

अर्थ—शुद्ध खर पृथ्वी जल इनका बारह बाईस सात हजार वर्ष अर तेज आदि तीनकी तीन दिन तीन हजार दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आयु है । भावार्थ—मृतिका आदि शुद्ध पृथ्वीकायिकका बारह हजार वर्ष, पाषाण आदि खर पृथ्वी कायिकका बाईस हजार वर्ष जल कायिकका सात हजार वर्ष, तेज कायिकका तीन दिन, वात कायिकका तीन हजार वर्ष, वनस्पति कायिकका दश हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है ॥ ३२८ ॥

बारसदिणमास बारसगुणवण्णं छक्क तियलजेट्ठाओ ।
मच्छाण पुव्वकोडी णव पुव्वंगा सरिसवाणं ॥ ३२९ ॥

वर्षदिनमासाः द्वादशैकोनपंचाशत् षट्काः विकलज्येष्ठम् ।
मत्स्यानां पूर्वकोटिः नव पूर्वांगानि सरीसृपाणाम् ॥ ३२९ ॥

अर्थ—वर्ष दिन मास बारह गुणचास छह विकलत्रयनिका ज्येष्ठ आयु है । भावार्थ—बेइन्द्रीका बारह वर्ष, तेइन्द्रीका गुणचासदिन, चौइन्द्रीका छह महिना प्रमाण, उत्कृष्ट आयु है । बहुरि मच्छनिका कोटिपूर्व प्रमाण उत्कृष्ट आयु है सो एक पूर्व चौरासी लाख वर्ष प्रमाण जानना ।[illegible]

बाहत्तरि बादालं सहस्समाणाहि पक्खिउरगाणं ।
अंतोमुहुत्तमवरं कम्ममहीणरतिरियाऊ ॥ ३३० ॥

द्वासप्ततिः द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमानानि पक्ष्युरगाणाम् ।
अन्तर्मुहूर्तमवरं कर्ममहीनरतिर्यगायुः ॥ ३३० ॥

अर्थ—बहत्तरि बियालीस हजार प्रमाण पक्षी उरगनिका आयु है । —भावार्थ—पक्षीनिका बहत्तरि हजार वर्ष, उरग जे सर्पादि तिनका बियालीस हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है । बहुरि शुद्ध पृथ्वी आदि देकरि सर्व ही कर्मभूमि संबंधी मनुष्य वा तिर्यंचनिका जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥ ३३० ॥

आगे इनके आयुका निरूपण करि अब [illegible] है,—

तिरिया इगिबितिपल्ला [illegible] होंति णेया हु ।
भोगभुवा मणुवा [illegible] ॥ ३३१ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ३३१ ॥

अर्थ—नारकी एकेन्द्री विकलत्रय सम्मूर्छनपंचेन्द्री ए नपुंसक वे
मिश्र मनुष्य तिर्यंच अर देव ए नपुंसक विना दोय वेदी ही हैं । बहुरि
तिर्यंच तीनों वेदके धारक हो हैं । आगैं प्रसंगका प्रयोगरूप अर्थका ।
ज्योतिर्लोकका अधिकारका प्रतिपादन करैं हैं ॥ ३३१ ॥

तहां तारादिकनिका स्थिति स्थान तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

णउदुत्तरसत्तसए दस सीदी चदुदुगे तियचउ
तारिणससिरिक्खबुहा सुक्कगुरुंगारमंदगदी ॥

नवत्युत्तरसप्तशतानि दश अशीतिः चतुर्द्विके त्रिकचतु
तारेनशशिऋक्षबुधाः शुक्रगुर्वंगारमंदगतयः ॥ ३३२

अर्थ—नित्रै अधिक सातसै तिनै उपरि दस असी च्यारि दोय
विषै जाइ क्रमतैं तारा इन शशि ऋक्ष बुध शुक्र गुरु अंगार मंदगति
चित्रा पृथ्वीतैं ल्याइ सातसै नित्रै योजन ऊपरि तौ तारे हैं । बहुरि ति
कहिए सूर्य है । बहुरि तिनतै असी योजन ऊपरि शशि कहिए चंद्रमा
योजन ऊपरि ऋक्ष कहिए नक्षत्र हैं । बहुरि तिनतैं च्यारि योजन ऊ
तीन योजन ऊपरि शुक्र है । बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि गुरु क
तिनतै तीन योजन ऊपरि अंगार कहिए मंगल है । बहुरि तिनतैं तीन यो
शनीश्चर है । ऐसे ज्योतिषी तिष्ठै हैं ॥ ३३२ ॥

अवसेसाण गहाणं णयरीओ उवरि चित्तभूम
गंतूण बुहसणीणं विचाले होंति णिच्चाओ ॥

अवशेषाणां ग्रहाणां नगर्य उपरि चित्राभूमितः ।
गत्वा बुधशन्योः विचाले भवंति नित्याः ॥ ३३३ ॥

अर्थ—अवशेष अठ्यासी ग्रहनिविषै अब दोय तिनकी नगरी ऊपरि ऊप
अर शनैश्चर इन दोऊनकै बीचि अंतराल क्षेत्रविषै शाश्वती हैं ॥ ३३३ ॥

अरधइ गणी णवसये चित्तादो तारगाविं ता
जोइगपडलबाहल्ल दसरहियं जोयणाण सयं

[illegible]

अर्थ [illegible]

आगें प्रकीर्णक तारानिका प्रकार अंतराल निरूपण है;—

तारंतरं जहण्णं तेरिच्छे कोससत्तभागो दु ।
पण्णासं मज्झिमयं सहस्समुक्कस्सयं होदि ॥ ३३५ ॥

तारांतरं जघन्यं तिर्यक् क्रोशसप्तभागस्तु ।
पंचाशत् मध्यमकं सहस्रमुत्कृष्टकं भवति ॥ ३३५ ॥

अर्थ—तारातैं ताराके बीचि तिर्यगरूप बरोबरिविषै अंतराल जघन्य एक कोशका सातवां भाग, मध्यम पचास योजन, उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ३३५ ॥

अब ज्योतिषीनिके विमानस्वरूप निरूपै हैं;—

उत्ताणट्ठियगोलगदलसरिसा सव्वजोइसविमाणा ।
उवरिं सुरणगराणि य जिणभवणजुदाणि रम्माणि ॥ ३३६ ॥

उत्तानस्थितगोलकसदृशाः सर्वज्योतिष्कविमानाः ।
उपरि सुरनगराणि च जिनभवनयुतानि रम्याणि ॥ ३३६ ॥

अर्थ—गोलक जो गोला ताका दल कहिए तिस गोलाकौं बीचिमैंसौं विदारि दोय खंड करिए तिसविषै जो एक खंड सो उत्तान स्थित कहिए तिस आधा गोलाकों ऊंचा स्थापित किया होय चौड़ा ऊपरि अर ताकी अणी नीचे ऐसे धर्या होइ ताका जैसा आकार तिह समान सर्व ज्योतिषीनिके विमान हैं। बहुरि तिन विमाननिके ऊपरि ज्योतिषी देवनिके नगर हैं। ते नगर जिन मंदिरनिकरि संयुक्त हैं। बहुरि रमणीक हैं ॥ ३३६ ॥

आगें तिन विमाननिका व्यास अर बाहुल्य दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

जोयणमेकट्ठिकए छप्पण्णडदाल चंदरविवासं ।
सुक्कगुरिदरतियाणं कोसं किंचूणकोस कोसद्धं ॥ ३३७ ॥

योजनं एकषष्टिकृते षट्पंचाशदष्टचत्वारिंशत् चंद्ररविव्यासौ ।
शुक्रगुर्वितरत्रयाणां क्रोशः किंचिदूनक्रोशः क्रोशार्धम् ॥ ३३७ ॥

अर्थ—एक योजनका इकसठि भाग करिए तहां छप्पन भाग प्रमाण तौ चन्द्रमाके विमानका व्यास है। बहुरि अडतालीस भाग प्रमाण सूर्यके विमानका व्यास है। बहुरि शुक्रका एक कोश, बृहस्पतिका किंचित ऊन एक कोश, इतर तीन बुध मंगल शनैश्चर इनका आध कोश प्रमाण विमान व्यास जाननां ॥ ३३७ ॥

कोसस्स तुरियमवरं तुरियहियकमेण जाव कोसोत्ति ।
ताराणं रिक्खाणं कोसं बहलं तु वासद्धं ॥ ३३८ ॥

क्रोशस्य तुरीयमवरं तुर्याधिकक्रमेण यावत् क्रोश इति ।
ताराणां ऋक्षाणां क्रोशं बाहुल्यं तु व्यासार्धम् ॥ ३३८ ॥

अर्थ— तारानिके विमाननिका जघन्य व्यास कोशका चौथा भाग प्रमाण है। बहुरि चौथाई अधिक एक कोश पर्यंत जाननां। तहां आध कोश पौणे कोश प्रमाण मध्यम व्यास

चंद्रो निजषोडशं कृष्णः शुक्लश्च पंचदशदिनांतम् ।
अधस्तनं नित्यं राहुगमनविशेषेण वा भवति ॥ ३४२ ॥

अर्थ—चन्द्रमण्डल है सो अपना सोल्हवां भाग प्रमाण कृष्ण अर शुक्ल पंद्रह दिन पर्यंत है। **भावार्थ**—चन्द्रविमानका जो सोलह भागविर्षे एक एक भाग एक एक दिनविर्षे कृष्णपक्षविर्षे श्यामरूप होइ अर शुक्लपक्षविर्षे श्वेतरूप होइ स्वयमेव पंद्रह दिन पर्यंत परिनमैं है। तहां चन्द्रविमानका क्षेत्र योजनका छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{५६}{६१}$ है तो एक कलाका केता होइ। ताकौं सोलहका भाग दिएं आठ करि अपवर्त्तन किएं एक योजनका एकसौ बाईस भाग ताभैं सात भाग प्रमाण एक कलाका प्रमाण आया $\frac{७}{१२२}$ बहुरि एक कलाका इतना $\frac{७}{१२२}$ प्रमाण तो सोलह कलानिका केता होइ ऐसे दोयका अपवर्त्तन करि गुणें छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण आवै। बहुरि अन्य कोई आचार्यनिके अभिप्रायकरि चंद्रविमानकै नीचे राहुविमान गमन करै तिस राहुका सदा काल ऐसा ही गमन विशेष है जो एक एक कला चंद्रमाकी क्रमतैं आछादै उघाडै है तिहकरि वृद्धि हानि है ॥ ३४२ ॥

आगैं चन्द्रादिकनिके विमानके वाहक कहिये चलावनेवाले देव तिनका आकार विशेष अर तिनकी संख्या कहैं हैं;—

सिंहगयवसहजडिलस्सायारसुरा वहंति पुव्वादिं ।
इंदुरवीणं सोलससहस्समद्धद्धमिदरतिये ॥ ३४३ ॥

सिंहगजवृषभजटिलाश्वाकारसुरा वहंति पूर्वादिम् ।
इंदुरवीणां षोडशसहस्राणि तदर्धार्धक्रममितरत्रये ॥ ३४३ ॥

अर्थ—सिंह हाथी वृषभ जटिलरूप आकारकौं धारि देव हैं ते विमाननिकौं पूर्वादि दिशा प्रति वहंति कहिए लेइ चालैं हैं। ते देव चन्द्रमा अर सूर्य इनके तौ प्रत्येक सोलह हजार हैं। इतरि तीनके आधे आधे हैं। तहां ग्रहनिके आठ हजार नक्षत्रनिके च्यारि हजार तारनिके दोय हजार विमान वाहक देव जानने ॥ ३४३ ॥

आगैं आकाशविर्षे गमन करते जे केई नक्षत्र तिनके दिशाभेद कहैं हैं;—

उत्तरदक्खिणउड्ढाधोमज्झे अभिजिमूलसादी य ।
भरणी किंत्तिय रिक्खा चरंति अवराणमेवं तु ॥ ३४४ ॥

उत्तरदक्षिणोर्ध्वाधोमध्ये अभिजिन्मूलस्वातिश्च ।
भरणी कृत्तिका ऋक्षाणि चरंति अपराणामेवं तु ॥ ३४४ ॥

अर्थ—उत्तर १ दक्षिण १ ऊर्द्ध १ अधः १ मध्य १ इनविर्षे क्रमतैं अभिजित १ मूल १ स्वाति १ भरणी १ कृत्तिका १ ए पंच नक्षत्र गमन करै हैं। अपराणां कहिए इनतैं अन्य जे अभिजित आदि पंच नक्षत्र तिनकी ऐसी अवस्थिति है ॥ ३४४ ॥

आगैं मेरु गिरितैं कितने दूरि कैसे गमन करै हैं;—

इगिवीसिगारसयं विहाय मेरुं चरंति जोइगणा ।
चंदतियं वज्जित्ता सेसा हु चरंति एक्कपहे ॥ ३४५ ॥

एकविंशैकादशशतानि विहाय मेरुं चरंति ज्योतिर्गणाः।
चन्द्रत्रयं वर्जयित्वा शेषा हि चरंति एकपथे ॥ ३४५ ॥

अर्थ—इकईस अधिक ग्यारहसै योजन मेरुकों छोडि ज्योतिषीसमूह गमन करै हैं। भावार्थ—मेरु गिरितैं ग्यारहसैं इकईस योजन ऊपरै ज्योतिषी मेरुकी प्रदक्षिणारूप गमन करैं हैं मेरुतैं ग्यारहसै इकईस योजन पर्यंत कोऊ ज्योतिषी न पाईए है। बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रह इन तीन बिना अव शेष सर्व्व ज्योतिषी एक पथविषै गमन करैं हैं। भावार्थ—चन्द्रमा सूर्य ग्रह तौ कदाचित् कोई कदाचित् कोई परिधिरूप मार्गविषै भ्रमण करैं हैं। बहुरि नक्षत्र अर तारे ए अपनां अपनां एक ही परिधिरूप मार्गविषै गमन करै हैं। अन्य अन्य मार्गविषै नाहीं भ्रमण करैं हैं ॥ ३४५ ॥

अब जंबूद्वीपतैं लगाय पुष्करार्द्ध पर्यंत चन्द्रमा सूर्यनिका प्रमाण निरूपै है;—

दो दोवग्गं वारस बादाल बहत्तरिंदुइणसंखा।
पुक्खरदलोत्ति परदो अवहिया सव्वजोइगणा ॥ ३४६ ॥

द्वौ द्विवर्गं द्वादश द्वाचत्वारिंशत् द्वासप्ततिरिंद्विनसंख्या।
पुष्करदलांतं परतः अवस्थिताः सर्वज्योतिर्गणाः ॥ ३४६ ॥

अर्थ—दोय दोयवर्ग बारह बियालीस बहत्तरि चन्द्रमा सूर्यनिकी संख्या पुष्करार्द्ध पर्यंत है। भावार्थ—जंबूद्वीपविषै दोय लवण समुद्रविषै च्यारि धातुकी खंडविषै बारह कालोदकविषै बियालीस पुष्करार्द्धविषै बहत्तरि चन्द्रमा हैं। अर इतनैं इतनै ही सूर्य है। बहुरि पुष्करार्द्धतै परैं जे ज्योतिषी देवनिका गण है ते अवस्थित है। कदाचित अपनें अपनें स्थानतैं गमन नाहीं करैं हैं जहां ही स्थिररूप तिष्ठै है ॥ ३४६॥

आगैं तहां तिष्ठै हैं जु ध्रुव तारे तिनकौं निरूपैं हैं;—

छक्कदि णवतीससयं दससयसहस्सं खवार इगिदालं।
गयणतिदुगतेवण्णं थिरतारा पुक्खरदलोत्ति ॥ ३४७ ॥

षट्कृतिः नवत्रिंशशतं दशकसहस्रं खद्वादश एकचत्वारिंशत्।
गगनत्रिद्विकत्रिपंचाशत् स्थिरताराः पुष्करदलांतम् ॥ ३४७ ॥

अर्थ—छहकी कृति ३६ अर गुणताळीस अधिक सौ १३९ अर दश अधिक हजार १०१० अर बिंदी बारह इकताळीस ४११२० अर बिंदी तीन दोय तरेपन ५३२३० इतने पुष्करार्ध पर्यंत स्थिर तारे हैं। भावार्थ—जंबूद्वीपविषै छत्तीस लवण समुद्रविषै एक सौ गुणताळीस धातुकी खंडविषै एक हजार दश कालोदकविषै इकताळीस हजार एकसौ बीस पुष्करार्द्धविषै तरेपन हजार दोयसै तीस ध्रुव तारे हैं। ते कबहूं अपने स्थानतैं गमन नाहीं करै हैं। जहांके तहां स्थिररूप रहै हैं ॥ ३४७ ॥

आगैं ज्योतिषी समूहनिके गमनका क्रम विचारै है;—

सगसगजोइगणद्धं एक्के भागम्हि दीवउवहीणं।
एक्के भागे अद्धं चरंति पंतिक्कमेणेव ॥ ३४८ ॥

रककर्कीयज्योतिर्गणार्धं एकस्मिन् भागे द्वीपोदधीनाम् ।
एकस्मिन् भागे अर्धं चरंति पंक्तिक्रमेणैव ॥ ३४८ ॥

अर्थ—अपनां अपनां ज्योतिषी गणका अर्द्ध सो द्वीप समुद्रनिका एक भागविषै अर अर्द्ध एक भागविषैं पंक्तिका अनुक्रम करि विचरै हैं । **भावार्थ**—जिस द्वीप वा समुद्रविषैं जेते ज्योतिषी हैं तिनविषैं आधे ज्योतिषी तौ तिस द्वीप वा समुद्रका एक भागविषै गमन करैं हैं आधे एक भाग विषैं गमन करैं हैं । ऐसे पंक्ति रूप गमन जाननां ॥ ३४८ ॥

आगैं मानुषोत्तर पर्वततैं परे चंद्रमा सूर्यनिके अवस्थानका अनुक्रम कहै हैं;—

मणुमुत्तरसेलादो वेदियमूलादु दीवउवहीणं ।
पण्णाससहस्सेहि य लक्खे लक्खे तदो वलयं ॥ ३४९ ॥

मानुषोत्तरशैलात् वेदिकामूलात् द्वीपोदधीनाम् ।
पंचाशत्सहस्रैश्च लक्षे लक्षे ततो वलयं ॥ ३४९ ॥

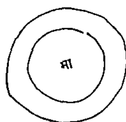
अर्थ—मानुषोतर पर्वततैं परैं अर द्वीप समुद्रनिकी वेदीनिके परैं तौ पचास हजार योजन जाइ प्रथम वलय है । बहुरि तिस प्रथम वलयतैं परैं लाख लाख योजन परैं जाइ द्वितीयादिक वलय है । **भावार्थ**—मानुषोतर पर्वततैं पचास हजार योजन व्यास परैं जो परिधि सो बाह्य पुष्करार्द्ध द्वीपका प्रथम वलय है । तिह परैं एक लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो दूसरा वलय है ऐसैं लाख लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो वलय जाननां । बहुरि पुष्कर द्वीपकी अंत वेदिकाके परैं पचास हजार योजन व्यास जाइ जो परिधि सो पुष्कर समुद्रका प्रथम वलय है । तातैं परैं लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो द्वितीय वलय है । ऐसे लाख लाख योजन व्यास परैं जाइ जो परिधि सो वलय जाननां । ऐसे ही अन्य द्वीप समुद्रनिविषैं वलय जाननां ॥ ३४९ ॥

आगैं तिन वलयनविषै तिष्ठते जे चन्द्रमा सूर्य तिनकी संख्या कहैं हैं;—

दीवद्धपढमवलये चउदालसयं तु वलयवलयेसु ।
चउचउवड्ढी आदी आदीदो दुगुणदुगुणकमा ॥ ३५० ॥

द्वीपार्धप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशच्छतं तु वलयवलयेषु ।
चतुश्चतुर्वृद्धयः आदिः आदितः द्विगुणद्विगुणक्रमः ॥ ३५० ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वततैं बाह्यस्थित जो पुष्करार्ध ताका प्रथम वलयविषै एक सौ चवालीस है । **भावार्थ**—जो मानुषोत्तर पर्वत परे पचास हजार योजन परे जाइ जो परिधिविषैं एक सौ चवालीस चन्द्रमा एक सौ चवालीस सूर्य है । ऐसै ही द्वितियादि वलय वलयविषै च्यारि च्यारि वधती चन्द्रमा सूर्य जानने । १४८। १५२।१५६।१६०।१६४।१६८।१७२ । बहुरि उत्तरोत्तर द्वीप वा समुद्रका आदिविषैं पूर्व पूर्व द्वीप वा समुद्रका आदितै दूणे दूणे क्रमतैं जानने । जैसे पुष्करार्द्धका आदिविषै एकसौ चवालीस, तातैं दूणे पुष्कर समुद्रका आदि विषैं हैं, तातैं द्वितीयादि वलयविषैं च्यारि च्यारि वधती हैं । ऐसे ही सर्व्वत्र जानने ॥ ३५० ॥



आगें तिस तिस वलयविषै तिष्ठते चन्द्रमानै चंद्रमाका अंतराल सूर्यनै सूर्यका अंतराल परिधि विषै कहै हैं;—

> सगसगपरिधि परिधिगरविंदुभजिदे दु अंतरं होदि।
> पुस्सम्हि सव्वसूरट्ठिया दु चंदा य अभिजिम्हि ॥ ३५१ ॥
> स्वकस्वकपरिधि परिधिगरवींदुभक्ते तु अंतरं भवति।
> पुष्ये सर्वसूर्याः स्थिता हि चंद्राश्च अभिजिति ॥ ३५१ ॥

अर्थ—अपनां अपनां सूक्ष्म परिधिकौं परिधिविषै प्राप्त जे चन्द्र वा सूर्य तिनके प्रमाणका भाग दिएं अंतराल हो है। तहां प्रथम जंबूद्वीपनैं लगाय दोऊ तरफका अभ्यन्तर द्वीप समुद्रनिका वा वलयनिका व्यास मिलाएं आधा पुष्करार्धका प्रथम वलयका सूची व्यास छियालीस लाख योजन हो है। मानुषोत्तर पर्वतका सूची व्यास पैतालीस लाख योजन तामें दोऊ तरफका वलयका व्यास पचास हजार योजन मिलाएं छियालीस लाख योजन हो है। याका 'विष्कंभवग्गदहगुण' इत्यादि करणसूत्रकरि सूक्ष्म परिधिविषै एक कोडि पैतालीस लाख छियालीस हजार च्यारि योजन प्रमाण होइ तापरि परिधिविषै प्राप्त सूर्य वा चन्द्रमाका प्रमाण एक सौ चवालीस ताका भाग दिएं एक लाख एक हजार सतरह योजन अर गुणतीस योजनका एक सौ चवालीसवां भाग प्रमाण १०१०१७ $\frac{२९}{१४४}$ सूर्यनै सूर्यका चन्द्रनै चन्द्रका अंतराल परिधिविषै बिंबसहित जाननां बहुरि बिंब जो चंद्र वा सूर्यका मंडल तीह बिना अंतराल ल्याइये है जो बिंबसहित अंतरालविषै योजन थे तिनमें सौ एक घटाइए १०१०१६। बहुरि तिस एक योजनकौं गुणतीसका एकसौ चवालीसवां भाग सहित समछेद विधान करि जोडिए तब १/१ [illegible] एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भाग होइ तामें चन्द्रका बिंब छप्पनका इकसठिवां भाग सो समछेद विधान करि घटाइए [illegible] [illegible] तब चौईसै निवासीकौं सित्यासीसै चौरासीका भाग दीजिए इतना भया ऐसे करि चन्द्रमातैं चन्द्रमाका बिंब रहित अंतराल एक लाख एक हजार सोलह योजन अर चौईसै निवासी योजनका सित्यासीसै चौरासी भागविषै एक भाग प्रमाण आया। बहुरि तीह एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भागविषै अठ्तालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्यबिंबकौं समछेद विधान करि घटाए छत्तीसै इकतालीसका सित्यासीसै चौरासीवां भाग आया [illegible] सो इतनें करि अधिक एक लाख एक हजार सोलह योजन प्रमाण सूर्यनै सूर्यका अंतराल जाननां। ऐसे ही अन्य वलयनिविषै अंतराल ल्यावना। बहुरि सर्व वलयसंबंधी सूर्य तौ पुष्य नक्षत्रविषै स्थित हैं। अर चन्द्रमा अभिजित नक्षत्रविषै स्थित है। **भावार्थ**—सूर्यका विमान अर पुष्य नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि तिष्ठै हैं। अर चन्द्रमाका विमान अर अभिजित नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि है ॥ ३५१ ॥

आगैं असंख्यात द्वीप समुद्रनिविषै प्राप्त जे चन्द्रादिक तिनकी संख्या ल्यावनेकौं गच्छका प्रमाण ल्यावना थका ताका कारणभूत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकी संख्याकौं आठ गाथानिकरि कहै हैं;—

रज्जूदलिदे मन्दिरमज्झादो चरिमसायरंतोत्ति ।
पडादि तदद्धे तस्स दु अब्भंतरवेदिया परदो ॥ ३५२ ॥
रज्जूदलिते मंदरमध्यतः चरमसागरांत इति ।
पतति तदर्धे तस्य तु अभ्यंतरवेदिका परतः ३५२ ॥

अर्थ—राजूकों आधा किएं मेरुका मध्यतैं लगाय अंतका सागर पर्यंत प्राप्त हो है । भावार्थ–मध्यलोक एक राजू है तिस एक राजूकों आधा करिए तब मेरुगिरिका मध्यतैं लगाय अंतका स्वयंभूरमण समुद्रपर्यंत एक पार्श्वविषै क्षेत्र हो हैं । बहुरि तिसकों आधा किएं तिसकी अभ्यन्तर वेदिकाके परै ॥ ३५२ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

दसगुणपण्णत्तरिसयजोयणमुवगम्म दिस्सदे जम्हा ।
इगिलक्खाहिओ एको पुव्वगसव्वुवहिदीविहिं ॥ ३५३ ॥
दशगुणपंचसप्ततिशतयोजनमुपगम्य दृश्यते यस्मात् ।
एकलक्षाधिकः एकः पूर्वगसर्वोदधिद्वीपेभ्यः ॥ ३५३ ॥

अर्थ—दश गुणां पिचहत्तरिसै योजन जाइ राजू दीसै है । भावार्थ—स्वयंभूरमण समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतैं पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ तिस आध राजूका अर्द्धभाग हो है । काहेतै जातै सर्व्व पूर्व्व द्वीप वा समुद्रनिके व्यासकों जोड़े जो प्रमाण होइ तातैं उत्तर द्वीप वा समुद्रका व्यास एक लाख योजन अधिक हो है । सो इसही कथनकों स्पष्ट करै हैं—स्वयंभूरमण समुद्रका बत्तीस लाख योजन प्रमाण व्यास कल्पि करि जंबूद्वीपका आध लाख सहित सर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यासके अंकनिकों जोड़िए ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । ३२ ल । सब कल्पना करि आप राजूका प्रमाण साढा बासठि लाख योजन भए, बहुरि याकों आधा किएं इकतीस लाख पचीस हजार योजन प्रमाण दूसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण होइ तिहविषै पूर्व्वद्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । जो जोड़े तीन लाख पचास हजार योजन प्रमाण भया । सो घटाए तिस स्वयंभूरमण समुद्रका अभ्यन्तर वेदिकातै परै पिचहत्तरि हजार योजन समुद्रमें गए आध राजूका अर्ध हो है । बहुरि तीह द्वितीय बार आधा किया राजू प्रमाण ३१२५००० कों आधा किएं पंद्रह लाख बासठि हजार पांच सै योजन तीसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण हो है । तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल मिलाए साढा चौदह लाख योजन भए । सो घटाएं तिस स्वयंभूरमण द्वीपका अभ्यन्तर वेदिकातै एक लाख बारह हजार पांचसै योजन परै द्वीपविषै जाइ तृतीयवार आधा किया हुवा राजू क्षेत्रका प्रमाण हो है ऐसैही पूर्व्व पूर्व्वकों आधा करि तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास घटाएं जो जो प्रमाण रहै तितना तितना तिस तिस द्वीप वा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै जाइ चतुर्थवार आदि आधा किया राजू क्षेत्रका प्रमाण जानना ॥ ३५२ ॥

पुणरवि छिण्णे पच्छिमदीवब्भंतरिमवेदियापरदो ।
सगदलदुदरण्णत्तरिमदव्वमेगारिय णिवडदि सा ॥ ३५४ ॥

पुनरपि छिन्नायां पश्चिमद्वीपाभ्यंतरवेदिकापरतः ।

स्वदल्युतपंचसप्ततिसहस्रमपसृत्य निपतति सा ॥ ३५४ ॥

अर्थ—बहुरि भी दूसरी बार छिन्न कहिए आधा किया राजू ताकौं आधा किएं ताके पीछे जो द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातें परे अपना आधा साठा सैंतीस हजार करि संयुक्त पिचहत्तरि योजन परै जाइ सो राजू पड़ै है । संदृष्टि–द्वितीय बार छिन्न राजूका प्रमाण इकतीस लाख पचीस हजार योजन ताका आधा किएं पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै योजन हीन सबै स्वयंभू रमणतैं पाछला स्वयंभू रमण द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै तिस द्वीपविषै अपना आधा करि अधिक पिचहत्तरि हजारके भएं एक लाख बारह हजार पांचसै सो इतनें योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥३५४॥

अर्द्ध चतुर्थ अष्टमादि राजूके अंश किएं जहां जहां मध्य क्षेत्र होइ तहां तहां राजूका पड़ना कहिए है;—

दलिदे पुण तदणंतरसायरमज्झंतरस्थवेदीदो ।

पडदि सदलचरणण्णिदपण्णत्तरिदससयं गत्ता ॥ ३५५ ॥

दलिते पुनः तदनंतरसागरमध्यांतरस्थवेदीतः ।

पतति स्वदलचरणान्वितपंचसप्ततिदशशतं गत्वा ॥ ३५५ ॥

अर्थ—बहुरि ताकौं आधा किएं ताके अनंतरि अहींद्रवरनामा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातै परे अपना आधा अर चौथाई करि संयुक्त पिचहत्तरि दश सैकड़ा प्रमाण योजन जाइ सो राजू पड़ै है । संदृष्टि–तीसरी बार आधा किया संते पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै १५६२५०० ताकौं आधा किएं सात लाख इक्यासी हजार दोयसै पचास योजन हीन सबै तिस स्वयंभूरमण द्वीपके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्र ताका अभ्यन्तर तटतै परै तिस समुद्रविषै पिचहत्तरि दश सैकड़ाका पिचहत्तरि हजार भए ताका आधा साढ़ासैंतीस हजार अर चौथाई पौणा उगणीस हजार इनकौं मिलाए एक लाख इकतीस हजार दोयसै पचास १३१२५० भए । सो इतने योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥ ३५५ ॥

इदि अब्भन्तरतडदो सगदलतुरियट्ठमादिसंजुत्तं ।

पण्णत्तरिं सहस्सं गंतूण पडदि सा ताव ॥ ३५६ ॥

इति आभ्यन्तरतटतः स्वकदलतुर्याष्टमादिसंयुक्तम् ।

पंचसप्ततिसहस्रं गत्वा पतति सा तावत् ॥ ३५६ ॥

अर्थ—ऐसैंही अभ्यन्तर तटतै अपना अर्द्ध चौथा भाग आठवां भाग आदि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन जाइ जाइ सो राजू तावत् पड़ै है । तहां चौथीबार आधा किए अहीन्द्रवर नाम द्वीपका अभ्यन्तर तटतै अपना आधा ३७५०० चौथाई १८७५० आठवां ९३७५ करि संयुक्त पिचहत्तरि ७५००० हजार योजन ४०६२५ जाइ एक पड़ै है बहुरि पांचवां बार आधा किएं तातै पिछला समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतै अपना आधा चौथाई आठवां सोलहवां भाग करि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है, बहुरि छठीबार आधा किएं तिस समुद्र

निछला द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं अपना अर्द्ध चौथाई आठवां सोलवां बत्तीसवां भाग संयुक्त निन्याणवै हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है ऐसेही पूर्वै जेता अधिक होइ तातैं आधा आधा अधिकका अनुक्रम करि निछला समुद्र वा द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ सो राजू पड़ै है। तहां आधा आधाका अनुक्रम करि जहां एक योजनका अधिकपणा उबरै तहां पर्यंत निवहत्तरि हजारके अर्द्धछेद समतरह हो हैं। बहुरि तहां पीछै उबर्या जो एक योजन ताके अंगुल करिए तब सात लाख छहत्तरि हजार होंहि तिनका आधा आधा क्रम करि एक अंगुल उबरै तहां पर्यंत उगणीस अर्द्धछेद हो है। तिन सर्व छेदनिकौं मिलाय ताका नाम संख्यात किया। बहुरि उबर्या था एक अंगुल ताके प्रदेश करि आधा आधा अनुक्रम लिए अधिक करतैं सूच्यंगुलके अर्धछेदनिका जो प्रमाण तितनी बार भए एक प्रदेशका अधिकपणा आनि रहै सो संख्यात अर सूच्यंगुलका अर्द्धछेद मिलाय संखेज्जरूवसंजुद इत्यादि गाथा कहै हैं ॥ ३५६ ॥

संखेज्जरूवसंजुदसूईअंगुलछिदिप्पमा जाव।
गच्छंति दीवजम्हा पडदि तदो साद्धलक्खेण ॥ ३५७ ॥
संख्येयरूपसंयुतसूच्यंगुलछेदप्रमा यावत्।
गच्छंति द्वीपजलधयः पतति ततः सार्धलक्षेण ॥ ३५७ ॥

अर्थ—संख्यातरूप करि संयुक्त ऐसे सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनिका जो प्रमाण यावत् है तावत् ते द्वीप समुद्र पूर्वोक्त अनुक्रम करि अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ राजूका पतनरूप होतौ [illegible] है। तहां पीछै सर्व द्वीप समुद्रनिविषै डेढ़ लाख १५०००० योजन परै अभ्यन्तर वेदीतै [illegible] राजू पड़ै है। कैसे सो कहिए है। अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं [illegible] [illegible] करि अन्तका धन निवहत्तरि हजार ताकौ गुणकार दोय करि गुणे [illegible] [illegible] आदिका प्रमाण एक प्रदेश घटाइए अर एक घाटि गुणकारका प्रमाण एक [illegible] एक प्रदेश घाटि डेढ़ लाख योजन प्रमाण भए। सो संख्यात सहित सूच्यंगुलके [illegible] द्वीप समुद्र भए। अन्तविषै अभ्यन्तर वेदीतैं इतने परै जाइ राजू पड़ै है। बहुरि [illegible] [illegible] ००००० ००००० ००००० ००० [illegible] ००००० [illegible]

[illegible]

ज्योंह लाख ज्योंह लाख योजनका क्रम करि लवण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकों जाइ करि ॥ ३५७॥

कहा सो कहैं हैं;—

लवणे दु पडिदेक्कं जंबूए देज्जमादिमा पंच ।
दीउदही मेरुसला पयदुवजोगी ण छचेदे ॥ ३५८ ॥

लवणे द्विः पतितः एकं जंबौ देहि आदिमाः पंच ।
द्वीपोदधयः मेरुशलाः प्रकृतोपयोगिनः न षट् चैते ॥ ३५८ ॥

अर्थ—लवण समुद्रविर्षे दोय अर्द्ध छेद पड़े है। कैसे! राजूकों आधा आधा करते जहां दोय लाखका अर्द्ध छेद करिए तब सतरह १७ बार भएं एक योजन उबरै बहुरि एक योजन उबरै। बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्द्धछेद करिए तब उगणीस बार भएं एक अंगुल उबरै। बहुरि राजूका अर्धछेद किएं प्रथम अर्द्धछेद मेरुके मध्य पड्या सो ऐसे सतरह उगणीस एक अर्द्धछेद मिलि संख्यात अर्द्धछेद भए। बहुरि एक अंगुल उबरया था सो यह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्द्धछेद इतने छेछे। इहां पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग प्रमाण सूच्यंगुलके अर्धछेद जानने। इनकों मिलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्द्धछेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्द्धछेद भए तिनकी सहनानी ऐसी उ इहां संख्यात अधिककी सहनानी ऊपरि ऐसें
छेछे
१ जाननी। इतने अर्द्धछेदनिविर्षे अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाएं जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननीं। अपनयन त्रैराशिक विधि कैसें सो कहै है। राजूका अर्द्धछेद इतने कहे छे तहां पल्यके अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तो गुण्य जानना छे बहुरि पल्यके
छेछेछे १
अर्द्धछेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जानना। छे छे ३ तहां जो इतने छेछे ३ गुणकारकों देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकों गुण्यविर्षे एक घटाइए तो इतना १ घटावनेके अर्थि
छेछे
गुण्यमें कितना घटाइये ऐसें त्रैराशिक करिए तहां प्रमाण राशि ऐसा छेछे ३ फलराशि १ इच्छा राशि ऐसा १ फल करि इच्छाकों गुणि प्रमाणका भाग दीजिए तहां भाज्य राशि अर भागहार
छेछे
राशि दोऊनिविर्षे पल्य अर्द्धछेदनिका वर्ग ऐसा छेछे तिनकों समान देखि भागहारविर्षे उबर्या तीनका अंक ताका भाज्यविर्षे असंख्यात उबरे तीह करि साधिक एककों भाग दीजिए। इतना गुण्यविर्षे घट्या। ऐसें करि अपना साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्द्ध छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यकों पल्यका अर्द्धछेदनिका वर्ग अर तीन करि गुणें जो प्रमाण होइ इतने सर्व द्वीप समुद्र हैं तिनकी सहनानी ऐसे छे छे छे ३ इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकौं

सहनानी ऐसी ।) जाननी इनविर्षै आधे द्वीप आधे समुद्र जानने ७) ऐसै द्वीप समुद्रनिकी
३ १
१

संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकौं कथनविर्षै जोड़ै है । जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण तासौं लाख योजन रहै । तहां लवण समुद्रका अभ्यन्तर तटतैं ल्योढ़ लाख योजन परैं लवण समुद्रविर्षै जाइ अर्द्ध पड़ै है । ऐसैं दो बहुरि ताका आधा लाख योजन भएं लवण समुद्रका अभ्यंतर तटतैं पचास हजार योजन परैं जाइ अर्द्धच्छेद पड़ै है ऐसैं दोइ अर्द्धछेद जाननें। बहुरि तहां एक जंबूद्वीपकै देहु । भावार्थ— दोय अर्द्ध छेदनिविर्षै एक अर्द्धछेद तो लवण समुद्रका गिनना । अर एक अर्द्धविर्षै पचास हजार योजन जंबूद्वीपके मिलाएं लाख योजन होइ सो इस अर्द्धछेदकौं जंबूद्वीपहीका गिननां ऐसे ए अर्द्धछेद कहे । बहुरि इन अर्द्धछेदनिविर्षै आदिके जंबूद्वीपादि पांच द्वीप समुद्र संबंधी पांच अर्द्धछेद अर मेरुशलाका कहिए राजूकौं आधा करतें प्रथम अर्द्धछेद कह्या सो ऐसै ए छह अर्द्धछेद इहां अधिकाररूप ज्योतिषी विंबनिका प्रमाण ल्यावनेविर्षै उपयोगी कार्यकारी नाहीं जातैं तीन द्वीप दोय समुद्रनिके विंबनिका प्रमाण जुदा ग्रहण करैंगे तातैं पांच अर्द्धछेद तो ए कार्यकारी नाहीं अर मेरुशलाका रूप प्रथम अर्द्धछेदनिविर्षै कोई द्वीप समुद्र आया नाहीं तातैं सो कार्यकारी नाहीं ऐसे छह अर्द्धछेद आगैं घटावेंगे ॥ ३५८ ॥

कहां सो कहैं हैं;—

तियहीणसेढिछेदणमेत्तो रज्जुच्छिदी हवे गच्छो ।
जंबूदीवच्छिदिणा छरूपजुत्तेण परिहीणो ॥ ३५९ ॥

त्रिकहीनश्रेणिछेदनमात्रः रज्जुछेदः भवेत् गच्छः ।
जंबूद्वीपछेदेन षड्रूपयुक्तेन परिहीनः ॥ ३५९ ॥

अर्थ—तीन घाटि जगच्छ्रेणीका अर्द्धप्रमाण एक राजूके अर्द्धछेद हैं । तिनमें जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्द्धछेद छह अर्द्धछेदनि करि संयुक्त घटाएं ज्योतिषी विंबनिकी संख्या ल्यावनेविर्षै गच्छका प्रमाण हो है । तहां जगच्छ्रेणी अर्द्धछेद इतने हैं छे छे छे ३ इहां पल्यके
७

अर्द्धछेदनिकी सहनानी ऐसी छे अर नीचे असंख्यातकी सहनानी ऐसी ७ ताका भागहार जाननां। बहुरि आगैं पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्गका गुणाकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ ताका गुणकार जानना । बहुरि इनमें तीन अर्द्धछेद घटाएं राजूके अर्द्धछेद होहिं जातैं जगच्छ्रेणीके सातवैं
७

भाग राजू है । सो सातके तीन अर्द्धछेद होहिं ताकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ इहां ऊपरि घटा-
७

वनेकी सहनानी ऐसी ३ जाननी बहुरि इन अर्द्धछेदनिका प्रमाणविर्षै जंबूद्वीपके अभ्यन्तर पचास हजार योजन अर बाह्य पचास हजार योजन मिलि एक लाख योजन प्रमाण जंबूद्वीप संबंधी अर्द्धछेद कह्या था सो इन लाख योजननिके अर्द्धछेद घटाइए । तहां एक लाखके अर्द्धछेद तिनमें छह

करिए सात बार १ ० बार भएं एक योजन उपजै। बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार किये अर्धच्छेद करिए तब उगणीस बार भएं एक अंगुल उपरै। बहुरि राजूका अर्धच्छेद कीएं प्रथम अर्धच्छेद मेरुके मध्य पर्यंत भी ऐसे सत्रह उगणीस एक अर्धच्छेद मिलि संख्यात अर्धच्छेद भए। बहुरि एक अंगुल उपज्या था सो यह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्धच्छेद इतने छे छे। इहां पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण सूच्यंगुलके अर्धच्छेद जानने। इनकौं मिलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्धच्छेद भए। तिनकी सहनानी ऐसी छे छे। इहां ... सहनानी उपरि ऐसी ? जाननी। इतने अर्धच्छेद राजूके अर्धच्छेदनिविषै घटाइए... विधि करि घटाएं जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी। ... त्रैराशिक विधि कैसे ? सो कहै है—राजूके अर्धच्छेद इतने कहे छे छे छे ३ तहां पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण सो गुण्य जानना छे। बहुरि पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जानना छे छे ३। इहां जो इतने छे छे ३ गुणकारकौं देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकौं गुण्यविषै एक घटाइए तौ इतना घटावनेके अर्थि गुण्यमैंसौ कितना घटाइए ऐसैं त्रैराशिक करिए। तहां प्रमाण राशि ऐसा छे छे ३ फलराशि एक १ इच्छा राशि ऐसा छे छे। यहां फल करि इच्छाकौं गुणि प्रमाणका भाग दीजिए, तहां भाज्यराशि अर भागहार राशि दोऊनिविषै पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग ऐसा छे छे। तिनकौं समान देखि भागहार विषै ... भाज्यविषै ... करि साधिक एककौं भाग दीजिए, इतना गुण्यविषै घटाइए। ऐसे करि साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यकौं पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग अर तीनिकरि गुणें जो प्रमाण होइ तातैं तीन घटाइए। इतने सर्वद्वीप समुद्र हैं। तिनकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३। ... । इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी सहनानी ऐसी है जाननी। इन विषै आधे द्वीप आधे समुद्र जानने। ऐसैं द्वीप समुद्रनिकी संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकौं कथन विषै जोडै हैं। जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्धच्छेद तिनमें छह अर्धच्छेद और मिलाइए, इनकों जोडि जो प्रमाण होइ तितैं अर्धच्छेद राजूके अर्धच्छेदनिमैंसौं घटाएं जो प्रमाण होइ तितना सर्व द्वीप समुद्र संबंधी चंद्र सूर्यादिकनिके प्रमाण ल्यावनेकौं गच्छका प्रमाण जानना भावार्थ—यहु पूर्वे द्वीपसमुद्रनिकी संख्या कही तातैं छह घटाएं इहां गच्छका प्रमाण हो है ॥ ३५९ ॥

आगै तिन ज्योतिषी बिंबनिकी संख्या ल्यावनेविषै जो गच्छ कहा ताकी आदि कहै हैं;—

पुक्खरसिंधुभयपणं चउपणगुणसयछहत्तरी पभओ।
चउगुणपचओ रिणमवि अडघदिमुहमुवरि दुगुणकमं॥ ३६० ॥

पुष्करसिंधूभयधनं चतुर्घनगुणशतषट्सप्ततिः प्रभवः।
चतुर्गुणप्रचय. ऋणमपि अष्टकृतिमुखमुपरि द्विगुणक्रमं ॥ ३६० ॥

अर्थ—स्थानिकनिका जो प्रमाण सो गच्छ कहिए वा पद कहिए। बहुरि गच्छविषै जो पहला स्थानविषै प्रमाण सो आदि कहिए वा प्रभव कहिए वा मुख कहिए। बहुरि स्थान स्थान

प्रति जितनां जितनां वधै सो प्रचय कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिका प्रमाण ति
आदि ताकौं जोड़ें जो प्रमाण होइ सो आदि धन कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी
जोड़ें जो प्रमाण होइ सो उत्तर धन कहिए। सो इहां पुष्कर नामा समुद्रका आदि धन अ
धन मिलाएं च्यारिका घन चौंसठि तीह करि गुण्या हूवा एक सौ छिहंतरि प्रमाण उभय
है सो इहां प्रभव जाननां। बहुरि एक एक द्वीप वा समुद्र प्रति चौगुणा चौगुणा वधती धन
प्रचय जाननां। बहुरि ऋणविषै आठकी कृति चौंसठि तीह प्रमाण तो मुख जाननां।
क्रमतैं द्विगुण द्विगुण वधता है सो प्रचय जाननां। ऐसे धनराशि ऋणराशिकौं जानि धनरा
ऋणराशिकौं घटाएं स्थान स्थानविषै प्रमाण जाननां। तहां पुष्कर समुद्रका आदि धन उत्त
कैसें ल्यावनां सो कहिए हैं—आदितैं आदि दूणा दूणा क्रमतैं कहे थे तातैं पुष्करार्द्ध द्वीपका
वलयविषै एक सौ चवालीस थे तिनतैं दूणे पुष्कर समुद्रका आदि वलयविषै हैं। १४४।
इहां मुख जाननां। बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्रकरि गच्छकरि गुण्या हुवा मु
प्रमाण सो आदि धन है। सो इहां बत्तीस वलय हैं। तातैं गच्छका प्रमाण बत्तीस ति
मुखकौं गुणें जो मुखविषै दोयका गुणकार था ताकौं बत्तीस करि गुणि अर एकसो चवाल
आगै चौंसठिका गुणकार स्थापिए। १४४।६४ इतनां तो आदि धन जाननां बहुरि "व्येकप
प्रचयगुणो गच्छ" उत्तरधनं इस सूत्रकरि एक घाटि गच्छका आधा करि चयकौं गुणि तीह
गच्छकौं गुणें उत्तर धन हो है। सो इहां एक घाटि गच्छ इकतीस ३१ ताका आधा $\frac{31}{2}$ करि व
प्रमाण एक एक वलयविषै च्यारि च्यारि वधती है, तातैं च्यारिकरि गुणिए $\frac{31}{2}$। बहुरि इनकौं
बत्तीसकरि गुणिए, $\frac{31}{2}$।४।३२।बहुरि भागहारका दूवा करि गुणकारका चौका अपवर्त्तन किए दोय
तीहकरि बत्तीसका गुणकार गुणें चौसठि होइ। ऐसें इकतीसकौं चौसठि गुणां करिए ३१।
इतनां उत्तरधन हुवा। बहुरि इस उत्तर धनविषै चौसठि ऋण मिलावनां सो उत्तर धनविषै चौसठि
गुणकार जानि गुण्यविषै एक मिलाया तब बत्तीसकौं चौसठि गुणां करिए। इतनां उत्तरधन भया ३२।६
इहां ऋणका मिलावनां बहुरि याहीका घटावनां सो सुगम गणित आवनेके अर्थि करिए है। ब
आदि धन अर उत्तर धनविषै गुण्य बत्तीस इनकौं मिलाइ एक सौ छिहंतरि गुण्य किया अर चौस
गुणकार किया। ऐसे चौसठि गुणां एक सौ छिहंतरि १७६।६४ प्रमाण पुष्कर समुद्रका उभय
सो ज्योतिर्बिंबनिका प्रमाण ल्यावनेंके अर्थि जो गच्छ घटाया था ताका प्रभव कहिए आदि आनन
बहुरि यातैं चौगुणां वारुणीवर द्वीपविषै धन जाननां। कैसैं सो कहिए हैं। पूर्व आदितैं दूणां
आदि वलयविषै है सो मुख १४४।२।२ जाननां। बहुरि पदहतमुखमादिधन इस सूत्र क
यहां इहां वलय चौसठि है तातैं गच्छका प्रमाण चौसठि तीहकरि गुणिए १४४।२।२।६
बहुरि दोय दूवानिको परस्पर गुणें च्यारि होइ १४४।६४।४ ऐसें आदि धन भया। बहुरि "व्ये
[illegible]प्रचयगुणो गच्छ उत्तरधन" इस सूत्र करि एक घाटि गच्छ प्रमाण तरेसठि ६३ ताक
आधा $\frac{63}{2}$ करि [illegible] [illegible] [illegible] करि गुणिए $\frac{63}{2}$।४ बहुरि याकौ
गच्छ चौसठि करि गुणिए $\frac{63}{2}$।४।६४ बहुरि दोयका [illegible] करि च्यारिका अपवर्तन करि दूवा

भया। बहुरि छह अर्द्धछेद इहां उपयोगी न कहि घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं परस्पर गुणें चौसठिका वर्ग होइ। बहुरि जगच्छ्रेणीका अर्द्धछेदनिमैंस्यौं तीन घटाएं राजूके अर्द्धछेद होहिं ऐसा कहि घटाए थे। तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं मांडि परस्पर गुणें सातका वर्ग भया। ऐसैं ए सर्व अर्द्धछेद घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें जो जो प्रमाण भया ताका भागहार जाननां। जातैं "विरलिज्जमाणरासिं जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि। तेसिं अण्णोण्ण हदी हारो उप्पण्णरासिस्स" ऐसा करणसूत्र पूर्वै कहि आए हैं। ऐसैं गच्छमान गुणकारका परस्पर गुणनां भया। बहुरि यामैं एक घटाइए ताकी सहनानी ऐसी बहुरि याकौं एक घाटि गुणकार तीन ताका भाग दीजिए। बहुरि मुखका प्रमाण चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि तीहकरि गुणिए तब धन राशिका जोड़ दिएं जगत्प्रतरकौं चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि करि गुणिए अर ताकौं प्रतरांगुलकौं सात लाख अडसठि हजारका वर्ग अर लाखका वर्ग अर चौसठिका वर्ग अर सातका वर्ग अर तीन करि गुणि ताका भाग दीजिए तामैं एक घटाइए इतना संकलित धन=१७६।६४। हो है। इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=प्रतरांगुलकी ऐसी ४

४।७६८०००।७६८०००। १ ल। १ ल। ६४। ६४। ७। ७। ३।

जांननी। बहुरि ऋण राशिका संकलित धन ल्याइए तहां गुणाकारका प्रमाण दोय है तातैं पूर्वोक्त गच्छका जितनां प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणिए। तहां उपरितन राशि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ। बहुरि नीचे ऋणरूप राशी तिहविषैं सतरह आदि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें एक लक्ष अर सात लाख अडसठि हजार अर चौसठि अर सात होइ इनका भाग दीजिए। बहुरि इनमैं एक घटाइए, बहुरि मुख चौसठि करि गुणिएं, बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीजिए ऐसैं करतैं ऋण राशिका संकलित धन चौंसठि गुणां जगच्छ्रेणीकौं सूच्यंगुलकौं सात लाख अडसठि हजार अर एक लाख अर सात अर चौसठि अर एक करि गुणि ताका भाग दीजिए। तामैं एक घटाइए इतनां भया ६४ २।७६८०००।१ल।६४।७१ इहां जगच्छ्रेणीकी सहनानी ऐसी— सूच्यंगुलकी ऐसी २ जाननी। अब तिस धन राशिविषैं जो एकसौ छिहंतरिकर गुणकार था अर नीचे चौसठिका भागहार था तिन दोऊनिकौं सोलाकरि अपवर्त्तन किएं एकसौ छिहंतरिकी जायगा ग्यारह हूवा, चौसठिकी जायगां च्यारि हूवा। बहुरि गुणकारके चौसठिकौं भागहारके चौसठि करि अपवर्त्तन किएं दोऊ जायगा अभाव भया। बहुरि दोय जायगा सात लाख अडसठि हजार अर दोय जायगा लाख तिनकी सोलह बिन्दी स्थापिए। बहुरि अंगुलनिका दोय जायगा सातके अडसठिका अंक रह्या तिनकौं तीनकरि संभेदन करि तिनकी जायगा दोयसै छप्पन लिखि, आगैं तीनका अंक लिखिए। बहुरि दोय जायगा दोयसै छप्पन भए तिनकौं परस्पर गुणें पण्णट्ठी होइ। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक भए अर एक जायगा तीनका अंक आगैं था इनकौं परस्पर गुणें सत्ताईस होइ। बहुरि सत्ताईसकौं सातका वर्ग गुणचास करि गुणें तेरहसै तेईस होइ इनकौं जो चौसठिकी जायगा च्यारि भए थे तिन करि गुणें बावनसै बाणवै होइ। ऐसैं करि जगत्प्रतरकौं ग्यारहका गुणकार अर प्रतरांगुलकौं पण्णट्ठी अर पांच हजार दोय सै बाणवैके

आगे सोलह बिन्दी तिनकरि गुणें जो प्रमाण होइ ताका भागहार दिऐं धन राशिका गुणस
=११
लित धन हो है ४।६५=५२९२०००००००००००००००००। बहुरि जंबूद्वीपतैं लगाय पु
रार्द्धपर्यन्त दोहोत्रगा इत्यादि चंद्रादिकका प्रमाण कया २।४।१२।४२।७२। तिनकौं मिलाएं एक
बत्तीस भए। बहुरि मानुषोत्तर पर्वत परैं पुष्करार्द्ध द्वीपविषै चंद्रमानिका प्रमाण ल्यावनकौं
है। "पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं। पभवजुदं पदगुणिद पदं गुणिदं तं वि
णाहि" इस करण सूत्र करि इहां वलय आठ है। तातैं गछका प्रमाण आठ तामैं एक घ
७ ताका आधा करि ७/२ उत्तर जो वलय वलय प्रति बधतीका प्रमाण च्यारि तिहकरि गुणिए
४ अपवर्त्तन करिए तब चौदह भए १४ इनविषैं प्रभव जो प्रथम वलयविषै प्रमाणरूप मुख ए
सौ चवालीस जोडिए १५८। बहुरि इनकौं गछ आठकरि गुणिए तब बारहसौ चौसठि भए
विषै एकसौ बत्तीस जंबूद्वीप आदिकके मिलाएं तेरहसै छिनवै होइ सो इनको जो पूर्वैं
संकलित धन भया था तिनमैं घटाइए हैं। जातैं ऋणस्यकृणं राशेर्दत्तं इस वचनकरि ऋ
स्यौं घटावनां अर राशिमैं मिलावनां इन दोऊनिका एक अर्थ है। तहां ऋण संकलित धन रा
तेरहसै छिनवैका समछेद करिए तब ऐसा होइ—१३९६। मू २।७६८०००। १
६४।७।१। सू २।७६८०००। १ छ।६४।७।१ सो यहु गुणकार भागहारादिकका अपवर्त्तनादि
किएं भाज्य राशिकौं परस्पर गुणें संख्यात सूच्यंगुल प्रमाण भया। सो इनकौं पूर्वोक्त ऋण संक
धनका भाज्य विषै घटाईए तब ऐसा भया।२।७६८०००।१छ।७।६४।१ इहां संख्यात सूच्यंगु
सहनानी ऐसी २! जाननी। अर आगे घटावनैंकी सहनानी ऐसी—जाननी। ऐसैं ऋण सका
धनविषै एक जगच्छ्रेणी है। ताका सहित ऋण सहित जो धनसंकलित धन पूर्वैं कह्या सोल
समान छेद करिए तब ऐसा—मू २।६४।७६८०००। १ छ।७।६४।३।४
७६८०००।७६८०००।१ छ।१ छ७।७।६४।६४।३। भया। इसविषै सूच्यंगुल विना अ
सर्व गुणकारनिकौं संख्यातरूप मनि इस प्रमाणकौं संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगच्छ्रेणी प्रमा
ऋणराशि भया। ताकी सहनानी ऐसी—२ इनकौं पूर्वोक्त धन संकलित ऐसा=४।६५=५२९२।१
इहां सोल्ह बिंदीनिकी सहनानी ऐसी १६ जाननी। सो इहां जगत्प्रतरविषै श्रेणीकौ श्रेणीका गुणाक
है तातैं दोय बार श्रेणी है। तहां एक जगच्छ्रेणीकौं ऋण राशिकी जगच्छ्रेणीकै समान देखि तहां
दूसरी गुणकाररूप जगच्छ्रेणीविषै घटाएं किंचित न्यूनपणा आया ऐसे करि गुण संकलित धन कहि
गुणकार विषै जोड्या प्रमाण ताकौं ल्यावै किंचित न्यून किएं संख्यात सूच्यंगुल गुणि
जगच्छ्रेणीकरि हीन जगत्प्रतर किंचिन्यून ग्यारह गुणा ताकौं प्रतरांगुल पणट्ठी प्रमाणकौं बाइनवै दस
आगे सोलह [illegible] गुणकार करि ताका भा[illegible] दीजिए इतना प्रमाण भया [illegible] २ [illegible]

इहां जग[illegible] [illegible] [illegible] जाननी अर [illegible]
ऐसी २ [illegible] प्रमाणकौं [illegible]
चन्द्रनिका प्रमाण [illegible] गुणें [illegible] प्रमाण होइ [illegible]

करि गुणें ग्रहनिका प्रमाण होइ। एक जायगा अठाईसकरि गुणें नक्षत्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा छैयासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोडाकोडि करि गुणें तारानिका प्रमाण होइ इन सबनिकों जोडें।

=०-२ ⁷।११।१=०२ ⁷।११।१=०२ ⁷।११।८८
४।६५=५२९२।१६।४।६५=५२९२।१६४।६५=५२९२।१६
=०२ ⁷।११।२८=०२ ⁷।११।६६९७५।१४
४।६५=५२९२।१६ ४।६५=५२९२।१६

जगत्प्रतरकों सांत तीन छह सात दोय पांच अंक अर दश बिंदी अर आगैं बारहसै अठ्याणैव इनका गुणकार अर प्रतरांगुल पणट्ठी आगैं बावनैस बाणवै सोलह बिंदी इनका भागहार भया। सो इतनें सर्व्व ज्योतिषी बिंब हैं।=७३६७२५००००००००००१२९८
४।६५=५२९२००००००००००००००००० बहुरि

स्थान सदृश अपवर्त्तन कहिए हीन अधिक अंकनिकों न गिणिकरि दाहकी बिषै दाहकी सैंकड़ा बिषै सैंकड़ा इत्यादि यथास्थान अपवर्त्तन करना तिसन्याय करि सात तीननैं आदि दे करि गुणकारके बीस अंक अर पांच दोयनैं आदि देकरि भागहारके बीस अंकनिका अपवर्तन करि दोय जायगा अभाव करना। ऐसा मनविषै विचारि 'बेसदछप्पण्णंगुल' इत्यादि सूत्रकरि दोयसै छप्पन अंगुलका वर्ग जो पणट्ठी गुणित प्रतरांगुल ताका भाग जगत्प्रतरकों दीजिए इतनें ४।६५।। ज्योतिषी बिंब है। ऐसा आचार्यनें कह्या। सोई असंख्यात द्वीप समुद्र संबंधी सर्व ज्योतिषी बिंबानिका प्रमाण जाननां ॥ ३६१ ॥

आगैं एक चंद्रमाका परिवाररूप ग्रहनक्षत्र तारे तिनिका प्रमाण कहैं हैं;—

अडसीदट्ठावीसा गहरिक्खा तार कोडकोडीणं।
छावट्ठिसहस्साणि य णवसयपण्णत्तरिगि चंदे ॥ ३६२ ॥

अष्टाशीत्यष्टाविंशतिः ग्रहर्क्षयोस्तारा: कोटिकोटीनाम्।
षट्षष्टिसहस्राणि च नवशतपंचसप्ततिरेकस्मिन् चंद्रे ॥ ३६२ ॥

अर्थ—अठ्यासी अर अठाईस ग्रह अर नक्षत्र हैं। **भावार्थ**—ग्रह अठ्यासी हैं नक्षत्र अठाईस हैं। बहुरि तारे छयासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोड़ाकोडी हैं। ६६९७५००००००००००००००० इतना एक चंद्रमाका परिवार है ॥ ३६२ ॥

आगैं अठ्यासी ग्रहनिका नाम आठ गाथानिकरि कहैं हैं;—

कालविकालो लोहिदणामो कणयक्ख कणयसंठाणा।
अंतरदो तो कचयव दुंदुभि रत्तणिह रूवणिब्भासो ॥ ३६३ ॥

कालविकालो लोहितनामा कनकाख्य: कनकसंस्थान:।
अंतरदस्ततः कचयव: दुंदुभिः रत्ननिभ रूपनिर्भास: ॥ ३६३ ॥

अर्थ—कालविकाल १ लोहित १ कनक १ कनक संस्थान १ अंतरद १ कचयव १ ... रूपनिर्भास १ ॥ ३६३॥

णीलो णीलब्भासो अस्सस्सट्ठाण कोस कंसादी।
वण्णा कंसो संखादिमपरिमाणो य संखवण्णोवि ॥ ३६४ ॥
नीलो नीलाभासोऽश्वोऽश्वस्थानः कोशः कंसादिः।
वर्णः कंसः शंखादिपरिमाणः च शंखवर्णोपि ॥ ३६४ ॥

अर्थ—नील १ नीलाभास १ अश्व १ अश्वस्थान १ कोश १ कंसवर्ण १ कंस १ शंखपरिमाण १ शंखवर्ण ॥ ३६४ ॥

तो उदय पंचवण्णा तिलो य तिलपुच्छ छाररासीओ।
तो धूम धूमकेदूगिसंठाणक्खो कलेवरो वियडो ॥ ३६५ ॥
तत उदयः पंचवर्णस्तिलश्च तिलपुच्छः क्षारराशिः।
ततो धूमो धूमकेतुः एकसंस्थानः अक्षः कलेवरो विकटः ॥ ३६५ ॥

अर्थ—उदय १ पंचवर्ण १ तिल १ तिलपुछ १ क्षारराशि १ धूम १ धूमकेतु १ एक संस्थान १ अक्ष १ कलेवर १ विकट १ ॥ ३६५ ॥

इह भिण्णसंधि गंठी माण चउप्पाय विज्जुजिब्भणभा।
तो सरिस णिलय कालय कालादीकेउ अणयक्खा ॥ ३६६ ॥
इहाभिन्नसंधिः ग्रंथिः मानश्चतुःपादो विद्युज्जिह्वो नभः।
ततः सदृशो निलयः कालश्च कालादिकेतुरनयाख्यः ॥ ३६६ ॥.

अर्थ—अभिन्नसंधि १ ग्रंथि १ मान १ चतुःपाद १ विद्युजिह्व १ नभ १ सदृश १ निलय १ काल १ काल केतु १ अनय ॥ ३६६ ॥

सिहाउ विउल काला महकालो रुद्दणाम महरुद्दा।
संताण संभवक्खा सव्वट्ठि दिसाय संति वत्थूणो ॥ ३६७ ॥
सिहायुर्विपुलः कालो महाकालो रुद्रनामा महारुद्रः।
संतानः संभवाख्यः सर्वार्थी दिशः शांतिर्वस्तुनः ॥ ३६७ ॥

अर्थ—सिंहायु १ विपुल १ काल १ महाकाल १ रुद्र १ महारुद्र १ संतान १ संभव १ सर्वार्थी १ दिशा १ शांति १ वस्तून १ ॥ ३६७ ॥

णिचल पलंभ णिम्मंत जोदिमंता सयंपहो होदि।
भासुर विरजा तत्तो णिद्दुक्खो वीदसोगो य ॥ ३६८ ॥
निश्चलः प्रलंभो निर्मंत्रो ज्योतिष्मान् स्वयंप्रभो भवति।
भासुरो विरजस्ततो निर्दुःखो वीतशोकश्च ॥ ३६८ ॥

अर्थ—निश्चल १ प्रलंभ १ निर्मंत्र १ ज्योतिष्मान १ स्वयंप्रभ १ भासुर १ विरज १ निर्दुःख १ वीतशोक १ ॥ ३६८ ॥

सीमंकर खेमभयंकर विजयादिचउ विमलतत्था य।
विजयण्हु वियसो करिकट्ठिगिजडिअग्गिजाल जलकेदू ॥ ३६९ ॥

तिष्ठते सूर्य सूर्यनिके वीचि अंतराल अर वेदी सूर्यनिविर्षे अंतराल ल्यावनां। भावार्थ—लवण समु
विर्षे च्यारि आदि सूर्य हैं तिनविर्षे एक एक परिधिविर्षे दोय दोय सूर्य जाननें तहां लवण स
विर्षे अभ्यंतर वेदीतैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैंतीस इकसठिवां भाग परैं
परिधि है तहां सूर्यका विमान है। सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। बहुरि तातैं परैं निन्या
हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग परैं जाइ परिधि है तहां सूर्य विमान है
अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। बहुरि तातैं परैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन
सैंतीस इकसठिवां भाग परैं जाइ लवण समुद्रकी बाह्यवेदी है। ऐसैं इनकौं मिलाएं दोय लाख यो
प्रमाण लवण समुद्रका व्यास हो है। याही प्रकार धातुकी खंडविर्षे च्यारि लाख योजन व्यास
तामैं छह जायगा एक एक परिधिविर्षे दोय दोय सूर्य हैं। तिनि छहौं परिधिनिके बीचि
सूर्यविर्षे पांच अंतराल हैं। तिनका प्रमाण ल्यावनां। बहुरि तिस प्रमाणतैं आधा आधा अभ्यं
वेदी सूर्यविर्षे अर बाह्यवेदी सूर्यविर्षे अंतराल है सो ल्यावनां। याही प्रकार कालोदक स
पुष्कराद्ध द्वीपविर्षे भी अंतरालका प्रमाण ल्यावनां ॥ ३७३ ॥

अब चार क्षेत्र कहैं हैं;—

दो दो चंदरविं पडि एक्केक्कं होदि चारखेत्तं तु।
पंचसयं दससहियं रविबिंबहियं च चारमही ॥ ३७४ ॥

द्वौ द्वौ चंद्ररवी प्रति एकैकं भवति चारक्षेत्रं तु।
पंचशतं दशसहितं रविबिंबाधिकं च चारमही ॥ ३७४ ॥

अर्थ—दोय दोय चंद्रमा वा सूर्यप्रति एक चार क्षेत्र सो कितनां है? पांचसै दश योजन अर सू
बिंबका प्रमाणकरि अधिक है। **भावार्थ**—चंद्रमा वा सूर्यका गमन करनेंका जु क्षेत्रगली सो च
क्षेत्र कहिए ताका व्यास पांचसै दश योजन अर योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण
५१०$\frac{48}{61}$ तिस चार क्षेत्रविर्षे गलीनिका प्रमाण आगैं कहैंगे तहां जिस गलीविर्षे एक चंद्रमा
सूर्य गमन करै तिस ही गलीविर्षे दूसरा गमन करै है। तातैं दोय दोय चंद्रमा व सूर्य प्रति एक
चार क्षेत्र है ॥ ३७४ ॥

आगैं तिन चंद्रमा सूर्यनिका जो चार क्षेत्र ताका विभागका नियम कहैं हैं;—

जंबुरविंद् दीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं।
लवणे चरंति सेसा सगसगखेत्ते व य चरंति ॥ ३७५ ॥

जंबूरवींदव द्वीपे चरंति अशीतिं शतं च अवशेषम्।
लवणे चरंति शेषा: स्वकस्वकक्षेत्रे एव च चरंति ॥ ३७५ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपसंबंधी सूर्य वा चंद्रमा तौ एकसौ असी योजन तौ द्वीपविर्षे विचरै हैं
अवशेष लवण समुद्रविर्षे विचरै हैं। बहु अवशेष सूर्य चंद्रमा अपना अपना क्षेत्रही विर्षे विचरै हैं
भावार्थ—चार क्षेत्रका जो व्यास कह्या तामैं जंबूद्वीपसंबंधी चंद्रमा सूर्यनिका एकसौ असी १८
योजन तौ जंबूद्वीपविर्षे अर तीनसौ तीस योजन अर अठतालीस योजनका इकसठिवा भाग लव

समुद्रविर्षें चार क्षेत्रका व्यास जाननां। अवशेष पुष्करार्द्ध पर्यंत द्वीप वा समुद्रसंबंधी चंद्र सूर्यन [illegible] चार क्षेत्र अपनां अपनां द्वीप वा समुद्रही विर्षें जाननां ॥ ३७५ ॥

आगैं सूर्य चंद्रनिके वीथी जो गली तिनका प्रमाण कहै हैं;—

पडिदिवसमेकवीथिं चंदाइचा चरंति हु कमेण।
चंदस्स य पण्णरसा इणस्स चउसीदिसय वीथी ॥ ३७६ ॥
प्रतिदिवसं एकवीथिं चंद्रादित्याः चरंति हि क्रमेण।
चंद्रस्य च पंचदश इनस्य चतुरशीतिशतं वीथ्यः ॥ ३७६ ॥

अर्थ—दोय दोय मिलि करि एक एक दिन प्रति एक एक वीथी प्रति चंद्रमा वा [illegible] विचरैं हैं क्रम करि। तहां चंद्रमाकी पंद्रह वीथी हैं बहुरि इन कहिये सूर्य ताकी एकसौ चौर[illegible] गली हैं। भावार्थ—जो चार क्षेत्र कह्या तीहविर्षें चंद्रमाकी तौ पंद्रह गली हैं, सूर्यकी एक[illegible] चौरासी गली हैं। तहां एक एक दिन प्रति एक एक गलीविर्षें दोय चंद्रमा वा दोय सूर्य ग[illegible] करैं हैं ॥ ३७६ ॥

आगैं वीथीनिका अंतराल करि दिवस प्रति गतिविशेषकौं कहै हैं;—

पथवासपिंडहीणा चारक्खेत्ते णिरेयपथभजिदे।
वीथीणं विच्चालं सगबिंबजुदो दु दिवसगदी ॥ ३७७ ॥
पथव्यासपिंडहीना चारक्षेत्रे निरेकपथभक्ते।
वीथीनां विचालं स्वकबिंबयुतं तु दिवसगतिः ॥ ३७७ ॥

अर्थ—पथ व्यास पिंड कहिए बिंबका व्यासकरि गुण्या हुवा वीथीनिका प्रमाण [illegible] करि हीन जो चारक्षेत्र ताकौं एक घाटि वीथीनिका प्रमाणका भाग दिएं वीथीनिका अंतरा[illegible] प्रमाण हो है। बहुरि स्वकीय बिंबप्रमाण तामैं जोड़ें दिवस गतिका प्रमाण है। तहां सूर्यबिं[illegible] व्यास योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग [illegible] सो इह करि वीथीनिका प्रमाण एकसौ चौरासी गुणिएं तब अठयासीसै बत्तीसका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ [illegible] याकौं समुद्रविर्षें [illegible] चारक्षेत्रका प्रमाणविर्षें घटाइए तहां पांचसै दश योजनाकौं समच्छेद किएं इकतीस हजार [illegible] सौ दशका इकसठिवां भाग होय [illegible] यामैं सूर्यबिंब प्रमाण अधिक था [illegible] सो जोड़े इक[illegible] हजार एकसौ अठावनका इकसठिवां भाग भया [illegible] यावि‍र्षें पथव्यासपिंड [illegible] सौ बत्तीसका इकसठिवां भाग [illegible] घटाइए तब बाईस हजार तीनसै छब्बीसका इकसठिवां [illegible] होय [illegible] याकौं एक घाटि वीथीनिका प्रमाण एकसौ तिरासी ताका भाग दीजे तहां [illegible] भागहार इकसठि [illegible] करि [illegible] तब [illegible] हजार [illegible] छब्बीसकौं [illegible] योजन पाए [illegible] प्रमाण [illegible] बहुरि [illegible] जो सूर्यबिंबका प्रमाण [illegible] इकसठिवां भाग प्रमाण [illegible] है भावार्थ [illegible]

तीनका पांचवां भाग प्रमाण होइ ९४८६ ऐसें फिरि जो जो प्रमाण आवै सो सो ताप तमका विषयभूत क्षेत्र जाननां । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन है ३१६२२ तीहविषै श्रावण मासविषै जहां अठारह मुहूर्तका दिन बारह मुहूर्तकी रात्रि हो है तहां चौराणवैसै छियासी योजन अर योजनका तीन पांचवां भागविषै तौ एक सूर्यके निमित्ततैं तावड़ा पाईए है । अर ताके सन्मुख इतना ही दूसरे सूर्यके निमित्ततैं तावड़ा है । अर तिनके बीचि अन्तरालविषै तरेसठिसै तेईस योजन अर दोयका पंचम भागविषै अन्धकार है, अर ताके सन्मुख दूसरा अन्तरालविषै इतनाही अन्धकार है इन सबनिको जोड़ें ९४८३।३।६३२३।२। ९४८६।३।६३२४।२ ॥ इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण परिधि हो है । ऐसेंही अन्य परिधिनिविषै जाननां । बहुरि विवक्षित परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें जो प्रमाण आवै तितना मास प्रति ताप तमका घटती बधती क्षेत्रका प्रमाणरूप हानिचय जाननां तहां विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणैं पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण हानिचय होइ । एक मासविषै एक मुहूर्त रात्रिदिन कैसैं घटै बधै सो कहिए है । एक दिनविषै दोय इकसठिवां भाग प्रमाण हानि चय होय तौ साढ़ा तीस दिनविषै कितना हानिचय होइ ऐसैं करतैं अपवर्तन किएं एक मुहूर्त एक मासविषै आवै है । बहुरि साठि मुहूर्तविषै सर्व परिधिप्रमाणविषैं गमन करै तौ एक मुहूर्तविषै कितनां क्षेत्रविषै गमन करै ऐसैं परिधिका साठिवां भाग प्रमाण एक मुहूर्तविषै गमनक्षेत्रका प्रमाण आवै है । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधिविषै श्रावन मासतैं भाद्रव मासविषै पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण तापक्षेत्र घटता है तम क्षेत्र बधता पाइए है । तहां एक सूर्यसंबंधी तापक्षेत्र नित्यासीसै गुणसठि योजन अर सतरह तीसवां भाग अर इतना ही दूसरा सूर्यसंबंधी । बहुरि एक अन्तरालविषै तमक्षेत्र अठसठिसै इक्यावन योजन अर ग्यारह सत्तरहवां भाग अर इतनांही दूसरा अन्तरालविषै ऐसैं सर्व मिलि मेरुगिरिका परिधि प्रमाण हो है । ऐसेंही पूस मास पर्यंत दक्षिणायनविषै तौ मास मास पर्यंत पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण आतापक्षेत्र सौ घटता घटता अर तमक्षेत्र बधता जाननां । बहुरि माघतैं फाल्गुनादिक असाढ पर्यंत उत्तरायणविषै मास मास पर्यंत तितनांही तापक्षेत्र बधता बधता अर तमक्षेत्र घटता घटता जाननां । ऐसेंही सर्व परिधिनिविषै ताप तम क्षेत्रका प्रमाण विवक्षित मासविषै ल्यावनां । बहुरि इहां पांच परिधिविषै नाम मासनिकी अपेक्षा वर्णन किया है इस ही प्रकार विवक्षित क्षेत्रका परिधिविषै विवक्षित दिन अपेक्षा ताप तम क्षेत्रका प्रमाण ल्यावनां । बहुरि इहां जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनिका लवण समुद्रके व्यासका छठा भाग पर्यंत प्रकाश है तातें तहां पर्यंत कथन किया है । बहुरि जिस क्षेत्रविषै ताप है तहां दिन जाननां जहां तम है तहां रात्रि जाननी ॥ ३८२ ॥

आगे ऐसैं ल्याए जु ताप तमका क्षेत्र ताका प्रवर्तनकौं कहै हैं;—

परिहिम्हि अहिय विड्ढि गुणो सगतापमाणहदं ।
विरचूदो समाणदि धणजोगं च संगदं ॥ २८३ ॥

परिधौ यस्मिन् तिष्ठति सूर्यः तस्यैव तापमानदलम्।
बिंबपुरतः प्रसर्पति पश्चाद्भागे च शेषार्धम् ॥ ३८३ ॥

अर्थ—जिस परिधिविषै सूर्य तिष्ठै है तिस परिधिहीका तापका जो प्रमाण ताका आधा सो सूर्यके बिम्बतैं आगै फैलै है, अवशेष आधा पीछे फैलै है। **भावार्थ**—परिधिनिविषै जो तापका प्रमाण कह्या तीहविषै जहां सूर्यका बिंब पाइए तिह क्षेत्रके आगैं तिस प्रमाणतैं आधा ताप फैलै है, अर आधा पीछे फैलै है। इहां प्रश्न। जो मेरुगिरिकी परिधिनैं आदि दै करि जिन परिधिनिविषै सूर्यका गमन नाहीं तहां ताप कैसें फैलै है? ताका समाधान-सूर्यबिंबतैं सूधा सन्मुख जो तिस विवक्षित परिधिविषै क्षेत्र तातैं आगैं पीछैं आधा आधा ताप फैलै है। बहुरि ऐसा जानना जैसे चिराकके आगैं पाछैं प्रकाश हो है। बहुरि जैसें जैसें चिराक आगानैं चालै तैसें तैसें आगानैं तौ प्रकाश होता जाय पीछेतैं अन्धकार होना आवै तैसेंही सूर्यबिंब जैसें जैसें आगै चलै तैसें तैसें आगैं ताप फैलता जाय पीछैं पीछै तम होता आवै है ॥ ३८३ ॥

अब ताप तमकी हानि वृद्धिकौं कहै हैं;—

पणपरिधीयो भजिदे दसगुणसूरंतरेण जल्लद्धं।
सा होदि हाणिवड्ढी दिवसे दिवसे च तावतमे ॥ ३८४ ॥

पचपरिधिषु भक्तेषु दशगुणसूर्यांतरेण यल्लब्धं।
सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च तापतमसोः ॥ ३८४ ॥

अर्थ—पांचों परिधिनिविषैं दश गुणां सूर्यके अन्तरालनिका भाग दिएं जो लब्धराशि होइ सो दिन दिन विषै ताप तमकी हानि वृद्धिका प्रमाण जानना। तहां पंच परिधिनिविषै विवक्षित मेरुगिरि परिधि तहां साठि मुहूर्तनिविषै इकतीस हजार छहसै बाईस योजन प्रमाण क्षेत्रविषै गमन करै तौ दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग मात्र दिनका वृद्धि हानिका जो प्रमाण तामैं कितनां गमन करै ऐसैं तिस परिधिप्रमाणकौं साठिका भाग दिएं दोयका इकसठि भागकरि गुणें दोय करि अपवर्तन किएं सत्रह योजन अर पांचसै बाराका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण आवै सोई सूर्यके गमन मार्गनिका अन्तराल एकसौ तियासी ताकौं दस गुणां किएं अठारहसै तीस ताका भाग विवक्षित मेरुगिरिके परिधि प्रमाणकौं दिएं प्रमाण आवै तातैं ऐसा विचारि आचार्यनैं ऐसा कह्या कि विवक्षित परिधिकौं दश गुणां सूर्यांतरालका भाग दिएं ताप तमका वृद्धि हानिका प्रमाण आवै है। ऐसैं सतरह योजन अर पांचसै बारहका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति उत्तरायणविषै ताप बधै है तम घटै है, दक्षिणायनविषै तम बधै है ताप घटै है। याही प्रकार अन्य परिधिनिविषै दिन दिन प्रति ताप तमका घटनां बधनां ल्यावनां ॥ ३८४ ॥

आगैं पांचों परिधिनिके सिद्ध भए अंकनिकौं दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

बावीस सोल तिण्णिय उणणउदी पण्णमेकतीसं च।
दुखसघट्टिगितीसं चोद्दस तेसीदि इगितीसं ॥ ३८५ ॥

द्वाविंशतिः षोडश त्रीणि एकोननवतिपंचाशदेकत्रिंशत् ।
द्विसप्तत्युत्तरैकत्रिंशत् चतुर्दश त्र्यशीतिरेकत्रिंशत् ॥ ३८५ ॥

अर्थ—बाईस सोला तीन ३१६२२ इन अंक क्रमकरि इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण मेरुगिरिकी परिधि है। बहुरि निवासी पचास इकतीस ३१५०८९ इन अंक क्रमकरि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण अभ्यन्तर वीथीका परिधि है। बहुरि दोय सित्तरि इकतीस ३१६७०२ इन अंक क्रमकरि तीन लाख सोलह हजार सातसै दोय योजन प्रमाण मध्य वीथीका परिधि है। बहुरि चौदह तियासी इकतीस ३१८३१४ इन अंक क्रमकरि तीन लाख अठारह हजार तीनसै चौदह योजन प्रमाण बाह्य वीथीका परिधि है ॥ ३८५ ॥

छादालछुण्णसगपणबावण्णं होंति मेरुपहुदीणं ।
पणगहं परिधीओ कमेण अंककमेणेव ॥ ३८६ ॥

षट्चत्वारिंशच्छून्यसप्तपंचद्वापंचाशत् भवंति मेरुप्रभृतीनाम् ।
पंचानां परिधयः क्रमेण अंकक्रमेणैव ॥ ३८६ ॥

अर्थ—छियालीस शून्य सात बावन ५२७०४६ इन अंक क्रमकरि पांच लाख सत्ताईस हजार छियालीस योजन प्रमाण लवण समुद्रका परिधि है। ऐसे मेरु आदि दे पंचनिका परिधि है सो इनके अंकनिका अनुक्रमकरि जानना ॥ ३८६ ॥

[illegible] जिनका प्रमाण समान नाहीं ऐसी जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनकी समान काल [illegible] है सो [illegible] है सो कहै हैं;—

[illegible] गिरिगदी परिगेना [illegible] दु [illegible] ।
[illegible] परिरयाणि दु [illegible] समाणकालेण ॥ ३८७ ॥

[illegible] परिगती [illegible] तु [illegible] ।
[illegible] समानकालेन ॥ ३८७ ॥

अर्थ—[illegible] हुए [illegible] परिधिकौ प्राप्त [illegible] [illegible] है। बहुरि [illegible] हुए [illegible] परिधिनिकौ प्राप्त [illegible] [illegible] है। ऐसें [illegible] समान कालकरि [illegible] प्रमाणकी लिये [illegible] है ॥ ३८७ ॥

[illegible] है,—

[illegible] मार्गमिदं च [illegible] ।
[illegible] ॥ ३८८ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ३८८ ॥

अर्थ—[illegible]
भावार्थ—[illegible] है, [illegible]

थिविषे घोटकवत् तातैं शीघ्र गमन करै हैं। बहुरि बाह्य परिधिविषैं सिंहवत् अति शीघ्र गमन करैं हैं। बहुरि अत्र सूर्य चन्द्रमानिके परिधि परिधि प्रति एक मुहूर्तविषैं गमनका प्रमाण ल्यावनां। कैसैं सो कहिए हैं। तहां सूर्यका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल साठि मुहूर्त है। बहुरि अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन है सो सूर्यके साठ मुहूर्तनिका गमन क्षेत्र तीनलाख पंद्रह हजार निवासी योजन होइ तौ एक मुहूर्तका कितनां होइ। ऐसैं परिधि प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं पांच हजार दोयसै इक्यावन योजन अर गुणतीसका साठिवां भाग मात्र सूर्यका अभ्यन्तर परिधिविषैं एक मुहूर्तकरि गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्य विवक्षित परिधिके प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं सूर्यका विवक्षित परिधिविषैं एक मुहूर्त करि गमन क्षेत्रका प्रमाण साधनां। बहुरि ऐसे ही चंद्रमाका भी त्रैराशिक विधान करि ल्यावनां। तहां चंद्रमाका परिधिविषैं भ्रमणकी समाप्तताका काल बासठि मुहूर्त अर तेईसका दोयसै इकईसवां भाग प्रमाण है ६२।२३/२२१ याका विधान आगैं अहही सत्तरस इत्यादि सूत्रकरि कहैंगे॥ याकौं समच्छेद करि मिलाएं तेरह हजार सातसै पचीसका दोयसै इकईसवां भाग मात्र भया सो इतनै कालविषैं अभ्यंतर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ एक मुहूर्तविषै कितनां होइ। प्रमाण १३७२५/२२१ फल ३१५०८९ इच्छा मु १ ऐसैं करि लब्ध राशि पांच हजार तहेत्तरि योजन अर सात हजार सातसै चवालीसका तेरह हजार सातसै पचीसवां भाग मात्र ५०७३।७७४४/१३७२५ चंद्रमाका अभ्यंतर परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आया। ऐसैं ही अन्यविवक्षित परिधिके प्रमाणकौं बासठि अर तेईसका दोयसै इकईसवां भागका भाग दिएं विवक्षित परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आवै है॥ ३८८॥

आगैं अभ्यंतर वीथीविषै तिष्ठता जु सूर्य ताका चक्षुः स्पर्श स्थान जो दृष्टिविषै आवनेका मार्ग ताकौं तीन गाथानिकरि बतावै है;—

सट्ठिहिदपढमपरिहिं णवगुणिदे चक्खुफासअद्धाणं।
तेणूणं णिसहाचलबाणद्धं जं पमाणमिणं॥ ३८९॥

षष्टिहितप्रथमपरिधौ नवगुणिते चक्षुःस्पर्शाध्वा।
तेनोनं निषधाचलबाणार्धं यत् प्रमाणमिदम्॥ ३८९॥

अर्थ—प्रथम परिधिका प्रमाणकौं साठिका भाग देइ नवकरि गुणिए इतना चक्षुःस्पर्श अध्वान है। तहां साठि मुहूर्तनिका प्रथम परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ नव मुहूर्तनिका कितनां गमन क्षेत्र होइ ऐसैं प्रथम परिधिकौं साठिका भाग दै नवका गुणाकार भया। इनकौं तीनकरि अपवर्तन कीएं बीसका भागहार तीनका गुणकार हो है। तहां

प्रथम परिधिकौं ३१५०८९ वीसका भाग देइ ३१५०८९ तीन करि गुणिए ९४५२६७ कौं
१० २०
लब्धराशि सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र चक्षुःस्पर्शाध्वान हो है । **भावार्थ**—अयोध्या नाम नगरका वासी महंत पुरुषनिकरि उत्कृष्टपनै सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र क्षेत्रका अंतराल होतैं सूर्य देखिए है इतना ही चक्षु इन्द्रीका उत्कृष्ट विषय है याहीका नाम चक्षुःस्पर्शाध्वान है। बहुरि इहां अठारह मुहूर्तका जु दिन ताका आधा भएं मध्यान्हविषै सूर्य अयोध्याकी बरोबरि आवै अर इहां उदय होतें सूर्यका ग्रहण है तातैं नवका गुणकार किया है। अर परिधिविषैं भ्रमण काल साठि मुहूर्त है तातैं साठिका भाग हार कीया है। बहुरि निषध नामा कुलाचल ताका चापका प्रमाण एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग ताका आधा इकसठि हजार आठसै चौरासी योजन अर नवका उगणीसवां भाग तामैं पूर्वोक्त चक्षुःस्पर्शाध्वानका प्रमाण ४७२६३ ७/२० घटाइए अवशेष जो प्रमाण रहै ॥ ३८९ ॥

सो अगली गाथा विषै कहैं हैं;—

इगिवीसछदालयसं साहियमागम्म णिसहउवरिमिणो ।
दिस्सदि अउज्झमज्झे तेणूणो णिसहपासभुजो ॥ ३९० ॥

एकविंशतिषट्चत्वारिंशच्छतं साधिकं आगत्य निषधोपरि इनः ।
दृश्यते अयोध्यामध्ये तेनोनः निषधपार्श्वभुजः ॥ ३९० ॥

अर्थ—इकवीस एकसौ छियालीस अंक क्रमकरि चौदह हजार छसै इकईस तौ योजन अर साधिक कहिए किछू अधिक सो अधिक कितनां ? चक्षुःस्पर्शाध्वानका अवशेष सातका बिसवां भागकौं निषध चापका अवशेष नवका उगणीसवां भागविषै समछेद विधान करि ... घटाएं सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग ४७ मात्र अधिक जाननां । सो निषध कुलाचलकै ऊपरि १४
३८०
१४६२१ । ४७ दूरैं आइ करि सूर्य है सो अयोध्याकै मध्य महंत पुरुषनिकरि देखिए हैं। भावार्थ—
३८०
प्रथम वीथीविषै भ्रमण करता सूर्य सो निषध कुलाचलका उत्तर तटतैं चौदह हजार छसै इकईस योजन अर सैंतालीसका तीनसै अस्सीवां भाग उरैं आवै तब भरत क्षेत्रविषै उदय होय अयोध्याके वासी महंत पुरुषनिकरि देखिए है । बहुरि निषधकी पार्श्वभुजा वीस हजार एकसौ छिनवै योजन प्रमाण तामैं निषध उरैं आइ सूर्य देखनेंका जो प्रमाण कह्या १४६२१।४७ ताकौं
३८
घटाएं ॥ ३९० ॥

आगैं कहिए है सो है;—

णिसहुवरिं गंतव्वं पणसगचण्णास पंचदेसूणा ।
तेसिपमेत्तं गत्ता णिसहं अत्थं च जादि रवी ॥ ३९१ ॥

निषधोपरि गंतव्यं पंचसप्तपंचाशत् पंचदेशोना।
तावन्मात्रं गत्वा निषधे अस्तं च याति रविः॥ ३९१॥

अर्थ—निषधके ऊपरि जानां पांच सतावन पांच इन अंक क्रम करि पांच हजार पांचसै पैंचहत्तरि योजन देशोन कहिए किंचु घाटि इतनां निषध पर्वत ऊपरि जाइ सूर्य अस्तपनैकों प्राप्त हो है। **भावार्थ**-परिधिविषै भ्रमण करता सूर्य जब निषध पर्वतका दक्षिण तटतैं परैं किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन जाइ तब अस्त हो है। अजोध्यादिक भरत क्षेत्रके वासीनि-करि न देखिए है॥ ३९१॥

अब जाका प्रयोजन तिस चापके ल्यावनैंकौ तिसके बाण ल्यावनैंका विधान कहै हैं, चापा-दिकका वर्णन सो आगैं होइगा इहां प्रयोजनभूत वर्णन करिए हैं;—

जंबुचारधरूणो हरिवस्ससरो य णिसहबाणो य।
इह बाणावट्टं पुण अब्भंतरवीहिवित्थारो॥ ३९२॥

जंबूचारधरोनः हरिवर्षशरः च निषधबाणश्च।
इह बाणवृत्तं पुनः अभ्यंतरवीथीविस्तारः॥ ३९२॥

अर्थ—धनुषाकार क्षेत्रविषै जैसैं धनुषका पीठ हो है तैसैं जो होइ ताका नाम धनुष है वा ताका नाम चाप भी है। बहुरि जैसैं धनुषके चिला हो है तैसैं जो होइ ताका नाम जीवा है। बहुरि जैसैं तिस धनुषका मध्यतैं जीवाका मध्यपर्यंत तीरका क्षेत्र हो है तैसैं जो होइ ताका नाम बाण है। सो इहां जंबूद्वीपकी वेदी अर हरि क्षेत्र वा निषध पर्वतके वीचि जो क्षेत्र सो धनुषाकार क्षेत्र हो है। तहां हरि क्षेत्र वा निषध पर्वततै लगाय वेदी पर्यंत अंतराल क्षेत्र सो बाण कहिए वेदी ताका प्रमाण ल्याइए हैं तहां भरत क्षेत्रकी एकसलाका हिमवन् पर्वतकी दोय इत्यादि विदेह पर्यंत दूणी दूणी पीछैं आधी २ शलाका जोडें सर्व जंबूद्वीपविषै एकसौ निवै शलाका कहिए विसवा हो है। तहा भरत क्षेत्रतैं लगाय हरि वर्ष पर्यंत जोड इकतीस शलाका हो हैं। कैसैं ! "अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं।" इस सूत्रकरि अंतविषैं हरिवर्षकी शलाका सोल्ह ताकौं भरतादिकतैं दोयका गुणकार है। तातैं गुणकार दोय करि गुणें बत्तीस तामैं आदि भरतक्षेत्रकी शलाका एक सो घटाएं इकतीस, याकौं एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं भी इकतीस, ऐसैं हरिवर्ष शलाका इकतीस हैं। बहुरि याही प्रकार निषध शलाका तेरसठि हो हैं। बहुरि एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ इकतीस वा तेरसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं किएं हरिवर्षका बाण तौ तीन लाख दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। बहुरि निषधका बाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवा भाग प्रमाण हो है। वेदीके अर हरिवर्ष वा निषेधके वीचि इतनां अंतराल है। बहुरि इहां चक्षुः अध्वान क्षेत्र कहना। तहां अभ्यंतर वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषध पर्वतके वीचि जो धनुषाकार क्षेत्र तहां वीथीकी परिधि सो तो धनुष है। बहुरि वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषधके वीचि अंतराल क्षेत्र सो बाण है। हरिक्षेत्र वा निषधका पूर्व पश्चिमकी तरफ लंबाईका प्रमाण सो जीवा है। तहां पूर्वैं जो हरिवर्ष वा निषध पर्वतका बाणका प्रमाण कह्या तामैं जंबूद्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो

असी योजन ताकौं उगणीसका भागहार करि समच्छेद किए चौतीससै बीसका उगणीसवां भाग भया। सो इतनां घटाएं चक्षुः स्पर्शाध्वान क्षेत्र स्यावनैविषै तीन लाख छह हजार पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका वाण हो है। बहुरि छह लाख छतीस हजार-पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण निषधका वाण हो है [illegible] अब इनका वृत्तविष्कंभ जो ऐसा क्षेत्र गोल होइ तब चौडाईका प्रमाण सो कहिए हैं— तहां जंबूद्वीपका वृत्तविष्कंभ एक लाख योजन तामैं द्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो असी ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणाकरि ३६० घटाएं अभ्यंतर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४०। याकौं समच्छेद करनेंके अर्थि उगणीसका भाग दीएं अठारह लाख तरेणवै हजार एक सौ साठिका उगणीसवां भाग होइ बहुरि इहां प्रथमहरि क्षेत्रविषै कहिए हैं। इसुहीणं विक्खंभ चदुगुणिदिसुणा हेद दु जीवकदी। वाणकदिं छह गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि १ ऐसा करण सूत्र आगैं कहैंगे ताकरि वाणका प्रमाण [illegible] कौं विष्कंभका प्रमाण [illegible] मैं घटाइए १५८६५८० बहुरि वाणका जो प्रमाण [illegible] ताकौं चौगुणा किएं १२२६३२० जो प्रमाण होइ तीहकरि गुणिए १९४५६५४७८५६०० तब जीवाकी कृति होई। याका वर्गमूल किएं जीवाका प्रमाण हो
३६१

बहुरि वाणका जु प्रमाण ३०६ ५८० ताका वर्ग करिए ९३९९१२ ९६९६४०० बहुरि याकौं
१९ ३६१

छह गुणा करिए ५६३ ९४७७७८४०० बहुरि याकौं जीवाकी कृति कही तिसविषै जोडिए २५०९०
३६१

६०२५६४००० ऐसैं किएं धनुषकी कृति होइ, याका वर्गमूल ग्रहण किएं [illegible] आवना भाग
३६१

[illegible] भाग दिएं तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण हरि [illegible] धनु हो है ८३३७७ $\frac{9}{19}$। बहुरि निषध पर्वतका कहिए है। इसुहीणं विक्खंभं इत्यादि सूत्र करि निषधका वाणकौं ६२६५८० पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभ [illegible] मैं घटाइए अवशेष रहे [illegible]
१९

[illegible] चौगुणा वाणका प्रमाण [illegible] करि गुणिए [illegible] तब निषधका जीवाकी कृति हो है। याका वर्गमूल प्रमाण निषधकी जीवा है। बहुरि निषधका वाणकी जो कृति [illegible] [illegible] छह गुणा करिए [illegible] याकौं जीवाकी कृति जो कही तिसविषै जोडिए [illegible] तब धनुः कृति होइ। याका वर्गमूल ग्रहण करि [illegible] आवना भागहारका भाग दिएं एक लाख [illegible] हजार [illegible] योजन अर अठारह उगणीसवां भाग प्रमाण १२३७१८ $\frac{18}{19}$ निषध [illegible] हो है। इन [illegible] [illegible] [illegible] है तातैं इन वाणकौं [illegible]। बहुरि [illegible] चक्षुःस्पर्शाध्वान प्रमाण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ऐसा [illegible] जानना ॥ ३९२ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहे हैं,—

हरिगिरिधणुसेसद्धं पासभुजो सत्तसगतितेसीदी।
हरिवस्से णिसहधणू अडछस्सगतीस बारं च॥ ३९३॥
हरिगिरिधनुःशेषार्धं पार्श्वभुजः सप्तसप्तत्रियशीतिः।
हरिवर्षे निषधधनुः अष्टषट्सप्तत्रिंशद् द्वादश च॥ ३९३॥

अर्थ—निषधपर्वतका चापविषै हरि क्षेत्रका चाप घटाइ ताका आधा कीरए इतना निष पर्वतकी पार्श्व भुजा है। दक्षिण तटतैं उत्तर तट पर्यंत चापका जो प्रमाण ताका नाम इहां पा भुजा जानना। तहां निषध पर्वतका धनुः १२३७६८।१८ विषै हरि क्षेत्रका धनुः ८३३७७।
१९ १
घटाइए तब अवशेष चालीस हजार तीनसै इक्याणवै योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमा होइ ४०३९१। ९ याका आधा करना तहां योजन प्रमाणमैंस्यौं एक घटाइ आधा कीरए त
१९
बीस हजार एकसौ पिच्याणवै योजन होइ। बहुरि जो एक घटाया था ताका आधा १ अर न
२
उगणीसवां भागका आधा ९ इनकौं समच्छेद करि जोड़े २८ दोयका अपवर्तन किएं चौद
१९।२ १८
उगणीसवां भाग भए। सो याकौं किछू घाटि एक योजन मानि जोड़ें किछू घाटि बीस हजार एक सौ छिनवै योजन प्रमाण निषध पर्वतकी पार्श्वभुजा हो है। सो इहां पार्श्व भुजाविषै उत्तर तटतैं चौदह हजार छसै इकईस योजन उरै यावत सूर्य है तावत भरत क्षेत्रवाले वासीनिकौं दीसै पीछै न दीसै तातैं पार्श्व भुजाविषै इतना घटाइ अवशेष किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन दक्षिण तटतैं निषधकै ऊपरि चाप विषै परैं जाइ सूर्य अस्त हो है ऐसा भावार्थ जानना। अत्र हरिक्षेत्रके निषध पर्वतके धनुषके सिद्ध भए अंक कहैं हैं। तहां सात सात तीन तियासी इन अंकनके क्रम करि ८३३७७ तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन तौ हरिवर्षका धनुः है। बहुरि आठ छह सैं-तीस बारा इन अंकनिके क्रम करी १२३७६८ एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन का निषधका धनुष है॥ ३९३॥

आगैं कहे जु दोऊनिके धनुषका प्रमाण तहां अत्र शेष अधिकका प्रमाण वा पार्श्व भुजाके अंक तिनकौं कहैं हैं;—

माहवचंदुद्धरिया णवयकला णयपदप्पमाणगुणा।
पासभुजो चोद्दसकदि वीससहस्सं च देसूणा॥ ३९४॥
माधवचंद्रोद्धृता नवककला नयपदप्रमाणगुणाः।
पार्श्वभुजः चतुर्दशाकृतिः विंशसहस्रं च देशोनानि॥ ३९४॥

अर्थः—इहां पदार्थ नामकी संज्ञा करि अंक कहे है। सो माधव चंद्र कहिए उगणीस जातैं माधव जो नारायण सो नव है। अर दृश्यमान चंद्र एक है। इन दोऊ अंकनिकरि उगणीस

भए तिनकरि उद्धृत नव कह्या । भावार्थ-एक योजनकौं उगणीसका भाग दीजिए । तहां नव प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका चापका प्रमाण पूर्वै कह्या तामें अवशेष अधिक जाननां । बहुरि इहां स्थान कहिए नव नव हैं तातैं नवकी जायगा नव ताकौं प्रमाण कहिए प्रमाणका भेद दोय है दोय करि गुणिए तब एक योजनका उगणीस भागविषै अठारह भाग प्रमाण होइ । सो इतनां नि पर्वतका चापका प्रमाण पूर्वै योजनरूप कह्या तामें इतनां अवशेष अधिक जाननां । बहुरि नि पर्वतकी पार्श्व भुजा चौदहकी कृति एकसौ छिनवै तिहकरि अधिक बीस हजार योजन२०१ प्रमाण है ॥ ३९४ ॥

आगैं अयन विषै विभागकौं न करि सामान्यपनैं चार क्षेत्रविषै उदय प्रमाणका प्रतिपादन अर्थि यहु सूत्र कहैं हैं;—

दिणगदिमाणं उदयो ते णिसहे णीलगे य तेसट्ठी ।
हरिरम्मगेसु दो द्दो सूरे णवदससयं लवणे ॥ ३९५ ॥

दिनगतिमानं उदयः ते निषधे नीलके च त्रिषष्टिः ।
हरिरम्यकयोः द्वौ द्वौ सूर्ये नवदशशतं लवणे ॥ ३९५ ॥

अर्थ—एक दिन विषै चार क्षेत्रका व्यासविषै सूर्यका गमनका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इक ठिवां भाग प्रमाण कह्या था सो इतना दिन गति क्षेत्रविषै जो एक उदय होइ तौ चार क्षेत्रका पांचसै द योजन विषै केते उदय होइ । ऐसैं किएं लब्ध प्रमाण एकसै तियासी उदय आए । बहुरि पर्वतविषै चार क्षेत्र विषैं अवशेष सूर्य बिंब करि रोक्या हुवा अड़तालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहविषै एक उदय है ऐसैं मिलि एकसौ चौरासी उदय हैं । जातैं एक एक वीथी प्रति एक एक उदय संभवै हैं । तहां निषध नीलविषै प्रत्येक तरेसठि अर हरि रम्यक क्षेत्रविषै दोय दोय अर लवण समुद्र विषै एकसौ उगणीस उदय हैं ।

भावार्थ—समस्त चार क्षेत्रविषै सूर्यका उदय एकसौ चौरासी हो है । तहां भरत अपेक्षा तरेसठि तौ निषध पर्वतविषै दोय हरि क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान हैं । अभ्यंतर वीथीतैं लगाय तेरसठिवी वीथी पर्वतविषै तिष्ठता सूर्य तौ निषध पर्वतकै ऊपरि उदय हो है भरत क्षेत्रके वासीनिकरि देखिए हैं । बहुरि चौसठि पैंसठिवी वीथी विषै तिष्ठता सूर्य हरि क्षेत्र ऊपरि उदय हो है । बहुरि छयासठिवीतैं लगाय अंतपर्यंत वीथीनिविषै तिष्ठता सूर्य लवण समुद्रकै ऊपरि उदय हो है । ऐसैंही ऐरावत अपेक्षा तरेसठि नीलपर्वतविषै दोय रम्यक क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान जाननैं ॥ ३९५ ॥

आगैं दक्षिणायनविषै चार क्षेत्रका द्वीप वेदिका समुद्रका विभाग करि उदय प्रमाणका प्ररूपणके अर्थी त्रैराशिककी उत्पत्ति कहैं हैं;—

दीउवरिधाररिवे वेदीए दिणगदीहिदे उदया ।
दीवे पउ चंदस्स य लवणसमुद्दम्हि दस उदया ॥ ३९६ ॥

द्वीपोदधिचारक्षेत्रे वेद्यां दिनगतिहिते उदयाः।
द्वीपे चतुः षष्टिस्य च लवणसमुद्रे दश उदयाः॥ ३९६॥

अर्थः—द्वीप समुद्र संबंधी चार क्षेत्र अर वेदी इनकौं दिन गति प्रमाणका भाग दिएं उदयनिका प्रमाण हो है। **भावार्थ**—चार क्षेत्रका व्यासविषै वीथीनिविषै सूर्यका जहां जहां जितनें उदय पाइये हैं सो कहिए हैं। तहां जंबूद्वीप संबंधी चारक्षेत्र एकसौ असी योजनमैंस्यौं जंबूद्वीपकी वेदीका व्यास च्यारि योजन है सो दूरि किएं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ छिहत्तरि योजन है। बहुरि च्यारि योजन वेदी ऊपरि चार क्षेत्र हैं। बहुरि तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण लवण समुद्र ऊपरि चार क्षेत्र है इनकौं दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण ताका भाग दिएं जितना जितना प्रमाण आवै तितना उदय जाननें। सो कहिए हैं। दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग १७०/६१ सो इतना क्षेत्र विषै एक उदय होय तौ वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र विषै केते उदय होंहि ऐसैं त्रैराशिक किएं तरेसठि उदय पाए। तिन विषै अभ्यंतर वीथीका उदय पूर्वला उत्तरायणविषै गिनिए हैं तातैं बासठि उदय भए अर अवशेष छब्बीस एक सौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदयके अंश रहे। इहां द्वीप संबंधी अंतका सूर्य सूर्य विषै अंतराल पर्यंत आए। बहुरि अवशेष छब्बीस एकसौ सत्तरिवां भाग उदय अंश रहे थे तिनका योजन अंशरूप क्षेत्र करिए हैं। एक उदयका एकसौ सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ छब्बीस एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि फल राशि इच्छा राशिकौं गुणें छब्बीस योजनका इकसठियां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। ए द्वीप संबंधी योजन अंश अगले बिंब करि रोक्या हुवा क्षेत्रविषै देना। बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होय तौ च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविषै केता उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि भागहारका भागहार इकसठि करि च्यारिकौं गुणें दोयसै चवालीस भए। इनकौं एकसौ सत्तरि भागहारका भाग दिएं एक उदय पाया अवशेष चहौत्तरिका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे। इनकौं पूर्वोक्त न्याय करि क्षेत्ररूप किए चहौत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया इस विषै बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र महि पूर्वोक्त द्वीपका अंत अवशेष क्षेत्र छब्बीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तिह विषै मिलाएं। अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य बिंब करि रोक्या हुआ क्षेत्र संपूर्ण हो है। ऐसैं अभ्यंतर वीथी स्थिति सूर्य बिंबतैं चौसठिवीं वीथीस्थित सूर्यबिंबका व्यास छब्बीस इकसठिवां भाग तौ द्वीप चार क्षेत्रके अर बाईस इकसठिवां भाग वेदिका चार क्षेत्रको मिलिकरि सिद्ध हो है। इहां चौसठिवीं वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है ऐसा तात्पर्य जानना। ताके आगैं दोय योजनका अनराल है, ताके आगैं सूर्यकरि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र है। तातैं परैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या सो आगिला दोय योजनका अंतरालविषै देना। ऐसैं द्वीप वेदिकाका संधिविषै प्राप्त जो सूर्य बिंबका व्यास ताकौं प्राप्त भया बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र निहिस्यौं लगाइ वेदिकाका च्यारि योजन प्रमाण क्षेत्र समाप्त

भया। बहुरि लवण समुद्रविषै एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होइ तौ बिंब रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन तिहविषै केते उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पाए उदय एकसौ अठारह। बहुरि अवशेष उदय अंश सत्तरि एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किए सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। इनिकौं वेदिकासंबंधी अंतरालविषै प्राप्त बावन योजनका इकसठिवां भाग मिलाएं भागहार इकसठिका भाग दिएं दोय योजन प्रमाण अंतराल संपूर्ण हो है। बहुरि यातैं परैं रविबिंब सहित अंतर प्रमाणरूप दिनगतिशलाका अंतका अंतरालपर्यंत एकसौ अठारह हैं ते सुगम हैं। तहां उदय भी एकसौ अठारह है। तातैं परैं बाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यबिंबका व्यासविषै एक उदय है। ऐसैं सर्व मिलि लवण समुद्रविषै एकसौ उगणीस उदय हैं। ऐसैं दक्षिणायनविषै एकसौ तियासी उदय जानने। इहां ऐसा भावार्थ जाननां वीथीविषै तिष्ठता हुआ सूर्यका बिंब प्रमाण जो क्षेत्र ताका नाम पथ व्यास है सो अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण है। अर वीथी वीथीनिकै बीचि जितनां चार क्षेत्र विषै अंतराल ताका नाम अंतर है सो दोय योजन प्रमाण है। तहां एक सौ छिहत्तरि योजन प्रमाण द्वीप संबंधी चार क्षेत्रविषै प्रथम अभ्यंतर पथ व्यास है ताकै आगैं प्रथम अंतराल है। ताकै आगैं दूसरा पथव्यास है। ताकै आगैं दूसरा अंतराल हैं। ऐसैं ही क्रमतैं अंतविषै तेरसठिवां पथ व्यास अर ताके आगैं तेरसठिवां अंतराल हो है। अर ताकै आगैं छब्बीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका संबंधी चार क्षेत्र है तामैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग काढि तिस द्वीप संबंधी अवशेष क्षेत्रविषै जोडैं चौसठिवां पथ व्यास हो है। चौसठिवीं वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है। बहुरि तिस पथ व्यासकै आगैं चौसठिवां अंतराल है ताके आगैं पैंसठिवां पथव्यास है ताकै आगैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र वेदिका चार क्षेत्रविषै अवशेष रह्या। बहुरि पथ व्यास रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन प्रमाण है। तामैं सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग काढि वेदिका अवशेष क्षेत्रविषैं जोडैं पैंसठिवां अंतराल हो है। बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास है ताकै आगैं अंतर है। ऐसैं क्रमतैं अंतविषै एकसौ तियासीवां पथ व्यास आगैं एकसौ तियासीवां अन्तराल हो है। बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास प्रमाण अवशेष समुद्रचार क्षेत्रविषैं एकसौ चौरासीवां पथ व्यास है। बहुरि इहां जहां पथ व्यास है तहां वीथी जाननी। एक एक वीथीविषैं प्राप्त होइ सूर्यका दृष्टिविषै आवनां ताका नाम उदय जाननां। ऐसैं एकसौ चौरासी वीथीनिविषै एकसौ चौरासी उदय भए। तहां उत्तरायणस्यौं आवता आवता सूर्य अभ्यन्तर वीथीविषै आवै सो वह उत्तरायणविषै गिनि लिया अर लगता ही दूसरा बार तहां उदय होइ नाहीं तातैं दक्षिणायनविषै नाहीं गिना ऐसैं करि एकसौ तियासी उदय जानने। आगैं उत्तरायणविषै कहिए है—लवण समुद्रविषै रविबिंब सहित चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ताका समच्छेद करि जोडैं बीस हजार एकसौ अठारहका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{२०११८}{६१}$ बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवा भाग क्षेत्रकी एक दिनगतिशलाका होइ तौ बीस हजार एकसौ अठारहका इकसठिवा भागकी केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किए एकसौ

है। आगें एकसौ बीसवां अंतराल है ताके आगें बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र म रोक रहै है। बहुरि द्वीप चार क्षेत्रविषै छवीस योजनका इकसठिवां भाग ग्रहि तातैं तिन्हरं ए सौ इकईसवां पद्मचास हो है। ताके आगैं एक सौ इकईसवां अंतर है ऐसैं क्रमतैं अंतनिविषै ए सौ तियासीवां अंतरके आगैं एकसौ चौरासीवां पद्मचास है तहां एकसौ चौरासी पद्मच प्रमाण उदयनिविषै बाह्य वीथीका उदय पूर्ण दक्षिणायन विषै गिनिए है। अर उलटा तहां उद न हो है तातैं समुद्रका आदि उदय पर्यंत उत्तरायणविषै सूर्यके उदय एकसौ तियासी ऐसैं जानने। उदयादिकका स्वरूप पूर्वोक्त कह्याही था। बहुरि चंद्रमाका भी अयन भेद किए विना द्वीप वि क्षेत्र १८० विषै पांच उदय अर समुद्र चार क्षेत्र ३३०।४८/६१ विषै दश उदय हैं। मिलि करि पंद्रह उदय हो हैं। आगें दक्षिणायनविषै कहै हैं। पण्णासाहिइहीणे इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रतैं चंद्रमाका दिनगति क्षेत्र पंद्रह हजार पांचसै इक्यावन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण सो इतना [illegible] क्षेत्रविषै जो एक उदय होय तौ एकसौ अस्सी योजन प्रमाण क्षेत्र चार क्षेत्र विषै कितने उदय होहिं ऐसैं त्रैराशिक किएं च्यारि उदय पाए। बहुरि अवशेष चौदह हजार छै [illegible]का पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे। बहुरि एक उदयका पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ चौदह हजार छै [illegible]का पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि [illegible] भाग करि इच्छाराशिके भागका अपवर्तन किएं चौदह हजार छै [illegible] योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि चंद्रमाका [illegible] प्रमाण [illegible] योजनका इकसठिवां भाग ताका भाग करि समच्छेद किए [illegible] योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण भया सो इतना तिस अवशेष क्षेत्रविषै ही [illegible] देना। तहां उदय एक, ऐसैं जम्बूद्वीप विषै पांचवे उदय है [illegible] उदय [illegible] है तातैं ताका न ग्रहण करनैं द्वीपविषै च्यारि ही है। [illegible] अवशेष चौदह हजार [illegible] च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या। [illegible] भाग दिए तेतीस योजन अर एकसौ [illegible] क्षेत्र है। सो याकौं आगे [illegible] देना। आगें समुद्रविषै [illegible] भाग प्रमाण है। [illegible] समच्छेद किए [illegible] भया। सो पंद्रह हजार पांचसै इक्यावन [illegible] भाग प्रमाण [illegible] एक उदय होइ तौ [illegible] हजार [illegible] भाग प्रमाण [illegible] कितने उदय होहिं। ऐसैं त्रैराशिक किए [illegible]

[illegible]

आगें द्वीप चार क्षेत्रविर्षे पूर्वोक्त प्रकार उदय च्यारि अर अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदय अंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं चौदह हजार छसै छप्पनका च्यारिसै सत्ताईस योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण होइ यामें प्रतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागका समछेद किएं चौदह हजार दोयसै चौसठिका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग होइ सो ग्रहि करि दशवां अंतरालविर्षे देना। ऐसें पैतीसै योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। बहुरि अव शेष तीनसै बाणवै योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण रह्या। ताकौं सात करि अपवर्तन किए छप्पनका इकसठिवां भागप्रमाण होइ सो यहु अभ्यन्तर पथ व्यासविर्षे देनां। इसविर्षे एक उदय ऐसे द्वीपविर्षे चंद्रमाका उत्तरायणविर्षे पांच उदय हैं इहां ऐसा भावार्थ जाननां। चंद्रमाका पथव्यास अंतरादिकका स्वरूप प्रमाणतौ पूर्वोक्त जानना तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविर्षे प्रथम बाह्य पथ व्यास है। ताके अभ्यंतरवर्ती आगें आगें प्रथम अंतर है। ताकै आगे द्वितीय पथ व्यास है। ताकै आगें द्वितीय अंतर है। ऐसे क्रमतें नवमां अंतरके आगें दशवां पथ व्यास है। ताके आगें दोय योजन अर इकताळीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि आगें द्वीप चार क्षेत्रविर्षे तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र ग्रहि अर समुद्रका अवशेष क्षेत्र ग्रहि दशवां अंतरालकों दीएं समुद्र अर द्वीपकी संधिविर्षे दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। ताके आगें ग्यारह्वां पथ व्यास है ताके आगें ग्यारह्वां अंतराल है। ऐसें क्रमतें अंतरविर्षे चौदह्वां अंतरके आगें पंद्रहवां अभ्यंतर पथ व्यास है। ऐसें इन पंद्रह पथ व्यासनिविर्षे पंद्रह उदय हैं। तिनिविर्षे समुद्रसंबंधी प्रथम व्यासविर्षे जो उदय है सो दक्षिणायन संबंधीही है। जातें लगता दूसरीवार तहां उदय न हो है तातैं चंद्रमाका उत्तरायणविर्षे नव समुद्रविर्षे पांच द्वीप विर्षे ऐसें चौदह उदय जानने बहुरि इहां सूर्य व चन्द्रमाका उत्तरायणविर्षे उदयका विभाग मूल सूत्र कर्त्तान कह्या। तथापि दक्षिणायनका उदय मार्ग करि टीकाकार विचार करि कह्या है ॥३९६॥

अब दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध अधविर्षे सूर्यके आतापका क्षेत्र विभाग कहैं हैं;—

मन्दरगिरिमज्झादो जावय लवणुवहिछट्ठभागो दु।
हेट्ठा अट्ठरससया उवरिं सयजोयणा तावो ॥ ३९७ ॥
मंदरगिरिमध्यात् यावत् लवणोदधिषष्ठभागस्तु।
अधस्तनं अष्टादशशतानि उपरि शतयोजनानि तापः ॥ ३९७ ॥

अर्थ—मेरुगिरिके मध्यतैं लगाय यावत् लवण समुद्रका छठा भागपर्यंत सूर्यका आताप फैले है। ताका उदाहरण अभ्यन्तर वीथीविर्षे तिष्ठता सूर्यकी अपेक्षा कहिए है। जंबूद्वीपका आधा [illegible] हजार योजन तामें द्वीप चार क्षेत्र एकसौ असी योजन घटाएं गुणचास हजार आठसै बीस योजन प्रमाण तौ मेरुगिरिके मध्यतैं लगाय अभ्यंतर वीथी पर्यंत उष्ण [illegible] आताप फैले है। बहुरि लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन ताका छठा भाग तेतीस हजार [illegible]

तेतीस योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण यार्मै द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अ...
तेतीस हजार पांचसै तेरह योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण अभ्यंतर वीथी...
समुद्रका छठा भाग पर्यंत दाक्षिण दिशाविषैं आताप फैलै है । बहुरि ऐसेंही अन्य...
जाननां । बहुरि सूर्य बिंबतैं नीचे अठारहसै योजन पर्यंत अधः दिशा विषै आताप फैलै...
—सूर्यबिंबतैं नीचे आठसै योजन तौ समभूमि है अर तातैं नीचैं हजार योजन पर्यंत ...
तहां पर्यंत सूर्यका आताप फैलै है । बहुरि सूर्य बिंबतैं ऊपरि सौ योजन पर्यंत ऊर्द्ध दिशा...
फैलै है । भावार्थ— सूर्यबिंबतैं ऊपरि सौ १०० योजनपर्यंत ज्योतिर्लोक है तहां...
आताप फैलै है । ऐसे परिधिनि विषैं तौ आताप फैलनेका प्रमाण पूर्वै कह्या था इहां दो...
ऊर्द्ध अध. दिशा विषै आताप फैलनेका प्रमाण कह्या ॥ ३९७ ॥

आगैं चंद्रमा सूर्य ग्रह इनकै नक्षत्र भुक्तिके प्रतिपादन करनेकौं चाहता आचार्य
एक एक नक्षत्र संबंधी मर्यादारूप गगन खंडनिकौं कहै हैं;—

अभिजिस्स गगणखंडा छस्सयतीसं च अवरमज्झवरे ।
छप्पण्णरसे छक्के इगिदुतिगुणपणयुतसहस्सा ॥ ३९८ ॥

अभिजितः गगनखंडानि षट्शतत्रिंशत् च अवरमध्यवराणि ।
षट्पंचदशो षट्के एकद्वित्रिगुणपंचयुतसहस्राणि ॥ ३९८ ॥

अर्थ—अभिजित नक्षत्रके गगनखंड छसै तीस हैं । बहुरि जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र...
तैं छह पंद्रह छह प्रमाणकौं धरै तिनके एक दोय तीन गुणां पांच संयुक्त एक हजार प्रमाण ग...
खंड हैं । भावार्थ—परिधिरूप जो गगन कहिए आकाश ताके एक लाख नव हजार आठ...
खंड करिए तामें एक चंद्रमा संबंधी अभिजित नक्षत्रके छसै तीस गगन खंड है । छसै तीस ए...
प्रमाण परिधि रूप आकाश क्षेत्र विषै अभिजित नक्षत्रकी सीमा मर्यादा है । बहुरि ऐसै ही ए...
जघन्य नक्षत्र तिन एक एकके एक हजार पांच गगन खंड है । बहुरि पंद्रह मध्य नक्षत्र तिन एक एककै...
दोय हजार दश गगन खंड हैं । बहुरि छह उत्कृष्ट नक्षत्र तिन एक एकके तीन हजार पंद्रह गगन खंड...
हैं । बहुरि इतनें इतनेंही दूसरा चंद्रमा संबंधी हैं । इहां नक्षत्रनिकै जघन्य मध्य उत्कृष्टपना गगन...
खंडनिका थोडा बहुत अति बहुतकी अपेक्षा कह्या है स्वरूपादिक अपेक्षा नाहीं कह्या है ॥ ३९८ ॥

आगैं तिन जघन्य मध्यम उत्कृष्ट नक्षत्रनिकौं दोय गाथानि करि कहै हैं;—

सदभिस भरणी अद्दा सादी असिलेस्स जेट्ठमवरवरा ।
रोहिणि विसाह पुणव्वसु तिउत्तरा मज्झिमा सेसा ॥ ३९९ ॥

शत... भरणी आर्द्रा स्वाति अ...श्लेषा ज्येष्ठा अवराणि वराणि ।
... पुनर्वसु ... ॥ ३९९ ॥

अर्थ ...

ठिवां भाग आया। या प्रकार एक बार संपूर्ण एक परिधिविर्षे भ्रमण करनेका काल प्रमाण कह्या ॥ ४०१ ॥

आगैं सो एक मुहूर्त करि अपनां अपनां गगन खंडनिविर्षे गमन करनेका प्रमाण कहा सो कहै हैं;—

अट्ठट्ठी सत्तरससयमिंदू बावट्ठि पंचअहियकमं।
गच्छंति सूररिक्खा णभखंडाणिगिमुहुत्तेण ॥ ४०२ ॥

अष्टषष्टिः सप्तदशशतं इंदुः द्वाषष्टिः पंचाधिकक्रमाणि।
गच्छंति सूर्यऋक्षाणि नभःखंडानि एकमुहूर्तेन ॥ ४०२ ॥

अर्थ—अडसठि अधिक सतरहसै १७६८ गगन खंडनिकौं चंद्रमा एक मुहूर्त करि गमन करै है। बहुरि तिनतैं बासठि अधिक ताका अठारहसैं तीस गगनखंडनिकौं सूर्य अर इनतै पांच अधिक ताका अठारहसै पैंतीस गगन खंडनिकौं नक्षत्र एक मुहूर्त करि गमन करै है ॥ ४०२ ॥

आगैं चंद्रमादि तारापर्यंत ज्योतिषीनिकै गमन विशेषका स्वरूप कहै हैं;—

चंदो मंदो गमणे सूरो सिग्घो तदो गहा तत्तो।
तत्तो रिक्खा सिग्घा सिग्घयरा तारया तत्तो ॥ ४०३ ॥

चंद्रो मंदो गमने सूरः शीघ्रः ततो ग्रहाः ततः।
ततः ऋक्षाणि शीघ्राणि शीघ्रतराः तारकाः ततः ॥ ४०३ ॥

अर्थ—सर्वतै गमनविषै चंद्रमा मंद है मंद गमन करै है। तातै सूर्य शीघ्र गमन करै है। तातैं ग्रह शीघ्र गमन करै हैं, तातै नक्षत्र शीघ्र गमन करै हैं, तातै अतिशीघ्र तारे गमन करै है ॥ ४०३ ॥

आगैं अब चंद्रमा सूर्यकै नक्षत्र भुक्तिकौं कहै हैं;—

इंदुरवीदो रिक्खा सत्तट्ठी पंच गगणखंडहिया।
अहियहिदरिक्खखंडा रिक्खे इंदुरविअत्थणमुहुत्ता ॥ ४०४ ॥

इंदुरवितः ऋक्षाणि सप्तषष्टिः पंच गगनखंडाधिकानि।
अधिकहितऋक्षखंडानि ऋक्षे इंदुरविआसनमुहूर्ताः ॥ ४०४ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्यकै गगन खंडनितै क्रमतै सड्सठि अर पांच गगन खंड अधिक नक्षत्रनिकै एक मुहूर्त करि गमन अपेक्षा गगन खंड है। सो इस अधिकका भाग अपनें अपने नक्षत्र खंड-निकौं दिएं नक्षत्र अर चंद्र वा सूर्यका आसन्न मुहूर्तनिका प्रमाण आवै है। सो कहिए है। एक ही बार चंद्रमा अर नक्षत्र साथि गमनका प्रारंभ किया तहां एक मुहूर्तविषै चंद्रमा तौ सतरहसै अड-सठि गगन खंडनि प्रति गमन किया अर नक्षत्र अठारहसै पैंतीस गगन खंडनि प्रति गमन किया। तहां चंद्रमा नक्षत्रतै सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। तहां अभिजित नक्षत्र अर चंद्रमा दोऊ साथि गमनका प्रारंभ करी एक मुहूर्तविषै अभिजितै चंद्रमा सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। बहुरि दूसरा मुहूर्तविषै और सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। ऐसे पीछै रहता रहता जितने काल करि

एकपथलंघनं प्रति यदि दिवसैकषष्ठिभागं उपलब्धं ।
किं त्र्यशीतिशतस्येति गुणिते ते भवंति अधिकदिनानि ॥ ४०८ ॥

अर्थ—वीथी रूप जो एक सूर्यका मार्ग ताका उलंघन प्रति जो एक दिनका इकसठि भाग पावै तौ एक सौ तियासी मार्गनिका उलंघन प्रति केते दिवस पावै ऐसें त्रैराशिक करि इकसठि करि अपवर्त्तन करि गुणें अधिक दिन तीन हो हैं। बहुरि एक अयन विषै सौ तियासी दिन कैसे हैं सो कहिए हैं। एक मुहूर्त्त विषै गमन योग्य सूर्यके अठारहसै तीस खंड अर नक्षत्रके अठारहसै पैंतीस खंड तातैं सूर्यके नक्षत्रतैं पांच खंड छोडनैविषै एक मुहूर्त तौ अभिजित नक्षत्रके छसैतीस खंड छोडनैविषै केते मुहूर्त्त होइ ऐसें मुहूर्त्त करि ६३० तार्कों तीस भाग देइ दिन करनें २१/५ बहुरि भाज्य भाजककों तीस करि अपवर्त्तन किए इकईस दिनका पांच भाग प्रमाण अभिजितका भुक्तिकाल आया। ऐसैंही जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत तिनके त्रैराशिक विधिकरि मुहूर्त्त या दिन करि क्रमतैं पेंद्रह तीस पेंद्रह करि अपवर्त्तन कीए जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्र विषै स्थापन करनां ॥ ४०८ ॥

आगें पुष्यविषै विशेष है ताके प्रतिपादनकै अर्थि कहैं हैं ;—

सतिपंचमचउदिवसे पुस्से गमियुत्तरायणसमत्ती।
सेसे दक्खिणआदी सावणपडिवदि रविस्स पढमपहे ॥ ४०९ ॥
सत्रिपंचमचतुर्दिवसान् पुष्ये गत्वा उत्तरायणसमाप्तिः।
शेषान् दक्षिणादिः श्रावणप्रतिपदि रवेः प्रथमपथे ॥ ४०९ ॥

अर्थ—तीन दिनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिन पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकालविषै गमनकरि उत्तरायणकी समापतता हो है। ऐसें करि पूर्वोक्त प्रकार पुष्य नक्षत्र भुक्तिका कालकौ सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण स्याइ तामैं तीनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिनका समच्छेद किए तेईस दिनका पांचवां भाग भया सो घटि करि उत्तरायणकी समापतता विषै देना अर अवशेष चवालीस दिनका पांचवां भाग रह्या तामैं कोष्ट पूर्ण करनेंकै अर्थि जितना ही तेईस दिनका पांचवां भाग मिलाकरि दक्षिणायनका प्रथम कोष्ट विषै दिए यहु ही श्रावण मासविषै पडिवा दिन सूर्यका प्रथम मार्गविषै दक्षिणायनका आदि हो है। अवशेष इकईस दिनका पांचवां भाग दितीय कोष्ट विषै देनां। बहुरि ऐसैंही पूर्वोक्त प्रकार आश्लेषा आदि उत्तराषाढा पर्यंत नक्षत्रनिकी सूर्य भुक्तिका काल ल्याइ तिनि तिनि नक्षत्र विषै स्थापन करना।

भावार्थ—सूर्यका उत्तरायण विषै प्रथम अभिजित नक्षत्रकी भुक्ति हो है ताका काल पूर्वोक्त प्रकार किए इकईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। पीछै क्रमतैं श्रवण १ धनिष्टा १ शतभिषा १ पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ कृत्तिका १ रोहिणी १ मृगशिरा १ आर्द्रा १ पुनर्वसु १ इनकी भुक्ति हो है। तहां शतभिषा १ भरणी १ आर्द्रा १ ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं तिनका तौ एक एकका भुक्ति काल सतसठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है। बहुरि श्रवण १ धनिष्टा १ पूर्वाभाद्रपदा १ रेवती अश्विनी कृत्तिका मृगशिरा ए सात मध्य नक्षत्र हैं

का एक एकका भुक्ति काल सतसठि दिनका पांचवा भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तराभाद्रपद रोहिणी पुनर्वसु ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इनका एक एकका भुक्तिका दोयमें एक दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। बहुरि पीछे पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सडसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण तामें तेईस दिनका पांचवां भाग मात्र काल पर्यंत पुष्य नक्षत्रकी भुक्ति इस अयनविषैं हो है। ऐसैं सर्व कालकों समच्छेद करि जोडें सूर्यके उत्तरायण विषैं एकसौ तियासी दिन हो हैं। बहुरि दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावण कृष्णकी पडिवाके दिन हो है। तहां प्रथम पुष्य नक्षत्र भोगिए है। तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सडसठि दिनका पांचवां भागविषै तेईस दिनका पांचवां भाग तौ उत्तरायण विषैं भए पीछे अवशेष चवालीस दिनका पांचवां भाग इस अयनकी आदि विषैं भोगिए है। तहां उत्तरायण समान कोठे पूर्ण करनेकौं प्रथम कोठे विषैं तौ तेईसका पांचवां भाग देना। दूसरा कोठे विषैं अभिजितकी जायगा इकईसका पांचवां भाग देना। ऐसैं प्रथम पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल भएं पीछे क्रमतैं अश्लेषा १ मघा १ पूर्वा फाल्गुनी १ उत्तरा फाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विशाखा १ अनुराधा १ ज्येष्ठा १ मूल १ पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ इन नक्षत्रनिकौं भोगवै है। तहां अश्लेषा १ स्वाति ज्येष्ठा ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं। सो इनका तौ एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है। बहुरि मघा पूर्वा फाल्गुनी हस्त चित्रा अनुराधा मूल पूर्वाषाढ ए सात मध्य नक्षत्र हैं। सो इन एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तरा फाल्गुनी विशाखा उत्तराषाढ ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इन एक एकका भुक्तिकाल दोयमें एक दिनका दशवां भाग प्रमाण है। ऐसे इन सर्व भुक्तिकालनिकौं जोडे सूर्यके दक्षिणायनविषैं एक सौ तियासी दिन हो हैं। बहुरि अब चंद्रमाका कहिए है। पूर्वोक्त प्रकार चंद्रमाका भुक्तिकाल इकईस दिनका सतसठिवां भाग प्रमाण ल्याइ तिस चंद्रमाविषै जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकालनिविषैं अभाव आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकौं पूर्वोक्त प्रकार भुक्ति ल्याइ तिनविषै सर्वत्र सडसठिकौं भाजकपनै राख्यका अपवर्तन करि बहुरि भाजक तीन अर भाज्यका जघन्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका दोय करि अपवर्तन करी अर मध्यमनिविषै तीनकै अपवर्तन करि जो जो पाया सो सो तिस तिस नक्षत्रकै स्थापन करना। बहुरि पुष्यविषै सूर्यके भुक्ति सतसठि दिनका पांचवां भाग मात्र विषै चंद्रमाके भुक्ति एक दिन प्रमाण होइ तौ पुष्यविषै सूर्यके तेईस दिनका पांचवां भागविषै चंद्रमाके केती होइ ऐसैं त्रैराशिक करि आई जो तेईसका सतसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति सो उत्तरायणकी [illegible] विषै ऐसैं ही दक्षिणायनविषै विधान करना। भावार्थ—चंद्रमाकै उत्तरायणविषै पहले अभिजितकी भुक्ति हो है। ताका काल इकईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र है। पीछे श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्र क्रमतैं भोगिए है। तहां तीन जघन्य नक्षत्रनिविषैं एक एकका भुक्तिकाल [illegible] सात मध्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल एक दिन है। तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल ड्योढ दिन है। बहुरि तहां पीछें पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल एक दिन विषैं तेईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र प्रमाण पुष्य नक्षत्र [illegible]

हैं। ऐसे सर्व काल जोड़ें चंद्रमाका उत्तरायण विर्षे तेरह दिन अर चवालीसका सडसठिवां भाग मात्र काल हो हैं। बहुरि दक्षिणायन विषैं पहलैं पुष्य नक्षत्र भोगिए हैं तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल एक दिन विषैं तेईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र काल उत्तरायण विर्षें गया अब शेष चवालीसका सडसठिवां भाग प्रमाण काल इहां भोगिए हैं। बहुरि अश्लेषा आदि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्र क्रमतैं भोगिए हैं। तहां तीन जघन्य नक्षत्र सात मध्य नक्षत्र तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतै एक एकका आध दिन एक दिन ड्यौढ दिन जाननां। सर्व काल मिलाएं चंद्रमाका दक्षिणायनविषै तेरह दिन अर चवालीसका सड़सठिवां भाग प्रमाण काल हो है। अब राहुका कहिए हैं राहुकै अभिजित आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति ल्याइ तिस तिस नक्षत्रविषै स्थापना करनां। बहुरि पुष्य विषै सूर्यके सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतैं राहुके आठसै च्यारिसैका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति होइ तौ सूर्यके तेईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतैं राहुकै केती भुक्ति होइ ऐसैं ल्याइ अपवर्त्तन करैं दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति उत्तरायणकी समाप्तिविषै पुष्यकी स्थापन करनी। बहुरि पूर्ववत् दक्षिणायनविषै विधान करनां। **भावार्थ**—राहुकै उत्तरायणविर्षे प्रथम अभिजितकी भुक्ति हो है ताका काल दोयसै बावन दिनका इकसठिवां भाग मात्र है पीछैं श्रवणादि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति क्रमतै हो है। तिनविषै तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग प्रमाण हो है। पीछे पुष्यकी भुक्ति हो है ताका काल आठसै च्यारि दिनका इकसठिवां भागविषै दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग मात्र पुष्यकी भुक्तिका काल हो है। ऐसैं सर्वकाल मिलि राहुकै उत्तरायणविषै एक सौ असी दिन हो है। बहुरि राहुकै दाक्षिणायनविषै प्रथम पुष्यका भुक्तिकालविषै अवशेष पांचसै अठाईस दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण कालपर्यंत तौ पुष्यकी भुक्ति हो है। पीछे आश्लेषादि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति क्रमतैं हो है। तहां तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग मात्र है। ऐसे सर्व्वकाल मिलि राहुकै दक्षिणायन विषै एकसौ असीदिन हो हैं। या प्रकार नक्षत्र भुक्तिकौं समछेद करि जोड़ें चंद्रमाके अयनकै दिन तेरह अर चवालीसका सतसठिवां भाग हो है। बहुरि दोऊ अयन मिलाएं वर्षकै दिन सताइस अर इकईसका इकसठिवा भाग हो है। बहुरि सूर्यकै अयनदिन एक सौ तियासी वर्ष दिन तीनसै छयासठि हो हैं। बहुरि राहुकै अयनदिन एक सौ असी वर्ष दिन तीनसै साठि हो हैं॥४०९॥

आगैं अधिक मासका प्रतिपादनकै अर्थि सूत्र कहैं हैं;—

इगिमासे दिणवड्ढी वस्से बारह दुवस्सगे सदले।
अहिओ मासो पंचयवासप्पजुगे दुमासहिया ॥ ४१० ॥

एकस्मिन् मासे दिनवृद्धिः वर्षे द्वादश द्विवर्षके सदले।
अधिको मासः पंचवर्षात्मकयुगे द्विमासौ अधिकौ ॥ ४१० ॥

अर्थ—एक मासविषै एक दिनकी वृद्धि होइ एक वर्षविषै बारह दिनकी वृद्धि होइ अढाई वर्षविषै एक मास अधिक होइ। पंच वर्षका समुदाय सोई है स्वरूप जाका ऐसा युग तीहविषै दोय मास अधिक हो है। तहां एक वर्षविषै बारह दिन बधै तौ अढाई वर्षविषै कितेने दिन बधै ऐसें किएं लब्धराशि तीस दिन होइ। ऐसैंही युगविषै भी त्रैराशिक करनां। **भावार्थ**—एक वर्षके बारह मास एक मासके तीस दिन तहां इकसठिवें दिन एक तिथि घटै तातैं वर्षके तीनसै चौवन दिन होइ। अर सूर्यके वर्षके तीनसै छासठि दिन है। सो बारह दिन एक वर्षविषै बधती भए सो अढाई वर्ष व्यतीत भएं एक अधिक मास होइ तब तेरह मासका वर्ष होइ। बहुरि ऐसैंही अढाई वर्ष और भएं एक मास अधिक होइ। या प्रकार पांच वर्ष प्रमाण जो युग तिहविषै दोय अधिक मास होइ॥ ४१०॥

अब पूर्व गाथाका जु अर्थ ताहीकों आठ गाथानि करि वर्णन करै है;—

आसाढपुण्णमीए जुगणिप्पत्ती दु सावणे किण्हे।
अभिजिहि चंदजोगे पाडिवदिवसम्हि पारंभो॥ ४११॥

आषाढपूर्णिमायां युगनिष्पत्तिः तु श्रावणे कृष्णे।
अभिजिति चंद्रयोगे प्रतिपद्दिवसे प्रारंभः॥ ४११॥

अर्थ—आषाढ मासविषै पून्योंके दिन अपरान्ह समय उत्तरायणकी समापता होतें पंच वर्ष स्वरूप युगकी निष्पत्ति कहिए संपूर्णता सो हो है। बहुरि श्रावण मास कृष्णपक्षविषै अभिजित नक्षत्र अर चन्द्रमाका योग होतें पडिवाके दिन दक्षिणायनका प्रारंभ हो है। **भावार्थ**—आषाढ सुदि पून्यौं अपरान्हविषैं सो पूर्व युगकी समापता भई। बहुरि श्रावण वदि एकै दिन जहां चन्द्रमाकै अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल होइ तहां सूर्यका दक्षिणायनका आरंभ हो है। सोई नवीन पंच वर्ष स्वरूप जो युग ताका प्रारंभ जानना॥ ४११॥

आगैं किस वीथीविषैं किस अयनका प्रारंभ हो है सो कहै है;—

पढमंतिमवीहीदो दक्खिणउत्तरदिगयणपारंभो।
आउट्टी एगादी दुगुत्तरा दक्खिणाउट्टी॥ ४१२॥

प्रथमांतिमवीथीतः दक्षिणोत्तरदिगयनप्रारंभः।
आवृत्तिः एकादि द्विकोत्तरा दक्षिणावृत्तिः॥ ४१२॥

अर्थ—प्रथम अंतिम वीथीतैं दक्षिण उत्तर दिशाका अयनका प्रारंभ हो है। **भावार्थ**—एकसौ चौरासी वीथीनिविषैं प्रथम अभ्यंतर वीथीविषैं तिष्ठता सूर्यकै दक्षिण अयनका प्रारंभ हो है। अंतबाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यकै उत्तर अयनका प्रारंभ हो है। बहुरि सोई दक्षिणायन अर उत्तरायणकी प्रथम आवृत्ति है। पूर्व अयनकों समाप्त करि नवीन अयनका प्रारंभ [illegible] आवृत्ति जानना। [illegible] आदि [illegible] करि दुगुनरा [illegible] दोय [illegible] प्रमाण [illegible] दक्षिण आवृत्ति हो है॥ ४१२॥

[illegible] —

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

कृष्णके पंद्रह शुक्लके दश दिन हो है। बहुरि दक्षिणायनविषै बीचि जे भाद्रपदादि उत्तरायनविषै बीचि फाल्गुन आदि मास तिनविषै आदिविषै एक एक घटता अर अंतवि[illegible] बधता दिन स्थापन करिए ऐसैं एक एक मासविषै इकतीस तिथि स्थापन किए तीह त[illegible] वा तीह तीह अयनविषै अधिक दिन आवै है। भावार्थ—प्रथम श्रावणविषै यदि ए[illegible] पंद्रह तिथि कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर एक भाद्रपदका कृष्णकी तिथि ए[illegible] होइ। बहुरि भाद्रपदविषै पहले आदिविषै पंद्रह तिथि कही थी तामें एक घटाएं चौदह [illegible] पक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर अंतविषै एक कृष्णपक्षकी कही थी तामें एक [illegible] आश्विनके कृष्णपक्षकी मिलाएं इकतीस तिथि हो है। बहुरि आश्विनविषै आदिमें एक [illegible] कृष्णपक्षकी पंद्रह शुक्लपक्षकी अंतविषै एक बधाएं तीन कार्तिकके कृष्णपक्षकी मिलि [illegible] तिथि हो है। ऐसैंही कार्तिकविषै बारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी च्यारि कृष्णकी [illegible] मगसर कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी पांच कृष्णकी पौषविषै दश कृष्णकी पंद्रह शु[illegible] कृष्णकी मिलि मिलैं इकतीस तिथि होइ। बहुरि उत्तरायणविषै माघ बही तातैं तें [illegible] पंद्रह शुक्लकी सात कृष्णकी इत्यादि रचना किए बहुरि दक्षिणायनविषै द्वितीय श्रा[illegible] [illegible] बही [illegible] तीन कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी तेरह कृष्णकी तिथि हो[illegible] [illegible]विषै रचना करनी। ऐसैं रचना किएं मासविषै अयनविषै अधिक दिन आ[illegible] [illegible] पंचवर्षात्मक युगविषै दोय अधिकमास हो हैं॥ ४१८॥

आगैं दक्षिणायन उत्तरायणका प्रारंभविषै नक्षत्र स्थाननिका विधान कहैं हैं;—

[illegible] इगि[illegible] तु [illegible] इगि[illegible]।
[illegible] [illegible] ॥ ४१९

[illegible] तु [illegible]।
[illegible] ॥ ४१९॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

साधन किएं उत्तराषाट आवै परंतु सूक्ष्मपनैं साधन किएं अभिजित नक्षत्र जाननां। आगैं भी अश्विनी आदिकतैं वा कार्तिकआदिपनैं नक्षत्र गणनाविषैं अभिजित नक्षत्रका ग्रहण करना नाहीं। या प्रकार दक्षिणायनका प्रारंभविषैं प्रथम श्रावणमासविषैं नक्षत्र ल्यावनैंका विधान कह्या। अब दूसरा उदाहरण कहिए है। विवक्षित दूसरी आवृत्ति तामैं एक घटाएं एक रह्या तीह करि क्रमौ इक्यासीकौं गुणें एकसौ इक्यासीही हुवा इनमें इकईस मिलाएं दोयसै दोय भए इनकौं सत्ताईसका भाग दिएं अवशेष तेरह रहे सो अश्विनी नक्षत्रतैं तेरह्वां नक्षत्र हस्त सो उत्तरायणका प्रारंभविषैं प्रथम माघमासविषैं हस्तनक्षत्र पाईए है। ऐसेही तीसरी पांचवी सातवीं नवमी आवृत्तिविषैं दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावणमासविषैं हो है। तहां अर चौथी छठी आठवीं दशवीं आवृत्तिविषैं उत्तरायणका प्रारंभ माघमासविषैं हो है। तहां नक्षत्र साधन करनां ॥ ४१९ ॥

आगैं दक्षिणायण उत्तरायणके पर्व वा तिथि ल्यावनैंविषैं सूत्र कहैं हैं;—

वेगाउट्टिगुणं तेसीदिसदं सहिद तिगुणगुणरुवे।
पण्णरभजिदे पव्वा सेसा तिहिमाणमयणस्स ॥ ४२० ॥
व्येकावृत्तिगुणं त्र्यशीतिशतं सहितं त्रिगुणगुणरूपेण।
पंचदशभक्ते पर्वाणि शेषं तिथिमानं अयनस्य ॥ ४२० ॥

अर्थ—व्येका वृत्ति कहिए जेथवीं विवक्षित आवृत्ति होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण रहै तीह करि एकसौ तियासीकौं गुणिए, बहुरि जितनैं गुणकारक एकसौ तियासीकौं गुणकरि ताकौं तिगुणा करि तामें जोडिए। बहुरि एक और जोडिए जो प्रमाण होइ ताकौं पंद्रहका भाग दीजिए तो लब्धप्रमाण आवै तितनैं तो पर्व जाननें, अवशेष रहे सो तिथि प्रमाण जाननां। दक्षिणायन वा उत्तरायणका ऐसैंही जाननां। उदाहरण विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामैं एक घटाएं बिंदी रही तिह करि एकसौ तियासीकौं गुणें बिंदी करि गुणें बिंदी ही होइ इस न्याय करि बिंदी ही आई। बहुरि इहां गुणकार बिंदी ताकौं तिगुणां किएं भी बिंदीविषैं बिंदी जोडें बिंदी ही भई। बहुरि तामैं एक जोडें एक भया याकौं पंद्रहका भाग लागै नाहीं तातैं पर्वका तौ अभाव जाननां। अर अवशेष एक रह्या सो तिथिका प्रमाण जाननां ऐसैं प्रथम आवृति दक्षिणायनका प्रारंभविषैं प्रथम श्रावणमासविषैं पर्वका तौ अभाव आया पक्षकी पूर्णता भएं पूर्णमा वा अमावस्या जो होइ ताका नाम पर्व है। सो युगका आरंभ भएं पीछैं जेते पर्व व्यतीत होइ सोई इहां पर्वनिकी संख्या जाननी। सो प्रथम आवृत्तिविषैं कोऊ भी पर्व व्यतीत भया नातैं पर्वका अभाव जाननां। अर तिथिका प्रमाण एक जाननां। बहुरि दूसरा उदाहरण-विवक्षित आवृत्ति दूसरी तामैं एक घटाएं एक रह्या तीह करि एकसौ तियासीकौं गुणें एकसौ तियासी भए। बहुरि गुणकारका प्रमाण एक ताकौ तिगुणा किए तीनसौ मिलाय एकसौ छियासी भये। बहुरि तामैं एक और जोडें एकसौ सित्यासी भए। इनकौं पंद्रहका भाग दिए वारह पाए सो वारह सौ पर्वका प्रमाण भया। युगका प्रारंभतैं वारह पर्व व्यतीत भएं पीछैं दूसरी आवृत्ति हो है। अर अवशेष सात रहे सो सात तिथि जाननी। ऐसैं दूसरा आवृत्ति उत्तरायणका प्रारंभ होतैं प्रथम माघमासविषैं हो [illegible] आरंभतैं

बारह तौ पर्व व्यतीत भए जानने अर सातैं तिथि जाननी । याही प्रकार अन्य आवृत्तिनिविषै भी पर्व वा तिथिका प्रमाण ल्यावनां ॥ ४२० ॥

आगैं दिन वा रात्रिका प्रमाण जिहिं कालविषै समान होइ ताका नाम विषुप हैं तिह विषुपविषै पर्व वा तिथि वा नक्षत्रनिकौं छह गाथानि करि युगके दश अयननिविषै कहै हैं;—

छम्मासद्धगयाणं जोइसयाणं समाणदिणरत्ती ।
तं इसुपं पढमं छसु पव्वसु तीदेसु तदियरोहिणिए ॥ ४२१ ॥
षण्मासार्धगतानां ज्योतिष्काणां समानदिनरात्री ।
तत् विषुवं प्रथमं षट्सु पर्वसु अतीतेषु तृतीयारोहिण्याम् ॥ ४२१ ॥

अर्थ—छह मासका अर्द्ध ज्योतिषीनिके गएं समान रात्रि हो है सोई विषुप है । भावार्थ- एक अयन छह मासका हो है तहां आधा अयन भएं दिन अर रात्रिका प्रमाण समान हो है । सो जिस कालविषै दिन रात्रि समान होइ ताका नाम विषुप है । सो पंच वर्ष प्रमाण युगविषै दश विषुप हो हैं । पांच तौ दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै अर पांच उत्तरायणका अर्द्धकालविषै हो हैं । तहां पहला विषुप दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै दूसरा उत्तरायणका अर्द्धकालविषै ऐसैं क्रमतैं विषुप जानने । तहां प्रथम विषुप युगके आरंभतैं छह पर्व व्यतीत भएं तृतीय तिथिविषै रोहिणी नक्षत्रकी भुक्ति चन्द्रमाकै होत होत सो हो संतैं हो है ॥ ४२१ ॥

विगुणणवपव्वऽतीदे णवमीए विदियग धणिट्ठाए ।
इगितीसगदे तदियं सादीए पण्णरसमम्हि ॥ ४२२ ॥
द्विगुणनवपर्वातीतेषु नवम्यां द्वितीयकं धनिष्ठायाम् ।
एकत्रिंशद्गते तृतीयं स्वातौ पंचदश्याम् ॥ ४२२ ॥

अर्थ—दुगुण नव जो युगके आरंभ पीछैं अठारह पर्व व्यतीत भएं नवमी तिथिविषै धनिष्ठा नक्षत्रका योग चंद्रमाकै होतें दूजा विषुप हो है । बहुरि इकतीस पर्व व्यतीत भएं तीसरा विषुप स्वाति नक्षत्र होत संतैं पंचदशी तिथिविषै हो है । सो कृष्णपक्ष पनेतैं अर्थतैं अमावस्याविषै हो है ॥ ४२२ ॥

तेदालगदे तुरियं छट्टिपुणव्वसुगयं तु पञ्चमयं ।
पणवण्णपव्वगदे बारसिए उत्तराभद्दे ॥ ४२३ ॥
त्रिचत्वारिंशद्गतेषु तुरीयं षष्ठीपुनर्वसुगते तु पंचमकं ।
पंचपंचाशत्पर्वातीतेषु द्वादश्यां उत्तराभाद्रे ॥ ४२३ ॥

अर्थ—तियालीस पर्व व्यतीत भएं चौथा विषुप षष्ठीविषै पुनर्वसु नक्षत्रकी प्राप्ति भएं हो है । बहुरि पांचवां विषुप पचावन पर्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होत संतैं हो है ॥ ४२३ ॥

अडसट्ठिगदे तदिए विसुं छट्ठं भरणीरिक्खगदे ।
बासीदिगदे सत्तमसिए वित्तरिक्खगदे दु अट्ठमयं ॥ ४२४ ॥

अष्टषष्टिगतेषु तृतीयायां मैत्रे षष्ठे अशीतिपर्वगतेषु ।
नवम्यांमघायां सप्तमं इह त्रिनवतिगतेषु तु अष्टमम् ॥ ४२४ ॥

अर्थ—अडसठि पर्व गएं तृतीय तिथिविषै मैत्र जो अनुराधा नक्षत्र ताकों होत संतैं छठा विषुप हो है। बहुरि असी पर्व गएं नवमी तिथिविषै मघा नक्षत्र होतै सातवां विषुप हो है। बहुरि इहां तेराणवै पर्व गएं आठवां विषुप हो है ॥ ४२४ ॥

अस्सिणि पुण्णे पव्वे णवमं पुण पंचजुदसए पव्वे ।
तीदे छट्टितिहीए णक्खत्ते उत्तरासाढे ॥ ४२५ ॥

अश्विनी पूर्णे पर्वणि नवमं पुनः पंचयुतशतेषु पर्वेषु ।
अतीतेषु षष्ठीतिथौ नक्षत्रे उत्तराषाढे ॥ ४२५ ॥

अर्थ—सो आठवां विषुप अश्विनी नक्षत्र होतैं पूर्ण पर्व जो अमावस्या तीहविषै हो है। बहुरि नवमां विषुप एकसौ पांच पर्व व्यतीत भएं षष्ठी तिथिविषै उत्तराषाढ नक्षत्र होतैं हो है ॥४२५॥

चरिमं दसम विसुपं सत्तरसुत्तरसएसु पव्वेसु ।
तीदेसु बारसीए जाइदि उत्तरगफग्गुणिए ॥ ४२६ ॥

चरमं दशमं विषुवं सप्तदशोत्तरशतेषु पर्वेषु ।
अतीतेषु द्वादश्यां जायते उत्तराफाल्गुन्याम् ॥ ४२६ ॥

अर्थ—अंतका दशवां विषुप एकसौ सतरह पर्व्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र होतैं हो है ॥ ४२६ ॥

आगैं विषुपविषै पर्व वा तिथि ल्यावनेकौं सूत्र कहैं हैं;—

विगुणे सगिट्ठइसुपे रूऊणे छग्गुणे हवे पव्वं ।
तप्पव्वदलं तु तिथी पवट्टमाणस्स इसुपस्स ॥ ४२७ ॥

द्विगुणे स्वकेष्टविषुपे रूपोने षड्गुणे भवेत् पर्व ।
तत्पर्वदलं तु तिथिः प्रवर्तमानस्य विषुवस्य ॥ ४२७ ॥

अर्थ—अपनां इष्ट विषुप जेथवां होइ तीह प्रमाणकौं दूणा करिए तामैं एक घटाइए बहुरि अवशेषकौं छह गुणा किएं पर्व्वनिका प्रमाण आवै है। बहुरि तिस पर्व प्रमाणका आधा सो प्रवर्त्तमान विवक्षित विषुपका तिथि प्रमाण हो है। तीह पर्वका आधा प्रमाण पंद्रहतैं अधिक होइ तो पंद्रहका भाग दिएं जो लब्ध प्रमाण होइ सो तो पर्व संख्याविषै जोड़िए अर अवशेष रहै सो तिथिका प्रमाण हो है। इहां उदाहरण-इष्ट विषुप पहला ताकौं दूणा किएं दोय तामैं एक घटाएं अवशेष एक ताकौं छह गुणा किएं छहसो प्रथम विषुप विषै युग आरंभतैं व्यतीत पर्वनिका प्रमाण छह है। बहुरि तीह पर्व प्रमाणका आधा तीन सो प्रथम विषुपविषै तिथि तृतीया है। दूसरा उदाहरण-इष्ट विषुप दशवां ताकौं दूणा किएं बीसतामैं एक घटाएं उगणीस ताकौं छह गुणा किएं एकसौ चौदहसो पर्व प्रमाण ताका आधा सत्तावन ताकौं पंद्रहका भाग दिएं तीन

है। तातै नवमा नक्षत्र ही ग्रहण किया। इहां गणनाविषै अभिजितका ग्रहण करना। ऐसैंही अन्य त्रिषुपनिविषै नक्षत्र साधन करनां। बहुरि आवृत्ति या त्रिषुपविषै पर्व प्रमाणकौं पंद्रह गुणा करि तामें तिथि प्रमाण मिलाएं समस्त दिननिका प्रमाण हो है। उदाहरण-दूसरी आवृत्तिविषै पर्व-प्रमाण बारह तिनकौं पंद्रह गुणां किएं एकसौ असी भए, तहां तिथि प्रमाण सात मिलाएं एकसौ सित्यासी भए सोई युगके आरंभतैं एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भएं दूसरी आवृत्ति हो है। इहां एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भए ही दूसरी आवृत्ति हो है तथापि घटती तिथिकी विवक्षा न करि पक्षके *पंद्रही दिन गिणि ऐसा कथन किया है। ऐसेंही अन्य आवृत्ति या त्रिषुपनिविषै साधन करनां ॥४२९॥*

आगैं त्रिषुपविषै नक्षत्रका ल्यावनां अन्य प्रकार करि दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

आउट्टिरिक्खमस्सिणिपहुदीदो गणिय तत्थ अट्ठजुदे।
इसुपेसु होंति रिक्खा इह गणणा कित्तियादीदो ॥ ४३० ॥

आवृत्तिऋक्षं अश्विनीप्रभृतितः गणयित्वा तत्र अष्टयुते।
त्रिषुपेषु भवंति ऋक्षाणि इह गणना कृत्तिकादितः ॥ ४३० ॥

अर्थ—आवृत्तिका नक्षत्रकौं अश्विनी नक्षत्रतैं लगाय गिणिए जेथवां होइ तिहविषै आठ मिलाएं जो प्रमाण होइ तेथवां नक्षत्र त्रिषुपविषै जाननां इहां गणना कृत्तिका आदितैं करनी। उदाहरण-विवक्षित तीसरी आवृत्तिका नक्षत्र मृगशीर्षा सो अश्विनी मृगशीर्ष नक्षत्र पांचवो है। बहुरि पांचविषैं आठ मिलाएं तेरह होइ सो कृत्तिका नक्षत्रतै तेरह्वां नक्षत्र स्वाति है। सोई गणना किएं तीसरा त्रिषुपविषैं स्वाति नक्षत्र जाननां ॥ ४३० ॥

आगैं आवृत्ति नक्षत्रका प्रमाणविषै आठ मिलाए नक्षत्र प्रमाणतैं राशि अधिक होइ तौ कहा करिए सो कहैं हैं;—

अहियंकादट्ठवीसं छंडेज्जो विदियपंचमट्ठाणे।
एक्कं णिक्खिव छट्ठे दसमे विय एक्कमवणिज्जो ॥ ४३१ ॥

अधिकांकादष्टविंशं त्याज्याः द्वितीयपंचमस्थाने।
एकं निक्षिप षष्ठे दशमेपि च एकमपनेयम् ॥ ४३१ ॥

अर्थ—आवृत्ति नक्षत्रकौं अश्विनीतैं गिनैं जेथवां होइ तामैं आठ मिलाएं जो अठाईसतैं अधिक राशि होइ तौ तिहमैंस्यौं अठाईस घटाइए। अर दूसरा पांचवां आवृत्ति स्थानविषै आठ मिलाएं जो राशि होइ तामैं एक और मिलाइए। अर छटा दशवां आवृत्ति स्थानमैस्यौं एक घटाइए इनका उदाहरण चौथा आवृत्तिविषै शतभिषक नक्षत्र है सो अश्विनीतैं पचीसवां है। तामें आठ *मिलाए तेतीस होइ तिनमैंसौं अठाईस घटाए पांच रहे सो कृत्तिकातैं पांचवां नक्षत्र पुनर्वसु है।* सोई चौथा त्रिषुपविषै जाननां ऐसे अन्यत्र भी जाननां। बहुरि दूसरी आवृत्तिविषै हस्त नक्षत्र है सो अश्विनीतैं तेरह्वा है तामैं आठ मिलाएं इकईस होइ एक और मिलाएं बाईस होइ सो कृत्ति-कातै बाईसवां नक्षत्र धनिष्ठा है सोई दूसरा त्रिषुपविषै जाननां। ऐसैं पांचवां स्थानविषै जानि लेना। बहुरि छठी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है सो अश्विनीतै आठवां है। तामै आठ मिलाए सोलह

आगैं नक्षत्रनिकी स्थिति विशेषका विधान कहैं हैं;—

किचियपडंतिसमये अट्ठम मघरिक्खमेदि मज्झण्हं।
अणुराहारिक्खुदओ एवं सेसे वि भासिज्जो ॥ ४३६ ॥

कृत्तिकापतनसमये अष्टमं मघाऋक्षं एति मध्याह्नम्।
अनुराधाऋक्षोदयः एवं शेषेषु अपि भाषणीयम् ॥ ४३६ ॥

अर्थ—कृत्तिका नक्षत्रका पतन समय कहिए अस्त होनेका काल तीहविषैं इस कृत्तिकातैं आठवां मघा नक्षत्र सो मध्यान्ह कहिए बीचि प्राप्त हो है। बहुरि तीह मघातैं आठवां अनुराधा नक्षत्र सो उदय हो है। ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रनिविषैं जो नक्षत्र अस्त होइ तीह समय तीह नक्षत्रसौं आठवां नक्षत्र मध्यान्हकौं प्राप्त होइ। अर तीहसौं आठवां नक्षत्र उदयकौं प्राप्त होइ ऐसा कहना ॥ ४३६ ॥

आगैं चन्द्रमाके पंद्रह मार्ग हैं तिनविषैं इस इस मार्गविषैं ए नक्षत्र तिष्ठै हैं। ऐसा तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

अभिजिणव सादि पुव्वुत्तरा य चंदस्स पढममग्गम्हि।
तदिए मघापुणव्वसु सत्तमिए रोहिणी चित्ता ॥ ४३७ ॥

अभिजिन्नव स्वातिः पूर्वोत्तरा च चन्द्रस्य प्रथममार्गे।
तृतीये मघापुनर्वसू सप्तमे रोहिणी चित्राः ॥ ४५७ ॥

अर्थ—अभिजित आदि नव सो अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषा १ पूर्वा भाद्रपदा १ उत्तरा भाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ अर ए नव स्वाति १ पूर्वाफाल्गुनी १ उत्तराफाल्गुनी १ ए बारहकौ चन्द्रमाके प्रथम मार्गविषैं विचरै हैं। जो चन्द्रमाका प्रथम अभ्यन्तर वीथी रूप परिधि तीहकै उपरि जो परिधि तिहविषैं भ्रमण करै है। ऐसेही तीसरा मार्गविषैं मघा १ पुनर्वसु ए दोय नक्षत्र विचरै हैं। सातवां मार्गविषैं रोहिणी चित्रा ए दोय नक्षत्र विचरैं हैं ॥ ४३७ ॥

छट्ठट्ठमदसमेयारसमे कित्तिय विसाह अणुराहा।
जेट्ठा कमेण सेसा पण्णारसमम्मि अट्ठेव ॥ ४३८ ॥

षष्ठाष्टमदशमैकादशे कृत्तिका विशाखा अनुराधा।
ज्येष्ठा क्रमेण शेषाणि पंचदशे अष्टैव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—छटा मार्गविषैं कृत्तिका आठवांविषैं विशाखा दशवांविषैं अनुराधा ग्यारवांविषैं ज्येष्ठा क्रम करि विचरै हैं। अवशेष आठ नक्षत्र पंद्रहवां अंतका मार्गकै ऊपरि विचरै है ॥ ४३८ ॥

ते शेष आठ नक्षत्र कौन सो कहै है;—

हत्थे मूलतियं विय मियसिरदुग पुस्सदोण्णि अट्ठेव।
अट्ठपदे णवलच्छा सिट्ठंति हु चारमार्गेष ॥ ४३९ ॥

सेणागयपुव्वावरगत्ते णावा हयस्स सिरसरिसा।
चुल्लीपासाणणिभा किचियआदीणि रिक्खाणि ॥ ४४४ ॥
सेनागजपूर्वापरगात्रे नावा हयस्य शिरसा:सदृशाः।
चुल्लीपाषाणनिभाःकृत्तिकादीनि ऋक्षाणि ॥ ४४४ ॥

अर्थ—सेना १ हस्तीका आगिला शरीर १ हस्तीका पाछिला शरीर १ नाव १ घोड़ेका मस्तक १ चूल्हाका पाषाण १ समान आकारकौं धरैं हैं तारे जिनके ऐसे कृतिकादि नक्षत्र जानने ॥ ४४४ ॥

आगैं कृतिकादि नक्षत्रनिके परिवार रूप तारानिकौं कहै हैं;—

एक्कारसयसहस्सं सगसगतारापमाणसंगुणिदं।
परिवारतारसंखा किच्चियपणवखचपहुदीणं ॥ ४४५ ॥
एकादशशतसहस्रं स्वकस्वकताराप्रमाणसंगुणितम्।
परिवारतारासंख्या कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनाम् ॥ ४४५ ॥

अर्थ—ग्यारह अधिक एकसौ सहित एक हजारकौं अपनें अपनें तारानिका प्रमाण करि गुणें जो प्रमाण होइ सो कृत्तिका नक्षत्र आदि नक्षत्रनिके परिवाररूप तारेनिकी संख्या जाननी। उदाहरण—कृत्तिका नक्षत्रके मूल तारे छह हैं इनिकौं ग्यारहसै ग्यारह करि गुणे छह हजार छह सै छासठि तारे कृत्तिका नक्षत्रके परिवारके हैं। ऐसैं ही रोहिणी आदिके भी जानने नक्षत्रनिके जे अधिदेवता तिनिके अनुसारी इनिविषै बसै हैं ॥ ४४५ ॥

आगैं पंच प्रकार ज्योतिषी देवनिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

इंदिणसुक्कगुरिदरे लक्खं सहस्सा सयं च सहपल्लं।
पल्लं दलं तु तारे वरावरं पादपादद्धं ॥ ४४६ ॥
इन्द्विनशुक्रगुरितरेषु लक्षं सहस्रं शतं च सहपल्यं।
पल्यं दलं तु तारासु वरमवरं पादपादार्धम् ॥ ४४६ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्य शुक्र बृहस्पति इतर इनविषै क्रमतैं लाख हजार सौ वर्ष सहित पल्य अर्द्ध पल्य प्रमाण आयु है। भावार्थ—चंद्रमाका आयु लाख वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। सूर्यका आयु हजार वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। शुक्रका आयु सौ वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। बृहस्पतिका आयु पल्य प्रमाण है। इतर बुध मंगल शनैश्चरादिकका आयु आध पल्य प्रमाण है। बहुरि तारे कहिए तारा अर नक्षत्र इनका आयु उत्कृष्ट तौ पाद कहिए पल्यका चौथा भाग प्रमाण है। अर जघन्य पादार्ध कहिए पल्यका आठवां भाग प्रमाण है ॥ ४४६ ॥

आगैं चन्द्रमा सूर्यनिकी देवांगनानिकौं दोय गाथानि करि कहै हैं;—

चंदाभा य सुसीमा पहंकरा अच्चिमालिणी चंदे।
सूरे दुदि सूरपहा पहंकरा अच्चिमालिणी देवी ॥ ४४७ ॥
चन्द्राभा च सुसीमा प्रभंकरा अर्चिमालिनी चंद्रे।
सूर्ये द्युति सूर्यप्रभा प्रभंकरा अर्चिमालिनी देव्यः ॥ ४४७ ॥

अर्थ—चन्द्राभा १ सुसीमा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी १ ए च्यारि चन्

गना है। बहुरि सूर्यकै द्युति १ सूर्यप्रभा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी ए च्यारि पट्टे

जेट्ठा ताओ पुह पुह परिवारचदुस्सहस्सदेवीणं।
परिवारदेविसरिसं पत्तेयमिमा विउव्वंति ॥ ४४८ ॥
ज्येष्ठाः ताः पृथक् पृथक् परिवारचतुःसहस्रदेवीनाम्।
परिवारदेवीसदृशं प्रत्येकमिमाः विकुर्वन्ति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—ते ज्येष्ठ कहिए पट्ट देवी प्रथक् प्रथक् च्यारि हजार परिवार देवीं

भावार्थ—च्यारि च्यारि हजार परिवार देवांगनानिकी एक एक पट्ट देवांगना है। बहुरि

यार देवी समान संख्याको प्रत्येक विक्रिया करै है। भावार्थ—एक एक पट्ट देवांगना

करै तौ च्यारि हजार हो है ॥ ४४८ ॥

आगें ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

जोइसदेवीणाऊ सगसगदेवाणमद्धयं होदि।
सव्वणिगिट्ठसुराणां बत्तीसा होति देवीओ ॥ ४४९ ॥
ज्योतिष्कदेवीनामायुः स्वकस्वकदेवानामर्धं भवति।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशत् भवन्ति देव्यः ॥ ४४९ ॥

अर्थ—ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु अपने अपने भर्त्तार देवनिका आयुतैं अर्द्ध

प्रमाण जाननां। बहुरि इहां सर्वतैं निकृष्ट हीन पुन्यवान देव तिनकै बत्तीस देवांगना हो हैं।

मध्यविषै यथायोग्य देवांगनानिकी संख्या जाननी ॥ ४४९ ॥

आगैं भवनत्रिकविषैं जे जीव उपजै है तिनकौं कहै हैं;—

उम्मग्गचारि सणिदाणणलादिमुदा अकामणिज्जरिणो।
कुदवा सबलचरित्ता भवणतियं जंति ते जीवा ॥ ४५० ॥
उन्मार्गचारिणः सनिदानाः अनलादिमृता अकामनिर्जरिणः।
कुतपसः शबलचारित्रा भवनत्रये यांति ते जीवाः ॥ ४५० ॥

अर्थ—उन्मार्गचारी कहिए जिनमततैं विपरीत धर्मके आचरनेवाले, बहुरि सनिदा

कहिए निदान जिननैं किया होइ, बहुरि अनलादिमृता. कहिए अग्नि जल झंपापात आदिकतैं मू

बहुरि अकामनिर्जरिणः कहिए विना अभिलाष बंधादिकके निमित्ततैं परीषह सहनादि करि जिनः

निर्जरा भई बहुरि कुतपसः कहिए पंचाग्नि आदि खोटे तपके करनेवाले बहुरि शबलचारित्रा. कहिए

सदोष चारित्रके धरनहारे जे जीव हैं ते भवनत्रय जो भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी तिनविषै जाय

उपजे हैं ॥ ४५० ॥ ऐसैं ज्योतिर्लोकका अधिकार समाप्त भया।

इतिश्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमैं चौथा ज्योतिर्लोकका अधिकार

समाप्त भया ॥ ४ ॥

॥ अथ वैमानिकलोकाधिकार ॥ ५ ॥

अथ अनुक्रम करि प्राप्त भया वैमानिक लोकका वर्णन करनेंका है अभिलाषा जाकै ऐस आचार्य सो प्रथम विमाननिकी संख्याका प्रतिपादनकै अर्थि तिन विमाननिविषै तिष्ठते जे अवि नाशी जिन मंदिर तिनकौं प्रमाणपूर्वक नमस्कारकौं करै है;—

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सव्वे विमाणसमणगजिणिंदगेहे णमंसामि ॥ ४५१ ॥

चतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रान् तथैव त्रयोविंशान् ।
सर्वान् विमानसमानजिनेंद्रगेहान् नमस्यामि ॥ ४५१ ॥

अर्थ—चौरासी लाख सित्याणवै हजार तेवीस सर्व विमान संख्याके समान जिनेश्वरके मंदिर हैं जातैं एक एक विमानविषै एक एक जिन मंदिर पाईए हैं तिनकौं नमस्कार करौं हौं ४५

आगैं इन विमाननिका कल्प अर कल्पातीत भेद करि तहां प्रथमही कल्प जे स्वर्ग तिनके नाम दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदगा हु कप्पा हु ।
बम्हब्बम्हुत्तरगो लांतवकापिट्ठगो छट्ठो ॥ ४५२ ॥

सौधर्मैशानसनत्कुमारमाहेंद्रकाः हि कल्पा हि ।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरकौ लांतवकापिष्ठकौ षष्ठः ॥ ४५२ ॥

अर्थ—सौधर्म १ ईशान १ सनत्कुमार १ माहेन्द्र १ ए च्यारि कल्प कहिए स्वर्ग हैं बहुरि ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर ए दोय कल्प मिलि करि इनका इंद्र एक ही है तीह अपेक्षा एक ह कल्प है। बहुरि लांतव १ कापिष्ट ए दोय भी एक इंद्रकी अपेक्षा छठा एक कल्प है ॥ ४५२ ॥

सुक्कमहासुक्कगदो सदरसहस्सारगो हु तत्तो दु ।
आणदपाणदआरणअच्चुदगा होंति कप्पा हु ॥ ४५३ ॥

शुक्रमहाशुक्रगतः शतारसहस्रारगो हि ततस्तु ।
आनतप्राणतारणाच्युतगा भवंति कल्पा हि ॥ ४५३ ॥

अर्थ—शुक्र १ महाशुक्र १ ए दोय भी एक इन्द्र अपेक्षा एक कल्प है, बहुरि शतार १ सह स्रार १ ए दोय भी एक इंद्र अपेक्षा एक कल्प है। बहुरि तहां पीछैं आनत १ प्राणत १ आरण १ अच्युत ए च्यारि कल्प हैं ॥ ४५३ ॥

मज्झिमचउजुगलाणं पुव्वावरजुम्मगेसु सेसेसु ।
सव्वत्थ होंति इंदा इदि बारस होंति कप्पा हु ॥ ४५४ ॥

मध्यमचतुर्युगलानां पूर्वापरयुग्मयोः शेषेषु ।
सर्वत्र भवंति इंद्रा द्वादश भवंति कल्पा हि ॥ ४५४ ॥

अर्थ—सोलह स्वर्गनिके आठ युगल तिनिविषै मध्यका च्यारि युगलनिविषै पूर्व दोय युगल तौ ब्रह्म ब्रह्मोत्तर अर लांतव कापिष्ट अर अपर दोय युगल शुक्र शतार महाशुक्र अर सहस्रार इन च्यारि युगलनिके एक एक इंद्र हैं। बहुरि अवशेष आठ कल्प तिनिविषै सर्वत्र एक एक इंद्र है। ऐसे इंद्र अपेक्षा करि कल्प बारह है ॥ ४५४ ॥

आगैं स्वर्गनिके ऊपरि जे कल्पातीत विमान तिनके नाम कहै हैं;—

हिट्ठिममज्झिमउवरिमतितिय गेवेज्ज णवअणुदिसगा ।
पंचाणुत्तरगा वि य कप्पादीदा हु अहमिंदा ॥ ४५५ ॥

अधस्तनमध्यमोपरिमत्रिकाणि ग्रैवेयाणि नव अनुदिशानि ।
पंचानुत्तरकाणि अपि च कल्पातीता हि अहमिंद्राः ॥ ४५५ ॥

अर्थ—अधस्तन अर मध्यम अर उपरिम तीन तीन ग्रैवेयक हैं तिनके नव ग्रैवेयक भए। बहुरि नव अनुदिश विमान हैं। बहुरि पंच अनुत्तर विमान हैं। ऐसे ए कल्पातीत विमान हैं। तिनिविषै अहमिंद्र देव तिष्ठै हैं ॥ ४५५ ॥

आगैं नव अनुदिश विमान अर पंच अनुत्तर विमान तिनके नाम दोय गाथानि करि कहै हैं;—

अच्चीय अच्चिमालिणि वइरं वइरोयणा अणुद्दिसगा ।
सोमो य सोमरूवे अंके फलिहे य आइच्चे ॥ ४५६ ॥

अर्चिः अर्चिमालिनी वैरं वैरोचनः अनुदिशकानि ।
सोमश्च सोमरूपः अंकः स्फटिकः च आदित्यं ॥ ४५६ ॥

अर्थ—अर्चि १ अर्चिमालिनी १ वैर १ वैरोचन १ ए च्यारि श्रेणीबद्ध विमान पूर्वादि दिशानिविषै प्राप्त हैं। बहुरि सोम १ सोमरूप १ अंक १ स्फटिक ए च्यारि प्रकीर्णक विमान विदिशानिविषै प्राप्त हैं। मध्यविषै आदित्यनामा इंद्रक विमान है। ऐसे ए नव अनुदिश विमान प्राप्त हैं ॥ ४५६ ॥

विजयो दु वैजयंतो जयंत अवराजिदो य पुव्वादी ।
सव्वट्ठसिद्धिणामा मज्झम्मि अणुत्तरा पंच ॥ ४५७ ॥

विजयस्तु वैजयन्तः जयन्तः अपराजितश्च पूर्वादि ।
सर्वार्थसिद्धिनामा मध्ये अनुत्तराः पंच ॥ ४५७ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ ए च्यारि पूर्वादि दिशानिविषै [illegible] हैं। बहुरि मध्यविषै सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान है। ऐसें ए पंच अनुत्तर विमान हैं ॥ ४५७ ॥

[illegible]

[illegible]

अर्थ— [illegible] भावार्थ — [illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

अर्थ— [illegible]

[illegible]

अर्थ— [illegible]

सात अर तीन ऊर्द्ध ग्रैवेयकनिविर्षे इक्याणवै अर अनुदिशाविषै नव अर अनुत्तरविषै पांच वि[illegible]
जानने ॥ ४६१ ॥

अब प्रथमादि स्वर्गनिविषै प्रतरनिकी संख्याका प्रतिपादनकै अर्थि इंद्रकनिका प्रमाण क[illegible]
हैं। जातै एक एक प्रतरविषै एक एक इंद्रक विमान है;–

इगितीससत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क चदुकप्पे।
तित्तिय एक्केक्किंदयणामा उडुआदितेवट्ठी ॥ ४६२ ॥

एकत्रिंशत्सप्त चत्वारि द्वे एकमेकं षट्कं चतुःकल्पे।
त्रीणि त्रीणि एकमेकं इंद्रकनामानि ऋत्वादित्रिषष्टिः ॥ ४६२ ॥

अर्थ—सौधर्म युग्मविषै इकतीस इंद्रक हैं सनत्कुमार युग्मविषै सात इंद्रक है ब्रह्मयु[illegible]
विषै च्यारि इंद्रक हैं लांतव युग्मविषै दोय इन्द्रक हैं शुक्र युग्मविषै ए[illegible]
इंद्रक है शतार युग्मविषै एक इंद्रक है। आनंतादि च्यारि कल्पनिविषै छह इंद्रक है
अधस्तन आदि तीन प्रकार ग्रैवेयकनिविषै तीन तीन इंद्रक है नव अनुदिशनिविषै एक इंद्रक है
पंच अनुत्तरविषै एक इंद्रक है ऐसे ए तरेसठि इंद्रक है सो इनके ऋतुविमान आदि [illegible]
नाम है ॥ ४६२ ॥

आगै इन इंद्रकनिका ऊर्द्ध अपेक्षा अंतराल अर तिनका नामका अवतार कहै है;—

एक्केक्कइंदयस्स य विच्चालमसंखजोयणपमाणं।
एदाणं णामाणं वोच्छामो आणुपुव्वीओ ॥ ४६३ ॥

एकैकमिंद्रकस्य च विचालं असंख्यातयोजनप्रमाणं।
एतेषां नामानि वक्ष्यामः आनुपूर्व्या ॥ ४६३ ॥

अर्थ—एक एक इंद्रककै बीचि अंतराल असंख्यात योजन प्रमाण है। अब इंद्रकनि[illegible]
नाम अनुपूर्वी करि नीचैतै लगाय क्रम करि कहौं हौं ॥ ४६३ ॥

कहे इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहै हैं;—

उडुविमलचंदवग्गू वीरअरुणं णंदणं च णलिणं च।
कंचण रोहिद चंचं मरुदं रिद्धिसय वेलुरियं ॥ ४६४ ॥

ऋतुविमलचंद्रवल्गुवीरारुणनंदनं च नलिनं च।
कांचनं रोहितं चंचत् मरुत् ऋद्धीशं वैडूर्यं ॥ ४६४ ॥

अर्थ—ऋतु १ विमल १ चंद्र १ वल्गु १ वीर १ अरुण १ नंदन १ नलिन १ कांच[illegible]
१ रोहित १ चंचत् १ मरुत् १ ऋद्धीश १ वैडूर्य ॥ ४६४ ॥

रुचग रुचिरंक फलिह तवणीयं मेघमब्भ हारिद्दे।
पउमं लोहिद वज्जं णंदावत्तं पहंकरयं ॥ ४६५ ॥

[illegible]।
[illegible] ॥ ४६५ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचिर १ अंक १ स्फटिक १ तपनीय १ मेघ १ अभ्र १ हरित १ पद्म लोहित १ वज्र १ नंद्यावर्त्त १ प्रभंकर ॥ ४६५ ॥

पिट्ठक गज मित्त पहा अंजण वणमाल णाग गरुडं च ।
लंगल वलभद्द चय चक्कं चरिमं च अडतीसो ॥ ४६६ ॥
पृष्ठकं गजं मित्रं प्रभं अंजनं वनमालं नागं गरुडं च ।
लांगलं बलभद्रं च चक्रं चरमं च अष्टात्रिंशत् ॥ ४६६ ॥

अर्थ—पृष्ठक १ गज १ मित्र १ प्रभ १ अंजन १ वनमाल १ नाग १ गरुड १ लांगल बलभद्र १ अंतका इंद्रक चक्र १ ऐसैं सौधर्मादि च्यारि स्वर्गविषैं मिलाए हुए अड़तीस इंद्रकनिके नाम हैं ॥ ४६६ ॥

रिट्ठसुरसमिदि बम्हं बम्हुत्तर बम्हहिदयलांतवयं ।
सुक्कं खलु सुक्कदुगे सदरविमाणं तु सदरदुगे ॥ ४६७ ॥
अरिष्टसुरसमिति ब्रह्म ब्रह्मोत्तरं ब्रह्महृदयलांतवकं ।
शुक्रं खलु शुक्रद्विके शतारविमानं तु शतारयुगे ॥ ४६७ ॥

अर्थ—अरिष्ट १ सुरस १ ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर १ ए च्यारि ब्रह्म युगलविषैं इंद्रकनिके नाम । बहुरि ब्रह्महृदय १ लांतव १ ये दोय लांतव युगलविषैं इंद्रकनिके नाम हैं । बहुरि शुक्र युगलविषैं शुक्र नामा एक इंद्रक है । बहुरि शतार द्विकविषैं शतार विमान नाम इंद्रक है ॥ ४६७ ॥

आणद पाणदपुप्फय सातक तह आरणच्चुदक्खसाणे ।
तो गेवेज्ज सुदरिसण अमोह तह सुप्पबुद्धं च ॥ ४६८ ॥
आनतप्राणतपुष्पकं शातकं तथा आरणाच्युताख्ये ।
ततः ग्रैवेयके सुदर्शनं अमोघं तथा सुप्रबुद्धं च ॥ ४६८ ॥

अर्थ—आनत १ प्राणत १ पुष्पक १ शातक १ आरण १ अच्युत १ ए छह इंद्रकनिके नाम आनतादि अच्युत पर्यंत च्यारि कल्पनिविषैं हैं । बहुरि तहां पीछै नव ग्रैवेयकनिविषैं सुदर्शन १ अमोघ १ सुप्रबुद्ध १ है ॥ ४६८ ॥

जसहर सुभद्दणामा सुविसालं सुमणसं च सोमणसं ।
पीदिंकरमाइच्चं चरिमे सव्वट्ठसिद्धी दु ॥ ४६९ ॥
यशोधरं सुभद्रनाम सुविशालं सुमनसं च सौमनसं ।
प्रीतिंकरं आदित्यं चरमे सर्वार्थसिद्धिः ॥ ४६९ ॥

अर्थ—यशोधर १ सुभद्र नाम १ सुविशाल १ सुमनस १ सौमनस १ प्रीतिंकर १ ए छह इंद्रकनिके नाम है । बहुरि नव अनुदिशविषै आदित्यनामा इंद्रक है । बहुरि अंतविषैं पंचानुत्तरविषैं सर्वार्थसिद्धिनामा इंद्रक है ॥ ४६९ ॥

आगै मेरुतलादु दिवड्ढ इत्यादि पूर्वोक्त गाथाका अर्थविषै सर्वत्र किंचित् न्यून है इत्यादि जो प्रश्न होय उत्तर कहै हैं,—

णाभिगिरिचूलिगुवरिं वालग्गंतरहियो हु उडुइंदो ।
सिद्धींदो धो वारह जोयणमाणम्हि सव्वट्ठं ॥ ४७० ॥

नाभिगिरिचूलिकोपरि वालाग्रांतरे स्थितः हि ऋत्विंद्रकः ।
सिद्धिंतः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

अर्थ—नाभिगिरि जो बीचि तिष्टता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाकै ऊपरी बाल अग्रमात्र प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्टै है। बहुरि सिद्धक्षेत्रतैं नीचें बारह योजन प्रमाणविषैं अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्टै है ॥ ४७० ॥

आगैं कल्प अर कल्पातीतनिकैं विक्रियादिकनिकी मर्यादाकौं कहै हैं;—

सगसगचरिमिंदयधयदंडं कप्पावणीणमंतं खु ।
कप्पादीदवणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥

स्वकस्वकचरमेंद्रकध्वजदंडः कल्पावनीनां अंतः खलु ।
कल्पातीतावनेश्च अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

अर्थ—अपना अपना अंतका इंद्रकका जु ध्वजादंड सो कल्पसंबंधी पृथ्वीका अंत जानना जैसे सौधर्म युगलविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका ध्वजादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथ्वीका अंत सो लोकका अंत है। लोकका जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथ्वीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगैं इंद्रकनिका विस्तार कहै हैं;—

माणुसखित्तपमाणं उडु सव्वट्ठं तु जंबुदीवसमं ।
उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदे दु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं ऋतु सर्वार्थं तु जंबुद्वीपसमं ।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते तु हानिचयम् ॥ ४७२ ॥

अर्थ—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण पैंतालीस लाख योजन व्यासकौं धरैं ऋतुनामा इंद्रक है। बहुरि सर्वार्थसिद्धि विमान जंबूद्वीप समान एक लाख योजन व्यासकौं धरै है। बहुरि दोऊनिविषै मि- [illegible] पैंतालीस लाख [illegible] एक लाख घटाएं चवालीस लाख अवशेष रहे तिनकौं [illegible] इंद्रकनि [illegible] दीजिये तहां इंद्रक प्रमाण [illegible] एक घटाएं [illegible] [illegible] हजार [illegible] योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण आया। सो इतनी इंद्रक प्रति हानि [illegible] जाननी। [illegible] योजन ऋतुविमान है याके [illegible] हजार [illegible] योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण हानि पर घटाएं [illegible] [illegible] हजार [illegible] योजन अर [illegible] इकतीसवां भाग प्रमाण [illegible] [illegible] प्रमाण है। [illegible] इंद्रकका [illegible] प्रमाण है। [illegible] [illegible] इंद्रक [illegible] [illegible] ॥

इहांतै आगै श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

पासट्ठी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं।
पडिदिसमेवेकूणं अणुदिसाणुत्तरेकोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वाषष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं।
प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीबद्ध विमान बासठि हैं। ताके च्यारों दिशानिविषै दोयसै अठतालीस भए। यातैं ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीबद्ध जाननें। यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध अवशेष रहै तावत् ऐसैं जानना। इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीबद्धनिका संकलित धन ल्यावनैंका विधान कहिए है। सौधर्म इंद्रकै प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध बासठि हैं अर दक्षिण इंद्रकै उत्तर दिशा बिना तीन दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीबद्ध भया सो यहु तौ आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीबद्ध घटै हैं तातैं ऋण रूप चय तीन। बहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गछ इकतीस। अब इहां हीन संकलनकों आश्रयकरि धन ल्याईए हैं। पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि। १। इस सूत्रकरि पद जो गछ सो इकतीस यामैं एक घटाएं तीस याकों दोयका भाग दिएं पंद्रह इनकौं उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैतालीस इनकौं प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामैं इहां ऋण रूप चय है तातैं पैंतालीस घटाएं एकसौ इकतालीस रहे। इनकौं पद जो गछ इकतीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्मकै श्रेणीबद्ध विमान भए। बहुरि इन विषै इकतीस पटल संबधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं। बहुरि ऐसैं ही ईशान विषै उत्तर इन्द्रनिकै एक उत्तर दिशा संबंधी श्रेणीबद्ध पाईए है। अर ईसान उत्तर इन्द्र है तातैं आदि बासठि उत्तर एक गछ इकतीस करि संकलित धन ल्याएं ईशानकै चौदहसै सत्तावन श्रेणीबद्ध हो हैं। इहां ईशानविषै इन्द्रक न मिलावनें, जातै उत्तर इंद्रनिकैं उत्तर इन्द्र विमानका अभाव है। बहुरि सौधर्मकै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्ध बासठि तिनमें अपना गछ इकतीस घटाएं अवशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण है। ऐसे ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपना पटल प्रमाण गछ घटाएं ऊपरि ऊपरि युगलके प्रथम पटलकै एक दिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। सो सौधर्म ईशानविषै बासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्ठविषै बीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहस्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोग्रैवेयकविषै दश मध्य ग्रैवेयकविषै सात उपरिम ग्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीबद्ध विमान एक दिशासंबंधी जाननां। इस श्रेणीबद्धनिके प्रमाणकों दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

णाभिगिरिचूलिगुवरिं बालग्गंतरट्ठियो हु उडुइंदो ।
सिद्धीदो धो बारह जोयणमाणम्हि सव्वट्ठं ॥ ४७० ॥

नाभिगिरिचूलिकोपरि बालाग्रांतरे स्थितः हि ऋत्विंद्रकः ।
सिद्धितः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

अर्थ—नाभिगिरि जो बीचि तिष्ठता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाके ऊपरि एक बालाग्रमात्र प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है । बहुरि सिद्धक्षेत्रतैं नीचैं बारह योजन प्रमाणविषै अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है ॥ ४७० ॥

आगैं कल्प अर कल्पातीतनिकै क्षितिआदिकनिकी मर्यादाकौं कहै हैं;—

सगसगचरिमिंदयधयदंडं कप्पावणीणमंतं खु ।
कप्पादीदवणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥

स्वकस्वकचरमेंद्रकध्वजदंडः कल्पावनीनां अंतः खलु ।
कल्पातीतावन्या अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

अर्थ—अपना अपना अंतका इंद्रकका जु ध्वजादंड सो कल्पसंबंधी पृथ्वीका अंत जानना । जैसे सौधर्म युगलविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका ध्वजादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है । ऐसैं ही अन्यत्र जानना । बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथ्वीका अंत सो लोकका अंत है । लोकका जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथ्वीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगैं इंद्रकनिका विस्तार कहै हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं उडु सव्वट्ठं तु जंबुदीवसमं ।
उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदे दु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं ऋतु सर्वार्थं तु जंबूद्वीपसमं ।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते तु हानिचयः ॥ ४७२ ॥

अर्थ—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण पैंतालीस लाख योजन व्यासकौं धरैं ऋतु नामा इंद्रक है । बहुरि सर्वार्थसिद्धि विमान जंबूद्वीप समान एक लाख योजन व्यासकौं धरैं है । बहुरि दोऊनिकौं [illegible]

इहातैं आगैं श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

बासट्ठी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं।
पडिदिसमेक्केकूणं अणुदिसाणुत्तरेकोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वाषष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं।
प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीबद्ध विमान बासठि है। ताके च्यारौं दिशानिविषै दोयसै अठतालीस भए। यातैं ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीबद्ध जानने। यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध अवशेष रहै तावत् ऐसैं जाननां। इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीबद्धनिका संकलित धन ल्यावनेंका विधान कहिए है। सौधर्म इंद्रकै प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध बासठि हैं अर दक्षिण इंद्रकै उत्तर दिशा विना तीन दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीबद्ध भया सो यहु तौ आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीबद्ध घटै हैं तातै ऋण रूप चय तीन। बहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गच्छ इकतीस। अब इहां हीन संकलनकों आश्रयकरि धन ल्याईए हैं। पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुद पदगुणिदं पदगणिदं त वियाणाहि। १। इस सूत्रकरि पद जो गच्छ सो इकतीस यामें एक घटाएं तीस याकों दोयका भाग दिएं पद्रह इनकौं उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैंतालीस इनकौं प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामैं इहां ऋण रूप चय है तातैं पैंतालीस घटाएं एकसौ इकतालीस रहे। इनकौं पद जो गछ इकत्तीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्मकै श्रेणीबद्ध विमान भए। बहुरि इन विषै इकतीस पटल संबंधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं। बहुरि ऐसैं ही ईशान विषै उत्तर इन्द्रनिकै एक उत्तर दिशा संबंधी श्रेणीबद्ध पाईए है। अर ईसान उत्तर इन्द्र है तातैं आदि बासठि उत्तर एक गछ इकतीस करि संकलित धन ल्याएं ईशानकै चौदहसै सत्तावन श्रेणीबद्ध हो है। इहां ईशानविषै इन्द्रक न मिलावनें, जातै उत्तर इंद्रनिकैं उत्तर इन्द्र विमानका अभाव है। बहुरि सौधर्मकै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्ध बासठि तिनमें अपना गछ इकतीस घटाएं अवशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकदिशा संबधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण है। ऐसै ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपनां पटल प्रमाण गछ घटाएं उपरि उपरि युगलके प्रथम पटलके एक दिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। सो सौधर्म ईशानविषै बासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्टविषै बीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहस्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोग्रैवेयकविषै दश मध्य ग्रैवेयकविषै सात उपरिम ग्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीबद्ध विमान एक दिशासंबंधी जाननां। इस श्रेणीबद्धनिके प्रमाणकों दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

गुणें धार जहां दक्षिण उत्तर इंद्रकी विवक्षा नांहीं तहां चारि करि गु आदिका प्रमाण हो है । सो सनत्कुमारकै तरेणवै माहेन्द्रकै इकतीस ब्रह्मब्रह्मोत्तरविषै छि लांतव कापिष्ठविषै असी शुक्र महाशुक्रविषै बहत्तरि सतार सहस्रारविषै अडसठि आनतादि चौंसठि अधो ग्रैवेयकविषै चालीस मध्य ग्रैवेयकविषै अठाईस उपरिम ग्रैवेयकविषै सोलह न अनुदिशविषै च्यारि ऐसैं आदिका प्रमाण है । बहुरि उत्तर जो ऋणरूप चय सो सनत्कुमारि तीन माहेन्द्रविषै एक ऊपरि सर्वत्र च्यारि प्रमाण हैं। बहुरि गछ अपनां अपनां पटल प्रमाण सनत्कुम रादिविषैं क्रमतैं सात सात च्यारि दोय एक एक छह तीन तीन तीन एक एक है । ऐसैं आदि उ गछ जांनि तीह तीहका संकलित धन दक्षिण इंद्र या उत्तर इंद्रनिकै ल्यावना । सो सनत्कुमारा विषै क्रमतैं श्रेणीबद्धनिका प्रमाण ५८८।१९६।३६०।१५६।७२।६८।३२४।१०८।७२।१ ४ जानने ॥ ४७३ ॥

आगें तहां प्रथम इन्द्रक संबंधी श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका वर्णनकौं कहैं हैं;—

उडुसेढीबद्धदलं सयंभुरमणुदहिपणिधिभागह्मि ।
आइल्लतिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे य सेसा हु ॥ ४७४ ॥

ऋतुश्रेणीबद्धदलं स्वयंभुरमणोदधिप्रणिधिभागे ।
आदिमत्रिषु द्वीपेषु त्रिषु समुद्रेषु च शेषं हि ॥ ४७४ ॥

अर्थ—ऋतु इंद्रक संबंधी श्रेणीबद्धनिका एक दिशा संबंधी प्रमाण बासठि ताका आधा इकतीस श्रेणीबद्ध तौ स्वयंभूरमण नामा समुद्रका प्रणिधि भाग कहिए निकटवर्ती उपरिमभाग तिस विषै तिष्ठै हैं । अवशेष अर्वाचीन तीन द्वीप अर तीन समुद्रनिविषै तिष्ठै हैं । भावार्थ—प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी बासठि श्रेणीबद्ध हैं । तिनविषै इकतीस तौ स्वयंभूरमण समुद्र ऊपरि हैं पंद्रह स्वयंभूरमण द्वीप ऊपरि हैं । आठ तीहस्यौं लगता समुद्र उपरि है च्यारि तीहसौं लगता द्वीप ऊपरि हैं दोय तिहसौं लगता समुद्र उपरि हैं एक तीहसौं लगता द्वीप ऊपरि है । एक तीहसौं लगता अनेक द्वीप समुद्रनिके ऊपरि है ॥ ४७४ ॥

आगें प्रकीर्णकनिका स्वरूप वा प्रमाण कहैं हैं;—

सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ट्ठियविमाणा ।
होंति पइण्णयणामा सेढिंदयहीणरासिसमा ॥ ४७५ ॥

श्रेणीनां विचाले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितविमानानि ।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणींद्रकहीनराशिसमानि ॥ ४७५ ॥

अर्थ—श्रेणीबद्ध विमाननिका [illegible]
[illegible]

घटाई ताके पूर्वोक्त श्रेणीबद्धनिका अर इंद्रनिका प्रमाण घटाएं जो जो राशि अवशेष रहै तिस समान प्रमाण ही सौधर्मादिकविषैं प्रकीर्णक विमान जानने ॥ ४७५ ॥

आगें दक्षिण अर उत्तर इंद्रनिकै इंद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णकनिका विभागको दिखावै हैं;—

उत्तरसेढीबद्धा वायव्वीसाणकोणगपइण्णा ।
उत्तरइंदणिबद्धा सेसा दक्खिणदिसिंदपडिबद्धा ॥ ४७६ ॥
उत्तरश्रेणीबद्धा वायव्यैशानकोणगप्रकीर्णानि ।
उत्तरेन्द्रनिबद्धानि शेषाणि दक्षिणदिगिंद्रप्रतिबद्धानि ॥ ४७६ ॥

अर्थ—उत्तरदिशासंबंधी श्रेणीबद्ध विमान बहुरि वायवी अर ईशान कोणकौं प्राप्त भए प्रकीर्णक विमान ए तौ उत्तरदिशाका इंद्रसंबंधी हैं । बहुरि अवशेष सर्व विमान दक्षिणदिशाका इंद्रसंबंधी हैं । अब इहां ऊर्ध्व लोकको रचनाविषैं स्वर्गादिकका अवस्थान वा इन्द्रकादिक विमाननिका स्वरूप मंद बुद्धिनिके समझनेके अर्थि कहिए है । मेरुतलतैं लगाय सात राजू ऊंचा ऊर्द्धलोक है। तीहिविषै डेढ राजूकी ऊंचाईविषैं सोलह स्वर्ग हैं । तहां मेरुतलतैं लगाय ड्यौढ राजूकी ऊंचाईविषै तौ सौधर्म ईशान युगल है ताके इकतीस पटल हैं । पटल कहा कहिए ? तिर्यक्रूप बराबरि क्षेत्रविषैं जहां विमान पाईए ताका नाम पटल है। तहां मेरुकी चूलिकातैं बालाग्रका अंतराल छोडि प्रथम पटल है । ताके ऊपरि बीचिमैं असंख्यात योजन प्रमाण अंतरालविषै अवकाश है। बहुरि तहां ऊपरि द्वितीय पटल है। ऐसें ही बीचि बीचिमैं असंख्यात असंख्यात योजनका अवकाशरूप अंतराल छोडि ऊपरि ऊपरि पटल जानने । इकतीसवां अंतका पटल ड्यौढ राजू क्षेत्रका अंतविषैं पाईए है । बहुरि पटल पटल प्रति बीचिमैं जो एक एक विमान पाईए तिनका नाम इंद्रक विमान है। सो मेरु ऊपरि तौ ऋतु इंद्रक है । ताकी सूधिविषै ऊपरि ऊपरि पटल पटल प्रति एक एक इंद्रक जानना । बहुरि पटल पटल प्रति तिस इंद्रक विमानकी पूर्वादिक च्यारि दिशानिविषैं जे पंक्तिबंध विमान पाईए तिनका नाम श्रेणीबद्ध विमान है। बहुरि पटल पटल प्रति तिन तिन श्रेणीबद्धनिकै बीचि विदिशानिविषैं जे बखेरे हुए फूलकी ज्यों जहां तहां तिष्ठते विमान हैं तिनका नाम प्रकीर्णक विमान है से ऐसैं जानने । तहां पटल पटलसंबंधी उत्तरदिशाका श्रेणीबद्ध विमान वायवी ईशान विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै तौ उत्तर इंद्र ईशान ताकी आज्ञा प्रवर्त्तै है। बहुरि अवशेष सर्व इंद्रक विमान अर तीन दिशाका श्रेणीबद्ध विमान अर नैर्ऋति आग्नेय विदिशाका प्रकीर्णक इनविषैं दक्षिण इंद्र जो सौधर्म ताकी आज्ञा प्रवर्त्तै है । तहां जिनि विमाननिविषै सौधर्म इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्तै है तिनके समूहका नाम सौधर्म स्वर्ग है । बहुरि जिन विमाननिविषै ईशान इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्तै है तिनका समूहका नाम ईशान स्वर्ग है । जैसें इहां एक नगरविषै अपनें अपनें स्वामीके नामकी अपेक्षा वसतीनिका नाम हो है तैसें जानना । बहुरि ताकै ऊपरि ड्यौढ राजूकी उचाईविषै सनत्कुमार माहेन्द्र युगल है । तहां सात पटल हैं सो सौधर्म युगलके अंत पटलतैं असंख्यात योजन अंतराल छोडि प्रथम पटल है । ताके ऊपरि ऊपरि तैसे ही अंतराल लिए द्वितियादि पटल हैं । तिनविषैं इंद्रकादिक विमान पूर्वोक्त प्रकार जानने, तहां उत्तर श्रेणीबद्ध वायवी

कप्पेसु रासिपंचमभागं संखेज्जवित्थडा होंति ।
तत्तो तिण्णट्ठारस सत्तरसेक्केक्कयं कमसो ॥ ४७८ ॥
कल्पेषु राशिपंचमभागं संख्येयविस्तारा भवंति ।
ततः त्रीण्यष्टादश सप्तदशैकमेकं क्रमशः ॥ ४७८ ॥

अर्थ—कल्पनिविषैं अपनां अपनां बत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि विमाननिका प्रम रूप राशि ताका पांचवां भाग प्रमाण विमान संख्यात योजन विस्तारकों धरैं हैं। जैसे सं स्वर्गविषैं बत्तीस लाख विमान ताका पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार विमान संख योजन विस्तार धरैं है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। तातैं परैं अधो ग्रैवेयकविषैं तीन मध्य ग्रैवेयक अठारह उपरिम ग्रैवेयकविषैं सतरह नवानुदिशविषैं एक पंचानुत्तरविषैं एक विमान संख योजन विस्तार धरैं है ॥ ४७८ ॥

सगसगसंखेज्जूणा सगसगरासी असंखवासगया ।
अहवा पंचमभागं चउगुणिदे होंति कप्पेसु ॥ ४७९ ॥
स्वकस्वकसंख्येयोना: स्वकस्वकराशय: असंख्यव्यासगता: ।
अथवा पंचमभागे चतुर्गुणिते भवंति कल्पेषु ॥ ४७९ ॥

अर्थ—स्वकीयस्वकीयसंख्यात योजन व्यास धरैं विमाननिकी संख्याकरि हीन जो अ अपनां बत्तीस लाख विमाननिका प्रमाणरूप राशि सो असंख्यात योजन विस्तार धरै है जैसैं सं र्मविषैं बत्तीस लाख राशिमैंसौं संख्यात व्यास विमानकी संख्या छह लाख चालीस ह घटाएं अवशेष पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरै है। ही अन्यत्र जाननां। अथवा राशिका पांचवां भागकौं चौगुणा किएं कल्पनिविषैं असंख योजन विस्तार धरैं विमाननिकी संख्या हो है। जैसे सौधर्मविषैं राशि बत्तीस लाखका पां भाग छह लाख चालीस हजार ताका चौगुणा पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात यो विस्तार धरै हैं। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ ४७९ ॥

आगैं तिन विमाननिका बाहुल्य कहैं हैं;—

छज्जुगल सेसकप्पे तित्तिसु सेसे विमाणतलबहलं ।
इगिवीसेयारसयं णवणउदिरिणक्कमा होंति ॥ ४८० ॥
षड्युगलेषु शेषकल्पेषु त्रित्रिषु शेषे विमानतलबहलं ।
एकविंशत्येकादशशतं नवनवतिऋणक्रमा भवंति ॥ ४८० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष आनतादि कल्पनिका स्थान अर तीन तीन अधो ग्रैवेयकादिकनिका एक एक स्थान तिनकै ग्रैवेयकनिके तीन स्थान अर अवः अनुदिश अनुत्तरका एक स्थान ऐसैं इन ग्यारह स्थानकनिविषैं विमानतल बाहुल्य कहिए विमानि भूमिकी मोटाई सो आदिविषैं इकईस अधिक ग्यारहसै योजन प्रमाण अर ऊपरि सर्वत्र क्र निन्याणवै निन्याणवै योजन घाटि प्रमाण है। ११२१।१०२२।९२३।८२४।७२५।६२६।५२

[illegible] एक एक [illegible]
[illegible] है ॥ ५१९ ॥

[illegible] तीन करि कहै हैं;—

विंशति तत्थ गोमेदमयशिखर कोमलीयवुत्ता ।
[illegible] कूडा रयणमिकरिषा ॥ ५२० ॥
[illegible] ।
[illegible] कूटा [illegible] ॥ ५२० ॥

अर्थ—तिन [illegible] भाग प्रमाण [illegible] एक [illegible] है । भावार्थ-तिन [illegible] है । [illegible] है । [illegible] ॥ ५२० ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ५२१ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ५२१ ॥

अर्थ [illegible] है ॥ ५२१ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ५२२ ॥

[illegible]

अर्थ [illegible]

कोटि जो धारा कोणका अंतराल सो मानस्तंभकी परिधिके बारहैं भाग प्रमाण है। सो कोश प्रमाण जानना इहां मानस्तंभनिविषै करंडक ऐसैं जाननें ॥ ५२२ ॥

आगैं इन्द्रकी उत्पत्तिके गृहका स्वरूप कहैं हैं;—

पासे उववादिगहं हरिस्स अडवास दीहरुदयजुदं।
दुगरयणसयण मज्झं वरजिणगेहं च बहुकूडं ॥ ५२३ ॥

पार्श्वे उपपादगृहं हरेः अष्टव्यासदैर्घ्योदययुतम्।
द्विकरत्नशयनं मध्यं वरजिनगेहं च बहुकूटम् ॥ ५२३ ॥

अर्थ—तिह मानस्तंभके पासि आठ योजन चौड़ा इतना ही लंबा ऊंचा उपपाद गृह बहुरि तिंह उपपाद गृहविषै दोय रत्नमई शय्या पाईए हैं। इहां इन्द्रका जन्मस्थान है। रे इस उपपाद गृहकै पासि बहुत शिखरनिकरि संयुक्त उत्कृष्ट जिन मंदिर है ॥ ५२३ ॥

अब कल्पवासिनी स्त्रीनिके उत्पत्तिस्थान गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरदेवी सोहम्मीसाण एव जायंते।
तहिं सुद्धदेविसहिया छचउलक्खं विमाणाणि ॥ ५२४ ॥

दक्षिणोत्तरदेव्यः सौधर्मैशान एव जायन्ते।
तत्र शुद्धदेवीसहितानि षट्चतुर्लक्षं विमानानि ॥ ५२४ ॥

अर्थ—दक्षिण उत्तर देवांगना सौधर्म ईशानविषै ही उपजै है। तहां शुद्धदेवीसहित छह अर चारि लाख विमान हैं। भावार्थ—कल्पवासिनी देवांगना सर्व सौधर्मईशान स्वर्गनिविषै उपजै। ऊपरि नाहीं उपजैं हैं तहां दक्षिण दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना तौ सौधर्मविषै उपजै है। बहुरि उत्तर दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना ईशानविषै उपजै है। तहां जिन विमाननिविषै कोऊ देव पाईए केवल देवांगना ही जहां उपजै ऐसे सौधर्मविषै छह लाख विमान है, अर ईशानविषै च्यारि लाख विमान हैं ॥ ५२४ ॥

तद्देवीओ पच्छा उवरिमदेवा णयंति सगठाणं।
सेसविमाणा छचदुपीसल्लक्खा देवदेविसम्मिस्सा ॥ ५२५ ॥

तद्देवीः पश्चादुपरिमदेवाः नयन्ति स्वकस्थाने।
शेषविमानाः षट्चतुर्विंशल्लक्षाः देवदेवीसंमिश्राः ॥ ५२५ ॥

अर्थ—ते देवी तहां सौधर्म वा ईशानविषै उपजै पीछै जिनि देवनिकी नियोगनी होइ ते परिके स्वर्गवासी देव अपने अपने ठिकाने लेइ जाइ है। बहुरि अवशेष सौधर्मविषै छब्बीस लाख विमान अर ईशानविषै चौईस लाख विमान ते देवदेवी संमिश्र है। तहां देव भी उपजै है र देवांगना भी उपजै है ॥ ५२५ ॥

अब कल्पवासीनिविषै प्रवीचारको दिखावै हैं;—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य वायें फासे य रूव सद्दे य।
चित्तेवि य पविचारा अप्पविचारा दु अहमिंदा ॥ ५२६ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च काये स्पर्शे च रूपे शब्दे च।
चित्तेपि च प्रवीचारा अप्रवीचारा हि अहमिंद्राः ॥ ५२६ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्कनिविषै काय, स्पर्श, रूप, शब्द, मनविषै प्रवीचार है। बहुरि अहमिंद्र अप्रवीचार हैं। **भावार्थ**–प्रवीचार नाम कामसेवनका है सो सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ कायकरि प्रवीचार है। जैसैं मनुष्य काम सेवन करै है तैसैं देव देवांगना तहां कामसेवन करैं हैं। बहुरि ऊपरि दोय स्वर्गनिविषै स्पर्शकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर अंग स्पर्श करि तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै रूपकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर रूप देखने हीं करि तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै शब्दकरि प्रवीचार है। देवदेवांगनाकै परस्पर शब्द सुननेंकीर ही तृप्ति हो हैं। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै मनकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर मनका परिणमनहीतैं तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि ग्रैवेयकादि विषै अहमिंद्र हैं ते अप्रवीचार हैं-काम सेवन रहित हैं ॥ ५२६ ॥

अब इस कथनकै अनंतरि वैमानिक देवनिकै विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञानका विषय गाथा दोयकरि कहै हैं;–

दुसु दुसु तिचउक्केसु य णवचोद्दसगे विगुव्वणा सत्ती।
पढमखिदीदो सत्तमखिदिपेरंतो त्ति अवही य ॥ ५२७ ॥
द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च नवचतुर्दशसु विकुर्वणा शक्तिः।
प्रथमक्षितितः सप्तमक्षितिपर्यंतं इति अवधिश्च ॥ ५२७ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क अर नव चौदहनिविषै वैक्रियक शक्ति प्रथम पृथ्वीतैं सातवी पृथ्वी पर्यंत है अर ऐसैंही अवधि ज्ञानका विषय है। **भावार्थ**–अधो दिशाविषै विक्रिया करि जहां पर्यंत गमनादि करनेंकी शक्ति है बहुरि अवधिज्ञान करि जहापर्यंत पदार्थ जाननेंकी शक्ति है सो दोऊ क्षेत्र कल्पवासीनिकै समान है। तातैं दोऊनिका एकट्ठा वर्णन कीजिए है। सो विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञान सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ प्रथमनरकपृथ्वी पर्यंत है। दोय स्वर्गनिविषै दूसरी नरकपृथ्वी पर्यंत है। च्यारि स्वर्गनिविषै तीसरी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै चौथी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै पांचवीपर्यंत, नव ग्रैवेयकनिविषै छठी पर्यंत अनुदिश अनुत्तर चौदह विमाननिविषै सातवी नरकपृथ्वी पर्यंत जानना। बहुरि ऊपरि दिशाविषै अवधिज्ञान कैसैं है सो कहिए हैं। सौधर्मादिकदेव अपनें अपनें स्वर्गके विमानकी जो ध्वजादंड तांई पर्यंत अवधिकरि देखै है ऊपरि न देखै हैं। बहुरि नव अनुदिशवासी देव ते अपने अपनां विमानका शिखरतैं नीचे यावत् नीचला वात तनुवात वलय है तहां पर्यंत किछु घाटि चौदा राजू लंबी एक राजू चौड़ी ऐसी सर्व लोक नाड़ीकौं अवधि करि देखै है ॥ ५२७ ॥

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा।
सक्खेत्ते य सकम्मे रूवगदमणंतभागं च ॥ ५२८ ॥
सर्वां च लोकनाडीं पश्यंति अनुत्तरेषु ये देवाः।
स्वक्षेत्रे च स्वकर्मे रूपगतमनंतभागं च ॥ ५२८ ॥

अर्थ—पंच अनुत्तर विमाननिविषै जे देव हैं ते सर्व लोकनाली कहिए त्रसनाली ताकौं अवधि करि देखै हैं । बहुरि अवधिके जाननेका विधान कहिए हैं । अपने क्षेत्रविषै एक प्रदेश घटावनां तब अपने कर्म्मविषै एक बार ध्रुवहारका भाग दैनां यावत सर्व प्रदेश समाप्त होइ तावत ऐसे करनां । इस कथनकरि अवधिज्ञानका विषय भूत द्रव्यका भेद कह्या । इस अर्थकौं विषद करै हैं । वैमानिक देवनिकै अपनां अपनां जेता जेता अवधि ज्ञानका विषय भूत क्षेत्र कह्या ताके जेते जेते प्रदेश होंहि ते एकत्र स्थापन करनें । बहुरि अपनें अपने सत्तारूप कार्म्मोण स्कंधके परमाणूनिविषै जे परमाणू कर्म्मरूप न परणए स्वभावही करि जे तिस कार्मोण स्कंधविषै एक स्कंधरूप होइ परणए ऐसे एक एक कर्म्म परमाणूका साथि अनंत अनंत परमाणू हैं। तिनका नाम विस्रसोपचय कहिए । तिनकरि रहित अवधिज्ञानावरणरूप जे परमाणु परणाए हुए सत्ताविषै जेते तिष्ठै हैं तिनको एकत्र स्थापन करनें । तहां तिस अवधिज्ञानावरण द्रव्यकौं एक बार सिद्ध राशिकै अनंतवें भाग प्रमाण ध्रुवहार है ताका भाग दैनां । तब तिस क्षेत्रके प्रदेश प्रमाणमैं-सौं एक प्रदेश घटावनां बहुरि भाग दीएं जो लब्धराशि भया ताकौं दूसरीवार ध्रुवहारका भाग दैनां तब दूसरा प्रदेश तिस क्षेत्र प्रदेश प्रमाणमैंसौं घटावनां । ऐसैं जितनें तिस अवधिज्ञानके विषय-भूत क्षेत्रके जेते प्रदेश होंहि तितनी बार तिस अवधिज्ञानावरणके परमाणूनिके प्रमाणकौं भाग देतें देतें अंत विषै जेते परमाणूनिका प्रमाणरूप लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिका स्कंधकौं सो वैमानिक देव जानैं हैं । ताका उदाहरण-सौधर्म्म युगलविषै अवधि क्षेत्र ऐसा ३ इहां

१४३।२

घनलोककी सहनानी ऐसी ताकौं तीनसै तियालीसका भाग दिएं घनरूप एक राजू आया ताकौं ड्यौढ़ गुणा करनेकौं आगै सहनानी ३ बहुरि अवधि ज्ञानावरण द्रव्य ऐसा स १२ इहां उत्कृष्ट समय

७।४

प्रबद्धकी सहनानी ऐसी स ७ ताकौं किंचिदून ड्यौढ गुण हानि करि गुणनेकी सहनानी ऐसी १२-तामैं सातकर्म्मनिका भाग करनेकौं सातका भाग अर एक ज्ञानावरणविषै सर्व घातियाका द्रव्य स्तोक जाणि न गिणिकरि देशघातियाविषै एक अवधिज्ञानावरणका ग्रहणकै अर्थि च्यारिका भाग जाननां । तहां अवधिक्षेत्रविषै एक प्रदेश घटाएं ऐसा ३ इहां उपरि एक घटावनांकी

१४३।२

सहनानी ऐसी १ बहुरि अवधि द्रव्यकौं एकवार ध्रुवहारका भाग दिएं ऐसा स ७१२-इहां

७।४।९

ध्रुवहारकी सहनानी नवका अंक है । ऐसैं एक एक बार ध्रुवहारका भाग अवधि द्रव्यकौं देइ देइ एक एक प्रदेश अवधि क्षेत्रमैंस्यौं घटावतैं जहां सर्व अवधि क्षेत्रके प्रदेश समाप्त होइ तहां जो अंतविषै अवधि द्रव्यकौं भाग देतैं देतैं जेते परमाणू लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिके स्कंधकौं सौधर्म युगल वासी देव जानै हैं यातैं सूक्ष्म स्कंधकौं न जानैं, स्थूल स्कंध जाननैंका किछू विरोध नाहीं । ऐसैं ही अन्य वैमानिक देवनिकैं अवधिका विषयभूत द्रव्यका प्रमाण जाननां ॥ ५२८ ॥

आगैं वैमानिक देवनिके जनम मरणविषै अंतराल कहै हैं,—

दुसुदुसु तिचउक्केसु य सेसे जणणंतरं तु चवणे य ।
सत्तदिण पक्ख मासं दुगचदुछम्मासगं होदि ॥ ५२९ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च शेषे जननांतरं तु च्यवने च ।
सप्तदिनानि पक्षं मासं द्विकचतुःषण्मासकं भवति ॥ ५२९ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क शेष इनविर्षे जननांतर अर च्यवनें कहिए मरणविर्षे अं सो सात दिन पक्ष मास दोय च्यारि छह मास प्रमाण है । भावार्थ—जेते काल किसीहीका जन्म तहां न होइ ताकौं जननांतर कहिए। बहुरि जेते काल किसीहीका तहां मरन न होइ ताकौं मरनांतर कहिए। सो ए दोऊ उत्कृष्टपनें सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै सात दिन, दोय स्वर्गनिविषै एक पक्ष, च्यारि स्वर्गनिविषै एक मास, च्यारि स्वर्गनिविषै दोय मास, च्यारि स्वर्गनिविषै च्यारि मास, अवशेष ग्रैवेयकादिकनिविषै छहमास प्रमाण जानना ॥ ५२९ ॥

आगे इंद्रादिकनिका उत्कृष्ट अंतर कहै हैं;—

वरिरदुगे छम्मासं इंदमहादेविलोयवालाणं ।
पउ तेत्तीसगुराणं तणुरक्खसमाणपरिसाणं ॥ ५३० ॥

वरिरहं षण्मासं इंद्रमहादेवि लोकपालानाम् ।
चतुः वर्गत्रिंशत्सुराणां तनुरक्षसमानपारिषदानाम् ॥ ५३० ॥

अर्थ—जो विरह कहिए उत्कृष्टपनें मरण भएं पीछैं तीहकी जायगा अन्य जीव [illegible] न आवनेके विरहकालका प्रमाण सो इन्द्र अर इंद्रकी महादेवी अर लोकपाल इनका है विरहकाल छह मास जानि । बहुरि त्रायस्त्रिंशत देव अर आत्मरक्ष अर सामानिक अर पारिषद इनका [illegible] मास विरहकाल जानि ॥ ५३० ॥

आगे [illegible] प्रतिपादन करै हैं;—

ईसाणलांतवच्चुदकप्पोत्ति कमेण होंति कंदप्पा ।
किब्बिसिय आभियोगा सगकप्पजदेवणिदिसहिदा ॥ ५३१ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ५३१ ॥

अर्थ—[illegible]

है। तहां भी अभियोग्य देव ही हो हैं। तातैं उपरि नाहीं उपजैं हैं। ए सर्व अपनें अपनें स्वर्ग-संबंधी जघन्य आयुकरि सहित उपजै हैं ॥ ५३१ ॥

आगैं प्रथम युगलादिविषै स्थिति विशेष कहैं हैं;—

सोहम्म वरं पल्लं वरमुबहिवि सत्त दस य चोद्दसयं।
बावीसोत्ति दुवड्ढी एक्केक्कं जाव तेत्तीसं ॥ ५३२ ॥

सौधर्मे वरं पल्यं अवरं उदधिद्विकं सप्त दश च चतुर्दशकं।
द्वाविंशतिरिति द्विवृद्धिः एकैकं यावत्त्रयस्त्रिंशत् ॥ ५३२ ॥

अर्थ—सौधर्म युगल युगल विषै जघन्य आयु एक पल्य है। उत्कृष्ट आयु प्रत्येक दोय प्रमाण है यातैं उपरि उत्कृष्ट आयु ही कहैं हैं सनतकुमारविषै प्रत्येक सात सागर सागर प्रमाण आयु है। ब्रह्मयुगलविषै प्रत्येक दश सागर प्रमाण आयु है। लांतव युगलविषै प्रत्येक चौदह सागर प्रमाण आयु है। यातैं उपरि बाईस पर्यंत दोय दोयकी वृद्धि है। सो शुक्रयुगलविषै सोलह, सतार युगलविषै अठारह, आनत युगलविषै बीस, आरण युगलविषै बाईस सागर प्रमाण आयु है। बहुरि यातैं उपरि तेतीस पर्यंत एक एककी वृद्धि है सो प्रथमादि नव ग्रैवेयकनिविषै क्रमतैं तेईस चौवीस पचीस छब्बीस सत्ताईस अठाईस गुणतीस तीस इकतीस सागर प्रमाण आयु है, नव अनुदिशविषै बत्तीस सागर आयु है। पंच अनुत्तरविषै तेतीस सागर आयु है ॥ ५३२ ॥

आगैं घातायुष्क सम्यकदृष्टीके पटल पटल प्रति उत्कृष्ट आयु कहैं हैं;—

सम्मे घादेऊणं सायरदलमहियमा सहस्सारा।
जलहिदलमुडुवराऊ पडलं पडि जाण हाणिचयं ॥ ५३३ ॥

सम्यचि घातायुषि सागरदलमधिकमा सहस्रारात्।
जलधिदलं ऋतुवरायुः पटलं प्रति जानीहि हानिचयम् ॥ ५३३ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी होइ अर घातायुष्क होइ तौ तिस जीवके अपनें अपनें स्वर्गके पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतैं अंतरमुहूर्त घाटि आधा सागर प्रमाण अधिक आयु हो है। जैसैं सौधर्म युग्मविषै घातायुष्क सम्यग्दृष्टीका उत्कृष्ट आयु अंतरमुहूर्त घाटि अढाई सागर प्रमाण होइ। ऐसैं सतार सहस्रार युगल पर्यंत जाननां। तीह सहस्रारतैं उपरि घातायुष्ककी उत्पत्ति नाहीं है, **भावार्थ**—जिस जीवनें पूर्व भवविषै पहलैं आयुका बंध अधिक किया था पीछैं परणामनिके वशतैं ताकौं घटाइ थोड़ा आणि राख्या तिस जीवको घातायुष्क कहिए। तातैं आयुका घात दोय प्रकार है—एक अपवर्तन घात एक कदली घात। तहां बध्यमान आयुका घटावनां सो अपवर्तन घात है। बहुरि उदीयमान आयुका घटावनां सो कदली घात है। सो इहां कदली घात तौ संभवै नाहीं तातैं अपवर्तन घातहीका ग्रहण किया है। सो ऐसा घातायुष्क होय अर सम्यग्दृष्टी होय तौ तिस जीवकें पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतैं आध सागर अधिक आयु सहस्रार पर्यंत होइ। बहुरि सौधर्मयुगलका प्रथम पटल ऋतुनामा इंद्रक तीहविषै उत्कृष्ट आयु आध सागर प्रमाण है। सो आदि जानना। और अन्य युगलनिविषै पूर्वयु-

गछका उत्कृष्ट आयु सो आदि जानना। बहुरि अपना अपना उत्कृष्ट आयु सो अंत जानना। यहाँ सौधर्म युगलविषै तो अपना अपना पटलका प्रमाण सो गछ जानना, अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका उत्कृष्ट आयु ताकौं आदि ग्रहण किया तातैं अपनें अपनें पटल प्रमाणतैं एक अधिक प्रमाण गछ जानना। ऐसैं जांनि आदी अंते सुद्धे वडिहदे इच्छिदे हाणिचयं, इस सूत्र करि पटल पटल प्रति हानिचय जानहु। सो कैसैं ? घातायुष्क अपेक्षा सौधर्म युगलादि आठ युगलनिविषै क्रमतैं अढाई साढा सात दश साढा चौदह साढासोळह साढा अठारह बीस सागर प्रमाण आदि है। बहुरि अढाई साढा सात साढा दश साढा चौदह साढा सोळह साढा अठारह बीस बाईस सागर प्रमाण अंत है। सो अंतमैंसौ आदि घटाइ शुद्ध किएं दोय पांच तीन च्यारि दोय दोय दोय सागर शेष रहे। इनकौं एक घाटि गछका भाग देनां सो सौधर्म युगलविषै तो इकतीस प्रमाणमैंसौं एक घटाएं तीस अर अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका अंत पटलका उत्कृष्ट आयु ग्रहण किया। तातैं स्वस्वपटल प्रमाण सात च्यारि दोय एक एक तीन तीनका भाग दिएं इहाँ ... है। पटल पटल प्रति इतनां इतनां आयु उपरिकी अपेक्षा घटती नीचाकी अपेक्षा बधती है। ... हानिचय है। सो सौधर्म युगलविषै दोयका तीसवां भाग, सनत्कुमार युगलविषै ... चौदवां भाग, ब्रह्मयुगलविषै तीनका चौथा भाग, लांतव युगलविषै दोय, शुक्र युगलविषै दोय, ... युगलविषै दोय, आनत युगलविषै ..., आरण युगलविषै दोयका तीसरा ... हानिचय जानि तिस तिस पटल प्रति आयु प्रमाण ल्यावना। सो सौधर्म युगलका ... आयु है। यातैं हानिचय दोयका तीसवां भाग समान छेदि करि मिलें ... तीसरा भाग प्रमाण द्वितीय पटलविषै आयु हो है। यातैं हानिचय मिलाएं ... तीसरा भाग प्रमाण तृतीय पटलविषै आयु हो है। ऐसैं ही क्रमतैं ... अढाई सागर आयु हो है। यातैं सनत्कुमार युगलका हानिचय ... चौदवां ... प्रथम पटलविषै ... सागरका चौदवां भाग प्रमाण आयु हो है ... साढा सात सागर प्रमाण आयु हो है। यातैं ब्रह्मयुगलका हानिचय ... प्रथम पटलविषै आयु हो है। ऐसैं क्रमतैं ... साढा दश ... आयु हो है। ... आरण युगलका ... आयुका ... करना। ...

[illegible]

आगें लौकांतिक देवनिकै अवस्थानका ठिकाना कहैं हैं;—

णिवसंति बम्हलोयस्संते लोयंतिया सुरा अट्ठ।
ईसाणादिसु अट्ठसु वट्टेसु पइण्णएसु कमा॥ ५३४॥
निवसंति ब्रह्मलोकस्यांते लौकांतिकाः सुरा अष्ट।
ईशानादिषु अष्टसु वृत्तेषु प्रकीर्णकेषु क्रमात्॥ ५३४॥

अर्थ—ब्रह्मलोकका अंतविषै आठ कुलभेद संयुक्त लौकांतिक देव बसे हैं। भाव ब्रह्मयुगलका मंदिरविषै जो अंतस्थान तहां लौकांतिक देवनिकै विमान हैं। बहुरि तहां तै लौ देव ईशानादि आठ दिशानिविषै गोल जे प्रकीर्णक विमान तिनविषै यथाक्रम बसैं हैं॥ ५३

आगें तिन अष्ट कुलनिकी संज्ञा अर संख्या दोय गाथाकरि कहैं हैं;—

सारस्सद आइच्चा सत्तसया सगजुदा य वण्हरुणा।
सगसगसहस्समुवरिं दुसु दुसु दोदुगसहस्सवड्ढिकमा॥५३५॥
सारस्वता आदित्याः सप्तशतानि सप्तयुतानि च वह्न्यरुणाः।
सप्तसप्तसहस्रमुपरि द्वयोर्द्वयोः द्विद्विसहस्रवृद्धिक्रमः॥ ५३५॥

अर्थ—सारस्वत अर आदित्य तौ प्रत्येक सात युक्त सातसैं प्रमाण हैं। बहुरि वह्नि अ प्रत्येक सात अधिक सात हजार प्रमाण हैं। तातैं उपरि दोय स्थान विषै दोय दोय हजार वृद्धिका अनुक्रम जाननां॥ ५३५॥

तो गद्दतोयतुसिदा अव्वाबाहा अरिट्ठसण्णा य।
सेढीबद्धे रिट्ठा विमाणणामं च तच्चेव॥ ५३६॥
ततो गर्दतोयतुषिता अव्याबाधा अरिष्टसंज्ञाश्च।
श्रेणीबद्धे अरिष्टा विमाननामं च तदेव॥ ५३६॥

अर्थ—तहां पीछैं गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ ऐसी संज्ञाधारक ॥ भावार्थ—लौकांतिक देव आठ कुल भेद संयुक्त हैं। सारस्वत १ आदित्य १ वह्नि १ १ गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ इन देवनिका अनुक्रमतैं प्रमाण सातसै सातसैं सात, सात हजार सात, सात हजार सात, नव हजार नव, नव हजार नव, ग्यारह हजार ग्यारह हजार ग्यारह ११०११ जाननां। इन विषै अरिष्ट हैं ते श्रेणी बद्ध विमान विषै तिष्ठै हैं। विशेष जाननां। अवशेष गोल प्रकीर्णक विमाननिविषैही तिष्ठै है। बहुरि जे कुलके नाम तेई विमाननिके नाम हैं॥ ५३६॥

आगें सारस्वत आदिकनिकैं दोय दोयका अंतराल विषै तिष्ठते जे कुल तिनके नाम तिन देवनिकी संख्या गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

सारस्सदआइच्चप्पहुदीणं अंतरालए दो दो।
जाणग्गिसूरचंदयसच्चाभा सेयखेमकरा॥ ५३७॥
सारस्वतादित्यप्रभृतीनां अंतराले द्वे द्वे।

जानीहि अग्निसूर्यचंद्रकसत्याभाः श्रेयःक्षेमकराः ॥ ५३७ ॥

अर्थ—सारस्वत आदित्य आदिकनिके आठ अंतरालनिविषें दोय दोय कुल जानहु। तिन कुल कौन सो कहै हैं। अग्न्याभ १ सूर्याभ १ चंद्राभ १ सत्याभ १ श्रेयस्कर १ क्षेमंकर १ ॥ ५३७ ॥

वसहिट्ठकामधरणिम्माणरजा भिगंतअप्पमरुवादी।
रक्खिदमरुवसुअस्सविसा इमरुणसम पुव्वचयमुवरिं ॥ ५३८ ॥

वृषभेष्टकामधरनिर्माणरजोदिगंतात्ममर्यादिः।
रक्षितमरुद्वस्वश्वविश्वाः प्रथमअरुणसमाः पूर्वचयमुपरि ५३८

अर्थ—वृष भेष्ट १ कामधर १ निर्माण रजा १ दिगंतरक्षित १ आत्मरक्षित १ सर्व रक्षित १ मरुत १ वसु १ अश्व १ ऐसें ए अपने अपने कुल नामकरि संयुक्त देव प्रथम अरुण समान संख्या धरैं हैं सात हजार सात हैं। बहुरि इस प्रमाणके उपरि पूर्वोक्त अधिक दोय हजार प्रमाण चय मिलैं सूर्यामदि कनिकी संख्या हो है। भावार्थ—सारस्वत अर आदिभके विमानिके बीचि अग्न्याभ अर सूर्याभके विमान है। बहुरि आदित्य अर वह्नि विमाननिके बीचि चंद्राभ सत्याभके विमान हैं। बह्नि अर अरुणके विमाननिके बीचि श्रेयस्कर क्षेमंकरके विमान हैं। ऐसैं ही अन्य अंतरालनिविषै दोय दोय कुलनि विमान जाननें। सो आठ अंतरालनि विषै सोल्ह कुल भए। तहां अग्न्याभ देव सात हजार सात सूर्याभनव हजार नव हैं। चंद्राभ ग्यारह हजार ग्यारह हैं। सत्याभ तेरह हजार तेरह हैं। ऐसें क्रमतें आगैं विश्व पर्यंत दोय हजार दोय वधती प्रमाण क्रमतें जानना ॥ ५३८ ॥

आगैं कहे जु लौकांतिक देव तिनका विशेष स्वरूप गाथादोयकरि कहै हैं;—

ते हीणाहियरहिया विसयविरत्ता य देवरिसिणामा।
अणुपिक्खदत्तचित्ता सेससुराणच्चणिज्जा हु ॥ ५३९ ॥

ते हीनाधिकरहिता विषयविरक्ताश्च देवर्षिनामानः।
अनुप्रेक्षादत्तचित्ताः शेषसुराणामर्चनीया हि ॥ ५३९ ॥

अर्थ—ते लौकांतिक देव परस्पर हीन अधिकता करि रहित हैं। सर्व समान हैं। बहुरि विषयनिविषै विरक्त हैं। बहुरि देवतानिविषै ऋषि समान हैं। तातैं देव ऋषि है नाम जिनका ऐसे हैं। बहुरि अनित्या दि अनुप्रेक्षानिका चिंतवनविषै दिया है चित्त जिननैं ऐसे हैं। बहुरि अवशेष इंद्रादिक देवनिकरि पूजनीक हैं ॥ ५३९ ॥

चोद्दसपुव्वधरा पडिवोहपरा तित्थयरविणिक्कमणे।
एदेसिमट्ठजलहिट्ठिदी अरिट्ठस्स णव चेव ॥ ५४० ॥

चतुर्दशपूर्वधराः प्रतिबोधपराः तीर्थंकरविनिःक्रमणे।
एतेषामष्टजलधिः स्थितिः अरिष्टस्य नव चैव ॥ ५४० ॥

अधो तीन ग्रैवेयकविषै अढ़ाई हाथ मध्य तीन ग्रैवेयकविषै दोय हाथ उपरिम तीन ग्रैवेयकविषै ड्योढ़ हाथ शेष अनुदिश अनुत्तरविषैं एक हाथ है ॥ ५४३ ॥

आगैं तिनकै उश्वास अर आहारका काल निरूपै हैं;—

पक्खं वाससहस्सं सगसगसायरसलाहि संगुणियं ।
उस्सासाहाराणं कमेण माणं विमाणेसु ॥ ५४४ ॥

पक्षो वर्षसहस्रं स्वकस्वकसागरशलाभिः संगुणितं ।
उच्छ्वासाहाराणां क्रमेण मानं विमानेषु ॥ ५४४ ॥

अर्थ—पक्ष कहिए पंद्रह दिन अर हजार वर्ष सोहम्मवरे पल्लं वरमुवहि वि सत्त इत्यादि पूर्वोक्त गाथाविषै जितनां जितनां सागर प्रमाण आयु कह्या तितनां प्रमाण सागर शलाकानिकरि गुण्या हुवा क्रम करि विमाननिविषै उश्वासका प्रमाण हो है । तहां उदाहरण—सौधर्मादिकीनै आयु दोय सागर है। तहां दोय पक्षके अंतराल लिएं उश्वास अर दोय हजार वर्षके अंतराल लिएं आहार है । ऐसैं ही अन्यत्र भी जाननां ॥ ५४४ ॥

आगैं गुणस्थानकौं आश्रय करि देवगतिविषै जे उपजै हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहै हैं;—

णरतिरिय देसअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्ति णिग्गंथा ।
ण य अयद देसमिच्छा गेवेज्जंतोत्ति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

नरतिर्यंचः देशायता उत्कृष्टेनाच्युतांतं निर्ग्रंथाः ।
न च अयता देशमिथ्या ग्रैवेयांतं इति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

अर्थ—असंयत वा देश संयत मनुष्य अर तिर्यंच उत्कृष्टपनें अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नांही । बहुरि द्रव्य करि निर्ग्रंथ अर भाव करि असंयत वा देश संयत वा मिथ्यादृष्टी मनुष्य ते उपरिमग्रैवेयकपर्यंत जाय हैं । तातैं ऊपरि नांही ॥ ५४५ ॥

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा ।
सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं ॥ ५४६ ॥

सर्वार्थांतं सुदृष्टिः महाव्रती भोगभूमिजा सम्यंचः ।
सौधर्मद्विकं मिथ्या भवनत्रयं तापसाः च वरं ॥ ५४६ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी द्रव्य वा भाव करि महाव्रती मनुष्य सो सर्वार्थसिद्धिपर्यंत जाय है । बहुरि भोगभूमिया सम्यग्दृष्टी [illegible] सुधर्म [illegible] है । तातैं ऊपरि नांही । अर भोगभूमि-या मिथ्यादृष्टी भवनवासी व्यन्तर [illegible] प्रम [illegible] ऊपरि नांही । बहुरि पंचाग्नि आदि-कके साधक जे तापसी ते उत्कृ [illegible] । तातैं ऊपरि नांही ॥ ५४६ ॥

चरया य [illegible]

चरकाश्च परिव्राजा ब्रह्मोच्युतपदांतं आजीवाः।
अनुदिशानुत्तरतः च्युता न केशवपदं न यान्ति ॥ ५४७ ॥

अर्थ—नग्न अंड है लक्षण जिनका ऐसे चरक ते अर एक दंडी त्रिदंडी आदि लक्षण धरें ऐसे परिव्राजक संन्यासी ते उत्कृष्टपनै ब्रह्मकल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांहीं। बहुरि कांजी आदिकके भोजन करनहारे ऐसे आजीव ते उत्कृष्टपनै अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांही। अब देवगतितैं चय करि जे उपजै तिनका स्वरूप कहैं हैं। अनुदिश अर अनुत्तर विमानतैं चयकर केशव पद कहिए नारायण प्रतिनारायण पदकों प्राप्त न हो है ॥ ५४७ ॥

आगैं जे जीव देवगतितैं चय करि निर्वाण ही जाय तिनके नाम कहैं हैं;—

सोहम्मो वरदेवी सलोगवाला य दक्खिणमरिंदा।
लोयंतिय सव्वट्ठा तदो चुदा णिव्वुदिं जंति ॥ ५४८ ॥

सौधर्मो वरदेवी सलोकपालश्च दक्षिणामरेंद्राः।
लौकांतिकाः सर्वार्थाः ततश्च्युता निर्वृतिं यांति ॥ ५४८ ॥

अर्थ— सौधर्म नामा इन्द्र बहुरि ताही की शची नामा पट्ट देवी अर ताहीके सोम आदि च्यारि लोकपाल बहुरि सनत्कुमारादिक दक्षिण इन्द्र बहुरि सर्व लौकांतिक देव बहुरि सर्व सर्वार्थसिद्धिविषै उपजे देव ए सर्व तहांस्यौं चय करि मनुष्य होय नियमकरि निर्वाणकौं प्राप्त हो हैं ॥ ५४८ ॥

आगैं तेरसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकों जे न प्राप्त होहिं तिनके नाम कहैं हैं;—

णरतिरियगदीहिंतो भवणतियादो य णिग्गया जीवा।
ण लहंते ते पदविं तेवट्ठिसलागपुरिसाणं ॥ ५४९ ॥

नरतिर्यग्गतिभ्यो भवनत्रयाच्च निर्गता जीवाः।
न लभन्ते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणाम् ॥ ५४९ ॥

अर्थ—मनुष्यगति अर तिर्यंच गतितैं अर भवनत्रिकतैं निकसिकरि आए जे जीव हैं ते तरेसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकों न पावैं हैं। चौबीस तीर्थंकर बारह चक्रवर्ती नव नारायण नव बलभद्र इनकौं तेरसठिशलाका पुरुष कहिए हैं ॥ ५४९ ॥

आगैं देवनिकी उत्पत्तिका स्वरूप कहैं है;—

सुहसयणग्गे देवा जायंते दिणयरोव्व पुव्वणगे।
अंतोमुहुत्त पुण्णा सुगंधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुखशयनाग्रे देवा जायंते दिनकर इव पूर्वनगे।
अंतर्मुहूर्ते पूर्णा सुगंधिसुखस्पर्शशुचिदेहाः ॥ ५५० ॥

अर्थ—जैसे पूर्वाचल विषैं सूर्य उदय होय तैसैं अंतर मुहूर्त विषैं छह पर्याप्तिनिकरि पूर्ण सुगंध सुखरूप स्पर्श और पवित्र है शरीर जिनका ऐसे ते देव सुखरूप शय्याके ऊपरि जन्मैं हैं ॥ ५५० ॥

आगें तहां उपजत भए देव तिनके उपजनेंके अनंतरि कार्य विशेष हो है सो गाथा दोय करि कहै हैं;—

आणंदतूरजयथुदिरवेण जम्मं वियुज्झ सं पत्तं ।
दट्ठूण सपरिवारं गयजम्मं ओहिणा णिच्चा ॥ ५५१ ॥

आनंदतूर्यजयस्तुतिरवेण जन्म विबुध्य सं प्राप्तं ।
दृष्ट्वा सपरिवारं गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

अर्थ—जनम होतैं भया जे आनंदरूप वाजित्रनिका शब्द अर जयकारादिस्तुति रूप शब्द तिन करि यहु देवरूप जनम है ऐसा जांनि बहुरि प्राप्त भया जो विभव अर अपनां परिवार ताहि देखि बहुरि अवधि ज्ञान करि पूर्व गत पर्यायोंको जानि ॥ ५५१ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

धम्मं पसंसिदूण ण्हादूण दहे भिसेयलंकारं ।
लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्दिट्ठी ॥ ५५२ ॥

धर्म प्रशंस्य स्नात्वा ह्रदे अभिषेकालंकारं ।
लब्ध्वा जिनाभिषेकं पूजां कुर्वंति सद्दृष्टयः ॥ ५५२ ॥

अर्थ—धर्मनैं प्रशंसि करि जल भरे तद्द्रहविषैं स्नान करि पट्टरूप अभिषेक अर अलंकारकौं पाइ सम्यग्दृष्टि जीव स्वयमेव जिनदेवका अभिषेक अर पूजा ताहि करै हैं ॥ ५५२ ।

सुरबोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वंति ।
सुहसायरमज्झगया देवा ण विदंति गयकालं ॥ ५५३ ॥

सुरबोधिता अपि मिथ्या पश्चाज्जिनपूजनं प्रकुर्वंति ।
सुखसागरमध्यगता देवा न विदंति गतकालं ॥ ५५३ ॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टी देव अन्य देवनिकरि संबोधे हुए भी पीछे जिन पूजनकौं करैं हैं। ते सर्व ही सुखसागरके मध्य प्राप्त हुवा थका गए-कालकौं न जानैं हैं ॥ ५५३ ॥

आगें तिन देवनिके समीचीन कार्य कहैं हैं;—

महपूजासु जिणाणं कल्लाणेसु य पजंति कप्पसुरा ।
अहमिंदा तत्थ ठिया णमंति मणिमउलिघडिदकरा ॥ ५५४ ॥

महापूजासु जिनानां कल्याणेषु च प्रयांति कल्पसुराः ।
अहमिंद्राः तत्र स्थिता नमंति मणिमौलिघटितकराः ॥ ५५४ ॥

अर्थ—जिन तीर्थंकर देव तिनकी महा पूजा अर तिनका पंच महाकल्याण तिनविषैं कल्पवासी देव जावैं हैं। बहुरि अहमिंद्र देव तहां अपनें स्थान ही विषै मणिमई मुकुटनितैं लगाए हैं हाथ जिनूंनैं ऐसे होत संते नमस्कार करैं हैं ॥ ५५४ ॥

आगैं देवादिककी संपदा किनकैं हो है सो कहैं हैं;—

विविहतवरयणभूसा णाणसुची सीलवत्थसोम्मंगा।
जे तेसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य ॥ ५५५ ॥
विविधतपोरत्नभूषाः ज्ञानशुचयः शीलवस्त्रसौम्यांगाः।
ये तेषामेव वश्या सुरलक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मीश्च ॥ ५५५ ॥

अर्थ—जे जीव विविध तपश्चरण करि आभूषित हैं बहुरि ज्ञान करि पवित्र हैं। बहुरि शील रूप वस्त्र संयुक्त सौम्य है अंग जिनका ऐसे हैं। तिन ही जीवनिकैं देव लक्ष्मी अर मुक्ति लक्ष्मी वश्य हो है ॥ ५५५ ॥

अब अष्टम भूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

तिहुवणमुद्धारूढा ईसिपभारा धरट्ठमी रुंदा।
दिग्घा इगिसगरज्जू अडजोयणपमिदबाहल्ला ॥ ५५६ ॥
त्रिभुवनमूर्धारूढा ईषत् प्राग्भारा धराष्टमी रुंद्रा।
दीर्घा एकसप्तरज्जू अष्टयोजनप्रमितबाहल्या ॥ ५५६ ॥

अर्थ—तीन भुवनका मस्तक करि आरूढ अर ईषत्प्राग्भार है नाम जाका ऐसी आठवीं पृथ्वी है। ताकी चौड़ाई एक राजू लंबाई सात राजू मोटाई आठ योजन प्रमाण है। भाव यहु—लोकका अंतपर्यंत है अर आठ योजन मोटी है ॥ ५५६ ॥

आगैं तीह आठवीं पृथ्वीविषै तिष्ठता सिद्धक्षेत्रका स्वरूपकौं गाथा दोय करि कहैं हैं;—

तम्मज्झे रूप्पमयं छत्तायारं मणुस्समहिवासं।
सिद्धक्खेत्तं मज्झडवेहं कमहीण वेहुलियं ॥ ५५७ ॥
तन्मध्ये रूप्यमयं छत्राकारं मनुष्यमहीव्यासं।
सिद्धक्षेत्रं मध्येऽष्टवेधं क्रमहीनं बाहुल्यम् ॥ ५५७ ॥

अर्थ—तीह आठवी पृथ्वीकै मध्य रूपमई श्वेत छत्रकै आकारि मनुष्य क्षेत्र समान गोल पैंतालीस लाख योजन प्रमाण व्यासकौं धरैं सिद्ध क्षेत्र है। ताकी मोटाई मध्यविषै आठ योजन प्रमाण है। अन्यत्र सर्वत्र अंत पर्यंत क्रमतैं घटती घटती मोटाई है। भाव यहु—जैसैं पृथ्वीविषै शिला हो है तैसैं आठवीं पृथ्वीविषै बीचिमैं सिद्धक्षेत्र रूप सुपेद शिला है। सो बीचिमैं आठ योजन मोटी है क्रमतैं घटती घटती अंतविषै थोडी मोटी है। सो उपरि तल तौ समानरूप है नीचैं घाटि बाधि है ऐसा जानना ॥ ५५७ ॥

उत्ताणट्ठियमंते पत्तं व तणु तदुवरि तणुवादे।
अट्ठगुणड्ढा सिद्धा चिट्ठंति अणंतसुहतित्ता ॥ ५५८ ॥
उत्तानस्थितमंते पात्रमिव तनु तदुपरि तनुवाते।
अष्टगुणाढ्याः सिद्धाः तिष्ठंति अनंतसुखतृप्ताः ॥ ५५८ ॥

अर्थ—अंतविषै तनुरूप है थोड़ा मोटा है। जैसैं ऊंचा औंधानिष्ठा पात्र कहिए कटोरा तीह समान है। बहुरि तीह सिद्धक्षेत्रकै उपरिवर्ती जो तनुवात तिहविषै सम्यक्त्वादि अष्ट गुणनि करि संपूर्ण अनंत सुख करि तृप्त ऐसे सिद्ध भगवान तिष्ठै हैं ॥ ५५८ ॥

आगें अनंत सुख करि तृप्तपणाविषै दृष्टांत दोय गाथानि करि कहै हैं;—

एयं सत्थं सव्वं सत्थं वा सम्ममेत्थ जाणंता ।
तिव्वं तुस्संति णरा किण्ण समत्थत्थतच्चण्हू ॥ ५५९ ॥

एकं शास्त्रं सर्वं शास्त्रं वा सम्यगत्र जानंतः ।
तीव्रं तुष्यंति नराः किं न समस्तार्थतत्त्वज्ञाः ५५९ ॥

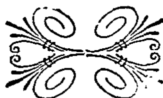
अर्थ—एक शास्त्र वा सर्व शास्त्रकों सम्यक प्रकार इस लोकविषै जानते संते मनुष्य तीव्र संतोष पावै हैं। तौ समस्त पदार्थनिका तत्त्वस्वरूपके ज्ञायक सिद्ध ते कैसें संतोष न पावैं ! किंतु पावैं ही पावैं । भावार्थ—सुख है सो सम्यग्ज्ञानजनित है। इहां संसारविषै भी सम्यग्ज्ञान होतें सुख हो है । तौ सिद्ध अनंत ज्ञानवान हैं तिनकैं सुख होय ही होइ ॥ ५५९ ॥

चक्किकुरुफणिसुरिंदेसहमिंदे जं सुहं तिकालभवं ।
तत्तो अणंतगुणिदं सिद्धाणं खणसुहं होदि ॥ ५६० ॥

चक्रिकुरुफणिसुरेंद्रेषु अहमिंद्रे यत् सुखं त्रिकालभवं ।
ततो अनंतगुणितं सिद्धानां क्षणसुखं भवति ॥ ५६० ॥

अर्थ—चक्रवर्तीका सुखतैं भोगभूमियांके सुख अनंत गुणा है। तातैं धरणेन्द्रकै सुख अनंत गुणा है । तातैं देवेन्द्रकै सुख अनंतगुणा है ।तातैं अहमिंद्रनिकैं सुख अनंत गुणा है । ऐसें इनितैं जो अनंत अनंत गुणा सुख है । तींह अतीत अनागत वर्तमानकालसंबंधी सर्व सुखकों एकठा करि तातैं सिद्धनिकैं क्षणमात्र करि उपज्या सुख अनंत गुणा है । सो यहु भी उपदेश मात्र कथन है। बहुरि औरनिकै सुख साकुल है सिद्धनिकै सुख निराकुल है । तातैं सो सुख वचन अगोचर है जानना । इति वैमानिकदेवनिका अधिकार समाप्त भया ॥ ५६० ॥

इति श्रीनेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें पांचमां वैमानिकदेवनिके लोकका अधिकार समाप्त भयाः ॥ ५ ॥



॥ अथ नरतिर्यग्लोकाधिकार ॥ ६ ॥

अब यातैं परैं पाया है अवसर जानैं ऐसा मनुश लोक तिर्यक लोकका निरूपण करनेंका अभिप्राय संयुक्त आचार्य सो प्रथम ही दोऊ लोकविषै तिष्ठते जिन मंदिर तिनकौं स्तुतिपूर्वक संख्या कहै है;—

णमह णरलोयजिणघर चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि।
बावण्णं चउ चउरो णंदीसुर कुंडले रुचगे ॥ ५६१ ॥
नमत नरलोकजिनगृहाणि चत्वारि शतानि द्विविहीनानि।
द्वापंचाशत् चत्वारि चत्वारि नंदीश्वरे कुंडले रुचके ॥ ५६१ ॥

अर्थ—मनुश लोकविषै दोय घाटि च्यारि सै जिनमंदिर हैं। बहुरि नंदीश्वरद्वीप कुंडलगिरि रुचकद्वीपविषै क्रमतैं तिर्यक् लोकसंबंधी बावन च्यारि च्यारि जिनमंदिर हैं। तिन सर्व जिनमंदिरनिकौं तुम नमस्कार करहु ॥ ५६१ ॥

आगैं मनुश लोकविषै जिनमंदिर कहां कहां हैं सो कहै हैं;—

मंदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररुप्पजंबुसामलिसु।
सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं ॥ ५६२ ॥
मंदरकुलवक्षारेषुमानुषोत्तरजंबूशाल्मलिषु।
अशीतिः त्रिंशत् तु शतं चत्वारि चत्वारि सप्ततिशतं द्विपंच ॥ ५६२ ॥

अर्थ—मेरु पांच कुलाचल तीस गजदंत सहित वक्षारगिरि एकसौ इष्वाकार च्यारि मानुषोत्तर एक विजयार्द्धपर्वत एकसौ सत्तरि जंबूवृक्ष पांच शाल्मली वृक्ष पांच इनविषै अनुक्रमतैं असी तीस एकसौ च्यारि च्यारि एकसौ सत्तरि पांच पांच जिनमंदिर हैं ॥ ५६२ ॥

आगैं अब कहिए हैं अर्थ ते सर्व मेरुका कथनकै आश्रय है तातैं प्रथम ही तिन मेरुगिरिनिकौं प्रतिपादन करैं हैं;—

जंबूदीवे एक्को इसुकयपुव्ववरधादवीदुगे।
दो दो मंदरसेला बहुमज्झगविजयबहुमज्झे ॥ ५६३ ॥
जंबूद्वीपे एकः इषुकृतपूर्वापरधातकीपद्विके।
द्वौ द्वौ मंदरशैलौ बहुमध्यगविजयबहुमध्ये ॥ ५६३ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै एक मेरुगिरि है, बहुरि धातुकी खंड अर पुष्करार्द्ध इन दोऊ द्वीपनिविषै दक्षिण उत्तर दिशानि दोय दोय इष्वाकार पर्वत हैं। तिनि करि दोय भाग होइ पूर्व पश्चिमविषै दोय दोय धनुषाकार क्षेत्रविषै दोय दोय मेरुगिरि हैं। तहां भी ते मेरु कहां तिष्ठैं हैं। भरतादि क्षेत्रनिकै अतिशय करि मध्य तिष्ठतो विदेहक्षेत्र तीहका अत्यंत मध्य प्रदेशविषै तिष्टै हैं ॥ ५६३ ॥

आगैं तिन मेरुनिका दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते क्षेत्रनिके नाम कहैं हैं;—

दक्खिणदिसादु भरहो हेमवदो हरिविदेहरम्मो य ।
हइरण्णवदेरावदवस्सा कुलपव्वयंतरिया ॥ ५६४ ॥

दक्षिणदिशातः भरतो हैमवतः हरिविदेहरम्यश्च ।
हैरण्यवदैरावतवर्षाः कुलपर्वतांतरिताः ॥ ५६४ ॥

अर्थ—तिन मेरुनिकी दक्षिण दिशातैं लगाय क्रमतैं भरत १ हैमवत १ हरि १ वि
रम्यक १ हैरण्यवत १ ऐरावत १ ऐसैं ए वर्ष क्षेत्र हैं । ते ए वीचि वीचि हिमवत आदि
लनिकरि अंतराल्को धरै हैं । भरत हैमवतकै वीचि हिमवत कुलाचल है, हैमवत हरिके वीचि
है । ऐसैं ही सात क्षेत्रनिकै वीचि छह कुलाचल जानने । जंबूद्वीपधातुकीखंड पुष्करार्धविषै
कुलाचल ऐसैं जाननें ॥ ५६४ ॥

आगैं तिन कुलाचलनिका नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

हिमवं महादिहिमवं णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य ।
मूलोवरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्ठा ॥ ५६५ ॥

हिमवान महादिहिमवान् निषधः नीलश्च रुक्मी शिखरी च ।
मूलोपरि समव्यसा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः ॥ ५६५ ॥

अर्थ—हिमवत १ महाहिमवत १ निषध १ नील १ रुक्मी १ शिखरी १ ए छह
पर्वत हैं । ते ए सर्व मूलतैं उपरि पर्यंत सर्वत्र समान व्यासकौं धरैं हैं । भीति समान नीचे तै उपरि
समान चौड़े हैं । बहुरि मणि पार्श्वाः कहिए जिनका अंत प्रदेशमणिमय हैं । बहुरि ते स
स्पर्शे हैं । जिनका दोऊ पार्श्व समुद्रकौं स्पर्श करि रहे हैं । तहां जंबूद्वीपविषै कुलाचलनि
पार्श्व लवण समुद्र हीकौं स्पर्शै हैं । धातुकी खंडविषै लवणोद कालोद समुद्रकौं स्प
पुष्करार्द्धविषै कालोद समुद्र मानुषोत्तर पर्वतकौं स्पर्शे हैं इतना जानना ॥ ५६५ ॥

हेमज्जुणतवणीया कमसो वेलुरियरजदहेममया ।
इगिदुगचउचउदुगइगिसयतुंगा होंति हु कमेण ॥ ५६६ ॥

हेमार्जुनतपनीयाः क्रमशः वैडूर्यरजतहेममयाः ।
एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशततुंगा भवंति हि क्रमेण ॥ ५६६ ॥

अर्थ—हिमवत् आदि कुलाचल हेम कहिए सुवर्ण समान वर्ण धरै है महाहिमवत्
कहिए रूपासमान श्वेतवर्ण धरै है निषध तपनीय कहिए ताया सोना समान दुकडाको
सदृश वर्ण धरै है । नील वैडूर्य कहिए पन्ना समान मोरका कंठ सदृश वर्ण धरै है । रुक्मी
कहिए रूपा समान श्वेतवर्ण धरै है । शिखरी हेम कहिए सोना समान वर्ण धरै है ।
पर्वतनिके क्रमतै वर्ण है । बहुरि ते हिमवत् आदि पर्वतनिका क्रमतै एकसौ दोयसौ
दोयसै एकसौ योजन उंचाईका प्रमाण है ॥ ५६६ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचलनिके उपरि तिष्ठै है द्रह तिनके नाम कहै हैं;—

पउमाप महापउमा तिगिंछ केसरि महादिपुण्डरिया।
पुंडरिया य दहाओ उवरिं अणुपव्वदायामा ॥ ५६७ ॥
पद्मो महापद्मः तिगिंछः केसरिः महापुंडरीकः।
पुंडरीकश्च ह्रदा उपरि अनुपर्वतायामाः ॥ ५६७ ॥

अर्थ—तिन हिमवत् आदि पर्वतनिके उपरि क्रमतें पद्म १ महापद्म १ तिगि १ महा पुंडरीक १ पुंडरीक १ ए द्रह हैं ते पर्वत अनुसारि हीन अधिक लम्बाईका प्र है ॥५६७॥

आगैं तिन द्रहनिका व्यासादिककौं प्रतिपादन करत संता तिन द्रहनिविषै तिनका स्वरूपकौं निरूपै हैं;—

वासायामोगाढं पणदसदसमद्दपव्वदुदयं खु।
कमलस्सुदओ वासो दोविय गाहस्स दसभागो ॥ ५६८
व्यासायामावगाधाः पंचदशदशमहत्पर्वतोदयाः खलु।
कमलस्योदयः व्यासः द्वावपि गाधस्य दशभागौ ॥ ५६८ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिका व्यास अर आयाम अर अगाध क्रमतें अपनें अपनें पर्वतकी गुणां दशगुणां दशवैं भाग प्रमाण जाननें। भावार्थ—हिमवत आदि पर्वतनिका उचाईक सौ दोयसैं च्यारिसैं च्यारिसैं दोयसैं एकसौ योजन प्रमाण है। तीहस्यौं पांच द्रहनिकी चौडाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतें पांचसैं हजार दोय हजार दोय पांचसैं योजन प्रमाण चौडे हैं। बहुरि दश गुणां लंबाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतें दोय हजार च्यारि हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार योजन प्रमाण लंबे हैं। बहुरि ऊंडाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतें दश बीस चालीस चालीस बीस दश योजन हैं। बहुरि तिन द्रहनिविषै कमल हैं। तिनका उचाईका प्रमाण अर चौडाईका अपनें अपनें द्रहका अगाध प्रमाणकै दशवैं भाग प्रमाण है। सो पद्मादि द्रहनिविषै क्रम च्यारि च्यारि दोय एक योजन प्रमाण कमल ऊंचे अर इतनेंही चौडे जाननें ॥ ५६८

आगैं तिन कमलनिका विशेषस्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

णियगंधवासियदिसं वेलुरियविणिम्मिउच्चणालजुदं।
एक्कारसहस्सदलं णववियसियमत्थि दहमज्झे ॥ ५६९ ॥
निजगंधवासितदिशं वैडूर्यविनिर्मितोच्चनालयुतम्।
एकादशसहस्रदलं नवविकासितमस्ति ह्रदमध्ये ॥ ५६९ ॥

अर्थ—निज सुगंध करि वासित करी है दिशा जानैं ऐसा बहुरि वैडूर्यमणि पित जो ऊंची नाली तीह करि संयुक्त बहुरि ग्यारह अधिक एक हजार पत्र जाकै पाईए विकसायमान सारिखा ऐसा कमल तिन द्रहनिकै मध्य हैं। सो कमल पृथ्वी सारू स्पर्शरूप नांही है ॥ ५६९ ॥

आगें इस ही अनुसारि गुन धरें प्रक्षेप गाथा है;—

दहमज्झे अरविंदयणालं बादालकोसमुव्विद्धं ।
इगिकोसं बाहल्लं तस्स मुणालं तु रजदमयं ॥ ५७० ॥
हृदमध्ये अरविंदकनालं द्वाचत्वारिंशत्क्रोशोत्सेधम् ।
एकक्रोशं बाहल्यं तस्य मृणालं तिः रजतमयम् ॥ ५७० ॥

अर्थ—पद्मद्रहके मध्य कमलकी नाली बियालीस कोश ऊंची है एक कोश मोटी है। ताकै तिसका मृनाल तीन कोसका मोटा रूपामई श्वेतवर्ण है ॥ ५७० ॥

कमलदलजम्मविणिग्गयतुरियुदयं वास कण्णियं तत्थ ।
सिरिरयणगिहं दिग्घति कोसं तस्सदमुभयजोगदलं ॥ ५७१ ॥
कमलदलजलविनिर्गततुर्योदयः व्यासः कर्णिकायाः तत्र ।
श्रीरत्नगृहं दैर्घ्यके क्रोशः तस्यार्धमुभययोगदलं ॥ ५७१ ॥

अर्थ—कमलका उत्सेधका अर्द्ध प्रमाण सोही नालीको जल विनिर्गति है । भावार्थ [illegible] कोश नाली ऊंची है ताके साढा दश योजन भए। तहां दश योजन तौ नाली जलविषै मग्न है अर आधा योजन नाली जलतै उपरि है सोई कमलकी उचाई एक योजन कही थी। ताका [illegible] प्रमाण आधा योजन है । बहुरि तिस कमलकी जो कर्णिका ताकी उचाई व चौडाई कमल [illegible] प्रमाण है सो कमल एक योजन उदय व्यास धरै ताकी चौथाई एक कोश प्रमाण [illegible] उदय व्यास जानना । बहुरि तिस कर्णिका उपरि श्रीदेवीका रत्नमई मंदिर है । तिस [illegible] [illegible] कोश ताका आधा उभय योगका आधा प्रमाण है । भावार्थ—श्रीदेवीका [illegible] [illegible] है । आध कोश चौडा है पौण कोश ऊंचा है । ऐसैं पद्म द्रहविषै कमल [illegible] [illegible] द्रहनिविषै ऐसै ही कमल जानने प्रमाण यथा संभव जानना ॥ ५७१ ॥

आगे तिन द्रहनिविषै जे कमल तिनविषै जे देवी बसै हैं तिनके नाम वा तिनका [illegible] [illegible] हैं;—

सिरि हिरि धिदि कित्तीवि य बुद्धी लच्छी य [illegible] ।
[illegible] ॥ ५७२ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ५७२ ॥

अर्थ—[illegible] श्री १ ह्री २ धृति ३ कीर्ति ४ बुद्धि ५ लक्ष्मी ६ [illegible] [illegible] । [illegible] प्रमाण आयु धरै हैं । बहुरि [illegible] [illegible]

[illegible]

आगै [illegible] है—

[illegible] ।
[illegible] ॥ ५७३ ॥

आदित्यचंद्रजतुप्रभृतयः त्रिपारिषदाः अग्नियमनैर्ऋत्यां ।

द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि ॥ ५७३ ॥

अर्थ—आदित्य १ चन्द्र १ जतु इनकों आदि दे करि जे तीन प्रकार परिषद देव हैं ते मूल कमलतैं अग्नि यमनैं ऋति दिशानिविषै तिष्ठै हैं। ते अभ्यन्तर परिषद देव बत्तीस हजार हैं। मध्य पारिषद देव चालीस हजार हैं। बाह्य पारिषद देव अडतालीस हजार हैं। बहुरि तिनके रहनेके कमल तिन देवनिकै समान जाननें। एक एक कमल उपरि एक एक पारिषद देवका मंदिर है ५७३

आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग गयस्सरहवसहा ।

गंधव्वणच्चपत्ती पत्तेयं दुगुण सत्तकक्खजुदा ॥ ५७४ ॥

आनीकगेहकमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजाश्वरथवृषभाः ।

गंधर्वनृत्यपत्तयः प्रत्येकं द्विगुणसप्तकक्षयुताः ॥ ५७४ ॥

अर्थ—आनीक जातिके देवनिके मंदिर सहित सात कमल मूल कमलतैं पश्चिम दिशाविषै हैं ते आनीक हाथी १ घोडा १ रथ १ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी १ पयादा १ ऐसैं सात प्रकार हैं। तहां एक एक आनीकविषै सात सात कक्ष हैं। तहां प्रथम कक्षविषै अपनां सामानिकनिकै समान च्यारि हजार है। बहुरि द्वितीयादि कक्षविषै दूणा दूणा प्रमाण जाननां ॥ ५७४ ॥

उत्तरदिसि कोणदुगे सामाणियकमल चदुसहस्समदो ।

अब्भंतरे दिसं पडि पुह तेत्तियमंगरक्खपासादा ॥ ५७५ ॥

उत्तरदिशि कोणद्विके सामानिककमलानि चतुःसहस्रमतः ।

अभ्यंतरे दिशं प्रति पृथक् तावन्मात्रांगरक्षप्रासादाः ॥ ५७५ ॥

अर्थ—उत्तर दिशाका भागविषै तिष्ठते दोऊ कोण तिनविषै सामानिक देवनिके कमल च्यारि हजार हैं। बहुरि इन कमलनिकै अभ्यन्तर मूल कमलकी तरफ एक एक दिशा प्रति तिनके ही च्यारि च्यारि हजार अंगरक्षकनिके कमलनि उपरि मंदिर हैं ॥ ५७५ ॥

अब्भंतरदिसि विदिसे पडिहारमहत्तरट्ठसयकमलं ।

मणिदळजलसमणालं परिवारं पउममाणद्धं ॥ ५७६ ॥

अभ्यन्तरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि ।

मणिदलजलसमनालं परिवारं पद्ममानार्धम् ॥ ५७६ ॥

अर्थ—तिन अंगरक्षक कमलनितैं अभ्यन्तर मूल कमलकै समीप दिशा वा विदिशानिविषै प्रतीहार महत्तरनिके एक सौ आठ कमल हैं। भावार्थ—एक एक दिशाविषै चौदह चौदह अर एक एक विदिशाविषै तेरह तेरह मुख्य प्रतीहारानिके कमल हैं। इहां ए कमल ऐसैं जाननें। बहुरि ए सर्व परिवार कमल मणि मई रत्ननि करि संयुक्त हैं। अर जलकी उंडाई समान ऊँची है नाली जिनकी ऐसे हैं। जलतैं उपरि ऊंचे नाहीं हैं। बहुरि परिवार कमलनिका व्यासादिकरूप जो विशेष स्वरूप सो मुख्य कमलतैं अर्द्ध प्रमाण सर्व है ॥ ५७६ ॥

सिरिगिहदलमिदरगिहं सोहम्मिदस्स सिरिहिरिधिदीओ ।
कित्ती बुद्धी लच्छी ईसाणहिवस्स देवीओ ॥ ५७७ ॥

श्रीगृहदलमितरगृहं सौधर्मेन्द्रस्य श्रीह्रीधृतयः ।
कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः ॥ ५७७ ॥

अर्थ—श्रीदेवीका मंदिरका जो व्यासादिक प्रमाण ताका आधा परिवारके महनिका व्यासादिक प्रमाण है ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि श्री १ ह्री १ धृति १ ए तीन तौ सौधर्म इन्द्रकी देवी हैं । कीर्ति १ बुद्धि १ लक्ष्मी १ ए तीन ईशान अधिपकी देवी हैं ॥ ५७७ ॥

आगैं तिन द्रहनिविषै उत्पन्न भई जे महानदी तिनके नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

सरजा गंगासिंधू रोहि तहा रोहिदास णाम णदी ।
हरि हरिकंता सीदा सीदोदा णारि णरकंता ॥ ५७८ ॥

सरोजाः गंगासिंधू रोहित्तथा रोहितास्या नाम नदी ।
हरित् हरिकांता सीता सीतोदा नारी नरकाता ॥ ५७८ ॥

अर्थ—सरोवरनितैं उत्पन्न भई ऐसी नदी गंगा १ सिंधु १ रोहित १ रोहितास्या १ हरित् १ हरिकांता १ सीता १ सीतोदा १ नारी १ नरकांता ॥ ५७८ ॥

सरिदा सुवण्णरुप्पयकूला रत्ता तहेव रत्तोदा ।
पुव्वावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्खणेण गया ॥ ५७९ ॥

सरितः सुवर्णरूप्यकूला रक्ता तथैव रक्तोदा ।
पूर्वापरेण क्रमशो नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गताः ॥ ५७९ ॥

अर्थ—सुवर्णकूला १ रूप्यकूला १ रक्ता १ रक्तोदा १ ए सरितः कहिए चौदह महानदी हैं ते क्रमतैं पूर्वैं कहीं गंगा रोहित सीता नारी सुवर्णकूला रक्ता ए तौ पूर्वदिशा मुख करि अर अवशेष पीछैं कहीं सात नदी ते पश्चिम मुख करि क्षेत्रनिके बीचि तिष्ठते जे पर्वत तिनकी प्रदक्षिणा करि समुद्रकौं प्राप्त भई हैं ॥ ५७९ ॥

आगैं तिन नदीके दोऊ तटनिका स्वरूप कहैं हैं;—

पुण्णागणागपूगीकंकेल्लितमालकेलितपूगी ।
लवलीलवंगमल्लीपहुदी सयलणदितडेसु ॥ ५८० ॥

पुन्नागनागपूगीकंकेल्लितमालकदलीनालिकेरी ।
लवलीलवंगमल्लीप्रभृतयः सकलनदीतटेषु ॥ ५८० ॥

अर्थ—पुन्नाग नागकेसर सुपारी अशोक तमाल केलि नारियली लवली लौंग मल्ली इत्यादि वृक्ष समस्त नदीनिके दोऊ तटनिविषै पाइए हैं ॥ ५८० ॥

आगैं हिम २ द्रहनितैं ए नदी उत्पन्न भई हैं सो कहै हैं,—

गंगादू रोहिदस्सा पउमे रत्तादू सुवण्णपंडरीए ।
सेसे दो दो ओघणदहवग्गविसेस णामिगिरि ॥ ५८१ ॥

गंगाद्रे रोहितास्या पद्मे रक्ताद्रे सुवर्णा अंतह्रदे ।

शेषेषु द्वे द्वे योजनद्वयमंतरित्वा नाभिगिरिम् ॥ ५८१ ॥

अर्थ—गंगा सिंधु रोहितास्या ए तीन नदी तो पद्मद्रहविषैं उपजी हैं। बहुरि रक्ता रक्तोदा सुवर्णकूला ए तीन नदी अंतका पुंडरीक द्रहविषै उत्पन्न भई हैं। अवशेष द्रहनिविषै दोय दोय नदी उत्पन्न भई हैं। तहां गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन च्यारि नदीविना अवशेष नदी क्षेत्रनिके बीचि तिष्ठता जो नाभिगिरि ताकौं आध योजन छोडि समुद्रकों गई हैं। इहां विदेहविषै मेरुगिरिका नाम इहां नाभिगिर जानना। हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवतविषैं नाभिगिरि है ही सो द्रहनि सौं नदी निकसि नाभिगिरिके सन्मुख सूधी आइ आध योजन उरैतैं मुडि तीह नाभिगिरिकी अर्द्ध प्रदक्षिणा करि समुद्रकौं प्राप्त हो हैं। बहुरि भरत ऐरावतविषै नाभिगिरि नाही तातैं गंगासिंधु रक्तारक्तोदा इनका वर्णन किया है ॥५८१॥

आगैं तिनविषैं गंगानदीकी उत्पत्ति अर ताके गमनका विधान गाथा तीन करि कहै हैं;—

वज्जमुहादो जणित्ता गंगा पंचसयमेत्य पुव्वमुहं ।

गत्ता गंगाकूडं अविपत्ता जोयणद्धेण ॥ ५८२ ॥

वज्रमुखतः जनित्वा गंगा पंचशतमत्र पूर्वमुखं ।

गत्वा गंगाकूटं अप्राप्य योजनार्धेन ॥ ५८२ ॥

अर्थ—पद्मनामा द्रहका पूर्वदिशाविषै जो वज्रद्वार तीहरयौं गंगानदी उपजि-निकसि करि इस हिमवत् पर्वतकै ऊपरि पूर्व दिशा सनमुख पांचसै योजन जाइ हिमवत् पर्वत उपरि गंगा नामा जो कूट है ताकौं आध योजन अप्राप्त होइ गंगा कूटसौं आध योजन उरै हीतै मुडि करि॥ ५८२ ॥

कहा सो कहै हैं;—

दक्खिणमुहं चलित्ता जोयणतेवीससहियपंचसयं ।

साहियकोसद्धजुदं गत्ता जा विविहमणिरूवा ॥ ५८३ ॥

दक्षिणमुखं चलित्वा योजनत्रयोविंशतिसहितपंचशतम् ।

साधिकक्रोशार्धयुतं गत्वा या विविधमणिरूपा ॥ ५८३ ॥

अर्थ—तहांसौं दक्षिण दिशाकैं सनमुख तिस हिमवत पर्वत ही उपरि चालि करि तेईस अधिक पांचसै योजन अर साधिक आध कोश जाइ पर्वतके तटि गई। याकी वासना कहिए है। भरतका प्रमाण पांचसै छबीस योजन अर छह उगणीसवां भाग ताकौं दूणा किए हिमवत् पर्वतका व्यास एक हजार बावन योजन अर बारह उगणीसवां भाग तामै नदीका व्यास एक योजन एक कोश घटाए एक हजार छिहालीस योजन रहे ताके सौ आधा किए पांचसै तेईस रहे योजन भए अवशेष बारहका उगणीसवां भागकौं चौगुणा करि कोश किए अड़तालीस कोशका उगणीसवां भाग भया ताके दोय कोश अर दशका उगणीसवां भाग भया तामै एक कोश तो नदीका व्यासविषै दिया अवशेष एक कोश अर दशका उगणीसवां भाग रह्या ताका आधा आध कोश अर पांच उगणीसवां भाग भया। यातै पांचसै तेईस योजन अर साधिक आध कोश रह्या। भावार्थ—जहां गंगानदी मुडी है तहां हिमवतका व्यासविषै नदीका व्यास घटाइ अवशेष

आधा तौ उत्तरनैं गया अर आधा दक्षिणनैं गया सो गंगा दक्षिणदिशाकौं जाइ पर्वतका प्राप्त भई। तहां पर्वतका तटविषै जिह्विका नामा प्रणाली नानाप्रकार मनि मई है ॥ ५८३ ॥

फोसदुगदीहबहल्ला वसहायारा य जिम्हिया गंगा।
छज्जोयणं सकोसं तिस्से गंतूण पडिदा सा ॥ ५८४ ॥

क्रोशद्वयदीर्घबाहल्या वृषभाकारा च जिह्विका गंगा।
षड्योजनं सक्रोशं तस्यां गत्वा पतिता सा ॥ ५८४ ॥

अर्थ—सो जिह्विका नामा प्रणाली दोय कोश लंबी है। अर दोय ही कोश ऊंची है। बहुरि वृषभाकारा कहिए गऊमुखके आकार है। कोस सहित छह योजन चौडी है। तिह प्रणालीविषै जाइ सो गंगानदी तिस हिमवत पर्वतनै पडी है ॥ ५८४ ॥

आगैं प्रणालीका वृषभाकारकौं सार्थीक करै हैं;—

केसरिमुहसुदिजिब्भादिट्ठी भूसीसपहुदिगोसरिसा।
तेणिह पणालिया सा वसहायारेत्ति णिद्दिट्ठा ॥ ५८५ ॥

केशरिमुखश्रुतिजिह्वादृष्टयः भूशीर्षप्रभृतयः गोसदृशाः।
तेनेह प्रणालिका सा वृषभाकारा इति निर्दिष्टा ॥ ५८५ ॥

अर्थ—प्रणालिकाकै मुख कान जीभ नेत्रनिका आकार तौ सिंहके समान है। अर भौंह मस्तक आदिका आकार गऊ समान है। तीह कारण करि इहां सो प्रणालिका मुख्यपनै वृषभाकार ऐसी कही है ॥ ५८५ ॥

आगैं पडी जो नदी ताके पडनेंका स्वरूप गाथा पाच करि कहैं हैं;—

भरहे पणकदिमचलं मुच्चा कहलोवमा दहव्वासा।
गिरिमूले दहगाहं कुंडं वित्थारसट्ठिजुदं ॥ ५८६ ॥

भरते पंचकृतिमचलं मुक्त्वा काहलोपमा दशव्यासा।
गिरिमूले दशगाधं कुंडं विस्तारषष्टियुतम ॥ ५८६ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै पंचकृति कहिए पचीस योजन हिमवत् पर्वतकौं छोडि उरैं काहलाकै आकारि होइ दश योजनकी चौडाई लिएं गंगानदी पडै है। कहा पडै है सो कहैं हैं। हिमवत पर्वतका मूलविषै दश योजन ऊंडा साठि योजन चौडा गोल कुंड है ॥ ५८६ ॥

मज्झे दीओ जलदो जोयणदलमुग्गओ दुघणवासो।
तम्मज्झे वज्जमओ गिरी दसुस्सेहओ तस्स ॥ ५८७ ॥

मध्ये द्वीपः जलतः योजनदलमुद्गतः द्विघनव्यासः।
तन्मध्ये वज्रमयः गिरिः दशोत्सेधः तस्य ॥ ५८७ ॥

अर्थ—तीह कुंडकै मध्य जलतैं उपरि आध योजन ऊंचा अर द्विघन कहिए आठ योजन चौडा ऐसा गोल द्वीप कहिए टापू है। तीह द्वीपकै मध्य वज्रमई दश योजन ऊंचा पर्वत है तिस पर्वतका ॥ ५८७ ॥

कहा सो कहै हैं;—

भूमज्झग्गे वासो चदु दुगि सिरिगेहमुवरि तव्वासो।
चावाणं तिदुगेक्कं सहस्समुदओ दु दुसहस्सं ॥ ५८८ ॥
भूमध्याग्रे व्यासः चतुः द्विकं एकं श्रीगेहमुपरि तद्व्यासः।
चापानां त्रिद्विकैकं सहस्रमुदयस्तु द्विसहस्रम् ॥ ५८८ ॥

अर्थ—भूमध्य अग्रविषै व्यास च्यारि दोय एक योजनका व्यास है। भावार्थ-सो पर्वत नीचैं च्यारि योजन मध्यविषै दोय योजन उपरि एक योजन चौडा है। बहुरि तिह पर्वतकै उपरि श्री देवीका मंदिर है। तिस श्रीमंदिरका चापनिका तीन दोय एक सहस है उदय दोय सहस है। भावार्थ—श्रीमंदिर नीचैं तीन हजार मध्यविषै दोय हजार उपरि एक हजार धनुष प्रमाण चौडा है। अर दोय हजार धनुष ऊंचा है ॥ ५८८ ॥

पणसयदलं तदंतो तद्दारं ताल वास दुगुणुदयं।
सव्वत्थ धणू णेयं दोण्णि कवाला य वज्जमया ॥ ५८९ ॥
पंचशतदलं तदंतरं तद्द्वारं चत्वारिंशत् व्यासं द्विगुणोदयं।
सर्वत्र धनुः ज्ञेयं द्वौ कपाटौ च वज्रमयौ ॥ ५८९ ॥

अर्थ—तिस श्रीमंदिरका अभ्यंतरविषै व्यास पांचसै धर ताका आधा प्रमाण है। भावार्थ-अभ्यंतर श्रीदेवीका मंदिर साढा सातसै धनुष प्रमाण चौडा है। बहुरि तिसका द्वार चालीस व्यास दूणा उदय संयुक्त है। भावार्थ—श्रीमंदिरका द्वार चालीस धनुष चौडा असी धनुष ऊंचा है। ऐसैं सर्वत्र श्रीमंदिरका प्रमाण धनुष प्रमित जानना। तिह द्वारकै दोय वज्रमई कपाट है ५८९॥

सिरिगिहसीसठियंबुजकण्णियसिंहासणं जडामउलं।
जिणमभिसेत्तुमणा वा ओदिण्णा मत्थए गंगा ॥ ५९० ॥
श्रीगृहशीर्षस्थितांबुजकर्णिकासिंहासनं जटामुकुटं।
जिनमभिषेक्तुमना वा अवतीर्णा मस्तके गंगा ॥ ५९० ॥

अर्थ—श्रीमंदिरका मस्तक उपरि तिष्टता कमलकी कर्णिकाविषै तिष्टता सिंहासन जटा मुकुट जिनबिंब ताहि अभिषेक करनेका मानौं याका मन है ऐसैं जिनबिंबके मस्तक उपरि गंग अवतरै है। भावार्थ-श्रीमंदिरकै उपरि कमल है ताकी कर्णिका उपरि सिंहासन है। तहां जिन-बिंब विराजै है। ताकै उपरि सो गंगा नदी तिस पर्वतसौं पडै है ॥ ५९० ॥

आगैं कुंडसों निकसि चाली जो गंगा ताका स्वरूपकों वा तीहका स्थान स्वरूपकौं गाथा छह करि कहैं हैं;—

कुंडादो दक्खिणदो गच्चा खंडप्पवादणामगुहं।
अडजोयणवित्थिण्णा विणिग्गया कुदवाहिद्दादो ॥ ५९१ ॥
कुंडात् दक्षिणतः गत्वा खंडप्रपातनामगुहाम्।
अष्टयोजनविस्तीर्णा विनिर्गता कुतपाधस्तात् ॥ ५९१ ॥

अर्थ—कुंडसौं निकसि दक्षिण दिशा सनमुख सूधी जाइ विजयार्द्ध नामा पर्व[illegible] प्रपात नामा गुफा ताकी कुतप कहिए देहली ताकै नीचें होय तिस गुफाविषै प्रवेश क[illegible] योजन चौडी होत संती गंगा तिस ही गुफाका उत्तर द्वारकी कुतप कहिए देहली ता[illegible] होइ करि ही सो गंगा तिस गुफातैं बारैं निकसै है ॥ ५९१ ॥

दारगुहुच्छयवासा अड बारस पव्वदं व दीहत्तं ।
वज्जछवासकवाडदु वेयड्ढगुहा दुगुभयंते ॥ ५९२ ॥
द्वारगुहोच्छ्रयव्यासौ अष्ट द्वादश पर्वत इव दीर्घत्वं ।
वज्रषट्व्यासकपाटद्वयं विजयार्धगुहा द्विकोभयांते ॥ ५९२ ॥

अर्थ—गुफाका द्वार अर गुफा ताकी उचाई तौ प्रत्येक आठ योजन है अर चौडा[illegible] योजन है। बहुरि विजयार्ध पर्वतकी चौडाईका जो प्रमाण तितनां ही गुफाका लंबाईका[illegible] पचास जोजन है। बहुरि विजयार्द्धकी गुफाके दोऊ अंत द्वारनिविषै प्रत्येक छह छह यो[illegible] दोय वज्र मई कपाट हैं ॥ ५९२ ॥

उम्मग्गणिमग्गणदी गुहमज्झगकुंडजा दु पुव्ववरे ।
जोयणदुगदीहाओ पुसंति उभयंतदो गंगं ॥ ५९३ ॥
उन्मग्ननिमग्ननद्यौ गुहामध्यगकुंडजे तु पूर्वापरस्याम् ।
योजनद्वयदैर्घ्ये स्पृशतः उभयांततः गंगाम् ॥ ५९३ ॥

अर्थ—उन्मग्न निमग्ननदी पूर्व पश्चिमविषै गुफा मध्यके कुंडतैं उपजि दोऊ तटतैं दो[illegible] चौडी होत संती गंगाकौं स्पर्शै है। भावार्थ—गुफाकी पूर्व पश्चिमविषै भीतिकै निकटि [illegible] हैं। तिनतैं उनमग्न अर निमग्न नामा नदी उपजै हैं। सो तहांसौं चालि सूधी गंगाके दोऊ त[illegible] आइ गंगाविषै प्रवेश करै हैं। ते नदी दोय योजन चौडी हैं ॥ ५९३ ॥

णियजलपवाहपडिदं दव्वं गुरुगंपि णेदि उवरि तडं ।
जम्हा तम्हा भण्णदि उम्मग्गा वाहिणी एसा ॥ ५९४ ॥
निजजलप्रवाहपतितं द्रव्यं गुरुकमपि नयति उपरि तटम् ।
यस्मात् तस्मात् भण्यते उन्मग्ना वाहिनी एषा ॥ ५९४ ॥

अर्थ—अपनां जलका प्रवाहविषै पड्या हूवा भारा भी द्रव्यकौं जातैं उपरि तटवि[illegible] करै, डूबनैं दे नांही तातैं यहु उन्मग्ननामा नदी कहिए है ॥ ५९४ ॥

णियजलभरउवरि गदं दव्वं लहुगंपि णेदि हिट्ठम्मि ।
जेण्णं तेण्णं भण्णदि एसा सरिया णिमग्गंति ॥ ५९५ ॥
निजजलभरोपरि गतं द्रव्यं लघुकमपि नयति अधस्तात् ।
येन तेन भण्यते एषा सरित् निमग्ना इति ॥ ५९५ ॥

अर्थ—अपना जलका प्रवाहके ऊपरि प्राप्त भया हलका भी द्रव्यकौं नीचे प्राप्त [illegible] करावै है। जिस कारण करि तिसकरि यह नदी निमग्ना ऐसी कहिए है ॥ ५९५ ॥

तत्तो दक्खिणभरहद्धं गंतूण पुव्वदिसवदणा।
मागहदारंतरदो लवणसमुद्दं पविट्ठा सा ॥ ५९६ ॥
ततो दक्षिणभरतार्धं गत्वा पूर्वदिशावदना।
मागधद्वारांतरतः लवणसमुद्रं प्रविष्टा सा ॥ ५९६ ॥

अर्थ—तीहं गुफातैं निकसि करि दक्षिण भरतका अर्द्ध पर्यंत तौ सूधी दक्षिण सन्मुख ही गई सो एकसौ उगणीस योजन अर तीन अठ्ठारसवां भाग प्रमाण गई। कैसैं ! भरतका प्रमाणमैं ५२६।६÷१९ सौ विजयार्द्धका व्यास५० घटाइ अवशेष ४७६।६÷१९ आधा किएं २३८।+१९ दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। ताका आधा किएं ११९।३+१९ अर्ध दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। बहुरि तीहं अर्द्ध दक्षिण भरत ताईं आय मुडि करि पूर्व दिशाकौं सनमुख होइ द्वीपके कोटका मागध नामा द्वार ताकै मांही जाय सो गंगा लवण समुद्रकों प्रवेश करै है ॥ ५९६ ॥

अब सिन्धुनदीके स्वरूपकौं निरूपै है;—

गंगसमा सिंधुणदी अवरमुहा सिंधुकूडविणिविट्ठा।
तिमिसगुहादवरंबुहिमिया पभासक्खदारादो ॥ ५९७ ॥
गंगासमा सिंधुनदी अपरमुखा सिंधुकूटविनिवृत्ता।
तिमिस्रगुहादपरांबुधिमिता प्रभासाख्यद्वारतः ॥ ५९७ ॥

अर्थ—गंगाविषै जो वर्णन कह्या तीहं समान ही सिंधु नदी है। सो सर्व वर्णन सिंधुविषै जानना। इतना विशेष, जो यह सिंधु नदी पद्मद्रहके पश्चिम द्वारतैं निकसि पश्चिम सनमुख सिंधु कूटनै उरैं मुडि करि पर्वत पर्यंत आइ कुंडविषै पडि तहांसौं निकसि विजयार्ध पर्वतकी तिमिस्र नामा गुफाविषैं प्रवेश करि तहांसौं निकसि जंबूद्वीपके कोटका प्रभास नाम द्वारतैं पश्चिम समुद्रकौं प्राप्त भई। और सर्व वर्णन गंगावत जानना ॥ ५९७ ॥

आगैं अवशेष नदीनिका स्वरूप कहै हैं;—

सेसा रूप्पंता दहवित्थारूणचलरुंदद्दलमुवरिं।
गंतूण दक्खिणुत्तरमणुपुव्वा पुव्वअवरजलहिं ॥ ५९८ ॥
शेषा रूप्यंता ह्रदविस्तारोनाचलरुंदद्दलमुपरि।
गत्वा दक्षिणोत्तरमनुपूर्वाः पूर्वापरजलधिम् ॥ ५९८ ॥

अर्थ—अवशेष रोहित आदि रूप्यकूलापर्यंत नदी अपना अपना द्रहका विस्तार करि ऊन जो पर्वतका विस्तार ताका आधा प्रमाण ताईं पर्वतकै ऊपरि दक्षिण उत्तर सनमुख जाइ पीछैं क्षेत्रविषै आधक्षेत्र ताईं सूधी जाइ नाभिगिरिके उरैंतैं मुडिकरि पूर्व पश्चिम संमुख होइ पूर्व पश्चिम समुद्रकौं प्रवेश करै है। तहां भरतक्षेत्रका जो प्रमाण ५२६।६÷१९ ताकौं दोय आठ बत्तीस बत्तीस आठ दोय जो हिमवत् आदिकी शलाका तिन करि क्रमतैं गुणें हिमवत् १०५२।१२-१९ महाहिमवत् ४२१०।१०-१९ निषध १६८४२।२-१९ नील १६८४२।२-१९ रुक्मी ४२१०।१०-१९ शिखरी १०५२।१२-१९ का विस्तार हो है यामैं अपने अपने द्रहके विस्तारका प्रमाण

५००।१०००।२०००।२०००।१०००।५०० घटाएं जो अवशेष रहै ५५२।।१-। ३२१०।१०÷१९।१४८४।२÷१९। १४८४२।२÷१९। ३२१०।१०÷१९।५५२।। ÷१९ ताका आधा किएं जो प्रमाण होय २७६।६÷१९।१६०५।५÷१९।७४२।।१÷ ७४२।।१÷१९।१६०५।५÷१९।२७६।६÷१९ तितनी दूर तो नदी पर्वत उपरि आवे है। अपनां अपनां क्षेत्रविषै होइ समुद्रकौं प्रवेश करै है। **भावार्थ**–रोहित नदी [illegible] निकासि सूधी महा हिमवत्‌के तटपर्यंत सोलहसै पांच योजन उगणीसवां भाग तांई [illegible] क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि तहांतैं निकसि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई आइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ [illegible] विषै प्रवेश करै है। बहुरि रोहितास्या नदी पद्मद्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी [illegible] पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग तांई आइ हैमवत क्षेत्रविषै कुंडविषै [illegible] निकसि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई जाइ मुडि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। हरित नदी तिगिंछ द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी निषधके तटपर्यंत चहोतरिसै [illegible] योजन एक उगणीसवां भाग तांई आइ हरि क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिके [illegible] तांई जाइ मुडि करि पूर्व सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि हरिकांता नदी [illegible] द्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी महा हिमवतके तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग तांई आइ हरिक्षेत्रविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै तांई जाइ मुडि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीता नदी केसरि द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी नील पर्वतके तटपर्यंत चहोत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग पर्यंत आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषैं पडि सूधी मेरुगिरिका उरां तांई आइ मुडि पूर्व सनमुख होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीतोदा नदी तिगिंछ द्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी निषधका तट पर्यंत चहोतरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग तांई आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि सूधी मेरुगिरिका उरां तांई जाइ मुडि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नारी नदी महापुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग पर्यंत आइ रम्यक क्षेत्रविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नरकांता नदी केसरी द्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी नील पर्वतका तट पर्यंत चहोतरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग तांई आइ रम्यक क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई मुडि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सुवर्णकूला नदी पुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी शिखरी पर्वतका तट पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग पर्यंत आइ हैरण्यवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुडि करि पूर्व सन्मुख होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि रूप्यकूला नदी महापुंडरीक द्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग तांई आइ हैरण्यवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुडि करि [illegible]

गुणा होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। इहां पर्वत उपरि नदी आवनें आदिविषै योजननिका प्रमाण जंबूद्वीप अपेक्षा कह्या है अन्यत्र धातुकीखंड पुष्करार्धविषै प्रमाण भी ऐसें ही यथासंभव जाननां ॥ ५९८ ॥

आगें रक्ता रक्तोदा आदि नदीनिका प्रणालिका आदिकका प्रमाण कहै हैं;—

गंगादुगं व रत्तारत्तोदा जिब्भियादिया सव्वे।
सेसाणं पि य णेया तेवि विदेहोत्ति दुगुणकमा ॥ ५९९ ॥

गंगाद्विकं व रक्तारक्तोदा जिह्विकादिका सर्वे।
शेषाणामपि च ज्ञेयाः तेपि विदेहांतं द्विगुणक्रमाः ॥ ५९९ ॥

अर्थ—गंगाद्विक जो गंगासिंधु तिनका जैसें वर्णन किया तैसे ही रक्ता रक्तोदाका वर्णन जाननां। विशेष इतना पद्मद्रहकी जायगा पुंडरीक द्रह कहनां हिमवत पर्वतकी जायगा शिखरी कहनां। बहुरि अवशेष जिह्विका आदि प्रमाण विशेष समान जाननें। बहुरि सर्व अवशेष नदीनिके भी प्रणालिका कुंड आदि विशेषनिका व्यासादिकका प्रमाण सो भरत ऐरावत संबंधी नदीनितैं अनुक्रमतैं विदेह संबंधी नदीपर्यंत दूणा दूणा जाननां ॥ ५९९ ॥

आगें तिन नदीनिके तीरनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

गंगदु रत्तदु वासा सपादछण्णिग्गमे विदेहोत्ति।
दुगुणा दसगुणमंते गाहो वित्थार पण्णंसो ॥ ६०० ॥

गंगाद्वयोः रक्ताद्वयोः व्यासाः सपादषट् निर्गमे विदेहांतम्।
द्विगुणा दशगुणा अंते गाधः विस्तारः पंचाशदंशः ॥ ६०० ॥

अर्थ—आगें तिन नदीनिका विस्तार कहैं हैं। गंगाद्विक कहिए गंगासिंधु अर रक्ताद्विक कहिए रक्तारक्तोदा इनका व्यास जो चौड़ाईका प्रमाण सो निर्गमे कहिए द्रहसौं निकसितैं सवा छह योजन है। अर अन्य नदीनिका विदेह संबंधी नदीनि पर्यंत दोय दोय नदीनिका दूणा दूणा क्रमतैं है। बहुरि सर्व नदीनिका अंते कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेंविषै द्रहतैं निकसनेतैं दशगुणा व्यास है। जैसें गंगाका साढा बासठियोजन बहुरि सर्व नदीका गाध कहिए उंडाईका प्रमाण सो अपने अपने व्यासके प्रमाणतैं पचासवैं भाग प्रमाण है जैसें गंगाका आधयोजन। ऐसें ही अन्यनदीनिका जाननां ॥ ६०० ॥

णदिणिग्गमे पवेसे कुंडे अण्णत्थ चावि तोरणयं।
बिंबजुदं उवरिं तु दिकण्णावाससंजुत्तं ॥ ६०१ ॥

नदीनिर्गमे प्रवेशे कुंडे अन्यत्र चापि तोरणकम्।
बिंबयुतं उपरि तु दिक्कन्यावाससंयुक्तम् ॥ ६०१ ॥

अर्थ—नदीनिका निर्गमे कहिए निकसनैका द्रहका द्वार अर प्रवेश कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेंका द्वीपके कोटका बहुरि कुंडे कहिए कुंडतैं निकसनेंका द्वार बहुरि अन्यत्रापि कहिए और भी जायगां इनविषै उपरि जिन बिंब करि संयुक्त अर दिक्कुमारीनिके मंदिरनि करि संयुक्त तोरण हैं ॥ ६०१ ॥

आगें पूर्वै कहे जे थर्व अर थर्वाटर तीन तिनके विस्तारका प्रमाण ... कहै हैं;—

तत्तोरणवित्थारो सगसगणदिवाससरिसगो उदओ ।
वासादु दिवड्ढगुणो सव्वत्थ दलं हवे गाहो ॥ ६०२ ॥
तत्तोरणविस्तारः स्वकस्वकनदीव्याससदृशकः उदयः ।
व्यासात् द्व्यर्धगुण्यः सर्वत्र दलं भवेत् गाधः ॥ ६०२ ॥

अर्थ—तिन तोरणद्वारनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो तौ अपनां अपनां ... व्यास समान है । बहुरि व्यासतैं ड्यौढ गुणा उदय कहिए उचाईका प्रमाण है । जैसे ... कका निर्गम द्वारका तोरण सवा छह योजन चौड़ा अर नव योजन तीन आठवां भाग ... ऊंचा है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि सर्वत्र तोरणनिका गाध कहिए ऊंडाई ... योजन प्रमाण है । इन गंगा आदि नदीनिका ऐसैं गमनादि जाननां॥ ६०२ ॥

ऐसैं कह्या त्रैराशिक करि ल्याया हुवा भरत क्षेत्रविषै व्यासकौं कहै हैं;—

विजयकुलद्दी दुगुणा उभयंतादो विदेहवस्सोत्ति ।
गुणपिंडदीवसगगुणगारो हु पमाणफलइच्छा ॥ ६०३ ॥
विजयकुलाद्रयः द्विगुणा उभयांततः विदेहवर्षान्तं ।
गुणपिंडद्वीपस्वकगुणकारो हि प्रमाणफलेच्छाः ॥ ६०३ ॥

अर्थ—विजय कहिए क्षेत्र अर कुलाचल पर्व्वत ते दोऊ दक्षिण उत्तर दिशातैं क्रमतैं विदेह क्षेत्र पर्यंत दूणे दूणे हैं । तहां गुणकारका पिंड अर द्वीप अर स्वकीय गुणकार इनकौं प्रमाण फल इच्छा कीजिए इसतै त्रैराशिक करि तिस तिस क्षेत्र वा पर्वतनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण है ल्यावनां । **भावार्थ**—सर्व गुणकारनिका जोड़ दिएं एकसौ निवै होइ सो तौ सर्वत्र प्रमाण राशि करिए । बहुरि जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो सर्वत्र फलराशी करिए। बहुरि दोऊ तरफ विदेह पर्यंत दूणा दूणा गुणकार सो भरतका एक हिमवत्का दोय हैमवतका च्यारि महा हिमवत्का आठ हरिका सोलह निषधका बत्तीस विदेहका चौसठि नीलका बत्तीस रम्यकका सोलह रुक्मिका आठ हैरण्यवतका च्यारि शिखरीका दोय ऐरावतकौं एक गुणकार है । सो इच्छाराशि करि ... फल राशिकौं इच्छा करि गुणि प्रमाण राशिका भाग दिएं अपनां अपनां क्षेत्र वा कुलाचलका चौड़ाईका प्रमाण आवै है ॥ ६०३ ॥

आगैं तैसे ही त्रैराशिक करि सिद्ध भया विदेहके विष्कंभका अंक ताहि प्रतिपादन करता संता इहांतैं उपरि कहिएगे जे विदेह क्षेत्रादिक तिनके प्रमाण ल्यावनेंका विधान कहै हैं;—

भरहस्स य विक्खंभो जंबूदीवस्स णउदिसदभागो ।
पंचसया छव्वीसा छच्च कला ऊणवीसस्स ॥ ६०४ ॥
भरतस्य च विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः ।
पंचशतानि षड्विंशानि षट् च कला एकोनविंशतेः ॥ ६०४ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका विष्कंभ जो व्यास सो जंबूद्वीपके व्यासके एकसौ निवैवां भाग प्रमाण। सो कैसा है? पांचसै छब्बीस योजन अर एक योजनका उगणीस भागविषै छह कला प्रमाण भरतका विष्कंभ है ॥ ६०४ ॥

चुलसीदि छतेत्तीसा चत्तारि कला विदेहविक्खंभो
णदिहीणदलं विजयावक्खारविभंगवणदीहा ॥ ६०५ ॥

चतुरशीतिः षट्त्रयस्त्रिंशत् चतस्रः कला विदेहविष्कंभः।
नदीहीनदलं विजयवक्षारविभंगवनदीर्घं ॥ ६०५ ॥

अर्थ—चौरासी छह तेतीस इन अंकनि करि तेतीस हजार छसै चौरासी योजन ३३६८४ अर एक योजनकी उगणीस कलाविषै च्यारि कला इतना विदेह क्षेत्रका विष्कंभ कहिए चौडाईका प्रमाण है। तिहके बीचि सीता वा सीतोदा नदीका प्रवाह है। ताते विदेह विष्कंभमैंसौ नदीका विष्कंभ घटाएं अवशेषका आधाका जो प्रमाण सोई बत्तीस विदेह क्षेत्र सोलह वक्षार गिरि बारह विभंगा नदी देवारण्यादि वन इनका लंबाईका प्रमाण है। सो विदेह विष्कंभ ३३६८४।४÷१९ मैंसौं पांच सै योजन नदी व्यास घटाएं अवशेष ३३१८४।४÷१९ को आधा किए सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला तहां दीर्घताका प्रमाण होइ ॥ ६०५ ॥

अब विदेह क्षेत्रके मध्य तिष्ठता ऐसा जु मेरुगिरि ताका स्वरूपकूं कहै हैं;—

मेरू विदेहमज्झे णवणउदिदहेक्कजोयणसहस्सा।
उदयं भूमुहवासं उवरुवरिगवणचउक्कजुदो ॥ ६०६ ॥

मेरुः विदेहमध्ये नवनवतिदशैकयोजनसहस्राणि।
उदयः भूमुखव्यासः उपर्युपरिगवनचतुष्कयुतः ॥ ६०६ ॥

अर्थ—विदेहका मध्य प्रदेशविषै मेरुगिरि है ताका निन्याणवै दश एक हजार योजन उदय भूमुख व्यास है। भावार्थ—मेरु निण्याणवै हजार योजनको ऊंचा है। भूमिविषै दश हजार योजन चौडा है। ऊपरि एक हजार योजन चौडा है। बहुरि सो मेरु उपरि उपरि कटनीविषै प्राप्त ऐसे जो च्यारि वन तिन करि संयुक्त है ॥ ६०६ ॥

अब वन चतुष्टयके नाम अर तिनका अंतरालको प्रतिपादन करै है;—

भू भद्दसाल साणुग णंदणसोमणसपांडुगं च वणं।
इगिपणपणबावत्तरिदपंचसयाणि गत्तूणं ॥ ६०७ ॥

भुवि भद्रशालं सानुकं नंदनसौमनसपांडुकं च वनम्।
एक पंचपनद्वासप्तातिदशपंचशतानि गत्वा ॥ ६०७ ॥

अर्थ—भद्रसाल नामा वन सो भूतल कहिए मेरुकै मूलि पृथ्वी ऊपरि है। बहुरि नंदन सौमनस पांडुक ए वन मेरुकी कटनीविषै प्राप्त है। बीचि बीचि मेरुका विष्कंभ घटै करि जो गिरदविषै कटनी है तहां पाईए है। सो एक एक वन बहुतरि करि शुष्का हुवा दर्शनं देखन

जाइ तिष्ठै है। **भावार्थ**—मेरुगिरिकै चौगिरद भद्रसाल नामा वन तौ पृथ्वी ऊपरि है। तहांतै एक गुणित पांचसै ताका पांचसै योजन ऊपरि जाइ नंदनवन है। बहुरि तहां एकसौ पचीस तीह करि गुणित पांचसै ताका बासठि हजार पांचसै योजन ऊपरि जाइ सौमनस वन है। बहुरि तहांतै बहत्तरि गुणित पांचसै ताका छत्तीस हजार योजन ऊपरि जाइ पांडुक वन है ॥ ६०७ ॥

आगै तिन वननिविषै तिष्ठते वृक्षनिकौं कहै है,—

मंदारचूदचंपयचंदणघणसारमोचचोचेहिं।
तंबूलिपूगजादीपहुदीसुरतरुहि कयसोहं ॥ ६०८ ॥
मंदारचूतचंपकचंदनघनसारमोचचोचैः।
तांबूलीपूगजातिप्रभृतिसुरतरुभिः कृतशोभानि ॥ ६०८ ॥

अर्थ—मंदार अर आंब चंपा चंदन घनसार नाडियर तांबूली सुपारी जाय इत्यादि देव वृक्षनि करि कीनी है शोभा जिनिनैं ऐसे ते वन हैं ॥ ६०८ ॥

अब और मेरुनिका वननिके अंतराल निरूपणकरनेके मिस करि उचाईका प्रमाण कहै—

पणसय पणसयसहियं पणवण्णसहस्सयं सहस्साणं।
अट्ठावीसिदराणं सहस्सगाढं तु मेरूण ॥ ६०९ ॥
पंचशतं पंचशतसहितं पंचपंचाशत्सहस्रकं सहस्राणां।
अष्टाविंशतिरितरेषां सहस्रगाधस्तु मेरूणाम् ॥ ६०९ ॥

अर्थ—इतर जे धातुकी खंड पुष्करार्द्ध संबंधी च्यारि मेरु तिनकै पृथ्वी ऊपरि भ[illegible]
वन है। तहांतै पांचसै योजन ऊपरि जाइ नंदन है। तहां पांचसै सहित पचावन हजा[illegible]
५५५०० ऊपरि जाइ सौमनस वन है। बहुरि तहांतै अठाईस हजार योजन ऊपरि जाइ [illegible]
वन है। ऐसे वननिका अंतरालके इनका जोड़ दिए चौरासी हजार योजन भए सोई ति[illegible]
निकी उचाईका प्रमाण जानना। बहुरि पांचिनी मेरुनिकै गाढ कहिए पृथ्वीविषैं नींव सो [illegible]
योजन प्रमाण जानना ॥ ६०९ ॥

आगै तिन वननिका विस्तार कौं निर्देश है,—

बावीसं च सहस्सा [illegible] वासं।
[illegible] वणाणि [illegible] ॥ ६१० ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ ६१० ॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुकै भद्रसाल वन तौ पूर्व पश्चिम दिशा विषै [illegible] है। [illegible] ॥ ६१० ॥

आगें तिस वन चतुष्टयविषें तिष्ठते जे चैत्यालय तिनकी संख्या कहैं हैं;—

एक्केक्कवणे पडिदिसमेक्केकजिणालया सुसोहंति।
पडिमेरुमुवरि तेसिं वण्णणमणुवण्णइस्सामि ॥ ६११ ॥
एकैकवने प्रतिदिशमेकैकजिनालयाः सुशोभंते।
प्रतिमेरूपरि तेषां वर्णनमनुवर्णयिष्यामि ॥ ६११ ॥

अर्थ—मेरु मेरु प्रति एक एक वनविषै एक एक दिशा प्रति एक एक चैत्यालय है। ते
६ मेरु प्रति सोलह चैत्यालय सोभै हैं। तिनि चैत्यालयनिका वर्णन उपरि पीछैं नंदीश्वर द्वीपका
तैनका अवसरविषै वर्णन करौंगा ॥ ६११ ॥

आगें सुदर्शन मेरुकै दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण कहैं हैं;—

पढमवणड्ढासीदंसो दक्खिणउत्तरगभद्दसालवणं।
बिसदं पण्णासहियं खुल्लयमंदरणगेवि तहा ॥ ६१२ ॥
प्रथमवनाष्टाशीत्यंशः दक्षिणोत्तरगभद्रशालवनम्।
द्विशतं पंचाशदधिकं क्षुल्लकमंदरनगेपि तथा ॥ ६१२ ॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुकै पूर्व पश्चिम भद्रसाल वनका प्रमाण बाईस हजार योजन कह्या ताका
अठ्यासीवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण है। सो पचास सहित दोयसै
योजन है। भावार्थ—सुदर्शन मेरुकै चारयौं गजदंतनिकै वीचि च्यारौं दिशानिविषै भद्रसाल वन
है सो पूर्व पश्चिमविषै तो बाईस हजार योजन चौड़ा है। दक्षिण उत्तरविषै अढ़ाईसै योजन
चौड़ा है। बहुरि क्षुल्लक मंदर नग कहिए छोटे च्यारि मेरुगिरि तिनविषै भी तथा कहिए तैसें ही
जानें कहिए हैं। पूर्व पश्चिम भद्रसालका विष्कंभ ताकै अठ्यासीवें भाग प्रमाण ही दक्षिण उत्तर
भद्रसालका विष्कंभ है ॥ ६१२ ॥

वेदी वणुभयपासे इगिदलचरणुदयवित्थरोगाढो।
हेमी सघंटघंटाजालसुतोरणग बहुद्दारा ॥ ६१३ ॥
वेदी वनोभयपार्श्वे एकदलचरणोदयविस्तारावगाधाः।
हैमी सघंटघंटाजालसुतोरणका बहुद्वारा ॥ ६१३ ॥

अर्थ—भद्रसालादि वननिकै बाह्य अभ्यन्तर दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी हैं। जैसें बागकै
कांगुरा बिना भीति हो है तैसें जो होइ ताका नाम वेदी है। सो वेदी एक योजन ऊंची आध
योजन चौड़ी पाव योजन जाकी नीव ऐसी है। बहुरि सुवर्णमई है। बहुरि महा
घंटा अर छोटी घंटानिकर सोभित है ऐसे भले तोरणनि करि संयुक्त जे बहुत द्वार जाकै पाईए हैं
ऐसी वेदी है। *आगें मेरुका चित्रा पृथ्वीके तलविषै व्यास स्थानविषै बहुरि नंदन सौमनस वनका*
व्यासादिक वा तिनकै निकटि मेरुका व्यास उच्चतादि स्थानविषै हानिचय स्थानकौं गाथा
तीन करि कहैं हैं। तहा प्रथम ऐसा त्रैराशिक जानना। मेरुका उपरि मुख व्यास हजार योजन
है तिसकौं मूलविषै भूमि व्यास दश हजार योजन तामैं घटाएं नव हजार रहे। सो निन्याणवै

हजार योजनकी उचाईविषै नव हजार योजन प्रमाण हानि चय होइ तौ एक योजन केता हानि चय होइ ऐसें करि नव करि अपवर्तन किएं एक योजनका ग्यारहवां प्रमाण आया। एक योजनकी उँचाई भएं व्यासविषै इतना घटै ॥ ६१३ ॥

बहुरि याकौं धरि और त्रैराशिकका विधान कहिए है;—

इगिजोयण एगारहभागो जदि वड्ढदे पहायदि वा।
तलणंदणसोमणसे किमिदि.चयं हाणिमाणिज्जो ॥ ६१४॥

एक योजनस्य एकादशभागः यदि वर्धते प्रहीयते वा।
तलनंदनसौमनसे किमिति चयं हानिरानेतव्यम् ॥ ६१४ ॥

अर्थ—एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका ग्यारहवां भाग जो नीचैकी घटै वा उपरि अपेक्षा नीचै वधै तौ मेरुका तलकी उचाई हजार योजन पांचसै योजन समरून्द्रतैं ऊपरि सौमनसकी उचाई साढा इकावन हजार योजन तीहविषै वधै वा घटै ऐसें त्रैराशिक करि हानिचय ल्यावनां। उपरि अपेक्षा घटनेका नाम हानि अपेक्षा वधनेका नाम चय तातैं हानिचय ऐसा नाम कह्या सो तीनों जायगा प्रमाण योजन फलराशि एकका ग्यारहवां भाग इच्छा राशी पांचसै हजार साढा इकावन हजार व्यासनिविषै वृद्धि निषै योजन अर दश ग्यारहवां भाग हो है। नंदनविषै हानि पैंतालीस पांच ग्यारहवां भाग हो है। सौमनसविषै हानि च्यारि हजार छसै इक्यासी योजन नव भाग हो है ॥ ६१४ ॥

सगसगहाणिविहीणे भूवासे चयजुदे मुहव्वासे।
गिरिवणबहिरब्भंतरतलवित्थारप्पमा होदि ॥ ६१५ ॥

स्वकस्वकहानिनिहीने भूव्यासे चययुते मुखव्यासे।
गिरिवनबाह्याभ्यन्तरतलविस्तारप्रमा भवति ॥ ६१५ ॥

अर्थ—मेरु गिरिकै तीह तीह कटनीका भू व्यास कहिए नीचला चौडाईका प्रमाण विषै अपनी अपनी हानिका प्रमाणकों घटाएं। बहुरि तीह तीह कटनीका मुख व्यास उपरिका चौडाईका प्रमाण तिह तीहविषै अपना अपना चयका प्रमाण मिलाएं मेरुगिरिका विस्तार हो है। वा वनका बाह्य अभ्यन्तर विस्तारका प्रमाण हो है। सोई कहिए है। पूर्वैं जो मेरुतलविषै हानिचय निषै योजन अर दश ग्यारहवां भाग याकौं मेरुका पृथ्वीविषै व्यास हजार योजन तामैं मिलाएं दश हजार निषै योजन अर दश ग्यारहवां भाग प्रमाण चित्रा पृथ्वी अंत जहां है तहां नीचै मूलविषै मेरुका तल व्यास है। यामैं निसही निषै योजनका दश ग्यारहवां भाग प्रमाण हानि घटाएं दश हजार योजन प्रमाण इस सम पृथ्वीकै निकटि मेरुका भू व्यास है। बहुरि एक योजनका ग्यारहवां भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तो निषै योजन दश ग्यारहवां भाग घटनेविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि समच्छेद करि अंश हानिको मिलाइ९९० ÷ ११। ÷ ११ ग्यारहका अपवर्तन किएं मेरु तलतैं लगाय इस पृथ्वी पर्यंत मेरुकी उँचाई एक हजार योजन प्रमा

। बहुरि नंदनवनका हानिचय इक्यावन योजन दोय ग्यारहवां भाग सो मेरुका भू व्यास १०००० विषै घटाएं नव हजार नवसै चौवन योजन अर छह ग्यारहवां भाग प्रमाण वन सहित मेरुका नंदनवनविषै बाह्य व्यास हो है । बहुरि तहां हानिचयका अंश ५–११ ताकौ ५५ निकौ भेद करि लिखिए पांचका ग्यारहवां भाग भया तहां एकका ग्यारहवां भाग घटनेविषै एक योजन उंचाई होइ तौ पांचका ग्यारहवां भागके घटनेविषै कैती उंचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि साढा तिनसै पचपन योजन नंदनवनकी उंचाईका प्रमाण हो है । बहुरि नंदनवनका २ व्यासविषै नंदन वनका पांचसै योजन ताकौ दोय पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूना किएं हजार सो घटाएं जो अवशेष आठ हजार नवसै चौवन योजन छह ग्यारहवां भाग प्रमाण नंदनवनकै अभ्यन्तर वन बिना मेरुका व्यास प्रमाण है । सो समवृत्त है । नंदनवनतैं उपरि पूर्वोक्त उंचाई ताईं मेरुगिरि समान चौडाईका प्रमाण धरै है ॥ ६१५ ॥

आगै सौमनसकी उंचाई ल्यावनेका विधान कहै हैं; –

एयारंसभागहाणे एयुदओ दसगपसु किं मज्झे ।
णंदणसोमणसुवरिं सुदंसणे सरिसरंदुदओ ॥ ६१६ ॥
एकादशांशभागहाने एकोदय दशशतेषु किं मध्ये ।
नन्दनसौमनसोपरि सुदर्शने सदृशोदयः ॥ ६१६ ॥

अर्थ—एकका ग्यारहवां भाग घटनेविषै एक योजन उंचाई होइ तौ दशसै १००० का घटनेविषै किती उंचाई होइ ऐसै त्रैराशिक किएं ग्यारह हजार योजन लब्धराशि भया सोई सुदर्शन मेरुविषै उपरि नंदन सौमनसविषै सम रुंदकी उंचाईका प्रमाण है । **भावार्थ**—मेरुतलतैं लगाय नंदन पर्यंत तौ क्रमतैं घटता चौडा है । बहुरि तहां सर्वत्र गिरदविषै पांचसै योजन चौडी कटनी छूटी है सोई नंदन वन है । तिस वनतैं मध्य मेरु ग्यारह हजार योजनकी उंचाई पर्यंत समान चौडा है । सो नंदन वनका दोऊ पार्श्वनिका हजार योजन एकै साथि मेरुका व्यासविषै घट्या सो क्रमतैं जितनी उंचाईविषै हजार योजनका व्यास घटता तितनी उंचाई ताईं किछू भी घट्या नाहीं समान चौडा धर्‍या गया है । उपरि क्रमतैं बहुरि घटता है । बहुरि सौमनसपर्यंत हानिचयका पूर्वोक्त प्रमाण च्यारि हजार एकसै इक्यासी योजन नव ग्यारहवां भाग ताकौ नंदनवनकै अभ्यन्तर मेरु व्यास ८९५४।६ – ११ विषै घटाएं च्यारि हजार दोयसै बहत्तरि योजन अर आठ ग्यारहवां भाग प्रमाण सौमनस वन सहित मेरु व्यासरूप सौमनसविषै बाह्य व्यास हो है । बहुरि सौमनसका हानिचय ४६८१।९ ÷ ११ के अंश अंशी मिलाइ ५१५०० – ११ एकका ग्यारहवां भाग घटनेविषै एक योजन उदय होय तौ साढा इक्यावन हजारका ग्यारहवां भाग घटनेविषै केता उदय होइ । ऐसै त्रैराशिक करि ग्यारहका अपवर्तन किएं नंदन वनतैं समरुंद उपरि सौमनस वन पर्यंत उंचाईका प्रमाण साढा इक्यावन हजार योजन है । बहुरि सौमनसका बाह्य ४२७२।८ – ११ विषै सौमनसका व्यास पांचसै योजन ताकौ दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणा करि १००० घटाएं तीन हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारहवां भाग प्रमाण सौमनस वनकै अभ्यंतर मेरुका व्यास हो है । इहां भी पूर्वोक्त

प्रकार ल्याया हुवा समान चौड़ाईका प्रमाण धरैं सौमनसतैं लगाय ग्यारह हजार योजन मेरुकी उचाईका प्रमाण जाननां। ताकै उपरि बहुरि क्रमतैं घटता है। बहुरि एक योजनका ग्यारह्वां भाग घटै तौ समरुंदतैं उपरि पचीस हजार योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं दोय हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारह्वां भाग प्रमाण पांडुक वनविषै हानिचय हो है। इनकौं सौ-२२७२।८÷११ मनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास ३२७२।८÷११ विषै घटाएं वनसहित मेरु व्यासरूप पांडुकवनका बाह्य व्यास एक हजार योजन प्रमाण हो है। बहुरि पांडुकवनका हानिचयका अंश ८÷११ अंशी २२७२ कौं मिलाइ २५००८÷११ पूर्वोक्त प्रकार एकका ग्यारह्वां भाग इत्यादि विधान करि त्रैराशिक किएं सौमनसके समरुंदतैं ऊपरि पांडुकवन पर्यंत व्यास लिएं क्रमतैं घटता मेरुका उचाईका प्रमाण पचीस हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ६१६ ॥

आगैं क्षुल्लक च्यारि मेरुनिका हानिचय ल्यावनेंकौं सूत्र कहैं हैं;—

भूमादो दसभागो हायदि खुल्लेसु णंदणादुवरिं।
सयवग्गं समरुंदो सोमणसुवरिंपि एमेव ॥ ६१७ ॥

भूमितः दशमभागः हीयते क्षुल्लकेषु नंदनादुपरि।
शतवर्गः समरुंदःसौमनसोपरि अपि एवमेव ॥ ६१७ ॥

अर्थ—भूमितः कहिए नीचैतैं एक योजनका दशवां भाग प्रमाण विष्कंभ घटनैंविषै एक योजन उचाई होइ तौ दोऊ पार्श्वनिका वन व्यास एक हजार योजन विष्कंभ घटनैंविषै केती उचाई चाहिए। ऐसैं त्रैराशिक कीएं सौका वर्ग जो दश हजार तीहरूप उचाईका प्रमाण पाया। सो क्षुल्लक छोटे च्यारि मेरुनिविषै नंदन वनतैं उपरि समान चौड़ाईका प्रमाण लिएं दश हजार योजन उचाई है। ऐसैं ही सौमनस वनकै उपरि भी समान विष्कंभ लिएं उचाई दश हजार योजन प्रमाण ही है। इन क्षुल्लक च्यारि मेरुनिविषै उपरि व्यास हजार योजन सो तौ मुख अर समभूमिविषै व्यास नव हजार च्यारिसै योजन सो भूमि तहां भूमिमैंसौं मुख घटाएं चौरासीसौ होइ। बहुरि क्षुल्लक मेरुनिकी चौरासी हजार योजन उचाईविषै चौरासीसै योजन विष्कंभ घटै तौ एक योजनकी उचाईविषै कितनां घटै। ऐसैं त्रैराशिक करि चौरासी करि अपवर्तन किएं एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग प्रमाण हानिचय हो है। याकौं धरि *एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ एक हजार* योजनकी उचाईविषै कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं सौ पाए सो क्षुल्लक मेरुनिका आगैं कहिए है। जो चौराणवैसै योजन भू व्यास तामैं मिलाएं नव हजार पांचसै योजन प्रमाण चित्रा पृथ्वी तलविषै मेरुनिका नीचैं ही नीचै विष्कंभ है। बहुरि यामैं सोई सौ योजन घटाएं चौराणवैसै योजन समभूमिविषै व्यास हो है। बहुरि एक योजनका दशवां भाग घटनैंविषै एक योजनकी उचाई होइ तौ सौ योजन घटनैंविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि मेरुतलतैं समभूमि पर्यंत उचाई हजार योजन प्रमाण आवै है। बहुरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ पांचसै योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं पचास योजन आए सो

[illegible] व्यासमैंसौं घटाएं नंदनवनके बाह्य मेरु व्यास तेरणवैसै पचास योजन हो है । बहुरि एकका [illegible] भाग घटनेविर्षे एक योजन उचाई होइ तौ पचास घटनेविर्षे केती होइ ऐसैं त्रैराशिक करि [illegible] योजन पाए सो भद्रसालतैं नंदनवन इतना ऊंचा है । बहुरि नंदनवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास नंदनवनके बाह्य मेरु व्यासमैंसौं घटाएं तियासीसै पचास योजन प्रमाण [illegible] अभ्यन्तर मेरु व्यास है सो इहां भी एककी उचाईविर्षे एकका दशवां भाग घटै तौ [illegible] हजारकी उचाईविर्षे केता घटै । ऐसैं त्रैराशिक किएं हजार योजन पाए सो ए हजार योजन एकैं साधि घटे तातैं नंदनवनतैं लगाइ दश हजार योजन पर्यंत समान ऊंचाई साढा तिया-[illegible]सै योजन प्रमाण व्यास है । बहुरि एकका उदयविर्षे एकका दशवा भाग घटै तौ साढा पैंतालीस [illegible] योजन उचाईविर्षे केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं साढा पैंतालीस योजन आए सो इतने तिस सम विष्कंभ व्यास ८३५० मैंसौं घटाएं अडतीससै योजन सौमनस वनके बाह्य व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविर्षे एक योजन ऊंचाई होइ तौ साढा पैंता-लीससै योजन घटनेविर्षे केती होइ । ऐसैं त्रैराशिक किएं साढा पैंतालीस हजार पाए सो इतनां नंदनसंबंधी समरुंद्रतैं उपरि सौमनस ऊंचा है । बहुरि एकका उंचाईविर्षे एक दशवां भाग घटै तौ दश हजार योजनकी उचाईविर्षे केता घटै ऐसैं त्रैराशिक कीएं हजार योजन होइ सोई सौम-नसवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास एकैं साधि सौमनसके बाह्य व्यास ३८०० मैंसौं घटैं अठाईसै योजन प्रमाण सौमनसके अभ्यन्तर मेरु व्यास हो है । सो इतने ही प्रमाण समान व्यास लिए उंचाईका प्रमाण दश हजार योजन पूर्वैं ल्याये ही थे । बहुरि एककी उचाईविर्षे एकका दशवां भाग घटै तौ अठारह हजार योजन उंचाईविर्षे केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं अठारहसै पाए सो सौमनसका अभ्यन्तर व्यासमैंसौं घटाएं हजार योजन प्रमाण मेरुका उपरि व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविर्षे एककी उचाई होइ तौ अठारहसै घटने-विर्षे केती होइ । ऐसैं त्रैराशिक करि अठारह हजार पाए सो इतनां सौमनस संबंधी समव्यासतैं उपरि पांडुकवन है । बहुरि सर्व मेरनिका पांडुकवनके मध्य चूलिका है । ताकी उंचाई वा नीचें ऊपरि व्यास सो आगैं कहेंगे ॥ ६१७ ॥

आगैं मेरनिका वर्ण विशेषकों निरूपै हैं;—

णाणारयणविचित्तो इगिसट्ठिसहस्सगेसु पढमादो ।
तत्तो उवरिं मेरू सुवण्णवण्णण्णिदो होदि ॥ ६१८ ॥

नानारत्नविचित्र एकषष्टिसहस्रकेषु प्रथमत ।
तत उपरि मेरु सुवर्णवर्णान्वित भवति ॥ ६१८ ॥

अर्थ—मेरु प्रथम नीचेतैं लगाय इकसठि हजार योजन उचाइ पर्यंत तो नानाप्रकार अनेक वर्ण रत्ननि करि विचित्र है । बहुरि तातैं उपरि मेरु केवल सुवर्ण सदृश वर्ण करि संयुक्त है ॥ ६१८ ॥

आगैं नंदनादि वननिविर्षे तिष्ठते जो भवन तिनके नामादिक गाथा च्यारिकरि कहै है -

माणीचारणगंधव्वचित्तणामाणि वट्टभवणाणि ।
णंदणचउदिसमुदओ पण्णासं तीस वित्थारो ॥ ६१९ ॥
मानीचारणगंधर्वचित्रनामानि वृत्तभवनानि ।
नंदनचतुर्दिक्षु उदयः पंचाशत् त्रिंशत् विस्तारः ॥ ६१९ ॥

अर्थ—मानी १ चारण १ गंधर्व १ चित्र १ ए हैं नाम जिनके ऐसे गोल मंदिर नंदन विषै पूर्वादि च्यारि दिशानिविषै हैं । तिनकी ऊंचाई पचास योजन चौड़ाई तीस योजन प्रमाण है ६१

सोमणसदुगे वज्जं वज्जादिप्पह सुवण्ण तप्पहयं ।
लोहिदअंजणहारिद्दपांडुरा दलिददलमाणा ॥ ६२० ॥
सौमनसद्विके वज्रं वज्रादिप्रभं सुवर्णं तत्प्रभं ।
लोहितांजनहारिद्रपांडुरा दलितदलमानाः ॥ ६२० ॥

अर्थ—सौमनस पांडुक इन दोऊ वननिविषै भी पूर्वादि दिशानिविषै च्यारि च्यारि गोल भवन हैं । ते कौन? वज्र १ वज्रप्रभ १ सुवर्ण १ सुवर्णप्रभ १ ए सौमनसविषै मंदिरनिके नाम हैं। लोहित १ अंजन १ हरिद्र १ पांडुर १ ए पांडुकविषै मंदिरनिके नाम हैं । तहां नंदनविषै मंदिर निका जो उचाई चौडाईका प्रमाण कह्या तातैं सौमनसविषै आधा अर तीहतैं भी पांडुकविषै आधा प्रमाण जानना ॥ ६२० ॥

आगै तिन भवननिके स्वामी अर तिनकी स्त्री तिनकौं कहै हैं;—

तब्भवणवदी सोमो यमवरुणकुवेरलोयवालक्खा ।
पुव्वादी तेसिं पुह गिरिकण्णा साड्ढकोडिमियं ॥ ६२१ ॥
तद्भवनपतयः सोमः यमवरुणकुबेराः लोकपालाख्याः ।
पूर्वादिषु तेषां पृथक् गिरिकन्यकाः सार्धकोटिमितम् ॥ ६२१ ॥

अर्थ—तिन भवननिके अधिपति स्वामी सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर १ नाम धारक [illegible] पूर्वादि दिशानिविषै तिष्ठै हैं । ये मंदिर लोकपालनिकै तिन एक एक लोकपालकै [illegible] तीन कोडि गिरि कन्या कहिये व्यंतरी देवांगना पाइए है ॥ ६२१ ॥

आगै तिनका आयु आदि कहै है,—

सोमदु वरुणदुगाऊ सड्ढदु पल्लमणं च देसूणं ।
ते [illegible] कमसो ॥ ६२२ ॥
सोमद्विके [illegible] देशोनम् ।
ते [illegible] क्रमात् ॥ ६२२ ॥

अर्थ—[illegible] प्रमाण है । [illegible] ॥ ६२२ ॥

आगै [illegible] कहै है,—

ते य सयंपहरिट्ठजलप्पहवग्गुप्पहा विमाणीसा ।
कप्पेसु लोयवाला पहुणो बहुसयविमाणाणं ॥ ६२३ ॥

ते च स्वयंप्रभारिष्टजलप्रभवल्गुप्रभा विमानेशाः ।
कल्पेषु लोकपालाः प्रभवः बहुशतविमानानाम् ॥ ६२३ ॥

अर्थ—ते सौधर्मके लोकपाल स्वर्गविषै स्वयंप्रभ १ अरिष्ट १ जलप्रभ १ वल्गुप्रभ १ विमाननिके क्रमतै ईश-स्वामी है । **भावार्थ**—लोकपालनिका स्वर्गविषै बसनेके विमान हैं । अर यहां मेरु उपरि भी तिनके भवन पाइए हैं । बहुरि ते लोकपाल बहुत सैकडां विमाननिके प्रभु हैं । इहां लाख छ्यासठि हजार छहसै छ्यासठि विमाननिके स्वर्गविषै अधिपति हैं ॥ ६२३ ॥

आगे नंदनवनविषै तिष्ठता व्यंतरदेवकौं परिवारसहित कहै हैं;—

बलभद्दणामकूडे णंदणगे मेरुपव्वदीसाणे ।
उदयमहियसयदलगो तण्णामो वेंतरो वसई ॥ ६२४ ॥

बलभद्रनामकूटे नंदनगे मेरुपर्वतैशान्याम् ।
उदयमहीकशतदलकः तन्नामा व्यंतरो वसति ॥ ६२४ ॥

अर्थ—मेरु पर्वतकी ईशान विदिशाविषै नंदनविषै पाइए ऐसा सौ योजन नीचै चौडा ताका आधा पचास योजन उपरि चौडा जो बलभद्र नामा कूट है । तींह उपरि बलभद्र नामा व्यन्तर देव बसै है ॥ ६२४ ॥

आगे नंदनवनविषै तिष्ठते जो भवन तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते जे कूटादिक तिनकौं गाथा तीन करि कहै हैं;—

णंदण मंदर णिसहा हिमवं रजदो य रुजयसायरया ।
वज्जो कूडा कमसो णंदणवसईण पासदुगे ॥ ६२५ ॥

नंदनो मंदरः निषधः हिमवान् रजतश्च रुचकसागरकौ ।
वज्रः कूटाः क्रमशः नंदनवसतीनां पार्श्वद्विके ॥ ६२५ ॥

अर्थ—नंदन १ मंदर १ अर निषध १ हिमवन अर रजत १ रुचक १ अर सागर १ वज्र निए आठ कूट क्रमतै नंदनवनविषै तिष्ठते जु वसती कहिए पूर्वोक्त च्यारि भवन तिनके दोऊ पार्श्व-१ विषै पाईए है ॥ ६२५ ॥

हेममया तुंगधरा पंचसयं तद्दलं मुहस्स पवा ।
सिहिरगिहे दिक्कण्णा वसंति तासिं च णामगिणं ॥ ६२६ ॥

हेममयाः तुंगधरा पंचशतं तद्दलं मुखस्य प्रमा ।
शिखरगृहे दिक्कन्या, वसंति तासां च नामानीमानि ॥ ६२६ ॥

अर्थ—ते कूट सुवर्ण मई हैं । बहुरि तिनकी उचाई पांचसै योजन है । नीचै भू व्यास पांचसै योजन है । ताका आधा अढाईसै योजन उपरि मुख व्यास है । तिन कूटनिके शिखर मंदरनिविषै दिक्कुमारी बसै हैं ॥ ६२६ ॥

तिनके ए नाम आगैं कहिए हैं;—

मेहंकर मेहवदी सुमेह मेहादिमालिणी तत्तो ।
तोयंधरा विचित्ता पुप्फादिममालिणिंदिदया ॥ ६२७ ॥

मेघंकरा मेघवती १ सुमेघा मेघादिमालिनी ततः ।
तोयंधरा विचित्रा पुष्पादिममाला अनिंदितका ॥ ६२७ ॥

अर्थ—मेघंकरा १ मेघवती १ सुमेघा १ मेघमालिनी १ तोयंधरा १ विचित्रा १ पुष्पमाला १ अनंदिता ए नाम हैं ॥ ६२७ ॥

आगैं नंदनविषै जे वावड़ी हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अग्गिदिसादो चउ चउ उप्पलगुम्मा य णलिणि उप्पलिया ।
वावीओ उप्पलुज्जल भिंगा छट्ठी दु भिंगणिभा ॥ ६२८ ॥

अग्निदिशः चतस्रः चतस्रः उत्पलगुल्मा च नलिनी उत्पलिका ।
वाप्यः उत्पलोज्ज्वला भृंगा षष्ठी तु भृंगनिभा ॥ ६२८ ॥

अर्थ—अग्निदिशातैं लगाय च्यारौं विदिशानिविषै च्यारि च्यारि वावड़ी हैं । तिनके नाम क्रमतैं कहिए हैं । उत्पल गुल्मा १ नलिनी १ उत्पला १ उत्पलोद्कला १ बहुरि भृंगा १ छठी भृंगनिभा १ ॥ ६२८ ॥

कज्जल कज्जलपह सिरिभूदा सिरिकंद सिरिजुदा महिदा ।
सिरिणिलय णलिणि णलिणादिमगुम्मिय कुमुद कुमुदपहा ॥ ६२९ ॥

कज्जला कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकांता श्रीयुता महिता ।
श्रीनिलया नलिनी नलिनादिमगुल्मी कुमुदा कुमुदप्रभा ॥ ६२९ ॥

अर्थ—कज्जला १ कज्जल प्रभा १ बहुरि श्रीभूता १ श्रीकांता १ श्रीमहिता १ श्रीनिलया १ बहुरि नलिनी १ नलिनगुल्मा १ कुमुदा १ कुमुदप्रभा १ ए वावड़ीके नाम हैं ॥ ६२९ ॥

मणितोरणरयणुब्भवसोवाणा हंसमोरजंतजुदा ।
पण्णदलदीहवासा दसगाहा सोलवावीओ ॥ ६३० ॥

मणितोरणरत्नोद्भवसोपानाः हंसमयूरयंत्रयुताः ।
पंचाशद्दलदीर्घव्यासाः दशगाधाः षोडशवाप्यः ॥ ६३० ॥

अर्थ—ते सोलह वावड़ी मणिमई तोरण द्वार अर रत्नमई सिवाणनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि हंस मोर आदिनिके यंत्र करि संयुक्त हैं । बहुरि ते पचास योजन लंबी ताकी आधी पचीस योजन चौड़ी दश योजन उंडी वावड़ी हैं ॥ ६३० ॥

आगैं तिनके मध्य प्रासाद हैं तिनका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरवावीमज्झे सोहम्मजुगलपासादा ।
पणपणदलचरणुच्छयवासा दलगाढचउरस्सा ॥ ६३१ ॥

दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधर्मयुगलप्रासादाः।
पंचघनदलचरणोच्छ्रयव्यासाः दलगाढचतुरस्राः ६३१ ॥

अर्थ—मेरुकी अपेक्षा दक्षिण उत्तर बावडीनिकै मध्य सौधर्म अर ईशान इंद्रके प्रासाद मंदिर है। तहां अग्नि नैऋति दिशानिविषै आठ बावडी हैं तिनिविषै सौधर्मके मंदिर हैं। अर वायु ऐशानवि दिशानिविषै आठ बावडी हैं तिनिविषै ईसानके मंदिर हैं। ते प्रासाद पाचके घनका आधा साढा बासठि योजन तौ ऊंचे हैं। अर ताहीका चौथा भाग सवा इकतीस योजन चौडे हैं। अर आध योजन जिनकी नींव है। ऐसे चौकोर मंदिर हैं॥६३१॥

सोचिदठाणासिदपरिवारेणिंदो ठिदो सपासादे।
सव्वमिणं कहियव्वं सोमणसवणेवि सविसेसं ॥ ६३२ ॥

स्वोचितस्थानसितपरिवारेणेंद्रः स्थितः स्वप्रसादे।
सर्वमिदं कथितव्यं सौमनसवनेपि सविशेषं ॥ ६३२ ॥

अर्थ—स्वर्गविषै सुधर्मा नाम सभाविषै जैसैं तिष्ठै हैं। तैसैं अपना अपना योग्य आस्थानविषै तिष्ठता अपना परिवारसहित अपना प्रसादविषै इहां इंद्र आवै है तब तिष्ठै है। बहुरि जो भद्रनिके पार्श्वनिविषै कूटादिक व अग्नादि दिशानिविषै बावडी वा तिनकै मध्य प्रासाद जैसैं नंदनवनविषै कहे तैसैं ही सर्व विशेष सहित सौमनस वनविषै भी जानने ॥ ६३२ ॥

अब याकै अनंतरि मेरुका शिखर ऊपरि तिष्ठती जे शिला तिनका नाम स्थान कहै है;—

पांडुकपांडुकंबलरत्ता तह रत्तकंबलक्ख सिला।
ईसाणादो कंचणरुप्पयतवणीयरुहिरणिहा ॥ ६३३ ॥

पांडुकपांडुकंबलरक्ता तथा रक्तकंबलाख्याः शिलाः।
ईशानात् कांचनरूप्यतपनीयरुधिरनिभाः ॥ ६३३ ॥

अर्थ—ईशानतैं लगाय च्यारयो विदिशानिविषै क्रमतैं कांचन कहिए सोना रूपा कहिए रूपो तपनीय कहिए तायो सोनो रुधिर कहिए लोही तीह समान वर्ण धरै ऐसा पांडुक १ पांडुकंबला १ रक्ता १ रक्तकंबला १ है नाम जिनके ऐसी च्यारि शिला मेरुकै मस्तकि पांडुक वन है तहां पाइए हैं ॥ ६३३ ॥

आगै ते शिला कौन संबंधी है कैसै तिनकी स्थिति है सो कहै है;—

भरहवरविदेहेरावदपुव्वविदेहजिणणिबद्धाओ।
पुव्ववरदक्खिणुत्तरदीहा अथिराथिरभूमिमुहा ॥ ॥ ६३४ ॥

भरतापरविदेहैरावतपूर्वविदेहजिननिबद्धाः।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अस्थिरास्थिरभूमिमुखाः ॥ ६३४ ॥

अर्थ—ते पांडुकादि शिला क्रमतैं भरतक्षेत्र पश्चिम विदेह ऐरावत क्षेत्र पूर्व विदेहनिविषै जे तीर्थंकर उपजै है तिन संबंधी हैं। तहां तिनका जन्माभिषेक हो है। बहुरि ते शिला क्रमतैं पूर्

पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि प्रति तीन हैं। बहुरि अविदर विदर भूमि सुगं मंदुर। विशेषनिका अर्थ मेरे समझनेमें न आया तातैं नाहीं लिख्या है ॥ ६३४ ॥

आगैं दृष्टांत करि तिन शिलानिका आकार वर्णन करि तिनकी ऊंचाई कहै हैं;—

अद्धिंदुणिहा सव्वे सयपण्णासट्ठदीहवासुदया।
आसणतियं तदुवरिं जिणसोहम्मदुगपडिबद्धं ॥ ६३५ ॥
अर्धेन्दुनिभाः सर्वाः शतपंचाशदष्टदीर्घव्यासोदयाः।
आसनत्रयं तदुपरि जिनसौधर्मद्वयप्रतिबद्धं ॥ ६३५ ॥

अर्थ—ते सर्व शिला अर्द्ध चन्द्रमाके आकार हैं। बहुरि सौ योजन लंबी हैं। पचास योजन चौड़ी हैं। आठ योजन मोटी हैं। तिन शिलानिकै उपरि तीर्थंकर सौधर्म ईशान संबंधी तीन सिंहासन हैं ॥ ६३५ ॥

आगैं तिन उपरि तीन सिंहासननिके स्वामी इत्यादिक विशेष कहै हैं;—

मज्झे सिंहासणयं जिणस्स दक्खिणगयं तु सोहम्मे।
उत्तरमीसाणिंदे भद्दासणमिह तयं वट्टं ॥ ६३६ ॥
मध्ये सिंहासनं जिनस्य दक्षिणगतं तु सौधर्मे।
उत्तरमीशानेंद्रे भद्रासनमिह त्रयं वृत्तम् ॥ ६३६ ॥

अर्थ—तिन तीन सिंहासननिविषैं मध्य वीचि तौ जिनेन्द्र देवका सिंहासन है। ताकी दक्षिण दिशाकौं प्राप्त सौधर्म इंद्रका भद्रासन है। उत्तर दिशाकौं प्राप्त ईशान इंद्रका भद्रासन है। इहां ए तीनौं आसन हैं ते गोल हैं ॥ ६३६ ॥

आगैं तिन आसननिका उदयादिक अर मेरुकी चूलिकाका स्वरूप कहै हैं;—

उदयं भूमुहवासं धणु पणपणसय तदद्धपुव्वमुहा।
वेलुरिय चूलियस्स य जोयण चत्तं तु बार चउ ॥ ६३७ ॥
उदयं भूमुखव्यासं धनुः पंचपंचशतं तदर्धपूर्वमुखानि।
वैडूर्यचूलिकायाश्च योजनं चत्वारिंशत् तु द्वादश चत्वारि ॥ ६३७ ॥

अर्थ—तिन आसननिकी उचाई पांचसै धनुष अर नीचैं चौड़ाई पांचसै धनुष उपरि चौड़ाई अढ़ाईसै धनुष प्रमाण है। बहुरि ते आसन पूर्वदिशाकौं सनमुख हैं। बहुरि पांडुकवनकै मध्य मेरुकी वैडूर्य रत्नमई चूलिका है ताकी उचाई चालीस योजन नीचैं चौड़ाई बारा योजन उपरि चौड़ाई च्यारि योजन प्रमाण है ॥ ६३७ ॥

आगैं कहे जु ए सर्व तिनका किछू विशेष कहै हैं;—

पव्वदवावीकूडा सव्वाओ पंडुगादिय सिलाओ
वणवेदितोरणेहिं णाणामणिणिम्मिएहिं जुदा ॥ ६३८ ॥
पर्वतवापीकूटाः सर्वे पांडुकादिकाः शिलाः।
वनवेदीतोरणैः नानामणिनिर्मितैः युताः ॥ ६३८ ॥

अर्थ—पर्वत पावरी कूट पादुक आदि शिला ए सर्व ही नाना प्रकार मणि कर निर्मापित हैं बन अर वेदी अर तोरण तिन करि संयुक्त जानने। पर्वतादिकके चौगिरद वन हैं तिनके वेदी । तीह वेदीके तोरणसहित द्वार पाइए है ॥ ६३८ ॥

आगे जंबूवृक्षका स्थानादिक परिवारसहित ग्यारह गाथानिकरि कहै हैं;—

णीलसमीवे सीदापुव्वतडे मंदराचलीसाणे।
उत्तरकुरुम्हि जंबूथली सपंचसयतलवासा ॥ ६३९ ॥

नीलसमीपे सीतापूर्वतटे मंदराचलैशान्यां।
उत्तरकुरौ जंबूस्थली सपंचशततलव्यासा ॥ ६३९ ॥

अर्थ—नील नामा कुलाचल पर्वतके समीपि दक्षिण सन्मुख जाती सीतानदीका पूर्व दिशासंबंधी मेरु पर्वतनै ईशान नामा विदिशा तहां उत्तरकुरु नामा भोगभूमिका क्षेत्रविषै जंबूनामा वृक्षकी स्थली है। जैसैं वृक्षके थांवला हूहां हो है तैसैं तहां स्थली जाननी सो वह स्थली पांचसै योजन प्रमाण है। तलव्यास कहिए नीचै चौडाई जाकी ऐसी है ॥ ६३९ ॥

अंते दलवाहल्ला मज्झे अडुदय वट्ट हेममया
मज्झे थलिस्स पीढीमुदयतियं अट्ठवारचऊ ॥ ६४० ॥

अंते दलबाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया।
मध्ये स्थल्याः पीठमुदयत्रयं अष्टद्वादशचतुः ॥ ६४० ॥

अर्थ—बहुरि सो स्थली अंतविषै छेहड़ै तौ आध योजन प्रमाण मोटी है। बहुरि मध्यविषै विचि आठ योजन ऊंची है गोल आकार लिए है अर सुवर्णमई है। बहुरि तीह स्थलीकै मध्य बीचि आठ योजन ऊंचा बारह योजन नीचै चौड़ा च्यारि योजन उपरि चौड़ा ऐसा पीठ है पीठ नाम पीठका है ॥ ६४० ॥

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेढिऊण ठिया।
कंचणवलयसमाणा बारंबुजवेदिया णेया ॥ ६४१ ॥

तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहिः प्रवेष्ट्य स्थिताः।
कांचनवलयसमानाः द्वादशांबुजवेदिकाः ज्ञेयाः ॥ ६४१ ॥

अर्थ—तीह स्थलीका उपरला भागविषै बाह्य बेढि करि सुवर्णका वलय समान आध योजन ऊंची ताकै आठवें भाग चौड़ी नाना रत्ननिकरि व्याप्त ऐसी बारह अंबुज वेदिका जाननी। भावार्थ—स्थलीकै उपरि प्रथम वेदीकों बेढि दूसरी वेदी है। दूसरीकों बेढि तीसरी है। ऐसैं बारह वेदी जाननी। ते सर्व वेदी सुवर्णमई रत्नजटित हैं आध योजन ऊंची हैं। एक योजनकै सोलह्वां भाग प्रमाण चौड़ी हैं ॥ ६४१ ॥

चउगोउरवं वेदीबाहिरदो पउमवेदियगे गुण्णं
तदिए सुरुत्तमाणं अट्ठदिसे अट्ठसयरुक्खा ॥ ६४२ ॥

सेनामहत्तराणां द्वादशे पश्चिमायां सप्तैव ।

मुख्ययुताः परिवाराः पद्मेभ्यः पंचाभ्यधिकाः ॥ ६४६ ॥

अर्थ—बारह्वा अंतरालविषै पश्चिम दिशाविषै सात प्रकार सेनाका जु महत्तर प्रधान तिनके सात जंबूवृक्ष हैं । ऐसें एक मुख्य वृक्ष संयुक्त सर्व परिवारके वृक्ष पद्म नामा द्रहविषै जो श्रीदेवीके कमलनिका प्रमाण कह्या था तातैं पाच अधिक जानने । इहां चौथा अंतरालविषै च्यारि देवांगनानिके वृक्ष अर एक मुख्य वृक्ष ऐसैं पाच अधिक जाननें । १०८।४।१६०००।४०००।३२०००। ४००००।४८०००।७।१ ए सर्व जंबूवृक्ष एक लाख चालीस हजार एकसौ बीस भए ॥ ६४६ ॥

दलगाढवासमरगय जोयणदुगतुंग सुथिरवरखंधो

पीढिय उवरिं जंबू वज्जदलट्ठवासदीह चउसाहा ॥ ६४७ ॥

दलगाढव्याससमरकत योजनद्विकतुंग सुस्थिरस्कंध. ।

पीठस्योपरि जंबू वज्रदलाष्टव्यासदीर्घ चतु शाख ॥ ६४७ ॥

अर्थ—आध योजन है गाध कहिए पृथ्वीविषै जड़ जाकी बहुरि मरकत मणिमई बहुरि पीठकै उपरि दोय योजन ऊचा बहुरि भलै प्रकार स्थिर है पेड जाका ऐसा मुख्य जंबूवृक्ष है । बहुरि स्कंध जो पेड ताकै उपरि वज्रमई आठ योजन चौडी आठ योजन लंबी च्यारि शाखा कहिए डाहली है ॥ ६४७ ॥

णाणारयणुवसाहा पवालसुमणा मिदिंगसरिसफला ।

पुढविमया दसतुंगा मज्झग्गे छघदुव्वासा ॥ ६४८ ॥

नानारत्नोपशाखा. प्रवालसुमनाः मृदंगसदृशफलाः ।

पृथ्वीमयः दशतुंग मध्येग्रे षट्चतुर्व्यास. ॥ ६४८ ॥

अर्थ—बहुरि सो जंबूवृक्ष नाना प्रकार रत्नमई उपशाखा कहिए छोटी डाहली ते है जाकै, ऐसा है । बहुरि प्रवाल कहिए मूंगा तीह समान वर्णन धरै है सुमन कहिए फूल जाकै, ऐसा है । बहुरि मृदंग समान है फल जाकै ऐसा है । बहुरि पृथ्वीकायमई है वनस्पतीरूप नाहीं है । जामुणिके वृक्षकासा आकार है । तातैं जंबूवृक्ष नाम है । बहुरि दश योजन ऊंचा है मध्यविषै छह योजन चौड़ा है । ऊपरि च्यारि योजन चौड़ा है । इस जंबूवृक्षकी पेडीका अर [illegible] ऐसैं अवस्थान जानना ॥ ६४८ ॥

उत्तरकुरुगिरिसाहे जिणगेहो सेससाहतिदयम्हि ।

आदरअणादराणं जक्खकुलुत्थाणमावासा ॥ ६४९ ॥

उत्तरकुरौ दिशाशाखायां जिनगेह शेषशाखात्रितये ।

आदरानादरयो यक्षकुलोत्पन्नयोरावासाः ॥ ६४९ ॥

अर्थ—तीहि [illegible] जंबूवृक्षकी [illegible] उपरि सो थी जिनमंदिर है । बहुरि अवशेष तीन [illegible] उपरि [illegible] आदर अर अनादर नाम [illegible] देव तिनके आवास हैं ॥ ६४९ ॥

आगैं परिवार वृक्षनिका प्रमाण अर तिनका स्वामित्वकौं कहैं हैं;—

जंबूतरुदलमाणा जंबूरुक्खस्स कहिदपरिवारा।
आदरअणादराणं परिवारावासभूदा ते ॥ ६५० ॥

जंबूतरुदलमाना जंबूवृक्षस्य कथितपरिवाराः ।
आदरानादरयोः परिवारावासभूतास्ते ॥ ६५० ॥

अर्थ—मुख्य जंबूद्वीपका जो उचाई आदि प्रमाण कह्या तीहसौं परिवाररूप अन्य जंबूवृक्षनिका आधा प्रमाण है बहुरि ते आदर अनादरनिका परिवारके आवास रूप हैं । भावार्थ—परिवाररूप जंबूवृक्षनिकी शाखानिकै उपरि आदर अनादर देवनिका जो परिवार तिनके मंदिर पाईए हैं ॥ ६५० ॥

आगैं शाल्मली वृक्षका स्वरूपकौं गाथा दोय करि कहैं हैं;—

सीतोदावरतीरे णिसहसमीवे सुरद्दिणेरदिए ।
देवकुरुम्हि मणोहररुप्पथले सामली सपरिवारो ॥ ६५१ ॥

सीतोदापरतीरे निषधसमीपे सुराद्रिनैर्ऋत्यां ।
देवकुरौ मनोहररूप्यस्थले शाल्मली सपरिवार· ॥ ६५१ ॥

अर्थ—उत्तर सनमुख जाती सीतोदा नदीका पश्चिम दिशा संबंधी तटविषै निषध कुलाचलकै समिप मेरुपर्वततैं नैऋत दिशाविषै देवकुरु भोगभूमिका जो क्षेत्र तहां मनोहर रूपामई शाल्मली वृक्षनिकी स्थली है । तहां अपनां परिवार वृक्षनिकरि सयुक्त शाल्मली वृक्ष हैं ॥ ६५१ ॥

जंबुसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्हि जिणगिहं सेसे ।
दिससाहतिए गरुडवइवेणूवेणादिधारिगिहं ॥ ६५२ ॥

जबूसमवर्णनः स दक्षिणशाखायां जिनगृह शेषे ।
दिशाशाखात्रये गरुडपतिवेणुवेण्वादिधारिगृहम् ॥ ६५२ ॥

अर्थ—यह शाल्मली वृक्ष जबूवृक्ष समान है वर्णन जाका ऐसा है सो वर्णन जंबूवृक्षका किया सोई सर्व याका जाननां। विशेष इतनां याकी दक्षिण शाखा उपरि जिनमंदिर है । अवशेष दिशा संबंधी तीन शाखानिकै उपरि गरुड कुमारनिकै स्वामी ऐसे वेणु अर वेणुधारीदेव तिनके मंदिर हैं । परिवार वृक्षनिकी शाखानिके उपरि इनहीके परिवाररूप देवादिकनिके मंदिर जाननें ॥६५२॥

आगैं भोगभूमिकर्मभूमिका विभाग कहैं हैं;—

कुरुओ हरिरम्मगभू हेमवदेरण्णवदखिदी कमसो ।
भोगधरा वरमज्झिमवराय कम्मावणी सेसा ॥ ६५३ ॥

कुरुः हरिरम्यकभुवौ हैमवतैरण्यवतक्षिती क्रमशः ।
भोगधराः वरमध्यमावराः कर्मावनयः शेषाः ॥ ६५३ ॥

अर्थ—देवकुरु अर उत्तर कुरुक्षेत्रविषै दोय उत्तम भोगभूमि हैं। बहुरि हरि अर रम्यक क्षेत्रविषै दोय मध्यम भोगभूमि हैं। बहुरि हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्रविषै दोय जघन्य भोगभूमि हैं। अवशेष सर्व भरत ऐरावत विदेह क्षेत्रविषै कर्मभूमि है ॥ ६५३ ॥

आगे यमकगिरिका स्वरूप गाथा दोय करि कहै हैं;—

णीलगिरिदहादु गया सहस्समुभयत्थ तडे वरणाणं ।
दुगदुगसेला पुव्वो चित्तो अवरो विचित्तक्खो ॥ ६५४ ॥
नीलगिरितो गत्वा सहस्रमुभये तटे वरण्योः ।
द्विकद्विकशैलाः पूर्वः चित्रः अपरः विचित्राख्यः ॥ ६५४ ॥

अर्थ—नील गिरिते कुलाचलते मेरुकी तरफ आगे हजार योजन जाइ उहां सीता सीतोदा नदीनिका पूर्व पश्चिम दोऊ तटनिविषै दोय पर्वत हैं । तिनविषै सीताका पूर्वतटविषै प्राप्त चित्र नामा पर्वत है । पश्चिम तटविषै प्राप्त विचित्र नामा पर्वत है ॥ ६५४ ॥

जमगो मेघो वट्टा पंचसयंतरठिया सहुदयधरा ।
वदणं सहस्समद्धं गिरिणामसुरा वसंति गिरिहूदे ॥ ६५५ ॥
यमक मेघ वृत्ताः पंचशतान्तरस्थिताः सहुदयकाः ।
वदनं सहस्रार्धं गिरिनामसुरा वसंति गिरिहूदे ॥ ६५५ ॥

अर्थ—सीतोदाका पूर्व तटविषै यमक अर पश्चिम तटविषै मेघनामा पर्वत है । ऐसें ए च्यारि यमकगिरि गोल हैं । बहुरि चित्रविचित्रकै बीचि अर यमक मेघकै बीचि पांचसै योजनका अंतराल है और अंतरालविषै सीता वा सीतोदा नदी जाननी । बहुरि तिन च्यारयों पर्वतनिकी उचाई हजार योजन नीचे चौडाई हजार योजन ऊपरि चौडाई पांचसै योजन प्रमाण है । बहुरि तिन पर्वत कूटनिविषै ऊपरि अपना अपना जो पर्वतका नाम तिस ही नाम धारक देव बसै हैं ६५५

आगे मेरुका पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानिविषै स्थित जे द्रह तिनका प्रमाण बहुरि एक एक द्रहके दोऊ तटनिविषै तिष्ठते ऐसे कांचन पर्वत तिनकी संख्या तीन्यौं तिनका उत्सेध सहित गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

गमिय तदो पंचसयं पंचदहा पंचसयपविरलंतरिया ।
कुरुभद्दसालमज्झे अणुणदिदीहा हु पउमदहसरिसा ॥ ६५६ ॥
गत्वा ततः पंचशतं पंच ह्रदाः पंचशतविरलांतरिताः ।
कुरुभद्रशालमध्ये अनुनदिदीर्घाणि हि पद्मह्रदसदृशानि ॥ ६५६ ॥

अर्थ—यमक गिरि जहां पाईए तीहस्यौं पांचसै योजन जाइ सीता अर सीतोदा नदीविषै देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमिके दोय क्षेत्र अर पूर्व पश्चिम भद्रशालके दोय क्षेत्र तिनविषै पांच पांच द्रह हैं । ते द्रह पांचसै पांचसै योजन प्रमाण परस्पर अंतराल धरै हैं । बहुरि ते द्रह नदीके अनुसारि यथायोग्य दीर्घ हैं । आयाम विस्तारादिक करि पद्मद्रह समान हैं । भावार्थ—यमक गिरि जहां नदीनिके तटि पाईए है तीह क्षेत्रस्यौं पांचसै योजन परैं मेरुकी तरफ सीता वा सीतोदा नदीविषै एक एक द्रह है । तीह द्रहस्यौं पांचसै योजन परैं जाय और एक द्रह है । ऐसें पांच पांच द्रह देवकुरु अर उत्तर क्षेत्रविषै जानने । बहुरि तिनहीं सीता सीतोदा नदीविषै पांच पांच द्रह पूर्व पश्चिम भद्रशालविषै जानने । ऐसें ए बीस द्रह

सीता सीतोदा नदीकै बीचि बीचि जाननें। तहां जितनां नदीका चौड़ाईका प्रमाण तितना ही द्रहनिका चौड़ाईका प्रमाण जाननां। बहुरि पद्म द्रह समान हजार योजन तिन द्रहनिकी लंबाईका प्रमाण जाननां। सो इन द्रहनिकी चौड़ाई तौ नदीनिकी चौड़ाईविषै अर लंबाई नदीनिका प्रवाहविषै जाननी। बहुरि जैसैं पद्मद्रहविषै कमलादिक कहे हैं तैसैं इन द्रहनिविषै भी कमलादिक जाननें ॥ ६५६ ॥

णीलुत्तरकुरुचंदा एरावदमल्लवंत णिसहा य।
देवकुरुसूरसुलसाविज्जू सीदद्दुगदहणामा ॥ ६५७ ॥
नीलोत्तरकुरुचंद्रा ऐरावतमाल्यवंतौ निषधश्च।
देवकुरुसूरसुलसविद्युतः सीताद्विकह्रदनामानि ॥ ६५७ ॥

अर्थ—नील १ उत्तर कुरु १ चन्द्र १ ऐरावत १ माल्यवत १ ए पंच बहुरि निषद १ देवकुरु १ सूर १ सुलस १ विद्युत १ ए पंच सीता अर सीतोदा नदीनिविषै जे द्रह हैं तिनके नाम जाननें ॥ ६५७ ॥

णइणिग्गमदारजुदा ते तप्परिवारवण्णणं चेसिं।
पउमव्व कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसंति ॥ ६५८ ॥
नदीनिर्गमद्वारयुतानि तानि तत्परिवारवर्णनं चैषां।
पद्ममिव कमलगेहेषु नागकुमार्यो निवसंति ॥ ६५८ ॥

अर्थ—ते सर्व द्रह नदीके प्रवेश करनेंका अर निकसनेंका द्वारनि करि संयुक्त हैं। **भावार्थ**—नदीनिका प्रवाहकै बीचि द्रह हैं अर तिन द्रहनिकै वेदिका है। सो वेदिका नदीके प्रवेश करनेंके अर निकसनेंके द्वारनि करि संयुक्त है। बहुरि इन द्रहनिका कमलादिकरूप सर्व परिवार वर्णन पद्म नामा द्रह समान जाननां। इतना विशेष, इन द्रहनिविषै जे कमल हैं तिनकै ऊपरी जे मन्दिर हैं तिनविषै अपना अपना परिवार सहित नागकुमारी बसै हैं ॥ ६५८ ॥

दहतडे पण पण कंचणसेला सयसयतदद्धमुदयतियं।
ते दहमुहा णगक्खा सुरा वसंतीह सुगवण्णा ॥ ६५९ ॥
ह्रदतटे पंच पंच काञ्चनशैलाः शतशततदर्धमुदयत्रयम्।
ते ह्रदमुखा नगाख्याः सुरा वसंति इह शुकवर्णाः ॥ ६५९ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिकै दोऊ तटनिविषै एकेक पांच पांच कांचन पर्वत हैं। तिन पर्वतनिकी ऊंचाई सौ योजन है। नीचे भू व्यास सौ योजन है ऊपरि मुखव्यास ताका आधा पचास योजन है। बहुरि ते सर्व पर्वत अपने अपने द्रहके सन्मुख हैं। इहां प्रश्न—पर्वतनिकै सन्मुखपना कैसे होइ? ताका समाधान—इन पर्वतनिकै ऊपरि जे देवनिके नगर हैं। तिनके द्वार द्रहनिके सन्मुख हैं। तातैं इन पर्वतनिकौ द्रह सन्मुख कहे। बहुरि तिन पर्वतनिकै ऊपरि अपना अपना पर्वतका जो नाम तिस नामके धारक देव बसे हैं। ते देव शुकवर्ण हैं। सुवाका सा वर्ण संयुक्त हैं ॥ ६५९ ॥

आगें आगें ऊपरि नदीनिका [illegible] कहै हैं, —

दहदो गंतूणग्गे सहस्सदुगणउदिदोणि वे च कला।
णादिदारजुदा वेदी दक्खिणउत्तरगभद्दसालस्स ॥ ६६० ॥

ह्रदतः गत्वाग्रे सहस्रद्विकनवतिद्वि द्वे च कले।
नदीद्वारयुता वेदी दक्षिणोत्तरगभद्रशालस्य ॥ ६६० ॥

अर्थ—द्रहतें आगैं दोय हजार याणवै योजन अर एक योजनका उगणीस भागनिविषै दोय कला प्रमाण जाइ नदीका प्रवेश करनेंके जो द्वार तीह करि संयुक्त दक्षिण भद्रसाल अर उत्तर भद्रसालकी वेदी तिष्टै हैं। कैंसे सो याकी वासना कहिए है। दक्षिण भद्रसाल अठाईसै योजन उत्तर भद्रसाल अठाईसै योजन मेरु व्यास दश हजार योजन इनकौं जोडें दश हजार पांचसै योजन भए। सो इनकौं विदेहका व्यास तेतीस हजार छसै चौरासी योजन च्यारि कला तीहमैंसौं घटाइ २३१८४।४÷१९ ताका आधा करिए तब ग्यारह हजार पांचसै याणवै योजन दोय कला होइ। २ यामैं यमकगिरि कुलाचलका अंतराल हजार योजन अर यमक गिरिका व्यास हजार योजन अर यमक गिरि द्रहकैं अंतराल पांचसै योजन अर पांचौं द्रहनिकी लंबाई पांच हजार योजन अर वौ द्रहनिकै बीचि च्यारि अंतराल तिनकै दोय हजार योजन इस सबनिकौं जोडें नव हजार चैसै योजन होइ सो घटाएं दोय हजार याणवै योजन दोय कला प्रमाण अंतका द्रह अर भद्रसालकी वेदीकै बीचि अंतराल जानना ॥ ६६० ॥

आगैं दिग्गज पर्वतनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

कुरुभद्दसालमज्झे महाणदीणं च दोसु पासेसु।
दो दो दिसागइंदा सयतत्तियतद्दलुदयपत्तिया ॥ ६६१ ॥

कुरुभद्रशालमध्ये महानद्योश्च द्वयोः पार्श्वयोः।
द्वौ द्वौ दिशागजेंद्रौ शततावत्तद्दलमुदयत्रयाणि ॥ ६६१ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरु भोगभूमिनिविषै वहुरि पूर्व पश्चिम भद्रसालनिविषै महानदी सी सीतोदा तिनके दोऊ तटनिविषै दोय दोय दिग्गजेन्द्र पर्वत हैं। ते ए सर्व आठ भए सो तिन आ दिग्गज पर्वतनिकी उंचाई सौ योजन अर नीचैं चौडाई सौ योजन ऊपरि चौडाई पचास यो न है ॥ ६६१ ॥

तण्णामा पुव्वादी पउमुत्तरणीलसोत्थियंजणया।
कुमुदपलासवतंसयरोचणमिह दिग्गजिंदगुरा ॥ ६६२ ॥

तन्नामानि पूर्वादि. पद्मोत्तरनीलस्वस्तिकांजनकाः।
कुमुदपलाशावतंसरोचनमिह दिग्गजेंद्रगुरा ॥ ६६२ ॥

अर्थ—पूर्वादि दिशानिविषै तिनके नाम कहिए हैं। पूर्व भद्रसालविषै पद्मोत्तर १ नी देवकुरुविषै स्वस्तिक १ अंजन १ पश्चिम भद्रसालविषै कुमुद १ पलाश १ उत्तर कुरुविषै १ रोचन १ तिन दिग्गजनिके नाम हैं। तिन पर्वतनिकै उपरि दिग्गजेन्द्र देव तिष्ठै हैं ॥ ६

आगैं गजदंत पर्वतनिका नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं,—

मल्लव महसोमणसो विज्जुप्पह गंधमादणिभदंता ।
ईसाणादो वेलुरियरुप्पतवणीयहेममया ॥ ६६३ ॥
माल्यवान् महासौमनसः विद्युत्प्रभः गंधमादन इभदंताः ।
ईशानतः वैडूर्यरूप्यतपनीयहेममयाः ॥ ६६३ ॥

अर्थ—माल्यवान १ महासौमनस १ विद्युत्प्रभ १ गंधमादन १ ऐसैं नामधारक गजदंत पर्वत हैं । ते क्रमतैं वैडूर्य मणि अर रूपो अर तायो सोनों अर सोनों तींह समान वर्ण धरैं हैं। बहुरि ते क्रमतैं मेरुकी ईशानतैं लगाय च्यारयौं विदिशानिविषै तिष्टैं हैं ॥ ६६३ ॥

णीलणिसहे सुरद्दिं पुट्ठा मल्लवगुहादु सीदा सा ।
विज्जुप्पहगिरिगुहदो सीदोदा णिस्सरित्तु गया ॥ ६६४ ॥
नीलनिषधौ सुराद्रिं स्पृष्टाः माल्यवद्गुहायाः सीता सा ।
विद्युत्प्रभगिरिगुहातः सीतोदा निसृत्य गता ॥ ६६४ ॥

अर्थ—ते गजदंत पर्वत नील वा निषद्ध कुलाचल अर मेरुगिरिकौं स्पर्शैं हैं । **भावार्थ**—मेरुकी च्यारयौं विदिशानिविषै मेरुपर्वतसौं लगाय नील वा निषध कुलाचलपर्यंत ऐसे गजदंत पर्वत हैं । बहुरि तहां सीता नामा नदी मुडि करि माल्यवत नामा गजदंत पर्वतकै नदी निकसनेंकी गुफा है तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पूर्व भद्रसालादिविषै गमन करै है । बहुरि सीतोदा नदी मुडि करि विद्युत्प्रभ नामा गजदंतकै नदी निकसनेंकी गुफा है । तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पश्चिम भद्रसालादिविषै गमन करै है ॥ ६६४ ॥

अब विदेह देसनिका विभागकौं कहैं हैं;—

उभयंतगवणवेदियमज्झगवेभंगणदितियाणं च ।
मज्झगवक्खारचऊ पुव्ववरविदेहविजयद्धा ॥ ६६५ ॥
उभयांतगवनवेदिकामध्यगविभंगनदीत्रयाणां च ।
मध्यगवक्षारचतुर्भिः पूर्वापरविदेहविजयार्धाः ॥ ६६५ ॥

अर्थ—दोऊ अंतविषै तौ वन वेदिका अर मध्यविषै प्राप्त तीन विभंगा नदी अर मध्यविषै प्राप्त च्यारि वक्षारगिरि पर्वत तिन करि पूर्व पश्चिम विदेहके देश सीता सीतोदा नदीनिके दोऊ तटनिविषै आधे आधे हैं । **भावार्थ**—मेरुकी पूर्व दिशाविषै पूर्व विदेह है । पश्चिम दिशाविषै पश्चिम विदेह है । बहुरि पूर्व विदेहविषै बीचि सीता नदी है । अर पश्चिम विदेहकै बीचि सीतोदा नदी है । सो इन दोऊ नदीनिके दक्षिण उत्तर तट करि च्यारि विभाग हो है । बहुरि एक एक विभागविषै आठ आठ विदेह देश हैं । तहां पूर्व वा पश्चिम भद्रसालकी वेदी ताकै आगै वक्षार ताकै आगै विभंग ताकै आगै वक्षार ताकै आगै विभंगा ताकै आगै वक्षार ताकै आगै विभंग ताकै आगै वक्षार ताकै आगै देवारण्य वा भूतारण्यवनकी वेदी ऐसैं ए नव भए । सो इन नवनिके बीचि बीचि आठ विदेह देश हैं । या प्रकार वर्णन विदेह देश जानने ॥ ६६५ ॥

आगै वक्षार पर्वत अर विभंग नदीनिका नामादिक गाथा छह करि कहै हैं;—

तण्णामा सीदुत्तरतीरादो पढमदो पदक्खिणदो ।
चित्तादिकूडपउमादिमकूडा णलिण एगसेलगदो ॥ ६६६ ॥
तन्नामानि सीतोत्तरतीरात् प्रथमतः प्रदक्षिणतः ।
चित्रादिकूटपद्मादिमकूटौ नलिनः एकशैलकः ॥ ६६६ ॥

अर्थ—सीता नदीका उत्तर तट ताकौं प्रथम करि प्रदक्षिणातै तिन वक्षार पर्वत वा विभंगा नदीनिके नाम ऐसे हैं । तहां सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसालकी वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतै चित्रकूट १ पद्मकूट १ नलिन १ एकशैल १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं ॥ ६६६ ॥

गाहदहपंकवदिणादि तिकूडवेसवणअंजणप्पादि ।
अंजणगो तत्तजला मत्तजलुम्मत्तजल सिंधू ॥ ६६७ ॥
गाधह्रदपंकवतीनद्यः त्रिकूटवैश्रवणाञ्जनात्मादिः ।
अंजनकः तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला सिंधुः ॥ ६६७ ॥

अर्थ—गाधवती १ द्रहवती १ पंकवती १ नाम धारक तीन विभंगा हैं । बहुरि सीताका दक्षिण तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं त्रिकूट १ वैश्रवण १ अंजनात्मा १ अंजन १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि तप्तजला १ मत्तजला १ उन्मत्तजला १ नाम तीन विभंगा नदी हैं ॥ ६६७ ॥

सद्दावं विजडावं आसीविस सुहवहा य वक्खारा ।
खारोदा सीदोदा सोदोवाहिणि णदी मज्झे ॥ ६६८ ॥
श्रद्धावान् विजटावान् आशीविषः सुखावहश्च वक्षाराः ।
क्षारोदा सीतोदा श्रोतोवाहिनी नद्यः मध्ये ॥ ६६८ ॥

अर्थ—पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं श्रद्धावान १ विजटावान १ आशीविष १ सुखावह १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि क्षारोदा १ सीतोदा १ स्रोतोवाहिनी १ नाम धारक तीन विभंगा नदी वक्षारनिकै बीचि बीचि हैं ॥ ६६८ ॥

तो चंदसूरणागादिममाला देवमाल वक्खारा ।
गंभीरमालिणी फेणमालिणी उम्मिमालिणी सरिदा ॥ ६६९ ॥
ततः चंद्रसूर्यनागादिममाल्यदेवमालाः वक्षाराः ।
गंभीरमालिनी फेनमालिनी ऊर्मिमालिनी सरितः ॥ ६६९ ॥

अर्थ—तहां पीछैं पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं चंद्रमाल १ सूर्यमाल १ नागमाल १ देवमाल १ ए च्यारि वक्षार पर्वत हैं । बहुरि गंभीरमालिनी १ फेनमालिनी १ ऊर्मिमालिनी १ ए तीन विभंगा नदी है ॥ ६६९ ॥

हेममया वक्खारा वेभंगा रोहिमग्गिसवण्णणगा ।
ताहि पवेसतोरणगेहे णिवसंति दिक्कण्णा ॥ ६७० ॥

षट्पंचाशदंतरद्वीपाः षड्विंशसहस्रं रत्नाकराः ।
रत्नानां कुक्षिवासाः सप्तशतानि उपसमुद्रे ॥ ६७७ ॥

अर्थ--एक एक विदेह देशविषै एक एक उपसमुद्र है सो मुख्य नगरी अर महानदीकै बीचि आर्यखंडविषै पाईए है । तींह उपसमुद्रकैविषै टापू है । तहां छप्पन सौ अंतरद्वीप हैं । बहुरि छबीस हजार रत्नाकर हैं तहां रत्न उपजै हैं । रत्ननिके वेचने लेनेके स्थानभूत कुक्षिवास सातसै हैं ॥ ६७७ ॥

आगैं मागधादि तीन देवनिका स्थान कहैं हैं;—

सीतासीतोदाणदितीरसमीवे जलम्हि दीवतियं ।
पुव्वादी मागहवरतणुप्पभासामराण हवे ॥ ६७८ ॥

सीतासीतोदानदीतीरसमीपे जले द्वीपत्रयं ।
पूर्वादिना मागधवरतनुप्रभासामराणां भवेत् ॥ ६७८ ॥

अर्थ—सीता सीतोदा नदीकै तीर समीप जलविषै पूर्व पश्चिम करि मागध १ वरतनु १ प्रभास १ देवनिके तीन द्वीप हैं । **भावार्थ**—चक्रवर्ती करि साधने योग्य मागध वरतनु प्रभास देव तिनके स्थान जैसैं भरत एरावतके समुद्रविषै हैं । तैसें विदेह देशनिके सीता सीतोदा नदीविषै है । पूर्व विदेहके सीता नदीके तीर जलविषै है। पश्चिम विदेहके सीतोदा नदीकै तीर समीप जलविषै है । तहां एक एक देशसंबंधी दोय दोय नदी जिन द्वारनि करि सीता सीतोदाविषै प्रवेश करैं हैं। तिन द्वारनिकै अर तिन द्वारनिकै बीचि द्वार है ताकै समीप जलविषै तिन देवनिके द्वीप जानने॥६७८॥

आगैं विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त वर्षादिकका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

वरिसंति कालमेहा सत्तविहा सत्त सत्त दिवसवही ।
वरिसाकाले धवला वारस दोणाभिहाणब्भा ॥ ६७९ ॥

वर्षंति कालमेघाः सप्तविधाः सप्त सप्त दिवसावधीन् ।
वर्षाकाले धवला द्वादश द्रोणाभिधाना अभ्राः ॥ ६७९ ॥

अर्थ—सात प्रकार काल मेघ हैं । ते सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षाकालविषै वर्षै हैं । बहुरि स्वेतवर्ण द्रोण नामा बारह अभ्र कहिए बादले ते तैसैंही सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षै हैं। ऐसैं वर्षाकालविषै एकसौ तेतीस दिन वर्षा हो है ॥ ६७९ ॥

देसा दुब्भिक्खीदीमारिकुदेववण्णलिंगिमदहीणा ।
भरिदा सदावि केवलिसलागपुरिसिड्डिसाहूहिं ॥ ६८० ॥

देशा दुर्भिक्षेतिमारिकुदेववर्णलिंगिमतहीनाः ।
भृताः सदापि केवलिशलाकापुरुषर्धिसाधुभिः ॥ ६८० ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्ठते देश ते अतिवृष्टि १ अनावृष्टि १ मूसा १ टीडी १ सुवा १ अपनी फौज १ अन्य वैरीकी फौज १ ऐसैं सात प्रकार ईति करि रहित हैं । बहुरि गाय मनुष्यादिक जाते अधिक मरैं ऐसी मरी तिन करि रहित हैं । बहुरि जिनदेवतैं अन्य कुदेव जिनलिं-

तीरी अन्य कुलिंगी जिनमतते अन्य कुमत तिन करि रहित है। बहुरि ते देश सदा ही केवलज्ञानी बहुरि तीर्थंकरादि शलाका पुरुष बहुरि ऋद्धिधारी साधु तिन करि भरे हैं॥ ६८०॥

आगें तीर्थंकर सकल चक्री अर्द्धचक्रीनिकी पंचमेरु अपेक्षा करि जघन्य उत्कृष्ट संख्या करि प्रवर्तन कहै हैं;—

तित्थद्धसयलचक्की सट्ठिसयं पुह वरेण अवरेण।
वीसं वीसं सयले खेत्ते सत्तरिसयं वरदो॥ ६८१॥

तीर्थार्धसकलचक्रिणः षष्टिशतं पृथक् वरेण अवरेण।
विंशं विंशं सकले क्षेत्रे सप्ततिशतं वरतः॥ ६८१॥

अर्थ—तीर्थंकर अर अर्द्धचक्री नारायण प्रतिनारायण अर सकल चक्री चक्रवर्ती ए प्रथक प्रथक एक एक विदेह देशविषै एक एक होइ सब उत्कृष्टपनैं करि एकसौ साठि होंइ। बहुरि जघन्यपनैं करि सीता सीतोदाका दक्षिण उत्तर तटविषै एक एक होइ ऐसैं एक मेरु अपेक्षा च्यारि होंहि मिलि करि पंच मेरुके विदेह अपेक्षा करि बीस हो है। बहुरि ते उत्कृष्टपनैंयकी पाच भरत पांच ऐरावतसम्बन्धी मिलाएं तीर्थंकरादिक एकसौ सत्तरि हो हैं॥ ६८१॥

अब चक्रवर्तीकी संपदाका स्वरूप कहै हैं;—

चुलसीदिलक्खभद्दिभ रहा हया विगुणणवयकोडीओ।
णवणिहि चोद्दसरयणं चक्कित्थीओ सहस्सछण्णउदी॥ ६८२॥

चतुरशीतिलक्षभद्रेभाः रथा हया द्विगुणनवकोट्यः।
नवनिधयः चतुर्दशरत्नानि चक्रिस्त्रियः सहस्रं षण्णवतिः॥ ६८२॥

अर्थ—चौरासी लाख कल्याणरूप हाथी हैं। तितनेंही चौरासी लाख रथ हैं। घोडे दुगुणा नव कोडि ताके अठारह कोडि हैं। बहुरि छह ऋतु योग्य वस्तुका देनेवाला कालनिधि है भाजनपात्रका दायक महाकालनिधि है। अन्नका दायक पांडुनिधि है। आयुधका दायक माणवकनिधि हैं। वादित्रका दायक शंखनिधि है। मंदिरका दायक नैसर्पनिधि है। वस्त्रका दायक पद्मनिधि है। आभूषणका दायक पिंगलनिधि है। नानाप्रकार रत्नसमूहका दायक नाना रत्ननिधि है। ऐसैं नवनिधि हैं। गाडाके आकारनिधि है तामैं ऐसैं वस्तु निकसा करै है। बहुरि चक्र १ असि १ छत्र १ दंड १ मणि १ चर्म १ काकिणी १ ए सात अचेतन अर ग्रहपति १ सेनापति १ हाथी १ घोडो १ सिलप १ स्त्री १ पुरोहित १ ए सात सचेतन ऐसैं चौदह रत्न हैं। बहुरि छिनवैं हजार स्त्री हैं। ऐसैं चक्रवर्तीके संपदा हैं॥ ६८२॥

अब राजाधिराजादिकनिका लक्षण गाथा तीन करि कहै हैं;—

अण्णे सगपदविदिया सेणागणवणिजदंडवइ मंती।
महयर तलयर वण्णा चउरंगपुरोहमच्चमहमचा॥ ६८३॥

अन्ये स्वकपदस्थिताः सेनागणवणिग्दंडपतिः मंत्री।
महत्तर तलवरः वर्ण चतुरंगपुरोहितामात्यमहामात्यः॥ ६८३॥

अर्थ—अन्य राजादिक हैं ते अपनी अपनी पदवीविषै स्थित हैं। तहां सेनापति कहिए सेनाका नायक बहुरि गणक पती कहिए ज्योतिषी आदिकका नायक बहुरि वणिक्पति कहिए व्यापारीनिका नायक बहुरि दंडपति कहिए समस्त सेनाका नायक बहुरि मंत्री कहिए पंचांग मंत्र प्रवीण बहुरि महत्तर कहिए कुलविषै बड़ा बहुरि तलवर कहिए कोटवाल बहुरि वर्ण कहिए क्षत्रियादिक च्यारि प्रकार वर्ण बहुरि चतुरंग कहिए च्यारि प्रकार सेना बहुरि पुरोहित कहिए हितकार्यका अधिकारी बहुरि आमात्य कहिए देशका अधिकारी बहुरि महामात्य कहिए सर्व राज्य कार्यका अधिकारी ॥ ६८३ ॥

इदि अट्ठारसेढीणाहिओ राजो हवेज्ज मउडधरो।
पंचसयरायसामी अहिराजो तो महाराजो ॥ ६८४ ॥

इति अष्टादशश्रेणीनामधिपो राजा भवेत् मुकुटधरः।
पंचशतराजस्वामी अधिराजः ततः महाराजः॥ ६८४ ॥

अर्थ—ऐसैं अठारह श्रेणीनिका जो स्वामी सो राजा कहिए सोई मुकुटधारी हो है। बहुरि ऐसैं पांचसै राजानिका स्वामी सो अधिराजा हो है। बहुरि हजार राजानिका स्वामी महाराजा हो है ॥ ६८४ ॥

तह अद्धमंडलीओ मंडलिओ तो महादिमंडलिओ।
तिपखंडखंडाणहिवा पहुणो राजाण दुगुणदुगुणाणं ॥ ६८५ ॥

तथा अर्धमंडलिकः मंडलिकः ततो महादिमंडलिकः।
त्रिषट्खंडानामधिपाः प्रभवः राज्ञां द्विगुणद्विगुणानाम् ॥ ६८५ ॥

अर्थ—ऐसैं दोय हजार राजानिका स्वामी अर्द्धमंडलीक हो है। बहुरि च्यारि हजार राजानिका स्वामी मंडलीक हो है। बहुरि आठ हजार राजानिका स्वामी महामंडलीक हो है। बहुरि सोलह हजार राजानिका स्वामी [illegible] अधिपति नारायण वा प्रतिनारायण हो है। बहुरि बत्तीस हजार राजानिका स्वामी [illegible] अधिपति चक्रवर्ती हो है। ऐसैं अधिराजादिक [illegible] राजानी दूणे दूणे [illegible] ॥ ६८५ ॥

अब [illegible] निरूपण करै है,—

[illegible] ॥
[illegible] ॥ ६८६ ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥ ६८६ ॥

अर्थ—[illegible]

[illegible]

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चउत्थी कच्छकावदी।
आवत्ता लांगलावत्ता पोक्खला पोक्खलावदी॥ ६८७॥

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चतुर्थी कच्छकावती।
आवर्ता लांगलावर्ता पुष्कला पुष्कलावती॥ ६८७॥

अर्थ—कच्छा १ सुकच्छा १ महाकच्छा १ चौथी कच्छकावती १ आवर्ता १ लांगलावर्ता १ पुष्कला १ पुष्कलावती १ ए आठ देश सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसाल वेदीतैं लगाय करि क्रमतैं जाननें॥ ६८७॥

वच्छा सुवच्छा महावच्छा चउत्थी वच्छकावदी।
रम्मा सुरम्मगा चेव रमणेज्जा मंगलावदी॥ ६८८॥

वत्सा सुवत्सा महावत्सा चतुर्थी वत्सकावती।
रम्या सुरम्यका चैव रमणीया मंगलावती॥ ६८८॥

अर्थ—वत्सा १ सुवत्सा १ महावत्सा १ चौथी वत्सकावती १ रम्या १ सुरम्यका १ रमणीया १ मंगलावती १ ए आठ देश सीता नदीका दक्षिण तटविषै देवारण्यकी वेदीतैं लगाय करि क्रमतैं जाननें॥ ६८८॥

पम्मा सुपम्मा महापम्मा चउत्थी पम्मकावदी।
संखा य णलिणी चेव कुमुदा सरिदा तहा॥ ६८९॥

पद्मा सुपद्मा महापद्मा चतुर्थी पद्मकावती।
शंखा च नलिनी चैव कुमुदा सरित्तथा॥ ६८९॥

अर्थ—पद्मा १ सुपद्मा १ महापद्मा १ चौथी पद्मकावती १ शंखा १ नलिनी १ कुमुद १ सरित १ ए आठ देश सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतैं लगाय क्रमतैं जाननें॥ ६८९॥

वप्पा सुवप्पा महावप्पा चउत्थी वप्पकावदी।
गंधा खलु सुगंधा य गंधिला गंधमालिणी॥ ६९०॥

वप्रा सुवप्रा महावप्रा चतुर्थी वप्रकावती।
गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिनी॥ ६९०॥

अर्थ—वप्रा १ सुवप्रा १ महावप्रा १ चौथी वप्रकावती १ गंधा १ सुगंधा १ गंधिला १ गंधमालिनी १ ए आठ देश सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतैं लगाय क्रमतैं जाननें। ६९०।

आगै इन देशनिविषै छह खंड कैसैं जानिए ऐसा प्रश्न होतैं उत्तर कहै है;—

विजयं पडि वेयड्ढो गंगासिंधुगद दोण्णि दोण्णि णई।
तेहिं कया छक्खंडा विदेहवंसाण विजयाणं॥ ६९१॥

विजयं प्रति विजयार्धः गंगासिंधुके द्वे द्वे नद्यौ।
ते कृतानि षट्खण्डानि विदेहवंशानां विजयानाम्। ६९१।

अर्थ—देश देश प्रति एक एक विजयार्द्ध पर्वत है । कुलाचलतैं लगाय महानदी पर्यंत जो देशनिकी लंबाई तीहकै मध्य प्रदेशविषै विजयार्द्ध पर्वत जाननां । सो विजय कहिए देश है इस करि आधा किया तातैं याका विजयार्द्ध ऐसा सार्थक नाम है । बहुरि तिनही देशनिविषै गंगा सिंधुसमान निकसतैं सवा छह योजन चौड़ी प्रवेश करतैं साढ़ा बासठि योजन चौड़ी इत्यादि गंगासिंधुका जो प्रमाण तीह सदृश दोय दोय नदी हैं । तिन नदी अर विजयार्द्धनि करि विदेह संबंधी बत्तीस देशनिविषै प्रत्येक छह छह खंड किए हैं ॥ ६९१ ॥

आगैं तहां तिष्ठते विजयार्द्धनिका वा नदीनिका व्यास गाथा दोय करि कहैं हैं;—

ते पुव्वावरदीहा जणवयमज्झे गुहादु पुव्वं वा ।
गंगादु णीलमूलगकुंडा रत्तादुग णिसहणिस्सरिदा ॥ ६९२ ॥

ते पूर्वापरदीर्घा जनपदमध्ये गुहाद्वयं पूर्वं वा ।
गंगाद्वयं नीलमूलगकुंडा रक्ताद्विकं निषधनिःसृताः ॥ ६९२ ॥

अर्थ—ते विजयार्द्ध पूर्व पश्चिम लंबे हैं । बहुरि जनपद जो देश तीहकै मध्यभागविषै हैं । बहुरि तहां विजयार्द्धविषै दोय गुफा हैं सो गुफा पूर्वं भरतका विजयार्द्धविषै कही तैसैं ही इहां जाननी । बहुरि एक एक देशविषै दोय दोय नदी हैं । तहां सीता वा सीतोदाका दक्षिण तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम गंगा सिंधु है । बहुरि उत्तर तटवर्ती जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम रक्ता रक्तोदा है । तहां गंगासिंधु दोय नदी नील पर्वतकै निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं उत्तर सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामैं होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है । बहुरि रक्ता रक्तोदा दोय नदी निषध पर्वतकै निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं दक्षिण सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामैं होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है ॥ ६९२ ॥

दसदसपणोत्ति पण्णं तीसं दसयं च रूप्पगिरिवासा ।
खयराभिजोग सेढी सिहरे सिद्धादिकूडं तु ॥ ६९३ ॥

दश दश पंचाग्रे पंचाशत् त्रिंशत् दशकं च रूप्यगिरिव्यासाः ।
खचराभियोग्या श्रेणी शिखरे सिद्धादिकूटं तु ॥ ६९३ ॥

अर्थ—[illegible] विजयार्द्धकै दश योजन ऊंची प्रथम श्रेणी है । पचास योजन प्रथम श्रेणी [illegible] व्यास है । बहुरि ताके ऊपरि दश योजन ऊंची दूसरी श्रेणी है । तीस योजन [illegible] व्यास है । ताकै ऊपरि पांच योजन ऊंचा ऊपरिला शिखर है । दश योजन [illegible] व्यास है । भावार्थ—विजयार्द्ध पर्वत नीचैं [illegible] दश योजनकी उचाई पर्यंत पचास योजन [illegible] है । बहुरि ऊपरि दोऊ पार्श्वनिविषै दश दश योजनकी चौड़ी कटनी छोड़ि [illegible] [illegible] [illegible] बहुरि ऊपरि दोऊ पार्श्वनिविषै दश दश योजन [illegible] [illegible] पांच योजन [illegible] पर्यंत दश योजन [illegible] है । बहुरि तहां [illegible]

विषै ग्राम प्रथम श्रेणीविषै विद्याधर बसै हैं। बहुरि द्वितीय श्रेणी जो कटनी तिह विषै आभियोग्य व बसै है। बहुरि शिखरविषै सिद्धायतन आदि नवकूट हैं॥ ६९३॥

आगैं तहां ही द्वितीयादि श्रेणीविषै विशेष कहैं हैं;—

सोहम्मआभिजोग्गगमणिचित्तपुराणि बिदियसेढिम्हि।
वेयड्ढकुमारवई सिहरतले पुण्णभद्दक्खे॥ ६९४॥

सौधर्माभियोग्यगमणिचित्रपुराणि द्वितीयश्रेण्याम्।
विजयार्धकुमारपतिः शिखरतले पूर्णभद्राख्ये॥ ६९४॥

अर्थ—तहां ही द्वितीय श्रेणीविषै सौधर्म संबंधी आभियोग्य देवनिके मणिमई नानाप्रकार नगर है। बहुरि तिस विजयार्द्धका शिखरविषै पूर्णभद्र नामा कूट तीह उपरि विजयार्द्ध कुमार पति व बसै हैं॥ ६९४॥

आगैं तहां प्रथम दोऊ श्रेणिनिविषै तिष्ठते विद्याधरनिके नगर तिनकी संख्या वा तिनके नाम पंद्रह गाथानि करि कहैं हैं;—

पणवण्णं पणवण्णं विदेहवेयड्ढपढमभूमिम्हि।
णयराणि पण्णसट्ठी जंबूउभयंतवेयड्ढे॥ ६९५॥

पंचपंचाशत् पंचपंचाशत् विदेहविजयार्धप्रथमभूमौ।
नगराणि पंचाशत् षष्टिः जंबूभयांतविजयार्धे॥ ६९५॥

अर्थ—विदेह संबंधी विजयार्द्धनिकी दक्षिण उत्तररूप प्रथम दोऊ श्रेणी तीहविषै पचावन पचावन नगर विद्याधरनिके हैं। बहुरि जंबूद्वीपका दोऊ अंत जे भरत ऐरावत तिनि संबंधी विजयार्द्ध तहां प्रथम दोऊ श्रेणीविषै पचास साठि नगर हैं॥ ६९५॥

सेलायामे दक्खिणसेढीए पण्णमुत्तरे सट्ठी।
तण्णामा पुव्वादी किंणामिद किंणरंगीदं॥ ६९६॥

शैलायामे दक्षिणश्रेण्यां पंचाशदुत्तरस्यां षष्टिः।
तन्नामानि पूर्वादितः किंनामितं किंनरगीतं॥ ६९६॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तीहंकी पूर्व पश्चिम लंबाईविषै दक्षिण श्रेणीविषै तौ पचास नगर हैं। उत्तर श्रेणीविषै साठि नगर हैं तिन नगरनिके नाम पूर्व दिशातै लगाय अनुक्रमतै कहिए हैं। किंनामित १ किंनरगीत १॥ ६९६॥

णरगीदं बहुकेदू पुंडरियं सीहसेदगरुडधजं।
सिरिपहधर लोहग्गलमरिंजयं वज्जअग्गलद्दपुरं॥ ६९७॥

नरगीतः बहुकेतुः पुंडरीकं सिंहश्वेतगरुडध्वजं।
श्रीप्रभधरं लोहार्गलमरिंजयं वज्रार्गलाढ्यपुरं॥ ६९७॥

अर्थ—नरगीत १ बहुकेतु १ पुंडरीक १ सिंहध्वज १ श्वेतध्वज १ गरुडध्वज १ श्रीप्रभ १ श्रीधर १ लोहार्गल १ अरिंजय १ वज्रार्गल १ वज्राढ्यपुर १॥ ६९७॥

होइ तिमिसं पुरं जय मगरचूडमुही य अवरक्खा ।
विरजक्खा रदणपुर मेरुअग्गपुर खेमकरी ॥ ६९८ ॥

भवति तिमिस्रं पुरं जया मकरचूडमुखी च अपरक्षा ।
विरजाक्षा रत्नपुरं मेर्वग्रपुरं क्षेमकरी ॥ ६९८ ॥

अर्थ—आगे कहिए नगर हैं । तिमिस्रपुर १ जय १ मकरचूडमुखी १ अपरक्षा १ विरजाक्षा १ रत्नपुर १ मेर्वग्रपुर १ क्षेमकरी १ ॥ ६९८ ॥

अवराजिद कामादीपुप्फं गगणचरि विणयचरि सुक्कं ।
तो सव्वसिद्धिणयरं जयंति विजया वइजयंती य ॥ ६९९ ॥

अपराजितं कामादिपुष्पं गगनचरी विनयचरी शुक्रं ।
ततः सर्वसिद्धिनगरं जयंति विजया वैजयंती च ॥ ६९९ ॥

अर्थ—अपराजित १ कामपुष्प १ गगनचरी १ विनयचरी १ शुक्र १ सर्वसिद्धिनगर १ जयंती १ विजया १ वैजयंती १ ॥ ६९९ ॥

खेमंकर चंदाहं सूराहं चित्तकूड महकूडं ।
हेमतिमेहविचित्तयकूडं वेसवणकूडमदो ॥ ७०० ॥

क्षेमकरं चंद्राभं सूर्याभं चित्रकूटं महाकूटं ।
हेमत्रिमेघविचित्रकूटं वैश्रवणकूटमतः ॥ ७०० ॥

अर्थ—क्षेमंकर १ चंद्राभ १ सूर्याभ १ चित्रकूट १ महाकूट १ हेमकूट १ त्रिकूट १ मेघकूट १ विचित्रकूट १ वैश्रवणकूट १ ॥ ७०० ॥

सूरपुर चंदपुर णिच्चुज्जोदिणि विमुहि णिच्चवाहिणिपो ।
सुमुही चरिमा पच्छिमभागादो अज्जुणी अरुणी ॥ ७०१ ॥

सूर्यपुरं चंद्रपुरं नित्योद्योतिनी विमुखी नित्यवाहिनी ।
सुमुखी चरमा पश्चिमभागात् अर्जुनी अरुणी ॥ ७०१ ॥

अर्थ—सूर्यपुर १ चन्द्रपुर १ नित्योद्योतिनी १ विमुखी १ नित्यवाहिनी १ सुमुखी १ अंतकी नगरी १ ऐसैं दक्षिण श्रेणीविषै पचास नगरी हैं । अब उत्तर श्रेणीविषै पश्चिम भागतैं लगाय इनि नगरीनिके नाम कहिए हैं । अर्ज्जुनी १ अरुणी १ ॥ ७०१ ॥

केलास वारुणीपुरि विज्जुप्पह किलिकिलं च चूडादी ।
मणि ससिपह वंसालं पुप्फादी चूलमिह दसमं ॥ ७०२ ॥

कैलाशो वारुणी पुरी विद्युत्प्रभं किलिकिलं च चूडादिः ।
मणिः शशिप्रभं वंशालं पुष्पादि चूलमिह दशमं ॥ ७०२ ॥

अर्थ—कैलाश १ वारुणीपुरी १ विद्युत्प्रभ १ किलिकिल १ चूडामणि १ शशिप्रभ १ वंशाल १ पुष्पचूलनामा दशवा नगर है ॥ ७०२ ॥

णभोवि हंसगब्भं वल्लाहगं सेरसं सिवंकरयं ।
गिरिसोध चमरं सिवमंदिर वसुमक्का वसुमदी य ॥ ७०३ ॥
ततोपि हंसगर्भं बलाहकं प्रभंकरं शिवंकरं ।
श्रीसौधं चमरं शिवमंदिरं वसुमत्का वसुमती च ॥ ७०३ ॥

अर्थ—तहां पीछे हंसगर्भ १ बलाहक १ शिवंकर १ तेरहां है श्रीसौध १ चमर १ शिवमंदिर १ वसुमत्का १ वसुमती १ ॥ ७०३ ॥

सिद्धत्थं सत्तुंजय धयमाल सुरिंदकंत गयणादि ।
णंदणमवि वीदादिमसोगो अलगा तदो तिलगा ॥ ७०४ ॥
सिद्धार्थं शत्रुंजयं ध्वजमालं सुरेंद्रकांतं गगनादिः ।
नंदनमपि वीतादिमशोकः अलका ततस्तिलका ॥ ७०४ ॥

अर्थ—सिद्धार्थ १ शत्रुंजय १ ध्वजमाल १ सुरेन्द्रकांत १ गगननंदन १ अशोका १ वीतशोका १ वीतशोका १ अलका १ तहां पीछे तिलका १ ॥ ७०४ ॥

अंबरतिलगं मंदर कुमुदं कुंदं च गयणवल्लभयं ।
तो दिव्वतिलय भूमीतिलयं गंधव्वणयरमदो ॥ ७०५ ॥
अंबरतिलकं मंदरं कुमुदं कुंदं च गगनवल्लभं ।
ततो दिव्यतिलकं भूमीतिलकं गंधर्वनगरमतः ॥ ७०५ ॥

अर्थ—अंबरतिलक १ मदर १ कुमुद १ कुंद १ गगनवल्लभ १ तहां पीछे दिव्यतिलक १ भूमितिलक १ गंधर्वनगर १ इहांतैं आगैं ॥ ७०५ ॥

मुत्ताहारं णेमिसमग्गिमहज्जालसिरिणिकेदपुरं ।
जयवह सिरिवासं मणिवज्जं भद्दस्सपुरं धणजययं ॥ ७०६ ॥
मुक्ताहारं नैमिषमग्निमहाज्वालं श्रीनिकेतपुरं ।
जयावहं श्रीवासं मणिवज्रं भद्राश्वपुरं धनंजयं ॥ ७०६ ॥

अर्थ—मुक्ताहार १ नैमिष १ अग्निज्वाल १ महाज्वाल १ श्रीनिकेतपुर १ जयावह १ श्रीनिवास १ मणिवज्र १ भद्राश्वपुर १ धनंजय १ ॥ ७०६ ॥

गोखीरफेणमक्खोभं गिरिसिहरं च धरणि धारिणियं ।
दुग्गं दुद्धरणयरं सुदंसणं तो महिंदविजयपुरं ॥ ७०७ ॥
गोक्षीरफेनमक्षोभं गिरिशिखरं च धरणि धारिणिकं ।
दुर्गं दुर्धरनगरं सुदर्शनं ततो महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०७ ॥

अर्थ—गोक्षीरफेन १ अक्षोभ १ गिरिशिखर १ धरणिपुर १ धारणीपुर १ दुर्ग १ दुर्धरनगर १ सुदर्शन १ तहा पीछे महेन्द्रपुर १ विजयपुर ॥ ७०७ ॥

णगरी सुगंधिणी वज्जद्धतरं रयणपुव्वआयरयं ।
रयणपुरं चरिमं ते रयणमया राजधाणीओ ॥ ७०८ ॥

नगरी सुगंधिनी वज्रार्धतरं रत्नपूर्वमाकरं ।
रत्नपुरं चरमं ताः रत्नमया राजधान्यः ॥ ७०८ ॥

अर्थ—सुगंधिनी नगरी १ वज्रार्द्धतर २ रत्नाकर १ रत्नपुर १ अंतका नगर है। ऐसे साठि नगरी उत्तर श्रेणीविषै हैं। ते ए सर्व नगरी रत्नमई हैं। बहुरि राजानिका जहां वास पाइए ऐसी राजधानी हैं ॥ ७०८ ॥

पायारगोउरट्टलचरियासरवण विराजिया तत्थ ।
विज्जाहरा तिविज्जा वसंति छक्कम्मसंजुत्ता ॥ ७०९ ॥

प्राकारगोपुराट्टालचर्यासरोवनैः विराजिता तत्र ।
विद्याधरा त्रिविद्या वसंति षट्कर्मसंयुक्ताः ॥ ७०९ ॥

अर्थ—कोट दरवाजा मंदिर मार्ग सरोवर वन इनकरि ते नगरी विराजित हैं। तहां तिन नगरीनिविषै विद्याधर वसै हैं। ते विद्याधर साधित कुल जातिविद्यानि करि त्रिविध हैं। जो आप साधिए सो साधित विद्या १ बहुरि पितृपक्ष कुलक्रमतैं चली आई सो कुलविद्या १ बहुरि मातृपक्ष जातिविषै चली आई सो जाति विद्या १ ऐसी तीन विद्यानि करि संयुक्त हैं। बहुरि इज्या वार्त्ता दत्ति स्वाध्याय संयम तप इन षट कर्मनि करि संयुक्त हैं। तहां पूज्यका पूजना सो इज्या, असि मषि आदि जीवनैंका उपायरूप व्यापार सो वार्त्ता १ दान दैनां सो दत्ति १ पठन पाठन करनां सो स्वाध्याय १ अविरति त्याग करनां सो संयम १ तपश्चरण करना सो तप जाननां॥ ७०९॥

आगैं विजयार्द्ध कर किया षट खंडविषै म्लेच्छखंडविषैं तिष्ठता जो वृषभाचल ताका स्वरूपकौं निरूपै हैं;—

सत्तरिसयवसहगिरी मज्झगयमिलेच्छखंडबहुमज्झे ।
कणयमणिकंचणुदयति भरिया गयचक्किणामेहिं ॥ ७१० ॥

सप्ततिशतं वृषभगिरयः मध्यगतम्लेच्छखंडबहुमध्ये ।
कनकमणिकांचनोदयत्रिकं भृता गतचक्रिनामभिः ॥ ७१० ॥

अर्थ—कुलाचल विजयार्द्ध दोय नदीनिके बीचि मध्यका जो म्लेच्छ खंड तीहका बहुत मध्य प्रदेशविषै वृषभाचल है सो एक एक देशविषै एक एक है। सो पांचों मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतविषै एकसौ सत्तरि वृषभाचल हैं। ते सुवर्णवर्ण हैं मणिमई हैं। कांचन पर्वत समान उदयादि तीन तिनके हैं। सो ऊंचाई सौ योजन, नीचैं भूव्यास सौ योजन, उपरि मुख व्यास पचास योजन जाननां। बहुरि अतीत कालविषै भए चक्रवर्ती तिनके नामनि करि भरया है। जो चक्रवर्ती होइ सो तिस पर्वतविषै अपनां नाम अक्षर लिखै है ॥ ७१० ॥

आगैं तैसैंही आर्यखंडके मध्य तिष्ठै है जो राजधानी नगरी तीहविषै व्यास आयाम कहै हैं;—

सगरिसयणपराणि य उगअल्पिगभजागदमरछाहि ।
थर्ीण णवय वारस पासायामेण होंति कमे ॥ ७११ ॥

सप्ततिशतनगराणि च उपजलधिगार्यखंडमध्ये।

चक्रिणां नव द्वादश व्यासायामाभ्यां भवंति क्रमेण ॥ ७११ ॥

अर्थ—उप समुद्र कहिए खाड़ी समुद्र ताकौ प्राप्त जो आर्यखंड तीहके मध्य व्यास जो चौड़ाई अर आयाम जो लंबाई तिनकरि क्रमतै नव बारह योजन प्रमाण पंच मेरसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतनिविषै एकसौ सत्तरि चक्रवर्तीनिके व्यास योग्य मुख्य नगर हैं ॥ ७११ ॥

आगै तिन नगरनिके नाम गाथा या श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

खेमा खेमपुरी चेव रिट्ठापुरी तहा।

खग्गा य मंजुसा चेव ओसही पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥

क्षेमा क्षेमपुरी चैव अरिष्टा अरिष्टपुरी तथा।

खड्गा च मंजूषा चैव औषधी पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त कच्छादि विदेह देशनिविषै मुख्य राजधानी नगरीनिके क्रमतै नाम कहिए है। क्षेमा १ क्षेमपुरी १ अरिष्टा १ अरिष्टपुरी १ खड्गा १ मंजूषा १ औषधी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ७१२ ॥

सुसीमा कुंडला चेवापराजिद पहंकरा।

अंका पउमावदी चेव सुभा रयणसंचया ॥ ७१३ ॥

सुसीमा कुंडला चैव अपराजिता प्रभंकरा।

अंका पद्मावती चैव शुभा रत्नसंचया ॥ ७१३ ॥

अर्थ—सुसीमा १ कुंडला १ अपराजिता १ प्रभंकरा १ अंका १ पद्मावती १ शुभा १ रत्नसंचया १ ॥ ७१३ ॥

अस्सपुरी सीहपुरी महापुरी तह य होदि विजयपुरी।

अरया विरया चेव असोगया वीदसोगा य ॥ ७१४ ॥

अश्वपुरी सिंहपुरी महापुरी तथा च भवति विजयपुरी।

अरजा विरजा चैव अशोका वीतशोका च ॥ ७१४

अर्थ—अश्वपुरी १ सिंहपुरी १ महापुरी १ तैसे ही विजयपुरी १ अरजा १ विरजा १ अशोका १ वीतशोका १ ॥ ७१४ ॥

विजया य वइजयती जयंत अवराजिदा य बोधव्वा।

चक्कपुरी खग्गपुरी होदि अयोज्झा अवज्झा य ॥ ७१५ ॥

विजया च वैजयंती जयंता अपराजिता च बोद्धव्या।

चक्रपुरी खड्गपुरी भवति अयोध्या अवध्या च ॥ ७१५ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंता १ अपराजिता १ जानने १ चक्रपुरी १ खड्गपुरी १ अयोध्या १ अवध्या १ ऐसै ए बत्तीस नाम जानने। बहुरि भरत ऐरावत विषै चक्रवर्तिके नगरनिका नाम कोई एक नियमरूप नाहीं तातै इनि दूणेक नामनिविषै कोई एक नाम हो है। जुदै जुदा नाम न कह्या ॥ ७१५ ॥

आगैं तिन नगरनिका विशेष स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

रयणकवाडवरावर सहस्सदलदार हेमपायारा ।
बारसहस्सा वीही तत्थ चउप्पह सहस्सेकं ॥ ७१६ ॥

रत्नकपाटवरावरा: सहस्रदलद्वारा हेमप्राकारा: ।
द्वादशसहस्राणि वीथ्य: तत्र चतुष्पथानि सहस्रैकम् ॥ ७१६ ॥

अर्थ—तिन नगरनिकै द्वारनिविर्षे रत्नमई किवाड हैं । उत्कृष्ट बड़े हजार द्वार हैं। छोटे ताके आधे पांचसै द्वार हैं सुवर्ण मई कोट है तीह नगरकैं अभ्यंतर बारह हजार गली है । तहां एक हजार चतुष्पथ चोपटा मार्ग हैं ॥ ७१६ ॥

णयराण बहिं परिदो वणाणि तिसदं ससट्ठि पुरमज्झे ।
जिणभवणा णरवइजणगेहा सोहंति रयणमया ॥ ७१७ ॥

नगराणां बहि: परित: वनानि त्रिशतं सषष्ठि: पुरमध्ये ।
जिनभवनानि नरपतिजनगेहानि शोभंते रत्नमयानि ॥ ७१७ ॥

अर्थ—नगरनिकै बाह्य चौगिरद साठि सहित तीनसै वन कहिए बाग हैं । बहुरि मध्य जिन मंदिर अर नरपति राजाका मंदिर अर अन्य जननिके मंदिर रत्नमई सोभै है । इहां क्षेत्रविर्षे मेरु आदिका अवस्थान ऐसैं जाननां ॥ ७१७ ॥

अब नाभि गिरिनिका अवस्थान अर तिनका उत्सेध आदिक गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

थिरभोगावणिमज्झे णाभिगिरीओ हवंति वीसाणि ।
वट्टा सहस्सतुंगा मूलुवरिं तत्तिया रुंदा ॥ ७१८ ॥

स्थिरभोगावनिमध्ये नाभिगिरय: भवंति विंशति: ।
वृत्ता: सहस्रतुंगा मूलोपरि तावंत: रुंद्रा: ॥ ७१८ ॥

अर्थ—स्थिर भोग भूमि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत क्षेत्र तिनके मध्य प्रदेशनि एक नाभि गिरि गोल हैं । बहुरि हजार योजन ऊंचे हैं । बहुरि नीचैं वा उपरि तितनेही योजन चौड़े हैं । भाव यहु ऊभा ढोलके आकारि हैं ते पंचमेरु संबंधी बीस नाभि गिरि हैं ॥

सद्दावं विजडावं पउमगधवण्णाम सुकिला सिहरे ।
सक्कदुगणुचर सादीचारणपउमप्पहास वाणसुरा ॥ ७१९ ॥

श्रद्धावान् विजटावान् पद्मगंधवन्नामानि शुक्ला: शिखरे ।
शक्रद्विकानुचरा: स्वातिचारणपद्मप्रभासा: वानसुरा: ॥ ७१९ ॥

अर्थ—हैमवतादि विर्षे श्रद्धावान् १ विजटावान् १ पद्मवान् १ गंधवान् १ ऐसे च्यारी क्रमतै नाभि गिरिनिके नाम हैं । बहुरि ते नाभिगिरि श्वेतवर्ण हैं । बहुरि तिनि गिरिनिके शिखरनि सौधर्म ईशान इन्द्रके अनुचर व्यंतर स्वाति १ चारण १ पद्म १ प्रभास देव बसैं हैं ॥ ७१९ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचल अर विजयार्द्ध पर्वत तिनके उपरि तिष्ठते जे कूट तिनकी संख्यादिक कहैं हैं;—

एक्कारसट्ठणवणव अट्ठेक्कारस हिमादिकूडाणि ।
वेयड्ढाणं णव णव पुव्वगकूडम्हि जिणभवणं ॥ ७२० ॥
एकादशाष्ट नव नव अष्टैकादश हिमादिकूटानि ।
विजयार्धानां नव नव पूर्वकूटे जिनभवनानि ॥ ७२० ॥

अर्थ—ग्यारह ११ आठ ८ नव ९ नव ९ आठ ८ ग्यारह ११ प्रमाण क्रमतैं हिमवन् आदि कुलाचलनि उपरि कूट हैं। बहुरि विजयार्ध पर्वतनिकै उपरि नव नव कूट हैं। नीचैं बहुत चौडे उपरि थोरे चौडे गोल आकार पर्वतनिकै उपरि ए कूट जाननें। तहां पूर्वदिशाविषै प्रथम सिद्धायतन नामा कूट तिन उपरि जिन मंदिर हैं ॥ ७२० ॥

आगैं कहे कूट तिनके नाम आदिक गाथा दश करि कहै हैं;—

कमसो सिद्धायदणं हिमवं भरहं इला य गंगा य ।
सिरिकूडरोहिदस्सा सिंधु सुरा हेमवदय वेसवणं ॥ ७२१ ॥
क्रमशः सिद्धायतनं हिमवान् भरतं इला च गंगा च ।
श्रीकूटं रोहितास्या सिंधुः सुरा हैमवतकं वैश्रवणं ॥ ७२१ ॥

अर्थ—क्रमकरि तिनके नाम कहिए है। सिद्धायतन १ हिमवन १ भरत १ इला १ गंगा १ श्रीकूट १ रोहितास्या १ सिंधु १ सुराकूट १ हैमवतक १ वैश्रवण १ ऐसैं हिमवन कुलाचल उपरि ग्यारह कूट हैं ॥ ७२१ ॥

पढमे जिणिंदगेहं देवीओ जुवदिणामकूडेसु ।
सेसेसु कूडणामा वेंतरदेवावि णिवसंति ॥ ७२२ ॥
प्रथमे जिनेंद्रगेहं देव्यो युवतीनामकूटेषु ।
शेषेषु कूटनामानः व्यंतरदेवा अपि निवसंति ॥ ७२२ ॥

अर्थ—तहां प्रथम सिद्धायतन कूट उपरि जिनेंद्र मंदिर है। बहुरि स्त्रीनिका नाम धारक जे कूट हैं जैसे हिमवन उपरि इला गंगा श्री रोहितास्या सिंधु सुराकूट हैं तिन उपरि व्यंतर देवी बसै हैं। बहुरि अवशेष कूटनिकै उपरि अपनें अपने कूटके नाम धारक व्यंतर देव बसै हैं ॥ ७२२ ॥

कूडा सव्वे कूडा रयणमया सगणगस्स तुरियुदया ।
तत्तिय भूविच्छारा तदद्धवदणा हु सव्वत्थ ॥ ७२३ ॥
कूटाः सर्वे कूटा रत्नमयाः स्वकनगस्य तुर्योदयाः ।
तावद्भूविस्ताराः तदर्धवदना हि सर्वत्र ॥ ७२३ ॥

अर्थ—ते सब कूट रत्नमय वेदीसहित गोल हैं। बहुरि [illegible] हैं। बहुरि तिनकी अपने अपने पर्वतकी ऊंचाई तातैं चौथा भाग प्रमाण ऊंचे हैं। बहुरि तैसे भूव्यास तितना ही [illegible] उपरिवै [illegible]

जाननें। तिस भूमिविस्तारतें आधा उपरि मुख व्यास है। ऐसें इन दोय गाथानिकरि कह्या विशेष सो सर्वत्र महाहिमवदादिकनिके कूटनिविषै भी जाननां ॥ ७२३ ॥

तो सिद्ध महाहिमवं हेमवदं रोहिदा हिरीकूडं ।
हरिकंता हरिवरिसं वेलुरियं पच्छिमं कूडं ॥ ७२४ ॥
ततः सिद्धं महाहिमवान् हैमवतं रोहिता ह्रीकूटं ।
हरिकांता हरिवर्षं वैडूर्यं पश्चिमं कूटं ॥ ७२४ ॥

अर्थ—तहां पीछैं सिद्धकूट १ महा हिमवत् १ हैमवत् १ रोहिता १ ह्रीकूट १ हरिकांता १ हरिवर्ष १ वैडूर्य अंतका कूट १ ऐसैं महा हिमवत् उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२४ ॥

सिद्धं णिसहं च हरिवरिसं पुव्वविदेह हरिधिदीकूडं ।
सीतोदा णाममदो अवरविदेहं च रुजगंतं ॥ ७२५ ॥
सिद्धं निषधं च हरिवर्षं पूर्वविदेहं हरिधृतिकूटं ।
सीतोदा नाम अतः अपरविदेहं च रुचकांतम् ॥ ७२५ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ निषध १ हरिवर्ष १ पूर्वविदेह १ हरिकूट १ धृतिकूट १ सीतोदा नाम कूट १ यातैं परैं अपर विदेह कूट अंतविषै रुचक कूट ऐसैं निषध पर्वत उपरि नवकूट हैं॥७२५॥

सिद्धं णीलं पुव्वविदेहं सीदा य कित्ति णरकंता ।
अवरविदेहं रम्मगमपदंसणमंतिमं णीले ॥ ७२६ ॥
सिद्धं नीलं पूर्वविदेहं सीता च कीर्तिः नरकांता ।
अपरविदेहं रम्यकं अपदर्शनं अंतिमं नीले ॥ ७२६ ॥

अर्थ—सिद्ध १ नील १ पूर्व विदेह १ सीता १ कीर्ति १ नरकांता १ अपरविदेह १ रम्यक १ अंतका अपदर्शन १ ए नील पर्वत उपरि नवकूट हैं ॥ ७२६ ॥

सिद्धं रुम्मी रम्मग णारी बुद्धी य रुप्पकूलक्खा ।
हेरण्णं कूडमदो मणिकंचणणामगं होदि ॥ ७२७ ॥
सिद्धं रुक्मी रम्यकं नारी बुद्धिश्च रूप्यकूलाख्या ।
हैरण्यं कूटमतः मणिकांचननामकं भवति ॥ ७२७ ॥

अर्थ—सिद्ध १ रुक्मी १ रम्यक १ नारी १ बुद्धि १ रूप्यकूला नाम १ हैरण्य कूट १ यातैं मणिकांचन नामवाला कूट हो है। ए रुक्मी उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२७ ॥

सिद्धं सिहरि य हेरण्णं रसदेवी रत्ता य रत्तवदा ।
लच्छी सुवण्ण रत्तवदी गंधवदीय कूडमदो ॥ ७२८ ॥
सिद्धं शिखरी च हैरण्यं रसदेवी रक्ता रक्ताख्या ।
लक्ष्मीः सुवर्णं रक्तवती गन्धवती कूटमतः ॥ ७२८ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ शिखरी १ हैरण्य १ रसदेवी १ रक्ता नदी १ रक्ताख्या १ लक्ष्मी १ सुवर्ण १ रक्तवती १ गन्धवती कूट १ ऐसैं हैं ॥ ७२८ ॥

एरावदमणिकंचणकूडं सिहरिम्हि सव्वसेलाणं ।
मूले सिहरेवि हवे दहेवि वणखंडमेदस्स ॥ ७२९ ॥

ऐरावतमणिकांचनकूटं शिखरे सर्वशैलानाम् ।
मूले शिखरेपि भवेत् ह्रदेपि वनखंडमेतस्य ॥ ७२९ ॥

अर्थ—ऐरावत १ मणि कांचन १ कूट १ ए शिखरी पर्वत उपरि ग्यारह कूट हैं । ऐसें ए कूट कहे इन कूटनिका ऐसा आकार जानना । बहुरि सर्व ही पर्वतनिके मूलविषै नीचे अर शिखरविषै ऊपरि अर द्रहनिविषै चौगिरद वन खंड हैं ॥ ७२९ ॥

याका कहा सो कहै हैं;—

गिरिदीहो जोयणदलवासो वेदी दुकोसतुंगजुदा ।
धणुपणसयवासा णगवणणदिदहपहुदिएसु समा ॥ ७३० ॥

गिरिदैर्घ्यं योजनदलव्यासं वेदी द्विक्रोशतुंगयुता ।
धनुःपंचशतव्यासा नगवननदीह्रदप्रभृतिषु समा ॥ ७३० ॥

अर्थ—इस वनखंडका जितना अपनें अपनें पर्वतका लंबाईका प्रमाण है तितना लंबाईका प्रमाण है । बहुरि आध योजन चौडाईका प्रमाण है । बहुरि तिस वन खंडकी वेदी सो पांचसै धनुष चौडी दोय कोस ऊंची है । सो ए वेदी पर्वत वन नदी द्रह आदिविषै उंचाई चौडाईका प्रमाण करि समान है । जैसे बागकै चौगिरद विना कांगुरा भींति हो है ताका नाम वेदी जानना ॥७३०॥

अब पर्वतादिकनिविषै सर्वत्र वेदिकानिकी संख्या कहैं हैं;—

तिसदेक्कारससेले णउदीकुंडे दहाण छव्वीसे ।
तावदिया मणिवेदी णदीसु सगमाणदो दुगुणा ॥ ७३१ ॥

त्रिशतैकादशशैलेषु नवतिकुंडेषु ह्रदानां षड्विंशतौ ।
तावत्यः मणिवेद्यः नदीषु स्वकमानतः द्विगुणाः ॥ ७३१ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै तीनसै ग्यारह पर्वत हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि निवै कुंड है तहां तितनी ही मणिमई वेदी है । बहुरि छवीस द्रह हैं । तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि जे नदी हैं तहां दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी पाईए है । तातैं अपने नदीनिका प्रमाणतैं दूणी मणिमई वेदी हैं । यानै इस कहे अर्थकों विशेष वर्णे हैं । जंबूद्वीपविषै एक तौ मेरु १ छह कुलाचल ६ च्यारि यमक पर्वत ४ दोयसै कांचनगिरि २०० आठ दिग्गज पर्वत हैं ८ सोलह वक्षार हैं १६ च्यारि गजदंत हैं ४ चौंतीस विजयार्द्ध हैं ३४ चौंतीस वृषभाचल हैं ४ च्यारि नाभिगिरि हैं ४ इनकौं मिलाएं तीनसै ग्यारह पर्वतनिकी संख्या हो है । बहुरि गंगादि महानदी जहां कुलाचलनै पडै हैं ते कुंड चौदह १४ विभंगानदी जिननैं उपजै हैं ते कुंड बारह १२ गंगा सिंधु समान विदेह देशनिविषै दोय दोय नदी जिननै उपजै हैं ते कुंड चौसठि ए मिलैं निवै कुंड हो हैं । बहुरि कुलाचलनिकै ऊपरि द्रह छह ६ सीतानदीविषै द्रह दश १० सीतोदा नदीविषै द्रह दश १० ए सर्व मिलैं छवीस द्रह हो हैं । बहुरि गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन एक एककै परिवार नदी चौदह हजार

अर्थ—सिद्ध कूट १ माल्यवत १ उत्तर कौरव १ कछ १ सागर १ रजत १ पूर्णभद्र १ सीता १ हरिसह कूट नवमां हो है। ए माल्यवत गजदंत उपरि नव कूट हैं॥ ७३८॥

तो सिद्धं सोमणस कूडं देवकुरु मंगलं विमलं ।
कंचण वसिट्ठमंते सिद्धं विज्जुप्पहं तत्तो ॥ ७३९ ॥
ततः सिद्धं सौमनसं कूटं देवकुरु मंगलं विमलं ।
कांचनं अवशिष्टमन्ते सिद्धं विद्युत्प्रभे ततः ॥ ७३९ ॥

अर्थ—तहां पीछैं सिद्धकूट १ सौमनस कूट १ देव कुरु कूट १ मंगल १ विमल १ कांचन १ अंत विषै वशिष्ट कूट ऐसैं ए सौमनस गजदंत उपरि सात कूट हैं। बहुरि तहां पीछैं सिद्ध कूट १ विद्युत्प्रभ ॥ ७३९ ॥

देवकुरु पउम तवणं सोत्थियकूडं सदज्जलं तत्तो ।
सीतोदा हरि चरिमं तो सिद्धं गंधमादणयं ॥ ७४० ॥
देवकुरुः पद्मं तपनं स्वस्तिककूटं शतज्वालं ततः ।
सीतोदा हरि चरमं ततः सिद्धं गंधमादनकं ॥ ७४० ॥

अर्थ—देव कुरु १ पद्म १ तपन १ स्वस्तिककूट १ शतज्वाल १ तहां पीछैं सीतोदा १ अंतका हरिकूट १ ऐसैं ए विद्युत्प्रभ गजदंत उपरि नव कूट हैं। बहुरि तहां पीछैं सिद्ध १ गंधमादन ॥ ७४० ॥

उववणकूड गंधादीमालिणि तो लोहिदक्ख फलिहंते ।
आणंदे णागरकूडे णिवसदि सुभोगा य भोगमालिणिया ॥ ७४१ ॥
उपवनकूट गंधादिमालिनी ततो लोहिताख्यं स्फटिकान्ते ।
आनंदे नागरकूटे निवसति सुभोगा च भोगमालिनी ॥ ७४१ ॥

अर्थ—उपवनकूट १ गंधमालिनी १ तहां पीछैं लोहितनामा कूट १ स्फटिक १ अंत विषै आनंदकूट १ ए गंधमादन गजदंत उपरि सात कूट हैं। ए कहे गजदंत संबंधी कूट [illegible] [illegible] कूटनि विषै सुभोगा अर भोगमालिनी नामा व्यंतर देवी बसै है ॥ ७४१ ॥

विमलकूडे कंचणादीविद सुमित्ता य वारिसेणा बला ।
णंदणकूडे मेघंकर मेघवदी फलिहलोहिदे देवी ॥ ७४२ ॥
विमलकूटे कांचनादिके सुमित्रा च वारिषेणा बला ।
नंदनकूटे मेघंकरा मेघवती स्फटिकलोहिते देवी ॥ ७४२ ॥

अर्थ—विमल अर कांचन कूटनिविषै सुमित्रा अर वारिषेणा नामा व्यंतर देवी बसै है। [illegible] नंदन अर [illegible] नाम कूटनि विषै मेघंकरा अर मेघवती नामा व्यंतर देवी बसै है। बहुरि स्फटिक अर लोहित कूटनि विषै [illegible] नामा व्यंतर देवी बसै है ॥ ७४२ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ७४३ ॥

सिद्धं वक्षाराख्यं अधस्तनोपरिमदेशनामकूटद्वयं ।
द्विनव पंच षोडश द्विकला च वक्षारदीर्घत्वम् ॥ ७४३ ॥

अर्थ—यानैं उपरि सोलह वक्षार गिरिनि उपरि च्यारि च्यारि कूट हैं। तहां एक तौ सिद्ध कूट है। बहुरि एक जो जो अपनें अपनें वक्षारका नाम तीह नामका धारक कूट है। बहुरि दोय जो जो अपनें अपनें वक्षारकै पूर्व पश्चिम पार्श्वनिविषैं दोय विदेह देशनिका जे नाम तिन नामनिके धारक कूट हैं। ऐसैं च्यारि च्यारि कूट जानने। जैसैं चित्रकूट वक्षार उपरि सिद्धायतन १ चित्रकूट १ कच्छा १ सुकच्छा ए च्यारि कूट हैं। ऐसैं ही अन्यत्र जानने। बहुरि वक्षार पर्वतनिकी लंबाई दोय नव पांच सोलह ताकै सोलह हजार पाचसै बाणवै योजन अर एकका उगणीसवां भाग विषैं दोय कला इतने प्रमाण जाननी। यहु कैसैं? तेतीस हजार छसै चौरासी योजन च्यारि कला विदेहका विष्कंभ है। तामैं सीता सीतोदानदीका विस्तार व्यास पांचसै योजन ५०० घटाइ अवशेष ३३१८४।४-१९ को आधा किएं १६५९२।२+१९ वक्षार गिरिनिकी लंबाईका प्रमाण आवै है ॥ ७४३ ॥

कुलगिरिसमीवकूडे दिक्कण्णाओ वसंति सेसेसु ।
वाणा कूडपमाहिद पणदीहो कूडअंतरयं ॥ ७४४ ॥
कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कन्याः वसंति शेषेषु ।
वानाः कूटप्रमाहितं नगदैर्घ्यं कूटांतरं ॥ ७४४ ॥

अर्थ—कुलगिरि कहिए कुलाचल तिनकै समीप जे वक्षारक गिरि गजदंत वा वक्षार पर्वत तिनकै ऊपरि जो कूट हैं तहां दिक्कुमारी बसै हैं। अवशेष दोय गजदंतनिकै सात सात कूट दोय गजदंतनिकै [illegible] पांच कूट वक्षार गिरिनिकै दोय दोय कूट तिन उपरि व्यंतर देव बसै हैं। सिद्धकूट उपरि जिन मंदिर है ही। बहुरि अपना अपना कूटके प्रमाणका भाग आपना आपना पर्वतकी लंबाईकौं दीएं जो जो प्रमाण आवै तितना तितना कूट कूटनिकै बीचि अंतराल है। तहां दोय गजदंतनिकै नव नवकूट दोय गजदंतनिकै सात सात कूट वक्षार गिरिनिकै च्यारि च्यारि कूट जानने। बहुरि गज दंतनिकी लंबाई तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला है। वक्षार गिरिनिकी लंबाई सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला है। तहां नव कूटनिका अंतराल तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला प्रमाण गजदंत क्षेत्र होय तौ एक कूटका अंतराल कितना होय [illegible] त्रैराशिक किए तीन हजार तीनसै छप्पन योजन पाए अर अवशेष पांच योजनका [illegible] [illegible] एकका नवां भागकौ समच्छेद कीएं किंचिद् ९५-१०१६-१०१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रमाण एक कूटका अंतराल [illegible] [illegible] [illegible]। बहुरि ऐसैंही सात [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गजदंत [illegible] १०२०९।६ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] योजन अर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। बहुरि च्यारि कूटनिका [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गिरिका क्षेत्र होइ तौ एक कूटके अंतरालका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अंश अर भाग देइ निटाएं च्यारि हजार एकसौ अठतालीस योजन अर एकका अठतालीसवां भाग प्र च्यारि कूटनिके बीचि अंतराल हो है ॥ ७४४ ॥

आगैं वक्षारनिकी उचाई तहां तिष्ठते अकृत्रिम चैत्यालयनिका स्थान तादि निर्देश करै है;

वक्खारसयाणुदओ कुलगिरिपासम्हि चउसयाणुट्ठा।
णइमेरुस्स य पासे पंचसया तत्थ जिणगेहा ॥ ७४५ ॥

वक्षारशतानामुदयः कुलगिरिपार्श्वे चतुःशतं वृद्धया।
नदीमेरोश्च पार्श्वे पंचशतानि तत्र जिनगेहाः ॥ ७४५ ॥

अर्थ—पांचमेरुसंबंधी गजदंतसहित वक्षारगिरि एकसौ है। तिनकी उचाई कुलाचल निकटि तौ च्यारिसै योजन प्रमाण है। बहुरि तातैं परैं अनुक्रमकरि वधते वधते विदेहविषै [illegible] वक्षारगिरि तैसौ सीता वा सीतोदा नदीके निकटि अर गजदंत मेरु गिरिके निकटि पांचसै [illegible] उचे हैं। तहां पांचसै योजन उचाई जहां पाईए तहां सिद्धकूट जानना। तींह ऊपरि [illegible] मंदिर है ॥ ७४५ ॥

आगैं तहां आदि कूटनिकी उंचाई ल्यावनेकौं करणसूत्र कहै हैं;—

गिरितुरियं पढमंतिमकूडुदओ उभयसेसमद्धहिदं।
वेगपदेण चयो सो इट्ठगुणो मुहजुदो इट्ठे ॥ ७४६ ॥

गिरितुर्यं प्रथमान्तिमकूटोदयः उभयशेषमपदहृतं।
[illegible] चयः स इष्टगुणः मुखयुतः इष्टे ॥ ७४६ ॥

अर्थ—वक्षार गिरिनिकी उंचाईका चौथा भाग प्रमाण सो तहां ऊपरि तिष्ठता प्रथम अर अंत [illegible] की उचाईका प्रमाण जानना। बहुरि इनविषै प्रथम कूटकी उंचाईका प्रमाण अंतकूटकी उंचा [illegible] ताकौ प्रथम हानिवृद्धिका [illegible] है। ताकौ एक घाटि [illegible] भाग दिए हानिचयका प्रमाण आवै है। सो हानिचय [illegible] प्रमाण [illegible] कूटकी उचाईका [illegible] कूटकी उचाईका प्रमाण आवै है। [illegible]

चयकों गुणैं द्वितियादि कूटविषै जो जो प्रमाण होइ ३।१÷८६।१÷४।९।३÷८।१२।१÷२।१५ ५÷८।१८।३÷४।२१।७÷८।२५ ताकौं मुख जो आदि कूटकी उचाई सौ योजन तीह करि जोडैं द्विती-यादि कूटनिकी उचाईका प्रमाण आवै है १०३।१÷८।१०६।१÷४।१०९।३÷८।११२।१÷२। ११५।५÷८।११८।३–४।१२१।७–८।१२५। ऐसैंही सात कूट ध्यारि कूटनिकी उचाईका प्रमाण ल्यावना ॥ ७४६ ॥

अब भरत आदि क्षेत्रनिका आश्रयकरि परिवार रूप नदीनिका प्रमाण गाथा घ्यारि करि कहैं हैं;—

भरहइरावदसरिदा विदेहजुगले च चोद्दससहस्सा।
णइपरिवारा तत्तो दुगुणा हरिरम्मगखिदित्ति ॥ ७४७ ॥

भरतैरावतसरितः विदेहयुगले च चतुर्दशसहस्राणि।
नदीपरिवाराः ततः द्विगुणा हरिरम्यकक्षेत्रांतं ॥ ७४७ ॥

अर्थ—भरत ऐरावतविषै घ्यारि नदी अर पूर्व पश्चिम विदेह युगलविषै गंगादि चौसठि नदी तिन एक एक नदीकी चौदह हजार परिवार नदी हैं। तातैं परैं भरततैं हरिक्षेत्रपर्यंत ऐरावततैं रम्यकपर्यंत दूणा दूणा अनुक्रम जानना। **भावार्थ**—हैमवत हैरण्यवत संबंधी घ्यारि नदीनिकै एक एककै अठाईस हजार परिवार नदी हैं। अर हरि रम्यक क्षेत्रसंबंधी घ्यारि नदीनिकै एक एककै छप्पन हजार परिवार नदी हैं ॥ ७४७ ॥

बादालसहस्सं पुह कुरुदुणदी दुगदुपासजादणदी।
चोद्दसलक्खडसदरी विदेहदुगसव्वणइसंखा ॥ ७४८ ॥

द्वाचत्वारिंशत्सहस्राणि पृथक् कुरुद्वयनद्यः द्विकद्विपार्श्वजातनद्यः।
चतुर्दशलक्षाष्टसप्ततिः विदेहद्विकसर्वनदीसंख्या ॥ ७४८ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरुविषै नदीनिका दोय पार्श्वनितैं उपजी प्रथक प्रथक बियालीस हजार नदी हैं। **भावार्थ**—देव कुरुविषै सीतोदा नदीका पूर्व पार्श्वविषै बियालीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै बियालीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं देव कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी है। बहुरि उत्तर कुरुविषै सीता नदीका पूर्व पार्श्वविषै बियालीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै बियालीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं उत्तर कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी हैं। बहुरि विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त सर्व नदीनिकी संख्या अठहत्तरि अधिक चौदह लाख है। सो कैसैं ? विदेहविषै प्राप्त गंगासिंधु समान चौसठि नदी तिनकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं। बहुरि विभंगा नदी बारह तिनकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार। देव कुरु उत्तर कुरुविषै सीता सीतोदाकी प्रत्येक परिवार नदी चौरासी हजार इन परिवार नदीनिका प्रमाणकौं मूल नदीनिका प्रमाणरूप अपनां अपनां गुणकार गुणें तहां मूलनदी अठहत्तरि मिलाएं सर्व मिली हुई विदेहविषै चौदह लाख अठहत्तरि नदी हो हैं ॥ ७४८ ॥

लवखतियं बाणउदीसहस्स बारं च सव्वणइसंखा।
भरहेरावदपहुदी हरिरम्मगखेत्तओत्ति णादव्वा ॥ ७४९ ॥

की चौसठि शलाकानिका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दश करि अपवर्त्तन किएं छह चालीस हजारका उगणीसवा भाग प्रमाण विदेह क्षेत्रका व्यास हो है। यामैं मेरु गिरिका मू दशहजार योजन समच्छेद करि घटाएं साढा च्यारि लाखका उगणीसवां भाग होइ याकौं किएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका व्यास हो है। कुरु अरु मेरुविषै इतनां अंतराल है सोई यहु कुरु क्षेत्रका वाण जाननां ॥ ७५९ ॥

अब याकौं धरि जीवाकी कृति अर चापकी कृति कौं ल्यावै हैं;—

इसुहीणं विक्खंभं चउगुणिदिसुणा हदे दु जीवकदी।
वाणकदिं छहिं गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि ॥ ७६० ॥

इषुहीनं विष्कंभं चतुर्गुणितेषुणा हते तु जीवाकृतिः।
बाणकृतिं षड्भिः गुणिते तत्र युते धनुःकृतिः भवति ॥ ७६० ॥

अर्थ—वाण करि हीन जो वृत्त विष्कंभ ताकौं चौगुणा वाण करि गुणें जीवाकी हो है। बहुरि वाणकी कृतिकौं छह गुणी करि तिस जीवाकी कृति विषै मिलाएं धनुषकी हो है। जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ ऐसा जो वर्गरूप राशि ताका नाम कृति सो जंबूद्वीप विषै देव कुरु वा उत्तर कुरुका आगैं कहिए हैं जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण एक इक्ईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवै योजनका एकसौ इकहत्तरिवां भाग१२१६५४९०–१७१ सौं वाणका जो प्रमाण दोय लाख पचीस हजार योजनका उगणीसवां भाग २२५००÷१९ ताकौं भाजक नव गुणांकरि समच्छेद करि २०२५००० – १७१ घटाइ अवशेष एक कोडि एक चालीस हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवा भाग रह्या १०१४०४९०÷१७१ ताकौं चौ वाणका प्रमाण नव लाखका उगणीसवां भाग करि गुणिए तहां गुणकारकी पांच बिंदी गु आगैं स्थापिए १०१४०४९००००००० ÷ १७१। बहुरि गुण्यका भागहार एकसौ इक चौगुणा वाणविषै नवका अंक था तीह सहित अपवर्त्तन किएं उगणीस भए। बहुरि चौगुणा गुण्यविषै उगणीसका भागहार था तिसकरि याकौं गुणें तीनसौ इकसठि भए। ऐसैं एक लाख हजार च्यारिसै च्यारि कोडि निवै लाखका तीनसै इकसठियां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रकी जीवाकी कृति याका वर्गमूल ग्रहण किएं दशलाख सात हजारका उगणीसवां भाग भया सो अपनां भागहारका दिएं तरेपन हजार योजन प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुकी जीवा हो है। बहुरि दोय लाख पचीस योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण जो वाण २२५००० ÷ १९ ताकी कृति करिए ५०६२५० ००० ÷ ३६१ बहुरि ताकौं छह गुणा करि याकौं ३०३७५०००००० – ३६१ पूर्वें थी जो जीवाकी कृति १०१४०४९,०००००० ÷ ३६१ तामैं जोडिए १३१७७९९,०००० – ३६१ तब धनुषकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि ११४७९५४ ÷ १९ भागहारका भाग दिएं साठि हजार च्यारिसै अठारह योजन अर बारह उगणीसवा भाग ६०४१ १२ ÷ १९ प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप हो है। बहुरि पूर्वें कही जो वाणकी ५०६२५०००००० ÷ ३६१ याका वर्गमूल ग्रहेंकरि २२५००० ÷ १९ भयो

...क भाग तिनि ग्यारह हजार आठसै तियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण देव ...र का उत्तर कुरुका बाण हो है ॥ ७६० ॥

...गे बाण, जीवातैं कुरु आदि क्षेत्रनिका वृत्त विष्कंभ ल्यावनेकौ करण सूत्र कहै हैं;—

इसुवग्गं चउगुणिदं जीवावग्गम्हि पक्खिवित्ताणं ।
चउगुणिदिसुणा भजिदे णियमा वट्टस्स विक्खंभो ॥ ७६१ ॥
इषुवर्गं चतुर्गुणितं जीवावर्गे प्रक्षिप्य ।
चतुर्गुणितेषुणा भक्ते नियमात् वृत्तस्य विष्कंभः ॥ ७६१ ॥

अर्थ—इषु जो बाण ताका जो वर्ग ताकौं चौगुणा करिए बहुरि याकौं जीवा वर्गविषै ...लाइए जो प्रमाण होइ ताकौं चौगुणा बाणका भाग दीजिए ऐसैं करतैं नियमतैं वृत्तक्षेत्रका विष्कं... ...का प्रमाण आवै है । सो जंबूद्वीपविषैं कुरुक्षेत्रका बाण दोयलाख पचीस हजारका उगणीसवां ...ताका वर्ग करि ५०६२५००००००००÷३६१ याकौं चौगुणा करिए २०२५०००००००० ...३६१ बहुरि इसकौं पूर्वै कही जो जीवाकी कृति १०१४०४९००००००÷३६१ तामैं ...लाइए तब एक लाख इकईस हजार छसै चौवन कोडि निवै लाखका तीनसै इकसठिवां भाग होइ २११६५४९,००००००÷३६१ बहुरि जो प्रमाण भया ताकौं चौगुणां बाण नव लाखका ...गणीसवां भाग ९,०००००÷१९, ताका भाग दीजिए तहां इस भागहारकी पंचबिंदी अर ...भाज्यकी पंचबिंदीका अपवर्तन करिए १२११६५४९०÷३६१।९ बहुरि हारस्य हारो गुणकोंऽ...शः इस वचनतैं भागहारका भागहार भाज्यका गुणकार होइ सो इहां भागहारका भागहार ...गणीस है सो भाज्यके गुणकार भया । बहुरि इहां भागहार तीनसै इकसठि है ताकौं भाज्यका ...णकार उगणीस करि अपवर्तन किए उगणीस भए १२११६५४९०÷१९।९ बहुरि ...गणीस अर नव भाग हारके अंकनिकौं परस्पर गुणैं एक कोडि इकईस लाख पैंसठि हजार ...चारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग भया सो अपना भागहारका भाग दिएं इकहत्तरि हजार ...एकसौ तियालीस योजन अर सैताल एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो... । वृत्त विष्कंभका स्वरूप कहा सो कहिए है । गोल क्षेत्रके व्यासकौं वृत्त विष्कंभ जानना सो ...हां कुरु क्षेत्रविषैं गोल क्षेत्र तौ है नाहीं परंतु जीवादिकका ज्ञान होनेकै अर्थि वृत्त विष्कंभ क्षेत्रका ...माण कल्पना करि कहा है । सो याका ऐसा अभिप्राय जानना । इकहत्तरि हजार सौ तियालीस ...योजन अर सैतालीस एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण व्यासकौं धरै जो गोल क्षेत्र होइ तिस विषै ...तहां तरेपन हजार योजन व्यासका प्रमाणरूप जीवा होइ तहांतैं अंतपर्यंत ग्यारह हजार आठसै ...तियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण बाण हो है । ऐसैंही अन्यत्र साधन करना ॥७६१॥

आगैं कुरु आदि क्षेत्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनेकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

जीवाहदइसुपादं जीवाइसुजुददलं च पत्तेयं ।
दसकरणिवाणगुणिदे सुहुमिदरफलं च चणुखेत्ते ॥ ७६२ ॥

जीवाहतेषुपादं जीवार्द्धयुतदलं च प्रत्येकं ।

दशकरणिवाणगुणिते सूक्ष्मेतरफलं च धनुःक्षेत्रे ॥ ७६२ ॥

अर्थ—जीवा करि गुण्या हुवा बाणका चौथा भागकौं जुदा स्थापिए। बहुरि बाणकौं जोडि ताका आधाकौं जुदा स्थापिए। तहां पहलै स्थापन किया ताका विष्कंभ सूत्रतैं वर्ग करि दश गुणां करि मूल ग्रहण योग्य राशि रूप करिए ताका वर्ग मूल धनुषाकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है। बहुरि पीछै स्थापन कीया ताकौं बाण करि क्षेत्र फल हो है। सो जंबू द्वीपके कुरु क्षेत्रनिविषै दोय लाख पचीस हजारका उग प्रमाण बाण है ताका चौथा भाग ५६२५०÷१९ कौं जीवा तरेपन हजार करि २९८१२५००००÷१९ बहुरि विष्कंभ वग्गदह गुण इत्यादि सूत्रनैं याका वर्ग करि करि करणि करिए है। ८८८७८५१५६२५००००००००००÷३६१ याका वर्गमूल नवसै वियालीस कोडि पिचहत्तरि लाख चालीस हजार दोयसै चौहत्तरि योजनका उगण प्रमाण कुरु क्षेत्रका सूक्ष्म फल हो है। तार तम्य करि एक योजनके लंबे चौड़े खंड क हैं। बहुरि जीवा तरेपन हजार योजन ताकौं उगणीस करि समछेद करि १००७०००÷१ प्रमाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भागमैं जोड़ि १२३२०००÷१९ ताकौं ६१६०००÷१९ बहुरि याकौं बाण २२५०००÷१९ करि गुणें तेरह हजार अ कोड़िका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका स्थूल क्षेत्र फल हो है। स्थूल पै एक योजन लंबे चौड़े खंड कल्पें इतनें हो हैं ॥ ७६२ ॥

आगें अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर बाणके ल्यावनेंकौं करण सूत्र कहे हैं;—

दुगुणिसु कदिजुद जीवावग्गं चउवाणभाजिए वट्टं ।

जीवा धणुकदिसेसो छब्भत्तो तप्पदं वाणं ॥ ७६३ ॥

द्विगुण्येषुं कृतियुतं जीवावर्गं चतुर्बाणभक्ते वृत्तं ।

जीवा धनुःकृतिशेषः षड्भक्तः तत्पद बाणम् ॥ ७६३ ॥

अर्थ—दुगुण बाणका वर्ग करि जोड्या हुवा जीवाका वर्गकौं चौगुणा बाणका वृत्त विष्कंभ हो है। बहुरि जीवाकी कृति चापकी कृतिमैंसौं घटाइ अवशेषकौं छहका जो प्रमाण होइ ताका पद कहिए वर्गमूल सो बाण हो है। सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रनि लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण बाणकौं दूणा करि ४५००००÷१९ ताका २०२५००००००००÷३६१ यामैं जीवा तरेपन हजार प्रमाण ताका वर्ग २८०९० सम छेद करि १०१४०४९०००००० जोडिए १२१६५४९००००००÷३६१ चौगुणा बाणका प्रमाण ९०००००÷१९ का पूर्वोक्त अपवर्तन विधान करि भाग दीएं इकईस लाख पैंसठि हजार प्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवा भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृ हो है। बहुरि पूर्वोक्त जीवाका वर्गकौं ४ समछेद करि १०१४०४९०००००० धनु १३१७७०९,०००००००÷३६१ मैंसौं घटाए ३०३७५०००००००÷३६१ अवशेष

भाग दिएं जो प्रमाण ५०६२५००००००÷३६१ होइ ताका वर्ग मूल ग्रहण किएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका बाण हो है ॥ ७६३ ॥

आगे अन्य प्रकारका करि बाण ल्यावनेकों करण सूत्र कहै हैं;—

जीवाविक्खंभाणं वग्गविसेसस्स होदि जम्मूलं ।
तं विक्खंभा सोहय सेसद्धामिसुं विजाणाहि ॥ ७६४ ॥

जीवाविष्कंभयोः वर्गविशेषस्य भवति यन्मूलं ।
तत् विष्कंभात् शोधय शेषार्धमिषुं विजानीहि ॥ ७६४ ॥

अर्थ—जीवाका वर्ग वृत्त विष्कंभका वर्गमैंसौं घटाएं अवशेष जो रहै ताका जो वर्गमूल ताकौं वृत्त विष्कंभका प्रमाणमैंसौं घटाएं अवशेष रहै ताका आधा बाणका प्रमाण जानहु । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषैं जीवा तरेपन हजार ताका वर्ग २८०९००००००० कौं वृत्त विष्कंभ एक कोडि इक ईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसैं निवैका एक सौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण ताका वर्ग १४७९९९१४६९.४०१०० मैंसौं जीवाका वर्गका समछेद करि ८२१३७९६९,०००००० —२९२४१ घटाएं अवशेष जो रहे ६५८६११८७ ९.४०१००—२९२८१ ताका वर्गमूल था जो प्रमाण ८११५४९०÷१७१ ताकौं पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४·९०÷१७१ मैंसौं घटाएं अवशेष जो रहै ४०५००००६÷१७१ ताका आधा बीस लाख पचीस हजारका एकसौ इकहत्तरिवां भाग मात्र होइ सो इहां भाग हार एकसौ इकहत्तरिकौं नव गुणा उगणीस रहे सो स्थापि पूर्वोक्त अर्द्ध प्रमाणके भाज्यकौं २०२५००० नवका भाग दिएं दोय लाख पचीस हजार भाज्य होइ अर अवशेष उगणीस भागहार रहै सो इतना कुरुक्षेत्रका बाण जानना ॥७६४॥

आगैं अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर बाणके ल्यावनेकौं करण सूत्र कहै हैं;—

दुगुणिसुहिदधणुवग्गो बाणोणो अद्धिदो हवे वासो ।
वासकदिसहिदधणुकदिदलस्स मूलेवि वासमिसुसेसं ॥ ७६५ ॥

द्विगुणेषुहितधनुर्वर्गो बाणोनः अर्धितो भवेत् व्यासः ।
व्यासकृतिसहितधनुष्कृतिदलस्य मूलेपि व्यासमिषुशेषं ॥ ७६५ ॥

अर्थ—दूणा बाणका भाग धनुषका वर्गकौं दिएं जो प्रमाण होइ तामैं बाणका प्रमाण घटाइ अवशेषकौं आधा किए वृत्त विष्कंभका प्रमाण हो है। बहुरि वृत्त व्यासका वर्ग करि जोड्या हुवा ऐसा जो धनुषके वर्गका आधा प्रमाणका वर्ग मूल तामैंसौं वृत्त विष्कंभका प्रमाण घटाए बाणका प्रमाण हो है । सो जंबुद्वीपके कुरु क्षेत्रविषैं बाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं दूणा करि ४५००००÷१९ याका भाग पूर्वोक्त धनुषका वर्गकौ १३१७७९९००००००÷३६१ पूर्वोक्त प्रकार अपवर्तन विधान करि दीएं एक लाख चौवन हजार एकसौ अठाईस अर अवशेष च्यारिसै साठका आठसै पचावनवा भाग होइ सो अवशेषके भाज्य भागकनौं पंच करि अपवर्तन किएं बाणवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इनकौं समछेद करि मिलाइ २६३५५९८०—१७१ यामैं समछेद विधानकरि बाणका प्रमाण २०२५०००—१७१ घटाएं अवशेष २४३३०९८०—१७१

कौं आधाकरि १२१६५४९०÷१७१ अपनां भाग हारका भाग दिएं ७११४३३७-१ः कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है । बहुरि समछेद करि अपनें अंशाकरि जोड्या हुवा जो वृत्त विष्कंभ प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ ताका वर्ग करि १४७९९९१४६९४०१००÷२९२४१ पूर्वोक्त धनुषकी कृति १३१७७९९०००००००÷३६१ ताका अर्द्धप्रमाण ६५८८९९५०० ÷३६१ कों भाज्य भाजककों इक्यासी गुणां करि समछेद करि ५३३७०८५९५०० ÷२९२४१ जोडिए २०१३७०००६४४०१००÷२९२४१ याका वर्गमूलका जो १४१९०४९०÷१७१ तामैं वृत्त विष्कंभ १२१६५४९०÷१७१ कों घटाइ अवशेष लाख पचीस हजारकौं एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इहां भाग हार उगणीस नवकरि नव करि तिस भाज्यकौं भाग दिएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग होइ सो वाण प्रमाण है ॥ ७६५ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि धनुषकी कृति अर जीवाकी कृति ल्यावनैंकौं कारण सूत्र कहै हैं—

इसुदलजुदविक्खंभो चउगुणिदिसुणा हदे दु धणुकरणी ।
वाणकदिं छहिं गुणिदं तत्थूणे होदि जीवकदी ॥ ७६६ ॥

इषुदलयुतविष्कंभः चतुर्गुणितेषुणा हते तु धनुःकरणी ।
वाणकृतिं षड्भिः गुणितं तत्रोने भवति जीवकृतिः ॥ ७६६ ॥

अर्थ—वाणका अर्द्ध प्रमाण करि जोड्या हुवा विष्कंभ ताकौं चौगुणा वाणका प्रमाण करि गुणें धनुषकी कृति हो है । बहुरि वाणकी कृतिकौं छह गुणी करि ताकौं तिस धनुषकी कृतिमैं घटाएं जीवाकी कृति हो है । सो इस जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै वाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं आधा करि ११२५००÷१९ याकौं नव करि समछेद करि १०१२५००÷१७१ पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ विषै जोडि हुए १३१७७९९०÷१७१ चौगुणा वाण ९०००००÷१९ करि गुणिए तहां गुण्य राशिका भाग हार एकसौ इकहत्तरिकौं उगणीस नव गुणाकरि दोय जायगा स्थापिए १९।९ बहुरि गुणकारकै पांच बिंदी गुण्य राशिकै आगैं स्थापिए १३१७७९९००००००० बहुरि गुणकारका नवका अंक करि गुण्यका भागहार दोय जायगा स्थापन किया था तामैं नवका अंककरि अपवर्तन करि अर दोय गुण्यका भाग हार उगणीस अर गुणकारका भागहार परस्पर गुणें तीनसै इकसठि भए ऐसे इनमैं करि धनुषकी कृतिका प्रमाण १३१७७९९०००००००÷३६१ हो है । बहुरि वाणका वर्ग करि ५०६२५०००००००÷३६१ ताकौं छह गुणाकरि ३०३७५००००००००÷३६१ तिस धनुषकी कृति १३१७७९९०००००००÷३६१ मैंसौं घटाएं अवशेष १०१४०४९०० ०००÷३६१ प्रमाण जीवाकी कृति हो है । ऐसैं इषुगत विष्कंभ इत्यादि सात गाथानि करि कह्या जो विधान सो जानिए श्रेणिनि विषै अर विमान आदि कुलाचलनिविषै भी धनुष । ऐसे बहुरि इनका भी धनुषाकार क्षेत्र हो है । सो कैसैं सो कहिए है । पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ... आदिविषै प्रमाण ल्यावनौं ऐसा जानना । सो विशेषकै अर्थि जानने

प्रमाण सो दक्षिण भरतकी जीवा है । विजयार्द्धकी उत्तर दिशाका तटका प्रमाण विजयार्द्धकी जीवा है । विजयार्द्धके उत्तर भरतका प्रमाण संपूर्ण भरतकी जीवा है । हिमवत्का उत्तर तटका प्रमाण हिमवत्की जीवा है । महाहिमवानके, दक्षिण हैमवतका प्रमाण हैमवतकी जीवा है । महाहिमवतके उत्तर तटका प्रमाण महाहिमवत्पर्वतकी जीवा है । निषधके, दक्षिण हरिका प्रमाण हरिकी जीवा है । निषधके, उत्तर तटका प्रमाण सो निषधकी जीवा है । विदेह क्षेत्रका मध्यविषैं विदेहका प्रमाण विदेहकी जीवा है । जैसैं पूर्व पश्चिम लंबाईका प्रमाण सो जैसै धनुषकी चिल्ला हो है तैसैं जीवा जाननी । अर जैसैं धनुष हो है तैसैं जीवाका एक पार्श्वतै लगाय दूसरे पार्श्व पर्यंत जंबूद्वीपका जो गोल परिधिरूप भाग सो धनुष जानना । या धनुषकौं धनुष वा धनुः पृष्ठ भी कहिए । बहुरि जैसैं चिल्ला धनुषकै बीचि बाणका क्षेत्र हो है तैसैं जिस जीवाका मध्यतै लगाय सन्मुख जंबूद्वीपका अंतपर्यंत जो प्रमाण सो बाण जानना । ऐसैंही उत्तर ऐरावत आदि क्षेत्र इनकी आदि कुलाचलनिका कथन जानना । विशेष इतना जहां उत्तर तटका कह्या है तहां दक्षिण तट जानना । क्षेत्र कुलाचलनिका जो नाम है सो तहीं नाम जानना ॥ ७६६ ॥

आगै अब दक्षिण भरत अर विजयार्द्ध अर उत्तर भरत क्षेत्रके बाण ल्यावनेंकौं सूत्र कहैं हैं;—

रुप्पगिरिहीणभरहव्वासदलं दक्खिणद्धभरहइसू ।
णगजुद णगसरमुत्तरभरहजुदं भरहखिदिबाणो ॥ ७६७ ॥

रूप्यगिरिहीनभरतव्यासदलं दक्षिणार्धभरतेषुः ।
नगयुते नगशरः उत्तरभरतयुते भरतक्षेत्रबाणः ॥ ७६७ ॥

अर्थ—रूप्य गिरि जो विजयार्द्ध ताका व्यास योजन पचास सो भरतका व्यास पांचसै छब्बीस एक कलाविषैं घटाइ अवशेष ४७६ ६/१९ कों आधा किए दोयसै अठतीस योजन तीन कला प्रमाण दक्षिण आधा भरतका बाण हो है । यामैं विजयार्द्ध पर्वतका व्यास पचास योजन जोड़ें दोयसै अठयासी योजन तीन कला प्रमाण विजयार्द्धका बाण हो है । यामै उत्तर भरतका व्यास दोयसै अठतीस योजन तीन कला जोडे पांचसै छबीस योजन छह कला संपूर्ण भरतका बाण हो है । इन तीनों बाणनिके समछेद करि अपना अपना अंश मिलाएं दक्षिण भरतका च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग विजयार्द्ध पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवांभाग संपूर्ण भरतका दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण जाननां ॥ ७६७ ॥

आगै हिमवत आदि पर्वतनिका अर हैमवत आदि क्षेत्रनिका बाण ल्यावनेंकौं करण सूत्र कहै हैं;—

हिमणगपहुदीवासो दुगुणो भरहूणिदो य णिसहोत्ति ।
ससबाणा णिसहसरो सविदेहदलो विदेहस्स ॥ ७६८ ॥

हिमनगप्रभृतिव्यास. द्विगुणः भरतोनितश्च निषधांतम् ।
स्वस्वबाणा निषधशर सविदेहदल विदेहस्य ॥ ७६८ ॥

अर्थ—हिमवत पर्वत आदिका व्यास दूणा करि भरतका व्यास घटाएं [illegible] स्वकीय स्वकीय वाण हो हैं। सो एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ आदिकी दोय च्यारि आठ सोलह बत्तीस शलाकानिका कीत क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि किएं हिमवत आदिका व्यास हो है। सो हिमवतका बीस हजारका हैमवतका चालीस [illegible] हिमवतका असी हजारका हरिका एक लाख साठि हजारका निषधका तीन लाख बीस हजारका उगणी-सवां भाग प्रमाण व्यास है। सो याकौं दूणा करि यामैं सर्वत्र भरतका वाण दश हजारका उगणीसवां भाग घटाएं हिमवत आदिका क्रमतैं तीस हजार एक लाख ४००००÷१९। ८००००÷१९। १६००००÷१९। ३२००००÷१९। ६४००००÷१९। पचास हजार तीन लाख दश हजार [illegible] लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाण जाननां। बहुरि निषधका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग तामैं विदेहके व्यास छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग ताका आधा तीन लाख बीस हजारका उगणीसवां भाग जोड़े अर्द्ध विदेहका वाण नव लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। अब इन वाणनकौं धरि तिन क्षेत्र वा पर्वतनिकी जीवा कृति अर धनुः कृतिकौं इसुहीणं विष्कंभं इत्यादि करण सूत्र करि ल्याईए सो कहिए है। दक्षिण भरत विषै समछेदरूप वाण च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग ताकौं जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो इहां वृत्त विष्कंभ जाननां। ताकौं उगणीसकरि समछेद करी १९००००÷१९ यामैंसौं घटाइए १८९५४७५–१९ अब शेषकौं चौगुणा वाण १८१००÷१९ करि गुणें ३४३०८०९७५००–३१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १८५२२४÷१९ अपनां भाग हारका भाग दीए नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरत क्षेत्रकी शुद्ध जीवा हो है। बहुरि वाण ४५२५÷१९ का वर्ग करि २०४७५६२५÷३६१ याकौं छह गुणा करि १२२८५३७५०–३६१ यामैं तीर औरकी कृति ३४३०८०९७५०० कौं जोड़ें ३४४३०९५१२५०÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १८५५५५÷१९ अपना भागहारका भाग दिए नव हजार सात सै पचासी योजन एक उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरतका धनुष हो है। बहुरि विजयार्द्ध विषै समछेदरूप बीस पांच हजार ग्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवां भाग प्रमाण ताहि समच्छेदरूप [illegible] विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौं घटाइ अवशेष १८०४५२५÷१९ कौं चौगुणा वाणका प्रमाण २१९००–१९ करि गुणें ४१४९००९७५००÷३६१ विजयार्द्धकी जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०३६९१÷१९ अपनां भागहारका भाग दीएं दश हजार सातसै बीस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतकी जीवा हो है। बहुरि वाण ५४७५–१९ या वर्ग करि २९९७५६२५÷३६१ याकौं छह गुणा करि १७९८५३७५०–३६१ तीर विषै पूर्वोक्त जीवाकी कृति ४१४९००९७५००–३६१ जोड़ें ४१६६९९५१२५०–३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०४१३२÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिए दश हजार सात सै [illegible] योजन

अर पंद्रह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतका धनुष हो है। बहुरि उत्तर भरतका समच्छेदरूप बाण दश हजारका उगणीसवां भाग ताकौ समच्छेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौं घटाइ अवशेष १८९००००÷१९ कौ चौगुणा बाण ४००००÷१९ करि गुणें ७५६००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७४०९५४÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं चौदह हजार च्यारिसैं इकहत्तरि योजन पांच उगणीसवां प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि बाण १००००÷१९ का वर्ग करि १००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणा करि ६०००००००००÷३६१ यामैं जीवाकी कृति ७५६००००००००÷३६१ जोड़ें ७६२००००००००÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७६०४३÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं चौदह हजार पांचसैं अठाईस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रका धनुष हो है। बहुरि हिमवन पर्वतका बाण तीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लक्षका उगणीसवां भाग मैं सौं घटाइ अवशेष १८७००००÷१९ कौ चौगुणाबाण १२००००÷१९ करि गुणें २२४४००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ४७३७०९÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं चौईस हजार नवसैं बत्तीस योजन अर किछू घाटि एक उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवनकी जीवा हो है। बहुरि बाण ३००००÷१९ का वर्ग करि ९००००००००÷३६१ याकौं छह गुणा करि ५४०००००००÷३६१ तीह विषैं जीवाकी कृति २२४४००००००००÷३६१ जोड़ें धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करै ४७९३७४÷१९ अपना भाग हार उगणीस १९ का भाग दिएं पचीस हजार दोय सै तीस योजन अर च्यारि उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवत पर्वतका धनुषहो है। बहुरि हैमवत क्षेत्रका बाण हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १८३००००÷१९ कौ चौगुणा बाण २८००००÷१९ करि गुणें ५१२४००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७१५८२२÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं सैंतीस हजार छसै चहत्तरि योजना अर किंचिदून सोलह उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि ७००००÷१९ वर्ग करि ४९००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणा करि २९४००००००००÷३६१ यामैं जीवाकी कृति ५१२४००००००००÷३६१ जोड़ें ५४१८००००००००÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७३६०७०÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं अठतीस हजार सातसैं चालीस योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रका धनुष हो है। बहुरि महा हिमवत पर्वतका बाण एक लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १७५००००÷१९ कौं चौगुणा बाण ६०००००÷१९ करि गुणें १०[illegible]००००००००÷३६१ जीवाकी कृति [illegible]। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १०२४६[illegible] [illegible]ना भाग हारका

ही दक्षिण भरतवत् उत्तर ऐरावतका विजयार्द्धवत् विजयार्द्धका संपूर्ण भरतवत् संपूर्ण ऐरावतका हिमवन शिखरी पर्वतका हैमवत हैरण्यवत्क्षेत्रका महाहिमवत् रुक्मी पर्वतका हरिवत् रम्यकक्षेत्रका निषधवत् नील पर्वतका अर्धविदेह वत् अर्द्ध विदेहका बाण जीवा धनु. वृत्तका कथन जानना ॥ ७६८ ॥

आगें दक्षिण भरतादि क्षेत्र वा पर्वतनिका जीवा धनुषनिके पूर्वें ल्याए अंक नव गाथानि करि कहै हैं;—

दक्खिणभरहे जीवा अडचउसगणवय होंति बारकला।
चापं छछक्कसगसयणवयसहस्सं च एक्ककला ॥ ७६९ ॥
दक्षिणभरते जीवा अष्टचतुःसप्तनव भवंति द्वादशकलाः।
चापं षट्षट्सप्तशतनवसहस्रं च एककला ॥ ७६९ ॥

अर्थ—दक्षिण भरत क्षेत्रविषैं जीवा आठ च्यारि सात नव इन अंकनि करि नव हजार सातसै अठतालीस योजन अर बारह कला प्रमाण है। बहुरि तिसहीका चाप जो धनुष सो छयासठि अधिक सातसै करि सहित नव हजार योजन अर एक कला प्रमाण है ॥ ७६९ ॥

वेयड्ढंते जीवा णभदुगसगदहसहस्सेगारकला।
तेदालसगणभेक्कं पण्णरसकला य सचावं ॥ ७७० ॥
विजयार्धान्ते जीवा नभोद्विकसप्तदशसहस्रैकादशकला।
त्रिचत्वारिंशत् सप्त नभःएकं पंचदशकलाश्च सचापं ॥ ७७० ॥

अर्थ—विजयार्द्धका अंत विषैं जीवा बिंदी दोय सात इन अंकनि करि सातसै बीस सहित दश हजार योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप तियालीस सात बिंदी [illegible] इन अंकनि करि दश हजार सातसै तियालीस योजन अर पंद्रह कला प्रमाण है ॥ ७७० ॥

भरहस्संते जीवा इगिसगचउचोद्दसं च पंचकला।
चावं अडदुगपणचउरेयं एक्कारसकला य ॥ ७७१ ॥
भरतस्यान्ते जीवा एक सप्त चतुश्चतुर्दश च पंचकलाः।
चापं अष्टद्विकपंचचतुरेकं एकादशकलाः च ॥ ७७१ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका अंत विषैं एक सात च्यारि चौदह इन अंकनि करि चौदह हजार च्यारिसै इकहत्तरि योजन अर पांचकला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप आठ दोय पांच च्यारि एक इन अंकनि करि चौदह हजार पांचसै अठाईस योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है ॥ ७७१ ॥

हिमवण्णगंत जीवा दुगतिगणवचउदुगं कला पुण्णा।
चावं णभतियदुगपणवीससहस्सं च चारिकला ॥ ७७२ ॥
हिमवन्नगांते जीवा द्विकत्रिकनवचतुर्द्वि कला पूर्णा।
चापं नभस्त्रिद्विपंचविंशतिसहस्रं च चतस्रः कलाः ॥ ७७२ ॥

अर्थ—हिमवन पर्वतका अंतविषैं जीवा दोय तीन नव च्यारि दोय इन अंकनि करि चौईस हजार नवसै बत्तीस योजन अर [illegible] है। बहुरि ताका चाप [illegible]

तीन दोय पांच इन अंकनि करि पांच हजार दोयसै तीस तीहि करि अधिक बीस हजार
अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७२ ॥

हेमवदंतिमजीवा चउसगछस्सगति उणसोलकला ।
धणुहं णभचउसगअडतिण्णि विसेसहियदसयकला ॥ ७७३ ॥

हेमवतांतिमजीवा चतुःसप्तषट्सप्तत्रयः ऊनषोडशकला ।
धनुः नभश्चतुःसप्ताष्टत्रीणि विशेषाधिकदशकला ॥ ७७३ ॥

अर्थ—हैमवत क्षेत्रका अंत विषै जीवा च्यारि सात छह सात तीन इन अंकनि करि तीस हजार छसै चहोत्तरि योजन अर किछू घाटि सोलह कला प्रमाण है। बहुरि ताका बिंदी च्यारि सात आठ तीन इन अंकनि करि अठतीस हजार सातसै चालीस योजन अर किंचित् अधिक दश कला प्रमाण है ॥ ७७३ ॥

महहिमवचरिमजीवा इगतिणवतिदयपंच छक्ककला ।
तच्चावं तियणवदुगसगवण्णसहस्स दसयकला ॥ ७७४ ॥

महाहिमवच्चमरजीवा एकत्रिनवत्रितयपंच षट्कलाः ।
तच्चापं त्रिनवद्विसप्तपंचाशत्सहस्रं दशकलाः ॥ ७७४ ॥

अर्थ—महाहिमवत पर्वतका अंत विषै जीवा एक तीन नव तीन पंच इन अंकनि करि तरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप तीन नव दोय इन अंकनि करि दोयसै तेरणवै तिन करि सहित सत्तावन हजार योजन अर दश कला प्रमाण है ॥ ७७४ ॥

हरिजीवा इगिणभणवतियसत्तयमिह कलावि सत्तरसा ।
चावं सोलसणभचउसीदिसहस्सं च चारि कला ॥ ७७५ ॥

हरिजीवा एकनभोनवत्रिसप्तक इह कला अपि सप्तदश ।
चापं षोडशनभश्चतुरशीतिसहस्रं च चतस्रः कलाः ॥ ७७५ ॥

अर्थ—हरिक्षेत्र विषै जीवा एक बिंदी नव तीन सात इन अंकनि करि तेहत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सत्तरह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप सोलह बिन्दी इन अंकनि करि सोलह तिन करि अधिक चौरासी हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७५ ॥

णिसहावसाणजीवा छप्पणइगिचारिणवय दोण्णि कला ।
धणुपुट्ठं छादालतिचउवीसेक्कं च णवय कला ॥ ७७६ ॥

निषधावसानजीवा षट्पंचकचतुर्नवकं द्वे कले ।
धनुःपृष्ठं षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येकं च नव कलाः ॥ ७७६ ॥

अर्थ—निषध पर्वतका अंतविषै जीवा छह पांच एक च्यारि नव इन अंकनि करि चौराणवै हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय कला प्रमाण है। बहुरि धनुःपृष्ठ छियालीस तीन चौबीस एक इन अंकनि करि एक लाख चौबीस हजार तीनसै छियालीस योजन अर नव कला प्रमाण है ॥ ७७६ ॥

जीवदु विदेहमज्झे लक्खा परिहिदलमेवमवरद्दे।
माधवचंदुद्धरिया गुणधम्मपसिद्ध सव्वकला ॥ ७७७ ॥
जीवाद्वयं विदेहमध्ये लक्षं परिधिदलं एवमपरार्धे।
माधवचंद्रोद्धृताः गुणधर्मप्रसिद्धाः सर्वकलाः ॥ ७७७ ॥

अर्थ—विदेहकै मध्य जीवा अर धनुष ए दोऊ क्रमतैं जीवा तौ लक्ष योजन प्रमाण अर धनुष्य जंबूद्वीपकी परिधिका जो प्रमाण ३१६२२७ कोश ३ दंड १२८ अंगुल १३$\frac{1}{2}$ ताके अर्द्ध प्रमाण विषैं घाटि एक लाख अठावन हजार एक सौ चौदह योजन प्रमाण है। ऐसैं ही ऐरावतादिक क्षेत्र वा पर्वतनिका कथन अर दूसरी तरफका आधा जंबूद्वीप विषै जानना। बहुरि गुण कहिए चिल्ला जीवा अर धर्म कहिए धनुष तिनविषै प्रसिद्ध कहिए पूर्वै कही ऐसी जु सर्वकला कहिए योजनका अंश ते माधव कहिए नारायण नव अर चंद्र कहिए चंद्रमा एक इन अंकनि करि उगणीस भए तिनकरि उद्धृत कहिए भागरूप जाननी। **भावार्थ**—पूर्वै जो जीवा अर धनुषका कथन विषै कला कही है सो एक कलाका प्रमाण एक योजनका उगणीसवां भाग जानना। बहुरि गुण धर्म इत्यादि पदका दूसरा अर्थ कहिए हैं—गुण ज्ञानादिक धर्म्म अहिंसादिक विषै प्रसिद्ध ऐसी जु सर्व कला चातुर्य तातैं माधवचंद्र नाम त्रैविद्य देव ताकरि उद्धृत कहिए प्रकाशित हैं। **भावार्थ**—माधव चंद्र आचार्यने गुण धर्म संबंधी सर्वकला प्रगट करी हैं ऐसा दूसरा अर्थ भी जानना ॥ ७७७ ॥

आगैं जीवानिकी चूलिका अर धनुषनकी पार्श्वभुजाकौं कहैं है;—

पुव्वपरजीवसेसे दलिदे इह चूलियात्ति णाम हवे।
धणुदुगसेसे दलिदे पासभुजा दक्खिणुत्तरदो ॥ ७७८ ॥
पूर्वापरजीवाशेषे दलिते इह चूलिका इति नाम भवेत्।
धनुर्द्विकशेषे दलिते पार्श्वभुजः दक्षिणोत्तरतः ॥ ७७८ ॥

अर्थ—दक्षिणविषै तौ भरतादिक विषै अर उत्तरविषै ऐरावतादिविषै जो पूर्वापर जीवा कहिए पहलै अर पीछै कही जे जीवा तिनविषैं अधिक प्रमाणमैं सौं हीन प्रमाण घटाइ अवशेष रहै ताका आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका चूलिका ऐसा नाम हो है। बहुरि पूर्व अपर धनुषनिविषै अधिकमैंसौं हीन घटाइ अवशेषकौं आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका नाम पार्श्वभुजा है सो इसहीकौं कहैं हैं। पहलैं कह्या दक्षिण भरत ताकी जीवा नव हजार सातसै अड़तालीस योजन बारह कला अर ताकै पीछैं कह्या विजयार्द्ध ताकी जीवा दश हजार सातसै वीस योजन ग्यारह कला इन दोऊनिविषै अधिक प्रमाण विजयार्द्धकी जीवा तामैं हीन प्रमाण दक्षिण भरतकी जीवा घटाइए तब अवशेष नवसै बहत्तरि योजन रहे अर ग्यारह कलामैं बारह कला घटै नाहीं तातैं एक योजन घटाइ ताकी उगणीस कलामैंसौं बारह कला घटाइ अवशेष सात कला ग्यारह कलाविषै मिलाएं नवसै इकहत्तरि योजन अर अठारह कला होइ ताका आधा करना सो विषम राशिका आधा न होइ तातैं योजन प्रमाणमैंसौं एक घटाइ अवशेष नवसै सत्तरिका आधा किएं च्यारिसै पिच्यासी तौ योजन होइ अर घटाया एकका आधा $\frac{1}{2}$ अर अठारह कलाका आधा $\frac{9}{19}$ तिनका समछेद करि $\frac{19}{38}$ $\frac{18}{38}$ मिलाएं

सैंतीस अठतीसवां भाग होइ सो विजयार्द्ध पर्वतकी चूलिका ग्यारिसै पिच्यासी योजन अर ८- अठतीसवां भाग प्रमाण है। विजयार्द्धका उत्तर तटकी सूचितैं दक्षिण तट एक तरफ इतनां घटै है। बहुरि दक्षिण भरतका चाप नव हजार सातसै छ्यासठि योजन एक कला अर विजयार्द्धका दश हजार सातसै तियालीस योजन पंद्रह कला सो अधिकमैंसौं हीन घटाइ अवशेष नवसै ... हत्तरि योजन चौदह कला होइ ताका पूर्ववत आधा किएं ग्यारिसै अठ्यासी योजन अर ... अठतीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्धकी पार्श्वभुजा हो है। विजयार्द्धका उत्तर तटतैं व्याप घाटै प्रमाणतैं विजयार्द्धका दक्षिण तटतैं व्याय चाप एक तरफ इतनां घाटि जाननां। ऐसैंही विजयार्द्ध जीवावा चाप संपूर्ण भरतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेषकों आधा किएं संपूर्ण भरतकी चूलि... वा पार्श्वभुजा हो है। संपूर्ण भरतकी जीवा चाप हिमवत पर्वतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेष आधा किएं हिमवत पर्वतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है। सो हिमवतकी चूलिका पांच हजार दोयसै तीस योजन पंद्रह अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा पांच हजार तीनसै पचास योजन ... तीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। महा हिमवतकी चूलिका आठ हजार एकसौ अठाईस योजन अर ... अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा नव हजार दोयसै छिहंतरि योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। निषधकी चूलिका दश हजार एकसौ सताईस योजन दोय उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा बीस हजार एकसौ पैंसठि योजन पांच अठतीसवां भाग प्रमाण है। अर्धविदेहकी चूलिका ... हजार नवसै इकईस योजन अठारह उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा सोलह हजार ... नियासी योजन उगणीस अडतीसवां भाग प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्यत्र चूलिका वा पार्श्वभुजाका प्रमाण ल्यावनां ॥ ७७८ ॥

आगैं भरत ऐरावत क्षेत्रनिविषै कालके वर्तनेका अनुक्रमकौं प्रतिपादन करै हैं;—

भरहेरावदेसु य ओसप्पुस्सप्पिणित्ति कालदुगा।
उस्सेहाउबलाणं हाणीवड्ढी य होंतित्ति ॥ ७७९ ॥

भरतेषु ऐरावतेषु च अवसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वयं।
उत्सेधायुर्बलानां हानिवृद्धी च भवत इति ॥ ७७९ ॥

अर्थ—पांचमेरु संबंधी पांच भरत क्षेत्र पांच ऐरावतक्षेत्रनिविषै अवसर्पिणी अर उत्सर्पिणी ए दोयकाल वर्ते हैं। तिन कालनिविषै तिष्ठते जीवनिकै क्रमतैं शरीरकी उचाई आयु शक्ति इन तीनकी हानि वा वृद्धि हो है। अवसर्पिणीकालविषै हानि हो है, उत्सर्पिणीविषै वृद्धि हो है ऐसा जाननां ॥ ७७९ ॥

आगैं इन दोय कालनिके भेदनिका नाम कहै हैं;-

सुसमसुसमं च सुसमं सुसमादी अंतदुस्समं कमसो।
दुस्समसमतिदुस्समसमिदि पढमो विदियो दु विवरीदो ॥ ७८० ॥

सुषमसुषमः च सुषमः सुषमादिः अंतदुःषमः क्रमशः।
दुःषमः अतिदुःषम इति प्रथमः द्वितीयस्तु विपरीतः ॥ ७८० ॥

अर्थ—सुषम सुषम १ अर सुषम १ अर सुषम दुःषम १ अर दुःषमसुषम १ अर दुःषम अर अतिदुःषम १ असैं क्रमकरि पहला अवसर्पिणीकाल छह भेद संयुक्त है। बहुरि दूसरा उत्सर्पिणी काल इसतैं विपरीत अनुक्रम करि छह भेद संयुक्त है। तहां अंति दुःषम १ दुषम १ दुःषम सुषम १ सुषम दुःषम १ सुषम १ सुषम सुषम असा क्रम जानना ॥ ७८० ॥

आगैं प्रथमादि कालनिका स्थिति प्रमाण कहैं हैं;—

चदुतिदुगकोडकोडी बादालसहस्सवाससहीणेक्कं।
उदधीणं हीणद्लं तच्चियमेत्तहिदी ताणं ॥ ७८१ ॥

चतुस्त्रिद्विककोटिकोटिः द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्षहीनैकम्।
उदधीनां हीनदलं तावन्मात्रा स्थितिः तेषां ॥ ७८१ ॥

अर्थ—तिन छहौं कालनिकी क्रमतैं स्थिति सुषम सुषमकी च्यारि कोडा कोडी सागर, सुषमकी तीन कोडाकोडी सागर सुषम दुःषमकी दोय कोडा कोडी सागर दुःषम सुषमकी च्यारि कोडाकोडी सागर सुषमकी तीन कोडाकोडी सागर, सुषम दुषमकी दोय कोडाकोडी सागर दुःषम सुषमकी बियालीस हजार वर्ष घाटि एक कोडाकोडी सागर, दुषमकी घटाया प्रमाण ४२००० का आधा इकईस हजार वर्ष, अतिदुःषमकी भी इकईस हजार वर्ष प्रमाण जाननी ॥ ७८१ ॥

आगैं छह काल संबंधी जीवनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

तत्थादि अंत आऊ तिदुगेक्कं पल्लपुव्वकोडी य।
वीसहियसयं वीसं पण्णरसा होंति वासाणं ॥ ७८२ ॥

तत्रादौ अंते आयुः त्रिद्व्येकं पल्यं पूर्वकोटिः।
विंशाधिकशतं विंशं पंचदश भवंति वर्षाणां ॥ ७८२ ॥

अर्थ—तहां इन कालनि विषै प्रथम कालकैं आदि विषै जीवनिका आयु तीन पल्य है। ताके अंत विषै दोय पल्य है। बहुरि सोई दोय पल्य आयु द्वितीय कालके आदि विषै है ताके अंत विषै एक पल्य है। बहुरि सोई एक पल्य आयु तृतीयकालके आदि विषै है ताके अंत विषै कोटि पूर्व वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई कोटि पूर्व वर्षका आयु चतुर्थ कालका आदि विषै है ताके अंत विषै एक सौ बीस वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई एकसौ बीस वर्षका आयु पंचम कालके आदि विषै है ताके अंत विषै बीस वर्षका आयु है। बहुरि सोई बीसवर्षका आयु षष्ठम कालका आदि विषै है ताके अंत विषै पंद्रह वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ७८२ ॥

ऐसैंही मनुष्यनिकी उंचाईका प्रमाण कहै है —

तिदुगेक्ककोससमुदयं पणसयचावं तु सत्तरदणी य।
दुगमेक्कं पच रदणी छक्कालादिम्हि अंतम्हि ॥ ७८३ ॥

त्रिद्व्येकक्रोशसमुदय पंचशतचापं तु सप्तरत्नयः च।
द्विकमेकं च रत्नि षट्कालादौ अंते ॥ ७८३ ॥

अर्थ—मनुश्यनिके शरीरकी उचाई प्रथम कालकी आदि विषै तीनकोश ताके अंत विषै [illegible] सोई दूसरा कालकी आदि विषै दोय कोश ताके अंत विषै एक कोश सोई तृतीय कालकी [illegible] विषै एक कोश ताके अंत विषै पांचसै धनुष सोई चतुर्थ कालकी आदि विषै पांचसै धनुष [illegible] सात हाथ सोई पंचम कालकी आदि विषै सात हाथ अंतविषै दोय हाथ सोई छट्ठम [illegible] आदि विषै दोय हाथ अर अंत विषै एक हाथ प्रमाण है। ऐसें छह कालनिका आदि अंत [illegible]श्यनिका उत्सेध जानना ॥ ७८३ ॥

आगें छह काल वर्त्ती मनुश्यनिका वर्णका अनुक्रम कहै हैं;—

> उदयरवी पुण्णिदू पियंगुसामा य पंचवण्णा य ।
> लुक्खसरीरावण्णे धूमसियामा य छक्काले ॥ ७८४ ॥
> उदयरवयः पूर्णेन्दवः प्रियंगुश्यामाश्च पंचवर्णाश्च ।
> रूक्षशरीरावर्णाः धूमश्यामाः च षट्काले ॥ ७८४

अर्थ—प्रथम काल विषै मनुश्य उदय होता सूर्यके समान वर्ण युक्त हैं। दूसरे काल विषै [illegible] समान वर्ण युक्त है। तीसरे काल विषै हरित श्याम वर्ण संयुक्त हैं। चौथा काल विषै [illegible] संयुक्त है। पांचवां काल विषै कांति करि हीन रूखा मिश्र रूप पांच वर्ण संयुक्त हैं। [illegible] विषै धुवांवत् श्याम वर्ण संयुक्त हैं। ऐसें छह कालनि विषै वर्णका अनुक्रम [illegible] ७८४ ॥

[illegible] तिनके आहारका अनुक्रम कहै हैं;—

> अट्ठमछट्ठचउत्थेणाहारो पडिदिणेण पायेण ।
> अतिपायेण य कमसो छक्कालणरा हवंतित्ति ॥ ७८५ ॥
> अष्टमषष्ठचतुर्थेनाहारः प्रतिदिनेन प्रायेण ।
> अतिप्रचुरेण च क्रमशः षट्कालनरा भवन्तीति ॥ ७८५ ॥

अर्थ—प्रथम काल विषै अष्टम बेलाकरि तीन दिनके आंतरै आहार करै है। बहुरि [illegible] विषै षष्ठम बेलाकरि दोयदिनके आंतरै आहार करै है। बहुरि तीसरा काल विषै [illegible] करि एक दिनकै आंतरै आहार करै है। बहुरि चौथा काल विषै प्रति दिन करि एक बार आहार करै है। बहुरि पांचवां काल विषै प्रायेण करि बहुतबार आहार करै [illegible] अतिप्रचुर करि अति प्रचुर वृत्ति करि बारबार आहार करै है। [illegible] अनुक्रम है ॥ ७८५ ॥

[illegible] कहै हैं;—

> [illegible] ।
> [illegible] ॥ ७८६ ॥
> [illegible] ।
> [illegible] ॥ ७८६ ॥

अर्थ—सुपम सुपमादि तीन कालनि विषै उत्कृष्टादि तीन भोग भूमिके उपजे मनुष्य क्रमतैं बदरीफल अर अक्षफल अर आंवला प्रमाण कल्पवृक्षनिकरि दीया दिव्य आहार ग्रहण करै हैं। बहुरि ते मंद कषायी हैं। बहुरि मल मूत्रादि नीहार करि रहित हैं॥ ७८६ ॥

आगे तिन भोगभूमियानिकै कल्पवृक्षनिका प्रमाण कहैं हैं;—

तूरंगपत्तभूसणपाणाहारंगपुप्फजोइतरू ।
गेहंगा वत्थंगा दीवंगेहिं दुमा दसहा॥ ७८७॥

तूर्यांगपात्रभूपणपानाहारांगपुष्पज्योतितरवः ।
गेहांगा वस्त्रांगा दीपांगैः द्रुमा दशधा॥ ७८७॥

अर्थ—वाजित्रनिके दाता तूर्यांग अर पात्रनिके दाता पात्रांग अर आभूषणनिके दाता भूषणांग अर पीवनेकी वस्तुके दाता पानांग अर आहारके दाता आहारांग अर फूलनिके दाता पुष्पांग अर उद्योतमई ज्योतिरंग अर मंदिरनिके दाता गृहांग अर वस्त्रनिके दाता वस्त्रांग अर दीपकनिके दाता दीपांग कल्प वृक्ष हैं। ऐसैं कल्प वृक्ष दश प्रकार हैं॥ ७८७॥

आगैं भोगभूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

दप्पणसम मणिभूमी चउरंगुलसुरसगंधमउगतणा ।
खीरिच्छुतोयमहुघदपूरिदवावीदहाइण्णा॥ ७८८॥

दर्पणसमा मणिभूमिः चतुरंगुलसुरसगंधमृदुतृणा ।
क्षीरेक्षुतोयमधुघृतपूरितवापीन्हदाकीर्णा॥ ७८८॥

अर्थ—दर्पण जो आरसा तीह समान मणिमई भोगभूमि जाननी। बहुरि सो च्यारि अंगुल ऊंचे भला रस गंधसहित कोमल तिणानि करि संयुक्त है। अर दुग्ध वा मिष्ट रस वा जल वा मधु समान रस वा घृतकरि पूर्ण ऐसी बावड़ी वा द्रह तिन करि व्याप्त है॥ ७८८॥

आगैं भोगभूमियानिकै उपजनें मरणेंका विधान गाथा तीन करि कहै हैं;—

जादजुगलेसु दिवसा सगसग अंगुट्ठलेह रिंगिदए ।
अथिरथिरगदि कलागुणजोवणदंसणगहे जंति॥ ७८९॥

जातयुगलेषु दिवसाः सप्तसप्त अंगुष्ठलेह रिंगिते।
अस्थिरस्थिरगत्योः कलागुणयौवनदर्शनग्रहे यांति॥ ७८९॥

अर्थ—माताके गर्भतैं युगपत स्त्री पुरुष युगल उपजै है। तिनकै उपजित दिनसौ लगाय सात दिन पर्यंत अनुक्रमतैं अंगूठाका चाटनां बहुरि ऊंचा वा नीचा होना बहुरि डिगता चलनां बहुरि स्थिर रूप नीकैं चलनां बहुरि कला गुणका ग्रहण होनां बहुरि यौवनका ग्रहण होनां बहुरि परस्पर दर्शनका ग्रहण होना हो है। ऐसैं गुणचास दिननि करि संपूर्णता हो है॥ ७८९॥

तदंपदीणमादिमसंहदिसंठाणमज्जणामजुदा ।
गुल्लंगुवि णो लित्ती तंमि पंचवण्णविगएसु॥ ७९०॥

तद्दंपतीनामादिमसंहतिसंस्थानं आर्यनामयुताः ।

सुलभेषु अपि नो तृप्तिः तेषां पंचाक्षविषयेषु ॥ ७९० ॥

अर्थ—तिन दंपति कहिए स्त्री पुरुष जुगलनिकै आदिका संहनन संस्थान हो है। वज्र वृषभ ाच संहनन हो है समचतुरस्र संस्थान हो है। बहुरि ते मंद कषायी हैं तातैं आर्य ऐसे नाम ुक्त हैं। बहुरि तिनकै सुलभ पाए हैं पंच इन्द्रीनिकै विषय तौभी तिन विषै तृप्ति न है। भावार्थ यह जो विषयनिस्यौं अरुचि न हो है ॥ ७९० ॥

चरिमे खुदजंभवसा णरणारि विलीय सरदमेघं वा ।
भवणतिगामी मिच्छा सोहम्मदुजाइणो सम्मा ॥ ७९१ ॥

चरमे क्षुतजृंभवशात् नरनार्यौ विलीय शरन्मेघं वा ।

भवनत्रिगामिनः मिथ्याः सौधर्मद्वियायिनः सम्यंचः ॥ ७९१ ॥

अर्थ—आयुका अंत विषै पुरुष तौ छींक करि, स्त्री जंभाई करि मरण पाइ शरद कालका वत विलय हो हैं। तिनकै शरीरका अंश भी पड़ा न रहै। बहुरि ते मरिकरि मिथ्यादृष्टि तौ न वासी व्यंतर ज्योतिष्क विषै उपजै हैं। अर सम्यग्दृष्टी सौधर्म्म ईशान विषै उपजैं हैं अन्यत्र ीं उपजैं हैं। ऐसे प्रथम कालकी आदि विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि द्वितीय ालकी आदि विषै मध्य भोगभूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि तृतीय कालकी आदि विषै जघन्य ा भूमि है। क्रमतैं घटि अंत विषै कुलकरादि होइ कर्मभूमि हो है। ॥ ७९१ ॥

सो कर्म्मभूमिकै प्रवेशका अनुक्रम अर तहां तिष्ठते कुलकरनिका स्वरूप तीन गाथानि करि ापादन करैं हैं;—

पल्लट्ठमं तु सिट्ठे तदिए कुलकरणरा पडिस्सुदिओ ।
सम्मदि खेमंकरधर सीमंकरधर विमलादिवाहणओ ॥ ७९२ ॥

पल्याष्टमे तु शिष्टे तृतीये कुलकरनराः प्रतिश्रुतिः ।

सम्मतिः क्षेमंकरधरः सीमंकरधरः विमलादिवाहनः ॥ ७९२ ॥

अर्थ—तृतीय काल विषै पल्यका आठवां भाग अवशेष रहै कुलकर मनुष्य उपजैं हैं। कौन ? प्रतिश्रुति १ सन्मति १ क्षेमंकर १ क्षेमंधर १ सीमंकर १ सीमंधर १ विमलवाहन १ ७९२ ॥

चक्खुम्म जस्ससी अहिचंदो चंदाहओ मरुदेवो ।
होदि पसेणजिदंको णाभी तण्णंदणो वसहो ॥ ७९३ ॥

चक्षुष्मान् यशस्वी अभिचंद्रः चंद्राभः मरुदेवः ।

भवति प्रसेनजितांकः नाभिस्तन्नंदनो वृषभः ॥ ७९३ ॥

अर्थ—चक्षुष्मान १ यशस्वी १ अभिचंद्र १ चंद्राभ १ मरुदेव १ प्रसेनजित १ नाभि १ । चौदह कुलकर हो हैं। तिन नाभिकुलकरका नंदन वृषभनाथ प्रथम तीर्थकर है ॥ ७९३ ॥

वरदाणदो विदेहे वद्धणराऊय खइयसंदिट्ठी ।
इह खत्तियकुलजादा केइज्जाइब्भरा ओही ॥ ७९४ ॥

वरदानतो विदेहे बद्धनरायुषः क्षायिकसंदृष्टयः ।
इह क्षत्रियकुलजाताः केचिज्जातिस्मरा अवधयः ॥ ७९४ ॥

अर्थ—समीचीन पात्रके दान देनेके फलतैं बांधी है मनुष्यायु जिनि अर पीछै क्षायिक सम्यग्दृष्टी भए ऐसे जीव आइ कुलकर उपजैं हैं। ते इहां क्षत्रिय कुल विषै उपजैं हैं। यद्यपि कुलादिककी प्रवृत्ति अब हीन भई पर होनहार विषै हुएका उपचार करि इनके कुलके क्षत्रिय हो, हिंगे तातैं इनकों क्षत्रिय कुल विषै उपजे कहे। बहुरि ते कुलकर केई तौ जातिस्मरण संयुक्त हैं, केई अवधिज्ञान संयुक्त हैं ॥ ७९४ ॥

आगैं कुलकरनिका शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

अट्ठारस तेरस अडसदाणि पणुवीसहीणयाणि तदो ।
चावाणि कुलयराणं सरीरतुंगत्तणं कमसो ॥ ७९५ ॥

अष्टादश त्रयोदश अष्टशतानि पंचविंशतिहीनानि ततः ।
चापानि कुलकराणां शरीरतुंगत्वं क्रमशः ॥ ७९५ ॥

अर्थ—अठारहसै धनुष १८०० तेरह सै धनुष १३०० धनुष्य आठसै धनुष ८०० तातैं पीछैं पचीस पचीस घाटि धनुष ७७५।७५०।७२५।७००।६७५।६५०।६२५।६००।५७५।५५०।५२५। प्रमाण प्रतिश्रुत आदि कुलकरनिके शरीरका उच्चत्व अनुक्रमतैं जानना ॥ ७९५ ॥

आगैं तिनका आयु कहैं हैं;—

आऊ पल्लदसंसो पढमे सेसेसु दसहि भजिदकमं ।
चरिमे दु पुव्वकोडी जोगे किंचूण तण्णवमं ॥ ७९६ ॥

आयुः पल्यदशांशः प्रथमे शेषेषु दशभिः भक्तक्रमः ।
चरमे तु पूर्वकोटिः योगे किंचिदूनं तन्नवमं ॥ ७९६ ॥

अर्थ—पहला कुलकरका आयु पल्यका दशवां भाग प्रमाण है। द्वितीयादि कुलकरनिका आयु क्रमतैं दश दश गुणां भाग पल्यकों दीजिए तीह प्रमाण है। प१÷१००। प१÷१०००। प१÷१०००० प१÷१ ल० प१÷१ ल० प१÷१ को० प१÷१० कोडि। प१÷१०० को०। प१÷१००० को० प१÷१००००० को०। प१÷लक्ष को० प१÷१० ल० को०। बहुरि अंतका नाभिकुलकरका आयु पूर्व कोडि वर्ष प्रमाण है सो पूर्व कोडि वर्षका आयु नों और कुलकरनिका आयुकौं समछेद विधान करि मिलाइए तब पल्यके दशवां कोडिका भाग लिये ऐसा होइ प१११११११११११११११-१००००००००००००००। बहुरि सुगम करनेकै अर्थि यामें पल्यका निवै लाख कोडिवां भाग प्रमाण भाग मिलाइए पल्य १।९ बिंदी १३ समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकौ नव गुणां किए ऐसा होइ ९०००९९९९९९९९९–९ बिंदी १३ या विषै भाग प्रमाण और ऐसा होइ। ९÷९ बिंदी १३ बहुरि

भाज्यकों तेरह बिंदीनि करि भाग हारकी तेरह बिंदीनिका अपवर्त्तन किएं एक पल्यका नवमां भाग आया प १ बिंदी १३÷९ बिंदी १३। बहुरि यामैं पूर्वै जो ऋण मिलाया था ताकूं ज्यूंका त्यूं घटाइ दिएं एक पल्यका नवमां भागमें पल्यका निर्थं लाख कोड़िवां भाग घट्या ऐसैं सबनिका जोड किंचिदून पल्यका नवमां भाग प्रमाण हो है। अब याका जोड़का विधान करण सूत्र करि साधै है। अंत धणं गुण गुणियं आदि विहीणं रूऊणुत्तर भजियं। अंतका धन पल्यका दशवां भाग ताकौं गुणकार दशकरि गुणें पल्य भया। यामैं आदिका प्रमाण पल्य दशका लक्ष कोडिवां भाग समछेद करि घटाएं ऐसा होइ प ९९९९९९९९९९९९९÷१ बिंदी १३ याकौं एक घाटि गुणकारका प्रमाण नवका भाग दीजिये तब ऐसा होइ प९९९९९९९९९९९९९÷९ बिंदी १३ इहां पूर्वोक्त प्रमाण ऋण मिलाएं ऐसा होइ प१ बिंदी १३÷९ बिंदी १३ याका अपवर्तन किएं पल्य प१÷९ बिंदी १३ का नवमां भाग भया यामैं। पूर्वै मिलाया था ऋण सो घटाएं किंचिदून पल्य हो है। अब याका विधान अंक संदृष्टिविषै दिखावै हैं। राशिविषै ऋण घटाइ अवशेषकों भाग दिएं जो पावै सोई तिस राशिविषै भागहारकों अधिक करि भाग दिएं पावै। सो इहां राशि साठिका चौथा भाग ६०/४ तामें वीसका चौथा भाग प्रमाण ऋण घटाएं चालीसका चौथा भाग रहै ताकौं अपनां भागहारका भाग दिएं जो दश पाए सोई तिस राशि साठिका चौथा भाग विषै भागहारविषै दोय अधिक करि भाग दिएं साठिका छठा भाग होइ सो इहां भी भाग दिए दश ही पाए। भागहार विषै अधिकका प्रमाण कैसें जानिएं ? ऋण राशिकों पाया राशिका भाग दिएं जानिएं सो इहां ऋण राशि वीसकों पाया राशि दशका भाग दिएं दोय पाए सोई भागहारविषै अधिकका प्रमाण जांनिएं। बहुरि जो ऋणका प्रमाण न जानिएं तौ भागहारविषै जेता अधिक होइ तीह करि लब्ध राशिकौं गुणें ऋणका प्रमाण जांनिएं। इहां अधिक दोयकौं लब्ध दश करि गुणें ऋण राशि वीस जाननां। सो इहां राशि पल्यका नवमां भागमैंसौं पूर्वोक्त ऋण घटाइ अवशेषकौं भाग दिएं जो पावै सोई पाया राशिका भाग ऋण राशिकौं देइ जो पावै तितना अधिक भागहारका भाग राशिकौं दिएं पावै ऐसा प्रयोजन जानना ॥ ७९६ ॥

आगैं तिन कुलकरनिका अंतरालका काल कहैं हैं;—

पल्लासीदिमभंतरमादिममवसेसमेत्थ दसभजिदा।
जोगे बावत्तरिमं सयलजुदे अट्ठमं हीणं ॥ ७९७ ॥

पल्याशीतिममंतरमादिममवशेषमत्र दशभक्तं।
योगे द्वासप्ततिः सकल्युते अष्टमो हीनः ॥ ७९७ ॥

अर्थ—पूर्व कुलकरका मरण भएं पीछैं पिछला कुलकर जितनें काल गएं जनम धरै सो इहां अंतर काल जानना। सो चौदह कुलकरनिके तेरह अतराल हैं। तिन विषै पहला अंतर पल्यका असीवां भाग प्रमाण है। प्रथम कुलकर भएं पीछैं पल्यका असीवां भाग भएं दूसरा कुल कर उपज्या है। ऐसैंही अवशेष बारह अंतर दश दश गुणा भागहार करि भाजित पल्य प्रमाण जानने। प १÷८०० । प १–८००० । प १–८०००० । प १÷८० प १÷८०० ।

१÷८ को। प १-८० को। प १-८०० को। प १÷८००० को। प १-८ लको। प -८० लको। इनकों पूर्वोक्त प्रकार समछेद करि मिलाएं प ११११११११११११-८०००-००००००००० होइ यानिषै सुगमता। आवनेकैअर्थि पल्या का बहत्तरि लाखकोडिवां भाग आवनां तहां समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकौं नव गुणां किए ऐसा प ९९९९९९९९९९९९÷१ बिंदी. १३ यामैं ऋणराशि मिलाइए प १ बिंदी १३-७२ बिंदी ३ बहुरि तेरह बिंदीनिका अपवर्तन करिए तब पल्यका बहत्तरिवां भाग होइ यामैंसों पूर्वे आया था ऋण सो ज्यूंका त्यूं घटाएं सर्व अंतरनिका जोड किंचिदून पल्यका बहत्तरिवां भाग भाग हो है। अब इस हीकों अंत धर्ण गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं इत कारण सूत्र रे साधैं हैं। अंतका धन पल्यका असीवां भाग ताकौं गुणकार दश करि गुणि प १०-८० मैं आदि धन पल्यका असी हजार कोडिवां भाग प १ ÷ ८ बिंदी १३ समछेद करि प १ बिंदी १ - ८ बिंदी १३ तामैं घटाइए। प ९९९९९९९९९९९९९÷८ बिंदी १३। बहुरि याकौं क घाटि गुणकार नव ताका भाग दीजिए प ९९९९९९९९९९९९९ ÷ ७२ बिंदी १३ यामैं कि प्रमाण ऋण प १÷७२ बिंदी १३ मिलाइ अपवर्तन किएं पल्यका बहत्तरिवां भाग होइ यामैं स ऋणकौं ज्यूंका त्यूं घटाएं किंचिदून पल्यका प १ बिंदी १३÷७२ बिंदी १३ बहत्तरिवां भाग ई बहुरि सर्व आयुका जोड किंचिदून पल्यका नवमा भाग प १÷९ अर सर्व अंतरनिका जोड किं इन पल्यका बहत्तरिवां भाग प १-७२ इनकौं आठका समछेद करिनेके अर्थि आयुके जोडका न्य भागहारनिकौं आठ गुणां किएं ऐसा प ८-७२ ताकौं जोडि प ९-७२ नव करि अपवर्तन ऐं किछु घाटि पल्यका आठवां भाग प्रमाण काल हो है ॥ ७९७ ॥

आगै कुलकरनि करि किया हूवा दंड वा तिनके शरीरका वर्णकौं कहै हैं;—

हा हामा हामाधिक्कारा पण पंच पण सियामलया।
चक्खुम्मदुग पसेणांचंदाहो धवल सेस कणयणिहा ॥ ७९८ ॥

हा हामा हामाधिक्काराः पंच पंच पंच श्यामलौ।
चक्षुष्मद्द्विकं प्रसेनचंद्राभौ धवलौ शेषाः कनकनिभा ॥ ७९८ ॥

अर्थ—आदिके पांच कुलकर अपराधीनिकौं हा ऐसा वचन कहि करि दंडै है याका अर्थ यहु र बुरा किया इतनी उलाहनां मात्र दंड दे हैं। बहुरि तहां पीछै पांच कुलकर हामा ऐसा वचन कहि हैं। याका अर्थ यहु हाय मति करै इतनां उलाहना वा वर्जना मात्र दंड देहैं। बहुरि तहां पीछै भ देव सहित पाच कुलकर हामा धिक ऐसा वचन कहि दंडै हैं। याका अर्थ यहु हाय मति करै कौं धिक्कार हो हु इतनां उलाहनां वर्जना खिजनां मात्र दंड दे हैं। बहुरि चक्षुष्मान १ यशस्वी ए दोय कुलकर श्याम वर्ण हैं। बहुरि प्रसेन जित १ चंद्राभ १ ए दोय धवल वर्ण हैं। शेष कुलकर सुवर्ण समान वर्ण धरै हैं ॥ ७९८ ॥

आगै तिन तिनके काल विषै तिन कुलकरनि करि किया कार्यकौं गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

इणससितारासावदविभयं दंडादिसीमचिण्हकदिं।
तुरगादिवाहणं सिसुमुहदसणाणिब्भयं बेंति ॥ ७९९ ॥

इनशशिताराश्वापदविभयं दंडादिसीमाचिह्नकृति।
तुरगादिवाहनं शिशुमुखदर्शननिर्भयं ब्रुवंति॥ ७९९॥

अर्थ—पहला कुलकर है सो प्रजानिकै ज्योतिरंग जानिकै कल्प वृक्ष मंद होतैं सूर्य चंद्रमा दीखनें लागा तातैं उपजा जो भय ताकूं निवारै है। बहुरि दूसरा कुलकर तारा दीखनैंतैं उपज्या भयकौं निवारै है। बहुरि तीसरा कुलकर जे मृग आदि जीव क्रूर भए तिनका घेरनेंका उपाय करि भयकौं निवारै है। बहुरि चौथा कुलकर मृग आदि जीव अति क्रूर भए तिनका दंडादिक उपाय करी भयकौं निवारै है। बहुरि पांचवां कुलकर कल्प वृक्ष थोड़ा फल दैनैं लगे तहां प्रजानिकै परस्पर झगड़ा देखि सीमा जो अपनी अपनी मर्यादा ताकौं करै है। बहुरि छठा कुलकर कल्प वृक्ष बहुत मंद फल देनैं लगे तहां प्रजानिकै तिस मर्यादा भएं भी झगड़ा होतैं ते तिससीमा विषै चिह्न जो सहनानी ताकौं करै हैं। बहुरि सातवां कुलकर गमन करनेंविषै घोड़ा आदि वाहनकौ करै है। बहुरि आठवां कुलकर बालकका जन्म भएं पीछैं भी किछू काल माता पिता जीवनैं लगे तहां बालकनिका मुख देखनैंतैं भया जो भय तातैं निर्भयपणांकौं कहै हैं॥ ७९९॥

आसीवादादिं ससिपहुदिहिं केलिं च कदिचिदिणओचि।
पुत्तेहिं चिरं जीवण सेदुवहित्तादि तरणविहिं॥ ८००॥

आशीर्वादादिं शशिप्रभृतिभिः केलिं च कतिचिद्दिनांतम्।
पुत्रैः चिरं जीवनं सेतुवहित्रादिभिः तरणविधिम्॥ ८००॥

अर्थ—नवमां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं माता पिता बहुत काल जीवनैं लगे तहां बालनिकै ताईं आशीर्वादादिक देनो सिखावै हैं। बहुरि दशवां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं केतेइक दिन पर्यंत माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनि सहित चंद्रमा दिखावनां आदि केलि क्रीड़ाकौं सिखावै हैं। बहुरि ग्यारहवां कुलकर बालक जन्म भएं पीछैं माता पिता बहुत घनें काल जीवनैं लगे ताका प्रजानिकैं भय भया ताकौं निवारै है। बहुरि बारह्वां कुलकर मेघवृष्टि होनेतैं नदी आदि जल स्थान भएं तिनके तरनेका विधान जिहाज नाव आदि बतावै हैं॥ ८००॥

सिक्खंति जराउछिदिं णाभिविणासिंदचावतडिदादिं।
चरिमो फलअकदोसहिभुत्तिं कम्मावणी तत्तो॥ ८०१॥

शिक्षयति जरायुछिदिं नाभिविनाशं इंद्रचापतडिदादिं।
चरमः फलाकृतौषधिभुक्तिं कर्मावनिस्ततः॥ ८०१॥

अर्थ—तेरह्वां कुलक जरा सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां जरायुके छेदनैकौं सिखावै हैं। बहुरि अंतका कुलकर नाल सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां नाभि छेदनेकौं सिखावै है। अर इन्द्र धनुष बीजुरी इत्यादि होनें लगे तिनके देखनेतैं प्रजानिका उपज्या भयकौं निवारै हैं। अर वृक्षानिके फलनिकी आकृति विषै यहु औषध है, यहु भोजन योग्य है, इत्यादि सिखावै है। बहुरि इहांतैं परैं कर्मभूमि प्रवर्तै है॥ ८०१॥

पुरगामपट्टणादी लोयियसत्थं च लोयववहारो ।
धम्मो वि दयामूलो विणिम्मियो आदिबम्हेण ॥ ८०२ ॥
पुरग्रामपत्तनादि: लौकिकशास्त्रं लोकव्यवहारः ।
धर्मोऽपि दयामूल: विनिर्मित: आदिब्रह्मणा ॥ ८०२ ॥

अर्थ—नगर ग्राम पत्तन आदि रचना अर लौकिक कार्य संबंधी शास्त्र अर असि मसि आदि लौकीक व्यवहार अर दया है मूल जाका ऐसा धर्म सो आदि ब्रह्मा श्री वृषभ तीर्थंकर देव प्रगट कीया है ॥ ८०२ ॥

आगें चौथा काल विषै उपजे जे शलाका पुरुष तिनकौं निरूपै हैं;—

चउवीसबारतियणं तित्थयरा छत्तिखंडभरहवई ।
तुरिए काले होंति हु तेवट्ठिसलागपुरिसा ते ॥ ८०३ ॥
चतुर्विंशतिः द्वादश त्रिघनः तीर्थकराः षट्त्रिखंडभरतपतयः ।
तुर्ये काले भवंति हि त्रिषष्टिशलाकापुरुषास्ते ॥ ८०३ ॥

अर्थ—चौवीस तीर्थंकर अर बारह षट्खंड भरतका पति चक्रवर्ती अर तीनका घन सत्ताईस त्रिखंड भरतका पति तहां नव नारायण नव प्रतिनारायण नव बलभद्र ऐसैं ए तरेसठि शलाका पुरुष चौथे काल विषै हो है ॥ ८०३ ॥

आगें तीर्थंकरनिका शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

धणु तणुतुंगो तित्थे पचसयं पण्ण दसपणूणकमं ।
अट्ठसु पंचसु अट्ठसु पासदुगे णवयसत्तकरा ॥ ८०४ ॥
धनूंषि तनुतुंगः तीर्थे पंचशतं पंचाशद्दशपंचोनक्रमः ।
अष्टसु पंचसु अष्टसु पार्श्वद्विकयोः नव सप्तकराः ॥ ८०४ ॥

अर्थ—तीर्थंकरनिके शरीरकी उचाई क्रमतैं ऐसैं धनुष प्रमाण है । पहला तीर्थंकरके पांचसै बहुरि द्वितीयादि आठ कै पचास पचास घाटि ४५० । ४०० । ३५० । ३०० । २५० । २०० । १५० । १०० । बहुरि दशवां आदि पांचके दश दश घाटि ९० । ८० । ७० । ६० । ५० । बहुरि पंद्रहां आदि आठके पांच पांच घाटि ४५ । ४० । ३५ । ३० । २५ । २० । १५ । १० । धनुष प्रमाण शरीर ऊंचा है । बहुरि पार्श्वद्विक विषै पार्श्व जिनका नव हाथ वर्द्धमान जिनका सात हाथ शरीर ऊंचा है ॥ ८०४ ॥

आगें तीर्थंकरनिका आयु गाथा दोय करि कहै हैं,—

तित्थाऊ चुलसीदीबिहत्तरीसट्ठि पणसु दसहीणं ।
बिगि पुव्वलक्खमत्तो चुलसीदि बिहत्तरी सट्ठी ॥ ८०५ ॥
तीर्थायु: चतुरशीतिद्वासप्ततिषष्टि: पंचसु दशहीनं ।
द्व्येक पूर्वलक्षमात्र चतुरशीति द्वासप्तति षष्टि ॥ ८०५ ॥

अर्थ—तीसरा कालका तीन वर्ष आठ महीनां एक पक्ष अवशेष रहें वृषभ दे
भए। बहुरि चौथा कालका सोई तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष अवशेष रहें वीर जिन
बहुरि पहला पहला तीर्थंकरका अंतर विषै उत्तर उत्तर तीर्थंकरका आयु प्रमाण
ऐसा जाननां। पहला अंतर वृषभ देवका तीर्थकाल है। तामैं उत्तर अजित जिनका आयु
संयुक्तपना जाननां। ऐसैं ही अन्य जाननां। वीर जिन मुक्ति होनेंका कालतैं चतुर्थ कालक
तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष सो पार्श्व तिनका अंतर विषै मिलाएं अढाईसै वर्ष होइ
सर्व अंतर मिलाएं संतें एक कोडा कोडि सागर प्रमाण हो है ॥ ८१३ ॥

अब जिनधर्म उछेद होनेका काल कहै हैं;—

पल्लतुरियादि चय पल्लंतचउत्थूण पाद परकालं।
ण हि सद्धम्मो सुविहीदु संतिअंते सगंतरए ॥ ८१४ ॥

पल्यतुर्यादिः चयः पल्यमंतं चतुर्थोनं पादपरकाले।
न हि सद्धर्मः सुविधितः शांत्यंते सप्तांतरे ॥ ८१४ ॥

अर्थ—पल्यका चौथा भाग आदि अर तितनांही चय प्रतिस्थान वधनेंका प्रमाण
विषै एक पल्य तातैं परैं चौथाई चौथाई पल्य घाटि यावत चौथाई पल्य अंतविषै होइ इन
कालनिविषै सुवुधि जो पुष्पदंत तातैं लगाय शांतिनाथपर्यंत सात अंतरनिविषै वक्ता श्रोता
करनेंवालेनिके अभावतैं समीचीन जैनधर्म नास्तिरूप हो है। भावार्थ—नवमां पुष्पदंत
अंतरविषै पाव पल्य शीतल श्रेयोका अंतरविषै आध पल्य श्रेयो वासुपूज्यका अंतरविषै पौ
वासुपूज्य विमलका अंतरविषै एक पल्य विमल अनंतका अंतरविषै पौण पल्य अनंत धर्मका
विषै आधपल्य धर्मशांतिका अंतरविषै पाव पल्यप्रमाण कालविषै जिनधर्मका अभाव
भया है ॥ ८१४ ॥

चक्की भरहो सगरो मघव सणकुमार संतिकुंथुजिणा।
अरजिण सुभोमपउमा हरिसेणजयब्रह्मदत्तक्खा ॥ ८१५ ॥

चक्रिणः भरतः सगरः मघवा सनत्कुमारः शांतिकुंथुजिनौ।
अरजिनः सुभौममहापद्मौ हरिषेणजयब्रह्मदत्ताख्याः ॥ ८१५ ॥

अर्थ—भरत १ सगर १ मघवान् १ सनत्कुमार १ शांति जिन १ कुंथुजिन
जिन १ सुभौम १ महापद्म १ हरिषेण १ जय १ ब्रह्मदत्त १ ए बारह चक्रवर्ती है ॥ ८१

इनका वर्तमानकालकौ लगाय कहि कहै हैं;—

भरहदु वसहदुकाले मघवदु धम्मदुगमंतरे जादा।
तिजिणा सुभोमपउमा अरमल्लिजिणंतरे होंति ॥ ८१६ ॥

भरतद्वयं वृषभद्वयकाले मघवद्वयं धर्मद्वयांतरे जातौ।
त्रिजिनाः सुभौमपद्मौ अरमल्ल्यंतरे भवतः ॥ ८१६ ॥

अर्थ—भरत सगर ए दोय तौ क्रमतैं वृषभ अर अजित जिनके कालविषै भए। बहुरि मघवान् अर सनत्कुमार ए दोय धर्म शांति जिनकै बीचि अंतर कालविषै भए। बहुरि शांति कुंथु अर ए तीन आप ही तीर्थंकर भी भए तातैं जिनांतर कहना न आवै। बहुरि सुभौमचक्री अर मल्लि जिनकै बीचि अंतर कालविषै भए ॥ ८१६ ॥

मल्लिदुमज्झे णवमो मुणिसुव्वयणमिजिणंतरे दसमो।
णमिदुविरहे जयक्खो बह्मो णेमिदुगअंतरगो ॥ ८१७ ॥
मल्लिद्वयमध्ये नवमो मुनिसुव्रतनमिजिनांतरे दशमः।
नमिद्विविरहे जयाख्यो ब्रह्मो नेमिद्वयांतरगः ॥ ८१७ ॥

अर्थ—मल्लि मुनिसुव्रतकै मध्य अंतरविषै नवमां महापद्मचक्री भया। बहुरि मुनिसुव्रत नमि जिनका अंतरविषै दशवां हरिषेण चक्री भया। बहुरि नमि नेमि जिनका अंतरविषै जयनामा चक्री भया नेमि पार्श्वका अंतरविषै ब्रह्मदत्त चक्री भया है ॥ ८१७ ॥

आगैं चक्रवर्तिनिका शरीरका वर्ण उचाई तिनका आयु गाथा तीन करि कहैं हैं;—

सव्वे सुवण्णवण्णा तद्देहुदओ धणूण पंचसयं।
पण्णासूणं सदलं बादालिगिदालयं तालं ॥ ८१८ ॥
सर्वे सुवर्णवर्णा तद्देहोदयो धनुषां पंचशतं।
पंचाशदूनं सदलं द्वाचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत् चत्वारिंशत् ॥ ८१८ ॥

अर्थ—सर्व ही चक्रवर्ती सुवर्ण समान वर्ण संयुक्त हैं। बहुरि तिन भरतादि चक्रीनिके शरीरकी उचाई क्रमकरि पांचसै अर पचास घटी ताका साढा ब्यारिसै अर आधा सहित बियालीस अर आधा सहित इकतालीस अर चालीस अर ॥ ८१८ ॥

पणतीस तीस अट्ठवीसं पण्णरसगाउ चुलसीदि।
बावत्तरिपुव्वाणं पणतिगिवासाणमिह लक्खा ॥ ८१९ ॥
पंचत्रिंशत् त्रिंशदष्टाविंशतिः पंचदशकमायुः चतुरशीतिः।
द्वासप्ततिपूर्वाणां पंचत्र्येकवर्षाणामिह लक्षाणि ॥ ८१९ ॥

अर्थ—पैंतीस अर तीस अर अठाईस अर बाईस अर बीस अर पंद्रह अर सात धनुषप्रमाण है। यातैं परैं तिनका आयु क्रमतैं कहिए है। चौरासी लाख पूर्व अर बहत्तरि लाख पूर्व अर पांच लाख अर तीन लाख अर एक लाख वर्ष प्रमाण। बहुरि ॥ ८१९ ॥

संवच्छरा सहस्सा पणणउदी चउरसीदि सट्ठी य।
तीसं दसयं तिदयं सत्तसया बम्हदत्तस्स ॥ ८२० ॥
संवत्सराः सहस्राणि पंचनवतिः चतुरशीतिः षष्टिश्च।
त्रिंशत् दशकं त्रिकं सप्तशतानि ब्रह्मदत्तस्य ॥ ८२० ॥

अर्थ—पिच्याणवै हजार अर चौरासी हजार अर साठि हजार अर तीस हजार अर दश हजार अर तीन हजार वर्ष अर ब्रह्मदत्त, सातसै वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ८२० ॥

आगैं तिन चक्रवर्तीनिकै नवनिधि हो हैं तिनके नाम कहैं;—

कालमहकालमाणवपिंगलणेसप्पपउमपांडु तदो ।
संखो णाणारयणं णवणिहिओ देंति फलमेदं ॥ ८२१ ॥

कालमहाकालमाणवकपिंगलनैसर्पपद्मपांडुस्ततः ।
शंखः नानारत्नः नवनिधयः ददति फलमेतत् ॥ ८२१ ॥

अर्थ—काल १ महाकाल १ माणवक १ पिंगल १ नैसर्प १५ पद्म १ पांडु १ शंख नाना रत्न १ ए नव निधि हैं । ते ए आगैं कहिए है फल ताकौं देवैं हैं ॥ ८२१ ॥

आगैं नवनिधिनिकरि दिया हुवा फलकौं कहै हैं;—

उडु जोग्गकुसुमदामप्पहुदिं भाजणयमाउहाभरणं ।
गेहं वत्थं धण्णं तूरं बहुरयणमणुक्कमसो ॥ ८२२ ॥

ऋतुयोग्यकुसुमदामप्रभृति भाजनायुधाभरणं ।
गेहं वस्त्रं धान्यं तूर्यं बहुरत्नमनुक्रमशः ॥ ८२२ ॥

अर्थ—ते कालादिक निधि अनुक्रमतैं ऋतु योग्य पुष्पमाल आदि वस्तुकौं बहुरि भाजनकौं बहुरि आयुधकौं बहुरि आभरणकौं बहुरि मंदिरकौं बहुरि वस्त्रकौं बहुरि धान्यकौं बहुरि वादित्रकौं बहुरि बहुत प्रकार रत्ननिकौं देवैं हैं । भावार्थ–निधि आठ पयां सहित गाडीके आकारि हैं तिनतैं ए वस्तु निपजैं हैं ॥ ८२२ ॥

आगैं तिनके चौदह रत्ननिका संज्ञा पूर्वक उपजनेका स्थान कहै हैं;—

सेणगिहवदि पुरहो गयहयजुवई हवंति वेयड्ढे ।
सिरिगेहे कागिणिमणिचम्माउहगेसिदंडछत्तमरो ॥ ८२३ ॥

सेनागृहस्थपतिः पुरोधा गजो हयो युवतिः भवंति विजयार्धे ।
श्रीगेहे काकिणीमणिचर्मायुधके असिदंडछत्रमरः ॥ ८२३ ॥

अर्थ—सेनापति सेनाका नायक अर गृहपति भंडारी अर स्थपति कारीगर अर पुरोधाः पुरोहित अर गज हाथी अर हय घोडा अर युवति स्त्री ए रत्न विजयार्ध पर्वत विषै उपजै है । बहुरि [illegible] विषै नाम जिनमें आदिकौं कारण काकिणी रत्न अर गुफा विषै उद्योत आदिकौ कारण चूडामणि रत्न अर सेनाकौं [illegible] आदिकौं कारण चर्म रत्न ए [illegible] है । बहुरि अति गाढ अर दृढ गुफा द्वार उघाडन आदिकौ कारण अर [illegible] आदिकौ कारण अर [illegible] रत्न [illegible] कारण ए [illegible] है ॥ ८२३ ॥

आगैं [illegible] कहै है;—

[illegible] ।
[illegible] ॥ ८२४ ॥

मघवान् सनत्कुमारः सनत्कुमारं सुभौमो महाध ।
सप्तमपृथिवीं प्राप्तौ मोक्षं शेषाष्टचक्रधराः ॥ ८२४ ॥

अर्थ—मघवान् सनत्कुमार ए दोय तौ सनत्कुमार नामा स्वर्गको प्राप्त भए। बहुरि सुभौम ब्रह्मदत्त ए दोय सातवीं नारक पृथ्वीकौं प्राप्त भए। बहुरि अवशेष आठ चक्री मोक्ष पदकों प्राप्त भए ॥ ८२४ ॥

अब अर्द्ध चक्री नारायण तिनके नाम कहै हैं:—

तिविट्टुदुविट्टसयंभू पुरिसुत्तमपुरिससिंहपुरिसादी ।
पुंडरियदत्त णारायण किण्हो अद्धचक्कहरा ॥ ८२५ ॥

त्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभूः पुरुषोत्तमः पुरुषसिंहः पुरुषादिः ।
पुंडरीकदत्तः नारायणः कृष्णः अर्धचक्रधराः ॥ ८२५ ॥

अर्थ—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ स्वयंभू १ पुरुषोत्तम १ पुरुषसिंह १ पुरुष पुंडरीक १ पुरुष दत्त १ नारायण (लिछमन) १ कृष्ण १ ए नव अर्द्ध चक्री हैं। इहां प्रसंग पाइ बलभद्र नारायणनिके आयुध रत्न कहिए है। असि १ शंख १ धनुष १ चक्र १ मणि १ शक्ति १ गदा १ ए सात नारायणके आयुध रत्न है। बहुरि रत्ननिकी माला १ हल १ मुसील १ गदा १ ए च्यारि बलभद्रके आयुध रत्न हैं ॥ ८२५ ॥

आगै तिन नारायणनिका वर्त्तनाकाल कहै हैं। जो नारायणनिका वर्त्तनाकाल सोई बलभद्र वा प्रतिनारायणका वर्त्तना काल क्रमतैं जानना;—

सेयादिपणसु हरिपण छट्ठदुगविरह मल्लिदुगमज्झे ।
दत्तो अट्ठम सुव्वयदुगविरहे णेमिकालजो किण्हो ॥ ८२६ ॥

श्रेयोआदिपंचसु हरिपंच षष्ठः अरद्विकविरहे मल्लिद्विकमध्ये ।
दत्तः अष्टमः सुव्रतद्वयविरहे नेमिकालजः कृष्णः ॥ ८२६ ॥

अर्थ—श्रेयो जिन आदि पाच तीर्थंकरनिविषैं क्रमतैं त्रिपृष्ट आदि पांच नारायण भए हैं। बहुरि छठा पुरुष पुंडरीक नारायण अरहमल्ल तीर्थंकरनिका अंतरविषै भया है। बहुरि पुरुषदत्त है सो मल्लि मुनिसुव्रतके मध्य अंतरविषै भया है। बहुरि आठवैं नारायण मुनिसुव्रत नमि जिनका विरहकाल जे अंतर तीहविषै भया है। बहुरि कृष्ण है सो नेमीश्वर जिनका कालविषै उपज्या है ॥८२६॥

आगैं बलभद्र प्रतिनारायणनिका नाम गाथा दोय करि कहै हैं;—

बलदेवा विजयाचलसुधम्मसुप्पहसुदंसणा णंदी ।
तो णंदिमित्त रामा पउमा उवरिं तु पडिसत्तू ॥ ८२७ ॥

बलदेवा विजयाचलसुधर्मसुप्रभसुदर्शना नंदी ।
ततः नंदिमित्रः रामः पद्मः उपरि तु प्रतिशत्रवः ॥ ८२७ ॥

अर्थ—विजय १ अचल १ सुधर्म १ सुप्रभ १ सुदर्शन १ नंदी १ नंदिमित्र १ राम १ पद्म १ ऐसें ए नव बलदेव हैं ॥ ८२७ ॥

बहुरि यातैं उपरि तिन नारायण बलिभद्रनिके प्रतिशत्रु जे प्रति नारायण ते कहिए हैं;—

अस्सग्गीओ तारय मेरयय णिसुंभ कइडहंत महू ।
वलि पहरण रावणया खचरा भूचर जरासंधो ॥ ८२८ ॥

अश्वग्रीवः तारकः मेरकश्च निशुंभः कैटभांतो मधुः ।
बलिः प्रहरणः रावणः खचराः भूचरो जरासंधः ॥ ८२८ ॥

अर्थ—अश्वग्रीव १ तारक १ मेरक १ निशुंभ १ मधुकैटभ १ बलि १ प्रहरण १ रावण १ ए आठ तौ विद्याधर हैं। अर जरासिंध भूमिगोचरी है। ऐसैं ए नव प्रतिनारायण है॥८२८॥

आगै बलदेव आदि तीनोंका उत्सेध समान है सो कहैं हैं;—

देहुदओ चापाणं सीदी तिसु दसयहीण पणदालं ।
णवदुगवीसं सोलं दस बलकेसव ससत्तूणं ॥ ८२९ ॥

देहोदयः चापानां अशीतिः त्रिषु दशहीनं पंचचत्वारिंशत् ।
नवद्विकविंशतिः षोडश दश बलकेशवानां सशत्रूणां ॥ ८२९ ॥

अर्थ—शत्रु जो प्रतिनारायण तिन सहित बलिभद्र अर नारायण तिनका समान शरीरका उदय प्रथमादिकका क्रमसैं असी धनुष बहुरि तीन विषैं दश दश घाटि ताके सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि पैंताळीस गुणतीस बाईस सोळा दश धनुष प्रमाण है ॥ ८२९ ॥

आगैं नारायण या प्रतिनारायणनिका समान आयु हैं ताकौं कहैं हैं;—

सम चुलसीदिं बहत्तरि सट्ठी तीस दस लक्ख पणसट्ठी ।
बत्तीसं बारेकं सहस्समाउस्समद्धचक्कीणं ॥ ८३० ॥

समा चतुरशीतिः द्वासप्ततिः षष्टिः त्रिंशत् दश लक्षाणि पंचषष्टिः ।
द्वात्रिंशत् द्वादशैकं सहस्रं आयुष्यमर्धचक्रिणाम् ॥ ८३० ॥

अर्थ—अर्ध चक्री जे नारायण वा प्रतिनारायण तिन प्रथमादिकका आयु क्रमतैं चौरासी लाख वर्ष बहत्तर लाख वर्ष साठि लाख वर्ष तीस लाख वर्ष दश लाख वर्ष पैंसठि हजार वर्ष बत्तीस हजार वर्ष बारह हजार वर्ष एक हजार वर्ष प्रमाण है ॥ ८३० ॥

आगैं बलदेवनिका आयु कहैं हैं;—

सगसीदि दुसु दसूणं सगतीसं सत्तरससमा लक्खा ।
सगसट्ठितीस सत्तर सहस्स बारसयमाउ बले ॥ ८३१ ॥

सप्ताशीतिः द्वयोः दशोनं सप्तत्रिंशत् सप्तदश समा लक्षाणि ।
सप्तषष्टिः त्रिंशत् सप्तदश सहस्रं द्वादशशतमायुः बले॥ ८३१ ॥

अर्थ—बलदेवनिका आयु प्रथमादिकके क्रमतैं सित्यासी लाख बहुरि दोयनिविषै दश दश घाटि सतहत्तरि लाख अर सतसठि लाख बहुरि सैंतीसलाख सतरह लाख सतसठि हजार सैंतीस हजार सतरह हजार बारहसै वर्ष प्रमाण है ॥ ८३१ ॥

आगै नारायणादिक तीन जिस गतिकौं प्राप्त भए तहिं गाथा दोय करि कहै हैं;—

पढमो सत्तमिमण्णे पण छट्ठी पंचमिं गदो दत्तो ।
णारायणो चउत्थीं कसिणो तदियं गुरुयपावा ॥ ८३२ ॥
प्रथमः सप्तमीमन्ये पंच षष्ठीं पंचमीं गतो दत्तः ।
नारायणः चतुर्थीं कृष्णः तृतीयां गुरुपापात् ॥ ८३२ ॥

अर्थ—पहला त्रिपृष्ट सातवीं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भया द्वितीयादि पांच नारायण छठी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। पुरुषदत्त पांचवी पृथ्वीकौं प्राप्त भया नारायण चौथी पृथ्वीकौं प्राप्त भया। कृष्ण तीसरी पृथ्वीकौ प्राप्त भए। ऐसे ए नारायण महत पापतैं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए हैं ॥ ८३२ ॥

णिरयं गया पडिरिवो बलदेवा मोक्खमट्ठ चरिमो दु ।
बम्हं कप्पं किण्हे तित्थयरे सोवि सिज्झेदि ॥ ८३३ ॥
निरयं गताः प्रतिरिपवो बलदेवा मोक्षं अष्ट चरमस्तु ।
ब्रह्म कल्पं कृष्णे तीर्थकरे सोपि सेत्स्यति ॥ ८३३ ॥

अर्थ—इनके प्रतिवैरी प्रतिनारायण तेऊ तिस नारायणकौं प्राप्त भई जो जो नरक पृथ्वीताकौं प्राप्त भए हैं। बहुरि बलदेव आदिके आठ तौ मोक्ष पदकौं प्राप्त भए है। अंतका नौमा पद्म नामा बलिभद्र ब्रह्म स्वर्गकौं प्राप्त भया। सोभी कृष्ण नारायणका जीव तीर्थंकर होसी तिस समय मोक्ष पदकौं पासी ॥ ८३३ ॥

आगैं नारदनिके नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

भीम महभीम रुद्दा महरुद्दो कालओ महाकालो ।
तो दुम्मुह णिरयमुहा अहोमुहो णारदा एदे ॥ ८३४ ॥
भीमो महाभीमः रुद्रो महारुद्रो कालो महाकालः ।
ततो दुर्मुखो निरयमुखः अधोमुखो नारदा एते ॥ ८३४ ॥

अर्थ—भीम १ महाभीम १ रुद्र १ महारुद्र १ काल १ महाकाल १ दुर्मुख १ नरक मुख १ अधोमुख १ ऐसें ए नव नारद हैं ॥ ८३४ ॥

कलहप्पिया कदाइं धम्मरदा वासुदेवसमकाला ।
भव्वा णिरयगदिं ते हिंसादोसेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥
कलहप्रिया कदाचिद्धर्मरता वासुदेवसमकालाः ।
भव्या नरकगतिं ते हिंसादोषेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

अर्थ—ए नारद कलह जिनकौ प्यारा ऐसे हैं। बहुरि कदाचित धर्मविषै भी रत है। बहुरि नारायणादि होतै ए हो हैं। तातैं नारायण समान है वर्तनाकाल जिनका ऐसे है। बहुरि भव्य है। परंपरा मुक्तिगामी हैं। बहुरि ते नारद हिंसादोष करि नरक गति ही कौं प्राप्त हो हैं ॥ ८३५ ॥

अब रुद्रनिकी संज्ञा पूर्वक संख्या कहैं है,—

भीमावलि जिदसत्तु रुद्द विसालणयण सुप्पदिट्ठचला ।
तो पुंडरीय अजिदंधर जिदणाभीय पीढ सच्चइजो ॥ ८३६

भीमावलिः जितशत्रुः रुद्रः विशालनयनः सुप्रतिष्ठोऽचलः ।
ततः पुंडरीकः अजितंधरो जितनाभिः पीठः सत्यकिजः ॥ ८३६ ॥

अर्थ—भीमावलि १ जितशत्रु १ रुद्र १ विशाल नयन १ सुप्रतिष्ठ १ चल १ अजितं धर १ जित नाभि १ पीठ १ सत्यक्यतनय ऐसैं ए ग्यारह रुद्र हैं ॥ ८३६ ॥

आगैं तिनका वर्त्तनाकाल कहैं हैं;—

उसहदुकाले पढमदु सत्तण्णे सत्तसुविहिपहुदीसु ।
पीढो संतिजिणिंदे वीरे सच्चइसुदो जादो ॥ ८३७ ॥

वृषभादिकाले प्रथमद्वौ सप्तान्ये सप्तसुविधिप्रभृतिषु ।
पीठः शांतिजिनेंद्रे वीरे सत्यकिसुतो जातः ॥ ८३७ ॥

अर्थ—वृषभ अजित जिननिके कालनि विषै क्रमतें पहला अर दूसरा रुद्र भया। पीछैं अन्य तृतीयादि सात रुद्र ते पुष्पदंतादि सात तीर्थंकरनिका कालनिविषै क्रमतें भए। रुद्र शांति जिनेंद्रका काल विषै भया ॥ ८३७ ॥

आगैं तिनके शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

पण्णसय पण्णुणसयं पंचसु दसहीणमट्ठ चउवीसं ।
तक्कायधणुस्सेहो सच्चइतणयस्स सत्तकरा ॥ ८३८ ॥

पंचशतं पंचाशदूनशतं पंचसु दशहीनं अष्ट चतुर्विंशतिः
तत्कायधनुरुत्सेधः सत्यकितनयस्य सप्तकरः ॥ ८३८ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिके शरीरका उच्चत्व क्रमतें पांचसै धनुष अर ते पचास घाटि सौ धनुष बहुरि सौ धनुष बहुरि पांच विषैं दश दश घाटि ताके पीछैं अ... साठि पचास धनुष बहुरि अठाईस धनुष चौबीस धनुष, बहुरि सात्यकितनयका सात हाथ है ॥ ८३८ ॥

आगैं तिन रुद्रनिका आयु कहै हैं;—

तेसीदिगिसत्तरि चिगि छक्कसा पुव्वाणि वासलक्खाओ ।
चुलसीदि सट्ठि दसु दसहीणदुवीसिगि वस्सणवसट्ठी ॥ ८३९

त्र्यशीतिरेकसप्ततिः [illegible] पूर्वाणि वर्षलक्षाणि ।
चतुरशीतिः षष्टिः दश दशहीनद्वे[illegible] वर्षनवषष्टिः ॥ ८३९ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिका आयु क्रमतें तियासी लाख पूर्व, इकहत्तरि लाख पूर्व, [illegible] पूर्व, [illegible] पूर्व, चौरासी लाख, साठि लाख [illegible] विषैं दश दश घाटि ताके [illegible] लाख बहुरि [illegible] बीस लाख बहुरि [illegible] लाख बहुरि गुणहत्तरि वर्ष [illegible]
॥ ८३९ ॥

आगैं तिन रुद्रनि करि प्राप्त भई गतिकों कहै हैं;—

पढमदु माघविमण्णे पण मघविं अट्ठमो दु रिट्ठमहिं ।
दो अंजणं पवण्णा मेघं सच्चइतणु जादो ॥ ८४० ॥
प्रथमद्वौ माघवीमन्ये पंच मघवीमष्टमस्तु अरिष्टमहीं ।
द्वौ अंजनां प्रपन्नौ मेघां सत्यकितनुर्जातः ॥ ८४० ॥

अर्थ—तिन रुद्रनि विषै पहला दूसरा तौ माघवी नामा सप्तम नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए तृतीयादि पांच मघवी छठी पृथ्वीकौं प्राप्त भए । आठवां अरिष्टा पांचवी पृथ्वीकौं प्राप्त भया । परैं नवमां दशवां ए दोय अंजना चौथी पृथ्वीकौं प्राप्त भए । सत्यकितनय मेघा तीसरी पृथ्वीकौं भया है ॥ ८४० ॥

आगैं तिन रुद्रनिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

विज्जाणुवादपढणे दिट्ठफला णट्ठसंजमा भव्वा ।
कदिचि भवे सिज्झंति हु गहिदुज्झियसम्ममहिमादो ॥ ८४१ ॥
विद्यानुवादपठने दृष्टफला नष्टसंयमा भव्याः ।
कतिचिद्भवेषु सिध्यंति हि गृहीतोज्झितसम्यमहिम्नः ॥ ८४१ ॥

अर्थ—ते रुद्र विद्यानुवाद नामा पूर्वका पठन होतैं इह लोक संबंधी फलके भोक्ता भए । नष्ट भया है अंगीकार किया हुवा संजम जिनका असे हैं । बहुरि भव्य हैं ते ग्रहि करि या जो सम्यक्त्व ताके महात्म्यतैं केते इक पर्याय भएं सिद्ध पद पावहिंगे ॥ ८४१ ॥

आगैं चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र इनका वर्त्तना कालकौं बहुरि रचना विशेष करि युगपत पांच नि करि कहैं हैं;—

जिणसमकोट्ठट्ठविदा समकाले सुण्णहेट्ठिमे रचिदा ।
उहयजिणंतरजादा सण्णेया चक्किहरिरुद्दा ॥ ८४२ ॥
जिनसमकोष्ठस्थापिताः समकाले शून्याधस्तने रचिताः ।
उभयजिनांतरजाता संज्ञेया चक्रिहरिरुद्राः ॥ ८४२ ॥

अर्थ—जिनदेवनिका समान कोठानि विषै स्थापित किए चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र ते जिनके न काल विषै भए जानने । बहुरि शून्यकै नीचै स्थापे ते दोय जिननिके अंतर विषै भए जानने । ार्थ-च्यारि पंक्ति करि एक एक पंक्ति विषै चौतीस चौतीस कोठे करिए । तहां प्रथम पंक्ति विषै जैसैं कहिए हैं तैसैं क्रमतैं जिनका वा शून्यका स्थापन करना सो जिस कोठा विषै जिन स्थापन । ताकै नीचै तीन पंक्ति कोठानि विषैं जो चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र स्थापन किए तेसौ चक्री तिन जिननिके काल विषै भए जानने । बहुरि जो नीचले कोठानि विषै शून्य स्थापन करी तो का चक्री तहां अभाव जानना बहुरि जिस ऊपरला कोठा विषै शून्य स्थापन किया ताकै नीचै चक्री आदि स्थापे तो तिन पिछला आगिला दोय जिननिका बीचि अंतर काल विषै ते चक्री भए जानने । बहुरि जो शून्य स्थापन किया तो जहां तिनका अभाव जानना ॥ ८४२ ॥

आगैं तिन कोठनिके स्थापनेका क्रम कैसे है सो कहैं हैं;—

पण्णर जिण खदु तिजिणा सुण्णदु जिण गगणजुगल जिण खदुगं ।
जिण खं जिण खं दुजिणा इदि चोत्तीसालया णेया ॥ ८४३ ॥

पंचदश जिनाः खद्वयं त्रिजिनाः शून्यद्वयं जिनाः गगनयुगलं जिनः खद्वयं ।
जिनः खंजिनः खं द्विजिनौ इति चतुस्त्रिंशदालया ज्ञेयाः ॥ ८४३ ॥

अर्थ—वृषभादि पंद्रह जिन तातैं आगैं दोय शून्य तातैं आगैं तीन जिन आगैं शून्य दो आगैं जिन आगैं शून्य दोय आगैं जिन आगैं शून्य आगैं जिन आगैं शून्य आगैं दोय जिन ऐसैं क्रम करि चौंतीस कोठे प्रथम पंक्ति विषै जानना ॥ ८४३ ॥

ताके नीचे दूसरी पंक्ति विषै कहा सो कहैं हैं ।

चक्किदु तेरस सुण्णा छच्चक्की गयणतिदय चक्की खं ।
चक्की णभदुग चक्की गयणं चक्कहर सुण्णदुगं ॥ ८४४ ॥

चक्रिद्वौ त्रयोदश शून्यानि षट्चक्रिणः गगनत्रितयं चक्री खं ।
चक्री नभोद्विकं चक्री गगनं चक्रधरः शून्यद्वयं ॥ ८४४ ॥

अर्थ—चक्री दोय तातैं आगैं तेरह शून्य तातैं आगैं छह चक्री आगैं शून्य तीन आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय ऐसैं क्रम करि द्वितीय पंक्ति विषै कोठे जानने ॥ ८४४ ॥

दसगयणपंचकेसवछस्सुण्णा पउमणाभणभविण्हू ।
गयणानि केसव सुण्णदु मुरारि सुण्णतियं कमसो ॥ ८४५ ॥

दशगगनं पंचकेशवाः षट्शून्यानि पद्मनाभनभोविष्णुः ।
गगनत्रयं केशवः शून्यद्वयं मुरारिः शून्यत्रयं क्रमशः ॥ ८४५ ॥

अर्थ—तीसरी पंक्ति विषै दशशून्य तातैं आगैं पांच नारायण आगैं छह शून्य आगैं एक नारायण आगैं शून्य आगैं नारायण आगैं शून्यतीन आगैं नारायण आगैं शून्यदोय आगैं नारायण आगैं शून्य तीन ऐसैं क्रमकरि कोठे स्थापन करनें ॥ ८४५ ॥

हरदुगं छस्सुण्णा भव हरा गयणजुगलमीसाणो ।
पण्णर णभाणि णभो णभदसगमो महारीरं ॥ ८४६ ॥

हरद्विकं षट्शून्यानि [illegible] गगनयुगलमीशान ।
पंचदशनभांसि नभः [illegible] महा[illegible] ॥ ८४६ ॥

अर्थ—चौथी पंक्ति विषै रुद्र दोय आगैं आगैं छह शून्य आगैं आगैं [illegible] आगैं शून्य दोय आगैं रुद्र आगैं पंद्रह शून्य आगैं [illegible] [illegible] [illegible] कोठनि विषै है । ऐसै क्रम करि स्थापन करनें । आगैं [illegible] [illegible] [illegible] जानना ॥ ८४६ ॥

आगैं [illegible] [illegible] [illegible] कहै है,—

पउमप्पवासुपुज्जा रत्ता धवला हु चंदपहसुविही।
णीला सुपासपासा णेमीमुणिसुव्वया किण्हा ॥ ८४७ ॥

पद्मप्रभवासुपूज्यौ रक्तौ धवलौ हि चंद्रप्रभसुविधी।
नीलौ सुपार्श्वपार्श्वौ नेमिमुनिसुव्रतौ कृष्णौ ॥ ८४७ ॥

अर्थ—पद्मप्रभ वासुपूज्य ए दोय रक्त वर्ण हैं। बहुरि चंद्रप्रभ पुष्पदंत ए दोय श्वेत वर्ण है। बहुरि सुपार्श्व पार्श्व ए दोय नील वर्ण है। बहुरि नेमि मुनिसुव्रत ए दोय कृष्ण वर्ण हैं॥८४७॥

सेसा सोलस हेमा वसुपुज्जो मल्लिणेमिपासजिणा।
वीरो कुमारसवणा महवीरो णाहकुलतिलओ ॥ ८४८ ॥

शेषाः षोडश हेमाः वासुपूज्यो मल्लिनेमिपार्श्वजिनाः।
वीरः कुमारश्रमणा महावीरो नाथकुलतिलकः ॥ ८४८ ॥

अर्थ—अवशेष सोलह तीर्थंकर सुवर्ण समान वर्ण धरै हैं। बहुरि वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व वर्द्धमान ए पांच तीर्थंकर कुमार श्रमण हैं। बिना विवाह किएं दीक्षा ग्रहण किया है। अवशेष उगणीस तीर्थंकर विवाह राज भएं पीछें दीक्षा ग्रहण किया है। बहुरि महावीर तौ नाथ वंशके तिलक है ॥ ८४८ ॥

पासो हु उग्गवंसो हरिवंसो सुव्वओ वि णेमीसो।
धम्मजिणो कुंथु अरा कुरुजा इक्खाउया सेसा ॥ ८४९ ॥

पार्श्वस्तु उग्रवंशः हरिवंशः सुव्रतोऽपि नेमीशः।
धर्मजिनः कुंथुः अरः कुरुजाः इक्ष्वाकवः शेषाः ॥ ८४९ ॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वजिन उग्रवंशी हैं। मुनिसुव्रत नेमि हरिवंशी हैं। धर्म कुंथु अर जिन कुरुवंशविषै उपजे हैं। अवशेष सतरह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंशविषै उत्पन्न हैं ॥ ८४९ ॥

अब शक अर कल्कीकी उत्पत्ति कहैं हैं;—

पणछस्सयवस्सं पणमासजुदं गमिय वीरणिव्वुइदो।
सगराजो तो कक्की चदुणवतियमहियसगमासं ॥ ८५० ॥

पंचषट्शतवर्षं पंचमासयुतं गत्वा वीरनिर्वृतेः।
शकराजो ततः कल्की चतुर्णवत्रिकमधिकसप्तमासं ॥ ८५० ॥

अर्थ—श्री वीरनाथ चौबीसवां तीर्थंकरको मोक्ष प्राप्त होनेतैं पीछैं छसै पांच वरष पांच मास सहित गए विक्रम नाम शक राजा हो है। बहुरि तातैं उपरि च्यारि नव तीन इन अंकनि करि तीनसै चौराणवै वर्ष अर सात मास अधिक गए कल्की हो है ॥ ८५० ॥

अब कल्कीका कार्य गाथा छह करि कहै है,—

सो उम्मग्गाहिमुहो चउम्मुहो सदरिवासपरमाऊ।
चालीस रज्जओ जिदभूमी पुच्छइ समंतिगणं ॥ ८५१ ॥

स उन्मार्गाभिमुखः चतुर्मुखः सप्ततिवर्षपरमायुष्यः ।
चत्वारिंशत् राज्यः जितभूमिः पृच्छति स्वमंत्रिगणं ॥ ८५१ ॥

अर्थ—सो कल्की उन्मार्ग जो विपरीत आचरण तीह विषै सन्मुख है। बहुरि चतु
जाका नाम है। बहुरि सत्तरि वर्ष प्रमाण जाका परम आयु है। तीह विषै चालीस वर्ष प्रमाण
करै है। बहुरि सो कल्की जीता है पृथ्वी जानै ऐसा होत संता अपनें मंत्रीके समूहकों ऐसैं
है ॥ ८५१ ॥

अम्हाणं के अवसा णिग्गंथा अत्थि केरिसायारा ।
णिद्धणवत्था भिक्खाभोजी जहसत्थमिदिवयणे ॥ ८५२ ॥

अस्माकं के अवशा निर्ग्रंथाः संति कीदृशाकाराः ।
निर्धनवस्त्रा भिक्षाभोजिनः यथाशास्त्रमिति वचने ॥ ८५२ ॥

अर्थ—हमारे वश नाहीं ऐसा कौन है? तब मंत्री कहै हैं। निर्ग्रंथ जैन गुरु अवश है
तब बहुरि कल्की पूछै है। ते कैसे आकारि हैं? तब मंत्री कहै है धन वस्त्र रहित हैं। शा
अनुसारि भिक्षा वृत्ति करि भोजन करैं हैं। ऐसा मंत्रीका प्रतिवचन सुणि ॥ ८५२ ॥

कहा सो कहै हैं;—

तप्पाणिउडे णिवडिद् पढमं पिंडं तु सुक्कमिदि गेज्झं ।
इदि णियमे सचिवकदे चत्ताहारा गया मुणिणो ॥ ८५३ ॥

तत्पाणिपुटे निपतितं प्रथमं पिंडं तु शुल्कमिति ग्राह्यं ।
इति नियमे सचिवकृते त्यक्ताहारा गताः मुनयः ॥ ८५३ ॥

अर्थ—तिन निरग्रंथनिका पाणिपात्र विषै स्थापित किया पहला पिंड ग्रास सो शु
है हासिल है। ऐसैं करि सो प्रथम पिंड ग्रहण करना ऐसैं राजाकै मंत्रिनि सहित नियम कि
संतें आहार समय तैसैं ही करनें करि छोड्या है आहार जिनिनैं ऐसैं होने संते मुनि वना
विषै गए हैं ॥ ८५३ ॥

तं सोढुमक्खमो तं णिहणदि वज्जाउहेण असुरवई ।
सो भुंजदि रयणपहे दुक्खग्गाहेक्कजलरासिं ॥ ८५४ ॥

तं सोढुमक्षमः तं निहंति वज्रायुधेन असुरपतिः ।
स भुंक्ते रत्नप्रभायां दुःखप्राह्यैकजलराशिं ॥ ८५४ ॥

अर्थ—तिस अपराध सहनेंकों समर्थ न भया ऐसा असुर कुमारनिका स्वामी चमर नामा
इन्द्र सो वज्र आयुध करि तिस कल्की राजाकों हनै है। सो कल्की मरि रत्नप्रभा नाम नरक भूमि
विषै दुःख करि ग्रहण रूप एक सागर प्रमाण आयुकों भोगवै है ॥ ८५४ ॥

तम्मयदो तस्स सुदो अजिदंजयसण्णिदो सुरारिं तं ।
सरणं गच्छइ चेलणसण्णाए सह समद्दिठाए ॥ ८५५ ॥

सद्भयतः तस्य सुतः अजितंजयसंज्ञितः सुरारिं तं ।
शरणं गच्छति चेलकासंज्ञया सह स्वमहिलया ॥ ८५५ ॥

अर्थ—तीह असुरपतिके भयतैं तिस कल्की राजाका अजितंजय नामा पुत्र सो चेलका
ना अपनी स्त्री सहित तिस अपनें पिताका वैरी चमर देवेन्द्रनके शरण प्राप्त हो है ॥ ८५५ ॥

सम्मद्दंसणरयणं हिययाभरणं च कुणदि सो सिग्धं ।
पच्चक्खं दट्ठूणिह सुरकयजिणधम्ममाहप्पं ॥ ८५६ ॥

सम्यग्दर्शनरत्नं हृदयाभरणं च करोति स शीघ्रं ।
प्रत्यक्षं दृष्ट्वा इह सुरकृतजिनधर्ममाहात्म्यं ॥ ८५६ ॥

अर्थ—बहुरि सो अजितंजय प्रत्यक्ष जिनधर्मका माहात्म्यकों देखि शीघ्र ही जैनश्रद्धानरूप
ग्दर्शनकों अपनें हृदयका आभरण करै है ॥ ८५६ ॥

आगैं अंतके कल्कीका स्वरूप गाथा पांच करि कहै हैं;—

इदि पडिसहस्सवस्सं वीसे कक्कीणदिक्कमे चरिमो ।
जलमंथणो भविस्सदि कक्की सम्मग्गमत्थणओ ॥ ८५७ ॥

इति प्रतिसहस्रवर्षं विंशतौ कल्कीनामतिक्रमे चरमः ।
जलमंथनो भविष्यति कल्की सन्मार्गमंथनः ॥ ८५७ ॥

अर्थ—ऐसैं हजार हजार वर्ष प्रति एक एक कल्की होइ । कल्कीनिकैं बीचि बीचि एक
उपकल्की होइ इतना विशेष अन्य ग्रंथतैं जानना सो बीस कल्की अतिक्रम भएं अंतका
सवां जलमंथन नामा कल्की भले मार्गका मथनैंवाला विनासनैंवाला होसी ॥ ८५७ ॥

इह इंदरायसिस्सो वीरंगद साहु चरिम सव्वसिरी ।
अज्जा अग्गिल सावय वरसाविय पंगुसेणावि ॥ ८५८ ॥

इह इंद्रराजशिष्यो वीरांगदः साधुश्चरमः सर्वश्री. ।
आर्या अग्निलः श्रावकः वरश्राविका पंगुसेनापि ॥ ८५८ ॥

अर्थ—तीह कालविषै इन्द्रराजा नामा आचार्यका शिष्य वीरांगद नामा अंतका साधु होसी ।
सर्वश्री नामा अर्जिका होसी । बहुरि अग्निल नामा श्रावक होसी । बहुरि पंगुसेना नामा श्राविका होसी ॥ ८५८ ॥

पंचमचरिमे पक्खट्ठमासतिवासावसेसए तेण ।
मुणिपढमपिंडगहणे सण्णसणं करिय दिवसतियं ॥ ८५९ ॥

पंचमचरमे पक्षाष्टमासत्रिवर्षे अवशेषे तेन ।
मुनिप्रथमपिंडग्रहणे संन्यसनं कृत्वा दिवसत्रयं ॥ ८५९ ॥

अर्थ—ते मुनि आदि च्यारयों पंचमकालकै अंति एक पक्ष आठ मास तीन वर्ष अवशेष
रहे तिह कल्की राजाकरि पूर्वोक्त प्रकार मुनिका पहला ग्रास ग्रहण करत संतैं तीन दिन पर्यंत संन्यास
करि ॥ ८५९ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

सोहम्मे जायंते कत्तियअमवास सादि पुव्वण्हे ।
इगिजलहिठिदी मुणिणो सेसतिए साहियं पल्लं ॥ ८६० ॥
सौधर्मे जायंते कार्तिकामावस्यायां स्वातौ पूर्वाह्ने ।
एकजलधिस्थितयो मुनयः शेषत्रयः साधिकं पल्यं ॥ ८६० ॥

अर्थ—तहां मुनि तौ कार्तिक मास अमावास्या तिथि स्वाति नक्षत्र पूर्वाह्न समयविषै मरिकरि एक सागर आयुके धारी सौधर्म स्वर्गविषै उपजैं हैं। बहुरि अवशेष अर्जिका श्रावक श्राविका ए तीन तहां ही सौधर्म स्वर्गविषै साधिक पल्य आयुके धारी उपजैं हैं ॥ ८६० ॥

तव्वासरस्स आदीमज्झंते धम्मरायअग्गीणं ।
णासो तत्तो मणुसा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥
तद्वासरस्य आदिमध्यांते धर्मराजाग्नीनां ।
नाशः ततो मनुष्या नग्ना मत्स्याद्याहाराः ॥ ८६१ ॥

अर्थ—तिस दिनका आदि मध्य अंतविषै क्रमतैं धर्मका अर राजाका अर अग्निका नाश हो है। तातैं परें मनुष्य हैं सो नग्न वस्त्रादि रहित अर मछली आदिका है आहार जिनकै ऐसे होंगे ॥ ८६१ ॥

आगै धर्मादिकका नाशका कारण कहैं हैं;—

पोग्गलभावसहावादो जलणे धम्मे णिरासएण हदे ।
असुरवइणा णरिंदे सयलो लोओ हवे अंधो ॥ ८६२ ॥
पुद्गलातिरौक्ष्यात् ज्वलने धर्मे निराश्रयेण हते ।
असुरपतिना नरेंद्रे सकलो लोको भवेत् अंधः ॥ ८६२ ॥

अर्थ—[illegible] पुद्गल द्रव्य [illegible] परणया तातैं अग्निका नाश भया बहुरि [illegible] अभाव। अर धर्मके आश्रयके अभावतैं धर्मका नाश भया। बहुरि असुरकुमार [illegible] हुआ राजाका नाश भया। ऐसैं नाश होतैं पीछें समस्त लोक अंधा हो है॥ ८६२ ॥

[illegible] निर्दै [illegible] जीवनिकै गति [illegible] गमन अर [illegible] कहै हैं;—

[illegible] मुदा णिरयदुगं णिरयतिरिक्खादु गमणमेत्थ हवे ।
[illegible] मेहा धू णिम्मला णग्गा णिरया ॥ ८६३ ॥
[illegible] भवेत् ।
[illegible] ॥ ८६३ ॥

अर्थ—[illegible] हुए [illegible] है।
[illegible] हुए [illegible] है।

न्यका न हो है। बहुरि इस काल विषै मेघ हैं ते स्तोक जलके देनैं वाले हो हैं। पृथ्वी रत्नादि सारवस्तु रहित हो है। मनुष्य तीव्र कषायादि युक्त हो हैं ॥ ८६३ ॥

अब अति दुःषम कालका अंत विषै जो वर्तै है ताका अनुक्रम गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

संवत्तयणामाणिलो गिरितरुभूपहुदि चुण्णणं करिय ।
भमदि दिसंतं जीवा मरंति मुच्छंति छट्ठंते ॥ ८६४ ॥

संवर्तकनामानिलः गिरितरुभूप्रभृतीनां चूर्णनं कृत्वा ।
भ्रमति दिशांतं जीवा म्रियंते मूर्छंति षष्ठांते ॥ ८६४ ॥

अर्थ—छठाकालका अंत विषै संवर्तक नामा पवन सो पर्वत वृक्ष पृथ्वी आदिकका चूर्णकौं करि स्वक्षेत्र अपेक्षा दिशानिका अंत प्रति भ्रमण करै है। बहुरि तहां तिष्ठते जीव तीह पवन करि मूर्छाकौं पावै हैं बहुरि मरै हैं ॥ ८६४ ॥

खगगिरिगंगदुवेदी खुद्दविलादिं विसंति आसण्णा ।
णेंति दया खचरसुरा मणुस्सजुगलादिबहुजीवे ॥ ८६५ ॥

खगगिरिगंगाद्वयवेदीं क्षुद्रविलादिं विशंति आसन्नाः ।
नयंति दयाः खचराः सुरा मनुष्ययुगलादिबहुजीवान् ॥ ८६५ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत अर गंगा सिंधुनदी अर इनकी वेदी अर तिनकैं क्षुद्र बिल आदिक स्थान प्रति तिनहीके निकट वर्ती प्राणी प्रवेश स्वयमेव करै हैं। बहुरि दयावान विद्याधर वा देव हैं ते मनुष्य युगल आदि देकरि बहुत जीवनिकौं तिस बाधा रहित स्थानकौं प्राप्त करै हैं ॥ ८६५ ॥

छट्ठमचरिमे होंति मरुदादी सत्तसत्त दिवसवही ।
अदिसीदखारविसपरुसग्गीरजधूमवरिसाओ ॥ ८६६ ॥

षष्ठचरमे भवंति मरुदादयः सप्तसप्त दिवसावधि ।
अतिशीतक्षारविषपरुषाग्निरजोधूमवर्षाः ॥ ८६६ ॥

अर्थ—छठा कालका अंत विषै पवन आदि सात वर्षा सात सात दिन पर्यंत हो हैं। ते कौंन ! पवन १ अत्यंत शीत १ क्षार रस १ विष १ कठोर अग्नि १ धूलि १ धुवां १ इन सात-रूप परिणए पुद्गलनिकी वर्षा गुणचास दिन विषै हो है ॥ ८६६ ॥

तेहिंतो सेसजणा णस्संति विसग्गिवरिसदड्ढमही ।
इगिजोयणमेत्तमधो चुण्णीकिज्जदि हु कालवसा ॥ ८६७ ॥

तेभ्यः शेषजनाः नश्यंति विषाग्निवर्षदग्धमही ।
एकयोजनमात्रमधः चूर्णीक्रियते हि कालवशात् ॥ ८६७ ॥

अर्थ—तिन वर्षानितै अवशेष रहे मनुष्यादिक ते भी नष्ट हो हैं। बहुरि विष अर अग्नि-की वर्षानि करि दग्ध भई पृथ्वी सो एक योजन मात्र नीचा तांई कालके वशतै चूर्ण हो है ॥ ८६७ ॥

अब उत्सर्पणी कालके प्रवेशका अनुक्रम गाथा तीन करि कहै हैं;—

उस्सप्पिणीयपढमे पुक्खरखीरघदमिदरसा मेघा ।
सत्ताहं वरसंति य णग्गा मत्तादिआहारा ॥ ८६८
उत्सर्पिणीप्रथमे पुष्करक्षीरघृतामृतरसान् मेघाः ।
सप्ताहं वर्षंति च नग्ना मृतााद्याहाराः ॥ ८६८ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणीका अति दुःषम नामा प्रथमकाल विषै आदि ही मेघ
१ घीव १ अमृत १ रसानिकों क्रमतैं सात सात दिन पर्यंत वर्षै है । बहुरि
जीव ते वस्त्रादि रहित नग्न हैं । बहुरि मृतिका आदिका आहार जिनिकै ऐसे

उण्हं छंडदि भूमी छविं सणिद्धत्तमोसहिं धरादि ।
वल्लिलदागुम्मतरू वड्ढंदि जलादिवरसेहिं ॥ ८६९
उष्णं त्यजति भूमिः छविं सस्निग्धत्वमौषधिं धरति ।
वल्लिलतागुल्मतरवो वर्धंते जलादिवर्षैः ॥ ८६९ ॥

अर्थ—जलादिकनिकी वर्षानिकरि पृथ्वी है सो पूर्वं भया था जो
करि उष्णपणा ताकौं छांडै है । बहुरि छवि जो शोभा ताकौं धरै है । बहुरि
धरै है । बहुरि अन्न आदि औषधिकौं धरै है । बहुरि वेलि आदि वधै हैं ।
जड़विना फैलै ताकौं वेलि कहिए । वृक्षका आश्रय करि जो फैलै ताकों लता क
स्थूल पेडकौं जे न प्राप्त होइ तिनकों गुल्म कहिए । स्थूल पेड़ रूप होने योग्य
कहिए । जलादिकनिकी वर्षानि करि ए वधै हैं ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिठिया भूसीयलगंधगुणसमाहूया ।
णिग्गमिय तदो जीवा सव्वे भूमिं भरंति कमे ॥ ८
नदीतीरगुहादिस्थिता भूशीतलगंधगुणसमाहूताः ।
निर्गत्य ततो जीवाः सर्वे भूमिं भरंति क्रमेण ॥ ८७० ॥

अर्थ—गंगासिंधु नदीके तीर वा विजयार्धकी गुफा आदि विषै पूर्वं प्राप्त
भये भया जो पृथ्वी विषै शीतल सुगंध गुण तींह करि बुलाए हुए सर्व ही तहांतै
करि पृथ्वीकों भरै हैं । बहुरि इहांतैं क्रमसौं आयुकायादिक जीवनिकै क्रमतैं वधै

अब उत्सर्पिणीका दूसरा काल आदि विषै वर्तनाका अनुक्रम कहै हैं;—

उस्सप्पिणीयबिदिए सहस्ससेसेसु कुलधरा कणयं ।
कणयप्पहरायद्धयपुंगव तह णलिण पउम महपउमा
उत्सर्पिणीद्वितीये सहस्रशेषेषु कुलकरा कनकः ।
कनकप्रभराजध्वजपुंगवा तथा नलिन पद्म महापद्म ॥ ८

अर्थ—अति दुःषम प्रथम काल पूर्ण भए पीछे दूसरा दुःषम नामा
तामैं एक हजार वर्ष अवशेष रहे सोलह कुलकर हो है । बहुरि ते कनक १ क

पुंगव १ पद्म १ पद्म प्रभ १ पद्म राज १ पद्म ध्वज १ पद्म पुंगव १ महा पद्म १ ऐसे नाम धारक सोलह कुलकर हो हैं ॥ ८७१ ॥

आगें तिनका कार्य वा तृतीय काल विषै तिष्ठते तेरसठि शलाका पुरुष तिनकौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

तस्सोलसमणुहिं कुलायाराणलपक्कपहुदिया होंति।
तेवट्ठिणरा तदिए सेणियचर पढमतित्थयरो ॥ ८७२ ॥

तत्षोडशमनुभिः कुलाचारानलपक्वप्रभृतयो भवंति।
त्रिषष्टिनरास्तृतीये श्रेणिकचरः प्रथमतीर्थकरः ॥ ८७२ ॥

अर्थ—तिन सोलह मनुभिः कहिए कुलकरनि करि क्षत्रियादि कुलके आचार अग्नि करि अन्नादि पचावनेका विधान इत्यादि कार्य सिखाए हुए प्रवर्तें हैं। बहुरि तहां पीछै तीसरा दुःखम सुखमा नामा काल प्रवर्त्तै है। तीह विषै तेरसठि शलाका पुरुष हो हैं। तहां श्रेणिक नामा राजाका जीव सो प्रथम तीर्थंकर देव हो है ॥ ८७२ ॥

महपउमो सुरदेवो सुपासणामो सयंपहो तुरियो।
सव्वप्पभूद देवादीपुत्तो होदि कुलपुत्तो ॥ ८७३ ॥

महापद्मः सुरदेवः सुपार्श्वनामा स्वयंप्रभः तुर्यः।
सर्वात्मभूतो देवादिपुत्रो भवति कुलपुत्रः ॥ ८७३ ॥

अर्थ—महापद्म १ सुरदेव १ सुपार्श्व १ स्वयंप्रभ चौथो १ सर्वात्मभूत १ देव पुत्र १ कुल पुत्र ॥ ८७३ ॥

तित्थयरुदंक पोट्ठिल जयकित्ती मुणिपदादिसुव्वदओ।
अरणिप्पावकसाया विउलो किण्हचरणिम्मलओ ॥ ८७४ ॥

तीर्थकर उदंकः प्रोष्ठिलः जयकीर्तिः मुनिपदादिसुव्रतः।
अरनिष्पापकषायाः विपुलः कृष्णचरो निर्मलः ॥ ८७४ ॥

अर्थ—उदंक तीर्थंकर १ प्रोष्ठिल १ जयकीर्ति १ मुनिसुव्रत १ अर १ निष्पाप १ निःकषाय १ विपुल १ कृष्ण नारायणका जीव निर्मल तीर्थंकर १ ॥ ८७४ ॥

चित्तसमाहीगुत्तो सयंभु अणियट्टिओ य जय विमलो।
तो देवपाल सच्चइसुतयरोऽणंतविरियंतो ॥ ८७५ ॥

चित्रसमाधिगुप्तः स्वयंभूरनिवर्तकश्च जयो विमलः।
ततो देवपालः सत्यकिसुतचरोऽनंतवीर्यांतः ॥ ८७५ ॥

अर्थ—चित्र गुप्त १ समाधि गुप्त १ स्वयंभू १ अनिवर्तक १ जय १ विमल १ देवपाल १ सत्यकिसुत रुद्रका जीव अनंतवीर्य १ ऐसे नाम धारक चौबीस तीर्थंकर हो हैं ॥ ८७५ ॥

आगैं तहां प्रथम अंत तीर्थंकरनिका आयु उत्सेध कहै हैं;—

पउमजिणो सोलससयवस्साऊ सत्तहत्थदेहुदओ ।
चरिमो दु पुव्वकोडीआउ पंचसयधणुतुंगो ॥ ८७६ ॥

प्रथमजिनः षोडशशतवर्षायुः सप्तहस्तदेहोदयः ।
चरमः तु पूर्वकोट्यायुः पंचशतधनुरुत्तुंगः ॥ ८७६ ॥

अर्थ—पहला महापद्म जिन एकसौ सोलह वर्ष प्रमाण आयु सात हाथ शरीर धरै है । बहुरि अंतका अनंत वीर्य जिन कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु पांचसै धनुष उदय धरै है ॥ ८७६ ॥

आगैं चक्री अर्द्धचक्री प्रतिभद्रनिके नाम गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

चक्की भरहो दीहादिमद्दंतो मुत्तगूढदंता य ।
सिरिपुन्नसेणभूदी सिरिकंतो पउम महपउमा ॥ ८७७ ॥

चक्रिणः भरतः दीर्घादिमदंतो मुक्तगूढदंतौ च ।
श्रीपूर्णसेनभूती श्रीकांतः पद्मो महापद्मः ॥ ८७७ ॥

अर्थ—प्रथमही चक्रवर्ती कहिए हैं । भरत १ दीर्घ दंत १ मुक्त दंत १ गूढ दंत १ श्रीसेन १ श्रीभूति १ श्रीकांत १ पद्म १ महापद्म १ ॥ ८७७ ॥

तो चित्तविमलवाहण अरिट्ठसेणो चलो तदो चंदो ।
महचंद चंदहर हरिचंदा सीहादिचंद वरचंदा ॥ ८७८ ॥

ततः चित्रविमलवाहनो अरिष्टसेनः चलाः ततः चंद्रः ।
महाचंद्रः चंद्रधरः हरिचंद्रः सिंहादिचंद्रो वरचंद्रः ॥ ८७८ ॥

अर्थ—तहां पीछैं चित्र वाहन १ विमल वाहन १ अरिष्ट सेन १ ए बारह चक्रवर्ती [illegible] पीछैं अर्द्ध चक्री कहिए हैं । चंद्र १ महाचंद्र १ चंद्रधर १ हरिचंद्र १ सिंहचंद्र [illegible] ॥ ८७८ ॥

तो पुण्णचंदसुहचंदा सिरिचंदो य केसवा णंदी ।
णंदिमित्तसेणा णंदी भूदी बलणामा ॥ ८७९ ॥

ततः पूर्णचंद्रः शुभचंद्रः श्रीचंद्रः च केशवाः नंदी ।
नंदिमित्रसेनौ नंदिभूतिश्चाबलनामा ॥ ८७९ ॥

अर्थ—तहां पीछैं पूर्ण चंद्र १ शुभचंद्र १ श्रीचंद्र १ ऐसैं ए नव केशव हैं । [illegible] कहिए है । नंदी १ नंदिमित्र १ नंदिसेन १ नंदिभूति १ [illegible]

[illegible] हूविट्ठ [illegible] य [illegible] ।
[illegible] ॥ ८८० ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ८८० ॥

अर्थ—महावल १ अतिबल १ त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ ऐसैं ए नव वासुदेव हो हैं। यातैं परें तिनके प्रतिशत्रु जे प्रतिनारायण ते कहिए हैं। श्रीकंठ १ हरिकंठ १ अश्वकंठ १ सुकंठ १ शिखिकंठ १ अश्वग्रीव १ हयग्रीव १ मयूर ग्रीव ऐसैं ए नव प्रतिवासुदेव हो हैं ॥ ८८० ॥

अब कहे जु ए अर्थ तिनका उपसंहार कहै हैं;—

एसो सव्वो भेओ परूविदो बिंदियतदियकालेसु।
पुव्वं व गहीदव्वो सेसो तुरियादिभोगमही ॥ ८८१ ॥

एषः सर्वो भेदः प्ररूपितः द्वितीयतृतीयकालयोः।
पूर्वमिव गृहीतव्यः शेषः तुर्यादिभोगमही ॥ ८८१ ॥

अर्थ—यहु सर्व ही भेद उत्सर्पिणीके दूसरे तीसरे कालनिका प्ररूपण किया बहुरि अवशेष चतुर्थ आदि कालनि विषै भोगभूमि है ऐसा पूर्वोक्त प्रकार ग्रहण करना। तहां अनुक्रमतैं आयु कायादि करि वृद्धि रूप चतुर्थ सुषम दुःषमकाल विषै जघन्य भोगभूमि है। पंचम सुषम काल विषै मध्य भोगभूमि है। षष्टम सुषम सुषम काल विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है ॥ ८८१ ॥

ऐसैं भरत ऐरावत क्षेत्रनि विषै कहे जे छह काल तिनकों अन्य क्षेत्र विषै जोड़नेंकों गाथा तीन कहै हैं;—

पढमादो तुरियोत्ति य पढमो कालो अवट्ठिदो कुरवे।
हरिरम्मगे य हेमवदेरण्णवदे विदेहे य ॥ ८८२ ॥

प्रथमतः तुर्यांतं च प्रथमः कालः अवस्थितः कुर्वोः।
हरिरम्यके च हैमवद्धैरण्यवतयोः विदेहे च ॥ ८८२ ॥

अर्थ—पहला कालतैं लगाय चौथा काल पर्यंत नियम कहिए हैं। तहां पहला काल तौ देवकुरु उत्तर कुरु विषै अवस्थित है। **भावार्थ**—पहला सुषम सुषम कालकी आदि विषै जो वर्तना है तो वर्तना देव कुरु उत्तर कुरु विषै सदा काल पाइए है। बहुरि ऐसैं ही दूसरा काल हरि अर रम्यक क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि तीसरा काल हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि चौथा काल विदेह क्षेत्र विषै अवस्थित ही है ॥ ८८२ ॥

भरह इरावद पण पण मिलेच्छखंडेसु खयरसेढीसु।
दुस्समसुसमादीदो अंतोत्ति य हाणिवड्ढी य ॥ ८८३ ॥

भरत· ऐरावतः पंच पंच म्लेच्छखंडेषु खचरश्रेणिषु।
दुःषमसुषमादितः अंत इति च हानिवृद्धी च ॥ ८८३ ॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी पांच पांच मलेच्छ खंड अर विजयार्द्धकी विद्याधर रहनेंकी श्रेणी तिन विषै दुःखम सुषम कालका आदितै लगाय तांहीका अंत पर्यंत हानि वृद्धि हो है। सो अवसर्पिणी विषै तौ चौथा कालकी आदितै लगाय अंत पर्यंत आर्य खंडवत् अनुक्रमतैं आयु आदिककी हानि हो है। तहां पांचवा छटा काल नाही प्रवर्ते है। **भावार्थ**—जो आर्य खंड विषै अवसर्पिणीका चौथा कालका अंतविषै वर्तना है सोई आर्यखंडविषै अवसर्पिणीका पांचवां छटा अर

उत्सर्पिणीका पहला दूसरा काल प्रवर्तैं भी तहां एकरूप वर्तना है। बहुरि उत्सर्पिणीका काल्का आदि तैं लगाय नाहींका अंत पर्यंत आयु आदिककी वृद्धि हो है । तहां चौथा छठा काल नांहीं वर्त्ते है । भावार्थ-इहां आर्य खंड विषै उत्सर्पिणीका चौथा पांचवां छठा सर्पिणीका पहला दूसरा तीसरा काल प्रवर्तैं भी उत्सर्पिणीके तीसरा कालका अंत वि वर्त्तना पाइए सो तहां एकरूप वर्तना है ॥ ८८३ ॥

पढमो देवे चरिमो णिरए तिरिए णरेवि छक्काला ।
तदियो कुणरे दुस्समसरिसो चरिमुवहिदीवद्धे ॥ ८८४ ॥

प्रथमः देवे चरमः निरये तिरश्चि नरेपि षट्कालाः ।
तृतीयः कुनरे दुःषमसदृशः चरमोदधिद्वीपार्धे ॥ ८८४ ॥

अर्थ—देव गतिविषै प्रथम काल वर्त्ते है । नरक गतिविषै अंतका छठा काल वर्त्ते **भावार्थ**—इहां अति सुख अति दुखकी अपेक्षा पहला छठा कालका वर्त्तना कह्या है । आयु अपेक्षा न कह्या है । बहुरि ऐसैं ही तिर्यंच गति अर मनुष्य गतिविषै छहौं काल वर्त्ते है । बहुरि मनुष्य भोगभूमि समुद्रनिविषै हैं । तहां तीसरा काल वर्त्ते है । बहुरि आधा स्वयंभू रमण द्वीप सर्व स्वयंभूरमण समुद्रविषै दुःखम समान सर्वकाल वर्त्ते है ॥ ८८४ ॥

ऐसैं जंबूद्वीपके वर्णनकौं समाप्त करि लवण समुद्रके वर्णनकौं आरंभ करत संता दोऊनिकै बीचि तिष्ठता जो कोट ताका स्वरूप निरूपणके मिस करि समस्त द्वीप समुद्रनिके विषै पाइए हैं जे प्रकार तिनकौं गाथा दोयकरि प्ररूपै हैं;—

चउगोउरसंजुत्ता भूमिमुहे वार चारि अट्ठुदया ।
सयलरयणप्पया ते वेकोसवगाढया भूमिं ॥ ८८५ ॥

चतुर्गोपुरसंयुक्ता भूमौ मुखे द्वादश चत्वारः अष्टोदयाः ।
सकलरत्नात्मकास्ते द्विक्रोशावगाढा भूमिं ॥ ८८५ ॥

अर्थ—च्यारि गोपुर जे द्वार तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि भूमौ कहिए नीचैं बारह योजन चौडे हैं । मुखे कहिए उपरि च्यारि योजन चौडे हैं । बहुरि आठ योजन ऊंचे हैं । बहुरि सब नाना प्रकार रत्नमई हैं ऐसैं ते प्राकार हैं । बहुरि ते दोय कोश भूमिकौं अवगाहि करि तिष्ठै हैं **भावार्थ**—पृथ्वी विषै दोय कोश इनकी नीव हैं ॥ ८८५ ॥

वज्जमयमूलभागा वेलुरियकयाइरम्मसिहरजुदा ।
दीवोवहीणमंते पायारा होंति सव्वत्थ ॥ ८८६ ॥

वज्रमयमूलभागा वैडूर्यकृतातिरम्यशिखरयुताः ।
द्वीपोदधीनामंते प्राकारा भवंति सर्वत्र ॥ ८८६ ॥

अर्थ—वज्रमई तिनका मूल भाग कहिए नीव है। बहुरि वैडूर्य रत्न करि निर्मापित अति रमणीक शिखरनि करि संयुक्त हैं । ऐसे प्राकार कहिए वेदिका दिवाल सो द्वीपनिका वा समुद्रनिका अंत विषै परिरिरूप सर्वत्र है ॥ ८८६ ॥

आगैं तिन प्राकारनिकैं उपरि तिष्ठती जु वेदिका ताकौं निरूपै हैं;—

पायाराणं उवरिं पुह मज्झे पउमवेदिया हेमी।
बेकोसपंचसयधणुतुंगा वित्थारया कमसो ॥ ८८७ ॥

प्राकाराणामुपरि पृथक् मध्ये पद्मवेदिका हैमी।
द्विक्रोशपंचशतधनुस्तुंगविस्तारा क्रमशः ॥ ८८७ ॥

अर्थ—तिन प्राकारनिकै उपरि मध्य विषै पृथक पृथक पद्म वेदिका कांगुरेनिकी पंक्ति हैं। सो सुवर्ण मई है दोय कोश ऊंची है पांचसै धनुष चौडी है ॥ ८८७ ॥

आगैं तिस पद्म वेदिकाकै माही अर बारै दोऊ तरफा तिष्ठते जु वनादिक तिनकौं गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

तिस्से अंतो बाहिं हेमसिलातलजुदं वणं रम्मं।
वावी पासादोवि य चित्ता अत्थंति तहिं वाणा ॥ ८८८ ॥

तस्या अंतर्बहिः हेमशिलातलयुतं वनं रम्यं।
वाप्यः प्रासादा अपि च चित्रा आसते तत्र वानाः ॥ ८८८ ॥

अर्थ—तिन वेदिकानिकै मांही बारै पैठी वा बैठी दोऊ तरफा सुवर्णमय शिलातल करि संयुक्त रमणीक वन हैं। तहां चित्र नाना प्रकार बावडी वा प्रासाद कहिए मंदिर हैं। तहां मंदिरनि विषै वान व्यंतर देव तिष्ठै हैं ॥ ८८८ ॥

वरमज्झजहण्णाणं वावीणं चाव विसद वित्थारा।
पण्णासूणं कमसो गाढा सगवाससदसभागो ॥ ८८९ ॥

वरमध्यजघन्यानां वापीनां चापाः द्विशतं विस्ताराः।
पंचाशदूनं क्रमशो गाधः स्वकव्यासदशमभागः ॥ ८८९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य बावडीनिका विस्तार जो चौडाईका प्रमाण दोयसै अर पचास घाटि क्रमतैं है सो दोयसै ड्यौढसै एकसौ योजन प्रमाण है। बहुरि तिनका गाध जो ओंडाईका प्रमाण सो अपने व्यासकै दशवैं भाग है। सो क्रमतैं बीस पंद्रह दश योजन प्रमाण जाननां ॥८८९॥

वासुदयादीहत्तं जहण्णपासादयस्स चावाणं।
पण्णपणसदरिसयमिह दारे छच्चार चउ गाढं ॥ ८९० ॥

व्यासोदयदीर्घत्वं जघन्यप्रासादस्य चापानां।
पंचाशत्पंचसप्ततिशतं इह द्वारे षट् द्वादश चतुर्गाढः ॥ ८९० ॥

अर्थ—जघन्य प्रासादनिकी चौडाई उचाई लंबाईका प्रमाण क्रमतैं पचास पिचहत्तरि एकसौ धनुष प्रमाण है। बहुरि इनके द्वारनिविषै चौडाई उचाई छह अर बारह धनुष प्रमाण है अर गाध जो अवकाश रूप इनकी नींव सो च्यारि धनुष प्रमाण है ॥ ८९० ॥

मज्झिमउक्कस्साणं विगुणा तिगुणा कमेण वासादी।
दोहोदारा मणिमय णट्टणकीडादिगेहावि ॥ ८९१ ॥

मध्यमोत्कृष्टानां द्विगुणा त्रिगुणाः क्रमेण व्यासादिः ।
द्विद्विद्वाराः मणिमया नर्तनक्रीडादिगेहा अपि ॥ ८९१ ॥

अर्थ—मध्यम अर उत्कृष्ट प्रासादनिका व्यासादिक जघन्य प्रासादनिके व्यासादिकतै क्रमतै दूणे अर तिगुणे हैं। अर तिनके द्वारनिके भी तैसैं ही जघन्य प्रासादनिके द्वारनितै दूणे अर तिगुणे व्यासादिक हैं। बहुरि ते जघन्य व्यासादिक धरैं प्रासाद दोय दोय द्वारनि करि संयुक्त हैं। तहां मणिमई नर्तन गेह क्रीडा गेह आदि रचना पाइए है। तहां मध्य प्रासादनिकी चौड़ाई उंचाई ऊंडाई सौ ड्योढसै दोयसै योजन, उत्कृष्ट प्रासादनिकी ड्योढसै सवादोसै तीनसै योजन प्रमाण है। बहुरि मध्य प्रासादनिके द्वारनिकी चौड़ाई उचाई गाध बारह चौईस आठ धनुष है, उत्कृष्ट प्रासादनिके द्वारनिकी चौईस छत्तीस बारह धनुष प्रमाण है ॥ ८९१ ॥

अब अधिकार भूत प्राकारनिके द्वारनिके नाम वा तिनके व्यासादिक कहै हैं;—

विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजियं च पुव्वादी ।
दारचउक्काणुदओ अडजोयणमद्धवित्थारो ॥ ८९२ ॥

विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजितं च पूर्वादि ।
द्वारचतुष्काणामुदयः अष्टयोजनानि अर्धविस्तारः ॥ ८९२ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ ऐसे नाम धारक तिन प्राकारनिके पूर्वादि दिशानि विषैं द्वार हैं। तिन च्यारि द्वारनिका उदय आठ योजन है, विस्तार तातै आधा च्यारि योजन है ॥ ८९२ ॥

आगै तिन द्वारनिकै ऊपरि रचनाका स्वरूपकौं आदि दे करि वर्णन गाथा तीन करि कहै हैं;—

तोरणजुददारुवरिं दुगवास चउक्कतुंग पासादो ।
बारसहस्सायददलवासं विजयपुरमुवरि गयणतले ॥ ८९३ ॥

तोरणयुतद्वारोपरि द्विव्यासः चतुष्कतुंग प्रासाद ।
द्वादशसहस्रायतदलव्यासं विजयपुरमुपरि गगनतले ॥ ८९३ ॥

अर्थ—तिन तोरण संयुक्त द्वारनिकै उपरि दोय योजन चौड़ा च्यारि योजन ऊंचा प्रासाद है। तिनकै उपरि आकाश तल विषै बारह हजार योजन ऊंचा तातै आधा छह हजार योजन चौड़ा विजय नाम नगर है ॥ ८९३ ॥

एवं समंतिदाणं विजयादिदिसी दु माहिंदं पडे ।
[illegible] बारस दाराणि [illegible] णिग्गमणा ॥ ८९४ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ८९४ ॥

अर्थ—[illegible]
[illegible]

जगती जो जंबूद्वीपसंबंधी वेदी ताके मूल विषै सीता सीतोदा बिना अवशेष बारह नदी निकसनेंके द्वार द्वार है। सीता सीतोदा पूर्व पश्चिम द्वार करी ही समुद्र विषै प्रवेश करै है। तातैं इनके जुदे द्वारनिका अभाव है ॥ ८९४ ॥

पायारंतब्भागे वेदिजुदं जोयणद्धवास वणं।
दारूणपरिहितुरियो विजयादीदारअंतरयं ॥ ८९५ ॥
प्राकारांतर्भागे वेदीयुतं योजनार्धव्यासं वनं।
द्वारोनपरिधितुर्यो विजयादिद्वारांतरं ॥ ८९५ ॥

अर्थ—तिस प्राकारकै मांहिली तरफ वेदिका सहित आध योजन चौड़ा पृथ्वी उपरि वन है। बहुरि तिस प्राकारके च्यारयौं द्वारनिका व्यास सोलह योजन सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि प्रमाण ३१६२२८ विषै घटाइ अवशेष ३१६२१२ के च्यारि भाग किएं गुण्यासी हजार तेरपन योजन प्रमाण विजयादिक द्वारनिकै परस्पर अंतराल है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। ऐसैं द्वीप अर समुद्रकै बीचि तिष्ठता जो प्राकार ताका वर्णन सहित जंबूद्वीपका वर्णन समाप्त भया॥ ८९५ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतरवर्ती जे पाताल तिनका स्थान वा तिनकी संख्या वा तिनके व्यासादिकका परिमाण कहै हैं;—

लवणे दिसविदिसंतरदिसासु चउ चउ सहस्स पायाला।
मज्झुदयं तलवदणं लक्खं दसमं तु दसमकमं ॥ ८९६ ॥
लवणे दिशाविदिशांतरदिशासु चत्वारि सहस्रं पातालानि।
मध्योदयः तलवदनं लक्षं दशमं तु दशमक्रमं ॥ ८९६ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके मध्यभाग परिधिविषै च्यारि दिशानिविषै अर च्यारि विदिशानिविषै अर इन आठनिकै बीचि आठ अंतर दिशा विषै अनुक्रमतैं च्यारि च्यारि एक हजार पाताल हैं। गर्त खाड़ा ताका नाम पाताल है। तहां दिशासंबंधी च्यारि पाताल तिनका उदयका मध्य भागविषै व्यास एक लाख योजन है। बहुरि उदय जो उचाई ताका प्रमाण तैसैंही एक लाख योजन है। नीचै ही नीचै तल व्यास ताका दशवां भाग दश हजार योजन है। उपरि मुख व्यास तैसैं ही दश हजार योजन है। भावार्थ—ए पाताल ऊभा मृदंगकै आकारि हैं। सो समभूमितैं नीचैका जो ऊंडाईका प्रमाण सो उचाई जाननी। ताका मध्यविषै तौ व्यास अधिक है। अर ताकै उपरि वा नीचैं क्रमतैं घटता घटता नीचैं ही नीचैं अर उपरि समभूमिविषै समान व्यास है। इहां प्रश्न जो लक्ष योजन पर्यंत ऊंडाई कैसें सभवै? ताका समाधान—रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख असी हजार योजन मोटी है। तहां खरभाग पंकभाग पर्यंत ते पाताल ऊडे जाननें। बहुरि विदिशासंबंधी च्यारि पातालनिकै दिशासंबंधी पातालनितैं दशवा भागका अनुक्रम जानना सो मध्य व्यास दश हजार उदय दश हजार तल व्यास एक हजार मुख व्यास एक हजार योजन प्रमाण है। बहुरि अंतर दिशा संबंधी हजार पातालनिका विदिशा संबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जानना। सो मध्य व्यास हजार तल व्यास एकसौ मुख व्यास एकसौ योजन प्रमाण है ॥ ८९६ ॥

आगैं दिशा संबंधी पातालनिका नामादिक कहैं हैं;—

वडवामुहं कदंवगपायालं जूवकेसरं वट्टा ।
पुव्वादिवज्जकुड्डा पणसयवाहल्ल दसम कमा ॥ ८९७ ॥

वडवामुखं कदंवकं पातालं यूपकेशरं वृत्तानि ।
पूर्वादिवज्रकुड्यानि पंचशतबाहल्यं दशमं क्रमात् ॥ ८९७ ॥

अर्थ—वडवामुख १ कदंवक १ पाताल १ यूपकेसर १ ऐसैं पूर्वादि दिशा संबंधी पातालनिके नाम हैं। बहुरि ते सर्व पाताल वृत्त कहिए गोल हैं। बहुरि वज्रमई कुड्यकरि संयुक्त है। तहां दिशा संबंधी पातालनिकै कुड्यका बाहुल्य जो मोटाईका प्रमाण सो पांचसै योजन है। बहुरि याका दशवां अंश पचास योजन विदिशा संबंधी पातालनिका कुड्य बाहुल्य है ॥ ८९७ ॥

आगैं तिन पातालनिकै अभ्यंतर वर्ती जल अर पवन तिनकै प्रवर्तनेंका क्रम कहैं हैं;—

हेट्ठुवरिमतियभागे णियदं वादं जलं तु मज्झम्हि ।
जलवादं जलवड्ढी किण्हे सुक्के य वादस्स ॥ ८९८ ॥

अधस्तनोपरिमत्रिभागे नियतः वातो जलं तु मध्ये ।
जलवातः जलवृद्धिः कृष्णे शुक्ले च वातस्य ॥ ८९८ ॥

अर्थ—तिन पातालनिकी उचाईका तीन भाग करिए तहां दिशा संबंधी पातालनिका तीसरा भाग तेतीस हजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। विदिशा संबंधीनिका तीन हजार तीनसै तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। अंतर दिशा संबंधीनिका तीनसै तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। तहां नीचला तीसरा भाग विषै तौ केवल पवन ही पाइए है। बहुरि उपरिका तीसरा भाग विषै केवल जल ही पाईए है। बहुरि मध्यका तीसरा भाग विषै जल पवन मिश्ररूप पाईए है। तहां कृष्णपक्ष विषै तीह मध्यका तृतीय भाग विषै तिष्टता जलकी हानि हो है। बहुरि शुक्ल पक्ष विषै तहां ही तिष्टता पवनकी वृद्धि हो है ॥ ८९८ ॥

अब तिस हानि वृद्धिके प्रमाण कौं कहै हैं;—

तम्मज्झिमतियभागे लवणसिहा चरिमपणसहस्से य ।
पण्णरदिणेहिं भजिदे इगिदिण जलवादवड्ढि जलवड्ढी ॥ ८९९ ॥

तन्मध्यमत्रिभागे लवणशिखा चरमपंचसहस्रे च ।
पंचदशदिनैः भक्ते एकदिने जलवातवृद्धिः जलवृद्धिः ॥ ८९९ ॥

अर्थ—तिन पातालनिका मध्य तृतीय भागका पूर्वोक्त प्रमाण ताकौं पंद्रहदिननिका भाग दिएं जो प्रमाण होइ। दिशा ३३३३३। १-३ विदिशा ३३३३। १-३ अंतर दिशा ३३३। १+२ तितना मध्य तृतीय भाग विषै एक एक दिन प्रति। दिशा २२२२। १-९ विदिशा २२२$\frac{2}{9}$ अंतर दिशा २२। $\frac{2}{9}$ कृष्णपक्ष विषै जलकी वृद्धि अर शुक्ल पक्ष विषै पवनकी वृद्धिका प्रमाण हो है। पातालनिका मध्य तृतीय भाग विषै नीचे पवन ऊपरि जल है सो दिन दिन प्रति कृष्णपक्ष विषै

वनकी जायगा ज्ञ होता जाय है। अर शुक्ल पक्ष विषै जलकी जायगा पवन होता जाय है ऐसा ाव जाननां। बहुरि लवण समुद्रकी जो शिखा समभूमितैं ऊंचा जलका प्रमाण ताका अंतका जो ांच हजार योजन ताकूं पंद्रह दिननिका भाग दिएं तीनसै तेतीस योजन एक तृतीय भाग आया ी लवण समुद्रकी शिखा विषै दिन दिन प्रति जल वधनेंका प्रमाण हो है। समभूमितैं ग्यारह हार योजन ऊंचा जल है ताके ऊपरि शुक्ल पक्ष विषै इतनां इतनां जल ऊंचा चढ़ि पूर्णिमाके नि सोलह हजार योजन ऊंचा जल हो है। कृष्णपक्ष विषै तैसैं ही घटि तितनां ही आनि रहै ऐसा भाव जानना। अब इस ही अर्थकों वर्नैं हैं। पंद्रह दिननिकों तेतीस हजार तीन सै तेतीस जन एक तृतीय भाग घटनें वधनें रूप हानिचय होय तौ एक दिन कै केता होइ। ऐसैं त्रैराशिक रि समच्छेद विधानतैं अंशी ९९९९९÷३ अंश; निकों मिलाय १०००००÷३ भागहार तीनकों ाण राशि रूप पंद्रहका भाग हार करि गुणें पैंतालीस होइ १०००००÷४५ इस भागहारका ग दिएं दोय हजार दोय सै बाईस योजन भए अर अवशेष १०÷४५ कों पांचकरि अपवर्त्तन एं दोय नवमां भाग भया सो इतनां मध्य तृतीय भाग विषै दिन दिन प्रति जल पवन घटै वधै । ऐसैं ही लवण समुद्रकी शिखा विषै वा विदिशा अंतर दिशा संबंधी पातालनि विषै क्रमकरि र जलस्थानका शिखाका हानि वृद्धिका अनुक्रम जाननां॥ ८९९॥

ऐसैं हानि वृद्धि युक्त जो लवण समुद्र ताकौ भूमुख व्यास कहै है;—

पुण्णदिणे अमवासे सोलेक्कारससहस्स जलउदओ।
वासं मुहभूमीए दसयसहस्सा य वेलक्खा॥ ९००॥
पूर्णदिने अमावास्यायां षोडशैकादशसहस्रं जलोदयः।
व्यासः मुखभूम्योः दशसहस्रं च द्विलक्षं॥ ९००॥

अर्थ—पूर्णिमाके दिन तौ सोलह हजार योजन लवण समुद्र विषै जल ऊंचा हो है। बहुरि वस्याके दिन ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा हो है। भावार्थ–लवण समुद्रका मध्य भाग विषै वस्याकै दिन समभूमितैं ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा रहै है। बहुरि दिन दिन प्रति तीन तेतीस योजन अर एक तृतीय भाग प्रमाण जलकी उचाई वधै सो पूर्णिमासीकै दिन सोलह र योजन होइ तहा पीछैं दिन प्रति तितनी ही घटै ऐसैं जलकी उंचाईकी हानि वृद्धि है। रि सोलह हजार योजनकी उचाई विषै मुख व्यास दश हजार योजन है। अर भूव्यास दोय योजन है। भावार्थ–समभूमितैं उपरि सोलह हजार योजन जल ऊंचा है। तहां तिस जलकी ाईका प्रमाण दश हजार योजन है सो मुख व्यास जाननां। बहुरि समभूमि विषै दोय योजन समुद्रकी चौड़ाई है सो भूव्यास जाननां। बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई एक लाख निवै हजार योजन चौड़ाईका प्रमाण घट्या तौ पांच हजार योजनकी उचाई विषै ना घट्या ऐसै अपवर्तन करि गुणे ९५०००० अपना भागहारका भाग दिएं गुणसठि हजार सै पिचहत्तरि योजन भए। या विषै मुख व्यास दस हजार जोड़ें ग्यारह हजारकी उंचाई विषै व्यास हो है। भावार्थ—समभूमितैं ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है। तहा तिसकी

पीछै जो पिच्यार्णवे योजनका सोल्हा भागमात्र तटतैं परैं जल एक योजन ऊंचा होइ तौ दूर्ण वेदिकाका अंतराल ३०४९७६÷६१ मात्र तटतैं परैं जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक करि प्रमाण राशिरूप भागहारके छेद लब्धिकौं पलटि परस्पर गुणें ऐसा ४८७९९६१६÷५७९५ भया। इहां भागहारका भाग दिएं चौरासीनै वीस योजन अर सत्तावनसै सोलहका सत्तावनसै पिच्याणवैमा भाग ८४२०।५७१६÷५७९५ मात्र लवण समुद्रसंबंधी सूर्यानिकै निकटि लवण समुद्रका जल ऊंचा है इहां जलके बीचि सूर्यादिक विचरै हैं ऐसा जाननां ॥ ९०१ ॥

अब पातालनिका अंतरालकौं निरूपै हैं;—

मज्झिमपरिधिचउत्थं विवरमुहं तंवि मज्झमुहमद्धं ।
सयगुणपणघणहीणं तं सयछव्वीसभाजिदे विरहं ॥ ९०२ ॥
मध्यमपरिधिचतुर्थं विवरमुखं तदपि मध्यमुखार्धं ।
शतगुणपंचघनहीने तत् शतषड्विंशभाजिते विरहं ॥ ९०२ ॥

अर्थ—लवण समुद्रका मध्यम सूची व्यास तीन लाख योजन ताका स्थूल परिधि नवलाख योजन ताका चौथा भाग दोय लाख पचीस हजार योजन मात्र दिशा संबंधी एक पातालके मुखका अंतते लगाय दूसरे पातालके मुखका अंत पर्यंत क्षेत्र है। यामैं पातालका मध्य व्यास एक लाख योजन घटाएं तौ तिन पातालनिकी ऊंचाईका मध्य विषै परस्पर अंतराल एक लाख पचीस हजार योजन मात्र हो है। अर ताहीमैं पातालका मुख व्यास दश हजार योजन घटाएं तिन पातालनिकै मुखनिका बीचि अंतराल दोय लाख पंद्रह योजन मात्र हो है। बहुरि यामैं विदिशा संबंधी पातालका मुख्य [illegible] हजार योजन घटाइ अवशेष २१४००० का आधा किएं दिशा संबंधी पाताल अर विदिशा संबंधी पातालनिका मुखनिकै बीचि अंतराल एक लाख सात हजार योजन हो है। बहुरि [illegible] पांचका घन बारह हजार पांचसै तिनकौं घटाइ अवशेष ९४५०० कौं एकसौ छब्बीसका भाग दिएं दिशा विदिशा संबंधी पातालनिकै बीचि जे पाताल हैं तिनका मुखनिकै बीचि परस्पर अंतराल सातसै पचास योजन मात्र हो है ॥ ९०२ ॥

अब [illegible] समुद्रकै [illegible] जे नागकुमार देव तिनके विमाननिकी संख्याकौं तीन [illegible] कहै हैं,—

वेलंधर भुजगविमाणाण सहस्साणि बाहिरे सिहरे ।
अंते बावत्तरि अडवीसं बादालयं लवणे ॥ ९०३ ॥
वेलन्धर[illegible] [illegible] बाह्ये शिखरे ।
[illegible] [illegible] [illegible] लवणे ॥ ९०३ ॥

अर्थ— [illegible] [illegible] वेलंधर [illegible]
[illegible] हजार है ॥ ९०३ ॥
[illegible] [illegible] विमाननिकै [illegible]

दुतटादो सगसयं दुकोसअहियं च होइ सिहरादो ।
णयराणि हु गयणतले जोयणदसगुणसहस्सवासाणि ॥ ९०४ ॥
द्वितटात् सप्तशतं द्विक्रोशाधिकं च भवति शिखरात् ।
नगराणि हि गगनतले योजनदशगुणसहस्रव्यासानि ॥ ९०४ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोऊ तटनै सातसै योजन अर ताके शिखरतैं दोयकोस अधिक सातसै योजन गोहि ऊपरि जाइ आकाशविषै दश हजार योजन व्यास लीएं नगर हैं । भावार्थ—लवण समुद्रका बाह्य अर अभ्यंतर जो तट ताके ऊपरि सातसै योजन जाइ अर लवण समुद्रकै ... जल ऊंचा है ताके ऊपरि सातसै योजन अर दोय कोश जाइ वेलंधर जातिके नागकुमार ...निके नगर हैं । ए नगर आकाशविषै जलतै ऊपरि जानने । तिनका प्रत्येक व्यास दश हजार योजन मात्र जानना ॥ ९०४ ॥

आगे दिशा संबंधी पातालनिकै दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते पर्वतनिकौं अर तहां वास करते ...दिशाधिक तिनको गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

वडवामुहपहुदीणं पासदुगे पव्वदा हु एक्केक्का ।
पुव्वे कोत्थुभसेलो इय विदियो कोत्थुभासो दु ॥ ९०५ ॥
वडवामुखप्रभृतीनां पार्श्वद्वये पर्वता हि एकैका ।
पूर्वस्यां कौस्तुभशैलः इह द्वितीयः कौस्तुभासस्तु ॥ ९०५ ॥

अर्थ—वडवा मुख आदि जे दिशा संबंधी पाताल तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै एक एक पर्वत हैं । तहां पूर्वदिशा संबंधी पातालकी पूर्व दिशाविषै कौस्तुभ नामा पर्वत है बहुरि इहां दूसरा ...दिसा विषै कौस्तुभास नामा पर्वत है ॥ ९०५ ॥

तहिं तण्णामदुवाणा दक्खिणदो उदगउदगवासणगा ।
इह सिवसिवदेवसुरा संखमहासंख गिरिदु पच्छिमदो ॥ ९०६ ॥
तत्र तन्नामद्विवानौ दक्षिणद्वये उदकउदकवासनगौ ।
इह शिवशिवदेवसुरौ शंखमहाशंखौ गिरिद्वयौ पश्चिमद्वये ॥ ९०६ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिकै ऊपरि तिन पर्वतनिकै समान नामके धारक दोय व्यंतर देव वसै हैं बहुरि दक्षिण दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै उदग अर उदक वास नामा पर्वत ...तिनके ऊपरि शिव अर शिवदेवनामा व्यंतर देव वसै हैं । बहुरि पश्चिम दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै शंख अर महाशंख नामा पर्वत हैं ॥ ९०६ ॥

तम्मुदयुदवासमरा दगदगवासदिजुगलमुत्तरदो ।
लोहिदलोहिदअंका तहिं वाणा विविहवण्णणया ॥ ९०७ ॥
तत्रोदकोदवासामरौ दकदकवासाद्रियुगलमुत्तरद्वये ।
लोहितलोहितांकौ तत्र वाणा विविधवर्णनका ॥ ९०७ ॥

अर्थ— तिन पर्वतनिके ऊपरि उदक अर उदकवास नामा व्यंतर देव वसै हैं । बहुरि उत्तर ...संबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै दक अर दकवास नामा पर्वत युगल है । तिनके ऊपरि

लोहित अर लोहितांक नामा व्यंतर वसैं हैं । ते सर्व व्यंतर विविध नाना प्रकार वर्णना जो विभूषादिक ताकरि संयुक्त हैं ॥ ९०७ ॥

धवला सहस्समुग्गय सव्वणगा अद्धघडसमायारा ।
उभयतडादो गच्चा बादालसहस्समत्थंति ॥ ९०८ ॥

धवलाः सहस्रमुद्गताः सर्वनगाः अर्धघटसमाकाराः ।
उभयतटात् गत्वा द्वाचत्वारिंशत्सहस्रमासते ॥ ९०८ ॥

अर्थ—ते सर्व पर्वत धवल वर्ण हैं । अर जलतैं हजार योजन ऊंचे हैं । अर आधा घड़ाके समान इनका आकार है । बहुरि बाह्य तटतैं उरैं अर अभ्यंतर तटतैं परैं ऐसैं उभय तटतैं बियालीस हजार योजन जाइ तिष्ठे हैं ॥ ९०८ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतर जे द्वीप हैं तिनकौं अर तिनके व्यासादिककौं गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

तडदो गच्चा तेत्तियमेत्तियवासा हु विदिस अंतरगा ।
अडसोलस ते दीवा वट्टा सूरक्खचंदक्खा ॥ ९०९ ॥

तटतः गत्वा तावन्मात्रव्यासा हि विदिक्षु अंतरकाः ।
अष्टषोडश ते द्वीपा वृत्ताः सूर्याख्यचंद्राख्याः ॥ ९०९ ॥

अर्थ—उभय तटनितैं जितने ही योजन जाइ तितनेंही व्यासके धारक विदिशा अर अंतर दिशानिविषैं आठ अर सोलह सूर्य नामा अर चंद्रनामा द्वीप वृत्ताकार हैं । भावार्थ—अभ्यंतर तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं बियालीस हजार योजन जाइ बियालीस हजार योजन मात्र व्यास करि संयुक्त विदिशा अर अंतर दिशानिविषैं द्वीप । हैं । तहां च्यारयों विदिशानिके दोऊ पार्श्वनिविषैं आठ सूर्यनामा द्वीप हैं । अर दिशा विदिशानिके बीचि जे आठ अंतर दिशा तिनके दोऊ पार्श्वनिविषैं सोलह चंद्रनामा द्वीप हैं । ते सर्व द्वीप गोल आकार हैं । इहां द्वीपनाम [illegible] जानना ॥ ९०९ ॥

तडदो बारसहस्सं गंतूणिह तेत्तियुदयविस्थारो ।
गोदमदीओ चिट्ठदि वायव्वदिसम्हि वट्टुलओ ॥ ९१० ॥

तटतो द्वादशसहस्रं गत्वेह तावदुदयविस्तारः ।
गौतमद्वीपः तिष्ठति वायव्यदिशि वर्तुलः ॥ ९१० ॥

अर्थ—[illegible] लवण समुद्रके अभ्यंतर तटतैं परैं बारह हजार योजन जाइ [illegible] १२,००० [illegible] १२,००० व्यासका धारक गोल आकार लिए वायु विदिशाविषैं [illegible] [illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥ ९११ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ९११ ॥

अर्थ—ते ९ सर्व द्वीप वन अर वेदिकानि करि सहित हैं। तिनविषै बहुत वर्णना करि संयुक्त मंदिर है। बहुरि तिनही द्वीपनिके स्वामी वेलंधर जातिके नागकुमार हैं। ते अपनें अपनें द्वीपके नाम समान नामके धारक हैं ॥ ९११ ॥

मागहतिदेवदीवतिदयं संखेज्जजोयणं गत्ता ।
तीरादो दक्खिणदो उत्तरभागेवि होदित्ति ॥ ९१२ ॥
मागधत्रिदेवद्वीपत्रितयं संख्यातयोजनं गत्वा ।
तीरात् दक्षिणतः उत्तरभागेपि भवतीति ॥ ९१२ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै जो समुद्रका दक्षिण तट तातैं परैं संख्यात योजन परैं जाइ मागध अर वरतनु अर प्रभास नाम धारक जे तीन देव तिनके तिनही नाम धारक तीन द्वीप हैं। **भावार्थ**—भरत क्षेत्रकी दोय नदीके प्रवेश द्वार अर एक जंबूद्वीपका द्वार इन तीनौं द्वारनिकै सनमुख केते इक योजन जाइ मागधादिक देवनिके द्वीप हैं। इनकौं चक्रवर्ति साधै है। बहुरि तैसैही ऐरावत क्षेत्रका उत्तर भागविषै भी तीन द्वीप हैं ॥ ९१२ ॥

अब लवणोदक समुद्र कालोदक समुद्रकै अभ्यंतर तिष्ठते छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप तिनकौं कहै हैं;—

दिसिविदिसंतरगा हिमरजदाचलसिहरिरजदपणिधिगया ।
लवणदुगे पल्लठिदी कुमणुसदीवा हु छण्णउदी ॥ ९१३ ॥
दिशाविदिशांतरगाः हिमरजताचलशिखरिरजतप्रणिधिगताः ।
लवणद्विके पल्यस्थितयः कुमनुष्यद्वीपा हि षण्णवतिः ॥ ९१३ ॥

अर्थ—लवण समुद्रकी दिशानि विषै च्यारि अर विदिशानि विषै च्यारि अर दिशा विदिशानिकै बीचि जे अंतर दिशा तिन विषै आठ अर हिमवन कुलाचल भरत संबंधी वैताढ्यशिखरी कुलाचल ऐरावत संबंधी वैताढ्य इन पर्वतनिके दोऊ अंतनिकै निकटि दोय तिनके मिले हुए आठ ऐसैं सर्व मिलि लवण समुद्रका अभ्यंतर तट विषै चौईस द्वीप हैं। बहुरि बाह्य तट विषै भी ऐसैं ही चौईस हैं। मिलिकरि अठतालीस भए। ऐसैंही कालोदक समुद्रके दोऊ तटनि विषै अठतालीस द्वीप हैं। ऐसे सर्व मिलि छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप जाननें। बहुरि तहां तिष्ठते मनुष्य एक पल्य प्रमाण आयुके धारक हैं ॥ ९१३ ॥

आगैं दोऊ तटनि विषै तिनका अंतराल अर तिनका विस्तारकौं क्रम करिकहैं हैं;—

दसगुण पण्णं पण्णं पणवण्णं सट्ठिमुवहिमहिगम्म ।
सय पणवण्णं वण्ण पणुवीसं वित्थडा कमसो ॥ ९१४ ॥
दशगुण पचाशत् पचाशत् पंचपचाशत् षष्टिमुदधिमाधिगम्य ।
शतं पंचपचाशत् पचाशत् पंचविंशति विस्तार क्रमश ॥ ९१४ ॥

अर्थ—ते द्वीप क्रमतैं दस गुणा पचास अर पचास अर पचावन अर साठि योजन तटनितैं समुद्र विषै जाइ सौ पचावन पचावन पचीस योजन विस्तार संयुक्त क्रमतैं जाननें। **भावार्थ**—अभ्यंतर

तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं दिशा संबंधी द्वीप पांचसै योजन विदिशा संबंधी द्वीप पांचसै योजन अंतर दिसा संबंधी पांचसै पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती छसै योजन जाय समुद्र विषै द्वीप हैं। तहां दिशा संबंधी सौ योजन विदिशा संबंधी पचावन योजन अंतर दिशा संबंधी पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती पचीस योजन प्रमाण विस्तार धरैं गोल आकार द्वीप जानने ॥ ९१४ ॥

आगैं तिन द्वीप रूप पर्वतनिका जलतैं उपरि वा नीचैं उच्चत्व कहैं हैं;—

इगिगमणे पणणउदिमतुंगो सोलगुणमुवरि किं पयदे ।
दुगजोगे दीउदओ सवेदिया जोयणुग्गया जलदो ॥ ९१५ ॥

एकगमने पंचनवतितुंगः षोडशगुणमुपरि किं प्रकृते ।
द्विकयोगे द्वीपोदयः सवेदिका योजनोद्गता जलतः ॥ ९१५ ॥

अर्थ—इहां ऐसा जाननां सम भूमिकी बरोबरि तौ लवण समुद्रके जलका व्यास दोय लाख योजन है। अर क्रमतैं घटता घटता सम भूमितैं नीचैं एक हजार योजन ऊंडा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है अर सम भूमितैं उपरि सोलह हजार योजन ऊंचा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है सो हानिचयका प्रमाण ल्याइ जहां ए द्वीप हैं तहां सम भूमितैं नीचैंकों जो जलकी ऊंडाईका प्रमाण होइ सो तौ जलका नीचैं उच्चत्व जाननां। अर सम भूमितैं उपरि जो जलकी ऊंचाईका प्रमाण होइ सो जलका उपरि उच्चत्व जाननां सो कहिए है। सम भूमिकी बरोबरि जल व्यास दोय लाख योजन सो तो भूमि अर घटता घटता नीचैं जलव्यास दश हजार योजन सो मुख भूमिमैं मुखकों घटाइ अवशेष १९०००० कौं एक पार्श्व ग्रहण करनेकौं आधा किएं पिच्याणवै हजार योजन भए। बहुरि पिच्याणवै हजार योजनकी जलव्यास विषै हानि होतैं हजार योजन जलकी नीचैंतैं उचाई होइ तौ एक योजनकी हानि विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन गएं सम भूमितैं नीचैं जलकी उंचाईका प्रमाण एक योजनका पिच्याणवैवां भाग आया १÷९५ बहुरि तटतैं एक योजन गएं जो एक योजनका पिच्याणवैवां भाग मात्र जलकी उचाई होइ तौ पांचसै वा साढा पांचसै वा छहसै योजन तटतैं गए केती उचाई होइ। ऐसैं त्रैराशिक किएं तहां प्रमाण राशिरूप भागहारका भाग दिएं अर अवशेष छेदरूप रहे तिनका पांच करि अपवर्तन किएं तटतैं पांचसै आदि योजन गएं तहां सम भूमितैं नीचैं जलका उदय क्रमतैं पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन दोय उगणीसवां भाग अर पांच योजन पंद्रह उगणीसवां भाग अर छह योजन छह उगणीसवां भाग प्रमाण आवै है। सो दिशा संबंधी आदि द्वीपनिकै निकटि इतनां तौ सम भूमितैं नीचैं जलका उदय जाननां। ... यहु तहां इतनां ऊंडा जल है। अब सम भूमितैं उपरि जलका उदय ल्याइए है समभूमिकी बरोबरि जल व्यास दोय लाख योजन सो भूमि [illegible] योजन सो मुख भूमिमैं मुख घटाइ अवशेषको आधा [illegible] सोलह हजार योजन ऊंचाई विषै पिच्याणवै [illegible] योजनकी [illegible] विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक

किएं पिच्याणवैका सोल्हवां भाग प्रमाण आया । बहुरि तटतैं पिच्याणवैका सोल्हवां भाग मात्र जल परैं भएं एक योजन जल ऊंचा होइ तौ तटतैं एक योजन परैं भएं जल केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन परैं जल है सो सोल्हका पिच्याणवैवां भाग मात्र ऊंचा जलका प्रमाण आया । बहुरि तटतैं एक योजन परैं जल भएं सोल्ह गुणां पिच्याणवैवां भाग जल ऊंचा होइ तौ पांचसै वा साढा पांचसै वा छसै योजन तटतैं परै जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं अर पांच करि अपवर्तन किएं ऐसा । १६००–१९ १६००÷१९ १७६०÷१९ १९२०÷ १९ इहां भागहारका भाग दिएं पांचसै आदि योजन तटतैं परैं जलकी उचाई क्रमतैं चौरासी योजन च्यारि उगणीसवां भाग अर चौरासी योजन चार उगणीसवां भाग अर बाणवै योजन बारह उगणीसवां भाग अर एकसौ एक योजन एक उगणीसवां भाग मात्र जाननी । दिशा विदिशा संबंधी द्वीपनिकै निकटि समभूमितैं जल इतना ऊंचा है । बहुरि समभूमितैं नीचें अर उपरि जो जलकी उचाई ता-कौं मिलाएं जलका अवगाह प्रमाण तिस तिस द्वीपकी उचाई जाननी अर वेदिका करि रहित ते द्वीप जलतैं उपरि एक योजन ऊंचे हैं । तातै एक योजन भी जल विषै प्राप्त उचाई विषै मिलाएं । भूमि तलतैं दिशा संबंधी द्वीपनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर विदिशा संबंधीनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर अंतर दिशा संबंधीनिका निन्याणवै योजन आठ उगणीसवां भाग अर पर्वत सन्मुखनिका एक सौ आठ योजन सात उगणीसवां भाग मात्र उदय जाननां ऐसैं कह्या सर्व विधान सो कौस्तुभ आदि पर्वत द्वीपनि विषै भी जानना । तातै जितनैं योजन दूर कहे हैं ताकै अनुसारि यथा संभवतैं उचाईका वा जलकी उचाईका प्रमाण ल्यावनां ॥ ९१५ ॥

अब तिन कुभोगभूमिनि विषैं उत्पन्न मनुष्यनिकी आकृतिनिका स्थान पांच गाथानि करि कहै हैं;—

> एगुरुगा लंगुलिगा वेसणगाऽभासगा य पुव्वादी ।
> सक्कुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लंबकण्ण ससकण्णा ॥ ९१६ ॥
> एकोरुकाः लांगुलिकाः वैषाणिकाः अभाषकाः च पूर्वादिषु ।
> शष्कुलिकर्णाः कर्णप्रावरणाः लंबकर्णाः शशकर्णाः ॥ ९१६ ॥

अर्थ—एकोरुका कहिए एक ही जांघवाले अर लांगुलिका कहिए पूंछ संयुक्त अर वैषाणिका कहिए सींग युक्त अर अभाषका कहिए न बोलने वाले ऐसे ए च्यारि तौ पूर्वादिक दिशा संबंधी द्वीपनि विषैं बसै हैं । बहुरि शष्कुलिकर्णा कहिए शष्कुलि समान है कान जिनके अर कर्णप्रावरणा कहिए कान हैं वस्त्र समान [illegible] जिनके अर लंबकर्ण कहिए लांबा है कान जिनके अर [illegible] कहिए [illegible] विदिशानि विषैं [illegible]

> सिहस्ससाणमहिसवराहमुहा व[illegible]
> [illegible] । ९१७

सिंहाश्वश्वानमहिषवराहमुखाः व्याघ्रघूककपिवदनाः ।
हस्तकर्णगोमुखमेषमुखाः विद्युद्दर्पणेभवदनाः ॥ ९१७ ॥

अर्थ—नाहर घोड़ा कुत्ता भैंसा सूर बघेरा घूघू बांदरा समान है मुख जिनका ऐसे सिंह मुख अर अश्व मुख अर श्वानक मुख अर महिष मुख अर वराह मुख अर व्याघ्र वदन अर घूक वदन अर कपि वदन हैं । ते ए आठ भेद । बहुरि मीन काठ मींडा गऊ मेघ बीजुरी आरसी हस्ती समान है मुख जिनका ऐसे हस्त मुख अर गोमुख अर मेष मुख अर विद्युद्वदन अर दर्पण वदन अर इभ वदन हैं तेऊ आठ भेद । इहां विशेष कहा आकारनि अन्य सर्व आकार मनुष्यवत् जानने ॥ ९१७ ॥

अग्गिदिसादी सक्कुलिकण्णादी सिंहवदणणरपमुहा ।
एगूरुगसक्कुलिमुहिपहुदीणं अंतरे णेया ॥ ९१८ ॥

अग्निदिशादिषु शष्कुलिकर्णादयः सिंहवदननरप्रमुखाः ।
एकोरुकशष्कुलिमुखिप्रभृतीनां अंतरे ज्ञेयाः ॥ ९१८ ॥

अर्थ—अग्निदिशादिक जे विदिशा तिन विषै क्रमतैं शष्कुलि कर्ण आदि बसै है । बहुरि सिंह वदन मुख मनुष्य आदि आठ क्रमतैं एकोरुक शष्कुलिकर्णनिका अंतरालादि आठ अंतरनि विषै बसै हैं ऐसे जानने ॥ ९१८ ॥

हिमवंतयंतपणिधी पुव्वावरदिसासु पुव्वदिसे ।
[illegible] पच्छिमभागे भणंति ते कमसो ॥ ९१९ ॥

हिमवत्पर्यन्तप्रणिधौ पूर्वापरदिशासु पूर्वदिशि ।
[illegible] पश्चिमभागे भाषन्ते ते क्रमशः ॥ ९१९ ॥

अर्थ—[illegible] आदि [illegible] पूर्व दिशा विषै [illegible] ॥ ९१९ ॥

[illegible] सुराण [illegible] विज [illegible] ।
[illegible] ॥ ९२० ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ९२० ॥

अर्थ—[illegible] ॥ ९२० ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ९२१ ॥

चतुर्विंशं चतुर्विंशं लवणद्वितीययोः कालोदिनदयोरपि ।

द्वीपाः तावदंतरव्यासाः कुनरा अपि सन्नामानः ॥ ९२१ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोय तीरनि विषैं चौबीस चौबीस द्वीप हैं। बहुरि कालोदक समुद्रके दोय तटनि विषै भी चौबीस चौबीस द्वीप हैं। इहां दिशा विदिशा अंतर दिशा संबंधी द्वीप तौ समुद्र तीरनिकी दिशा विदिशा अंतरदिशानि विषै हैं ही। बहुरि पर्वत संबंधी द्वीप लवण समुद्रके अभ्यंतर तट विषैं तौ जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनिके दोऊ अंतनिविषैं स्थित हैं। अर लवण समुद्रके बाह्य तट विषै अर कालोदकके अभ्यंतर तट विषै धातुकी खंड संबंधी पर्वतनिका एक एक अंत विषैं स्थित हैं ऐसा जानना। बहुरि द्वीपनिका तटतैं अंतराल अर व्यास लवण समुद्रवत् तितने ही कालोदक प्रमाण जानने। बहुरि तिन द्वीपनि विषैं बसते कुमनुष्य भी तिस तिस द्वीप नाम समान हैं नाम जिनका ऐसे हैं ॥ ९२१ ॥

आगैं तिन कुभोग भूमि रूप कुमनुष्यनिके द्वीपनि विषै जे उपजै हैं तिनकौं गाथा तीन करि कहै हैं;—

जिणलिंगे मायावी जोइसमंतोवजीवि धणकंखा ।

अइगउरवसण्णजुदा करंति जे परविवाहंपि ॥ ९२२ ॥

जिनलिंगे मायाविनो ज्योतिर्मंत्रोपजीविनः धनकांक्षिणः ।

अतिगारवसंज्ञायुताः कुर्वंति ये परविवाहमपि ॥ ९२२ ॥

अर्थ—जे जीव जिन लिंग धारि तिस जिन लिंग विषै कपट संयुक्त मायावी हैं। वा जिन लिंग विषै ज्योतिष मंत्र वैद्य आदि करि आहारादिरूप करि आजीविका करै हैं। वा जिन लिंग विषै धन चाहैं हैं। वा जिन लिंग विषै ऋद्धि रस साता रूप गारव करि संयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषैं आहार भय मैथुन परिग्रहरूप संज्ञानि करि संयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषैं अन्य [illegible] परस्पर विधि मिलाइ विवाह करै हैं ॥ ९२२ ॥

दंसणविराहिया जे दोसं णालोचयंति दूसणगा ।

पंचग्गितवा मिच्छा मोणं परिहरिय भुंजंति ॥ ९२३ ॥

दर्शनविराधका ये दोषं नालोचयंति दूषणकाः ।

पंचाग्नितपसः मिथ्या मौनं परिहृत्य भुंजते ॥ ९२३ ॥

अर्थ—जे जिन लिंग विषैं सम्यग्दर्शनके विराधक हैं। जे जिन लिंग विषैं [illegible] दूषणकौं गुरुनिकै निकटि आलोचना न करै हैं। जे जिन लिंग विषैं [illegible] [illegible] जे मिथ्यादृष्टि [illegible] करै हैं [illegible]

[illegible]

[illegible]

अर्थ—खोटे भावकरि वा अपवित्रताकरि वा मृतादिकका सूतक करि वा पुष्पवती स्त्रीका संसर्ग करि वा परस्पर विपरीत कुलनिका मिलनें रूप जो जातिसंकर ताको आदि दैकरि संयुक्त दान करै हैं। बहुरि जे कुपात्रनि विषै दान करै हैं ते ए जीव कुमनुष्यनि विषै उपजै हैं जातैं ए जीव मिथ्यात्व पाप सहित किंचित पुण्य उपार्जन करै हैं ॥ ९२४ ॥

अब धातुकी खंड अर पुष्करार्ध द्वीपनि विषै रचना विषैका एक विधान है तातैं आगै करिए हैं जे क्षेत्र तिनके विभागकौं कारण भूत ऐसे जे तिन द्वीपनिके दोऊ पार्श्वनि विषै तिष्ठे इष्वाकार पर्वतनिकौं कहै हैं;—

चउग्गिसुगारा हेमा चउकूड सहस्सवास णिसहुदया ।
सगदीववासदीहा इगिइगिवसदी हु दक्खिणुत्तरदो ॥ ९२५ ॥

चतुरिष्वाकारा हेमाः चतुःकूटाः सहस्रव्यासा निषधोदयाः ।
स्वकद्वीपव्यासदीर्घा एकैकवसतयः हि दक्षिणोत्तरतः ॥ ९२५ ॥

अर्थ—धातकी अर पुष्करार्ध विषै मिलाए हुए चारि इष्वाकार पर्वत हैं ते सुवर्ण मय हैं। अर च्यारि च्यारि कूटनि करि युक्त हैं पूर्व पश्चिम विषै हजार योजन चौडे हैं। निषध कुलाचल समान च्यारिसै योजन ऊंचे हैं। दक्षिण उत्तर विषै अपनें अपनें द्वीपका व्यास समान च्यारि व आठ लाख योजन लंबे हैं। एक एक क्षेत्रादि रचना रूप वसती लीए हैं। ऐसैं इष्वाकार तिन दोऊ द्वीपनिकी दक्षिण अर उत्तर दिसानि विषै तिष्ठै हैं ॥ ९२५ ॥

आगैं तिन दोऊ द्वीपनि विषै तिष्ठते कुलाचल आदि तिनका स्वरूप निरूपै हैं;—

कुलगिरिवक्खारणदीदहवणकुंडाणि पुक्खरदलोत्ति ।
ओवेहुस्सेहसमा दुगुणा दुगुणा दु वित्थिण्णा ॥ ९२६ ॥

कुलगिरिवक्षारनदीद्रहवनकुंडानि पुष्करदल इति ।
अवगाधोत्सेधसमा द्विगुणा द्विगुणाः तु विस्तीर्णाः ॥ ९२६ ॥

अर्थ—धातकी खंडतैं लगाय पुष्करार्ध पर्यंत तिस एक एक द्वीप विषै तिष्ठते दोऊ मेरु संबंधी कुलाचल बारह बहुरि गजदंतनि करि सहित वक्षार चालीस बहुरि गंगा सिंधु आदि अर विभंगा अर रक्तादि विदेह संबंधी दोय दोय मिलाई हुई नदी एकसौ असी। बहुरि कुलाचलनिकै उपरि तिष्ठते अर भोग भूमि भद्रसालनिकै मध्य तिष्ठते मिले हुए द्रह बावन बहुरि दीर्घ नदी आदिनिके पर्वत विषै तिष्ठते वन संख्याते अर गंगादिकनिके पडनेके अर विभंगा विदेह नदीनिके उपजनेके मिले हुए कुंड एकसौ असी ए सर्व ऊंडाई ऊंचाई इत्यादि करि तौ जंबूद्वीप विषै तिष्ठते कुलाचल आदिकनिकै समान जाननें। अर इनका विस्तार जो चौडाईका प्रमाण सो जंबूद्वीप संबंधीनितैं दूणे दूणे है। जंबूद्वीप संबंधी कुलाचलादिकनिका विस्तार तौ धातुकी खंड संबंधीनिका दूणा है। धातकी खंड संबंधीनितैं पुष्करार्द्ध संबंधीनिका दूणा है ॥ ९२६ ॥

आगैं इहां [illegible] मेरु अर कुलाचलनिके आकारकौं निरूपै हैं;—

मयदुंदणिभा वस्सा दिवड्ढदीवम्हि तत्थ संसाओ ।
अत्र [illegible] ॥ ९२७ ॥

[illegible]निभा: [illegible] [illegible] तत्र [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible]वा बहिः ॥ ९२७ ॥

अर्थ—[illegible] जो धातकी खंड अर आधा पुष्कर [illegible] द्वीपविषै जे क्षेत्र ते तौ शकटो-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समान जानने अर तहां [illegible] जे कुलाचल ते अभ्यंतरविषै तौ [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] कहिए है। सो इनका आकार ऐसा जानना। इहां धातकी [illegible] पुष्करार्द्धकी रचना ऐसी जाननी ॥ ९२७ ॥

आगे धातकी खंड पुष्करार्द्धनि विषै पर्वतनिके क्षेत्रादिकका आकारकी रचना करि रोक्या हुआ क्षेत्रकी [illegible] [illegible] [illegible] कहैं हैं;—

दुगघउसहट्टसगइगि दुकला चउरट्ठछपंचपणतिण्णि ।
चउरस्समगउणतीसा जाणादिममज्झचरिमपरिहिं च ॥ ९२८ ॥
[illegible] [illegible] द्विकले चतुरष्टषट्पंचपंचत्रीणि ।
[illegible] जानीहि आदिममध्यचरमपरिधीन् च ॥ ९२८ ॥

अर्थ—दोय च्यारि आठ आठ सात एक इनके अंकनि करि एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै [illegible] योजन अर एक योजनके उगणीस भागनिविषै दोय कला इतना तौ धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि च्यारि आठ छह पांच पांच तीन इनके अंकनि करि पैंतीस लाख पचावन हजार छसै चौरासी योजन अर उगणीस भागनिविषै च्यारि कला इतना पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि तिन द्वीपनिविषै भरतादि क्षेत्रनिका व्यास जाननेंके अर्थि तिनकी आदि परिधि मध्य परिधि बाह्य परिधि है तिन्ह तू जानि। इहां पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र [illegible] विधानको प्रगट करै है। धातकी खंडविषै क्षेत्रनिका विस्तार तौ विषमरूप है। अर पर्वतनिका विस्तार जंबूद्वीप संबंधीनितै दूणा ही है। तातैं जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र करि इन द्वीपसंबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहिए है। भरत आदि क्षेत्रनिकी शलाका तौ क्रमतै एक च्यारि सोलह चौसठि सोलह च्यारि एक सो मिलाई हुई एकसौ छह भई अर हिमवन आदि पर्वतनिकी शलाका क्रमतैं दोय आठ बत्तीस आठ दोय सो मिलाई हुई चौरासी हुई [illegible] सर्व पर्वत सर्व क्षेत्रनिकी शलाका मिलाइए सो मिश्र शलाका कहिए है। सो मिश्र शलाका [illegible] निवै भई। प्रकृतिविषै शलाकाका नाम त्रिसवा है। ऐसैं इन एकसौ निवै मिश्र शलाकानिका [illegible] पर्वतनिका मिल्या हुवा क्षेत्र एक लाख योजन होइ तौ क्षेत्र रहित शुद्ध पर्वत शलाका चौरासी [illegible] कैसा क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक किए जंबूद्वीपविषै पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र चौरासी गुणा [illegible] [illegible] एकसौ निवका भाग दीजिए इतना भया १ ल ८४–१९० बहुरि एक शलाका [illegible] धातकी खंडविषै दूणा विस्तार होइ तो इतने १ ल ८४–१९० शलाका क्षेत्रका कितना [illegible] ऐसैं त्रैराशिक [illegible] [illegible] दूणा [illegible] खंडका एक मेरु संबंधी एक भागविषै पर्वतनि करि [illegible] हुवा [illegible] [illegible] १९० आया। बहुरि एक भागविषै इतना २ ल ८४–१९० [illegible] है तौ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कैता होइ ऐसैं त्रैराशिक किए तातैं दूणा ऐसा

अभ्यंतर आयाम पांच लाख नव हजार पांचसै सत्तरि योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै दोयसै अंश प्रमाण हो है ॥ ९३१ ॥

अब कछादिक देशनिका मध्यविषै आयाम अर अंतविषै आयाम ल्यावनेंकों व्याख्यान गाथा दोय करि कहैं हैं;—

विजयावक्खाराणं विभंगणदिदेवरण्ण परिहीओ ।
विण्णिसयवारभजिदा वत्तीसगुणा तहिं वड्ढी ॥ ९३२ ॥

विजयवक्षाराणां विभंगनदीदेवारण्यानां परिधयः ।
द्विशतद्वादशभक्ता द्वात्रिंशद्गुणा तस्मिन् वृद्धयः ॥ ९३२ ॥

अर्थ—विदेहनिके देश अर वक्षार पर्वत अर विभंगा नदी अर देवारण्य वन इन च्यारिनिके जे परिधि तिनकों बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं तहां तहां आयामविषै वृद्धिका प्रमाण हो है ॥ ९३२ ॥

सगसगवड्ढी णियणियपढमायामम्हि संजुदा मज्झे ।
दीहो पुणरवि सहिदो तिरिए णियचरिमदीहत्तं ॥ ९३३ ॥

स्वस्वकवृद्धयः निजनिजप्रथमायामे संयुता मध्ये ।
दीर्घः पुनरपि सहितः तिर्यक् निजचरमदीर्घत्वम् ॥ ९३३ ॥

अर्थ—देश आदि कहे जे च्यारि तिनका अपनां अपनां आयामविषै जो जो वृद्धिका प्रमाण ताकों आप आपकै पहलै जो था ताका आयामविषै जोडैं अपना अपना मध्यविषै आयाम प्रमाण हो है। बहुरि तिस तिस मध्य आयामविषै वृद्धिप्रमाण जोडैं तहां तहां अपनां अंतविषै आयाम प्रमाण हो है। सो इन दोऊ गाथानिके अर्थकों वर्णै हैं। धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन तामैं मेरु अर दोय भद्रसालनिका व्यास दोय लाख पचीस हजार एकसो अठावन योजन घटाएं विदेहका भद्रशालनिकै परै पूर्व पश्चिम विषै अंतका क्षेत्र एक लाख बहौतरि हजार आठसै बियालीस योजन प्रमाण हो है। याकों आधा किएं एक तरफका आधा अंतरौ छियासी हजार च्यारिसै इकईस योजन प्रमाण हो है। पूर्व पश्चिम विषै भद्रसालकी वेदीतै दी समुद्र पर्यंत लंबा विदेहनिका इतनां क्षेत्र है यामैं च्यारि वक्षारनिका व्यास च्यारि हजार योजन अर तीन विभंगा नदीनिका व्यास साडा सातसै योजन अर देवारण्यका व्यास अठावनसै चवालीस योजन इनकों मिलाइ १०५९४ घटाएं अवशेष छिहत्तरि हजार आठसै सत्ताईस योजन प्रमाण विदेहका एक तरफ पर्वतादि रहित देश संबंधी शुद्ध क्षेत्रका व्यास हो है। याकों च्यारि बहुरि आठ देशनिका शुद्ध क्षेत्र इतना ७६८२७ भया तौ एक देशका कितनां होइ। ऐसैं त्रैराशिक किएं कछा नामा देशका पूर्व पश्चिमविषै व्यास नव हजार छसै तीस योजन अर योजनके तीन भाग [illegible] प्रमाण हो है। [illegible] समच्छेद करि अंश असी मिलाएं छिहत्तरि हजार आठसै सत्त[illegible] [illegible] विष्कंभवर्गदशगुण इत्यादि करण सूत्र करि करणि रूप तीनि [illegible] भया। याका [illegible] करें पृथ्वी २४२१९८८८ भया।

इहां भागहारका भाग दिएं कछा देशके व्यासका परिधि तीस हजार तीनसैं अडसठि योजन अर आधा योजन प्रमाण भया। इहां अंश अशीनिकौं समच्छेद करि मिलाएं साठि हजार सातसैं सैंतीसका आधा ६०७३७÷२ भया। बहुरि धातकी खंडका एक भाग विषै कछा देशका व्यासकी इतनां ६०७३७÷२ परिधि भया तौ दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिका केता होइ ऐसैं ताकौं दोय करि गुणें ऐसा ६०७-३७।२÷२ भया। बहुरि पीछैं पर्वतनिका तौ समान व्यास है तातैं वृद्धिका अभाव जानि पर्वतनिकी एकसौ अडसठि शलाकानिकौं धातकी खंडकी सर्व मिश्र शलाका तीनसै असीनिमैं घटाइ अवशेष क्षेत्र शलाका दोयसै बारह रही सो दोयसै बारह शलाकानिका पूर्वोक्त ऐसा ६०७३७।२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२।२१२ विदेहका सर्व वृद्धि क्षेत्र प्रमाण भया। बहुरि नदीनिका दक्षिण उत्तर तट रूप दोय प्रांतनिविषै इतनां ६०७३७।२।६४÷२१२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ एक प्रांत विषै कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिककरि ताकौं दोयका भाग दिएं भद्रशालकी वेदीका आयामतैं कछा देशका अंत विषै आयामका वृद्धि प्रमाण क्षेत्र ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। बहुरि मुखभूमिसमासार्द्ध मध्यफलं इस न्यायकरि आदितैं अंत विषै वृद्धिका जो यहु प्रमाण भया ताकौं आधा करनेंकौं दोयका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। इहां यथा योग्य अपवर्तन किएं साठि हजार सातसै सैंतीसका आधा प्रमाण जो कछा देशके व्यासका परिधि ताकौं बत्तीस करि गुणिए अर दोयसै बारहका भाग दीजिए इतनां ६०७३७।३२÷२१२।२ वृद्धिका प्रमाण आया याप्रकार गाथा विषै कह्या जो देशके व्यासका परिधिकौं बत्तीस गुणा करि दोयसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण होइ सो सिद्ध भया। बहुरि इस कछा देशका वृद्धिप्रमाणविषै बत्तीसका गुणकारकौं दोयका भागहारकरि अपवर्तन किएं सोलहका गुणकार भया ताकरि गुणें ऐसा ९७१७९२÷२१२ इहां भागहारका भाग दिएं देश संबंधी वृद्धि क्षेत्र पैंतालीससै निवासी योजन अर दोयसै बारह अंशनि विषै एकसौ छिनवै अंश प्रमाण आया। याकौं भद्रशालका अंत आयाम समान जो पूर्वोक्त कछा देशका अभ्यंतर आयाम ऐसा ५०९५७०।२००÷२१२ ताविषै जोडें कछा देशका मध्य विषै आयाम पांचलाख चौदह हजार एकसौ चौवन योजन अर एकसौ चौरासी अंश प्रमाण हो है। बहुरि याविषै पूर्वोक्त देश संबंधी क्षेत्र वृद्धि प्रमाण जोडें पांचलाख अठारह हजार सातसै अडतीस योजन अर एकसौ अडसठि अंश प्रमाण कछा देशका अंत विषै आयाम हो है। बहुरि अब बखार पर्वतका व्यास हजार योजन ताका विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणिरूप परिधि किएं ऐसा १०००००० ताका वर्गमूल करें बखार व्यासका परिधि इकतीससै बासठि योजन भया। बहुरि एक भाग विषै इतनां ३१६२ परिधि भया तौ दोय भाग विषै कितनां होइ ऐसैं ताका दुणां भया ३१६२।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका ऐसा ३१६२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ विदेहकी चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं विदेह विषै प्राप्त परिधिका वृद्धि क्षेत्र ऐसा ३१६२।२।६४÷२१२ भया। बहुरि नदीके तट रूप दोय प्रांत क्षेत्र विषै इतनां ३१६२।२।६४÷२१२ भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं किएं केता

ऐसा ५२८९८० । ९६-२१२ याकों विभंगाका वृद्धि प्रमाण जोड़े विभंगाका अंत विषै आयाम ऐसा ५२९०९९ । १४८-२१२ याकों यों महा कछा आदि देशनिका आयाम अर वक्षारनिका आयाम अर विभंगानिका आयाम पूर्व पूर्व विषै अपना अपना वृद्धि क्षेत्र जोड़नेंकरि ल्यावनें। बहुरि देवारण्यका व्यास अठावनसैं चवालीस योजन ताका विष्कंभ वग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणि रूप परिधि ऐसा ३४१५२३३६० याका वर्गमूल ग्रहें देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजन प्रमाण हो है। बहुरि द्वीपका एक भाग विषै इतना १८४८० क्षेत्र भया तौ दोऊ भागनि विषै केता होइ ऐसैं ताकौ दूणा करनां १८४८०।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका इतनां १८४८०।२ क्षेत्र होइ तौ चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं ताकौं चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं विदेह क्षेत्र विषै प्राप्त देवारण्यका वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ऐसा १८४८०। २।६४÷२१२ बहुरि नदीके तट रूप दोऊ प्रांतनिविषै इतनां १८४८०।२।६४÷२१२ वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं ताकौं दोयका भाग दिएं ऐसा १८४८०। २।६४÷२१२।२ देवारण्यका आदितैं अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया। बहुरि मुखभूमिसमासार्द्ध मध्यफल इस न्यायकरि ताका आधा किएं ऐसा १८४८०।२।६४÷२१२।२।२ इहां यथायोग्य अपवर्तन किएं देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसैं असी योजनकौं बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण गाथोक्त सिद्ध भया। इहां गुणकार बत्तीस करि गुणें ऐसा ५९१३६० ÷ २१२ भागहारका भाग दिएं सताईससै नित्यासी योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै बावनै अंश प्रमाण देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया। बहुरि पुष्कलावती नामा देशका जो बाह्य आयाम सोई देवारण्यवनका आदि आयाम पांच लाख सित्यासी हजार च्यारिसै सैंतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै सौ। अंश प्रमाण । इस प्रमाण ल्यावनेका विधान कहैं हैं। नदीका एक तट विषै आठ देश च्यारि वक्षार तीन विभंगा हैं। बहुरि आदितैं मध्य विषै अर मध्यतैं अंत विषै ऐसैं एक एक विषै दोय दोय बार अपना अपना वृद्धि प्रमाण बधै है तातैं देश वृद्धिका प्रमाण ऐसा ४५८३।१९६ ÷ २१२ याकौं सोलह करि गुणें ऐसा ७३३२८ । ३१३६ ÷ २१२। बहुरि वक्षार वृद्धिका प्रमाण ऐसा ७७।६० ÷ २१२ याकौं आठ करि गुणें ऐसा १८१६।४८० ÷ २१२ बहुरि विभंगा वृद्धि प्रमाण ऐसा ११९।५२ ÷ २१२ याकौं छह करि गुणें ऐसा ७१४।३१२ ÷ २१२ इहां जे अंश हैं तिन सर्व अंशनिकौं जोड़ि तिनमें कछा देशका आदि आयाम विषै जे दोयसै अंश कहे थे तिनकौ जोड़ें सर्व अंश इकतालीससै अठाईस भए इनकौं दोयसै बारहका भाग दिएं उगणीस योजन पाए अर अब शेष सौ अंश रहे। तातैं देवारण्यका आदि आयाम विषै सौ तौ अंश जानने। बहुरि उगणीस तौ ए योजन अर वृद्धिनिके योजन अर कछा देशका आदि आयामके पांच लाख च्याणवैसै सत्तरि योजन इन सबनिकौं जोड़ें देवारण्यका आदि आयाम विषै पाच लाख सित्यासी हजार च्यारिसैं सैंतालीस योजन जानने। बहुरि इस देवारण्यका आदि आयाम विषै ५८७४४७। १०० ÷ २१२ देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र ऐसा २७८९।९२÷२१२ जोड़ें देवारण्यका मध्य

आयाम ऐसा ५९०२३६।१९२÷२१२ पावै बहुरि तिस देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र जोरे कालोद समुद्रकै निकटि देवारण्यका बाह्य आयाम ऐसा ५९३०२६।७२ ÷ २१२ हो है। इस प्रकार जैसैं सीता नदीका उत्तर तट विषै वर्णन किया तैसैं ही सीताका दक्षिण तट विषै देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिका व्यास अर परिधि अर वृद्धिक्षेत्र अर आयाम तहां तहां ल्यावै। बहुरि जैसैं यहु मेरुकी पूर्व दिशा विषै अधिक अधिक अनुक्रम करि कथन किया है तैसैं मेरुकी पश्चिम दिशा विषै भद्रसालतैं हीन हीन अनुक्रमकरि वर्णन जानना। तहां हानि प्रमाण पूर्वोक्त प्रमाणवत् जानना। बहुरि याही प्रकार पुष्करार्ध विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिके पर्यंत व्यासनिका परिधि ल्याइ द्वीपका दोऊ भागनिके ग्रहण निमित्ति गुणकार दोय करि गुणै दोयमैं बारह क्षेत्र शलाकाका भाग देइ चौसठि विदेह शलाकाका भाग देइ लब्ध प्रमाण विदेह वृद्धि क्षेत्र ताकौं दोयका भाग दिएं जो एक प्रांत संबंधी वृद्धि क्षेत्र भया ताकौं गुणचूर्णि [illegible] इस न्याय करि आधाकरि अपवर्तनकरि तहां तहां, लब्ध मात्र वृद्धि क्षेत्रका प्रमाण जानना। ताकौं अपना अपना आदि आयाम विषै जोडैं अपना अपना मध्य आयाम हो है। बहुरि अपना अपना मध्य आयाम विषै अपना अपना वृद्धि क्षेत्र जोडैं अपना अपना बाह्य आयाम हो है। बहुरि पूर्व पूर्वका बाह्य आयाम सोई उत्तर उत्तरका आदि आयाम जानना। मेरुकी पश्चिम दिशा विषै हीन क्रम जानना ॥ ९२३ ॥

आगै धातुकी खंड पुष्कर द्वीपनि विषै किछु विशेष [illegible] गाथा दोयकरि कहै हैं—

धादइपुक्खरदीवा धादइपुक्खरतरूहिं संजुत्ता ।
णेमिं व वण्णणा पुण जंबूदुमवण्णणं व हवे ॥ ९२४ ॥

धातकीपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करतरुभ्यां संयुक्तौ ।
नेमिः च वर्णना पुनः जंबूद्रुमवर्णना इव भवेत् ॥ ९२४ ॥

अर्थ—धातकी खंड द्वीप अर पुष्कर द्वीप क्रमतैं धातकी वृक्ष अर पुष्कर वृक्ष करि संयुक्त है। बहुरि तिन वृक्षनिका वर्णन जंबूद्वीप विषै जैसैं जंबू वृक्षका कहा तैसैं जानना ॥ ९२४ ॥

मन्दरगंगासिन्धू हिमगिरिहिमगोवारि [illegible] आदि ।
[illegible] मेरु वा पुक्खरे दुगुणं ॥ ९२५ ॥

[illegible] ।
[illegible] मेरु वा पुष्करे द्विगुणं ॥ ९२५ ॥

अर्थ—[illegible]

ऐसैं पुष्करार्द्ध पर्यंत जो मनुष्यलोक ताका व्याख्यान करि यातैं बाह्य जो तिर्यग्लोक ताकौं प्रतिपादन करत संता ही प्रथम ही मनुष्यलोक वा तिर्यग्लोक विषै तिष्ठते पर्वत अर समुद्र तिनका अवगाहकों जनावै है;—

मेरुणरलोयबाहिरसेलोगाढं सहस्सपरिमाणं।
सेसाणं सगतुरियं सव्वुवहीणं सहस्सं तु॥ ९३६॥
मेरुनरलोकबाह्यशैलावगाधं सहस्रपरिमाणं।
शेषाणां स्वकतुर्यं सर्वोदधीनां सहस्रं तु॥ ९३६॥

अर्थ—मेरु गिरिनिका अर मानुषोत्तर विना सर्व मनुष्य लोककै बाह्य तिष्ठते जे पर्वत तिनका तौ अवगाध हजार योजन प्रमाण माननां। बहुरि मनुष्य लोककै अभ्यंतर तिष्ठते जे अवशेष हिमवत आदि पर्वत तिनका अवगाध अपनें अपनें उचाईका प्रमाणकै चौथा भाग प्रमाण जाननां। इहां जैसैं मंदिरकैं नींव हो है तैसैं पृथ्वीकै मध्य जो टंडाई ताका नाम अवगाध जाननां। बहुरि सर्व जे समुद्र तिनका अवगाध जो ढंडाईका प्रमाण सो हजार योजन जानहु। तहां लवण समुद्र विषै आदि मध्य अंत विषै विशेष पूर्वै कह्या है सो जाननां। अन्य समुद्र सर्वत्र समान अवगाह युक्त हैं॥ ९३६॥

अब मानुषोत्तर पर्वतका स्वरूप गाथा तीन करि कहै हैं;—

अंते टंकच्छिण्णो बाहिं कमवड्ढिहाणि कणयणिहो।
णदिणिग्गमपहचोद्दसगुहाजुदो माणुसुत्तरगो॥ ९३७॥
अंतः टंकच्छिन्नो बाह्ये क्रमवृद्धिहानिकः कनकनिभः।
नदीनिर्गमपथचतुर्दशगुहायुतः मानुषोत्तरः॥ ९३७॥

अर्थ—पुष्कर द्वीपकै मध्य मानुषोत्तर नामा पर्वत तिष्ठै है। सो अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ तौ टंकछिन्न है। नीचैंनैं लगाय उपरि पर्यंत भी भित्ति समान एकसा है। बहुरि बाह्य तिर्यक लोककी तरफ शिखरतैं लगाय क्रमतैं बधता अर मूलतैं लगाय क्रमनैं घटता है। ताका आकार ऐसा जाननां। बहुरि सो मानुषोत्तर पर्वत सुवर्ण सारिखा वर्णयुक्त है। बहुरि नदी निकसनेंके मार्ग ऐसे चौदह गुहा द्वार तिन करि युक्त है। भावार्थ—मानुषोत्तरकै चौदह गुफारूप द्वार हैं। तिन द्वारनि करि चौदह महा नदी निकसि बाह्य जाय हैं। ऐसा मानुषोत्तर जाननां॥ ९३७॥

मणुसुत्तरुदयभूमुहमिगिवीसं सगसयं सहस्सं च।
बावीसहियसहस्सं चउवीसं चउसयं कमसो॥ ९३८॥
मानुषोत्तरोदयभूमुखमेकविंशं सप्तशतं सहस्रं च।
द्वाविंशाधिकसहस्रं चतुर्विंशति चतुःशतं क्रमशः॥ ९३८॥

अर्थ— मानुषोत्तर पर्वतका १७२१ जो उचाई सो इकईस अधिक सातसै युक्त एक हजार योजन प्रमाण है। १७२१। बहुरि भू [illegible] जो [illegible] चौड़ाई सो बाईस अधिक एक हजार योजन प्रमाण है।१०२२। बहुरि [illegible] चौड़ाई सो चौईस अधिक [illegible] योजन प्रमाण है ४२४॥ ९३८॥

तण्णगसिहरे वेदी चावाणं चदुसहस्सतुंगजुदा ।
सोहइ वलयायारा चरणण्णिदकोसवित्थारा ॥ ९३९ ॥
तन्नगशिखरे वेदी चापानां चतुःसहस्रतुंगयुता ।
शोभते बलयाकारा चरणान्वितक्रोशविस्तारा ॥ ९३९ ॥

अर्थ—तिस मानुषोत्तरका शिखर विषै उपरि च्यारि हजार धनुष उचाई करि युक्त अर सवा कोस चौडी ऐसी जैसैं पर्वत वलयाकार है तैसें ताके उपरि वलयाकार वेदी सोभै है॥९३९॥

आगैं इस पर्वत उपरि तिष्टते कूटनिकों कहै हैं;—

णइरिदिवायव्वदिसं वज्जिय छस्सुवि दिसासु कूडाणि ।
तियतियमावलियाए ताणब्भंतरदिसासु चउवसई ॥ ९४० ॥
नैर्ऋतिवायव्यदिशं वर्जयित्वा षट्स्वपि दिशासु कूटानि ।
त्रिकत्रिकमावल्या तेषामभ्यंतरदिशासु चतुष्कवसत्यः ॥ ९४० ॥

अर्थ—नैऋती अर वायवी इन दोय दिशानिकों वर्जि करि अवशेष छह दिशानि विषैं पंक्तिरूप तीन तीन कूट हैं। पर्वतकी परिधि विषै तिनकी पंक्ति जाननी। बहुरि तिन कूटनिं अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ च्यारि दिशानि विषै जिन मंदिररूप च्यारि वसतिका हैं ॥ ९४०

आगैं तिन कूटनि विषै वसते जे देव तिनकों कहै हैं;—

अग्गीसाणछकूडे गरुडकुमारा वसंति सेसे दु ।
दिग्गयबारसकूडे सुवण्णकुलदिक्कुमारीओ ॥ ९४१ ॥
अग्नीशानषट्कूटे गरुडकुमारा वसंति शेषेषु तु ।
दिग्गतद्वादशकूटेषु सुवर्णकुलदिक्कुमार्यः ॥ ९४१ ॥

अर्थ—आग्नेय दिशा अर ईशान दिशा संबंधी जे छह कूट तिन विषै तौ गरुड कुमा देव वसै हैं। बहुरि अवशेष दिशा संबंधी बारह कूट तिन विषै सुपर्ण कुमार देव अर दिक्कुमा देवांगना वसैं हैं ॥ ९४१ ॥

आगैं मानुषोत्तरका स्थानादिक कहै हैं;—

पणदाललक्खमाणुसखेत्तं परिवेढिऊण सो होदि ।
उदयचउत्थोगाढो पुक्खरविदियद्धपढमम्हि ॥ ९४२ ॥
पंचचत्वारिंशल्लक्षमानुषक्षेत्रं परिवेष्ट्य स भवति ।
उदयचतुर्थावगाधः पुष्करद्वितीयार्धप्रथमे ॥ ९४२

अर्थ—पैंतालीस लक्ष योजन व्यास प्रमाण जो मनुष्य क्षेत्र ताकों वेढि करि पुष्कर द्वीपका दूसरा आधा ताका प्रथम भाग जो आदि क्षेत्र तीह विषै मानुषोत्तर है। ताका अवगाध जो पृथ्वी विषै उंडाईका प्रमाण सो उचाईका चौथा भाग मात्र हो है। सो च्यारिसै तीस योजन अर चौथाई योजन प्रमाण जानना ॥ ९४२ ॥

आगैं कुंडल गिरि अर रुचक गिरि तिनका उदय भूव्यास मुखव्यास कहै हैं;—

कुंडलगो दसगुणिओ पणसदरिसहस्स तुंगओ रुजगे।
चउरासीदिसहस्सा सव्वत्थुभयं सुवण्णमयं ॥ ९४३ ॥
कुण्डलगो दशगुणितो पंचसप्ततिसहस्रं तुंगो रुचके।
चतुरशीतिसहस्राणि सर्वत्रोभयौ सुवर्णमयौ ॥ ९४३ ॥

अर्थ—मानुषोत्तरका भू व्यास मुख व्यासतैं कुंडल पर्वतका भू व्यास मुख व्यास दस गुणा है। भावार्थ-कुंडल गिरि मूल विषै दस हजार दोयसै बीस योजन चौड़ा है। शिखर विषै च्यारि हजार दोयसै चालीस योजन चौड़ा है। बहुरि तिस कुंडल गिरिका उचत्व प्रमाण पचहत्तरि हजार योजन है। बहुरि रुचक पर्वत सर्वत्र ऊंचाई विषै वा भूव्यास मुखव्यास विषै समानरूप चौरासी हजार योजन प्रमाण है। बहुरि ए दोऊ कुंडल गिरि अर रुचक गिरि सुवर्णमय हैं ॥ ९४३ ॥

अब कुंडल गिरिकै उपरि जे कूट तिनकों गाथा तीन करि कहै हैं;—

चउ चउ कूडा पडिदिसमिह कुंडलपव्वदस्स सिहरम्हि।
ताणब्भंतरदिग्गय चत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४४ ॥
चत्वारि चत्वारि कूटानि प्रतिदिशमिह कुंडलपर्वतस्य शिखरे।
तेषामभ्यंतरदिग्गतानि चत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४४ ॥

अर्थ—इस कुंडल पर्वतका शिखरविषै एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि कूट परिधिविषै पंक्तिरूप हैं। तिनके अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ दिशानिविषै प्राप्त च्यारि जिनेन्द्र कूट हैं। ऐसें बीस कूट हैं ॥ ९४४ ॥

वज्जं तप्पह कणयं कणयप्पह रजदकूड रजदाहं।
सुपहप्पह अंककप्पह मणिकूडं च मणिपहयं ॥ ९४५ ॥
वज्रं तत्प्रभं कनकं कनकप्रभं रजतकूटं रजताभं।
सुप्रभमहाप्रभं अंकमंकप्रभं मणिकूटं च मणिप्रभं ॥ ९४५ ॥

अर्थ—बहुरि वज्र १ वज्रप्रभ १ कनक १ कनक प्रभ १ रजतकूट १ रजताभ १ सुप्रभ १ महाप्रभ १ अंक १ अंकप्रभ १ मणिकूट १ मणिप्रभ १ ॥ ९४५ ॥

रुजगरुजगाह हिमवं मंदरमिह चारि सिद्धकूडाणि।
अवसेसि सेसि कूडे कूडवखसुरा कदावासा ॥ ९४६ ॥
रुचकरुचकाभे हिमवत् मंदिरमिह चत्वारि सिद्धकूटानि।
आसते शेषेषु कूटेषु कूटाख्यसुरा कृतावासाः ॥ ९४६ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचकाभ १ हिमवत १ मंदर १ ए सोलह कूट जानने। इनतैं अन्य च्यारि सिद्धकूट हैं। तिनविषै चैत्यालय है। अर अवशेष सोलह कूट तिनविषै कूट समान नामके धारक देव वास करते संते तिष्ठै हैं ॥ ९४६ ॥

अब रुचक पर्वतकै उपरि जे कूट तिनकों अर तहां वास करती देवांगना तिनकों अर तिनके देवांगनानिका कार्यको तेरह गाथानि करि कहै हैं,—

पुव्वादिसु पुह अट्ठ अड अंते चउ चारि चारि कूडाणि ।
रुजगे सव्वब्भंतरचत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४७ ॥
पूर्वादिषु पृथक् अष्टौ अष्टौ अंतः चतसृषु चत्वारि चत्वारि कूटानि ।
रुचके सर्वाभ्यंतरचत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४७ ॥

अर्थ—रुचक गिरिविर्षै पूर्व आदि च्यारि दिशानिविषै प्रथक् प्रथक् परिधिविषै पंकिरूप आठ आठ कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ च्यारि दिशानिविषै एक वार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर एक वार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै भी अभ्यंतर एक वार च्यारि हैं। ऐसैं एक एक दिशा विषै तीन तीन कूट ए भए ऐसैं चवालीस कूट भए। बहुरि तिन सबनिकै अभ्यंतर वर्ती जे च्यारि कूट कहे ते जिनेन्द्र कूट हैं। चैत्यालय युक्त हैं। इनिका ऐसैं स्व जाननां ॥ ९४७ ॥

कणयं कंचण तवणं सोत्थियकूडं सुभद्दमंजणयं ।
अंजणमूलं वज्जं तत्थेदा दिक्कुमारीओ ॥ ९४८ ॥
कनकं कांचनं तपनं स्वस्तिककूटं सुभद्रमंजनकं ।
अंजनमूलं वज्रं तत्रैता दिक्कुमार्यः ॥ ९४८ ॥

अर्थ—कनक १ कांचन १ तपन १ स्वस्तिककूट १ सुभद्र १ अंजनक १ अंजन मूल १ वज्र १ ए पूर्व दिशाविषै आठ कूट हैं। तहां ए आगैं कहिए हैं दिक्कुमारी ते बसै हैं ॥ ९४८ ॥

विजयाय वइजयंती जयंति अवराजिदाय णंदेति ।
णंदवदी णंदुत्तर णामातो णंदिसेणेत्ति ॥ ९४९ ॥
विजया वैजयंती जयंती अपराजिता नंदा इति ।
नंदवती नंदोत्तरा नाम्न्यो नंदिषेणा इति ॥ ९४९ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंती १ अपराजिता १ नंदा १ नंदवती १ नंदोत्तरा १ नंदिषेणा ए आठ दिक्कुमारीनिकी देवांगना वसैं हैं ॥ ९४९ ॥

फलिह रजदं य कुमुदं णलिणं पउमं ससीय वेसवणं ।
वेलुरियं देवीओ इच्छापहमा समाहारा ॥ ९५० ॥
स्फटिकं रजतं वा कुमुदं नलिनं पद्मं शशी वैश्रवणं ।
वैडूर्यं देव्यः इच्छाप्रथमा समाहारा ॥ ९५० ॥

अर्थ—स्फटिक १ रजत १ कुमुद १ नलिन १ पद्म १ शशि १ वैश्रवण १ वैडूर्य १ ए आठ दक्षिण दिशाविषै कूट हैं। इनिविषै वास करनी देवांगना कहिए है। इच्छा १ समाहारा १ ॥ ९५० ॥

सुपइण्णाय जसोहर लच्छी सेसवदि चित्तगुत्तेत्ति ।
वसिम वसुंधरदेवी अचोदिसर सोत्थियं कूडं ॥ ९५१ ॥
सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मी शेषवती चित्रगुप्ता इति ।
[illegible] वसुंधरा देव्य: [illegible] स्वस्तिकं कूटं ॥ ९५१ ॥

अर्थ—सुप्रकीर्णा १ यशोधरा १ लक्ष्मी १ शेषवती १ चित्रगुप्ता १ वसुंधरा १ ऐसें आठ देवी बसै हैं। बहुरि धर्मांच १ स्वस्तिक कूट १ ॥ ९५१ ॥

तो मंदर हेमवदं रज्जं रज्जुत्तमं च चंदमवि।
पच्छिम सुदंसणं पुण इलादियाय सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

ततो मंदरं हैमवतं राज्यं राज्योत्तमं च चंद्रमपि।
पश्चिमं सुदर्शनं पुनः इलादिका सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

अर्थ—तहां पीछैं मंदर १ हैमवत् १ राज्य १ राज्योत्तम १ चंद्र १ सुदर्शन १ ए आठ पश्चिम दिशा विषै कूट हैं। इहां तिष्ठती देवी कहिए हैं। इलादेवी सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

पुढवी पउमवदी इगिणासो देवी य णवमिया सीदा।
भद्दा तो विजयादीचउक्कूडं कुंडलं रुजगं ॥ ९५३ ॥

पृथ्वी पद्मावती एकनासा देवी च नवमिका सीता।
भद्रा ततो विजयादिचतुष्कूटानि कुंडलं रुचकं ॥ ९५३ ॥

अर्थ—पृथ्वी १ पद्मावती १ एकनासा देवी १ नवमिका १ सीता १ भद्रा १ ए आठ देवी बसै हैं। बहुरि तहां पीछैं विजय १ वैजयन्त १ जयंत १ अपराजित ए च्यारि कूट अर कुंडल १ रुचक १ ॥ ९५३ ॥

तो रयणवंत सव्वादीरयणं उत्तरे अलंभूसा।
विदिया दु मिस्सकेसी देवी पुण पुंडरीगिणि सा ॥ ९५४ ॥

ततो रत्नवत् सर्वादिरत्नं उत्तरे अलंभूषा।
द्वितीया तु मिश्रकेशी देवी पुनः पुंडरीकिनी सा ॥ ९५४ ॥

अर्थ—तहां पीछैं रत्नवत् १ सर्व रत्न १ ए आठ उत्तर दिशा विषै कूट हैं। इन विषै तिष्ठती देवी कहिए हैं। अलंभूषा १ मिश्रकेशी देवी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ९५४ ॥

वारुणि आसा सच्चा हिरि सिरि पुव्वगदिक्कुमारीओ।
भिंगारं धरिदूणिह दक्खिणदेवीओ मुकुरं ॥ ९५५ ॥

वारुणी आशा सत्या ह्रीः श्रीः पूर्वगतदिक्कुमार्यः।
भृंगारं धृत्वा इह दक्षिणदेव्यो मुकुरं ॥ ९५५ ॥

अर्थ—वारुणी १ आशा १ सत्या १ ह्री १ श्री १ ए आठ देवी बसै हैं इन विषै पूर्व-दिशा संबंधी दिक्कुमारी हैं। ते भृंगार जो झारी ताकौं धारि करि अर दक्षिण दिशा संबंधी दिक्कुमारी मुकुर जो आरसी ताकौं धारि करि ॥ ९५५ ॥

पच्छिमगा छत्तत्तयं उत्तरगा चामरं पमोदजुदा।
तित्थयरजणणिमेवं जिणजणणकाले पकुव्वंति ॥ ९५६ ॥

पश्चिमगा छत्रत्रयं उत्तरगा चामरं प्रमोदयुताः।
तीर्थंकरजननीसेवा जिनजननकाले प्रकुर्वंति ॥ ९५६ ॥

अर्थ—पश्चिमदिशा संबंधी देवी तीन छत्रनिकौं धारि करि अर उत्तर दिशा संबंधी देवी चामरनिकौं धारि करि महा प्रमोद करि संयुक्त होती ते सर्व देवी तीर्थंकरका उत्पत्ति काल विषै तीर्थंकरकी जो माता ताकी सेवा करै हैं ॥ ९५६ ॥

पुव्वे विमलं कूडं णिच्चालोयं सयंपहं अवरे ।
णिच्चुज्जोदं देवी कमसो कणया सदादिदहा ॥ ९५७ ॥

पूर्वयोः विमलं कूटं नित्यालोकं अपरयोः ।
नित्योद्योतं देव्यः क्रमशः कनका शतादिह्रदा ॥ ९५७ ॥

अर्थ—रुचक पर्वतके अभ्यंतर कूटनि विषै पूर्व दिशा विषै तौ विमलकूट दक्षिण दिशा विषै नित्यालोककूट पश्चिम दिशा विषै स्वयंप्रभकूट उत्तर दिशा विषै नित्योद्योत कूट ऐसें च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती देवी क्रमतैं कनका १ शतह्रदा १ ॥ ९५७ ॥

कणयादिचित्त सोदामणि सव्वदिसप्पसण्णदं देंति ।
तित्थयरजम्मकाले कूडं वेलुरियरुजगमदो ॥ ९५८ ॥

कनकादिचित्रा सौदामिनी सर्वदिशाप्रसन्नतां ददते ।
तीर्थंकरजन्मकाले कूटं वैडूर्यं रुचकमतः ॥ ९५८ ॥

अर्थ—कनकचित्रा १ सौदामिनी १ ऐसैं ए च्यारि देवी बसै हैं ते तीर्थंकरका जन्म काल विषै सर्व दिशानिकौं प्रसन्न धारै हैं निर्मल करै हैं । बहुरि इनतैं अभ्यंतर पूर्वादि दिशानि विषै वैडूर्य १ रुचक १ ॥ ९५८ ॥

मणिकूडं रज्जुत्तममिह रुजगा रुजगकित्ति रुजगादी ।
कंता रुजगादिपहा जिणजादयकम्मकदिकुसला ॥ ९५९ ॥

मणिकूटं राज्योत्तममिह रुचका रुचककीर्तिः रुचकादिः ।
कांता रुचकादिप्रभा जिनजातककर्मकृतिकुशलाः ॥ ९५९ ॥

अर्थ—मणिकूट १ राज्योत्तम १ ए च्यारि कूट है । इहां तिष्ठती रुचका १ रुचक कीर्ति १ रुचक कांता १ रुचक प्रभा १ ए च्यारि देवी हैं । ते तीर्थंकरका जन्म विषै जात कर्म करनेविषै कुशल हैं ॥ ९५९ ॥

आगैं कुंडल रुचक संबंधी कूटनिका व्यासादिक कहैं हैं;—

सव्वेसिं कूडाणं जोयणपंचसय भूमिवित्थारो ।
पणसयमुदओ तद्दलमुहवासो कुंडले रुजगे ॥ ९६० ॥

सर्वेषां कूटानां योजनपंचशतं भूमिविस्तारः ।
पंचशतमुदयः तदर्धमुखव्यासः कुंडले रुचके ॥ ९६० ॥

अर्थ—कुंडल गिरि अर रुचक गिरिविषै कहे जे ए कूट तिन सबनिका पांचसै योजन का भूमि विस्तार कहिए मूलविषै चौड़ाईका प्रमाण है । अर उदय जो ऊंचाईका प्रमाण सोभी पांचसै योजन है । अर तिनका मुख व्यास जो ऊपरि चौड़ाईका प्रमाण सो ताका आधा अढ़ाईसै योजन है ।

इहां जैसैं पुष्कर दीपकै मध्य वल्याकार मानुषोत्तर पर्वत है तैसैं ही कुंडल दीपकै मध्य कुंडलगिरि अर रुचक द्वीपकै मध्य रुचक गिरि वल्याकार जानना ॥ ९६० ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिके जे देव स्वामी हैं तिनकौं पांच गाथानि करि कहै हैं;—

जंबूदीवे वाणो अणादरो सुट्टिदो य लवणेवि ।
धादइखंडे सामी प्रभासपियदंसणा देवा ॥ ९६१ ॥

जंबूद्वीपे वानौ अनादरः सुस्थितश्च लवणेपि ।
धातकीखंडे स्वामिनौ प्रभासप्रियदर्शनौ देवौ ॥ ९६१ ॥

अर्थ—जंबू द्वीप अर लवण समुद्रविषै तौ स्वामी अनादर अर सुस्थित नामा व्यंतर देव है। धातकी खंडविषै स्वामी प्रभास अर प्रियदर्शन देव हैं ॥ ९६१ ॥

कालमहकाल पउमा पुंडरियो माणुसुत्तरे सेले ।
चक्खुमसुचक्खुम्मा सिरिपहधर पुक्खरुवहिम्हि ॥ ९६२ ॥

कालमहाकालौ पद्मः पुंडरीकः मानुषोत्तरे शैले ।
चक्षुष्मसुचक्षुष्माणौ श्रीप्रभधरौ पुष्करोदधौ ॥ ९६२ ॥

अर्थ—कालोदक समुद्रविषै स्वामी काल महाकाल देव हैं। पुष्करार्द्ध अर मानुषोत्तरविषै स्वामी पद्म अर पुंडरीक देव हैं। पुष्कर दीपका बाह्य दूसरा अर्धविषै स्वामी चक्षुष्मान अर सुचक्षुष्मान हैं। पुष्कर समुद्रविषै स्वामी श्रीप्रभ अर श्रीधर हैं ॥ ९६२ ॥

वरुणो वरुणादिपहो मज्झो मज्झिमगुरो य पंडुरओ ।
पुप्फादिदंत विमला विमलप्पह सुप्पहा महप्पहभो ॥ ९६३ ॥

वरुणो वरुणदिप्रभो मध्यः मध्यमगुरः च पांडुरः ।
पुष्पादिदंतः विमलो विमलप्रभः सुप्रभः महाप्रभ ॥ ९६३ ॥

अर्थ—वारुणी दीपविषै स्वामी वरुण अर वरुणप्रभ है। वारुणी समुद्रविषै स्वामी मध्य अर मध्यम देव हैं। क्षीर दीपविषै स्वामी पांडुर अर पुष्पदंत है। क्षीर समुद्रविषै स्वामी विमल अर विमलप्रभ हैं। घृत दीपविषै स्वामी सुप्रभ अर महाप्रभ है ॥ ९६३ ॥

कणय कणयाह पुण्णा पुण्णप्पह देवगंधमहगंधा ।
सो णंदी णंदिपहो भद्दसुभद्दा य अरुण अरुणपहा ॥ ९६४ ॥

कनकः कनकाभः पुण्यप्रभो देवगंधमहागंधो ।
ततो नंदी नंदिप्रभः भद्रसुभद्रौ च अरुण अरुणप्रभः ॥ ९६४ ॥

अर्थ—घृत समुद्र विषै स्वामी कनक अर कनकप्रभ है। क्षौद्र द्वीप विषै स्वामी पुण्य अर पुण्य प्रभ हैं। क्षौद्र समुद्र विषै स्वामी देव गंध अर महागंध है। तहां आगै नंदीश्वर द्वीप विषै स्वामी नंदि अर नंदिप्रभ है। नंदीश्वर समुद्र विषै स्वामी भद्र अर सुभद्र है। अरुण द्वीप विषै स्वामी अर अरुण अरुणप्रभ है ॥ ९६४ ॥

सगुगंध सव्वगंधो अरुणसमुद्दम्हि हादि य दो दो ।
दीवसमुद्दे पढमो दक्खिणभागम्हि उत्तरे बिदिदो ॥ ९६५ ॥

समुगंधः सर्वगंधः अरुणसमुद्रे इति प्रभू द्वौ द्वौ ।
द्वीपसमुद्रे प्रथमः दक्षिणभागे उत्तरे द्वितीयः ॥ ९६५ ॥

अर्थ—अरुण समुद्र विषै नायक समुगंध अर सर्वगंध देव हैं । ऐसैं ही द्वीप अर स[...] विषै दोय दोय स्वामी व्यंतर देव हैं । तहां दोय दोय विषै जाका नाम पहलैं कह्या सो द[...] भाग विषै अर जाका पीछैं नाम लिया सो उत्तर भाग विषै स्थित जाननां ॥ ९६५॥

अब नंदीश्वर द्वीपकौं विशेष रूप प्रतिपादन करत संता आचार्य प्रथम ताका व[...] कहै है;—

आदीदो खलु अट्ठमणंदीसरदीववलयविक्खंभो ।
सयसमहियतेवट्ठीकोडी चुलसीदिलक्खा य ॥ ९६६ ॥
आदितः खलु अष्टमनंदीश्वरद्वीपवलयविष्कंभः ।
शतसमधिकत्रिषष्टिकोटिः चतुरशीतिलक्षाश्च ॥ ९६६ ॥

अर्थ—आदिका जंबूद्वीपतैं लगाय आठवां नंदीश्वर द्वीप है । ताका विलय विष्कंभ [...] वलयाकार विषै चौड़ाई सो सौ अधिक तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्रमाण है। कैसैं [...] कहिए हैं । नंदीश्वर द्वीप सहित यातैं पहलै द्वीप वा समुद्रनिकी संख्या पदह है सो पंद्रह[...] करि रुऊणाहियपदं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि एकसौ तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्र[...] व्यास आवै है ॥ ९६६ ॥

आगै इस द्वीप विषै च्यारयौं दिशानि विषै तिष्ठते पर्वत तिनके नाम अर संख्या [...] स्थानकौं निरूपै हैं;—

एक्कचउक्कट्ठंजणदहिमुहरइयरणगा पडिदिसम्हि ।
मज्झे चउदिसवावीमज्झे तब्बाहिरदुकोणे ॥ ९६७ ॥
एकचतुष्काष्टांजनदधिमुखरतिकरनगाः प्रतिदिशं ।
मध्ये चतुर्दिग्वापीमध्ये तद्बाह्यद्विकोणे ॥ ९६७ ॥

अर्थ—एक एक दिशा प्रति मध्य विषै अर च्यारि दिशा सबंधी बावड़ीनिकै मध्य अर [...] बावड़ीनिका बाह्य दोय दोय कोणादि विषै क्रमतैं एक च्यारि आठ संख्या लिएं अंजन दधिमुख र[...] नाना पर्वत नंदीश्वर द्वीप विषै जाननैं । भावार्थ—नंदीश्वरकी चारौं दिशा तहां एक एक [...] विषै बीचि तौ एक अंजन गिरि है । तिस अंजन गिरकी च्यारौं दिशानि विषै च्यारि बावड़ी [...] तिन बावड़ीनिकै बीचि च्यारि दधिमुख पर्वत हैं । बहुरि तिन बावड़ीनिके दोय कोन तौ अं[...] गिरिकी तरफ अर दोय कोन दूसरी तरफ तहां दूसरी तरफ जे दोय दोय बाह्य कोण तिनकै नि[...] आठ रतिकर पर्वत हैं । ऐसैं एक दिशा विषै तेरह पर्वत च्यारि बावड़ी भई । च्यारौं दि[...] विषै बावन पर्वत सोलह बावड़ी जाननी ॥ ९६७ ॥

आगै तिन पर्वतनिका वर्ण वा परिमाणकौं कहै हैं -

अंजणदहिरइणगणिहा चुलसीदिदहेक्कजोयणसहस्सा ।
वट्टा वासुदएणय गोम्मा बावण्णगेहाओ ॥ ९६८ ॥

अंजनदधिमुखरतिकराः चतुरशीतिदशैकयोजनसहस्राः ।

वृत्ता, स्थानोदयेन सदृशाः द्वापंचाशत्शैलाः ॥ ९६८ ॥

अर्थ—अंजन गिरि तौ अंजन जो काजल तीह समान स्याम वर्ण है। दधिमुख दही समान श्वेत वर्ण है। रतिकर नाम सुवर्ण समान ताका गिरि पीत वर्ण है। बहुरि अंजन गिरिका प्रमाण चौरासी हजार योजन दधिमुखका दश हजार योजन रतिकरका एक हजार योजन है। बहुरि ते सर्व वृत्त है। गोल आकारी है। व्यास उदयकरि समान है। अंजनादिक चौरासी दश एक हजार योजन प्रमाण ऊंचे हैं। अर इतना ही मूल विषै वा उपरि समान चौडे हैं। ऊभा ढोलकै आकार सब स्थान रूप है। ऐसे सर्व मिले हुए बावन पर्वत हैं ॥ ९६८ ॥

आगे तिन वावडीनिके नाम गाथा दोय करि कहै हैं;—

णंदा णंदवदी पुण णंदुत्तर णंदिसेण अरविरया ।

गयवीदसोगविजया वइजयंती जयंती य ॥ ९६९ ॥

नंदा नंदवती पुनः नंदोत्तरा नंदिषेणा अरविरजे ।

गतवीतशोकाविजया वैजयंती जयंती च ॥ ९६९ ॥

अर्थ—नंदा १ नंदवती १ बहुरि नंदोत्तरा १ नंदिषेणा १ ए च्यारि पूर्व दिशाविषै हैं। बहुरि अरजा १ विरजा १ गतशोका १ वीतशोका ए च्यारि दक्षिणविषै हैं। बहुरि विजया १ वैजयंती १ जयंती १ ॥ ९६९ ॥

अवराजिदा य रम्मा रमणीया सुप्पभा य पुव्वादी ।

रयणतडा लक्खपमा चरिमा पुण सव्वदोभद्दा ॥ ९७० ॥

अपराजिता च रम्या रमणीया सुप्रभा च पूर्वादितः ।

रत्नतटा. लक्षप्रमा. चरमा पुनः सर्वतोभद्रा ॥ ९७० ॥

अर्थ—अपराजिता १ ए च्यारि पश्चिमदिशा विषै हैं। बहुरि रम्या १ रमणीया १ सुप्रभा १ अंत विषै सर्वतोभद्रा १ ए च्यारि उत्तरविषै हैं। ऐसैं ए सर्व वावडी रत्नमय तट युक्त हैं लक्ष योजन प्रमाण है। ते पूर्वादिक दिशानिविषै क्रमतैं जाननी ॥ ९७० ॥

अब तिन वावडीनिका स्वरूप कहै हैं;—

सव्वे समचउरस्सा टंकुक्किण्णा सहस्सयोगाढा ।

वेदियचउवणजुत्ता जलयरउम्मुक्कजलपुण्णा ॥ ९७१ ॥

सर्वा समचतुरस्रा टंकोत्कीर्णा सहस्रमवगाधाः ।

वेदिकाचतुर्वनयुक्ता जलचरोन्मुक्तजलपूर्णाः ॥ ९७१ ॥

अर्थ—ते सर्व वापी समचतुरस्र है। लाख योजन ही लंबी अर इतनी ही चौडी समचौकोर आकार युक्त है। बहुरि टंकोत्कीर्ण है। उपरि नीचै एकरूप हैं। बहुरि एक हजार योजन ऊंडी है। बहुरि वेदिका अर च्यारयो दिशानिविषै च्यारि वन तिन करि संयुक्त हैं। बहुरि जलचर जीवनि करि रहित जल करि संपूर्ण भरी है ॥ ९७१ ॥

आगैं तिन वावडीनिके वननिका स्वरूप कहैं हैं;—

वावीणं पुव्वादिसु असोयसत्तच्छदं च चंपवणं ।
. चूदवणं च कमेण य सगवावीदीहदलवासा ॥ ९७२ ॥

वापीनां पूर्वादिषु अशोकसप्तच्छदं च चंपवनं ।
चूतवनं च क्रमेण च स्वकवापीदीर्घदलव्यासानि ॥ ९७२ ॥

अर्थ—तिन एक एक वापीनिकी पूर्वादिक दिशानिविषै अनुक्रम करि अपनी अर वावड़ी समान एक लाख योजन लंबे अर तातैं आधे पचास हजार योजन चौड़े ऐसे अशोक सप्तछद अर चंपक अर आम्र वन हैं । ऐसैं नंदीश्वर द्वीपविषै सर्व चौंसठि वन जानने ॥ ९७२

अब अंजनादि पर्वतनिकै उपरि प्रत्येक एक एक चैत्यालयकौं कहत संता आचार्य सो तिन चैत्यालयनिविषै चतुर्णिकाय देवनि करि काल विशेष विषै किया हुवा पूजा विशेष ताकौं कहैं अर्थि पांच गाथानिकरि कहैं हैं;—

तव्वावण्णणगेसुवि वावण्णजिणालया हवंति तहिं ।
सोहम्मादी वारसकप्पिंदा ससुरभवणतिया ॥ ९७३ ॥

तद्द्वापंचाशन्नगेष्वपि द्वापंचाशज्जिनालया भवंति तेषु ।
सौधर्मादयो द्वादशकल्पेंद्राः ससुरभवनत्रिकाः ॥ ९७३ ॥

अर्थ—तिन बावन पर्वतनिविषै उपरि बावन जिन मंदिर हैं । तिनविषै अन्य कल्पवासी देव अर भवनत्रिक देव तिन करि सहित सौधर्म आदि बारह स्वर्गनिके इन्द्र हैं ॥ ९७३ ॥

ते कहा करै हैं ते कैसे हैं सो कहैं हैं;—

गयहयकेसरिवसहे सारसपिकहंसकोकगरुडे य ।
मयरसिहिकमलपुप्फयविमाणपहुदिं समारूढा ॥ ९७४ ॥

गजहयकेसरिवृषभान् सारसपिकहंसकोकगरुडान् च ।
मकरशिखिकमठपुष्पकविमानप्रभृतिं समारूढाः ॥ ९७४ ॥

अर्थ—हस्ती १ घोटक १ सिंह १ वृषभ १ सारस १ कोकिला १ हंस १ चकवा १ गरुड १ माछलौ १ मोर १ कमठ १ पुष्पक विमान इत्यादिकनि ऊपरि समारूढ हैं। भावार्थ—सौधर्मादिक बारह इंद्रनिके हस्ती आदि मुख्य वाहन हैं । तिन उपरि चढ़ें हैं ॥ ९७४ ॥

बहुरि कैसे हैं;—

दिव्वफलपुप्फहत्था सत्थाभरणा सचामराणीया ।
बहुधयतूरारावा गत्ता कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७५ ॥

दिव्यफलपुष्पहस्ताः शस्त्राभरणाः सचामरानीकाः ।
बहुध्वजतूर्यारावाः गत्वा कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७५ ॥

अर्थ—दिव्य फल पुष्प आदि पूजन द्रव्य हस्त विषै धरैं हैं । बहुरि प्रशस्त आभरण धरैं हैं । चामरनि और सेना करि संयुक्त हैं । बहुत ध्वजा अर वादित्रनिका शब्द करि संयुक्त हैं । हैं

होत संतें अपने स्थाननितैं तहां नंदीश्वर द्वीपविषै जाइ ऐंद्रध्वज आदि जो जिन पूजनरूप कल्याण ताहि करै है ॥ ९७५ ॥

पडिवरिसं आसाढे तह कत्तियफग्गुणे य अट्ठमिदो ।
पुण्णदिणोत्ति यभिक्खं दो दो पहरं तु सयुरेहिं ॥ ९७६ ॥

प्रतिवर्षमाषाढे तथा कार्तिके फाल्गुने च अष्टमीतः ।
पूर्णदिनांतं चाभीक्ष्णं द्वौ द्वौ प्रहरौ तु स्वसुरैः ॥ ९७१ ॥

अर्थ—वर्ष वर्ष प्रति आषाढ मास विषै अर तैसैं ही कार्तिक मास विषै अर फाल्गुन मास विषै अष्टमी तिथितैं लगाय पूर्णिमा दिन पर्यंत अभीक्ष्ण कहिए निरंतर दोय दोय पहर अपनें अपनें देवनि करि सहित ॥ ९७६ ॥

कौन कहा करै हैं सो कहै हैं;—

सोहम्मो ईसाणो चमरो वइरोयणो पदक्खिणदो ।
पुव्वावरदक्खिणुत्तरदिसासु कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७७ ॥

सौधर्म ईशानः चमरो वैरोचनः प्रदक्षिणतः ।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदिशासु कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७७ ॥

अर्थ—प्रथम स्वर्ग युगलके इन्द्र सौधर्म्म अर ईशान बहुरि असुर कुमारनिके इन्द्र चमर अर वैरोचन ए च्यारयौं प्रदक्षिणा रूप पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि विषै कल्याण जो जिन पूजन ताहि करैं हैं। पूर्ववाला दक्षिण जाइ तब उत्तरवाला पूर्वकौं आवै ऐसें प्रदक्षिणारूप महोत्सव युक्त पूजन करैं हैं ॥ ९७७ ॥

अब तीन लोक विषै तिष्ठते जु अकृत्रिम चैत्यालय तिनका सामान्य करि व्यासादिक कहै हैं;—

आयामदलं वासं उभयदलं जिणघराणमुच्चत्तं ।
दारुदयदलं वासं आणिद्वाराणि तस्सद्धं ॥ ९७८ ॥

आयामदलं व्यासः उभयदलं जिनगृहाणामुच्चत्वं ।
द्वारोदयदलं व्यासः आणुद्वाराणि तदर्धं ॥ ९७८ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट आदि चैत्यालयनिका जो आयाम ताका आधा तौ तिनका व्यास है। बहुरि आयाम अर व्यास दोउनिकौं मिलाइ ताका आधा जिन मंदिरनिका उ[illegible] है—[illegible]यार्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिकी लंबाई क्रमतैं सौ पचास पचीस योजन [illegible] ताका आधा पचास पचीस साढा बारह योजन प्रमाण तिनकी चौडाईकौं [illegible] । बहुरि लंबाई चौडाईकौं मिलाइ १५०।७५।७५ [illegible] २ आधा किए [illegible] [illegible] । उगणीस योजन प्रमाण तिनका उच्चता प्रमाण हो है। बहुरि तिन चै[illegible] [illegible]की उचाईतैं आधा द्वारनिका व्यास प्रमाण है। भावार्थ [illegible] [illegible] बडे द्वारनिकी उचाई सोलह आठ च्यारि योजन [illegible] ताका आधा [illegible] [illegible]नकी चौडाईका [illegible]

जाननां। बहुरि अन्य छोटे द्वार ते तिस बड़े द्वारतैं आधा प्रमाण उदय व्यास संयुक्त हैं। भावार्थ-उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके छोटे द्वारनिकी उचाई आठ च्यारि दोय योजन है। चौड़ाई च्यारि दोय एक योजन है ॥ ९७८ ॥

इस ही कहे अर्थकों विशेषतैं गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

वरमज्झिमअवराणं दलकमं भद्दसालणंदणगा ।
णंदीसरगविमाणगजिणालया होंति जेट्ठा हु ॥ ९७९ ॥

वरमध्यमावराणां दलक्रमं भद्रशालनंदनकाः ।
नंदीश्वरकविमानगजिनालया भवंति ज्येष्ठा हि ॥ ९७९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिका व्यासादिक क्रमतैं आधा आधा जानहु। तहां भद्रशाल अर नंदनवन अर नंदीश्वर अर दीप वैमानिकनिके विमान इन विषै प्राप्त जे जिनालय हैं ते तौ व्यासादिक करि उत्कृष्ट हैं ॥ ९७९ ॥

सोमणसरुजगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा ।
कुलगिरिजा वि य मज्झिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ ९८० ॥

सौमनसरुचककुंडलवक्षारेष्वाकारमानुषोत्तरगाः ।
कुलगिरिजा अपि च मध्यमा जिनालया पांडुगा अवराः ॥ ९८० ॥

अर्थ—सौमनस वन अर रुचक कुंडल वक्षार इष्वाकार मानुषोत्तर पर्वत अर कुलाचल इन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते मध्यम हैं। पांडुक वन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते जघन्य हैं ॥ ९८० ॥

याकै अनंतरि उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम अवगाध द्वारनिका उचत्व कहै हैं;—

जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं तु दारुदयं ।
जेट्ठाणं गिहपासे आणिदाराणि दो दो दु ॥ ९८१ ॥

योजनशतमायामः दलगाधः षोडश तु द्वारोदयः ।
ज्येष्ठानां गृहपार्श्वे आणुद्वारे द्वे द्वे तु ॥ ९८१ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम सौ योजन प्रमाण है। अर आध योजन अवगाह करि पृथ्वी मांही नींव है। बहुरि सोलह योजन तिनके द्वारनिका उचत्व है। बहुरि यहु बड़ा द्वार तौ सन्मुख दिशा विषै है। अर जिन मंदिरनिके दोऊ पार्श्वनि विषै दोय दोय छोटे द्वार हैं। पीछेको द्वार है नाहीं ॥ ९८१ ॥

आगै उत्कृष्ट आदि विशेष रहित जे वसतिका करि जिनालय तिनका आयाम कितना है सो कहैं हैं;—

वेयड्ढजंबुसामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं ।
सेसाणं सगजोग्ग आयामं होदि जिणदिट्ठं ॥ ९८२ ॥

[illegible] जिनभवनानां तु क्रोश आयामः ।
[illegible] आयामो भवति जिनदृष्ट ॥ ९८२ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत जंबूवृक्ष शाल्मली वृक्ष इन विषै जिन मंदिरनिका आयाम जो लंबाई सो एक कोश प्रमाण है। अवशेष भवनवासीनिके भवन व्यंतरनिके आवास इत्यादिकनि विषै प्राप्त जे जिनभवन तिनका अपना अपना यथा योग्य आयाम जिन देव देखै हैं। बहुत प्रकार है तातै इहां न कह्या है ॥ ९८२ ॥

आगै कहे जे जिन भवन तिनका परिवार गाथा सात करि कहै हैं;—

चउगोउरमणिसालत्ति वीहिं पडि माणथंभ णवथूहा।
वणधयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥ ९८३ ॥
चतुर्गोपुरमणिशालत्रये वीथीं प्रति मानस्तंभा नवस्तूपाः।
वनध्वजाचैत्यभूमयः जिनभवनानां च सर्वेषां ॥ ९८३ ॥

अर्थ—सर्व जिन भवननिकै च्यारि द्वारनि करि संयुक्त मणिमई तीन कोट हैं। बहुरि वीथी जो द्वार होइ करि जानेकी गली तिन एक एक वीथी प्रति एक एक मानस्तंभ है। अर नव नव स्तूप हैं। बहुरि तिन तीन कोटनिकै बीचि बीचि अंतराल तिन विषै बाह्यतै लगाय पहला दूसरा कोटकै बीचि वन हैं, दूसरा तीसरा कोटकै बीचि ध्वजा हैं। तीसरा कोटकै बीचि चैत्यालय चैत्यभूमि है ॥ ९८३ ॥

जिणभवणे अट्ठसया गब्भगिहा रयणथंभवं तत्थ।
देवच्छंदो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ ॥ ९८४ ॥
जिनभवनेषु अष्टशतानि गर्भगृहाणि रत्नस्तंभवान् तत्र।
देवच्छंदो हैमः द्विकाष्टचतुर्व्यासदीर्घोदयः ॥ ९८४ ॥

अर्थ—तिन जिन भवननि विषै एकसौ आठ गर्भ ग्रह हैं। जैसै बारा करनेकै कोठा आदिस्थान तैसै गर्भ ग्रह जानने। बहुरि तहां जिन मंदिरकै मध्यविषै रत्ननिका स्तंभनि करि युक्त सुवर्ण मई दोय योजन चौड़ा आठ योजन लंबा च्यारि योजन ऊंचा देवछंद कहिए छत्तर मंडप ॥ ९८४ ॥

सिंहासणादिसहिया विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता।
विद्दुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला ॥ ९८५ ॥
सिंहासनादिसहिता विनीलकुंतलाः सुवज्रमयदंताः।
विद्रुमाधराः किसलयशोभाकरहस्तपादतलाः ॥ ९८५ ॥

अर्थ—सिंहासन छत्रादिक करि संयुक्त बहुरि विशेषपनै नील हैं मस्तकादिविषै केश जिनके, भले वज्रमई दंत जिनकै अर विद्रुम जो मूंगा तिस सारिखे रक्त होठ हैं जिनकै अर किसलय जो नवीन कूंपल तिस सारिखे हैं रक्तता लिए शोभा युक्त हस्त तल अर पाद तल जिनकै ऐसी जिन प्रतिमा है। इहां केशादिकका आकार रूप पुद्गल परणए हैं ऐसा जानना ॥ ९८५ ॥

दसतालमाणलक्खणभरिया पेक्खंत इव वदंता वा।
पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणमया अट्ठअहियसया ॥ ९८६ ॥

दशताल्मानलक्षणभरिताः प्रेक्ष्यमाणा इव वदंत इव ।
पुरुजिनतुंगाः प्रतिमाः रत्नमया अष्टाधिकशताः ॥ ९८६ ॥

अर्थ—दश ताल प्रमाण लक्षणनिकरि भरी हैं। तालका प्रमाण बारह अंगुल जानना। ते प्रतिमा तीर्थंकर वत जानों कि चोवैं हैं जानों बोलैं हैं। बहुरि पुरुजिन जो पहला इनि कर तीह समान पांचसै धनुष ऊंची है। बहुरि रत्न मय हैं। ऐसी एकसौ आठ जिन प्रतिमा गर्भ गृहनि विषै एक एक विराज मान हैं ॥ ९८६ ॥

चमरकरणागजक्खगबत्तीसंमिहुणगेहिं पुह जुत्ता ।
सरिसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति ॥ ९८७ ॥

चमरकरनागयक्षगद्वात्रिंशन्मिथुनैः पृथक् युक्ताः ।
सदृश्या पंक्त्या गर्भगृहे सुष्ठु शोभंते ॥ ९८७ ॥

अर्थ—बहुरि ते प्रतिमा कैसी हैं? चमर है हाथ विषै जिनकै ऐसे जु नागकुमार यक्षनिके बत्तीस युगल तिनकरि संयुक्त जुदे जुदे एक एक गर्भ गृह विषै सदृश रूप पंक्तिकरि भले प्रकार सोभैं हैं। **भावार्थ**—बत्तीस नाग कुमार वा यक्षनिके युगल तिनके हस्त विषै चमर हैं तिन करि शोभ्यमान हैं ॥ ९८७ ॥

सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं ।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होंदि ॥ ९८८ ॥

श्रीदेवी श्रुतदेवी सर्वाह्नसनत्कुमारयक्षाणां ।
रूपाणि च जिनपार्श्वे मंगलमष्टविधमपि भवति ॥ ९८८ ॥

अर्थ—तिन जिन प्रतिमानिके पार्श्व विषै श्री देवी अर सरस्वती देवी अर सर्वाह्न यक्ष सनत्कुमार यक्ष इनके रूप जे आकार ते तिष्ठै हैं। **भावार्थ**—जिनप्रतिमाके निकटि इन रूप प्रतिबिंब हो है। इहां प्रश्न—जो श्री तो धनादिक रूप है अर सरस्वती जिनवानी है। प्रतिबिंब कैसे हो है। ताका समाधान—श्री अर सरस्वती दोऊ लोक विषै उत्कृष्ट हैं। तातैं देवांगनाका आकार रूप प्रतिबिंब हो है। बहुरि दोऊ यक्ष विशेष भक्त हैं। तातैं तिनके हो हैं। बहुरि आठ प्रकार मंगल द्रव्य जिनप्रतिमानिके निकटि सोभै हैं ॥ ९८८ ॥

भिंगारकलसदप्पणवीयणधयचामरादवत्तमह ।
सुवइट्ठ मंगलाणि य अट्ठहियसयाणि पत्तेयं ॥ ९८९ ॥

भृंगारकलशदर्पणवीजनध्वजचामरातपत्रमथ ।
सुप्रतिष्ठं मंगलानि च अष्टाधिकशतानि प्रत्येकम् ॥ ९८९ ॥

अर्थ—झारी १ कलश १ आरसा १ बीजना १ ध्वजा १ चामर १ छत्र १ ठोणा १ ए आठ मंगल द्रव्य हैं। ते एक एक मंगल द्रव्य एकसौ आठ प्रमाण तहां हो हैं ॥ ९८९ ॥

आगे [illegible] कहै हैं,—

मणिकणयपुप्फगोहियदेवच्छंदस्स पुरदो मज्झे ।
[illegible] वण्णंति ॥ ९९० ॥

मणिकनकपुष्पशोभितदेवच्छंदस्य पूर्वतो मध्ये।
वसत्यां रूप्यकांचनघटसहस्राणि द्वात्रिंशत् ॥ ९९० ॥

अर्थ—मणि अर सुवर्ण मय पुष्पनिकरि सोभित ऐसा जु देवछंद ताके पूर्व विषै आगैं वसती जो जिन मंदिर ताका मध्य विषै रूपा अर सोनामई बत्तीस हजार घड़े हैं ॥ ९९० ॥

महदारस्स दुपासे चउवीससहस्समत्थि धूवघडा।
दारबहिं पासदुगे अट्ठसहस्साणि मणिमाला ॥ ९९१ ॥

महाद्वारस्य द्विपार्श्वे चतुर्विंशसहस्रं संति धूपघटाः।
द्वारबहिः पार्श्वद्वये अष्टसहस्राणि मणिमालाः ॥ ९९१ ॥

अर्थ—महा द्वार जो बड़ा द्वार ताके दोऊ पार्श्वनि विषैं दाहिणी बाईं तरफ चौईस हजार धूपके घड़े हैं। बहुरि तिस महा द्वारके बाह्य दोऊ पार्श्वनि विषै आठ हजार मणिमय माला हैं ॥ ९९१ ॥

तम्मज्झे हेममाला चउवीस वदणमंडवे हेमा।
कलसामाला सोलस सोलसहस्साणि धूवघडा ॥ ९९२ ॥

तन्मध्ये हेममाला चतुर्विंशतिः वदनमंडपे हेमाः।
कलशमालाः षोडश षोडशसहस्राणि धूपघटाः ॥ ९९२ ॥

अर्थ—तिन मणिमय मालानिके बीचि चौईस हजार सुवर्णमय माला हैं। बहुरि तिस महा. द्वारके आगैं सन्मुख मुख मंडप है तिस विषै सुवर्णमय कलश अर सुवर्ण मय माला सोलह सोलह हजार हैं। बहुरि तिसही विषै सोलह हजार धूपके घड़े हैं ॥ ९९२ ॥

महुरझणझणणिणादा मोत्तियमणिणिम्मिया सकिंकिणिया।
बहुविहघटाजाला रइदा सोहंति तम्मज्झे ॥ ९९३ ॥

मधुरझनझननिनादाः मौक्तिकमणिनिर्मिताः सकिंकिणिकाः।
बहुविधघंटाजाला रचिताः शोभते तन्मध्ये ॥ ९९३ ॥

अर्थ—तिस ही मुख मंडपका मध्य विषै मीठा है झण झण शब्द जिनका अर मोती मणिनि करि निपजी किंकणी जे छोटी घंटा तिन करि सहित नाना प्रकार घंटानिके समूह अनेक रचना करि युक्त सोभैं हैं ॥ ९९३ ॥

बहुरि तिम मंदिरके क्षुल्लक द्वारादिकका स्वरूप कहै हैं:—

वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगं मदर्द्ध तु।
तप्पुट्ठे मणिकंचणमालदुचउवीससगसहस्सं ॥ ९९४ ॥

वसतिमध्यगदक्षिणोत्तरतनुद्वारे तदर्धं तु।
तत्पृष्ठे मणिकांचनमाला [illegible] ॥ ९९४ ॥

अर्थ—वसती जो जिन मंदिर [illegible] दक्षिण [illegible] पार्श्वका [illegible] हैं। तिसविषै मुख्य महा द्वारके [illegible] है [illegible]

पुरतः प्रासादद्वयं स्फटिकाद्विमशाल्द्वारपार्श्वद्वये ।

अभ्यंतरं शतोदयं दलव्यासं रत्नसंघटितम् ॥ १००७ ॥

अर्थ—तिस तोरणकै आगैं स्फटिकमय जो प्रथम कोट ताके अभ्यंतर कोटके द्वारका दोऊ पार्श्वनि विषै सौ योजन ऊंचे ताका आधा पचास योजन चौड़े रत्न निर्मापित दोय मंदिर हैं। ऐसैं प्रथम कोट पर्यंत वर्णन किया ॥ १००७ ॥

जं परिमाणं भणिदं पुव्वगदारम्हि मंडवादीणं ।

दक्खिणउत्तरदारे तदद्धमाणं गहीदव्वं ॥ १००८ ॥

यत् परिमाणं भणितं पूर्वद्वारे मंडपादीनाम् ।

दक्षिणोत्तरद्वारे तदर्धमानं ग्रहीतव्यं ॥ १००८ ॥

अर्थ—पूर्व द्वार विषै मंडपादिकनिका जो परिमाण कह्या तातैं आधा प्रमाण दक्षिण द्वार अर उत्तरद्वार विषै ग्रहण करना। अन्य वर्णन तीनों तरफ समान है ॥ १००८ ॥

वंदणभिसेयणच्चणसंगीयवलोयमंडवेहिं जुदा ।

कीडणगुणणगिहेहिं य विसालवरपट्टसालेहिं ॥ १००९ ॥

वंदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकमंडपैः युतानि ।

क्रीडनगुणनगृहैश्च विशालवरपट्टशालैः ॥ १००९ ॥

अर्थ—बहुरि ते चैत्यालय सामायिकादि क्रिया करनेंके स्थान वंदना मंडप अर स्नान करनेंके स्थान अभिषेक मंडप अर नृत्य करनेंके स्थान नर्तन मंडप अर संगीत साधन करनेंके स्थान संगीत मंडप अर अवलोकन करनेंके स्थान अवलोकन मंडप तिन करि संयुक्त हैं। बहुरि क्रीडा करनेंके स्थान क्रीडन गृह शास्त्रादिक अभ्यासनेंके स्थान गुणनगृह तिन करि अर [illegible] विस्तार पर विश्राम आदि दिखावनेंके स्थान पट्टशाला तिनकरि संयुक्त हैं ॥ १००९ ॥

अब पहला अर दूसरा कोटकै बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपकौं कहै हैं;—

सिहगयवसहगरुडसिहिदिणहंसारविंदचक्कधया ।

पुह अट्ठसया पउदिसमेक्केक्के अट्ठसय खुल्ला ॥ १०१० ॥

सिंहगजवृषभगरुडशिखीन्दुदिनहंसारविंदचक्रध्वजाः ।

पृथक् अष्टशतानि चतुर्दिशमेकैकस्मिन् अष्टशत क्षुल्लाः ॥ १०१० ॥

अर्थ—सिंह १ हस्ती १ वृषभ १ गरुड १ मयूर १ चंद्रमा १ सूर्य १ हंस १ कमल १ चक्र १ इन दशनिका आकार करि संयुक्त ध्वजा हैं ते पृथक् पृथक् एकसौ आठ हैं। [illegible] जिन मंदिरकी च्यारों दिशानि विषै हैं। ऐसैं मुख्य ध्वजा च्यारि [illegible] हैं। बहुरि इहां एक एक मुख्य ध्वजा विषै एकसौ आठ क्षुल्लक होंहीं [illegible]

आगैं दूसरा अर तीसरा कोटकै बीचि जो क्षेत्र [illegible] वर्णन करै हैं—

चउवणमज्झे

वणपमप [illegible]

[illegible] ॥ १०११ ॥

चतुर्वनमशोकसप्तच्छदचंपकचूतमत्र कल्पतरवः ।
कनकमयकुसुमशोभाः मरकतमयविविधपत्राढ्याः ॥ १०११ ॥

अर्थ—अशोक अर सप्तछद अर चंपक अर आम्र इन मई च्यारि वन हैं। बहुरि इहां सुवर्ण मई फूलनि करि शोभित अर मरकत मणिमय नाना प्रकार पत्रनिकरि पूर्ण ऐसे कल्प वृक्ष हैं॥ १०११ ॥

वेलुरियफला विद्दुमविसालसाहा दसप्पयारा ते ।
पल्लंकपाडिहेरग चउदिसमूलगय जिणपडिमा ॥ १०१२ ॥
वैडूर्यफला विद्रुमविशालशाखाः दशप्रकारास्ते ।
पल्यंकप्रातिहार्यगाः चतुर्दिशामूलगता जिनप्रतिमाः ॥ १०१२ ॥

अर्थ—बहुरि ते वैडूर्य्य रत्न मय फल संयुक्त हैं। बहुरि विद्रुम मूंगा मय डाली युक्त हैं। ऐसे कल्प वृक्ष भोजनांग आदि भेद लीएं दश प्रकार तिन वननि विषै हैं। बहुरि तिन वननिविषै चैत्यवृक्षनिकै निकटि पल्यंक आसन छत्रादि प्रातिहार्य संयुक्त च्यारों दिशानि विषै वृक्षनिका मूलकै निकटि प्राप्त ऐसी जिन प्रतिमा हैं॥ १०१२ ॥

सालत्तयपीढत्तयजुत्ता मणिसाहपत्तपुप्फफला ।
तच्चउवणमज्झगया चेदिगरुक्खा सुसोहंति ॥ १०१३ ॥
शालत्रयपीठत्रययुक्ताः मणिशाखापत्रपुष्पफलाः ।
तच्चतुर्वनमध्यगताः चैत्यवृक्षाः सुशोभंते ॥ १०१३ ॥

अर्थ—तीन कोट तीन पीठ करि संयुक्त अर मणिमय डाली पांन फूल फल युक्त ऐसे च्यारों वननिकै मध्य प्राप्त जिन बिंब सहित चैत्य वृक्ष भले प्रकार सोभै हैं॥ १०१३ ॥

आगैं नंदादिक वापी अर मान स्तंभ तिनका विशेष स्वरूप कहै हैं;—

णंदादीय तिमेहल तिवीढया भंति धम्मविहवावि ।
पडिमाधिट्ठियमुड्ढा वणभूचउवीहिमज्झम्हि ॥ १०१४ ॥
नंदादिकाः त्रिमेखलाः त्रिपीठका भांति धर्मविभवा अपि ।
प्रतिमाधिष्ठितमूर्धानः वनभूचतुर्वीथीमध्ये ॥ १०१४ ॥

अर्थ—पूर्वे कही जे नंदादिक सोलह बावड़ी ते तीन कटनीनि करि संयुक्त सोभै हैं। बहुरि वननिकी जु भूमि ताकै निकटि द्वारनितैं आवनेंका मार्गरूप जो वीथी तिनका मध्य विषै जिन प्रतिमाका स्थान भूत है मस्तक भाग जिनका ऐसे धर्म्म विभवा अपि कहिए धर्म्म रूप विभव संयुक्त मानस्तंभ हैं तेऊ तीन पीठ युक्त सोभै हैं। ऐसें जिनालयका वर्णन जानना ॥ १०१४ ॥

इतिश्री नेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें छठा
नरतिर्यग्लोकका अधिकार समाप्त भया ॥ ६ ॥



मूलग्रंथकारका वक्तव्य।



आगें ग्रंथका अंत विषै मंगल करनेंकों सर्व जे सर्वज्ञके प्रतिबिंब तिनकों वंदना करै हैं;—

जिणसिद्धाणं पडिमा अकिट्टिमा किट्टिमा दु अदिसोहा।
रयणमया हेममया रुप्पमया ताणि वंदामि ॥ १०१५ ॥

जिनसिद्धानां प्रतिमा अकृत्रिमाः कृत्रिमास्तु अतिशोभाः।
रत्नमया हेममया रूप्यमया ताः वंदे ॥ १०१५ ॥

अर्थ—अकृत्रिम तौ अनादि निधन अर कृत्रिम करी हुई ऐसी रत्नमय वा सुवर्णमय रूप्यमय जे अरहंतनिकी अर सिद्धनिकी प्रतिमा तिन बिंबनिकौं मैं बंदौं हौं ॥ १०१५ ॥

बहुरि अंत संबंधी मंगलकै ही अर्थि संख्या करि संयुक्त जे समुदायरूप जिन मंदिर तिनकौं नमस्कार करत संता सूत्र कहै हैं;—

कोडी लक्ख सहस्सं अट्ठय छप्पण्ण सत्तणउदी य।
चउसदमेगासीदी गगणगए चेदिए वंदे ॥ १०१६ ॥

कोट्यः लक्षाणि सहस्राणि अष्ट षट्पंचाशत् सप्तनवतिः च।
चतुःशतमेकाशीतिः गगनगतानि चैत्यानि वंदे ॥ १०१६ ॥

अर्थ—आठ कोडि छप्पन लाख सत्याणवै हजार च्यारिसै इक्यासी लोकाकाशविषै प्राप्त जे चैत्यालय तिनकों मैं बंदौं हौं। यहु भवनवासी वैमानिक देव अर मेरु आदि मध्य लोकसंबंधी चैत्यालयनिकी संख्या जाननी। ज्योतिष्क व्यंतरसंबंधी चैत्यालय असंख्यात हैं तातैं गणना विषै न कहे ॥ १०१६ ॥

अब इस शास्त्रकौ समाप्त करता संता आचार्य अंतसंबंधी मंगलकै ही अर्थि त्रिलोकविषै प्राप्त जे अकृत्रिम वा कृत्रिम जिन मंदिर संबंधी वंदना करत संता गाथा सूत्र कहै हैं;—

तिहुयणजिणिंदगेहे अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।
वणकुमरविंदणामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥

त्रिभुवनजिनेंद्रगेहान् अकृत्रिमान् कृत्रिमान् त्रिकालभवान्।
वानकुमारविद्युतांनामरनरखेचरवंदितान् वंदे ॥ १०१७ ॥

अर्थ—अकृत्रिम अर कृत्रिम अतीत अनागत वर्तमान त्रिकाल संबंधी जे ज्योतिष्क कल्पवासी मनुष्य विद्याधरनि करि वंदित त्रिभुवन स्थित जिनेन्द्र हौं ॥ १०१७ ॥

[illegible]

इदि णेमिचंदमुणिणा
रइयो तिलोयसारो

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य अैसा **नेमिचंद्र** सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया अैसा माधवचंद त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौं त्यागै हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकादिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।
माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥

गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धात चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। अैसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

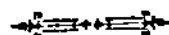
अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकौ यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥

अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कारः भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौ प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आत्माके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकौं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितैं हो है। तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप जनित परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य ।



कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान ।
तातैं ध्यावै धर्म ध्यानकौं पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संबंध समर्थ ।
इनिका कर्ता नांही कोय, जानैं इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा ।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसौ पृथ्वी शब्द जाननेतैं पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसैं साचे शब्द अर साचे अर्थ जगमाहि तिनिकै संबंध सौ स्वभाव ही तैं मानिए ।
तातैं इस ग्रंथ मांहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनकौ नवीन कर्ता कोऊ नांहि मानिए,
तिनकौं जो जानैं अर भावै जोरि शब्दनिकौं व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचांनिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनैं तिनिको स्वरूप जांन्यौ है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही वखान्यो है ।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौ है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि किनिहूनैं नाना भांति अर्थ प्रमान्यौं है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर **टोडरमल्लजीकृत** त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥



इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा **नेमिचंद्र** सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य ।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौं त्यागै हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकदिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।
माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥
गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धाती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहा रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।
इय पंचणमोक्कारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥
अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कारा भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर अध्यापन अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आपके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्कारमय जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहूं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितैं हो है। तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप [illegible] की प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य ।



कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान ।
तातें ध्यावै धर्म ध्यानकौं पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संबंध समर्थ ।
इनिका कर्ता नाही कोय, जानें इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा ।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसो पृथ्वी शब्द जाननेंतें पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसें सांचे शब्द अर सांचे अर्थ जगमाहि तिनिकै संबंध सो स्वभाव ही तैं मानिए ।
तातें इस ग्रंथ माहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नांहि मानिए,
तिनकौं जो जानैं अर भाषै जोरि शब्दनिकौं व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचानिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनें तिनिको स्वरूप जान्यौं है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही बखान्यौ है ।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमें आन्यौं है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि किनिहूनें नाना भांति अर्थ प्रमान्यौं है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥



इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।

रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा **नेमिचंद्र** सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौं त्यागैं हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकादिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।

माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥

गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।

' माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।

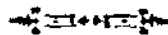
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥

अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्टिनः ।

इति पंचनमस्कारः भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आत्माके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहुं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितैं हो है। तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप तिनतैं परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य।



कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान।
ताते ध्याइ धर्म ध्यानकौ पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संबंध समर्थ।
इनिका कर्ता नाही कोय, जानै इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसो पृथ्वी शब्द जाननेंतैं पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसे सांचे शब्द अर सांचे अर्थ जगमांहि तिनिकै संबंध सो स्वभाव ही तैं मानिए।
ताते इस ग्रंथ मांहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नांहि मानिए,
तिनकौं जो जानै अर भाखै जोरि शब्दनिकौ व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचांनिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि हुये वर्धमान जिन भए तिनिहूनें तिनिको स्वरूप जांन्यौं है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछु तैसो ही वखान्यौ है।
गौतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौं है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि किनिहूनें नाना भांति अर्थ प्रमान्यौ है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥

